Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सन-इंडिया

हिन्दी व्याकरण

डॉ. मुकुट तिवारी
प्रेमसिंह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सन-इंडिया हिन्दी व्याकरण

कक्षा 9 व 10 (कोर्स A)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सी०बी०एस०ई०, नई दिल्ली द्वारा निर्धारित नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार

सन-इंडिया

हिन्दी व्याकरण

कक्षा 9 व 10 (कोर्स A) के विद्यार्थियों के लिए

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc. No.. 9545
Dated 29-3-11 52(II)

डॉ० मुकुट तिवारी
एम०ए०, पीएच०डी०
प्राचार्य
रामनारायण महिला महाविद्यालय
कायमगंज, फर्रूखाबाद,

प्रेमसिंह
एम०ए० (हिन्दी)

G.M.C.E.J
9545

सन-इंडिया पब्लिकेशन्स
4382/4B, प्रथम तल, मुरारीलाल स्ट्रीट
अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली—110 002
दूरभाष: 65921263, 9810716327
ई-मेल : sunindiapublcations@gmail.com

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रकाशक
के०वी० सिंह
सन-इंडिया पब्लिकेशन्स
4382/4B, प्रथम तल, मुरारीलाल स्ट्रीट
अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली—110 002
दूरभाष : 6592 1263
मोबाइल : 9810716327;

मूल्य : रुपये 160.00

लेजर टाइपसैटर्स :
वर्षा ग्राफिक्स

प्रिंटर्स : एम० शर्मा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आमुख

सन-इंडिया हिन्दी व्याकरण की रचना कक्षा 9 एवं 10 के लिए केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली द्वारा निर्धारित नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार की गई है। व्याकरण का विषय बहुत ही थोड़ा सुनिश्चित कर दिया गया है। कुछ शीर्षक अत्यंत नये एवं दुरुह हैं। उदाहरण के लिए परसर्ग 'ने' का क्रिया पर प्रभाव तथा लिंग और वचन का विशेषण पर प्रभाव। इस विषय में लेखन संबंधी अत्यंत परिश्रम किया गया है और इन नये शीर्षकों पर काफी विषय-वस्तु प्रदान की गई है।

हिंदी भाषा और साहित्य के अध्यापन से संबद्ध शिक्षकगण इसे उपयोगी पायेंगे। पुस्तक के लेखक स्वयं शिक्षण-प्रशिक्षण और अध्ययन-अध्यापन से संबद्ध हैं। इसलिए वे अध्यापक-अध्यापिकाओं की कठिनाइयों को भली-भाँति जानते हैं। विद्यार्थियों की मानसिकता और रुचियों को दृष्टि में रखकर ही इस पुस्तक का निर्माण किया गया है।

पुस्तक में प्रदत्त निबंध परीक्षोपयोगी व अत्यंत सरल हैं। वैसे भी ये पर्याप्त संख्या व मात्रा में दिये गए हैं। नया पाठ्यक्रम सुव्यवस्थित व विस्तृत है। पाठ्यक्रम संबंधी किसी भी विषय को छोड़ा नहीं गया है। पुस्तक की भाषा सरल व राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् द्वारा निर्धारित मानदंडों के अनुकूल है। विषय को ग्राह्य बनाने का पूर्ण प्रयास किया गया है एवं पिछले कुछ वर्षों के परीक्षा प्रश्नों के उत्तर भी इस पुस्तक में संकलित हैं। पाठकों के रचनात्मक सुझाव आमंत्रित हैं जिन्हें भावी संस्करण में ध्यान रखा जायेगा।

डॉ० मुकुट तिवारी
प्रेमसिंह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विषय-सूची

खंड अ—अपठित बोध

1. अपठित गद्यांश—साहित्यिक 3—38
2. अपठित गद्यांश—वर्णनात्मक 39—61
3. अपठित काव्यांश 62—71

खंड ब—रचना

4. निबंध लेखन 75—123

(अ) विचारात्मक निबंध
1. पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं
2. पर उपदेश कुशल बहुतेरे
3. करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान
4. मानव व धर्म
5. तेते पाँव पसारिए जेती लंबी सौर
6. परोपकार
7. मन के हारे हार है, मन के जीते जीत
8. सत्संगति सब विधि हितकारी
9. समय का सदुपयोग
10. विपत्ति कसौटी जो कसे सोई साँचे मीत
11. चरित्र-बल
12. जब आवै संतोष धन, सब धन धूरि समान
13. जहाँ चाह वहाँ राह
14. परिश्रम का महत्व
15. दैव दैव आलसी पुकारा
16. दया धर्म का मूल है

(ब) खेल, स्वास्थ्य, समाचार-पत्र, विज्ञान, यात्रा आदि
17. विज्ञापन व हमारा जीवन
18. विज्ञान: वरदान या अभिशाप
19. जीवन में खेलकूद का महत्त्व
20. समाचार पत्र के लाभ
21. मेरा प्रिय खेल
22. कबड्डी: भारतीय खेल
23. स्वास्थ्य और व्यायाम
24. कम्प्यूटर का महत्त्व
25. टेलीविजन: वरदान या अभिशाप
26. दैनिक जीवन में विज्ञान
27. पर्यटन का महत्त्व

(स) राष्ट्रीय सामाजिक समस्याएँ
28. भिखारी समस्या
29. बेरोजगारी: समस्या व समाधान
31. प्रदूषण की समस्या
32. शहर के जीवन में प्रदूषण
33. दहेज प्रथा: एक अभिशाप
34. सांप्रदायिकता एक अभिशाप
35. आतंकवाद की समस्या
36. भ्रष्टाचार की समस्या
37. लड़का-लड़की एक समान
38. जनसंख्या वृद्धि: एक अभिशाप

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(द) विद्यार्थी-संबंधी
39. पुस्तकों का महत्त्व
40. विद्यार्थी व अनुशासन
41. विद्यार्थी व राजनीति
42. आदर्श विद्यार्थी
43. छात्र और शिक्षक
44. मेरे जीवन का लक्ष्य
45. मेरा आदर्श शिक्षक
46. मेरी प्रिय पुस्तक
47. पुस्तकालय व उसका सदुपयोग
48. यदि मैं पुलिस अधिकारी होता
49. यदि मैं शिक्षा मंत्री होता
50. यदि मैं अपने विद्यालय की प्रधानाचार्या होती
51. शिक्षा का गिरता स्तर

(य) त्यौहार, ऋतु तथा दर्शनीय-स्थल
52. पर्वतीय सौंदर्य
53. मेले का वर्णन
54. बसंत ऋतु
55. रेलवे-स्टेशन का दृश्य
56. वन महोत्सव

(र) राष्ट्रीय महत्त्व के निबंध
57. देश-प्रेम
58. कैसा शासन बिन अनुशासन
59. भारतीय मजदूर
60. भारत-पाक संबंध
61. सैनिक की आत्मकथा
62. मेरे सपनों का भारत
63. आदर्श नागरिक
64. हमारा भारत
65. इक्कीसवीं सदी का भारत
66. भारतीय संस्कृति : अनेकता में एकता
67. राष्ट्रीय एकता
68. यदि मैं प्रधानमंत्री होता
69. यदि मैं सैनिक होता
70. गणतंत्र दिवस
71. भारतीय गाँव
72. भारत की राजधानी दिल्ली
73. भारतीय कृषक
74. राष्ट्रभाषा हिंदी
75. हिंदी दिवस

5. पत्र लेखन **124—182**

I. अनौपचारिक (व्यक्तिगत) पत्र
1. शुभकामनाओं हेतु पत्र
2. बधाई हेतु पत्र
3. धन्यवाद हेतु पत्र
4. संवेदना व्यक्त करने हेतु पत्र
5. निमंत्रण हेतु पत्र
6. विविध प्रायोजनों हेतु पत्र

II. औपचारिक पत्र
1. प्रार्थना पत्र
2. धन्यवाद पत्र
3. शुभकामना पत्र
4. बधाई पत्र
5. आवेदन पत्र
6. व्यावसायिक पत्र
7. संपादकीय पत्र
8. शिकायती पत्र

6. संवाद लेखन **183—188**
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खंड स—मौखिक अभिव्यक्ति

7. **मौखिक अभिव्यक्ति** 191—236

1. श्रवण

(क) अनुच्छेद श्रवण

(ख) वार्तालाप श्रवण

(ग) कविता श्रवण

(घ) वाद-विवाद श्रवण

2. बोलना

(क) वाद-विवाद

(ख) कविता सुनाना

(ग) बातचीत या संवाद

(घ) परिचर्चा

(ङ) धन्यवाद देना व कृतज्ञता व्यक्त करना

(च) संवेदना व्यक्त करना

(छ) बधाई देना

(ज) मित्रों के साथ बातचीत

(झ) पास-पड़ोस में संपर्क

(ञ) कार्यक्रम प्रस्तुति/उद्घोषणा/सभा संचालन

(ट) परिचय कराना

(ठ) परिचय लेना

(ड) अपना परिचय कराना

(ढ) स्वागत करना

(ण) कहानी कहना

(त) चित्र देखकर कहानी सुनाना

(थ) भावानुकूल संवाद वाचन

खंड द—व्यावहारिक व्याकरण—IX

8. **हिंदी भाषा एवं व्याकरण** 239—253

1. साधारण परिचय
2. वर्ण विचार एवं वर्तनी
3. शब्द निर्माण
4. संधि
5. समास
6. शब्द-भंडार
7. पद (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय)
9. वाक्य रचना
10. वाक्य के भेद
11. अलंकार

9. **विशेषण—लिंग और वचन का प्रभाव** 254—279

1. लिंग
2. वचन
3. विशेषण

10. **क्रिया पर परसर्ग 'ने' का प्रभाव** 280—288

1. धातु
2. काल
3. पक्ष
4. परसर्ग 'ने' का क्रिया पर प्रभाव

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

11. वाक्य रचना—सरल व संयुक्त 289—300
1. सरल वाक्य
2. संयुक्त वाक्य
3. वाक्य-विश्लेषण
4. वाक्य-संश्लेषण
5. वाक्य-रूपांतरण

12. पर्यायवाची, विलोम व श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द 301—322
1. पर्यायवाची या समानार्थी शब्द
2. श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द
3. विलोम शब्द

13. मुहावरे 323—340

खंड य—व्यावहारिक व्याकरण—X

14. क्रिया भेद : अकर्मक, सकर्मक 343—353

15. अव्यय 354—364
1. क्रियाविशेषण अव्यय
2. समुच्चयबोधक अव्यय
3. संबंधबोधक अव्यय
4. विस्मयादिबोधक अव्यय
5. निपात

16. वाक्य भेद 365—376
1. मिश्रवाक्य
2. वाक्य-विश्लेषण
3. वाक्य-संश्लेषण
4. वाक्य रूपांतरण

17. वाच्य—कर्तृवाच्य एवं अकर्तृवाच्य 377—385
1. वाच्य
2. वाच्य परिवर्तन

18. समास 386—397
1. तत्पुरुष समास
2. कर्मधारय समास
3. द्विगु समास
4. द्वंद्व समास
5. बहुव्रीहि समास
6. अव्ययीभाव समास

19. अनेकार्थी शब्द 398—402

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पाठ्यक्रम

कक्षा 9

हिंदी : पाठ्यक्रम 'ए'

एक प्रश्नपत्र | समय : 3 घंटे | पूर्णांक : 100

(क)	अपठित गद्यांश	20
(ख)	रचना भाग	15
(ग)	व्यावहारिक व्याकरण	15
(घ)	पाठ्य-पुस्तकें	
	क्षितिज	30
	पूरक-पुस्तक	10
(ङ)	मौखिक अभिव्यक्ति	10

खंड क—अपठित गद्यांश अंक : 20

1. दो गद्यांश : (i) साहित्यिक गद्यांश (450 से 700 शब्द) 12
2. (ii) वर्णनात्मक गद्यांश (लगभग 400 शब्द) 08

उपर्युक्त गद्यांशों से शीर्षक का चुनाव, विषय-वस्तु का बोध, भाषिक संरचना आदि पर अति लघुत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे।

खंड ख—रचना भाग अंक : 15

3. (i) संकेत-बिंदुओं पर आधारित किसी एक आधुनिक विषय पर लगभग 200 शब्दों मे निबंध-लेखन। 10
4. (ii) संवाद-लेखन/पत्र-लेखन 05

खंड ग—व्यावहारिक व्याकरण 15

5. (i) विशेषण, लिंग और वचन का विशेषण पर प्रभाव 03
6. (ii) परसर्ग 'ने' का क्रिया पर प्रभाव 03
7. (iii) वाक्य रचना—सरल और संयुक्त वाक्य 03
8. (iv) पर्यायवाची, विलोम, श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द 03
9. (v) मुहावरे 03

खंड ङ—मौखिक अभिव्यक्ति अंक : 10

ङ-1. श्रवण 05

वर्णित या पठित सामग्री को सुनकर अर्थग्रहण करना। वार्तालाप, वाद-विवाद, भाषण, कविता-पाठ आदि को सुनकर समझना, मूल्यांकन करना और अभिव्यक्ति के ढंग को जानना।

ङ-2. बोलना 05

(i) भाषण, वाद-विवाद
(ii) गति, लय, आरोह-अवरोह सहित सस्वर कविता-वाचन
(iii) वार्तालाप और उसकी औपचारिकताएँ
(iv) कार्यक्रम-प्रस्तुति
(v) कथा-कहानी अथवा घटना सुनाना
(vi) परिचय देना, परिचय प्राप्त करना
(vii) भावानुकूल संवाद-वाचन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वार्तालाप की दक्षताएँ

टिप्पणी : वार्तालाप की दक्षताओं का मूल्यांकन निरंतरता के आधार पर परीक्षा के समय होगा। निर्धारित 10 अंकों में से 5 श्रवण (सुनना) के मूल्यांकन के लिए और 5 वाचन (बोलना) के मूल्यांकन हेतु होंगे।

श्रवण (सुनना) का मूल्यांकन

परीक्षक किसी प्रासंगिक विषय पर एक अनुच्छेद का स्पष्ट वाचन करेगा। अनुच्छेद तथ्यात्मक या सुझावात्मक हो सकता है। अनुच्छेद लगभग 200 शब्दों का होना चाहिए। परीक्षक को सुनते-सुनते परीक्षार्थी अलग कागज़ पर दिए हुए श्रवण बोधन के अभ्यासों को हल कर सकेंगे। अभ्यास रिक्त स्थान पूर्ति, बहुविकल्पी अथवा सत्य/असत्य का चुनाव आदि विधाओं में हो सकते हैं। प्रत्येक आधे अंक के लिए 10 परीक्षण प्रश्न होंगे।

वाचन (बोलना) का परीक्षण

1. **चित्रों के क्रम पर आधारित वर्णन :** इस भाग में अपेक्षा की जायेगी कि परीक्षार्थी विवरणात्मक भाषा का प्रयोग करें।
2. **किसी चित्र का वर्णन :** ये चित्र लोगों के या स्थानों के हो सकते हैं।
3. किसी निर्धारित विषय पर बोलना जिससे वह अपने व्यक्तिगत अनुभव का प्रत्यास्मरण कर सके।
4. कोई कहानी सुनाना या किसी घटना का वर्णन करना।

टिप्पणी

1. परीक्षण से पूर्व परीक्षार्थी को तैयारी के लिए कुछ समय दिया जायेगा।
2. विवरणात्मक भाषा में वर्तमान काल का प्रयोग अपेक्षित है।
3. निर्धारित विषय परीक्षार्थी के अनुभव संसार के हों जैसे : कोई चुटकुला या हास्य-प्रसंग सुनाना, हाल में पढ़ी पुस्तक या देखे गए सिनेमा की कहानी सुनाना।
4. जब परीक्षार्थी बोलना प्रारंभ कर दे तो परीक्षक कम से कम हस्तक्षेप करें।

कौशलों के अंतरण का मूल्यांकन

श्रवण (सुनना)	वाचन (बोलना)
1. विद्यार्थी से परिचित संदर्भों में प्रयुक्त शब्दों और पदों को समझने की सामान्य योग्यता है, किंतु सुसंबद्ध आशय को नहीं समझ पाता।	1. शिक्षार्थी केवल अलग-अलग शब्दों और पदों के प्रयोग की योग्यता प्रदर्शित करता है किंतु एक सुसंबद्ध उत्तर पर नहीं बोल सकता।
2. छोटे संबद्ध कथनों को परिचित संदर्भों में समझने की योग्यता है।	2. परिचित संदर्भों में केवल छोटे संबद्ध कथनों का सीमित शुद्धता से प्रयोग करता है।
3. परिचित या अपरिचित दोनों संदर्भों में कथित सूचना को स्पष्ट समझने की योग्यता है। अशुद्धियाँ करता है जिससे प्रेषण में रुकावट आती है।	3. अपेक्षाकृत दीर्घ भाषण में अधिक जटिल कथनों के प्रयोग की योग्यता प्रदर्शित करता है; अभी भी कुछ अशुद्धियाँ करता है। जिससे प्रेषण में रुकावट आती है।
4. दीर्घ कथनों की श्रृंखला को पर्याप्त शुद्धता से समझता है और निष्कर्ष निकाल सकता है।	4. अपरिचित स्थितियों में विचारों को तार्किक ढंग से संगठित कर धारा प्रवाह रूप में प्रस्तुत कर सकता है ऐसी गलतियों करता है जिनसे प्रेषण में रुकावट नहीं आती।
5. जटिल कथनों के विचा-बिंदुओं को समझने की चेष्टा करता है, उद्देश्य के अनुकूल सुनने की कुशलता प्रदर्शित करता है।	5. उद्देश्य और श्रोता के लिए उपयुक्त शैली को अपना सकता है, केवल मामूली गलतियाँ करता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कक्षा 10
हिंदी : पाठ्यक्रम 'ए'
(कोड संख्या 002)

एक प्रश्नपत्र | समय : 3 घंटे | पूर्णांक : 100

(क)	अपठित गद्यांश	20
(ख)	रचना भाग	15
(ग)	व्यावहारिक व्याकरण	15
(घ)	पाठ्य-पुस्तकें	
	क्षितिज	40
	पूरक-पुस्तक	10

खंड क—अपठित बोध अंक : 20

1. **अपठित गद्यांश** (450 से 700 शब्द) 12
   इसके अंतर्गत शीर्षक का चुनाव, विषय वस्तु का बोध, भाषिक विशेषताओं पर सात प्रश्न पूछे जायेंगे। (दो अति लघुत्तरात्मक एवं पाँच लघुत्तरात्मक प्रश्न)
2. **अपठित काव्यांश** (300 से 450 शब्द) 08
   दो काव्यांशों में से एक करना है। पाँच प्रश्न पूछे जायेंगे। (दो अति लघुत्तरात्मक एवं तीन लघुत्तरात्मक प्रश्न)

खंड ख—रचना भाग अंक : 15

3. (i) संकेत-बिंदुओं पर आधारित किसी एक आधुनिक विषय पर लगभग 200 शब्दों मे निबंध-लेखन। 10
4. (ii) पत्र-लेखन 05

खंड ग—व्यावहारिक व्याकरण 15

5. (i) क्रिया भेद : अकर्मक/सकर्मक 03
6. (ii) अव्यय : समुच्चयबोधक, क्रियाविशेषण और अन्य अविकारी शब्द 03
7. (iii) वाक्य-भेद : मिश्र वाक्य 03
8. (iv) वाच्य-कर्तृ, अकर्तृ वाच्य 03
9. (v) समास, अनेकार्थी शब्द 03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खंड—अ

अपठित बोध

20 अंक

पाठ्यक्रम एवं अंक-वितरण

	अंक
◆ गद्यांश	
(क) अपठित साहित्यिक गद्यांश (450 से 700 शब्द) (कक्षा IX व X)	12
(ख) अपठित वर्णनात्मक गद्यांश (लगभग 400 शब्द) (कक्षा IX)	08
अथवा	
(ग) अपठित काव्यांश (कक्षा X)	08
योग	20

नोट: सी०बी०एस०ई० की नई परीक्षा प्रणाली के अंतर्गत इस वर्ष कक्षा 10 में वर्णनात्मक गद्यांश के स्थान पर अपठित काव्यांश पूछा जायेगा। कक्षा IX में साहित्यिक व वर्णनात्मक अपठित गद्यांश पूर्ववत् ही पूछे जायेंगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

1

अपठित गद्यांश—साहित्यिक

दो प्रकार के गद्यांश वार्षिक परीक्षा में पूछे जायेंगे—साहित्यिक गद्यांश व वर्णनात्मक गद्यांश।

साहित्यिक गद्यांश : गद्यांश की शब्द-संख्या 450—700 शब्द तक होगी। इसमें से 12 प्रश्न पूछे जायेंगे। सभी प्रश्न अति लघूरात्मक होंगे। सभी प्रश्नों का एक-एक अंक होगा। प्रश्नों के उत्तर एक शब्द में भी दिए जा सकते हैं, दो-चार शब्दों में भी तथा एक-दो वाक्यों में भी। विशेषतया तीन प्रकार के प्रश्न पूछे जायेंगे—(क) शीर्षक का चुनाव, (ख) विषय-वस्तु के बोध से संबंधित, एवं (ग) भाषिक संरचना संबंधी।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न विषय-वस्तु के बोध संबंधी प्रश्नों में पूछे जायेंगे। इसमें विद्यार्थी के ज्ञान की परीक्षा होगी। भाषिक संरचना संबंधी प्रश्न में किसी मुहावरे, शब्द, वाक्यांश, पदबंध या वाक्य का अर्थ पूछा जा सकता है। साहित्यिक गद्यांश के अंतर्गत किसी उपन्यास, कहानी, जीवनी, निबंध, संस्मरण या विचार का अंश पूछा जा सकता है। इसके शब्दों के अर्थ भी साहित्यिक होने के कारण सांकेतिक होंगे। अत: छात्र संकेतार्थ को स्पष्ट रूप से समझने का प्रयास करें। किसी शब्द का अर्थ लिखते समय उसके कोषगत अर्थ को महत्व न देकर उसके संदर्भगत अर्थ पर ध्यान दें। वर्णनात्मक गद्यांश की शब्द संख्या 300—400 के मध्य होगी जिसमें 8 प्रश्न पूछे जायेंगे। सभी प्रश्नों के अंक 1-1 होंगे। इसमें से पूछे जाने वाले प्रश्नों के प्रकार साहित्यिक गद्यांश के अनुसार ही होंगे। केवल इस गद्यांश के स्वरूप में अंतर होगा। यह गद्यांश साहित्यिक न होकर वर्णनात्मक होगा। नीचे कुछ गद्यांश तथा उनसे संबंधित प्रश्नोत्तर प्रस्तुत हैं—

1

जाकिर साहब के बारे में कुछ बातें अविस्मरणीय हैं। 13 मई 1967 को राष्ट्रपति का पद संभालते हुए उन्होंने कहा था, ''सारा भारत मेरा घर है, मैं सच्ची लगन से इस घर को मजबूत और सुंदर बनाने की कोशिश करूँगा ताकि वह मेरे महान देशवासियों का उपयुक्त घर हो जिसमें इंसाफ और खुशहाली का अपना स्थान हो।'' उनकी विनम्रता ऐसी थी कि उन्होंने कहा था, ''मैं स्वीकार करता हूँ कि हमारी जनता ने इस उच्चतम पद के लिए निर्वाचित करके, मुझ पर जो विश्वास प्रकट किया है उससे में बहुत प्रभावित हुआ हूँ। यह भावना इस वजह से और भी प्रबल हो जाती है कि भारत के महान सपूत डॉ० राधाकृष्णन के बाद मुझे इस पद को संभालने का सौभाग्य मिला है।''

वे भारत के असली सपूत थे, इसका सबूत उन्होंने पदारुढ़ होने के एक दिन पहले तब दिया जब वे दिल्ली में श्रृंगेरी के जगद्‌गुरु शंकराचार्य से भेंट करने गए। उनके सामने पुष्प फल रखते हुए उन्होंने कहा था—आपका आशीर्वाद चाहिए और शंकराचार्य ने उनके सिर पर हाथ रख कर उन्हें आशीर्वाद दिया था। ऐसी ही एक और घटना याद आती है। वे राष्ट्रपति निवास के अहाते में एक दिन सवेरे घूम रहे थे तो देखा कि माली के घर में कीर्तन हो रहा है। वे टहलते हुए उधर चले गए और सबके साथ दरी पर बैठ गए। जब कुर्सी लाने के लिए कहा गया तो बोले, ''भगवान के घर में सब बराबर होते हैं।'' और दरी पर ही बैठे रहे। पटियाला में पंजाबी विश्वविद्यालय में गुरु गोविन्द सिंह के संस्थान की नींव रखने को आपसे कहा गया तो बोले, ''आपने मुझे इस पवित्र संस्थान की नींव रखने को कहा है। इससे मुझे याद आता है कि अमृतसर में दरबार साहब की नींव रखने के लिए भी एक मुसलमान को ही बुलाया गया था।'' यह कहते-कहते उनका गला भर आया, आँखों से आँसू बहने लगे।

अपने साफ़-सुथरे सुरुचिपूर्ण खादी के कपड़ों और सुरुचि से सँवारी सफेद दाढ़ी के बीच चमकते हलके गुलाबी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गौर वर्ण मुखमंडल से जाकिर साहब प्रेम और आत्मीयता में गाँधीजी के अंतिम उत्तराधिकारी नज़र आते थे। देश के आने वाले बच्चे बापू को भूल न जाएँ, इस संबंध में उन्होंने एक बार कहा था ''आप आज्ञा दें तो इस अवसर से लाभ उठाकर गाँधीजी के संबंध में आपसे कुछ कहूँ। उनको जानने और समझने से उनके काम को समझना और उसमें जी-जान से लगना जरा सरल हो सकता है। यह मैं इसलिए भी करना चाहता हूँ कि अब दिन पर दिन उन लोगों की संख्या घट रही है जिन्होंने गाँधीजी को देखा था, उनके साथ काम किया था, उनके बताए रास्ते पर चले थे। अब नया काल होगा, नए हाथ होंगे, नए जंजाल होंगे, ऐसा न हो कि यह नई नस्ल गाँधीजी और उनके कार्यों की तह में जो विचार थे उन्हें भुला बैठे। ऐसा हुआ तो हमारी सबसे मूल्यवान पूँजी बरबाद हो जायेगी।''

एक बार रामलीला में जनता ने उनसे रामचंद्रजी का तिलक करने को कहा। वे खुशी से आए और तिलक किया। इस पर कुछ उर्दू अखबारों ने एतराज़ किया। ज़ाकिर साहब ने जवाब दिया, ''इन नादानों को मालूम नहीं है कि मैं भारत का राष्ट्रपति हूँ किसी खास धर्म का नहीं।''

प्रश्न—1. प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।

2. राष्ट्रपति बनने के बाद सबसे पहले डॉ० ज़ाकिर हुसैन ने किसका आशीर्वाद प्राप्त किया?
3. किस अवसर पर उनकी आँखें भर आई थीं?
4. राष्ट्रपति पद की शपथ लेते समय डॉ० ज़ाकिर हुसैन ने क्या कामना प्रकट की थी?
5. वे अपने माली के घर कीर्तन में दरी पर क्यों बैठ गए थे?
6. किस विशेषता के कारण वे गाँधीजी के अंतिम उत्तराधिकारी नज़र आते थे?
7. 'जी-जान से लगना' का आशय स्पष्ट कीजिए।
8. किसे सबसे मूल्यवान पूँजी कहा गया है?
9. 'ऐतराज' और 'नादान' शब्दों के हिन्दी में समानार्थक लिखिए।
10. 'सपूत' का तत्सम शब्द लिखिए।
11. उर्दू अखबारों ने उनकी किस बात पर एतराज किया?
12. उन्होंने उर्दू अखबार वालों को क्या जवाब दिया?

उत्तर—1. सरल-हृदय डॉ० ज़ाकिर हुसैन।

2. राष्ट्रपति बनने के बाद सबसे पहले डॉ० ज़ाकिर हुसैन ने जगद्गुरु शंकराचार्य का आशीर्वाद प्राप्त किया।
3. पंजाबी विश्वविद्यालय में गुरु गोविन्द सिंह संस्थान की नींव रखते समय उनकी आँखों में आँसू आ गए थे।
4. राष्ट्रपति पद की शपथ लेते समय ज़ाकिर हुसैन ने भारत को मजबूत, सुंदर, इंसाफ-पसंद व खुशहाल बनाने की कामना प्रकट की थी।
5. उनके विचार में भगवान के घर सब बराबर थे। इसलिए वे अपने माली के घर कीर्तन में दरी पर बैठ गए थे।
6. प्रेम और आत्मीयता से सराबोर होने के गुणों के कारण वे गाँधीजी के अंतिम उत्तराधिकारी नज़र आते थे।
7. पूर्ण जोर लगाना।
8. महात्मा गाँधी व उनके कार्यों को याद रखना देश की सबसे मूल्यवान पूँजी कहा गया है।
9. 'ऐतराज' का समानार्थक 'विरोध' व 'नादान' का समानार्थक है 'अल्पबुद्धि'।
10. सुपुत्र।
11. डॉ० ज़ाकिर हुसैन ने रामलीला में राम की भूमिका निभाने वाले पात्र के माथे पर तिलक किया था। उर्दू अखबारों ने उनकी इस बात का विरोध किया था।
12. डॉ० ज़ाकिर हुसैन ने उर्दू अखबार वालों को कहा कि अब वे पूरे भारत के राष्ट्रपति हैं, किसी खास धर्म के प्रतिनिधि नहीं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2

प्रत्येक संप्रदाय के लोग अपने-अपने धर्म और अपनी-अपनी संस्कृति के अनुकूल जीवन-यापन करने में स्वतंत्र हैं। राष्ट्र किसी धर्म और संस्कृति में बाधक नहीं है तथा न ही एक संप्रदाय को दूसरे संप्रदाय के धर्म और संस्कृति में बाधक होना चाहिए क्योंकि धर्म एकता का द्योतक है। उसे पार्थक्य का साधन न बनाना चाहिए। जो संप्रदाय अपने धर्म का आदर चाहता है उसको दूसरे धर्म का आदर करना चाहिए। सब धर्म मूल में एक ही हैं, सभी धर्म मनुष्य के साथ सद्व्यवहार सिखाते हैं, ईश्वर किसी विशेष धर्म या जाति का नहीं। सर्वव्यापक किसी एक संप्रदाय में सीमित नहीं हो सकता।

सांप्रदायिक सद्भाव और सौहार्द बनाए रखने के लिए हमें यह हमेशा याद रखना चाहिए कि प्रेम से प्रेम और विश्वास से विश्वास उत्पन्न होता है और यह भी नहीं भूलना चाहिए कि घृणा से घृणा का जन्म होता है, जो दावाग्नि की तरह सबको जलाने का काम करती है। महात्मा गाँधी घृणा को प्रेम से जीतने में विश्वास करते थे। उन्होंने सर्वधर्म समभाव द्वारा सांप्रदायिक घृणा को मिटाने का आजीवन प्रयत्न किया। हिंदू और मुसलमान दोनों की धार्मिक भावनाओं को समान आदर की दृष्टि से देखा। सभी धर्म आत्मा की शांति के लिए भिन्न-भिन्न उपाय और साधन बताते हैं। धर्मों में छोटे-बड़े का कोई भेद नहीं है। सभी धर्म सत्य, प्रेम, समता, सदाचार और नैतिकता पर बल देते हैं। इसलिए धर्म के मूल में पार्थक्य या भेद नहीं है।

हम अनेक छोटे-बड़े घेरों में बँटे हुए हैं। कोई धर्म का घेरा है तो कोई जाति का, कोई देश का घेरा है तो कोई समाज और वंश-परिवार का। इन घेरों में बँधकर हम भूल गए हैं कि हम सबसे पहले मनुष्य हैं—प्रेम, त्याग, करुणा और सहानुभूति से भरे मनुष्य; एक-दूसरे के दुःख-सुख से विचलित और प्रभावित होने वाले मनुष्य हैं। अपनी इस बहुमूल्य मनुष्यता को भुलाकर कहीं हम धन, शक्ति, सत्ता और शिक्षा के अहंकार में चूर होकर दूसरों को मनुष्य ही नहीं समझते; कभी हम अपने धर्म को सबसे श्रेष्ठ मानकर शेष सभी धर्मों को झूठ और भ्रमों से भरा हुआ समझते हैं। अपने ही रीति-रिवाजों को सर्वोत्तम मानकर हम दूसरों के रीति-रिवाजों की खिल्ली उड़ाया करते हैं। सत्य यह है कि संसार का हर धर्म अच्छाइयों और सच्चाइयों में विश्वास करता है।

मानव जाति एक ही है तो भी देश और काल के व्यवधान से वह अनेक खंडों में विभक्त हो गई है। धर्म के समान साहित्य का भी यही उद्देश्य है कि वह मनुष्यों को एक-दूसरे से पृथक् रखने वाले इस व्यवधान को हटा दें। यदि यह कभी सम्भव हो जाए, तो हम पृथ्वी पर सौंदर्य का यथार्थ रूप देख लें परंतु भिन्नता दूर होने के स्थान पर बढ़ रही है। धार्मिक क्षेत्र में जब कभी किसी महात्मा ने मानव-जाति को एक करने की चेष्टा की, तब न केवल उसकी चेष्टा व्यर्थ हुई, बल्कि उससे संसार में भेदभाव की संख्या बढ़ाने वाले एक और नये पंथ की सृष्टि हो गई है। संसार में जितने भी धर्म प्रचलित हैं, उन सबका प्रारंभ इसी उद्देश्य से हुआ था। तो भी हम देखते हैं कि उन्हीं से संसार में पारस्परिक विद्वेष और घृणा के भाव फैले हैं।

मानव को कभी धर्मांध नहीं होना चाहिए। हमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सोचना चाहिए। हमें अर्थ जानने का प्रयत्न करना चाहिए। यह हमारे समाज की विडंबना है कि कुछ लोगों की रोजी रोटी केवल धर्मांध को बढ़ावा देने से ही चलती है। वे अपने स्वार्थों की पूर्ति हेतु किसी भी सीमा को लांघ सकते हैं। हमें आज भी किसी राजा राममोहन राय की आवश्यकता है। परंतु समय के साथ-साथ कुरीतियाँ समाप्त होती जा रहीं हैं। समाज वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने लगा है, परंतु अभी कदाचित् समय लगेगा। *(Delhi 2002 C)*

प्रश्न—1. राष्ट्रीय एकता के लिए क्या आवश्यक है?

2. 'पार्थक्य' शब्द का क्या तात्पर्य है?
3. धर्म के संदर्भ में राष्ट्र की क्या भूमिका है?
4. अपने धर्म का आदर चाहने वाले का क्या कर्तव्य बनता है?
5. इस गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

6. सांप्रदायिक सद्भाव की हमारे जीवन में क्या और क्यों आवश्यकता है?
7. सभी धर्मों की समान विशेषता क्या है?
8. महात्मा गाँधी किसमें विश्वास रखते थे?
9. हम आज किस-किस प्रकार के घेरों में घिरे हैं?
10. अहंकार में चूर होकर हम दूसरों के विषय में क्या सोचते हैं?
11. धर्म के संदर्भ में क्या बात सच है?
12. साहित्य का क्या उद्देश्य है?

उत्तर—1. राष्ट्रीय एकता के लिए आवश्यक है कि सभी लोग अपने धर्मों को सौहार्दपूर्ण मनाएँ व किसी अन्य के संप्रदाय में दोषारोपण न करें।
2. 'मतभेद'।
3. राष्ट्र किसी धर्म और संस्कृति में बाधक नहीं है क्योंकि धर्म एकता का द्यौतक है।
4. अपने धर्म का आदर चाहने वाले का कर्तव्य बनता है कि वह भी दूसरों के धर्म का आदर करे।
5. राष्ट्र व धर्म।
6. सांप्रदायिक सद्भाव व सौहार्द से प्रेम व एकता की उत्पत्ति होती है तथा राष्ट्र मजबूत बनता है।
7. सभी धर्म सत्य, प्रेम, समता, सदाचार और नैतिकता पर बल देते हैं। किसी भी धर्म में छोटे-बड़े का भेद नहीं है।
8. महात्मा गाँधी घृणा के प्रति घृणा में विश्वास नहीं रखते थे। वे घृणा के बदले प्रेम में विश्वास रखते थे।
9. हम अनेक प्रकार के धार्मिक, जाति, देश, समाज व वंश आदि के घेरों में घिरे हैं।
10. हम अहंकार में चूर होकर मनुष्य को मनुष्य नहीं समझते। हम स्वयं को श्रेष्ठ व दूसरों को नीच समझने लगते हैं।
11. धर्म के विषय में सच्चाई यह है कि संसार का हर धर्म अच्छाइयों व सच्चाइयों में विश्वास करता है।
12. साहित्य का उद्देश्य मनुष्य का बुद्धि का विकास करना है।

3

मेरे पिता करमचंद गाँधी थे। वे राजकोट के दीवान थे। वे सत्यप्रिय, न्यायप्रिय, साहसी और उदार व्यक्ति थे। मेरी माता का स्वभाव बहुत अच्छा था। वे धार्मिक विचारों की महिला थीं। पूजा-पाठ किए बिना भोजन नहीं करती थीं। 2 अक्तूबर सन् 1869 को गुजरात के पोरबंदर नामक स्थान पर मेरा जन्म हुआ। पोरबंदर से पिताजी जब राजकोट गए, तब मेरी आयु सात वर्ष की होगी। पाठशाला से फिर ऊपर के स्कूल में और वहाँ से हाई स्कूल में गया।

मुझे यह याद नहीं है कि मैंने कभी भी किसी शिक्षक या किसी लड़के से झूठ बोला हो। मैं बहुत संकोची था।

एक बार पिताजी 'श्रवण-पितृभक्ति' नामक नाटक की एक किताब खरीद लाए थे। मैंने उसे बड़े शौक से पढ़ा। उन्हीं दिनों शीशे में तस्वीर दिखाने वाले लोग आया करते थे। तभी मैंने अपने अंधे माता-पिता को बहँगी पर बैठाकर ले जाने वाले श्रवण कुमार का चित्र देखा। इन बातों का मेरे मन पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। मन ही मन मैंने कहा कि मैं भी श्रवण की तरह बनूँगा।

मैंने 'सत्यवादी हरिश्चंद्र' नाटक भी देखा। नाटक देखने के बाद बार-बार उसे देखने की इच्छा होती और रात में हरिश्चंद्र के सपने आते। बार-बार मेरे मन में यह बात उठती कि सभी हरिश्चंद्र की तरह सत्यवादी क्यों न बनें। यही बात मन में बैठ गई कि चाहे हरिश्चंद्र की भाँति दुःख उठाना पड़े पर सत्य को कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

अभी मैं तेरह वर्ष का था तो मेरा विवाह कस्तूरबा के साथ कर दिया गया। मगर मेरी पढ़ाई चलती रही। पाँचवी और छठी कक्षा में तो छात्रवृत्तियाँ भी मिली थीं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपने आचरण की ओर मैं बहुत ध्यान देता था। इसमें यदि कोई भूल हो जाती तो मेरी आँखों में आँसू भर आते। शिक्षक का कुछ कहना ही मेरे लिए असह्य हो जाता। अपने से बड़ों तथा शिक्षकों का अप्रसन्न होना मुझसे सहन नहीं हो पाता था।

मैंने पुस्तकों में पढ़ा था कि खुली हवा में घूमना स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है। यह बात मुझे अच्छी लगी और तभी से मैंने सैर करने की आदत डाल ली। सैर करना भी एक प्रकार का व्यायाम करना ही है। इससे मेरा शरीर मजबूत हो गया।

एक भूल की सजा मैं आज तक पा रहा हूँ। पढ़ाई में अक्षर अच्छे होने की जरूरत नहीं, यह गलत विचार मेरे मन में इंग्लैंड जाने तक रहा। आगे चलकर दूसरों के मोती जैसे अक्षर देखकर मैं बहुत पछताया। मैंने देखा कि अक्षर बुरे होना अपूर्ण शिक्षा की निशानी है। बाद में मैंने अपने अक्षर सुधारने का प्रयत्न किया। परंतु पके घड़े पर कहीं मिट्टी चढ़ सकती है।

सुलेख शिक्षा का जरूरी अंग है। उसके लिए चित्रकला सीखनी चाहिए। बालक जब चित्रकला सीखकर चित्र बनाना जान जाता है, तब यदि अक्षर लिखना सीखे तो उसके अक्षर मोती जैसे हो जाते हैं।

मेरे संस्कृत-शिक्षक काम लेने में बड़े सख्त थे। फारसी के शिक्षक नरम थे। विद्यार्थी आपस मे बातें भी करते कि फारसी बड़ी सरल है। यह सुनकर मैं ललचाया और एक दिन फारसी की कक्षा में जा बैठा। यह देखकर संस्कृत के शिक्षक ने मुझे बुलाया और समझाया, ''तुमको संस्कृत समझने में कोई कठिनाई हो तो मुझे बताओ। मैं तो सब विद्यार्थियों को अच्छी तरह संस्कृत पढ़ाना चाहता हूँ। आगे चलकर उसमें रस ही रस है। देखो, हिम्मत न हारो। तुम फिर मेरी कक्षा में आकर बैठो।'' मैं उन शिक्षक के प्रेम के कारण इनकार न कर सका। आज भी मैं उनका उपकार मानता हूँ क्योंकि आगे चलकर मैंने समझा कि संस्कृत का अच्छा अध्ययन किए बिना न रहना चाहिए।

मैं हाई स्कूल में मंदबुद्धि विद्यार्थी नहीं माना जाता था। पर जहाँ तक याद है, मुझे कभी अपनी होशियारी का कोई गर्व नहीं रहा। इनाम या छात्रवृत्ति पाने पर मुझे आश्चर्य होता था। लेकिन अपने आचरण की मुझे बड़ी चिंता रहती थी। मेरे हाथों कोई ऐसा काम हो जिसके लिए शिक्षक मुझे दंड दें, तो यह मेरे लिए असह्य था। मुझे याद है कि एक बार मुझे मार खानी पड़ी थी। मुझे मार का दुःख न था, पर मैं दंड का पात्र समझा गया, इस बात का बड़ा दुःख था। यह बात पहली या दूसरी कक्षा की है।

प्रश्न—1. उपर्युक्त अवतरण का उचित शीर्षक लिखें।

2. गाँधी जी को माता-पिता की सेवा करने की प्रेरणा किससे मिली?
3. छात्रवृत्ति व असह्य शब्दों के अर्थ बताएँ।
4. 'पके घड़े पर कहीं मिट्टी चढ़ सकती है।' इस वाक्य का आशय स्पष्ट करें।
5. 'अक्षर मोती जैसे' होने का क्या अर्थ है?
6. 'दंड का पात्र' से क्या आशय है?
7. मेरा शरीर 'मजबूत' हो गया है। मज़बूत की जगह कोई अन्य पर्यायवाची शब्द रखिए।
8. 'विद्यार्थी' का संधिविच्छेद कीजिए।
9. गाँधीजी ने आजीवन सत्य का मार्ग नहीं छोड़ा, उन्हें सत्य की प्रेरणा कहाँ से मिली?
10. सुलेख शिक्षा का जरूरी अंग कैसे है?
11. गाँधीजी की आँखों में आँसू क्यों भर आते थे?
12. लेखक को दंड क्यों मिला?

उत्तर—1. गाँधीजी की आपबीती।

2. गाँधीजी को माता-पिता की सेवा करने की प्रेरणा 'श्रवण-पितृभक्ति' नामक नाटक पढ़कर मिली।
3. छात्रवृत्ति—पढ़ाई के लिए मिली प्रोत्साहन राशि, वजीफ़ा।
   असह्य—जो सहन न हो सके।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4. एक बार जो आदत बन जाये, उसे बदलना मुश्किल हो जाता है।
5. अक्षरों की बनावट सुंदर होना, लिखाई अच्छी होना।
6. दंड का पात्र—सजा दिए जाने योग्य।
7. सुदृढ़, सुगठित।
8. विद्या + अर्थी।
9. गाँधीजी को 'सत्यवादी हरिश्चंद्र' नाटक देखकर सत्य-पथ पर अडिग रहने की प्रेरणा मिली।
10. अच्छा लेख लिखने से लिखावट अच्छी होती है। सुंदर लेख सबको लुभाता है। अच्छा लेख अच्छी शिक्षा की निशानी है, अतः लेख शिक्षा का जरूरी अंग है।
11. अपने आचरण में जरा-सी भूल हो जाए तो गाँधी जी की आँखों में आँसू आ जाते थे।
12. क्योंकि लेखक व्यायाम के लिए समय पर नहीं पहुँच सका था।

4

मेरा जन्म मद्रास राज्य के टापू नगर रामेश्वरम् में एक मध्यम वर्गीय तमिल परिवार में हुआ। मेरे पिता जैनुलआबदीन के पास न तो औपचारिक शिक्षा थी और न ही अधिक धन था। इन अभावों के बावजूद उनके पास पैदाइशी बुद्धिमत्ता व सच्ची उदारता थी। मेरी माता आशियम्मा के रूप में उनके पास एक आदर्श सहायक था। मुझे ठीक से याद नहीं कि कितने लोगों को वह रोज भोजन कराती थीं, परन्तु मुझे विश्वास है कि हमारे परिवार के सदस्यों से कहीं अधिक संख्या में बाहर के लोग हमारे साथ भोजन करते थे।

मैं, अबुल कलाम, उनके बच्चों में से एक था जिसका जन्म लंबे और सुन्दर माता-पिता के घर हुआ था और जो स्वयं देखने में एक छोटा और सामान्य लड़का लगता था। हम अपने पैतृक मकान में रहते थे जिसे उन्नीसवीं सदी के मध्य में बनवाया गया था। यह एक काफी बड़ा पक्का मकान था जो कि ईंटों और चूने-कंकड़ से बना हुआ था। यह रामेश्वरम् में मस्जिद गली में स्थित था। मेरे पिताजी साधारण जीवन व्यतीत करते थे तथा अनावश्यक सुविधाओं और ऐश्वर्यों से दूर रहते थे। फिर भी हमारी सभी आवश्यक वस्तुएँ जैसे भोजन, वस्त्र अथवा दवाई आदि, उपलब्ध थीं। वास्तव में, मैं यही कहूँगा कि मेरा बचपन भौतिक तथा भावात्मक रूप से सुरक्षित था।

1939 में दूसरा विश्वयुद्ध आरंभ हो गया। उस समय मैं आठ वर्ष का था। अचानक बाजार में इमली के बीजों की माँग बहुत बढ़ गई। यद्यपि इसका कारण मैं आज तक नहीं समझ सका। मैं बीज इकट्ठे करता था और उन्हें मस्जिद गली में किराने की दुकान पर बेच देता था, इस प्रकार मुझे एक आने की भारी कमाई हो जाती थी। मेरे जीजाजी जलालुद्दीन मुझे युद्ध की कहानियाँ सुनाते, जिन्हें मैं 'दिनमान' की सुर्खियों में खोजने का प्रयास करता था।

अलग-थलग होने के कारण हमारा क्षेत्र युद्ध से कदापि प्रभावित नहीं हुआ था। परन्तु शीघ्र ही भारत को भी मित्र-राष्ट्रों की सेना के साथ युद्ध में शामिल होना पड़ा तथा आपातकालीन स्थिति की घोषणा कर दी गई। इसकी पहली हानि यह हुई कि रामेश्वरम् स्टेशन पर रेलगाड़ी का रुकना निलम्बित कर दिया गया। मेरा चचेरा भाई शम्सुद्दीन जो रामेश्वरम् में समाचार पत्र बाँटता था उन गठरियों को उठाने के लिए एक सहायक रखने पर मजबूर हो गया और मैं इस काम के लिए उपयुक्त था।

बचपन में मेरे तीन घनिष्ठ मित्र थे रमनधा शास्त्री, अरविन्दन और शिवाप्रकाशन। इन सब लड़कों का सम्बन्ध रूढ़िवादी हिन्दू ब्राह्मण परिवारों से था। बच्चों के रूप में हमने कभी भी अपने धार्मिक अन्तर और पालन-पोषण के कारण आपस में कोई भी मतभेद महसूस नहीं किया था। वास्तव में रमनधा शास्त्री रामेश्वरम् मंदिर के बड़े पुजारी पाक्सी लक्ष्मण का पुत्र था। बाद में उसने अपने पिता से रामेश्वरम् मन्दिर में पुजारी की गद्दी प्राप्त की। अरविन्दन आने वाले तीर्थयात्रियों को परिवहन उपलब्ध कराने के व्यापार में लग गया और शिवप्रकाशन दक्षिण रेलवे के लिए खान-पान का प्रबन्ध करने का ठेकेदार बन गया।

एक दिन जब मैं रामेश्वरम् प्रारम्भिक स्कूल में पाँचवी कक्षा में पढ़ता था, एक नया अध्यापक हमारी कक्षा में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आया। मैं एक टोपी पहनता था। जिससे मेरे मुसलमान होने का पता चल जाता था और मैं सदा पहली पंक्ति में रमनधा शास्त्री के साथ बैठता था जिसने एक पवित्र धागा पहना होता था। नया अध्यापक यह सहन न कर सका कि एक हिंदू पुजारी का बेटा एक मुसलमान लड़के के साथ बैठे। हमारे सामाजिक स्तर के अनुसार, जैसा कि नया अध्यापक समझता था, मुझे चलकर पिछले बेंच की सीट पर बैठने को कहा गया। मैं उदास हुआ। रमनधा शास्त्री भी उदास हुआ। जब मैं अन्तिम पंक्ति में अपनी सीट पर बैठा तो वह बहुत उदास दिखाई दिया। मेरे अन्तिम पंक्ति में जाने पर उसके रोते हुए चेहरे ने मुझ पर अमिट छाप छोड़ी।

स्कूल के पश्चात् हम घर वापस आए और हमने अपने-अपने माता-पिता को यह घटना सुनाई। लक्ष्मण शास्त्री ने उस अध्यापक को बुलाया और हमारी उपस्थिति में उसे कहा कि वह भोले-भाले बच्चों के दिलों में सामाजिक असमानता व सांप्रदायिक असहनशीलता का विष न फैलाए। उसने स्पष्ट रूप से अध्यापक को कहा कि या तो वह क्षमा माँगे या फिर स्कूल छोड़ दे और द्वीप से चला जाये। उस अध्यापक ने अपने व्यवहार पर केवल खेद ही नहीं व्यक्त किया अपितु लक्ष्मण शास्त्री के दृढ़ विश्वास के संदेश ने आखिर इस युवा अध्यापक को सुधार दिया।

प्रश्न—1. उपर्युक्त अवतरण का उचित शीर्षक लिखें।

2. कहानी में 'मैं' किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?
3. उसका घर कब बना था?
4. घर कहाँ स्थित था?
5. आप किस प्रकार कह सकते हैं अबुल कलाम के पिता एक साधारण व्यक्ति थे?
6. अबुल कलाम के कितने भाई-बहन थे?
7. कलाम के कितने मित्र थे? नाम बताइए।
8. पक्षी लक्ष्मण शास्त्री कौन थे?
9. अध्यापक क्या सहन नहीं कर पाया?
10. अध्यापक ने कलाम से क्या करने के लिए कहा?
11. उपरोक्त गद्यांश में कौन सी दो बुराइयाँ उद्धृत की गई हैं?
12. अंत में अध्यापक पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर—1. डॉक्टर अब्दुल कलाम की आत्मकथा

2. ऐ०पी०जे० अब्दुल कलाम के लिए।
3. उसके मकान को उन्नीसवीं सदी के मध्य में बनवाया गया था।
4. घर रामेश्वरम् में मस्जिद गली में स्थित था।
5. उनके पिता साधारण जीवन जीते थे तथा सभी प्रकार के ऐश्वर्यों से दूर रहते थे।
6. अबुल कलाम के तीन भाई व एक बहन थी।
7. कलाम के तीन मित्र थे—रामानंदा शास्त्री, अरविंदन और शिवप्रकाशन।
8. पक्षी लक्ष्मणशास्त्री रामानंदा शास्त्री के पिता थे व रामेश्वरम् मंदिर के बड़े पुजारी थे।
9. अध्यापक को एक मुस्लिम लड़के को ब्राह्मण लड़के के साथ प्रथम पंक्ति में बैठना पसंद नहीं आया।
10. अध्यापक ने कलाम से अंतिम पंक्ति में बैठने को कहा।
11. गद्यांश में धार्मिक व सामाजिक असमानता की दो मुख्य बुराईयाँ उद्धृत की गई हैं।
12. अंततः अध्यापक में सुधार आ गया।

5

1931 से 1953 तक, मैंने अपना अधिकतम समय मिट्टी तथा घास-फूस से बने घरों में बिताया। मैं संक्षेप में उस सुंदर मिट्टी के घर का वर्णन करूँगा जो मैंने अंत में पतनगढ़ में बनाया था। जब हमने इसे आरम्भ किया, तब हमारे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पास बहुत तंग घर थे और अपने पहले आश्रम में जिसमें एक छोटा सा पूजा घर, चार रहने के कमरे और एक बरामदा शामिल था। हमारे इस गाँधीहीन अभ्यास में फँसे जाने पर, एक बिल्ली तक के निकलने की जगह नहीं थी। एक मिट्टी के घर का मुख्य लाभ यह है कि जब आप इससे ऊब जाते हैं, इसे ठोकर मारकर इसकी दीवारें गिरा सकते हैं। यदि आवश्यक हो तो पूरे घर को भी तोड़कर गिरा दो और लकड़ी तथा बाँस को एक ओर ले जाकर रख दो। यद्यपि एक घास-फूस की छत में प्राय: वर्षा भीतर आ जाती है, फिर भी ग्रीष्म ऋतु में यह ठण्डी होती है और बहुत अधिक शोर नहीं करती जो नालीदार लोहे की चद्दरें उत्पन्न करती हैं और जो भारत के कुछ भागों में प्रचलित हो गई हैं। हमारे फर्श मिट्टी के बने हुए थे। ये गाय के गोबर से प्रतिदिन अथवा दूसरे दिन धोए जाते थे। यह उस किसी को थोड़ा सा घृणास्पद लग सकता है जिसने कभी इसका प्रयोग न किया हो। परन्तु वास्तव में यह बहुत आनन्दमय तथा स्वास्थ्यवर्धक होता है। यदि आप एक बार इस बात को मान लें कि दिनचर्या पूर्ण जीवन से हटकर आदिवासियों के बीच उनके अपने पर्वतों तथा वनों में रहना एक अच्छी तथा प्राकृतिक बात है, तो शेष सभी बातें स्वाभाविक रूप से आ जाएंगी।

गोंड जाति के लोग बहुत अधिक सभ्य हैं। यह एक बड़ी जनजाति है। यह समस्त मध्य भारत में, जो अब मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ कहलाता है, में बँटे हुए हैं। इनकी संस्कृति अतीत की स्मृतियों में शेष है क्योंकि ये अपने प्राचीन राजाओं तथा नायकों के प्रसिद्ध इतिहास और नृत्य तथा गीतों जिनमें ये अब भी विशेषज्ञ हैं, में विस्तृत पौराणिक कथाएँ पाते हैं। इनकी नाड़ियों में राजघराने का रक्त है और यहाँ तक कि इनमें से अत्यंत निर्धन तथा साधारण लोग भी दृढ़ उद्देश्य, सम्मान तथा विनोद की सुन्दर भावना के स्वामी हैं। इनके जीवन में आने वाली विपत्तियों का सामना करने के लिए वह साहस विद्यमान है जिसके लिए कोई व्यक्ति ईर्ष्या कर सकता है। खेत में खड़ा ईमानदार किसान धरती माता का भक्त जो प्रकृति की मूल शक्तियों से ऊर्जा प्राप्त करता है, इस दृष्टि में, इतना ही सच्चे मन से सभ्य व्यक्ति है जितना कि अत्यंत परिष्कृत बुद्धिजीवी। गोंड जाति के लोग अपनी कला, संस्कृति तथा सरलता के लिए प्रसिद्ध हैं।

गोंड जाति की कविताएँ सरल तथा सांस्कृतिक होती हैं। ये सभी साहित्यिक परिपाटियों तथा संदर्भों से मुक्त हैं। ये पृथ्वी तथा आकाश, वनों, पहाड़ियों तथा नदियों की कविताएँ हैं। ये बदलती हुई ऋतुओं, पुरुषों के विभिन्न उद्गारों की कविताएँ हैं। ये प्यार की कविताएँ हैं जो नग्न तथा लज्जारहित हैं और किसी प्रतिरोध अथवा प्रतिबन्ध द्वारा नियंत्रित नहीं होती हैं। नृत्य गीतों की एक बहुत बड़ी मात्रा कविताओं के रूप में विद्यमान है। इनमें से कुछ अत्यंत कवितामय हैं सम्भवत: महान कर्म नृत्य के गीत जो मध्य भारत के असंख्य आदिवासियों में प्रसिद्ध हैं, यहाँ पाए जा सकते हैं। यह नृत्य वसन्त ऋतु में वन की हरी-हरी टहनियों की तीव्र गति की लय के अनुसार आगे-आगे कूदते जाते हैं और महिलाएँ उन के आगे पीछे झूमती हैं। उनके पाँव सम्पूर्ण लय के अनुसार चलते हैं, यहाँ तक कि गायकों का एक झुण्ड उनकी ओर, पेड़ों की चोटियों के बीच आने जाने वाली वायु के लगातार शोर की भाँति आगे बढ़ाती है और उत्तर के रूप में आगे पीछे झूमती है। यह लोगों की अपनी महान संस्कृति में रुचि को दिखाता है। एक नाचने वाली लड़की की तुलना, गोंड जाति द्वारा एक प्यारे वृक्ष के साथ की जाती है जो प्रकृति की अदृश्य शक्ति की ओर गतिशील रहता है।

इस गोंड जाति की कला में पर्याप्त प्रतीकवाद झलकता है। इसे बहुत सरल विधि से प्रदर्शित किया गया है। एक पक्षी को अपने पंखों के साथ और एक नर्तक को उसकी टाँगों के साथ दिखाया जाता है। गोंड जाति के लोगों को संतुलन अथवा सीधी रेखाओं को थोड़ा सा भी ज्ञान प्रतीत नहीं होता। जब मैंने उनमें से किसी एक से यह बात पूछी तो उत्तर मिला, ''परंतु वनों में खड़े पेड़ तो सीधे नहीं खड़े और न ही इसकी टहनियाँ चारों ओर समान रूप से बढ़ती हैं। दीवारों पर यह नमूना वन की भाँति है।'' और यही बात बहुत अवस्थाओं में देखी जा सकती है और इसका प्रभाव कुछ कष्टदायक नहीं है।

प्रश्न—1. उपर्युक्त अवतरण का उचित शीर्षक लिखें।

2. लेखक ने 1931 से 1953 तक अपना समय किस प्रकार के घरों में बिताया।
3. एक मिट्टी के घर का मुख्य लाभ क्या है?
4. घास-फूँस की छत की हानि व लाभ क्या है?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

5. मध्य भारत में कौन बँटे हुए हैं व मुख्य रूप से किस जगह?
6. गोंड जाति की संस्कृति अतीत की स्मृतियों में किस प्रकार शेष है?
7. गोंड जाति के साधारण व्यक्ति की क्या विशेषताएँ हैं?
8. गोंड जाति के लोग अपने घरों की दीवारों को किस प्रकार सजाते हैं?
9. गोंड जाति की कविताओं की क्या विशेषताएँ हैं?
10. गोंड जाति के नृत्य की कुछ विशिष्टताओं का उल्लेख कीजिए।
11. गोंडों की कला से क्या झलकता है?
12. किस मामले में एक किसान को भी सच्चा संस्कृतिवान कहा गया है?

उत्तर—1. गोंड जनजातियाँ।

2. लेखक ने 1931 से 1953 तक अपना समय मिट्टी व घास-फूस के घरों में बिताया।
3. एक मिट्टी के घर का मुख्य लाभ यह है कि मन भरने पर उसे लात मारकर तोड़ा जा सकता है।
4. घास-फूँस की छत की हानि है कि यह वर्षा आदि को रोक नहीं पाती तथा लाभ यह है कि भीषण गर्मी में भी शीतलता बनाए रखती है।
5. मध्य भारत में गोंड जनजाति बँटी हैं। यह जनजाति मुख्य रूप से छत्तीसगढ़ प्रांत में बसी है।
6. उनकी संस्कृति अतीत की स्मृतियों में जीवित है। इनके पास विस्तृत पौराणिक कथाएँ हैं जिनमें इनके प्राचीन राजाओं व नायकों की जीवनगाथा व शौर्य का उल्लेख है।
7. एक बहुत साधारण जनजातीय व्यक्ति में भी ताकतवर उद्देश्य, एक गौरवान्वित करने वाली व विनोदपूर्ण भावना है।
8. गोंड अपने घरों की दीवारों को जनजातीय नायकों, चिड़ियाओं, जानवरों, बिच्छुओं, पहाड़ों, नर्तकियों की तस्वीरों से सजाते हैं।
9. गोंड जाति की कविताएँ सरल तथा सांस्कृतिक हैं। ये मूल रूप से प्रकृति पर आधारित हैं।
10. इनके नृत्य वसन्त ऋतु में होते हैं। महिलाएँ उन के आगे पीछे झूमती हैं। उनके पाँव सम्पूर्ण लय के अनुसार चलते हैं। यह गोंडों की अपनी महान संस्कृति में रुचि को दिखाता है।
11. गोंड जाति की कला में पर्याप्त प्रतीकवाद झलकता है जिसे अत्यंत सरल विधि द्वारा दर्शाया गया है।
12. एक किसान को भी सच्चा संस्कृतिवान कहा गया है क्योंकि वह भी प्रकृति की मूल शक्तियों से ऊर्जा प्राप्त करता है। वह सच्चे मन से उतना ही सभ्य है जितना अन्य अत्यंत परिष्कृत बुद्धिजीवी।

6

काश! मेरे पास वैसी भाषण कला होती जैसे कि आपके उपकुलपति के पास है। काश! मेरे पास वैसी ही हिम्मत होती जैसे कि तुम्हारी प्रतिनिधि बहन के पास है। मैं विश्वास नहीं करता कि जब मैं उस लड़की जितना छोटा था तब मैं इतनी विशाल . . . . उत्साहित एवं संभावित नटखट सामग्री, जैसे कि मेरे सामने श्रेणीबद्ध है, का सामना कर सकता था। प्रिय बच्चों मैं तुम्हारी बहन के साहस से आश्चर्यचकित हूँ। क्या तुम सोचने की हिम्मत करोगे कि तुममें से एक यहाँ आ सकता और जितना संभव था, उतना उसके सामने आवाजें उठाने के बावजूद उसकी तरह बात कर सकता? इसलिए पहली बात जो मुझे करनी चाहिए वह तुम्हारे सामने प्रतियोगी लड़कियों के आने की है। न केवल लड़कियों के पास तुम्हारे जैसी मस्तिष्क सामग्री है बल्कि वे पढ़ाई में एकाग्रता दिखा रही हैं, जिसे लड़के नहीं दिखा रहे हैं। मैं मात्र एक सैद्धांतिक ब्योरे के बारे में नहीं कह रहा हूँ। मैं विभिन्न संस्थाओं में मैं परिणामों को देख रहा हूँ और सफलता वक्र लड़कियों के पक्ष में जा रहा है। भारत माता मेहनती व अच्छे लड़के-लड़कियों को चाहती है जिनका चरित्र सोने का हो व आत्मा हीरे की। यदि हमारे पास चरित्र नहीं है तो तुम्हें बता दूँ कि यह स्वतंत्रता, जिसकी हम प्रशंसा कर रहे हैं, रद्दी के कागज की तरह जल उठेगी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यदि हमारे पास चरित्र है तो यह स्वतंत्रता लाखों के लिए प्रसन्नता उत्पन्न करेगी। चरित्र मात्र अभ्यास पुस्तिका का आदर्श नहीं है। यह सबसे बुद्धिमान राष्ट्रीय नीति है जिसे हमारे राजनेताओं के द्वारा गर्भित की गई है। यदि हमारे पास चरित्र है तो सारी चीजें काम करेंगी। अन्यथा न केवल स्वतंत्रता, शिक्षा व विश्वविद्यालय बल्कि सारा संविधान मात्र रद्‌दी कागज़ हो जाऐगा।

अत: सबसे अधिक बल चरित्र निर्माण पर दिया जाना चाहिए। मैं लड़कियों को विद्यालयों व महाविद्यालयों में बढ़ती हुई संख्या का स्वागत करता हूँ क्योंकि इसका अर्थ है कि विद्यालय व महाविद्यालय संपूर्ण रूप से परिवारों द्वारा आत्मसात कर लिए गए हैं। यदि सभी माताएँ विश्वविद्यालयों की उपज होंगी तो प्रत्येक घर में एक विश्वविद्यालय होगा व महाविद्यालयों को गुणित करने की आवश्यकता नहीं होगी। क्या तुम्हें इस मूल्यांकन के विषय में संदेह है, जिसे मैं कहता हूँ, कि प्रत्येक स्नातक लड़की पाँच स्नातक लड़कों के बराबर है जो कि प्रत्येक परिवार का औसत पाँच में पहुँचाती है।

हम बहुत गंभीर समय में हैं क्योंकि हम स्वतंत्र हैं। यदि हमें स्वतंत्रता नहीं मिली होती तो हमारा काम कम गंभीर हुआ होता। पुराने दिनों में हमारा काम मात्र लड़ना, स्वतंत्रता हथियाना, एक-दूसरे को उत्साहित करना व काम को आगे बढ़ाना था। जैसा कि हम जानते हैं कि वह कार्य आसान था। लेकिन अब हमारे समक्ष स्वतंत्रता है और देश के भविष्य की संरचना का पूरा बोझा हमारे कंधों पर है। हमें आचरण व विचार में उस ईंट के समान दृढ़ रहना है जो भवन को सहारा देती है।

हम एक-दूसरे को धोखा दे सकते हैं। परंतु क्या हम गतिशीलता के सिद्धांत को धोखा दे सकते हैं? क्या हम प्रकृति के नियमों को धोखा दे सकते हैं? यदि ईंटें सही और अच्छी नहीं हैं, व उचित रूप से नहीं रखी गई हैं, तो भवन स्वत: ही गिर जाऐगा। फिर चाहे अभियंता के शब्द व वायदे कुछ भी हों। जिस राष्ट्रीय तंत्र के साथ हम तालमेल बना रहे हैं, उसमें धोखे का कोई स्थान नहीं है। यदि हम हमारे आचार में बहुत मजबूत व मस्तिष्क से ईमानदार नहीं हैं तो हम एक यशस्वी भारत का निर्माण नहीं कर सकते। राजनेताओं की नीतियाँ व निवारण कुछ भी हो सकते हैं, राजनीति का विज्ञान व राजनीति का प्रयोग कुछ भी हो सकता है, सरकार संगठन कैसा भी हो सकता है; अन्तत: यदि हम भारत को न केवल स्वतंत्र बल्कि यशस्वी बनाने की चाह रखते हैं, जैसे आजादी चाहने वालों ने रखी थी, तो आपको कठिन मेहनत करनी ही होगी व पूर्ण रूप से ईमानदार रहना ही पड़ेगा।

मैं बूढ़ा हूँ व मरने से पूर्व एक यशस्वी भारत को देखना चाहता हूँ। केवल आप जैसे नौजवान व महिलाएँ ही इस देश का पथ-प्रदर्शन कर सकते हैं व इसका सही दिशा में मार्गदर्शन कर सकते हैं। आप भारत के नेता हैं। हमारे देश को अत्यधिक मात्रा में नेताओं की आवश्यकता है। नेता केवल वे ही नहीं होते जिनके चेहने समाचारपत्रों में छपते हैं। नेता वे हैं जो अपने गाँवों में, कस्बों में, घर में व अपने चारो ओर के लोगों को रास्ता दिखा सकें। वही भविष्य में भारत के योग्य नेता हैं। *—श्री सी० राजगोपालाचारी द्वारा उद्‌धृत भाषण के कुछ अंश*

प्रश्न—1. उपर्युक्त अवतरण का उचित शीर्षक लिखें।
2. उपर्युक्त गद्यांश में 'मैं' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?
3. भारत माता क्या चाहती है?
4. चरित्र के न होने पर स्वतंत्रता का क्या होगा?
5. वह कौन सी बात है जिससे संविधान केवल रद्‌दी का कागज बन सकता है?
6. 'चरित्र मात्र अभ्यास पुस्तिका का आदर्श नहीं है'। इस वाक्यांश का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
7. विद्यालयों व महाविद्यालयों में लड़कियों की संख्या बढ़ना किस बात का द्योतक है?
8. और अधिक विश्वविद्यालयों के निर्माण की आवश्यकता कब नहीं पड़ेगी?
9. किस प्रकार से एक माता प्रधानाचार्य की भूमिका अदा कर सकती है?
10. उपर्युक्त गद्यांश में 'गंभीर समय' किसके लिए प्रयुक्त किया गया है?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

11. उपर्युक्त गद्यांश में 'ईंट' शब्द किन्हें सूचित करता है?
12. स्वतंत्रता सेनानियों की क्या इच्छा थी?

उत्तर—1. सशक्त आधार।
2. उपर्युक्त गद्यांश में 'मैं' शब्द स्वर्गीय श्री सी० राजगोपालाचारी के लिए प्रयुक्त हुआ है।
3. भारत माता मेहनतकश व चरित्रवान लड़के-लड़कियाँ चाहती है।
4. चरित्र न होने पर स्वतंत्रता छिन्न-भिन्न हो जाएगी व रद्दी के कागज की भाँति जल उठेगी।
5. चरित्र का निर्माण न होने से संविधान रद्दी का कागज बन सकता है।
6. इसका आशय है कि चरित्र केवल पुस्तकों में छपे आदर्शों की भाँति नहीं है। इसे जीवन का एक अक्षुण्ण भाग होना चाहिए।
7. विद्यालयों व महाविद्यालयों में लड़कियों की संख्या बढ़ने से प्रत्येक परिवार में शिक्षा का प्रसार होगा व प्रत्येक परिवार स्वयं में एक विश्वविद्यालय होगा।
8. विद्यालय व महाविद्यालयों में लड़कियों की संख्या बढ़ाकर और अधिक विश्वविद्यालय बनाने की आवश्यकता नहीं होगी। जब हमारी महिलाएँ विश्वविद्यालय उत्पाद होंगी तो उनकी आने वाली पीढ़ी भी वैसी ही होगी।
9. एक माता अपने परिवार को उचित शिक्षा देकर एक प्रधानाचार्य की भूमिका अदा कर सकती है।
10. भारत ने हाल ही में स्वतंत्रता अर्जित की है। इसलिए, भारत की समस्याओं के दृष्टिकोण से यह एक 'गंभीर समय' है।
11. इस गद्यांश में 'ईंटें' शब्द से तात्पर्य हम भारतीयों से है जिन्हें भारत का निर्माण इस प्रकार करना है जैसे ईंटें भवन का निर्माण करती हैं।
12. वे भारत को स्वावलंबी, स्वतंत्र, चरित्रवान व यशस्वी देखना चाहते थे।

7

एक बार सुप्रसिद्ध भारतीय पहलवान गामा बंबई आए। उन्होंने विश्व के सारे पहलवानों को कुश्ती में चुनौती दी। समाचारपत्रों में यह समाचार छपते ही एक विदेशी पत्रकार ने उत्सुकतावश पूछा—"साहब, विश्व के किसी भी पहलवान से लड़ने के लिए आप तैयार हैं, तो आप अपने फलां शिष्य से ही लड़कर विजय प्राप्त करके दिखाएँ?" गामा आजकल के शिक्षा-क्रम में रँगे नहीं थे। इसलिए उन्हें इन शब्दों ने हैरान कर दिया। वे मुँह फाड़कर उस पत्रकार का चेहरा ताकते ही रह गए। बाद में धीरे से कहा—"भाई साहब, मैं भारतीय हूँ। हमारा अपना एक निजी रहन-सहन है। शायद आप इससे परिचित नहीं है। जिस लड़के का आपने नाम लिया, वह मेरे पसीने की कमाई, मेरा खून है और मेरे बेटे से भी अधिक प्यारा है। इसमें और मुझमें कोई अंतर नहीं है। मैं लड़ा या वह लड़ा, दोनों बराबर ही होगा। हमारी अपनी इस परंपरा को आप समझने का प्रयत्न करें। हम भारतीयों को वंश परंपरा से शिष्य-परंपरा ही अधिक प्रिय है। ख्याति और प्रभाव में हम सदा यही चाहते हैं कि हम अपने शिष्यों से कम प्रमुख रहें। यानि हम यही चाहेंगे कि संसार में जितना नाम मैंने कमाया उससे कहीं अधिक मेरे शिष्य कमाएँ। मुझे लगता है, आप भारतीय नहीं हैं।"

भारत में गुरु-शिष्य संबंध का वह भव्य रूप आज साधुओं, पहलवानों और संगीतकारों में ही थोड़ा बहुत ही सही, पाया जाता है। भगवान रामकृष्ण बरसों योग्य शिष्य को पाने के लिए प्रार्थना करते रहे। उनके जैसे व्यक्ति को भी उत्तम शिष्य के लिए रो-रोकर प्रार्थना करनी पड़ी थी। इसी से समझा जा सकता है कि एक गुरु के लिए उत्तम शिष्य कितना महँगा और महत्वपूर्ण है। संतानहीन रहना उन्हें दुःख नहीं देता पर बगैर शिष्य के रहने के लिए वे एकदम तैयार नहीं होते। इस संबंध में भगवान ईसा का एक कथन सदा स्मरणीय है। उन्होंने कहा था—"मेरे अनुयायी लोग मुझसे कहीं अधिक महान हैं और उनकी जूतियाँ होने की योग्यता भी मुझमें नहीं है। यही बात है, गाँधी जी बनने की क्षमता जिनमें है उन्हें गाँधी जी अच्छे लगते हैं और वे ही उनके पीछे चलते भी हैं। विवेकानंद की रचना सिर्फ उन्हें पसंद आएगी जिनमें विवेकानंद बनने की अद्‌भुत शक्ति निहित है।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उत्तम गुरु में जाति-भावना भी नहीं रहती। कितने ही मुसलमान पहलवानों के हिंदू चेले हैं और हिंदू संगीतकारों के मुसलमान शिष्य रहे हैं। यहाँ परख गुण की, साधना की और प्रतिभा की होती है। भक्ति और श्रद्धा की ही कीमत है, न कि जाति-संप्रदाय, आचार-विचार या धर्म की। मुझे पढ़ाया-लिखाया भी एक मुसलमान विद्वान ने ही था। उन्होंने कभी नहीं सोचा कि यह हिंदू है और इसे मुसलमान बनाना चाहिए। पुराने ज़माने में मौलवी लोग बड़े-बड़े रामायणी होते थे और आज भी देहातों में भरत मियाँ, रामू मियाँ आदि अधिक संख्या में दिखाई देते हैं।

हाल तक गुरु से मार खाकर लड़के जब घर रोते-रोते पहुँचते थे तो माता-पिता यही कहते थे, ''जो गुरु से मार खाते हैं उनका भविष्य उज्जवल होगा ही।'' मगर आज गुरु किसी बच्चे को पीटे तो उन पर अभिभावक मुक़दमा चला देगा।

आज के गुरु भी केवल सेवा लेने में ही आतुर हैं, देने में नहीं। उपनिषदों में आचार्यों ने कहा, ''सेवा देने की चीज है लेने की नहीं।'' सेवा लेने के अधिकारी बच्चे, रोगी, असहाय और वृद्ध हैं। बच्चों को परमेश्वर का ही मूर्त रूप समझ सेवा रूपी पूजा से उनकी शक्ति को प्रज्वलित करने की क्षमता और सहृदयता रखने वाले ज्ञानी और तपस्वी पुरोहित आजकल के गुरु नहीं रह गए हैं। किसी भी देव-मंदिर की मूर्ति की शक्ति उतनी मात्रा तक ही संभव है जितनी मात्रा तक उसके पुजारी की भाव-पूजा में नैवेद्य-भावना भरी रहती है। मूर्ति में स्वयं कुछ भी नहीं है। पुजारी की शक्ति ही मूर्ति में विकसित होने लगती है। काश, भारतीय संस्कृति का यह रहस्य भारतीय समझ पाते! इसका ज्ञान न होना ही तो आज हमारे सारे दु:खों का कारण है।

प्रश्न—1. फारसी पत्रकार ने गामा पहलवान को क्या सुझाव दिया?

2. गामा किस बात से हैरान रह गया?
3. गामा पहलवान ने अपनी हैरानी को किस प्रकार प्रकट किया?
4. भारतीय गुरु की शिष्य के बारे में क्या कामना रहती है?
5. पसीने की कमाई का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
6. भारत में गुरु-शिष्य संबंध किन लोगों में आज भी पाया जाता है?
7. कौन लोग विवेकानंद को पसंद करते हैं?
8. 'परख' के लिए तत्सम शब्द लिखिए।
9. 'प्रसिद्धि' के लिए किस पर्यायवाची शब्द का प्रयोग किया जाता है?
10. भरत मियाँ, रामू मियाँ, किस बात का महत्व बताते हैं?
11. पहले और आज के गुरुओं के प्रति आदर में क्या अंतर आ गया है?
12. आज के गुरुओं में पहले की तुलना में क्या दोष आ गया है?

उत्तर—1. फारसी पत्रकार ने गामा पहलवान को सुझाव दिया कि वह विश्व के नामी पहलवानों को चुनौती देने से पहले अपने एक प्रसिद्ध शिष्य से लड़ें।

2. गामा अपने शिष्य लड़के के सुझाव को सुनकर हैरान रह गया।
3. गामा पहलवान का मुँह खुला रह गया और आँखें फटी रह गईं।
4. भारतीय गुरु की शिष्य के बारे में यही कामना रही है कि वह उससे भी बढ़कर यश कमाए।
5. मेहनत करने से प्राप्त होने वाला फल।
6. पहलवानों, संगीतकारों और साधुओं में।
7. जो लोग विवेकानंद बनने की शक्ति रखते हैं, वे ही विवेकानंद को पसंद करते हैं।
8. परीक्षा।
9. ख्याति।
10. भरत मियाँ, रामू मियाँ के उदाहरण बताते हैं कि गुरु धर्म और जाति-भावना से ऊपर होते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

11. पहले गुरु से मार खाना गौरव की बात मानी जाती थी, आज गुरु की मार सहन नहीं की जाती।
12. आज के गुरु अपने शिष्य की सेवा करने की बजाय उनसे सेवा लेते हैं।

8

सम्राट औरंगजेब ने अपने शाही निवास पर वाद्ययंत्र जिसे पुंगी कहते हैं, बजाना निषेध कर दिया था क्योंकि कष्टदायक तीखी आवाज थी और बहुत कम इसके पुनरुत्थान की आशा कर सकते थे। हालांकि एक पेशेवर संगीतज्ञों के परिवार का नाई, जिसकी शाही महल तक पहुँच थी, ने इस यंत्र की रागीय गुणवत्ता में सुधार लाने का निश्चय किया। उसने एक प्राकृतिक रूप से खाली शाखा जो कि वास्तविक पुँगी से ज्यादा लंबी तथा ज्यादा चौड़ी वाले पाइप को चुना। उसने यंत्र के शरीर पर सात छिद्र किए तथा इसे बजाया और प्रभावकारी रसीली, सुरीली आवाज पैदा की गई। वह इस यंत्र को सम्राट के पास ले गया और शाही लोगों के सामने इसे बजाया। हर कोई इससे प्रभावित हुआ, लेकिन इसका कोई नाम नहीं था। चूँकि यह शाह के कक्ष में जन्मी थी और नाई को उचित सम्मान देते हुए यंत्र का नामकरण शहनाई के रूप में कर दिया गया। शहनाई के विषय में एक दूसरी कहानी यह भी है कि ईरान का एक हकीम जिसका नाम हाकिम बू अली सैना था ने इसे ईजाद किया और उसी के नाम के पीछे इसका नाम रखा गया।

मूल शहनाई वादक दिन के विभिन्न अवसरों पर मंदिर में प्रतिमाओं के सामने बजाने के लिए रखे गए थे। यह प्रत्येक शुभ घरेलु अवसरों पर बजाई जाती थी। शाही संरक्षक के साथ, यह धीरे-धीरे बहुत लोकप्रिय हो गई। आजकल यह म्यांमार की पकी या सिझायी टीक या सागवान की लकड़ी से बनाई जाती है। जब तक यह वांछित चौड़ाई नहीं पा लेती, इसे परत-दर-परत छीला जाता है। इसके पश्चात् इसका धीरे-धीरे तथा सावधानीपूर्वक अभ्यास किया जाता है। बाँस या पीतल की नली शिखर पर लगा दी जाती है और शरीर पर सात छिद्र बना दिए जाते हैं।

मार्च 21, 1916 को जन्मे बिस्मिल्ला खाँ पेशेवर शहनाई वादकों के परिवार से संबंध रखते हैं। छः वर्ष की उम्र में वे बनारस चले गए जहाँ उनके मामा अली बक्स ने साधारण सरकंडे वाले यंत्र जिसे शहनाई कहते हैं, को बजाने की बारीकियों से परिचय कराया। वर्षों तक बालाजी और मंगला मैया और गंगा के किनारे आना तथा शहनाई बजाना जवान प्रशिक्षु का प्रिय स्थान था, जहाँ वे शांति से घंटों तक अभ्यास करते थे। गंगा का बहता पानी और सुधार और नई रागों को जोकि पहले शहनाई की परिधि से परे मानी जाती थी, आवृति ईजाद करने की प्रेरणा देता था। मंदिर की भावनाएँ तथा मानव संबंध पर आधारित बहते पानी की राग के बीच आने वाली विषयवस्तु का दक्ष कलाकार बन गया।

सारे विश्व में भ्रमण करने के उपरांत भी खाँ साहब, जैसा कि उन्हें प्रेम से कहा जाता है, बनारस व डुमराँव के बहुत अधिक शौकीन हैं। उनके लिए लगभग आध्यात्मिक स्तर पर संसार में सबसे आश्चर्यजनक शहर रहेंगे। एक बार उनका एक विद्यार्थी चाहता था कि वे अमेरिका में शहनाई विद्यालय की अगुआई करें। उसने उन्हें बनारस के वातावरण व मंदिरों की पुनः नकल करने का वादा किया। परंतु उस्ताद जी ने उससे पूछा कि क्या वह गंगा को भी वहाँ ले आयेगा। उन्होंने बालाजी के मंदिर के विषय में कहा, ''मेरी आँखों में आँसू आ जाते हैं जब मैं उस स्थान पर जाता हूँ।'' वे डुमराँव के विषय में कहते हैं, ''मैं मेरे जन्मस्थान को कैसे भूल सकता हूँ?'' वे कहते जाते हैं, ''यह तो तब है जब मैं विदेश में होता हूँ, मैं हिंदुस्तान देखने की चाह रखता हूँ। जब मैं मुम्बई में होता हूँ तो केवल वाराणसी तथा पवित्र गंगा के विषय में सोचता रहता हूँ और जब मैं वाराणसी में होता हूँ तब मैं डुमराँव के अजीब मट्ठे को याद करता हूँ। कोई आश्चर्य नहीं, खाँ साहब ने अपने सितारे साथी जैसे पंडित रविशंकर या उस्ताद अलाउद्दीन खान की बनारस से दूर बसने की कभी नहीं सोची।

वे विदेशी प्रभावों जैसे कि पाश्चात्य पोप संगीत के चलते शास्त्रीय संगीत के भविष्य के विषय में भयभीत हैं। बनारस घराने के माने हुए मास्टर कुछ सलाह देते हैं—''अपने बच्चे को संगीत पढ़ाइये, यह हिन्दुस्तान की सबसे अधिक समृद्ध परम्परा है, जिसको पाश्चात्य देश भी सीखने भारत आ रहे हैं। वे समुदायों के बीच संगीत द्वारा दुराव को भरने की क्षमता के प्रति आशावान हैं क्योंकि संगीत दिलों को जोड़ता है। वे जोर देकर कहते हैं कि संगीत स्कूल के अंतिम स्तर तक पाठ्यक्रम में होना चाहिए और अनिवार्य बनाया जाना चाहिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रश्न—1. प्रस्तुत गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।
2. वाद्ययंत्र का नाम शहनाई किस प्रकार पड़ा?
3. कौन सा दूसरा व्यक्ति था जिसके हिस्से में शहनाई के बनाने का श्रेय आता है?
4. प्रारंभ में शहनाई वादन कहाँ किया जाता था?
5. शहनाई किस प्रकार बनाई जाती है?
6. शहनाई पर कितने छिद्र होते हैं?
7. बिस्मिल्लाह खान का जन्म कब हुआ?
8. किन बातों से यह ज्ञात होता है कि बिस्मिल्लाह खान को भारत से बहुत प्रेम है?
9. बिस्मिल्लाह खान की आँखों में कब आँसू आ जाते हैं?
10. शहनाई की बारीकियों से उनका परिचय किसने कराया?
11. अमेरिका में विद्यार्थी उस्ताद बिस्मिल्लाह खान से क्या अपेक्षा करता था?
12. विद्यार्थी ने बिस्मिल्लाह खान से क्या करने का वचन दिया?

उत्तर—1. शहनाई व बिस्मिल्लाह खान।
2. क्योंकि यह शाह के महल से संबंधित था तथा इसे एक नाई ने बनाया था, इसलिए इसका नाम शहनाई पड़ा।
3. ईरान का एक हकीम जिसका नाम हाकिम बू अली सैना था।
4. प्रारंभ में शहनाई वादन मंदिरों में प्रतिमाओं के सामने किया जाता था।
5. शहनाई सागवान की लकड़ी से बनाई जाती है जिसे परत-दर-परत तब तक छीला जाता है जब तक यह वांछित आकार न ले ले।
6. सात।
7. 21 मार्च 1916
8. जब एक विदेशी विद्यार्थी ने उनसे अमेरिका में बसने के लिए कहा तो उन्होंने मना कर दिया। उन्होंने कहा कि जब वे मुंबई में होते हैं तो डुमराँव को बहुत याद करते हैं। उन्हें अपनी जन्मस्थली डुमराँव व वाराणसी तथा गंगा से अत्यंत लगाव था।
9. बालाजी के मंदिर को याद करते ही उनकी आँखों में आँसू आ जाते हैं।
10. खान साहब के मामा अली बक्स ने शहनाई की बारीकियों से उनका परिचय कराया।
11. अमेरिका में विद्यार्थी की अपेक्षा यह थी कि उस्ताद बिस्मिल्लाह खान अमेरिका में ही बसकर एक शहनाई स्कूल चलाएँ।
12. विद्यार्थी ने बिस्म्मिलाह खान को वचन दिया कि वहाँ पर भारतीय माहौल व मंदिरों की हू-ब-हू नकल बना दी जाऐगी तथा उन्हें भारत में न होने का एहसास नहीं होगा।

9

अब्राहम लिंकन ने अपने पुत्र के अध्यापक के पास एक पत्र लिखा। यहाँ वह अध्यापक से अपने बेटे को इस तरह ढालने के लिए प्रार्थना करते हैं कि वह हर प्रकार से पूर्ण अच्छा मानव बने। उसने अध्यापक से उसके बेटे को समर्पित नेताओं, मित्रों और स्वार्थी नेताओं और शत्रुओं के बारे में भी पढ़ाने को कहा। उसने अपने बेटे से यह सीखने की आशा की कि दूसरों को डराने वालों को आसानीपूर्वक हराया जा सकता है और प्रकृति में अनंत रहस्य हैं। वह दूसरों को धोखा देने की बजाए असफल होने को प्राथमिकता दे। उसने अपने बेटे को भले के साथ भला और दुष्ट के साथ दुष्ट रहने के लिए सावधान किया। उसने अपने बेटे से मुसीबतों का पुरुषों की तरह सामना करने के लिए तथा भीड़ की मानसिकता के साथ न बहने के लिए भी सलाह दी। उसने आशा की कि उसका बेटा जरूरत

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पड़ने पर अधीर बनने का साहस और जरूरत पड़ने पर धैर्यवान बनने का गुण अपनायेगा। यह पत्र पाठकों के लिए प्रस्तुत है:

पत्र: मैं जानता हूँ कि सभी आदमी न्यायसंगत नहीं होते, सभी सच्चे नहीं होते। परंतु उसे सीखना होगा। उसे सिखाइये कि प्रत्येक खलनायक के लिए एक नायक होता है, प्रत्येक स्वार्थी राजनेता के लिए एक समर्पित नेता होता है। उसे सिखाया जाना चाहिए कि प्रत्येक शत्रु के लिए एक मित्र होता है। मुझे पता है कि इसमें समय लगेगा। किंतु उसे सिखायें, यदि सिखा सकें, कि कमाया गया एक पैसा बेईमानी के सौ रुपये से अधिक कीमती है। उसे हारना सिखाइए और जीत का आनंद लेना भी।

उसे ईर्ष्या से दूर हटाइये। यदि आप सिखा पाएँ, तो सिखाएँ उसे शांत हँसी का रहस्य।

उसे जल्दी ही यह सीखने दें कि दूसरों को डराने वाले को हराना सबसे आसान होता है। यदि सिखा पायें तो सिखायें पुस्तक के आश्चर्य। किंतु उसे समय भी दें विचार करने के लिए, शाश्वत रहस्यों पर, धूप में मधुमक्खियों पर व हरे पहाड़ों में फूलों पर।

स्कूलों में उसे सिखायें कि असफल होना अधिक सम्मानजनक होता है बजाय धोखा देकर सफलता प्राप्त करने के। उसे अपने स्वयं के विचारों में विश्वास रखना सिखायें चाहे उसे सभी गलत ठहरायें। उसे भले के साथ भला व उद्दण्ड के साथ उद्दंड रहना सिखायें।

मेरे बेटे को भीड़ का अनुसरण न करने की ताकत देने का प्रयत्न करें। उसे सभी लोगों की बात सुनना सिखायें। किंतु जो कुछ वह सुने उसे सच्चाई के पर्दे पर छानने व इसमें से अच्छाई ग्रहण करना सिखाइये।

उसे सिखाइये, यदि आप सिखा सको, कि उदासी में कैसे हँसा जाता है। उसे सिखाओ कि आँसुओं में कोई शर्म नहीं है। उसे निंदा करने वाले पर कटाक्ष करना और बहुत अधिक मधुरता से सावधान रहना सिखाओ। उसे अपनी बाहुबल और दिमाग को सबसे ऊँची कीमत देने वाले को बेचना सिखाओ किंतु अपने हृदय व आत्मा की कीमत पर नहीं।

उसे एक चीखने वाली भीड़ के प्रति अपने कान बंद करना और उनके विरुद्ध खड़ा होना तथा लड़ना सिखाओ, यदि उसके अनुसार वह सही है।

उससे विनम्र व्यवहार करें परंतु उसका लाड़ न करें क्योंकि अग्नि परीक्षा से बढ़िया फौलाद बनता है।

उसे अधीर होने का साहस होने दें, उसमें बहादुर बनने के लिए धैर्य होने दें। उसे सदैव स्वयं में उच्च विश्वास रखना सिखायें क्योंकि तभी वह सदैव मानव जाति में उच्च विश्वास रखेगा।

यह एक बहुत बड़ी माँग है लेकिन देखिए आप क्या कर सकते हैं। वह एक ऐसा प्यारा छोटा सा मेरा बेटा है।

प्रश्न—1. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक बताइए।

2. इस गद्यांश में 'मैं' व 'उसे' शब्द को किनके लिए प्रयोग किया गया है?
3. 'स्वार्थी राजनेताओं' व 'दुष्ट' के लिए कौन से आदर्श प्रस्तुत किए गए हैं?
4. अब्राहम लिंकन ने यह पत्र किसे लिखा है?
5. लिंकन अपने पुत्र को भीड़ का अनुसरण कराना क्यों नहीं चाहते?
6. 'सच्चाई के पर्दे पर छानने' का क्या अर्थ है?
7. असफलता से बुरी बात क्या है?
8. वह कौन सी वस्तु है जिसे लड़के को कभी बेचना नहीं सीखना चाहिए?
9. पत्र में वह कौन सा वाक्यांश है जिसे यह प्रदर्शित होता है कि लिंकन अपने पुत्र से अत्यधिक प्रेम करते हैं?
10. कमाया गया एक पैसा बेईमानी के सौ रुपये से अधिक कीमती क्यों है?
11. किन बातों से पता लगता है कि लिंकन प्रकृति प्रेमी हैं?
12. सुगमता से किस पर नियंत्रण किया जा सकता है?

उत्तर—1. एक लड़के को सिखाना।

2. इस गद्यांश में 'मैं' शब्द अब्राहम लिंकन के लिए व 'उसे' शब्द उसके पुत्र के लिए प्रयोग हुए हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3. स्वार्थी राजनेताओं के लिए एक समर्पित नेता होता है तथा प्रत्येक दुष्ट के लिए एक नायक होता है।
4. अब्राहम लिंकन ने यह पत्र अपने पुत्र के शिक्षक को लिखा है?
5. लिंकन चाहते हैं कि उसका पुत्र अपने हृदय का अनुसरण करे चाहे व गलत हो।
6. इसका अर्थ है—अपने हृदय के भीतर झाँककर वस्तुओं को परखना।
7. धोखा असफलता से बुरी चीज है।
8. लड़के को कभी अपनी हृदय की आवाज व आत्मसम्मान को कदापि नहीं बेचना सीखना चाहिए।
9. "वह एक ऐसा प्यारा छोटा सा मेरा बेटा है।"
10. ईमानदारी से कमाए गए एक पैसे से व्यक्ति को जो आत्मिक संतुष्टि होती है वह बेईमानी के सौ रुपये से कदापि नहीं हो सकती। बेईमानी के पैसे को पाकर व्यक्ति की आत्मा उसे झकझोरती है।
11. लिंकन चाहते हैं कि उनके पुत्र को मधुमक्खियों व हरे पहाड़ों पर खिलने वाले फूलों को जानने दिया जाए। यह उनके प्रकृति के प्रति प्रेम को प्रदर्शित करता है।
12. क्रूर व्यक्ति पर सुगमता से नियंत्रण किया जा सकता है।

10

जब मनुष्य ने प्रथम बार सोचना आरंभ किया, तभी उसने सभी प्रश्नों में से सबसे गूढ़ प्रश्न, वह जो आप स्वयं से निःसंदेह अनेक बार पूछ चुके हैं, किया—जीवन का अर्थ क्या है? हम सब कहाँ जा रहे हैं? कौन सी बात मनुष्य को सदैव काम करने और चिंता के आगे हाँकती है?

और एक दूसरा बड़ा प्रश्न है। एक अधिक नवीन प्रश्न जो स्वयं को ध्यानमग्न होने को मजबूर कर रहा है; वह प्रश्न जो युगों-युगों पुराना तो नहीं है और न ही तब से हमारे साथ है जब से मनुष्य ने सबसे पूर्व सोचना आरंभ किया; वह है, विज्ञान हमें कहाँ ले जा रहा है?

सबसे पूर्व हम बात करें, नैतिकता व आध्यात्मिक मूल्य के विषय में कि विज्ञान हमें कहाँ ले जा रहा है? हम जानते हैं कि यह भौतिक वस्तुओं के विषय में क्या कर रहा है क्योंकि भौतिक वस्तुएँ इसका व्यवसाय है। किंतु यह अभौतिक वस्तुओं के विषय में क्या कर रहा है? यदि उत्तर '*कुछ नहीं*' है तो यह बहुत बुरा है। परंतु वास्तविक उत्तर तो '*कुछ नहीं* से भी कम' है। अब विज्ञान '*कुछ नहीं*' की अपेक्षा '*कुछ नहीं* से भी कम' कर रहा है। भौतिक शिक्षाओं पर इतना अधिक दबाव आ गया है कि यह माना जाने लगा है कि मनुष्य क्या मात्र एक मशीन है जो उन ताकतों से जीवित हो गई है जिन पर उसका कोई नियंत्रण नहीं है।

इस असामान्य शक्ति के क्या परिणाम हैं? युद्ध से पूर्व ऐसा लगता था कि इतिहास में पहली बार प्रत्येक मनुष्य को पर्याप्त मात्रा में रोटी, कपड़ा व मकान उपलब्ध होगा। यदि ऐसा होता तो यह विज्ञान की सबसे बड़ी विजयों में से एक होती। परंतु विज्ञान की कृपा से हम अधिक खाद्यान्न उगाने में तो सफल हुए हैं लेकिन अभी भी करोड़ों लोगों के पेट भूखे व आत्मा अतृप्त है। आज 1940; दूसरे विश्वयुद्ध के समय में, अन्न के भंडार खाली हैं व लाखों के पेट भूखे हैं। यह युद्ध है, विज्ञान का एक बड़ा चमत्कार!

विज्ञान आपको प्रतिवर्ष और अधिक खाली आराम के घंटे देता है। उनका प्रयोग किस प्रकार करें? दुर्भाग्यवश, विज्ञान यह नहीं सिखाता। हमें मस्तिष्क की यांत्रिक आदतें देता है परंतु साहस की भावना का दमन करता है। यह विज्ञान है जिसने हमें आशा से परे उम्र समूहों का बँटवारा दिया है। प्रतिवर्ष कुछ आधुनिक दवाईयाँ औसत जीवन अवधि में तब तक कुछ वृद्धि तो कर ही देती हैं जब तक बड़ी उम्र के समूह में अधिक वृद्धि नहीं हो जाती है। उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका में पहले से ही 9 मिलियन (90 लाख) लोग 60 वर्ष से अधिक उम्र के हैं। पंद्रह वर्ष के समय में यह संख्या स्तब्ध कर देने वाली 45 मिलियन (4.5 करोड़) तक पहुँच जाएगी। उन्हें रखने वाला कौन है? अवश्य ही कुछ सामंजस्य की आवश्यकता पड़ेगी।

इस प्रकार विज्ञान समस्याओं को बढ़ाता जाता है। हमारे आधारभूत प्रश्न—*जीवन क्या है?* के महत्व की तुलना में समस्याओं का महत्व अधिक जान पड़ता है। जो कुछ हो रहा है वह यह है कि विज्ञान समस्याओं को हल कर सकने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के स्थान पर उन्हें तेजी से उत्पन्न कर रहा है। मनुष्य एक प्रकार के दुष्चक्र में संघर्ष कर रहा है। वह हमेशा पकड़ने में प्रयासरत् तो है, परंतु कभी निकट नहीं पहुँच पा रहा है। खोजों की अधिकता का अन्त होने के कोई आसार नहीं हैं। युद्ध सबसे बुरा उदाहरण है। विज्ञान ने इसे इतना आगे धकेल दिया है कि नीति और नैतिकता बिना आशा के पीछे हो गई है।

यह स्थिति किसी व्यक्ति को यह पूछने पर विवश कर देती है—वास्तव में विज्ञान क्या है? इसके उद्देश्य क्या हैं? इसका लक्ष्य क्या है?

इसका उद्देश्य स्पष्ट मालूम पड़ता है। वे वास्तव में, भौतिक है। पहला, मनुष्य के वातावरण पर विजय के बारे में पूर्ण समझ। प्रत्येक पदार्थ पर पूर्ण विजय, चाहे छोटा या बड़ा, जहाँ तक मानव की पहुँच है। दूसरा, मनुष्य के शरीर के सभी रहस्य जानना; जैसे, भौतिक रहस्य, असंख्य रासायनिक व भौतिक कार्य जो मनुष्य के शरीर से काम कराते हैं व मनुष्य के शरीर के अंदर की बात है।

यदि ये विज्ञान के अंतिम उद्देश्य हैं तो निश्चित रूप से वे विज्ञान के अंतिम लक्ष्य का प्रतिनिधित्व नहीं करते। अंतिम लक्ष्य, यदि कोई है तो, अवश्य ही प्रत्येक वस्तु की समझ होनी चाहिए जो जीवन को जीने योग्य बनाते हैं। वह भौतिक वस्तुओं से परे तक जाती हैं क्योंकि मनुष्य को भोजन, आश्रय व कपड़े और पेट के अंदर चल रहा उसकी समझ से और भी अधिक की आवश्यकता होती है।

प्रश्न—1. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक बताइए।
2. इस बात से क्या तात्पर्य है कि 'विज्ञान हमें कहाँ ले जा रहा है'?
3. प्राथमिक रूप से विज्ञान किसकी देखभाल करता है?
4. वर्तमान युग किस प्रकार का युग है?
5. विज्ञान की विडंबना क्या है?
6. युगों-युगों से मनुष्य कौन सा प्रश्न पूछता आ रहा है?
7. कौन सा अन्य प्रश्न है जो मनुष्य अब पूछेगा?
8. विज्ञान के दो उद्देश्य कौन से हैं?
9. वास्तविक अंतिम लक्ष्य कौन सा होना चाहिए?
10. मानव की मूलभूत आवश्यकताएँ कौन सी हैं?
11. 'विज्ञान ने औसत आयु कम कर दी है'। इस कथन के क्या तात्पर्य हो सकते हैं?
12. विज्ञान हमें मस्तिष्क की यांत्रिक आदतें देता है परंतु साहस की भावना का . . . . करता है।

उत्तर—1. विज्ञान हमें कहाँ ले जा रहा है?
2. इस बात का आशय यह है कि विज्ञान हमारे नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों का ह्रास कर रहा है व हम इसकी अनदेखी कर रहे हैं।
3. प्राथमिक रूप से विज्ञान केवल भौतिक वस्तुओं की देखभाल करता है।
4. मशीनी युग।
5. यह हमें आराम के लिए अधिक समय उपलब्ध कराता है परंतु उस समय का प्रयोग करना नहीं सिखाता।
6. जीवन का अर्थ क्या है?
7. विज्ञान हमें कहाँ ले जा रहा है?
8. पहला, मनुष्य के वातावरण पर पूर्ण विजय। दूसरा, मनुष्य के शरीर के सभी रहस्य (अंदर की बातें) जानना।
9. अंतिम लक्ष्य प्रत्येक वस्तु की समझ का होना चाहिए जो जीवन को जीने योग्य बनाता है।
10. भोजन, वस्त्र व आश्रय।
11. विभिन्न प्रकार की जीवनदायिनी दवाओं के फलस्वरूप मृत्युदर कम हो गई है। प्रौढ़ों की संख्या बढ़ती जा रही है, जिससे उनके आश्रय की समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं।
12. दमन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

11

सुप्रसिद्ध साहित्यकारों के मूल नाम के साथ कभी-कभी उनके उपनाम ऐसे घुल-मिल जाते हैं कि साहित्यकार का मूल नाम तो पीछे रह जाता है और उपनाम इतने प्रसिद्ध हो जाते हैं कि उनके बिना रचनाकार का नाम अधूरा लगने लगता है। भारतीय जनमानस के मन में बसे 'प्रेमचंद' भी इस तथ्य से अछूते नहीं रह सके। उनका नाम यदि मात्र प्रेमचंद लिया जाए तो अधूरा-सा प्रतीत होता है।

उपनाम या तख़ल्लुफ से बहुत से कवि और लेखक जाने जाते हैं, किंतु 'मुंशी' प्रेमचंद का उपनाम या तख़ल्लुस नहीं था। प्रश्न उठता है कि 'प्रेमचंद' के नाम के साथ 'मुंशी' का क्या संबंध था। यह शब्द आखिर जुड़ा कैसे? क्या प्रेमचंद ने कभी मुंशी का काम किया था या यह उपाधि उनके परिवार में पिता या पितामह से उनके पास विरासत में हस्तांतरित हुई। प्रेमचंद के नाम के साथ 'उपनाम-सम्राट' विशेषण भी जुड़ा हुआ है। ये सब नाम और उपाधियाँ प्रेमचंद के साथ कैसे जुड़ गए—इसके पीछे कुछ रोचक घटनाएँ हैं।

'प्रेमचंद' का वास्तविक नाम 'धनपत राय' था। वे 'नवाब राय' नाम से उर्दू में लिखते थे। उनकी 'सोज़े वतन' जो 1909 में जमाना प्रेस, कानपुर से प्रकाशित हुई थी, संग्रह की सभी प्रतियाँ तत्कालीन अंग्रेज़ी सरकार ने ज़ब्त कर ली थीं। सरकारी कोष से बचने के लिए उर्दू अखबार 'ज़माना' के संपादक मुंशी दया नारायण निगम ने उन्हें नवाब राय के स्थान पर 'प्रेमचंद' उपनाम सुझाया। यह नाम उन्हें इतना पसंद आया कि 'नवाब राय' के स्थान पर वे 'प्रेम चंद' हो गए।

हिंदी पुस्तक ऐजेंसी का एक प्रेस कलकत्ता में था, जिसका नाम 'वाणिक प्रेस' था। इसके मुद्रक थे 'महावीर प्रसाद पोद्दार'। वे प्रेमचंद की रचनाएँ बंगला के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार शरत् बाबू को पढ़ने के लिए दिया करते थे। एक दिन शरत् बाबू से मिलने के लिए पोद्दार जी उनके घर पर आए। उन्होंने देखा कि शरत् बाबू प्रेमचंद का कोई उपन्यास पढ़ रहे थे। जो बीच में खुला हुआ था। कौतूहलवश पोद्दार जी ने उसे उठाकर देखा कि उपन्यास के एक पृष्ठ पर शरत् बाबू ने 'उपन्यास सम्राट' लिख रहा है। बस, यहीं से पोद्दार जी ने प्रेमचंद को 'उपन्यास सम्राट प्रेमचंद' लिखना आरंभ कर दिया। इस प्रकार वे धनपत राय से 'प्रेमचंद' तथा 'उपन्यास-सम्राट प्रेमचंद' हुए।

प्रेमचंद जी के नाम के साथ 'मुंशी' कब और कैसे जुड़ गया? इस विषय में अधिकांश लोग यही मान लेते हैं कि प्रारंभ में प्रेमचंद अध्यापक रहे। अध्यापकों को प्राय: उस समय मुंशी जी कहा जाता था। इसके अतिरिक्त कायस्थों के नाम से पूर्व सम्मान-स्वरूप 'मुंशी' शब्द लगाने की परंपरा रही है। संभवत: प्रेमचंद जी के नाम के साथ मुंशी शब्द जुड़कर रूढ़ हो गया होगा।

प्रेमचंद के सुपुत्र अमृत राय जी के अनुसार प्रेमचंद जी ने अपने नाम के आगे 'मुंशी' शब्द का प्रयोग स्वयं कभी नहीं किया। उनका यह भी मानना है कि मुंशी शब्द सम्मानसूचक है, जिसे प्रेमचंद के प्रशंसकों ने कभी लगा दिया होगा।

प्रेमचंद की धर्मपत्नी 'शिवरानी देवी' की पुस्तक 'प्रेमचंद घर में' में प्रेमचंद से संबंधित सभी घरेलू बातों की चर्चा शिवरानी देवी ने की है। पूरी पुस्तक में कहीं भी प्रेमचंद के लिए 'मुंशी' शब्द का प्रयोग नहीं हुआ है। इससे स्पष्ट है कि उस समय तक प्रेमचंद के नाम के साथ 'मुंशी' का प्रयोग नहीं होता था, और न ही सम्मानस्वरूप लोग उन्हें 'मुंशी' ही कहते थे, अन्यथा शिवरानी देवी, प्रेमचंद के लिए कहीं न कहीं 'मुंशी' विशेषण का प्रयोग अवश्य करतीं। इसी पुस्तक में उन्होंने दया नारायण जी के लिए मुंशी जी शब्द का प्रयोग कई बार किया है परंतु प्रेमचंद के लिए कहीं नहीं।

प्रेमचंद के नाम के साथ मुंशी विशेषण जुड़ने का एकमात्र कारण यही है कि 'हंस' नामक पत्र प्रेमचंद एवं कन्हैयालाल 'मुंशी' के सह-संपादन में निकलता था। इसकी कुछ प्रतियों पर कन्हैयालाल मुंशी का पूरा नाम न छपकर केवल 'मुंशी' छपा रहता था। साथ ही प्रेमचंद का नाम इस प्रकार छपा होता था।

संपादक

मुंशी, प्रेमचंद

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'हंस' के संपादक प्रेमचंद व कन्हैयालाल मुंशी थे। परंतु कालांतर में पाठकों ने 'मुंशी' तथा 'प्रेमचंद' को एक समझ लिया। 'प्रेमचंद', 'मुंशी प्रेमचंद' बन गए।

यह स्वाभाविक भी है। सामान्यत: पाठक प्राय: लेखक की कृतियों को पढ़ता है, नाम की सूक्ष्मता को नहीं देखा करता। उसे 'प्रेमचंद' व 'मुंशी' के पचड़े में पड़ने की क्या आवश्यकता थी। फिर भी कुछ संयोग ऐसा बना कि भ्रम का पक्ष सबल हो गया। जनमानस में वे 'मुंशी प्रेमचंद' के नाम से जाने जाने लगे। धीरे-धीरे मुंशी शब्द प्रेमचंद के साथ अच्छी प्रकार जुड़ गया। आज प्रेमचंद का मुंशी अलंकरण इतना रूढ़ हो गया है कि मात्र मुंशी से ही प्रेमचंद का बोध हो जाता है। 'मुंशी' न लगाने से प्रेमचंद का नाम अधूरा-अधूरा सा लगता है।

प्रश्न—1. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक बताइए।
2. 'उपनाम' किसे कहते हैं? एक उदाहरण दीजिए।
3. किन साहित्यकारों का नाम उपनाम के बिना अधूरा प्रतीत होता है व क्यों?
4. 'उपन्यास-सम्राट' उपाधि किसकी है? यह किसने प्रदान की?
5. शरत्‌चंद्र किस भाषा में उपन्यास लिखते थे?
6. प्रेमचंद का क्या उपनाम था?
7. प्रेमचंद का मूल नाम क्या था? वह उन्हें क्यों बदलना पड़ा?
8. इस गद्यांश से दो विशेषण लीजिए।
9. अमृतराय ने 'मुंशी' शब्द लगने के पीछे क्या अनुमान लगाया है?
10. 'मुंशी प्रेमचंद' का वास्तविक अर्थ क्या था?
11. 'मुंशी' शब्द का प्रयोग सामान्यत: किनके लिए प्रयोग होता है?
12. अंग्रेज सरकार ने प्रेमचंद की प्रतियाँ क्यों जब्त कीं?

उत्तर—1. मुंशी प्रेमचंद के 'मुंशी' उपनाम का रहस्य।
2. किसी साहित्यकार का प्रसिद्ध लघु नाम। जैसे सूर्यकान्त त्रिपाठी के साथ 'निराला'
3. उपनाम प्रसिद्ध साहित्यकारों के नाम के साथ पूरी तरह घुल मिल चुके होते हैं कि उनका नाम उपनाम के बिना अधूरा प्रतीत होता है।
4. 'उपन्यास-सम्राट' उपाधि प्रेमचंद की है? यह उपाधि उन्हें शरत्‌चंद्र ने प्रदान की?
5. बंगला भाषा में।
6. प्रेमचंद का कोई उपनाम नहीं था।
7. प्रेमचंद का मूल नाम 'धनपत राय' था? उन्हें अंग्रेजी सरकार के गुस्से से बचने के लिए अपना नाम बदलना पड़ा था।
8. मुंशी व सबल।
9. अमृतराय के अनुमान के अनुसार 'मुंशी' शब्द लगने का रहस्य प्रेमचंद का कायस्थ होना था जिसे किसी प्रशंसक ने मुंशी लिख दिया होगा।
10. 'मुंशी प्रेमचंद' में 'मुंशी' का अर्थ 'कन्हैयालाल मुंशी' था जबकि 'प्रेमचंद' एक अलग व्यक्तित्व था।
11. कायस्थों तथा अध्यापकों के लिए मुंशी शब्द का अधिकांश प्रयोग होता है।
12. उसमें अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध आपत्तिजनक टिप्पणियाँ थीं।

12

''एक हजार वर्ष'', एक कैलेंडर में दुर्घटना से अधिक और कुछ नहीं हो सकता। परन्तु आप, सरकारें व विश्व के लोगों ने इसे और अच्छा बनाने का चुनाव किया है। यह एक अच्छा अवसर है कि समस्त मानव जाति इसे माने व चिंतन करे। वह शब्द जो इन परिवर्तनों को एक सूत्र में पिरो देता है वह है, 'वैश्वीकरण'।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हम एक ऐसे विश्व में रहते हैं जो वैश्वीकरण द्वारा आज परस्पर जितना जुड़ा हुआ है उतना पहले कभी न था, जिसमें व्यक्ति या समूह प्रत्यक्ष रूप से राज्य के अंदर या राज्य के बाहर संपर्क रखते हैं। इनमें ये राज्यों को सर्वथा अपने साथ मिलाना आवश्यक नहीं समझते।

निःसंदेह इसमें अधिक जोखिम है। अपराध, नशीली दवाइयाँ, आतंकवाद, रोग, शस्त्र आदि सब एक दूसरे के आगे-पीछे चलते रहते हैं। ये पहले की तुलना में आज और अधिक गतिशील हैं। दूर-दूर से होने वाली घटनाओं से लोगों को खतरा तो अनुभव होता ही है।

परन्तु वैश्वीकरण के लाभ भी स्पष्ट हैं जैसे तीव्र विकास, उच्च जीवन स्तर व नित नये अवसर। ये अवसर न केवल व्यक्तियों के लिए अपितु राष्ट्रों के बीच अच्छी सूझ-बूझ तथा साझी कार्यवाही हेतु लाभदायक हैं। परंतु समस्या यह है कि अवसर समान से वितरित नहीं हैं। विशेषरूप से हम ऐसे में कैसे कह सकते हैं जबकि आधी मानव जाति ने कभी टेलीफोन पर बात तक नहीं की है और न ही कम्प्यूटर का इस्तेमाल किया है। क्या यह आधी मानव जाति वैश्वीकरण की प्रक्रिया में भाग ले रही है? निःसंदेह हम वैश्वीकरण में भाग लेकर उनकी निर्धनता का अपमान कर रहे हैं।

आज के युग की सर्वोपरि चेतावनी यह है कि वैश्वीकरण को बड़े बाज़ारों की अपेक्षा और अधिक बड़ा बनाना है। इस उलट-फेर को सफल बनाने के लिए हमें यह अभी सीखना है कि अच्छा शासन किस प्रकार करें और सब से ऊपर बात तो यह है कि यह शासन मिलकर अच्छी तरह कैसे करें।

क्या ये विश्वव्यापी समस्याएँ हैं? मैंने इन्हें तीन शीर्षकों में बाँटा है। इनमें से प्रत्येक को मैं मानव की मूल स्वतंत्रता से जोड़ता हूँ। (1) अभाव से मुक्ति; (2) भय से मुक्ति; व (3) इस ग्रह पर वर्तमान संपत्ति को भावी संतति के लिए बचाने की स्वतंत्रता।

सर्वप्रथम मैं बात करूँगा 'अभाव से मुक्ति' के विषय में। हम मानव जाति को कैसे सम्मानित कह सकते हैं जबकि लगभग दस अरब से ऊपर जनता एक डालर से भी कम प्रतिदिन की आय पर जीने का प्रयास कर रही है। इन्हें शुद्ध जल भी उपलब्ध नहीं है। इसके अतिरिक्त हमारी आधी मानव जाति समुचित स्वच्छता से वंचित है।

हम में से कुछ शेयर बाजार से चिंतित हैं कि कहीं सब कुछ नष्ट न हो जाए। हमारे कुछ विशेषज्ञ कम्प्यूटर पर विशिष्टता प्राप्त करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं दूसरी ओर हमारे आधे से अधिक पुरुष व स्त्रियाँ मौलिक चिंताओं से ग्रस्त हैं जैसे बच्चों का अगला भोजन कहाँ से आयेगा।

दूसरा मुख्य शीर्षक है 'भय से मुक्ति'। ईश्वर की कृपा से राज्यों के बीच अब बहुधा विवाद नहीं होते जितने पूर्व में हुआ करते थे। परंतु पिछले दस वर्षों में आन्तरिक युद्ध के कारण 50 लाख से भी अधिक जीवन समाप्त हो चुके हैं और इस में से कई गुना लोग तो बेघर हो गए हैं। इसके अतिरिक्त, हम अब भी विनाशकारी शस्त्रों की छाया में जी रहे हैं।

हमें कुछ अधिक करना चाहिए जिससे झगड़े व कलह सर्वथा हों ही नहीं। अधिकतर झगड़े निर्धन देशों में होते हैं, विशेषकर उन देशों में जिनका शासन सही नहीं होता अथवा जहाँ अधिकार व संपत्ति बहुत अन्यायपूर्ण ढंग से धर्म समूहों अथवा जातियों के आधार पर बँटी हुई है। अतः इन झगड़ों को रोकने का बढ़िया ढंग है ऐसी राजनैतिक व्यवस्था जिसमें सभी समूह न्यायपूर्ण विधि से प्रतिनिधित्व करते हों, जिसमें मानव अधिकार, अल्पसंख्यकों के अधिकार और विस्तृत रूप से आधारित आर्थिक विकास भी शामिल हों।

तीसरी मौलिक स्वतंत्रता वह है कि जिसकी चार्टर में स्पष्ट रूप से व्याख्या नहीं की जा सकती क्योंकि 1945 में हमारी इस संस्था की नींव रखने वाले कैसे यह कल्पना कर सकते थे कि कभी इसको भी चेतावनी दी जायेगी। मेरा अभिप्राय यह है कि आने वाली पीढ़ियों की इस उपग्रह पर अपने जीवन को स्थिर रखने की स्वतंत्रता।

अब भी हम में से बहुत से लोग इतना नहीं समझ पाए हैं कि ऐसी स्वतंत्रता को कितना गम्भीर खतरा है। यदि यह मैं एक वाक्य में संक्षेप में कहूँ तो मैं कहूँगा कि हम अपनी वर्तमान जारी गतिविधियों के लिए अपने बच्चों के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अधिकारों पर डाका डाल रहे हैं। हमें अपने वन, मत्स्य संसार व भिन्न प्रकार के जीव-जंतुओं की रक्षा करनी चाहिए जो सभी मनुष्य जाति द्वारा उपभोग तथा विनाश के दबाव में विलुप्ति की ओर अग्रसर हैं।

इस सब के अतिरिक्त हमें पुराने अनमोल वचनों को याद करने की आवश्यकता है जो मैंने बचपन में सीखे थे। वे वचन हैं—यह पृथ्वी हमारी नहीं है, यह एक कोष है जो हमें अपनी संतति के लिए संभाल कर रखने हेतु विधाता ने हम पर विश्वास करके दी है।

प्रश्न—1. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक बताइए।

2. 'एक हजार वर्ष' किस प्रकार दु:खदायी बताये गए हैं।
3. वैश्वीकरण का लाभ क्या है?
4. वैश्वीकरण की हानि क्या है?
5. तीन विश्वव्यापी समस्याएँ कौन सी हैं?
6. हम किस प्रकार निर्धनों का अपमान करते हैं?
7. राष्ट्रों में अंतर्विरोधों का मुख्य कारण क्या है?
8. अभावों से मुक्ति का क्या अर्थ है?
10. वैश्वीकरण का क्या अर्थ है?
11. वैश्वीकरण का तत्सम् लिखिए।
12. हमारे वन, मत्स्य संसार व जीव-जंतु की विलुप्ति का क्या कारण है?

उत्तर—1. यह पृथ्वी हमारी नहीं।

2. पिछली सहस्राब्दी में पृथ्वी पर बहुत विनाश हुआ। हमनें दो-दो विश्वयुद्ध देखे। इसलिए पिछले एक हजार वर्षों को दु:खदायी बताया गया है।
3. वैश्वीकरण के द्वारा विश्व-समुदाय एक गाँव की भाँति बन गया है। आज कोई व्यक्ति कहीं भी किसी से भी बिना किसी हस्तक्षेप के बात कर सकता है।
4. वैश्वीकरण ने आतंकवाद, अपराध, नशीली दवाओं का व्यापार, हथियारों की वृद्धि आदि को भी बढ़ावा दिया है।
5. (1) अभाव से मुक्ति; (2) भय से मुक्ति; एवं (3) इस ग्रह पर वर्तमान संपत्ति को भावी संतति के लिए बचाने की स्वतंत्रता।
6. कहीं कहीं मानव ने कभी टेलीफोन पर बात तक नहीं की है। उन्हें अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु क्षमता से अधिक परिश्रम करना पड़ता है। वास्तव में वैश्वीकरण में भाग लेकर हम उनकी निर्धनता का अपमान कर रहे हैं।
7. शक्ति व संपत्ति का अन्यायपूर्ण वितरण राष्ट्रों में आंतरिक कलह की मुख्य जड है।
8. लगभग दस अरब से ऊपर जनता गरीबी रेखा से नीचे रह रही है। इन्हें शुद्ध जल तक उपलब्ध नहीं है। इसके अतिरिक्त हमारी आधी मानव जाति समुचित स्वच्छता से वंचित है। इन सब अभावों से स्वतंत्रता को अभावों से मुक्ति कहा गया है।
10. वैश्वीकरण सूचना प्रौद्योगिकी का ऐसा जाल है जिससे जीवन बहुत ही सरल हो गया है।
11. वसुधैव कुटुंबकम।
12. मानव जाति का बढ़ता लालच व केवल उपभोग की लालसा।

13

उस रात्रि उसने ढ़ाई घंटे तक नृत्य किया और जब उसने नृत्य समाप्त किया, उसकी स्तुति थम नहीं रही थी। उसकी उस एकल् अभिव्यक्ति ने उसे अत्यधिक सनसनीखेज नायिका बना दिया, जिसे राष्ट्र ने पहले कभी नहीं देखा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

था। तब से वह विश्वभर में अपनी कला के प्रदर्शन हेतु निमंत्रित की जाने लगी। वह थी सुधा चंद्रन, अपंग लोगों की राष्ट्रीय प्रतिमा व प्रकाश स्तंभ।

एक इतना बड़ा आघात पहुँचा, जिसका प्रतिकार भी नहीं। वास्तव में प्रतिकार देर से प्रतीत हुआ। शरीर की चोट का वर्णन करते हुए सुधा कहती हैं "मैं केवल 18 वर्ष की थी। इससे पूर्व कि मैं जीवन को समझ पाती, तब यह हादसा हुआ और यह भाग्य का एक बहुत बड़ा झटका था।"

"यह दुर्घटना उस मध्यरात्रि को घटित हुई, जब मैं और मेरी माँ वैव्यालुर की यात्रा से चेन्नई जा रहे थे। हमारी बस का सामने का भाग तिरूवल्लुवर परिवहन निगम की बस से टकराया, जिसने ड्राईवर की सीट को काटते हुए मेरे जीवन को समाप्त कर दिया।" सुधा ड्राईवर की सीट से पीछे वाली सीटों पर टाँगे सामने वाली सीट पर पसारकर बैठी थी। परिणामस्वरूप उसकी टाँग मृतप्राय: हो गई। कुछ कॉलेज के छात्रों ने उसे बड़ी कठिनता से मलबे से निकाला। परंतु उसकी दाहिनी टाँग बुरी तरह मलबे में फँस गई।

दुर्भाग्य से दायीं टाँग पर पलस्तर कर दिया गया। उन्हें खुला छोड़ देना चाहिए था। उनमें सड़ाव उत्पन्न हो गया और उसका सारा शरीर नीला पड़ गया। तब प्रश्न उठा कि या तो जीवन को बचाया जाये या टाँग को। परिणामत: उसकी टाँग को घुटने से 8 सेंटीमीटर काटना पड़ा। अभी-अभी उसने भरतनाट्यम के चमकदार जीवन में पदार्पण ही किया था कि उसका जीवन ही धराशायी हो गया। लेकिन उसने संकल्प लिया कि वह धैर्यपूर्वक बिना किसी बैसाखी की सहायता से चल पड़ेगी।

"मैंने 'जयपुर पाँव' के विषय में सुना। मैं इसके आविष्कारकर्ता डॉ० प्रमोद सेठी से मिली। यह एक कृत्रिम पाँव था। मैंने बेझिझक प्रमोद सेठी से पूछा कि क्या मैं पुन: नृत्य कर पाऊँगी?" डॉ० प्रमोद सेठी के शब्द "क्यों नहीं" ने जैसे सुधा चंद्रन को अमृतपान करा दिया। सुधा अपनी दो वर्षीय अपंगता को दार्शनिक रूप देते हुए कहती हैं, "यह मेरे जीवन और मरण का प्रश्न था। या तो मुझे संघर्ष करना था या हार को स्वीकार करना था। बीच का कोई प्रश्न ही नहीं था।" वे कहती हैं, "मैं असफलताओं के साथ कभी नहीं बँधी। मैंने अंत तक संघर्ष किया व विजयश्री प्राप्त करने हेतु कई रातें बिना सोए बितायीं।"

उसके प्रबल प्रयासों ने सफलता का इतिहास रच दिया। वर्ष 1984 में जयपुर पैर के साथ उसने पूरे विश्वास के साथ अपना प्रथम मंचन किया। "बाकी सब एक इतिहास है" उनके पिता गर्वोक्तिपूर्ण वर्णन करते हैं। सुधा चंद्रन द्वारा भरतनाट्यम का पटन, एक श्रेष्ठ धैर्य, दृढ़ता व प्रबलता का अंत में प्रतीक है। लक्ष्य की विजयशक्ति का प्रतीक है।

सुधा का जीवन जीवन के एक मूल प्रश्न का उत्तर देता है। हमें ईश्वर द्वारा दी गई विपरीत परिस्थितियों में दृढ़तापूर्वक अडिग रहना चाहिए। जो कुछ सुधा के साथ हुआ वह कभी भी किसी के साथ भी हो सकता है। विपत्तियों पर हमारा नियंत्रण नहीं है, परंतु हमारा नियंत्रण स्वयं पर है, इस बात पर है कि हम विपत्तियों से किस प्रकार निबटते हैं। सुधा चंद्रन कहती हैं, "कष्टों को अपने से श्रेष्ठतर न होने दें। स्वयं पर विश्वास करें तो सब ठीक हो जाएगा।"

प्रश्न—1. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

2. सुधा चंद्रन किन लोगों के लिए प्रेरणा स्रोत है?
3. सुधा ने अपना प्रथम प्रदर्शन कहाँ किया?
4. श्रोताओं की क्या प्रतिक्रिया थी?
5. सुधा चंद्रन के नृत्य प्रदर्शन की क्या विशेषता है?
6. सुधा व उसकी माता कहाँ जा रहे थे जब दुर्घटना घटी?
7. सुधा को किन्होंने बचाया?
8. उपरोक्त गद्यांश में उसके चरित्र की कौन सी विशेषता प्रकट की गई है?
9. 'जयपुर पाँव' क्या था?
10. सुधा ने किस नृत्य शिक्षा में कदम रखा था जब दुर्घटना घटी?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

11. 'दृढ़ता' व 'प्रबलता' निम्न में से क्या हैं—संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण।
12. 'सफलता का इतिहास रच दिया' मुहावरे का अर्थ बताइए।

उत्तर—1. जहाँ चाह वहाँ राह।
2. सुधा चंद्रन अपंग लोगों के लिए प्रेरणा स्रोत हैं।
3. सुधा ने अपना प्रथम प्रदर्शन मुंबई में किया।
4. श्रोता उसके प्रदर्शन से बहुत प्रभावित हुए और वे खुशी से झूम उठे।
5. सुधा चंद्रन एक अपंग महिला हैं। उनके नृत्य प्रदर्शन की यह विशेषता है कि वे एक कृत्रिम पैर द्वारा नृत्य करती हैं।
6. सुधा व उसकी माता वैव्यालुर से चेन्नई जा रहे थे।
7. सुधा को कॉलेज के छात्रों ने बचाया।
8. सुधा चंद्रन एक दृढ़-निश्चयी व हार न मानने वाली नर्तकी हैं।
9. 'जयपुर पाँव' एक कृत्रिम पाँव था जिसकी मदद से सुधा ने नृत्य के क्षेत्र में पुनः पदार्पण किया।
10. भरतनाट्यम।
11. विशेषण।
12. सफलता के कीर्तिमान स्थापित करना।

14

प्रेम और शांति के प्रतीक, जिस अक्षरधाम मंदिर पर आत्मघाती आतंकवादियों ने हमला किया था, वह देश के सदी के सर्वोत्कृष्ट वास्तुशिल्पों में से एक है। महाराणा प्रताप मार्ग, सेक्टर-20 गांधीनगर स्थित यह मंदिर स्वामी नारायण संप्रदाय का सबसे भव्य और विशाल मंदिर है। इसका निर्माण कार्य 1985 में सम्पन्न हुआ था। निर्माण कार्य पूरा होने के बाद 2 नवंबर 1992 को इसे भगवान स्वामी नारायण को उनकी द्विशताब्दी के अवसर पर समर्पित किया गया।

मंदिर की भव्यता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि इसके चार मुख्य स्तंभों की ऊँचाई 108 फुट तक है। इस मन्दिर में पत्थर के सबसे लंबे सपोर्ट बीम इस्तेमाल किए गए। पत्थर के मात्र एक ही टुकड़े से तराशे गए बीम की लम्बाई 22 फुट तक है और वजन है 5 टन से भी अधिक।

23 एकड़ से भी अधिक के विशालकाय भूखंड पर विस्तीर्ण इस मंदिर में आधार से लेकर शिखर तक, कहीं भी लोहे या इस्पात का प्रयोग नहीं किया गया। मंदिर में पूरी तरह नक्काशीदार 73 और आंशिक रूप से नक्काशीदार 63 स्तंभ हैं। विभिन्न निर्माण खंडों को स्थायित्व प्रदान करने के लिए 220 स्तंभ लगाए गये हैं। इनमें से 16 स्तंभों पर 'रूपकास' पद्धति से चित्र और आकृतियाँ उकेरी गयी हैं।

मंदिर में छोटे-बड़े 25 गुंबद हैं। मंदिर में 64 परम्परागत बड़ी मूर्तियाँ भी स्थापित की गई हैं। इनमें स्वामी नारायण की दो स्वर्ण प्रतिमाएँ भी शामिल हैं। इसके अलावा विभिन्न देवी-देवताओं के 192 चित्र भी स्तंभों, गुंबदों और भित्तियों के रूप में उकेरे गए हैं। अक्षरधाम मंदिर के निर्माण में 5 प्रकार के पत्थर गुलाबी संगमरमर, जैसलमेर के पीला पत्थर, मकराना और अम्बाजी के सफेद संगमरमर और झांसी के मैरून ग्रेनाइट का प्रयोग किया गया है।

अक्षरधाम मंदिर का शिलान्यास 14 दिसम्बर 1979 को किया गया था। मंदिर के निर्माण में 6 वर्ष का समय और 900 कुशल शिल्पियों का परिश्रम लगा था। हालांकि मंदिर 1985 में ही बनकर तैयार हो गया था। लेकिन जनता के लिए इसे नवम्बर 1992 में खोला गया।

समाज में नैतिक मूल्यों की नये सिरे से स्थापना और मानव सेवा के उद्देश्य से इस मंदिर का निर्माण किया गया था। प्रश्न उठता है कि मानव सेवा के लिए स्कूल, कॉलेज या अस्पताल का निर्माण होता, मंदिर का क्यों? उत्तर है, यह मंदिर शिक्षा देता है कि एक आदमी सही अर्थों में इन्सान कैसे बने। बीते 92 वर्षों से स्वामी नारायण संस्था यही उद्देश्य लेकर विश्वस्तर पर काम कर रही है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्वामी नारायण संप्रदाय के प्रवर्तक थे स्वयं भगवान स्वामी नारायण। उनका जन्म 2 अप्रैल 1781 को अयोध्या से लगभग 20 किलोमीटर दूर जिला गौंडा के छपिया गाँव में हुआ था। ऐसी मान्यता है कि जिस समय स्वामी नारायण का जन्म हुआ था, उसी काल में भारत के विभिन्न भागों में पाँच सौ परमहंसों ने भी जन्म लिया था। कालांतर में वे सभी स्वामी नारायण के शिष्य बने।

मात्र 7 वर्ष की आयु में स्वामी नारायण ने वेद, उपनिषद् और गीता तथा अन्य शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। 10 वर्ष की आयु में उन्होंने काशी के विख्यात पंडितों और शास्त्रियों से शास्त्रार्थ कर विशिष्टताद्वैत की श्रेष्ठता प्रतिपादित की थी। 11 वर्ष की आयु में कठोर तपश्चर्या कर जनकल्याण के लिए गृहत्याग कर दिया था। ऐसी भी मान्यता है कि दैवी प्रेरणा से उन्होंने अपना कार्य क्षेत्र पश्चिम और दक्षिण भारत चुना था।

स्वामी नारायण कृष्ण भक्त थे। कृष्ण भक्ति को ही उन्होंने अपनी अध्यात्म यात्रा का साधन बनाया। स्वामी नारायण ने कन्याकुमारी तक लगभग 12 हजार किलोमीटर की पदयात्रा की और अंततः गुजरात को अपना कार्यक्षेत्र निर्धारित किया। स्वामी नारायण को रामानंद स्वामी ने भागवती दीक्षा प्रदान की और उन्हें नया नाम दिया—स्वामी सहजानंद। रामानंद स्वामी ने उन्हें उनके विशाल अनुयायी मंडल का आध्यात्मिक गुरु भी नियुक्त किया।

मंदिर की भव्यता के कारण तमाम खतरों के मद्देनजर मंदिर का 12 करोड़ रुपये का बीमा भी कराया गया है। यह बीमा सार्वजनिक क्षेत्र की साधारण बीमा कम्पनी ओरियंटल इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड ने किया है। इसके अतिरिक्त 25 लाख रुपये का एक कवर दर्शकों एवं श्रद्धालुओं के लिए किया गया था। लेकिन मंदिर के कर्मचारियों को यह कवर प्रदान नहीं किया गया है।

प्रश्न—1. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।
2. अक्षरधाम मंदिर किसका प्रतीक है?
3. अक्षरधाम मंदिर का निर्माणकार्य कब संपन्न हुआ?
4. अक्षरधाम मंदिर का शिलान्यास कब किया गया?
5. इस मंदिर के बनने में कितना समय लगा?
6. 2 नवंबर 1992 को क्या किया गया था?
7. इस मंदिर का निर्माण किस उद्देश्य से किया गया था?
8. मानव सेवा के उद्देश्य की पूर्ति के लिए मंदिर का ही निर्माण क्यों किया गया। अस्पताल, कॉलेज आदि का निर्माण क्यों नहीं किया गया?
9. स्वामी नारायण संप्रदाय के प्रवर्तक कौन थे?
10. स्वामी नारायण किसके भक्त थे?
11. रामानंद स्वामी कौन थे? उन्होंने स्वामी नारायण को कौन सा नाम दिया?
12. मंदिर की सुरक्षा के लिए क्या कदम उठाए गए हैं?

उत्तर—1. शांति का प्रतीक—अक्षरधाम मंदिर
2. स्वामी नारायण मंदिर प्रेम व शांति का प्रतीक है।
3. स्वामी नारायण मंदिर का निर्माण कार्य 1985 में संपन्न हुआ।
4. अक्षरधाम मंदिर का शिलान्यास 14 दिसम्बर 1979 को किया गया।
5. इस मंदिर के बनने में 6 वर्ष लगे।
6. 2 नवंबर 1992 को इसे भगवान स्वामी नारायण को उनकी द्विशताब्दी के अवसर पर समर्पित किया गया था व इसी दिन से जनता के लिए भी खोला गया था।
7. समाज में नैतिक मूल्यों की नए सिरे से स्थापना व मानव सेवा के उद्देश्य से इस मंदिर का निर्माण किया गया था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

8. मंदिर यह जताने का एक शिक्षाप्रद स्थान है कि एक आदमी सही अर्थों में इन्सान कैसे बने। बीते 92 वर्षों से स्वामी नारायण संस्था यही उद्देश्य लेकर विश्वस्तर पर काम कर रही है।
9. स्वयं भगवान स्वामी नारायण।
10. स्वामी नारायण कृष्ण भक्त थे।
11. रामानंद स्वामी ने स्वामी नारायण को भगवती दीक्षा प्रदान की थी और उन्हें एक नया नाम स्वामी सहजानंद दिया था।
12. मंदिर में विभिन्न खतरों को देखते हुए मंदिर का 12 करोड़ रुपये का बीमा कराया गया है। इसके अतिरिक्त 25 लाख रुपये का एक कवर दर्शकों एवं श्रद्धालुओं के लिए किया गया है।

15

'मन एव मनुष्याणां कारणं बंध मोक्ष्यो:'—महात्मा मनु के इस कथन का आशय यह है कि मनुष्य का मन ही बंधन और मोक्ष का कारण है। मन सभी इच्छाओं का केंद्र है; वह दृश्य, अदृश्य इंन्द्रियों का नियामक और स्वामी है। अत: व्यवहार के स्तर पर उसकी हार को वास्तविक हार और जीत को सच्ची जीत माना जाता है। यदि मनुष्य का मन दृढ़ और स्थिर है तो वह अपनी साधना के पथ पर निरंतर अग्रसर होता रहता है। सांसारिक वैभव, आकर्षण और अर्थ-लिप्सा उसके आत्मिक विकास को अवरुद्ध नहीं कर सकते। मनुष्य की वास्तविक शक्ति उसके मन में निहित है। मन यदि सशक्त और सबल हैं तो अल्प साधनों के बल पर भी व्यक्ति अपनी मंजिल के लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेता है। यदि मन दुर्बल है तो वह लक्ष्यहीन होकर भटक जाएगा। स्वामी शंकराचार्य ने कहा है, ''जिसने मन को जीत लिया है, उसने जगत को जीत लिया है।'' मन ही मनुष्य को स्वर्ग या नरक में प्रतिष्ठित कर देता है, इसलिए मन पर नियंत्रण और मन की दृढ़ता की बात भी बार-बार कही जाती है।

अर्जुन जब महाभारत के युद्ध में अपने ही आत्मीय और स्नेहीजनों को देखकर विचलित हो उठता है तो श्रीकृष्ण कहते हैं, ''हे अर्जुन! मैं इन कौरव वीरों को पहले ही मार चुका हूँ। तू तो इन्हें मारने का निमित्त भर है।'' उनका आशय यह था कि कौरव कुरुक्षेत्र में उतरने से पूर्व ही मन से हार चुके हैं। वे तो दुर्योधन के दुराग्रह के कारण लड़ रहे हैं। वैसे ही रावण जैसे दुर्जय शत्रु से युद्ध करना कोई साधारण बात नहीं थी. लेकिन राम के अडिग विश्वास व मनोविजय के कारण ही समस्त दानव कुल का नाश संभव हुआ। महाराजा जयसिंह ने काबुल विजय के लिए प्रस्थान किया था। बीच में अटक की नदी के भीषण जल-प्रवाह ने उनका रास्ता रोक लिया। सेनापति बोला, ''महाराज! अटक, अटक रहा है।'' जयसिंह ने दृढ़तापूर्वक अपना घोड़ा उफनती नदी में डाल दिया। देखते ही देखते सारी सेना पार हो गई।

दृढ़-चित्त महापुरुषों के सामने कोई बाधा, भय, विपत्ति टिक नहीं सकती। अपने अपराजेय, दृढ़ मन के बल पर वे आगे बढ़ते जाते हैं।

समर्थ गुरु रामदास ने छत्रपति शिवाजी की वीरता की परीक्षा के लिए उदर-शूल का बहाना बनाकर उन्हें शेरनी का दूध लाने को कहा। गुरुभक्त शिवाजी ने तत्काल वन की ओर प्रस्थान कर दिया और सिंहनी का दूध दुहकर लेने लगे। सिंहनी शिवाजी के अदम्य साहस को देखकर कायल हो गयी, उसने कोई प्रतिरोध नहीं किया। ऐसे निर्भीक मन वाले और दृढ़ निश्चयी पुरुष होते हैं, पर्वत उनका रास्ता रोक नहीं सकते, नदियाँ उनके लिए बाधक हो नहीं सकतीं। समुद्र को वे लाँघ लेते हैं। संसार की कोई विपत्ति उनकी राह को रोक नहीं सकती।

महाराणा प्रताप ने घास की रोटियाँ खाना, जंगलों में दर-दर भटकना, पत्थरों पर सोना स्वीकार किया, परंतु अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की और अंत में सारा राज्य युद्ध बल से जीत लिया। द्वितीय महायुद्ध में अमेरिका से बुरी तरह पराजित होकर भी अपने मनोबल की दृढ़ता के कारण जापान फिर से उठ खड़ा हुआ और आज विश्व की महान् शक्तियों में से एक है। दुर्बल व दुबले-पतले गाँधी ने दृढ़ संकल्प से ब्रिटिश साम्राज्य को हिला दिया।

सुख-दु:ख का चक्र चलता रहता है। संसार में किसका समय एक-सा रहा है। लेकिन जो विपत्ति में घबराता नहीं और कष्टों में मुस्कराता रहता है उसको कोई अपने इरादे से विचलित नहीं कर सकता। मन की गति बड़ी चंचल है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मन एक जगह स्थिर नहीं रहता, इसलिए जिन साधकों ने एवं जिन महापुरुषों ने मन को साध लिया उन्होंने अपनी साधना को सफल बना लिया। कवि रहीम कहते हैं कि माला फेरते-फेरते, बाह्य अनुष्ठान करते-करते युग बीत गये, लेकिन हे साधक! उससे तेरा मन कहाँ वश में हुआ? इसलिए मन की साधना अत्यावश्यक है।

विद्वानों के अनुसार हर प्रकार की मानसिक दुर्बलता का उपचार यह है कि मनुष्य विपरीत दशा में सोचना आरंभ कर दे। जैसे, ''मेरा व्यक्तित्व पूर्ण है। उसमें त्रुटि या कमजोरी नहीं है, तो मैं उसे दूर करके रहूँगा। यदि मुझमें कोई दुर्बलता है, तो उसका ध्यान छोड़कर निर्मल शरीर और निर्मल मन का ध्यान करूँगा। मुझे ईश्वर ने अपना ही रूप बनाया है। उसने मुझे पूर्ण मनुष्य बनने की आज्ञा दी है। पूर्ण पुरुष परमात्मा की मैं रचना हूँ, फिर मैं अपूर्ण कैसे हो सकता हूँ? मेरे जीवन की पूर्णता की सत्य है। बनाने वाले ने मुझे दीन, हीन, दुर्बल बनाने के लिए पैदा नहीं किया।'' इस प्रकार नितान्त अपने मन में यह विचार दोहराते रहने से मनुष्य कर्म से अपने को सबल बनाता जाता है।

प्रश्न—1. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।
2. 'मन एव मनुष्याणां कारणं बंध मोक्ष्योः'।
3. मनुष्य की वास्तविक शक्ति कहाँ निहित है?
4. किस प्रकार का व्यक्ति जगत को जीत लेता है?
5. महाभारत के युद्ध में कौरवों की हार का मुख्य कारण क्या था?
6. सिंहनी ने शिवाजी को अपना दूध दुहते देख विरोध क्यों नहीं किया?
7. आज जापान उन्नति के शिखर पर क्यों विराजमान है।
8. किस प्रकार के मनुष्य अपने इरादों से विचलित नहीं होते।
9. मानसिक दुर्बलता का उपचार क्या है?
10. मन की साधना क्यों आवश्यक है?
11. मनुष्य अपने को सबल कैसे बनाता जाता है?
12. आप किस प्रकार कह सकते हैं कि मन की गति बड़ी चंचल है?

उत्तर—1. मन का साधन।
2. महात्मा मनु ने।
3. मनुष्य की वास्तविक शक्ति उसके मन में निहित है।
4. मन को जीत लेने वाला व्यक्ति स्वर्ग को जीत लेता है।
5. कौरव मन से तो पूर्व में ही हार चुके थे, यही उनकी हार का मुख्य कारण था।
6. सिंहनी शिवाजी के अदम्य साहस की कायल हो गई थी। इसलिए उसने शिवाजी का विरोध नहीं किया।
7. द्वितीय विश्वयुद्ध के उपरांत जापान ने अपने मनोबल में उल्लेखनीय वृद्धि की है। इसीलिए आज वह उन्नति के शिखर पर विद्यमान है।
8. सुख-दुःख के चक्र व विपत्तियों तथा कष्टों में मुस्कुराते रहते भी उसे कोई अपने इरादों से विचलित नहीं कर सकता।
9. यदि मनुष्य अपनी सोच के विपरीत सोचना आरंभ कर दे तो मानसिक दुर्बलता का उपचार संभव है।
10. यदि हम पूजा पाठ का असली आनंद चाहते हैं तो मन को साधना अति आवश्यक है।
11. मनुष्य अपने कर्म से अपने को सबल बनाता जाता है।
12. मन सदा एक जगह स्थिर नहीं रहता वह सदैव चलायमान रहता है। यदि हमारी कोई इच्छा पूर्ण हो जाए तो यह मन दूसरी इच्छा चाहने लगता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

16

बचपन में मैं अपनी छुट्टियाँ अपने दादाजी के घर कलकत्ते में गुजारता था, और वहाँ पर मैंने पढ़ना आरम्भ किया। मेरे दादाजी का घर अव्यवस्थित था, जहाँ मामा-चाचे, बहन-भाईयों से भरा रहता था, कुछ अनोखे, कुछ हँसी मज़ाक वाले, लेकिन आखिर में सब उत्तेजनीय। लेकिन मैंने यहाँ इस घर में अधिक पढ़ना सीखा, विद्यालय से भी अधिक।

मेरे दादाजी की घर की दीवारों पर पुस्तकों की पंक्ति सुंदर डाल से शीशे की अलमारी के अन्दर होती थी। पुस्तक की अलमारी एक बड़े से कमरे में प्रमुखता से प्रदर्शित भी जहाँ अनेक समारोह होते थे, और इसमें एक खेल के मैदान और बैठक घर जैसे प्रयोग होता था। पुस्तक वाली अलमारियाँ सबसे ऊपर थीं, नीचे झुक कर देखती थीं जैसे छिपकर हमारी बातें सुन रही हो, परिवार की बातचीतें, और छोटे बच्चों के झगड़े। बहुत कम ही यह अलमारियाँ उनके शान्त स्थान से हिलाई जाती थीं। मैं शायद अकेला व्यक्ति था जो उन्हें प्रतिरोज आक्रमण करता था और मैं कलकत्ते में वर्ष के कुछ ही महीने वहाँ रहता था। मेरी गैर मौजूदगी में जब यह अलमारियाँ हिलाई जाती थीं, तब उनकी अन्दर की वस्तुओं के लिए नहीं बल्कि उनकी सफ़ाई के लिए होती थी। यदि विवाह के सम्बन्ध के लिए होती थीं जब यह पुस्तक ही अलमारियों को अच्छी प्रकार सफाई किया जाता था। और सफ़ाई होनी भी चाहिए थी क्योंकि उन्होंने महत्वपूर्ण आधार छोटे से खेल में लिया है जो कि उनके सामने सब कुछ हुआ है। यह मेहमान को यह बताना चाहती थी कि इस घर में पुस्तकों का बहुत महत्व है, और दूसरे शब्दों में यह बताती है कि यहाँ के रहने वाले इन्सान बहुत विकसित हैं। यह कलकत्ते में बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि कलकत्ता एक विचित्र पुस्तक शहर है।

क्या हम लोग सचमुच विकसित मनुष्य थे? मुझे आश्चर्य है। मैं ऐसे नहीं सोच सकता। मेरी स्मरण शक्ति में मेरे दादाजी का घर हमेशा भरा हुआ होता था—चाची-मासियों, मामा-चाचों और बहन-भाईयों से। कभी मैं चकित हो जाता था जब मैं सोचता था कि उस घर में कितने व्यक्ति रहते थे, खाते थे, मौज-मस्ती करते थे और पढ़ते थे। लेकिन मेरे चाचे हमेशा व्यस्त रहते थे क्योंकि उनका अच्छा कारोबार था और उनके पास पुस्तकों को देखने के लिए वक्त नहीं होता था।

मेरे सिर्फ एक चाचा पढ़ने के शौकीन थे। वे एक शर्मीले और सेवा-निवृत्त व्यक्ति थे और वे ऐसे व्यक्ति नहीं थे जो अपने बच्चों को पढ़ाते और न ही अपने रिश्तेदारों को सुधारते। पुस्तकों की अलमारी में अधिकतर पुस्तकें उनकी थीं। वह एक शांत स्वभाव के व्यक्ति थे और उनका परिवार में कोई महत्त्वपूर्ण स्थान नहीं था, और उनके विचार बड़ों के साथ नहीं मिलते थे लेकिन घर भरा होने के उपरांत भी सदैव स्थान के लिए झगड़ा होता था, लेकिन उनकी पुस्तक की अलमारी हाल में एक इज्जत वाले स्थान में रखी हुई थी। अंत में अपने रिश्तेदारों से तंग आकर, मेरे पुस्तक पढ़ने वाले चाचा ने दूर शहर के एकांत स्थान पर मकान लेने का फैसला ले लिया लेकिन उनकी पुस्तक की अलमारियाँ वही रहीं, अब मेरे परिवार के लोगों ने उन अलमारियों के साथ लगाव बढ़ा दिया।

कुछ वर्षों बाद घर का भार परिवार के दूसरों सदस्यों के हाथों चला गया जो कि उन पुस्तकों से दूर रहते थे। फिर उनका पुस्तक की अलमारियों के साथ उलटा उनका बंधन बढ़ गया क्योंकि वह उन्हें पढ़ना चाहते थे। मैं चुपचाप इन पुस्तक की अलमारियों से काफी समय तक पुस्तक चुराता रहा। घर के नए राज्य से मेरी यह चोरी बंद हो गई, लेकिन कुछ हलकी सी आवाज से मेरे चचेरे भाई, मेरे इधर-उधर एकत्र हो जाते थे और मुझे सावधान करते थे।

उनको यह बताना कि पुस्तकों को कीड़े खा रहे हैं एक बेकार बहस थी, और पुस्तकें न पढ़ी जाएँ जो नष्ट हो जाती हैं। ऐसी बहसों में वे लोग दिलचस्पी नहीं लेते थे, और जहाँ तक पुस्तक की अलमारियों और उनके अंदर रखे हुए सामान की बात थी, अब उनका एक कानून सा बन गया था।

प्रश्न—1. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

2. हॉल एक पुस्तकालय जैसा लगता था लेकिन वह अन्य कामों में भी प्रयोग होता था। कैसे?

3. पुस्तक की अलमारियाँ चुपचाप निगरानी करती थीं। इसका क्या तात्पर्य है?

4. पुस्तक की अलमारियों की सफाई कब की जाती थी?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

5. जिस घर में बहुत सारी अलमारियाँ हों उस घर के विषय में क्या विचार होना चाहिए?
6. पुराना घर नए हाथ में चला गया। इससे पुस्तक की अलमारियों के संबंध में लेखक पर क्या असर पड़ा?
7. लेखक को कौन-सी वस्तुएँ बेकार लगी थीं?
8. एक चाचा दूसरों से किस प्रकार अलग थे?
9. 'वे मेरे चाचा से कम थे'। इस वाक्यांश में 'वे' शब्द किसके लिए प्रयोग किया गया है?
10. लेखक के चाचा ने दूर एकांत में मकान लेने का फैसला क्यों लिया?
11. लेखक के चाचे पुस्तकों को देखने के लिए समय क्यों नहीं निकाल पाते थे?
12. पुस्तकों की अलमारियाँ क्या बताती थीं?

उत्तर—1. मेरे दादाजी का पुस्तकालय
2. हॉल में अनेक समारोह होते थे और इसमें एक भाग खेल के मैदान और बैठक घर जैसे प्रयोग होता था।
3. पुस्तक वाली अलमारियाँ सबसे ऊपर थीं जो इस प्रकार नीचे झुकी हुई थीं मानो छिपकर पारिवारिक बातें व छोटे बच्चों के झगड़े सुन रही हों।
4. किसी विशेष अवसर पर पुस्तकों की अलमारियों की सफाई की जाती थी।
5. जिस घर में बहुत सारी अलमारियाँ हों उस घर के विषय में यह माना जाना चाहिए कि वहाँ विकसित लोगों का वास है।
6. पुराना घर नऐ हाथों में चला गया। इससे पुस्तकों के साथ लेखक के संबंध प्रभावित हुए। अब उसे पुस्तकों को चोरी से पढ़ना होता था। यदि कुछ खराब हो जाये तो उसे नए मालिकों द्वारा धमकाया जाता था।
7. पुस्तक की अलमारियों का न पढ़ने वाले हाथों में चले जाना लेखक को बेकार लगा था।
8. सिर्फ एक चाचा पढ़ने के शौकीन थे। वे एक शर्मीले और सेवा-निवृत्त व्यक्ति थे।
9. 'वे मेरे चाचा से कम थे'। इस वाक्यांश में 'वे' शब्द लेखक के चाचा के लिए प्रयोग किया गया है।
10. लेखक के चाचा ने दूर एकांत में मकान लेने का फैसला इसलिए लिया क्योंकि वे पढ़ना चाहते थे।
11. क्योंकि वे अपने व्यापार में व्यस्त रहते थे।
12. अलमारियाँ बताती थीं कि पुस्तकें चोरी कर ली गई हैं।

17

पहली नजर में देखा जाता है कि आधुनिक मनुष्य अधिकतर समय मशीनों से सहायता लेने से आलसी बन गए हैं। मशीनें क्या हैं? जो केवल मनुष्यों को परेशानी से बचाती हैं। ये मनुष्यों के हाथ-पैरों के समान हैं जो बाहर का कार्य उनके लिए करती हैं। क्रेन्स व लिफ्ट भी हाथ पैर जैसे हैं कि उठाने का काम करती हैं, रेलगाड़ियाँ और मोटर वाहन भी हाथ पैरों का काम करती हैं, जैसे पैदल चलना व भागना। यह सब मशीनों का आविष्कार करने ने मनुष्यों को और आलसी बना दिया है व उनको परेशानियों से बचाता है। और हाँ! इस दृष्टि से मनुष्य आलसी नहीं वरन् मेहनती व शक्तिशाली है।

सर्वप्रथम कानून व सुरक्षा है। यदि आज मेरा किसी दूसरे व्यक्ति से झगड़ा होता है, और मेरी अच्छी प्रकार से पिटाई कर दी जाती है क्योंकि मैं शारीरिक रूप से कमजोर हूँ, और वह मुझे नीचे गिरा देता है। मैं कानून के पास जाता हूँ और कानून के नुमाइंदे दोनों के झगड़े का इंसाफ दिलाते हैं। अब झगड़ों में शक्ति नहीं बल्कि कानून का उपयोग होता है। कानून हमें चोरी और तीव्रता से बचाता है। कोई भी हमारे घर आकर चोरी नहीं कर सकता और न ही मेरे बच्चों को उठाकर ले जा सकता है। यह सच है कि चोर हैं तथा यदा-कदा कानून उन्हें काबू करता है व उन्हें सजा देता रहता है।

हमें यह महसूस करना मुश्किल है कि बचाव का महत्व कितना है। बिना अपने बचाव से मनुष्य एक अच्छी सभ्यता बनाने में सफलता प्राप्त नहीं कर सकता है। एक अच्छी सभ्यता के बनने से वैज्ञानिक आविष्कार नहीं कर सकेंगे व कलाकार अच्छी वस्तुएँ नहीं बना सकेगा। इसलिए कानून व सुरक्षा सभ्यता के लिए बहुत आवश्यक हैं। यद्यपि ये

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दोनों ही सभ्यता नहीं हैं, परंतु इनके बिना सभ्यता बन भी नहीं सकती है। ये सभ्यता के लिए उतने ही आवश्यक हैं जितने हमारे साँस लेने के लिए वायु आवश्यक है।

हम लोग दर्द के भय से मुक्त हो गए हैं। मनुष्य अब भी बीमार पड़ते हैं लेकिन बेहोश करने वाली दवाओं के आविष्कार के बाद बीमारियाँ इतनी भयंकर नहीं रह गई हैं। मनुष्य अब कम बीमार होने लगे हैं। सभ्यता के लिए यह आवश्यक है कि शरीर स्वस्थ रहना चाहिए। अच्छे स्वास्थ्य के होने से हम मनोरंजन कर सकेंगे व आविष्कार कर सकेंगे। आज के स्त्री-पुरुष बीमारियों से अधिक मुक्त हैं और वे पूर्व के लोगों की अपेक्षा अधिक जीते हैं।

सभ्यता के बारे में एक अन्य बात यह है कि हम लोग पहले से कहीं अधिक सुरक्षित हैं। यह सुरक्षा चारों तरफ फैली हुई है। इतिहास द्वारा हमें यह पता लगता है कि पिछली सभ्यताओं का क्या हश्र हुआ। ये किस प्रकार नष्ट हो गईं। उस समय के मनुष्यों ने सभ्यता को तोड़ दिया और नष्ट कर दिया। यही हश्र बेबीलोन व असीरिया का हुआ और बार-बार भारत व चीन में हुआ, और ग्रीस व रोम की सभ्यताओं का तो अंत ही हो गया।

संसार अब पहली बार एकता के सूत्र में बँधा है। खरीदने व बेचने के लिए वस्तुएँ पहले ही एकता में आ गई हैं। अब किरानों की दुकानों में हर देशों की वस्तुएँ पाई जाती हैं। ये हैं ब्राजील से संतरे, अफ्रीका से खजूर, भारत से चावल व चीन से चाय की पत्ती। राजा सोलोमन भी जिन वस्तुओं का उपभोग कर नहीं कर पाता था, वे वस्तुएँ अब घरेलू स्त्री को किराने की दुकानों पर मिल जाती हैं। यह सत्य है कि ये सब वस्तुएँ संसार के चारों कोनों से आती हैं। पहली बार यह महसूस होता है कि संसार एक अकेला स्थान है व बाजार भिन्न-भिन्न जगहों के।

एक सबसे बड़ा सभ्यता का विकार यह है कि हम लोग अपने ज्ञान को किस प्रकार प्रयोग करें। हम देख सकते हैं कि विज्ञान ने हमें क्या शक्तियाँ दी हैं, जैसी ईश्वर के पास होती हैं, फिर भी हम इन शक्तियों को छोटे बच्चों के समान प्रयोग करते हैं।

उदाहरण के लिए हमें यह समझ नहीं है कि मशीनों का कैसा प्रयोग होना चाहिए। मशीनों को मनुष्य के नौकर के समान कार्य करना चाहिए। परंतु आज मशीनें मानव की मालिक बन गई हैं। अधिकतर मानव अपने जीवन का अधिकांश भाग इन मशीनों के रखरखाव में बिता देता है। मशीनें बहुत अधिक कठोर मालिक हैं। उन्हें पीने के लिए पैट्रोल व साफ करने के लिए तेल या सही तापमान में रखने के लिए एसी रखना पड़ता है। यदि उन्हें भोजन सही समय पर न मिले तो वे उदास हो जाती हैं व कार्य करने से मना कर देती हैं या क्रोध में आकर चारों ओर बरबादी फैला देती हैं। उनको अच्छी हालत में रखने के लिए हमें उनका हमेशा ध्यान रखना पड़ता है। मशीनों के बगैर हमें काम करने और खेलने के लिए बहुत मुश्किलें होती हैं, और ऐसा वक्त भी आयेगा जब वे हमारे ऊपर पूरी तरह से राज करेंगी।

प्रश्न—1. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

2. मनुष्य आलसी क्यों बन गए हैं?
3. कानून की आवश्यकता क्यों है?
4. सभ्यता का सबसे बड़ा विकार क्या है?
5. विज्ञान की शक्तियों की तुलना किससे की गई है?
6. मशीनों का प्रयोग किस प्रकार होना चाहिए?
7. मनुष्य की क्या विडंबना है?
8. किस प्रकार मशीनें गुलाम न होकर मालिक बन गई हैं?
9. संसार किस प्रकार एकता के सूत्र में बँध गया है?
10. लेखक यह बात जोर देकर क्यों कहता है कि आने वाले समय में मशीनें मनुष्यों पर राज करेंगी?
11. मनुष्य अपने जीवन का अधिकांश भाग किनके रखरखाव में बिता देता है?
12. मनुष्यों के हाथ-पैरों की तुलना किनसे की गई है?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उत्तर—1. मशीनी सभ्यता।

2. सदैव मशीनों से कार्य कराने की लालसा ने उसे आलसी बना दिया है।
3. सभ्यता को विकसित करने के लिए कानून की आवश्यकता है।
4. सभ्यता का सबसे बड़ा विकार अपने ज्ञान को सही तरह प्रयोग न करना है।
5. विज्ञान की शक्तियों की तुलना ईश्वरीय शक्तियों से की गई है।
6. मशीनों का प्रयोग एक गुलाम की भाँति होना चाहिए।
7. मनुष्य की विडंबना यह है कि वह मशीनों को गुलाम न बनाकर स्वयं उनका गुलाम बन गया है।
8. मानव अपने जीवन का अधिकांश भाग इन मशीनों के रखरखाव में बिता देता है। मशीनें बहुत अधिक कठोर मालिक हैं। उन्हें पीने के लिए पैट्रोल व साफ करने के लिए तेल या सही तापमान में रखने के लिए एसी रखना पड़ता है। यदि उन्हें भोजन सही समय पर न मिले तो वे उदास हो जाती हैं व कार्य करने से मना कर देती हैं।
9. खरीदने व बेचने के लिए सभी देशों की वस्तुएँ पहले ही बाजार में आ गई हैं। अब किरानों की दुकानों में हर देशों की वस्तुएँ मिल जाती हैं।
10. आज की परिस्थिति को देखते हुए, जबकि मनुष्य मशीनों का गुलाम बन चुका है. लेखक ऐसा कहता है।
11. मशीनों के।
12. मशीनों, जैसे क्रेनों, लिफ्टों, गाड़ियों आदि से।

18

कविता मानव हृदय की आनंदमयी कल्पना है। मनुष्य के हृदय का रागात्मक तत्व उसे कविता की ओर प्रेरित करता है। हिंदी-कविता विभिन्न युगों में अनेक संतों, महापुरुषों तथा कवियों द्वारा सजाई-सँवारी गई है। इन सभी ने अपने ढंग से, अपनी-अपनी शैली द्वारा और अपनी-अपनी कल्पना द्वारा काव्य की रचना की है। प्रत्येक कवि का युगीन परिवेश अलग होता है। उसके समाज की विशेषताएँ भिन्न होती हैं, इसीलिए उसकी शैली, वर्णन, विषय, उद्देश्य आदि में अंतर होता है।

मानस पटल पर जो प्रभाव कबीर ने अंकित किया है वह अन्य कवि नहीं कर पाए। हिंदी-साहित्य में भक्ति काल को स्वर्ण युग से जाना जाता है। भक्ति काल को स्वर्ण युग का गौरव दिलाने वाले कवियों में कबीर का नाम अग्रणी है। महाकवि कबीर के जन्म के विषय में अनेक किंवदंतियाँ प्रचलित हैं। कहा जाता है कि कबीर एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे जो लोकलाज के कारण इन्हें लहरतारा तालाब के किनारे फेंक आई थी। महाकवि कबीर का पालन-पोषण नीरु नामक जुलाहे ने किया। निर्धनता के कारण इनकी शिक्षा-दीक्षा का उचित प्रबंध न हो पाया। इनके गुरु रामानंद थे। कहते हैं कि इनका विवाह लोई नामक स्त्री से हुआ था। उससे एक पुत्र तथा एक पुत्री भी थे। इनकी मृत्यु मगहर में हुई।

कबीर के व्यक्तित्व के निर्माण और प्रकाशमान करने में युगीन परिस्थितियों का योगदान कुछ कम नहीं हुआ। कबीर के युग की परिस्थितियों ने उनके व्यक्तित्व को निखार प्रदान किया। कबीर के युग में समाज की दशा शोचनीय थी। हिंदुओं में छुआछूत तथा ऊँच-नीच का भेदभाव प्रबल था। हिंदू तथा मुसलमानों के बीच की खाई बढ़ रही थी। चारों ओर निरंकुशता का बोलबाला था। धार्मिक व सामाजिक अराजकता फैली हुई थी। ऐसी कठिन परिस्थितियों में कबीर का जन्म हुआ।

कबीर ने मधुमक्खी जैसी वृत्ति अपनाकर सब धर्मों के सार और तत्वों का संचयन किया। उसी से ज्ञानमार्ग का वह छत्ता तैयार किया, जो उनकी अध्यात्म साधना का मूल आधार है। कवीर ने अपने युग में प्रचलित बुराइयों का विरोध किया। ढोंग, दिखावा, अंध-विश्वास के वे कट्टर विरोधी थे। उन्होंने झूठा स्मरण करने वाले हिंदुओं को फटकारा तो मस्जिद में अजान देने वाले मुसलमानों को भी नहीं बख्शा। मूर्ति पूजा के कबीर प्रबल विरोधी थे। उनके व्यंग्य बाणों

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से मुल्ला-मौलवी तथा पंडित कोई नहीं बच सका। वे व्रत को मिथ्या व जीभ का स्वाद मानते थे तो रोजा-नमाज को भी जीभ का स्वाद तथा व्यर्थ कहकर त्याज्य बताते थे। कबीर ने अपनी वाणी द्वारा हिंदू तथा मुस्लिमों को एकता के सूत्र में बाँधने का प्रयास किया। उन्होंने विवेक तथा ज्ञानपूर्ण एक ऐसा मार्ग सुझाया जिस पर चलकर दोनों का कल्याण था।

उन्होंने समाज के वैषम्य को कम करने का स्तुत्य कार्य किया। कबीर के राम को खोजने के लिए न 'काशी-मथुरा' जाना पड़ता है और न 'मक्का-मदीने'। शांत मन से उसे अपने में ही खोजा जा सकता है। कबीर का ज्ञान-प्रेम समन्वित साधना का मार्ग है। सच्चाई पवित्रता एवं उच्चता के भावों के समन्व्य और समता का मार्ग है। यद्यपि कबीर ने कोई ग्रंथ नहीं लिखा तथापि उसकी वाणी के तीन भाग—साखी, सबद तथा रमैनी—माने जाते हैं।

कबीर युग प्रवर्तक, क्रांतिकारी, युगदृष्टा तथा समाज सुधारक और भक्त कवि थे। उन्होंने समाज के सम्मुख शुद्ध जीवन-यापन का संदेश दिया। सीधी-सादी भाषा में कहे गए उनके पद व साखियाँ समाज को अज्ञान से मुक्त कराने की महान् चेष्टा हैं।

अनपढ़, निर्धन तथा निम्न जाति के कबीर ने अपने विरोधियों से डटकर टक्कर ली तथा बड़े-बड़े पंडितों, मुल्लाओं की बोलती बंद कर दी। जन-भावनाओं को आंदोलित कर पाने में समर्थ होने वाला कवि ही वास्तव में सच्चा कवि होता है। हिंदी साहित्य में ऐसे कवि कम ही हुए हैं जिनकी वाणी में इतना मर्म, इतनी सारगर्भिता तथा इतना व्यंग्य छिपा पड़ा हो। कबीर की उक्तियाँ सीधे मर्म पर चोट करती हैं। कबीर की वाणी संत की वाणी है। कबीर एक ऐसा संत है, जो फक्कड़ है, मस्तमौला है, जो शुद्ध सात्विक जीवन में विश्वास करता है।

प्रश्न—1. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

2. कविता क्या है?
3. कबीर के जन्म के विषय में कौन सी किंवदंतियाँ प्रसिद्ध हैं?
4. कबीर के गुरु का क्या नाम था?
5. कबीरदास के समाज की कुछ विडंबनाएँ बताइए।
6. कबीर ने किनका डटकर विरोध किया?
7. ईश्वर के विषय में कबीर के क्या विचार थे?
8. कबीर की उक्तियों का क्या प्रभाव मानस पर पड़ता है?
9. मूर्ति पूजा के विषय में कबीर के क्या विचार थे?
10. क्या कबीर हिंदू विरोधी थे?
11. कबीर की परवरिश किस प्रकार के परिवार में हुई?
12. युगदृष्टा का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—1. महान संत कबीर।

2. कविता मानव हृदय की आनंदमयी कल्पना है जो मन को प्रसन्नचित्त करती है।
3. कहा जाता है कि कबीर एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे जो लोकलाज के कारण इन्हें लहरतारा तालाब के किनारे फेंक आई थी।
4. रामानंद।
5. कबीरदास के समाज में छुआछूत अत्यधिक मात्रा में था। हिंदू मुसलमानों के बीच खाई बहुत चौड़ी हो गई थी।
6. समाज में फैली बुराइयों का।
7. ईश्वर को ढूँढने के लिए कहीं जाने की आवश्यकता नहीं। उसे यदि प्रयास किया जाये तो अपने भीतर खोजा जा सकता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

8. कबीर की उक्तियाँ सीधे मर्म पर चोट करती हैं। कबीर की वाणी संत की वाणी है।
9. कबीर मूर्ति पूजा के प्रबल विरोधी थे। उन्होंने हिंदुओं द्वारा मूर्ति पूजा करने पर तीखे व्यंग्य-कटाक्ष किए थे।
10. नहीं। कबीर किसी संप्रदाय विशेष के विरोधी नहीं थे। उन्होंने संप्रदायों के नाम पर विभिन्न बुराइयों की भर्त्सना की थी।
11. उनकी परवरिश एक निर्धन जुलाहे परिवार में हुई।
12. दूरदर्शी

19

यह कहना कोई अतिशयोक्ति न होगी कि पृथ्वीवासियों के लिए अंतरिक्ष विज्ञान एक कौतूहल का विषय रहा है। तारों, ग्रहों, आकाशगंगाओं का अध्ययन व अंतरिक्ष यात्रा सैकड़ों वर्षों से महत्वपूर्ण है। चार हजार वर्ष पूर्व इतालवी दार्शनिक तथा खगोलविद् ब्रूनो ने कहा था कि ब्रह्मांड अनगिनत तारों से भरा पड़ा है, जिनके चारों ओर असीमित मात्रा में ग्रह हैं, जो 'होमोसेपियन्स' के लिए खासा शोध का विषय है और रहेगा। गौरतलब है कि मौजूदा 'हाईटेक युग' में अंतरिक्ष को लेकर की जाने वाली खोजों एवं अभियानों पर नजर दौड़ाएँ तो इनमें एक तेज वृद्धि नजर आ रही है। इस हलचल को देखकर आसानी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि इक्कीसवीं सदी में नक्षत्रीय दोहन के लिए बहुत बड़ी राशि का निवेश किया जाने वाला है। 12 वर्षों बाद विश्वभर के वैज्ञानिकों की निगाहें 'चंदा मामा' पर टिकी हैं और इन दिनों वाजयाफ्ता भारत ने 'मिशन टू मून' हेतु चंद्रयान को भेजने (2008) का निर्णय लिया है, जो न सिर्फ प्रासंगिक, उचित, समयानुकूल व देशहित में है, अपितु इससे देश के चतुर्दिक विकास को भी एक अभूतपूर्व आयाम मिलेगा।

इससे जहाँ अंतरिक्ष विज्ञान के कई अनसुलझे रहस्य सुलझेंगे, वहीं भारत के चाँद पर अपनी दावेदारी होने से इसकी मिट्टी में पड़े लाखों टन हीलियम-3 से विश्व सहित भारत को आने वाले दिनों में होने वाली ऊर्जा संकट से मुक्ति मिलेगी। इससे अंतरिक्ष टेक्नोलॉजी को उन्नति मिलेगी जो अंततः भारत के मिसाइल विकास कार्यक्रम को नई व उन्नत जानकारी देगी और भारत भी यू०एस०ए० की तरह 'एयर डिफेंस सिस्टम' बना सकेगा, जो पूर्णतः देशी तकनीक पर आधारित होगा। कहने का आशय है कि भारतीय लूनर मिशन की सफलता देश की सुरक्षा व खुफिया व्यवस्था को एक नया आयाम देगा।

हालांकि भारत जैसे गरीब व विकासशील देश में इस पौने चार अरब रुपये की महँगी यात्रा को अव्यवहारिक बताया जा रहा है, लेकिन मेरा एक सवाल है कि गरीबी व निर्धनता की आड़ लेकर नई तकनीक को तिलांजलि देना कहाँ की बुद्धिमानी है? इसरो के आँकड़ों पर यदि नजर दौड़ायें तो पायेंगे कि प्रक्षेपण और यान की परिक्रमा पर यह खर्च हमारे सालाना अंतरिक्षीय बजट में महज 5-7 फीसदी की बढ़ोत्तरी है जिसकी अनदेखी अंतरिक्ष विज्ञान और अनुसंधान की दृष्टि से सक्षम राष्ट्र भारत के लिए उचित नहीं है, ध्यातव्य है कि पिछले तीस वर्षों में भारत ने 29-30 उपग्रह स्थापित किए हैं और इन पर कुल दस-बारह हजार करोड़ खर्च आया, जो अमरीका के 3-4 विफल हो गए अभियानों के खर्च के बराबर है। ऐसे में चाँद पर आधिपत्य को लेकर यह खर्च सहज ही वहन किया जा सकता है, ताकि बाद में कम-से-कम हम अपने देशवासियों की अपेक्षाओं पर खरे उतर सकें, हकीकत तो यह है कि हम भारतीय भय, भूख, बेरोजगारी व गरीबी से तो लड़-भिड़ सकते हैं, लेकिन वैचारिक, मानसिक व तकनीकी पिछड़ेपन से कदापि नहीं। यह हम भारतीयों की विडंबना है।

मैं 'मिशन टु मून' चंद्रयान की वकालत इसलिए भी करना चाहता हूँ कि जिस प्रकार आज अंटार्कटिका की अकूत खनिज संपदा पर अपना-अपना अधिकार जताने को लेकर विभिन्न देशों में आपाधापी मची हुई है उसी तरह भविष्य में यदि चाँद की संपत्ति को लेकर कानूनी पक्ष उभरता है, तो उस समय भारत अपना पॉजिटिव पक्ष तभी रख सकेगा जब आज वह चाँद पर जाने की प्रक्रिया को अंजाम देगा। इस नजरिए से भारत का 'मिशन टु मून' और भी प्रासंगिक व जरूरी हो जाता है, ताकि बाद में चाँद की चाँदी (खनिज संपदा) पर हम भी दावे पेश कर सकें।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विवादों में पड़कर हम एक उपलब्धि, एक अभियान, एक नई टेक्नॉलॉजी को तिलांजलि नहीं दे सकते, और फिर हम अगर यह लक्ष्य पाने में देर करेंगे, तो बाजी हमारे हाथ से निकल जायेगी, ऐसी स्थिति में हमें दूसरे देशों के सामने 'याचक मुद्रा' में खड़े रहना पड़ेगा, जो नागवार गुजरेगा, जरा सोचिए! एक स्वाभिमानी देश के वैज्ञानिक ऐसी स्थिति को किसी सूरत में गँवारा नहीं करेंगे, इतिहास साक्षी है कि हर विषम व विपरीत परिस्थितियों में हमारे वैज्ञानिकों ने अपने 'सुपर ब्रेन' का परिचय दिया है चाहे वह अमरीका द्वारा नकारे जाने पर 'सुपर कम्प्यूटर' की ईजाद हो या रूस से क्रायोजेनिक इंजन न मिलने पर स्वयं के द्वारा उत्पन्न किया गया क्रायोजेनिक इंजन हो या फिर स्वयं के बूते हरित क्रांति जैसा लक्ष्य पाना हो।

प्रश्न—1. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

2. 'होमोसेपियन्स' क्या है?
3. 'हाईटेक युग' का क्या आशय है?
4. 'चंदा मामा' शब्द में कौन का अलंकरण प्रयुक्त हुआ है।
5. चंद्रमा की मिट्टी में कौन सा मूल्यवान खनिज है?
6. हम भारतीयों की क्या विडंबना है?
7. किस मामले पर विभिन्न देशों में आपाधापी मची हुई है?
8. 'मिशन टु मून' भारत के लिए अधिक प्रासंगिक क्यों हो जाता है?
9. 'याचक मुद्रा में खड़े होना' का आशय समझाइए।
10. किस प्रकार भारतीय वैज्ञानिकों ने अपने 'सुपर ब्रेन' का परिचय दिया है?
11. 'मिशन टू मून' में लगभग कितना खर्च आने की आशा है?
12. 'ऐयर डिफेंस सिस्टम' क्या है?

उत्तर—1. अंतरिक्ष अन्वेषण का महत्व

2. यह मनुष्य प्रजाति का वैज्ञानिक नाम है।
3. आज का युग तकनीक व सूचना प्रोद्यौगिकी का युग है। इसलिए इस युग को 'हाईटेक युग' भी कहा जाता है।
4. रूपक।
5. हीलियम-3
6. हम भारतीय भय, भूख, बेरोजगारी व गरीबी से तो लड़ सकते हैं, लेकिन वैचारिक, मानसिक व तकनीकी पिछड़ेपन से नहीं। यही हम भारतीयों की विडंबना है।
7. अंटार्कटिका की अकूत खनिज संपदा पर अपना हक जमाने की आपाधापी विभिन्न देशों में मची हुई है।
8. जिससे हम भी भविष्य में चाँद की खनिज संपदा पर अपना अधिकार स्थापित कर सकें।
9. भिक्षुक के समान कोई वस्तु माँगना।
10. सुपर कम्प्यूटर व क्रायोजेनिक इंजन को स्वयं बनाकर भारत के वैज्ञानिकों ने अपने 'सुपर ब्रेन' का परिचय दिया है।
11. लगभग पौने-चार अरब रुपये।
12. यह अमरीका द्वारा विकसित की गई एक तकनीक है जिसमें मिसाइलों को निशाने पर पहुँचने से पूर्व ही उन्हें आकाश में नष्ट किया जा सकता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रश्न-अभ्यास

20

यह बात निर्विवाद है कि जब कोई व्यक्ति अपने अंतःकरण को संतुष्ट करने के लिए एक नए धर्म को अपनाने का निर्णय लेता है, तो अपनी इच्छा से वह जहाँ और जब ऐसा करना चाहे, उसे इसकी स्वतंत्रता होनी चाहिए, लेकिन संगठित रूप से धर्मांतरण की प्रक्रिया बलपूर्वक, धमकी देकर, प्रलोभन देकर या बहला-फुसलाकर की जा रही है, इस प्रकार का निंदनीय कार्य विदेशी हितों को पूरा करने के लिए सुनियोजित विदेशी हस्तक्षेप और उनकी सोची-समझी रणनीति हो सकती है। वास्तव में, विश्व हिंदू परिषद द्वारा हाल ही में आरोप लगाया गया कि गरीब व निरक्षर हरिजन और आदिवासियों को उनके विश्वास के कारण नहीं, बल्कि प्रलोभन देकर अथवा बहला-फुसलाकर, यहाँ तक कि धन, बल और बेहतर सामाजिक स्तर सुलभ कराने के वायदे के साथ इस्लाम और ईसाई धर्म में अंतरण करवाया गया। मुझे विश्व हिंदू परिषद के आरोप में सच दिखाई देता है, मेरी दृष्टि में इस विवाद की जड़ यह है ऊँची जातियाँ—ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इस प्रकार के धर्मांतरण के आयोजनों का लक्ष्य नहीं होतीं क्योंकि कुल मिलाकर ये जातियाँ आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से काफी प्रतिष्ठित हैं और इनसे संबंधित विपन्न या निर्धन लोगों को भी बहलाया-फुसलाया या प्रलोभन नहीं दिया जा सकता। इन हरिजनों के विरुद्ध शताब्दियों से चले आ रहे सामाजिक भेदभाव या वर्ण भेद और उनके प्रति हो रहे अत्याचार के कारण भी यह परिवर्तन हो सकता है। संभव है कि उन्होंने अपनी निरक्षरता और गरीबी दूर करने के लिए धर्म परिवर्तन कर लिया हो, धर्म परिवर्तन इतने बड़े पैमाने पर हुआ कि कुछ गाँवों के हरिजनों की पूरी की पूरी जनसंख्या ने ही रातों रात इस्लाम धर्म अंगीकार कर लिया। इसलिए यही नहीं कहा जा सकता कि उन्होंने अपने अंतःकरण की संतुष्टि के लिए धर्मांतरण किया, बल्कि उनके अवश्य कुछ और भी उद्देश्य रहे होंगे। ऐसा प्रतीत होता है कि इस धर्मांतरण में विदेशी धन और निधि ने भी अपनी भूमिका निभाई है। इस धर्मांतरण से उन्हें 'सामाजिक स्तर की समानता' का प्रलोभन दिया गया (लेकिन धर्मांतरण के बाद वास्तव में ये वायदे पूरे नहीं किए जाते) तथा देश में या मध्यपूर्व के देशों में रोजगार देने (इस्लाम स्वीकार करने के लिए) और आवास के अतिरिक्त नए कपड़े और अन्य वस्तुओं को प्रदान करने का भी प्रलोभन दिया गया। इस मामले की जाँच से पता चलता है कि पश्चिम एशियाई अरब देशों से आया तेल का पैसा इस धर्मांतरण में लगाया गया। इसलिए प्रथम दृष्टया यहाँ इस मामले में प्रलोभन, बहलाने-फुसलाने और धमकी (पहले से ही मुस्लिम बहुल गाँवों में) के प्रमाण मिले हैं, इसलिए मेरा मानना है कि इस प्रकार के धर्मांतरण को प्रतिबंधित किया जाना चाहिए और इसे अमान्य तथा वर्जित घोषित किया जाना चाहिए, जो भी इन घटनाओं के लिए जिम्मेदार हों, उन्हें इसका कड़ा दंड दिया जाना चाहिए।

वास्तविकता यह है कि इस प्रकार के संगठित धर्मांतरणों के लिए आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों से जूझ रहा हरिजन वर्ग एक उर्वर भूमि है, हमें स्वयं को इसके लिए जिम्मेदार ठहराना चाहिए, हरिजनों के उत्थान की दृष्टि से गाँधीजी द्वारा किए गए प्रयासों तथा कई विधानों के बावजूद वे आज भी उपेक्षित हैं और उनके साथ भेदभाव किया जा रहा है। उन्हें मंदिरों में प्रवेश करने से रोक दिया जाता है, यहाँ तक कि उन्हें कुँओं, तालाबों, टैंकों से पानी लेने से वंचित कर दिया जाता है और इन सबसे ऊपर उच्च हिंदू जाति द्वारा यह अत्याचार अभी भी जारी है। मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'ठाकुर का कुँआ' में जिस समस्या को स्वतंत्रता से पहले के संदर्भ में सामने लाया गया है, वह अब और अधिक जटिल तथा भयावह रूप धारण कर चुकी है। हरियाणा के झज्जर में हाल में मात्र संदेह के आधार पर पाँच दलितों को पीट-पीटकर मार डाला गया, उन पर जीवित गायों की खाल उतारकर छिपाने का आरोप था। इसके विरोधस्वरूप कई हरिजनों ने धर्म परिवर्तन कर बौद्ध और इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया। यह कदम दोष मुक्त होने के लिए नहीं बल्कि उच्च जाति के हिंदुओं की कथित निराधार भ्रांतियों के प्रतिकारस्वरूप उठाया गया। देश में यदि दलितों के सामाजिक और आर्थिक पक्षों पर अधिक ध्यान नहीं दिया गया, तो गरीबी, कमजोर स्वास्थ्य एवं निरक्षरता से जूझ रहे इस वर्ग का विदेशी धन के बल पर ईसाई मिशनरियों/मुल्लाओं द्वारा शोषण किया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जाता रहेगा। जब तक अवसरों का उपयोग नहीं किया जायेगा, तब तक मात्र प्रतिबंध या कानूनी निषेधों से इस समस्या को हल नहीं किया जा सकता।

प्रश्न—1. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

2. धर्मांतरण कब निंदनीय हो जाता है?
3. हाल ही में विश्व हिंदू परिषद ने क्या आरोप लगाया था?
4. हिंदू समाज के किस वर्ग के लोग धर्मांतरण के प्रलोभन में आ जाते हैं?
5. हरिजनों के धर्मांतरण के पीछे क्या सामाजिक कारण हो सकते हैं?
6. हिंदू सवर्ण जातियाँ हरिजनों पर किस प्रकार अत्याचार करती हैं जिससे वे धर्मांतरण की ओर अग्रसर होते हैं?
7. 'सामाजिक स्तर की असमानता' का क्या अर्थ है?
8. धर्मांतरण कराने के लिए ईसाई मिशनरियाँ अथवा मौलवी किस प्रकार के प्रलोभन देते हैं?
9. हरिजन वर्ग द्वारा धर्मांतरण करने के लिए हम किस प्रकार उत्तरदायी हैं?
10. 'ठाकुर का कुँआ' कृति किसके द्वारा रची गई थी?
11. हरिजनों को किन बातों से वंचित रखा जाता है?
12. धर्मांतरण की समस्या को किस प्रकार हल किया जा सकता है?

21

व्यक्ति-चित्त सब समय आदर्शों द्वारा चालित नहीं होता। जितने बड़े पैमाने पर इन क्षेत्रों में मनुष्य की उन्नति के विधान बनाए गए, उतनी ही मात्रा में लोभ, मोह जैसे विकार भी विस्तृत होते गए। लक्ष्य की बात भूल गए। आदर्शों को मजाक का विषय बनाया गया और संयम को दकियानूसी मान लिया गया। परिणाम जो होना था, वह हो रहा है। यह कुछ थोड़े से लोगों के बढ़ते हुए लोभ का नतीजा है, परंतु इससे भारतवर्ष के पुराने आदर्श और भी अधिक स्पष्ट रूप से महान और उपयोगी दिखाई देने लगे हैं। भारतवर्ष सदा कानून को धर्म के रूप में देखता आ रहा है। आज एकाएक कानून और धर्म में अंतर कर दिया गया है। धर्म को धोखा नहीं दिया जा सकता, कानून को दिया जा सकता है। यही कारण है कि जो लोग धर्मभीरू हैं, वे कानून की त्रुटियों से लाभ उठाने में संकोच नहीं करते।

इस बात के पर्याप्त प्रमाण खोजे जा सकते हैं कि समाज के ऊपरी वर्ग में चाहे जो भी होता रहा हो, भीतर-भीतर भारतवर्ष अब भी अनुभव कर रहा है कि धर्म कानून से बड़ी चीज है। अब भी सेवा, ईमानदारी, सच्चाई और आध्यात्मिकता के मूल्य बने हुए हैं। वे दब अवश्य गए हैं, लेकिन नष्ट नहीं हुए। आज भी वह मनुष्य से प्रेम करता है, महिलाओं का सम्मान करता है, झूठ और चोरी को गलत समझता है, दूसरों को पीड़ा पहुँचाने को पाप समझता है। हर आदमी अपने व्यक्तिगत जीवन में इस बात को अनुभव करता है। समाचार पत्रों में भ्रष्टाचार के प्रति इतना आक्रोश है, वह यही साबित करता है कि हम ऐसी चीजों को गलत समझते हैं और समाज में उन तत्वों की प्रतिष्ठा कम करना चाहते हैं जो गलत तरीके से धन या मान संग्रह करते हैं।

दोषों का पर्दाफाश करना बुरी बात नहीं है। बुराई यह मालूम होती है कि किसी के आचरण के गलत पक्ष को उद्घाटित करते समय उसमें रस लिया जाता है और दोषोद्घाटन को एकमात्र कर्तव्य मान लिया जाता है। बुराई में रस लेना बुरी बात है, अच्छाई को उतना ही रस लेकर उजागर न करना और भी बुरी बात है। सैंकड़ों घटनाएँ ऐसी घटती हैं जिन्हें उजागर करने से लोकचित्त में अच्छाई के प्रति अच्छी भावना जगती है। एक बार रेलवे स्टेशन पर टिकट लेते हुए गलती से मैंने दस के बजाय सौ रुपये का नोट दिया और मैं जल्दी-जल्दी गाड़ी में बैठ गया। थोड़ी देर में टिकट बाबू उन दिनों के सैकेंड-क्लास के डिब्बे में हर आदमी का चेहरा पहचानता हुआ उपस्थित हुआ। उसने मुझे पहचान लिया और बड़ी विनम्रता के साथ मेरे हाथ में नब्बे रुपये रख दिये और बोला, "यह बहुत बड़ी गलती हो गई थी। आपने भी नहीं देखा, मैंने भी नहीं देखा।" उसके चेहरे पर विचित्र संतोष की गरिमा थी। मैं चकित रह गया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ठगा भी गया हूँ, धोखा भी खाया है, परंतु बहुत कम स्थलों पर विश्वासघात नाम की चीज मिलती है। केवल उन्हीं बातों का हिसाब रखो, जिनमें धोखा खाया है तो जीवन कष्टकर हो जाऐगा, परंतु ऐसी घटनाएँ भी बहुत कम नहीं हैं जब लोगों ने अकारण सहायता की है, निराश मन को ढाँढ़स दिया है और हिम्मत बँधाई है। कविवर रवींद्रनाथ ठाकुर ने अपने एक प्रार्थना गीत में भगवान से प्रार्थना की थी कि संसार में केवल नुक्सान ही उठाना पड़े, धोखा ही खाना पड़े, तो ऐसे अवसरों पर भी हे प्रभु! मुझे ऐसी शक्ति दो कि मैं तुम्हारे ऊपर संदेह न करूँ। मनुष्य की बनाई विधियाँ गलत नतीजे तक पहुँच रही हैं तो इन्हें बदलना होगा। वस्तुतः आऐ दिन इन्हें बदला ही जा रहा है। लेकिन अब भी आशा की ज्योति बुझी नहीं है। महान भारतवर्ष को पाने की संभावना बनी हुई है, बनी रहेगी।

प्रश्न—1. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।
2. व्यक्ति चित्त की विशेषता बताइए।
3. उन्नति के साथ-साथ कौन से विकार बढ़ते चले गए?
4. 'धर्मभीरु' शब्द का क्या अर्थ है?
5. 'दकियानूसी' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
6. भ्रष्टाचार के समाचार क्या सिद्ध करते हैं?
7. टिकटबाबू के चेहरे पर संतोष की गरिमा क्यों थी?
8. जीवन कष्टकर कब हो जाऐगा?
9. 'उपहास' के लिए कौन सा शब्द प्रयोग किया गया है?
10. 'हिम्मत बँधाने' के लिए कौन सा मुहावरा प्रयोग किया गया है?
11. धर्मभीरु लोग कानून के साथ कैसा व्यवहार करते हैं?
12. धर्म व कानून में क्या अंतर कर दिया गया है?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2

अपठित गद्यांश—वर्णनात्मक

वर्णनात्मक गद्यांश के अंतर्गत लगभग 400 शब्दों का एक गद्यांश दिया जाएगा। यह वर्णन किसी व्यक्ति, घटना, स्थिति, यात्रा, मेले आदि का हो सकता है। कोई आश्चर्य की बात नहीं कि इसमें किसी विचार का कोई अंश आ जाए। नीचे कुछ वर्णनात्मक गद्यांश तथा उनसे संबंधित प्रश्नोत्तर दिए जा रहे हैं।

1

यह निर्विवाद सत्य है कि व्यक्तित्व का समुचित विकास अपनी ही भाषा के पठन-पाठन से होता है। आज देश में जिस प्रकार अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों की बाढ़ आई हुई है तथा जिस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम द्वारा पढ़ाने को अनिवार्य मानने लगा है, उसे देखकर तो ऐसा नहीं लगता कि हिंदी हमारे संविधान द्वारा स्वीकृत हमारे देश की राष्ट्रभाषा है। विदेशी भाषा के माध्यम से पढ़ने के कारण बालक अपने विचारों को पूरी तरह व्यक्त नहीं कर पाता। वह यथेच्छ ज्ञान भी प्राप्त नहीं कर पाता क्योंकि अंग्रेजी में पढ़ी हुई सामग्री को वह ठीक से समझता नहीं, रट लेता है। इसलिए शिक्षाशास्त्री मानते हैं कि प्रारंभिक कक्षाओं में शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होनी चाहिए।

जब मैं वैयक्तिक और सामाजिक व्यवहार में अपनी भाषा के प्रयोग पर बल देता हूँ, तब निश्चय ही मेरा तात्पर्य यह नहीं है कि व्यक्ति को दूसरी अथवा विदेशी भाषाएँ सीखनी नहीं चाहियें। नहीं, आवश्यकता, अनुकूलता, अवसर और शक्ति के अनुसार अनेक भाषाएँ सीखनी चाहियें तथा उनमें से एकाधिक में विशेष दक्षता भी प्राप्त करनी चाहिए। द्वेष किसी भी भाषा से नहीं करना चाहिए, क्योंकि किसी भी प्रकार के ज्ञान की उपेक्षा करना उचित नहीं है। किंतु प्रधानता सदैव अपनी ही भाषा और उसके साहित्य को दी जानी चाहिए, क्योंकि अपनी संस्कृति, अपने समाज और अपने देश का सच्चा विकास और कल्याण केवल अपनी भाषा के व्यवहार द्वारा ही संभव है। ध्यान रखिए—ज्ञान-विज्ञान, धर्म-राजनीति, तथा लोक-व्यवहार के लिए सदैव लोकभाषा का प्रयोग ही अभीष्ट है। अपने देश, अपने समाज और अपनी भाषा की सेवा तथा अभिवृद्धि करना सभी तरह से हमारा परम कर्तव्य है।

हमारे संविधान ने हिंदी को राष्ट्रभाषा मान लिया था और पंद्रह वर्षों में उसे अंग्रेजी का स्थान दे देने का भी निश्चय कर लिया था। इस काम में अभी तक कोई विशेष प्रगति नहीं दिखाई देती। हिंदी भाषी लोगों की भी इसमें विशेष दिलचस्पी न होना भी समझ में नहीं आता। यहाँ हमें एक ओर पश्चिम का मोह खींचता है तो देश की स्थिति दूसरी ओर ले जाना चाहती है। हम न मोह छोड़ना चाहते हैं और न ही स्थिति को अपनी इच्छा के अनुसार बदल सकते हैं। बहुत बड़ी दुविधा है। आज देशी भाषाओं, विशेषकर हिंदी, को वह महत्व नहीं मिल रहा जो मिलना चाहिए। अफ़सोस यह कि जो इन भाषाओं को अयोग्य समझते हैं, वह अपनी अयोग्यता भाषा के सिर मढ़ देते हैं।

प्रश्न—1. उपर्युक्त गद्यांश का सही शीर्षक दीजिए।

2. बच्चे स्वयं को ठीक से अभिव्यक्त क्यों नहीं कर पाते?
3. क्यों नहीं लगता कि हिंदी संविधान द्वारा स्वीकृत भाषा है?
4. व्यक्तित्व का सही विकास कैसे होता है?
5. तुलनात्मक रूप में अपनी ही भाषा को महत्व क्यों दिया जाना चाहिए?
6. भाषाओं के अध्ययन और उनके प्रयोग में हमें क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

7. अपनी भाषा के अतिरिक्त दूसरी भाषाएँ भी क्यों सीखनी चाहिए?
8. हमारी सबसे बड़ी दुविधा क्या है?

उत्तर—1. शीर्षक—हिन्दी भाषा का महत्व।
2. क्योंकि वे विदेशी भाषा के माध्यम से पढ़े होते हैं। अंग्रेजी में पढ़ी सामग्री को बच्चे ठीक प्रकार समझ नहीं पाते, केवल रट लेते हैं।
3. संविधान में हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में भले ही स्वीकृत किया गया हो, पर उसका प्रयोग अंग्रेजी की तुलना में बहुत कम हो रहा है। अत: यह नहीं लगता कि हिंदी संविधान द्वारा स्वीकृत भाषा है।
4. व्यक्तित्व का सही विकास अपनी भाषा के पठन-पाठन से होता है।
5. क्योंकि अपनी संस्कृति, अपने समाज और अपने देश की सच्ची तस्वीर अपनी ही भाषा से उभरती है और अपनी संस्कृति, समाज और राष्ट्र का सच्चा विकास अपनी भाषा के द्वारा ही संभव है।
6. भाषाओं के अध्ययन और प्रयोग में यह सावधानी बरतनी चाहिए कि ज्ञान विज्ञान के अर्जन के लिए एक नहीं अनेक भाषाएँ सीखनी चाहियें। किंतु अपनी भाषा को महत्व देते हुए उसे ही लोक-व्यवहार में प्रयुक्त किया जाना चाहिए।
7. हमें दूसरी भाषाएँ भी सीखनी चाहियें, क्योंकि इससे हमारा ज्ञान बढ़ता है। हमें किसी भी ज्ञान की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।
8. हमारी सबसे बड़ी दुविधा यह है कि पश्चिमी मोह हम छोड़ नहीं सकते और न ही स्थितियों को अपनी इच्छानुसार बदल सकते हैं।

2

जीवन की कला ठूँठ की तरह खड़े रहने में नहीं है; यह जो पेड़ अपनी जवानी में ही सूख गया, जानते हो क्यों? क्योंकि इसकी जड़ों ने रस लेना बंद कर दिया था। जीवन में लहलहाने का एक ही तरीका है कि उसे विभिन्न रसों को लेने दो। एक विशेष विषय में निपुण होने का तात्पर्य यह नहीं कि तुम फुटबाल के ग्राउंड में मत जाओ, व्यापार में इतने तल्लीन मत हो जाओ कि बच्चों को भूल जाओ, पुस्तकों के कीड़े मत बनो कि यार-दोस्तों की हँसी बुरी लगने लगे। जीवन में विविध रस लेना सीखो और इतना रस लो कि बुढ़ापे की झुर्रियों में उदासीनता और निराशा की एक झुर्री भी न पड़े। रहने का तरीका यही है कि गले में संगीत हो, होठों पर मुस्कुराहट हो, आँखों में हँसी हो, हृदय में उमंग हो और इस प्रकार गाते हुए बढ़ो, हँसते हुए मिलो, मुस्कुराते हुए विदा लो।

मनुष्य की शारीरिक शक्तियाँ इतनी प्रबल नहीं होतीं, जितनी आत्मविश्वास की शक्ति। आत्मविश्वास बहुत बड़ी शक्ति है। कई बार व्यक्ति शारीरिक रूप से सक्षम होता है किंतु मानसिक रूप से कमज़ोर होता है। इससे उसमें आत्मविश्वास की कमी आ जाती है। इस कारण वह अपनी शारीरिक शक्तियों का समुचित उपयोग नहीं कर पाता। शारीरिक शक्ति का भरपूर उपयोग करने के लिए मानसिक शक्ति का विकास करना नितांत आवश्यक होता है।

व्यक्ति के विचार ही कर्म के प्रेरक होते हैं। विचारों द्वारा मन को पोषित करके प्रसन्नता के भावों को विकसित किया जाता है। इससे जीवन को वास्तविक आनंद की अनुभूति होती है। एक व्यक्ति के मुख की प्रसन्नता दूसरे के मन में भी प्रसन्नता को जन्म देती है। प्रसन्न रहने वाला स्वयं ताजगी का अनुभव करता है। मुख पर मुस्कान लाने के लिए कुछ खर्च नहीं करना पड़ता। मुरझाए-मुरझाए, थके-थके और उत्साहहीन चेहरों को कौन पसंद करता है? कोई नहीं। हँसमुख व्यक्ति की ओर सभी आकर्षित हो जाते हैं। कष्ट और दुख सबके जीवन में आते हैं। इनसे घबराना नहीं चाहिए। अपने दुखों का वर्णन करके दूसरों को दुखी नहीं करना चाहिए। दुख स्वयं ही झेलने होते हैं। रो-रोकर दुख सहने से वे और कष्टदायक हो जाते हैं। उनका सामना करते समय मुख पर मुस्कान बनाए रखनी चाहिए।

प्रश्न—1. उपर्युक्त गद्यांश का सही शीर्षक दीजिए।
2. लेखक के अनुसार जीने की वास्तविक कला क्या है?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3. 'जीवन में विविध रस लेना सीखो' से क्या तात्पर्य है?
4. कौन-सी शक्ति प्रबल होती है?
5. आत्मविश्वास की कमी क्यों आ जाती है?
6. 'सक्षम' शब्द का अर्थ लिखिए।
7. जीवन का असली मज़ा कैसे लिया जाता है?
8. मनुष्य किसे पसंद नहीं करता?

उत्तर—1. जीवन की कला।

2. जीवन में विविध प्रकार के अनुभव प्राप्त करना और उसमें आनंद लेना।
3. अपने अनुभव के दायरे को किसी एक क्षेत्र तक सीमित न रखकर तरह-तरह के अनुभवों से अपने जीवन को समृद्ध बनाना।
4. आत्मविश्वास की शक्ति प्रबल होती है।
5. मानसिक रूप से कमजोर होने पर आत्मविश्वास की कमी आ जाती है।
6. समर्थ।
7. हँसमुख व आकर्षक व्यक्तित्व अपनाकर जीवन का असली मजा लिया जा सकता है।
8. दुखों को मनुष्य पसंद नहीं करता।

3

गुरुनानक देव जी एक प्रसिद्ध संत थे। एक बार वे कहीं जा रहे थे। रास्ते में उन्होंने एक मकान पर सात झंडे लगे देखे। यह देखकर उनके मन में जिज्ञासा जागृत हुई। उन्होंने अपने शिष्यों से पूछा, ''यह प्रासाद किसका है? इस पर जो सात झंडे लहरा रहे हैं, इसका क्या कारण है?'' एक शिष्य ने करबद्ध होकर कहा, ''गुरुदेव!'' एक वैभवशाली सेठ की कोठी है। जब इसके पास एक लाख की संपत्ति अर्जित हो जाती है तब यह अपने मकान पर एक झंडा लगा लेता है। लगता है कि इसके पास सात लाख की संपदा है।''

गुरुनानक देव जी उसकी कोठी पर पहुँचे। मालिक को पता लगते ही वह सामने आया और विनम्र शब्दों में गुरुजी से कोठी में चलने को कहा। गुरुजी ने कहा, ''अभी समय नहीं है, काफी दूर जाना है। हमारे पास सोने की एक सुई है। यह रास्ते में खो सकती है। आप इसे सुरक्षित रख लीजिए। इसे आप हमें देव लोक में वापस दे देना।''

सेठ को बहुत आश्चर्य हुआ। वह हाथ जोड़कर बोला, ''आप ऐसा क्यों बोल रहे हैं? यह कैसे संभव होगा? परलोक में तो कुछ भी साथ नहीं जाता। सब यहीं रह जाता है।'' तब गुरुनानक जी ने कहा, ''जब आप अपनी सात लाख की संपदा ले जा सकते हैं तो मेरी इस सुई को भी लेते जाना!''

यह सुनते ही सेठ उनका भाव समझ गया। उसकी अंदर की आँखें खुल गईं। उसने गुरुजी के कथन में छिपे मर्म को समझ लिया। उसके अहं का नशा खत्म हुआ। वह बोला, ''आपने मुझे सही रास्ता दिखा दिया है। मेरा यह धन परोपकार में लगना चाहिए। जो इस संसार में आता है, वह जाता भी है। कोई अपने साथ कुछ भी पदार्थ नहीं ले जा सकता। सभी खाली हाथ आते हैं, खाली हाथ जाते हैं। अतः धन का सदुपयोग ही करना चाहिए।''

प्रश्न—1. उपर्युक्त गद्यांश का सही शीर्षक दीजिए।

2. गुरुनानक जी ने शिष्यों से क्या पूछा?
3. गुरुजी ने सेठ को सोने की सुई क्यों दी?
4. सेठ को वास्तविक ज्ञान कैसे प्राप्त हुआ?
5. सेठ के भवन पर कितने झंडे लगे थे?
6. परलोक में मनुष्य अपने साथ क्या ले जाता है?
7. सेठ को किस बात का अहसास हो गया?
8. धन का उपयोग कैसे कार्यों में करना चाहिए?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उत्तर—1. जब आँख खुले तभी सवेरा।

2. गुरुनानक जी ने शिष्यों से एक कोठी पर सात झंडों के लहराने का कारण पूछा।
3. गुरुजी ने सेठ को सोने की सुई सुरक्षित रखने के लिए दी। इसके पीछे गुरुजी का उद्देश्य सेठ की आँखें खोलना था।
4. गुरुजी द्वारा सुई को संभालकर रखने के लिए कहने के वास्तविक कारण को जानकर सेठ को वास्तविक ज्ञान प्राप्त हुआ।
5. सात।
6. परलोक में मनुष्य अपने साथ कुछ नहीं ले जाता।
7. सेठ को अपने अहं का एहसास हो गया।
8. धन का उपयोग परोपकारी कार्यों में करना चाहिए।

4

अच्छे स्वास्थ्य का आशय तन, मन व आत्मा का स्वस्थ होना है। यह वह अवस्था है जिसमें शरीर व मन अपने कार्यों को समयानुसार समुचित रूप से कार्यान्वित करते हैं। अच्छा स्वास्थ्य प्रत्येक को क्रियाकलापी व समाज के उत्थान के लिए कार्य करने को प्रेरित करता है। इससे न केवल वह बीमारियों से मुक्त रहता है बल्कि अपने मन, आत्मा को भी तरोताजा रखता है। यदि उसे कोई व्याधि होती भी है तो उसे उस विशिष्ट रोग के लिए ही नहीं वरन् संपूर्ण तन व आत्मा के लिए भी उपचार की आवश्यकता होती है। दूसरे शब्दों में एक डॉक्टर की मरीज के मर्ज पर अच्छी पकड़ होनी चाहिए।

विशिष्टता के इस दौर में चिकित्सक मरीजों का इलाज केवल आकस्मिक बीमारी को ध्यान में रखते हुए, मरीज को अलग रखकर, करते हैं। इस प्रकार का कार्यकलाप एक पुरानी कहावत 'ईलाज से परहेज अच्छा' के सर्वथा विपरीत है। डॉ० हेगड़े साधारण व गंभीर बीमारियों पर संपूर्ण कारणों पर एक नजर डालकर वर्णन करते हैं कि बीमारियों को बिना दवा लिए किस प्रकार सही व्यायाम व खाने पीने की आदतों को सुधारकर ठीक किया जा सकता है। धूम्रपान व मदिरापान को छोड़ने से हजारों प्रकार की व्याधियों से मुक्ति पाई जा सकती है। यदि नियमित रूप से योग, व्यायाम व ध्यान किया जाए तो न केवल तन बल्कि मन व आत्मा तक को शांत रखा जा सकता है।

डॉ हेगडे हँसी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं ''हँसने से शरीर के लिए फायदेमंद हार्मोनों के स्राव से वे मन को प्रसन्नचित्त रखते हैं।'' ये हार्मोन शरीर के लिए फायदेमंद व नुकसानदायक दोनों ही हो सकते हैं। ''गुस्से में यह हार्मोन नुकसानदायक भी हो सकते हैं'' डॉ हेगड़े पुनः वर्णन करते हैं, ''परंतु हँसने पर लाभदायक भी हो सकते हैं। हँसना वरदान साबित भी हो सकता है।''

भागदौड़ भरे इस जीवन में, जब तनाव अपनी चरम सीमा पर होता है, प्रत्येक तनावमुक्त जीवन चाहता है। तनावमुक्ति का सर्वश्रेष्ठ रूप गहरी नींद है। डॉ हेगड़े बताते हैं, ''रात में आरामदायक नींद हमारी बैटरी को अगले पूरे दिन के कामकाज के लिए चार्ज कर देती है।'' बिस्तर पर बिना नींद के जाकर पड़ जाने से कोई लाभ नहीं है। नींद न आने की परिस्थितियों में यही श्रेयस्कर होता है कि कोई रुचि की पत्रिका पढ़ी जाए या कोई दिमागी खेल जैसे शतरंज खेला जाए।

प्रश्न—1. उपर्युक्त गद्यांश का सही शीर्षक दीजिए।

2. अच्छे स्वास्थ्य की परिभाषा दीजिए।
3. एक स्वस्थ व्यक्ति किनके लिए कार्य करता है?
4. डॉक्टर एक व्याधि को ठीक करने के लिए कौन सा क्रियाकलाप अपनाते हैं?
5. स्वस्थ जीविका के लिए क्या वरदान साबित हो सकता है?
6. तनावमुक्त जीवन जीने के लिए व्यक्ति की क्या आवश्यकता होती है?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

7. तनावमुक्ति का सर्वश्रेष्ठ रूप क्या है?
8. मन को प्रसन्नचित्त रखने वाले हार्मोन कब नुकसानदायक हो सकते हैं?

उत्तर—1. स्वस्थ तन तो स्वस्थ मन।
2. अच्छा स्वास्थ्य वह अवस्था है जिसमें शरीर व मन अपने कार्यों को समयानुसार समुचित रूप से कार्यान्वित करते हैं।
3. एक स्वस्थ व्यक्ति अपने समाज के लिए कार्य करता है।
4. चिकित्सक मरीजों का इलाज केवल आकस्मिक बीमारी को ध्यान में रखते हुए, मरीज को अलग रखकर, करते हैं।
5. दिल खोलकर हँसना व व्यायाम करना स्वस्थ जीविका के लिए वरदान साबित हो सकता है।
6. तनावमुक्त जीवन जीने के लिए व्यक्ति को गहरी व तनावमुक्त नींद की आवश्यकता होती है।
7. गहरी नींद
8. जब हम गुस्से में होते हैं।

5

सिर दर्द के बहुत से कारण होते हैं। भौतिक कारण, संवेदनिक कारण, व मानसिक कारण जैसे बेचैनी व तनाव इन कारणों में से कुछेक हैं। कभी-कभी सिरदर्द एक पनपती हुई गंभीर बीमारी का संकेतक भी हो सकता है। दवाओं से अधिक योग चिकित्सा किसी भी मर्ज में अच्छी सहायक सिद्ध हो सकती है। 'योग की अक्षुण्ण पहुँच' शरीर व मन की संतुष्टि का एक माध्यम है। योग के द्वारा अन्वेषकों ने कुछ भयंकर सिरदर्द पर काबू पा लिया है। अक्षुण्ण पहुँच में श्वसन, आसन, प्राणायाम, ध्यान व आध्यात्मिक काल शामिल हैं।

योग के वे आसन जिनमें व्यक्ति पशुओं की प्राकृतिक मुद्रा की नकल करता है, के अत्यधिक शांतिमय परिणाम निकलते हैं वह भी बिना किसी दवाओं के सेवन किए। प्राणायाम द्वारा प्राण्यामायाक्सा में बहने वाली प्राणिक ऊर्जा का मंथन किया जाता है जिससे स्वायत्त तंत्रिकातंत्र दृढ़ बनता है। ध्यान और समाधि मन को तनावमुक्त करती है। योग के इन रूपों को करने से व्यक्ति के सिर में होने वाली रासायनिक समीकरणें, जो सिरदर्द उत्पन्न करती हैं, बाधित होती हैं। उन रासायनिक समीकरणों पर प्रतिबंध लगाकर योग सिरदर्द को एक लंबे समय की समस्या नहीं रहने देता।

आपको शांति प्रदान करने वाले आसनों से लेकर प्राणायाम व ध्यान तक योग आपको सिरदर्द से सर्वथा मुक्ति देता है। यह आपको दर्द-बेचैनी-दर्द के कुचक्र में फँसने से रोक देता है।

दीर्घस्थायी या पुराना दर्द वास्तव में प्राण (ऊर्जा) है। ऊर्जा के असमान वितरण या असंतुलन से सिरदर्द की उत्पत्ति होती है। यह असंतुलन कुछ कार्यकलापी असमानता उत्पन्न करता है जैसे—अनिद्रा, जोश में कमी, थकान, चिड़चिड़ेपन में वृद्धि व ध्यान का अभाव। लंबे समयोपरांत, यह असंतुलन एक अंग में स्थायी हो जाता है। पुराना दर्द कभी-कभी मांशपेशियों में ऐंठन के रूप में भी सामने आ जाता है जो बाद में अंग में दीर्घ सूजन के रूप में परिवर्तित हो जाता है।

हमारे योग गुरु योग का देश-विदेश में प्रचार कर रहे हैं। परंतु स्वयं हमारे देश में लोग योग को अधिक मात्रा में नहीं अपना रहे हैं। यद्यपि अब लोगों में योग के प्रति कुछ जागरुकता आई है तथा वे योग को अपनी दिनचर्या में शामिल भी कर रहे हैं। यूरोपीय देशों ने योग के महत्व को समझ लिया है। पाकिस्तान में भी लोग बहुत बड़ी संख्या में योग को अपना रहे हैं। प्राणायाम एक ऐसी रामबाण औषधि है जो शरीर के समस्त विकारों को दूर कर देती है। आयुर्वेद में ऐसी मान्यता है कि सभी बीमारियों का मुख्य कारण कब्ज, वात व पित्त की गड़बड़ियाँ हैं। योग इन तीनों कारणों पर पूर्ण रोकथाम रखता है।

प्रश्न—1. उपर्युक्त गद्यांश का कोई उपयुक्त शीर्षक दीजिए।
2. सिरदर्द के कुछ कारण बताइए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

3. कभी-कभी सिरदर्द किस बात का सूचक हो सकता है?
4. योग किस प्रकार के दर्द निवारण में सहायक है?
5. दीर्घस्थायी दर्द क्या है?
6. दीर्घस्थायी दर्द कभी कभी-कभी कौन सा रूप ले लेता है?
7. तनावमुक्ति का सर्वश्रेष्ठ रूप क्या है?
8. सभी बीमारियों के मुख्य कारण क्या है?

उत्तर—1. योग द्वारा आरोग्य।
2. भौतिक कारण, संवेदनिक कारण व मानसिक कारण जैसे बेचैनी व तनाव आदि।
3. कभी-कभी सिरदर्द एक पनपती हुई गंभीर बीमारी का संकेतक भी हो सकता है।
4. भौतिक कारण, संवेदनिक कारण, व मानसिक कारणों जैसे बेचैनी व तनाव से होने वाले सिरदर्द के निवारण में सहायक है।
5. दीर्घस्थायी या पुराना दर्द वास्तव में प्राण (ऊर्जा) है। ऊर्जा के असंतुलन से इसकी उत्पत्ति होती है।
6. दीर्घस्थायी दर्द कभी कभी-कभी दीर्घ सूजन का रूप भी ले लेता है।
7. योग।
8. कब्ज, वात व पित्त।

6

आय का अर्थ है—लाभ, कमाई और व्यय का अर्थ है—खर्च। घर-गृहस्थी चलाने के लिए धन मिलता है जीविकोपार्जन से। इस प्रकार आय-व्यय का चक्र चलता रहता है। आय कम हो और व्यय अधिक करें तो भी जीवन की गाड़ी नहीं चल सकती। इस प्रकार आय के साथ व्यय और व्यय के साथ आय सन्तुलित रूप से चलती रहनी चाहिए।

आय कैसी हो? आय के साधन कैसे हों? यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है और व्यक्ति को इस विषय पर गंभीरतापूर्वक सोचना पड़ता है। एक बार किसी ने लक्ष्मी से पूछा, ''तुम एक विद्वान से डाह करती हो और आलसी से दूर भागती हो तो फिर किसके पास रहती हो?'' लक्ष्मी ने उत्तर दिया, ''मैं ऐसे पुरुष का वरण करती हूँ जो विद्वान होने के साथ-साथ पुरुषार्थी भी हो।'' पुरुषार्थी से आलस्य सदा दूर रहता है। संस्कृत में कथन है—उद्योगिनं पुरुष सिंहमुपैति लक्ष्मी। उद्योगी पुरुष सिंह के पास लक्ष्मी स्वयं चली आती है। वैसे एक सूक्ति है कि—''धनवान बनने के लिए मनुष्य को चार गुण सीखने चाहिएँ—गैंडे सरीखी खाल, ऊँट के समान भोजन, गधे के समान काम और कुत्ते के समान नींद।'' जैसे गैंडे पर गोलियों की बौछारों का कोई असर नहीं होता, वैसे धनार्थी पर कष्टों का असर नहीं पड़ता। उसमें सहन की क्षमता होती है। ऊँट भोजन के लिए कभी नहीं रुकता, रास्ते में चलते हुए जहाँ भी कोई झाड़ी या पेड़ आया, मुँह मार लेता है और अपनी मंजिल की तरफ चल पड़ता है। धन के इच्छुक व्यक्ति को भी खाने-पीने की फिक्र छोड़नी पड़ती है। तीसरा गुण, गधे जैसा काम। गधे पर चाहे जितना बोझ डाल दो, चाहे जितनी देर काम लो, चाहे सर्दी हो या वर्षा या चिलचिलाती धूप हो, बेचारा कभी मालिक का काम करने से इंकार नहीं करता। धनार्थी व्यक्ति की भी काम करने में ऐसी ही लगन होनी चाहिए। आज बहुत सर्दी है, आज बहुत गर्मी है, अभी बहुत रात है—इस प्रकार जो आदमी काम से जी चुराता है, वह दरिद्र हो जाता है। चौथा गुण यह है कि नींद कुत्ते के समान होनी चाहिए। कुत्ते की नींद बहुत हलकी होती है, थोड़ी सी आहट होते ही वह जाग जाता है। वैसे धनार्थी गहरी नींद नहीं सोता। कई आदमी कुंभकर्णी नींद लेते हैं। पीछे से कोई भी आ जाए, कुछ भी कर जाए, आँखें ही नहीं खुलतीं। ऐसे आदमी धन की रक्षा नहीं कर सकते।

प्रश्न—1. गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।
2. घर गृहस्थी का खर्च कैसे चलता है?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3. लक्ष्मी किस प्रकार के पुरुष का वरण करती है?
4. आलस्य किस प्रकार के पुरुष से दूर रहता है?
5. धनवान होने के लिए मनुष्य को कैसा होना चाहिए?
6. किस प्रकार के आदमी धन की रक्षा नहीं कर सकते?
7. 'कुंभकर्णी नींद' का तात्पर्य बताइए।
8. दरिद्र का विशेषण दीजिए।

उत्तर—1. पुरुषार्थः धन का मार्ग प्रशस्तक।
2. जीविकोपार्जन से।
3. पुरुषार्थी व्यक्ति का।
4. आलस्य पुरुषार्थी पुरुष से सदैव दूर रहता है।
5. धनवान होने के लिए मनुष्य की अपनी खाल गैंडे समान, भोजन नियम को ऊँट के समान, काम गधे के समान व नींद कुत्ते के समान लेनी चाहिए।
6. आलसी व्यक्ति धन की रक्षा नहीं कर सकते।
7. 'कुंभकर्णी नींद' का तात्पर्य ऐसी गहरी निद्रा से है जिसमें व्यक्ति को होश नहीं रहता।
8. दरिद्रता।

7

आजकल झूठे प्रदर्शन और दिखावे का रोग बढ़ गया है। एक होस्टल में दो विद्यार्थी थे। एक दिन एक विद्यार्थी के हाथ में एक पैकेट देखकर दूसरे दोस्त ने पूछा, ''आज हाथ में आज क्या ले आए?'' पहली विद्यार्थी ने मुस्कुराकर कहा, ''यार! पिता ने मेरे लिए पाँच सौ रुपये भेजे हैं, उनका एक टेरेलिन का कपड़ा पैंट-शर्ट बनाने के लिए लाया हूँ।'' दोस्त ने कहा, ''तुम्हारे रुपये तो कपड़ा खरीदने में खर्च हो गये। अब महीने भर खाओगे क्या?'' उसने हँसकर कहा, ''यार! महीना भर चने चबाकर ही निकाल दूँगा, किंतु दोस्तों में कुछ लगूँगा तो सही।'' यह है प्रदर्शन का रोग।

पुराने समय में दादी जी एक खांडे (टूटे) पापड़ की कहानी सुनती थी। एक सेठ ने अपने अहंकार के लिए सारा घर बेचकर पूरी जाति को भोजन कराया और भोज में एक अन्य सेठ को, जिसने लापरवाही में उसे अपने यहाँ टूटा पापड़ परोसा था, जान-बूझकर टूटा पापड़ परोसा। फिर मूँछों पर ताव लगाकर कहा कि मैंने भी अपना बदला ले लिया। बदला क्या लिया? तू भी बरबाद हो गया। इस प्रकार अपने अहं की तुष्टि के लिए लोग घर-फूँक तमाशा दिखाने की कोशिश करते हैं।

अपनी हैसियत से बाहर कदम रखने वाले दर-दर की ठोकरें खाते हैं। नीति के अनुसार, ''अपनी शक्ति से अधिक काम करने वाला, आय से अधिक व्यय करने वाला और भूख से अधिक खाने वाला दुखी होता है।'' आय से अधिक व्यय करने वाले में चोरी की वृत्ति जाग जाती है। चोरी पकड़ी नहीं जाए, इसके लिए वह झूठ बोलता है और धीरे-धीरे हत्याएँ करना भी सीख जाता है।

आजकल फैशन और फिजूलखर्ची का रोग बढ़ता जा रहा है। गाँधी जी ने एक जगह लिखा है—''मनुष्य अर्थ की कमी के कारण उतना परेशान नहीं है जितना आर्थिक अव्यवस्था के कारण।'' मनुष्य अपनी आय के अनुसार व्यवस्था रखे, ठीक से बजट बनाकर चले तो अनेक परेशानियों व फिजूलखर्ची से बच सकता है। आज के युग में अधिकांश लोग कहते हैं कि ''महंगाई से परेशान हो गए।'' किंतु वास्तव में महंगाई से उतने परेशान नहीं हैं, जितने फिजूलखर्ची से हैं। खाने-पीने में, शादी-विवाह में जिस प्रकार अनावश्यक खर्च किये जाते हैं, उनपर नियंत्रण किया जाना चाहिए।

आज के, विशेषकर मध्यम श्रेणी के लोग जिस परेशानी, तंगी और तकलीफों से गुजर रहे हैं, उसका कारण है अपव्यय और दिखावा। यदि वे अपनी आय के अनुसार खर्च करें तो परेशान नहीं होना पड़ेगा। जीवन में संतोष व शांति रहेगी, इसीलिए किसी सज्जन ने ठीक ही कहा है—तेते पाँव पसारिये जेती लांबी सौर।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

प्रश्न—1. गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।
2. आजकल किस प्रकार का रोग बढ़ गया है?
3. सेठ बदला लेने के चक्कर में स्वयं कैसे बर्बाद हो गया?
4. लोग किस चीज की तुष्टि के लिए अपना ही घर जला लेते हैं?
5. गद्यांश का क्या भावार्थ निकलता है?
6. क्या वास्तव में लोग महँगाई से परेशान हैं? या कोई अन्य कारण भी हो सकता है?
7. मध्यम श्रेणी के लोगों की तकलीफों का मुख्य कारण क्या है?
8. भावार्थ बताइए: तेते पाँव पसारिये जेती लांबी सौर।

उत्तर—1. तेते पाँव पसारिये जेती लांबी सौर।
2. दिखावे व झूठे प्रदर्शन का।
3. उसने स्वयं अपनी संपत्ति बेचकर अपना बदला लेने की कोशिश की, इसलिए अपने अहंकार की पूर्ति करने के लिए वह स्वयं भी बर्बाद हो गया।
4. अपने अहं की तुष्टि के लिए लोग अपना ही घर फूँक लेते हैं।
5. प्रस्तुत गद्यांश का भाव यह है कि हमें अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार निर्णय लेने चाहिएँ। इस दुनिया में सब एक समान नहीं रहते। हम एक-दो से तो प्रतियोगिता कर सकते हैं किंतु सभी से तो नहीं।
6. वास्तव में महंगाई से लोग उतने परेशान नहीं हैं, जितने फिजूलखर्ची से हैं।
7. अपव्यय व ऊपरी दिखावा मध्यम श्रेणी के लोगों की तकलीफों का मुख्य कारण है।
8. इसका अर्थ है कि हमें अपनी क्षमता के अनुसार ही खर्च करना चाहिए, अधिक नहीं।

8

रामचरितमानस हिंदी साहित्य का सर्वोत्कृष्ट और विश्व-साहित्य में अनुपम ग्रन्थ है। यह हिंदू जनता का परम पवित्र ग्रन्थ है। ऐसा कदाचित् ही कोई हिंदू होगा जिसके घर को यह पवित्र ग्रन्थ पावन न करता हो। यह महलों से झोंपड़ियों तक सभी घरों में श्रद्धापूर्वक पढ़ा जाता है। यह अनेक विद्वानों का कण्ठहार बना हुआ है। अनेक विद्वान अपने वार्तालाप को इसकी सूक्तियों का उपयोग करके प्रभावशाली बनाते हैं। इसकी अनेक चौपाइयाँ हमारे पारिवारिक, सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन में देववाक्य बन गयी हैं। आज भारत की धर्म और संस्कृति का आधार 'रामचरितमानस' ही है। इस ग्रन्थ में जीवन की विविध समस्याओं का सजीव चित्रण है। यह मानव जीवन को सफल बनाने के लिए मैत्री, प्रेम, करुणा, शांति, तप, त्याग और कर्त्तव्यपरायणता का महान् संदेश देता है। हिंदुओं में इसका वही धार्मिक महत्व है जो मुसलमानों में 'कुरान' का और ईसाइयों में 'बाइबिल' का है।

'रामचरितमानस' की कथा मर्यादा पुरुषोत्तम राम के संपूर्ण जीवन पर आधारित है। तुलसीदास ने अपनी कला एवं प्रतिभा द्वारा इसे नवीन एवं मौलिक रूप दिया है। इसमें राम की रावण पर विजय दिखाते हुए सत्य, न्याय और धर्म की असत्य, अन्याय और अधर्म पर विजय प्रदर्शित की है। इस महान् काव्य में राम के शील, शक्ति और सौंदर्य का मर्यादापूर्ण चित्रण है। इसमें मानव-जीवन के उच्च आदर्शों का समावेश करके तुलसी ने अपनी 'स्वान्तः सुखाय' रचना को 'लोक-हिताय' रूप प्रदान कर दिया है।

तुलसी का रामचरितमानस लोक मंगल की भावना का आदर्श है। तुलसी ने अपनी लोक मंगल साधना के लिए जो भी आवश्यक समझा उसे अपने इष्ट देव राम के चरित्र में निरूपित कर दिया। इस महान् ग्रन्थ से करोड़ों भारतीयों ने अपने जीवन को महान् और आदर्श रूप में सफल बनाने के लिए मार्गदर्शन प्राप्त किया है। आज भी रामचरितमानस की उक्तियाँ विवादास्पद विषयों का समाधान करने के लिए प्रमाण मानी जाती हैं।

तुलसी के रामचरितमानस में तत्कालीन भारतीय समाज मुखरित हो उठा है। यह ग्रन्थ उस काल की रचना है ज़ब हिंदू जनता पतन के गर्त में जा रही थी। वह मुसलमानों के अत्याचारों से भयभीत थी। वह चारों ओर से निराश हो चुकी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

थी। उस समय तुलसीदास जी ने जनता को सन्मार्ग दिखाने के लिए नाना पुराण और आगामों में बिखरी हुई भारतीय संस्कृति को एकत्र कर भारतीय जनता का पथ-प्रदर्शन किया। इन्होंने जनता के विचारों को जनता की भाषा में जनता के कल्याण के लिए इस ढंग से प्रस्तुत किया कि निराशा के गहन अंधकार में पड़ी भारतीय जनता सदा सम्बल प्राप्त करती रही।

प्रश्न—1. गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।
2. रामचरितमानस किसका आधार है?
3. रामचरितमानस क्या संदेश देता है?
4. प्रस्तुत गद्यांश में रामचरितमानस की पवित्रता की तुलना किन अन्य पवित्र ग्रंथों से की गई है?
5. रामचरितमानस की कथा किस प्रकार आधारित है?
6. 'स्वान्तः सुखाय' व 'लोक हिताय' का अर्थ बताइए।
7. रामचरितमानस की रचना तुलसीदास ने किन परिस्थितियों में और क्यों की?
8. रामचरितमानस के रचयिता कौन हैं?

उत्तर—1. मेरा प्रिय ग्रंथ—रामचरितमानस।
2. यह हमारी संस्कृति व धर्म का आधार है।
3. यह मैत्री, प्रेम, करुणा, शांति, तप, त्याग और कर्त्तव्यपरायणता का संदेश देता है।
4. कुरान व बाईबिल से।
5. मर्यादापुरुषोत्तम राम के जीवन पर।
6. 'स्वान्तः सुखाय' का अर्थ है—जो स्वयं को सुख दे। 'लोक हिताय' का अर्थ है—लोगों के हित में हो।
7. हिंदू जनता पतन के गर्त में जा रही थी। वह मुसलमानों के अत्याचारों से भयभीत थी। वह चारों ओर से निराश हो चुकी थी। उस समय तुलसीदास जी ने जनता को सन्मार्ग दिखाने के लिए रामचरितमानस की रचना की।
8. तुलसीदास।

9

मनुष्य की पहचान उसकी वाणी से होती है। बोलते ही व्यक्ति के स्वभाव का पता चल जाता है। मधुर शब्दों का प्रयोग करने वाला सभी को अपना बना लेता है। मीठे वचन बोलने वाला व्यक्ति चुंबक के समान होता है, जिसकी ओर अन्य लोग लोहे के समान खिंचे चले आते हैं। क्रोध मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु होता है। इसके वश में पड़कर व्यक्ति अनुचित कार्य कर देता है। इस पर नियंत्रण अत्यंत आवश्यक होता है। मन में प्रेम का भाव जागृत करके क्रोध पर काबू पाया जा सकता है। प्रेम मनुष्य को मनुष्य से जोड़ता है, मधुर वचन बोलने के लिए प्रेरित करता है। सबसे विनयपूर्वक बोलने वाला व्यक्ति स्वयं सुखी रहता है और दूसरों को भी सुखी रखता है।

मधुर वचन मानो वशीकरण के समान हैं जो सामने वाले व्यक्ति को सहज ही बस में कर लेते हैं। कटु वचन तो भीतर तक जाकर धँस जाते हैं। तलवार का घाव एक बार भर सकता है, परंतु कटु वचनों का नहीं। शब्दों के बाण लौटकर वापस नहीं आते, उनका प्रभाव होकर ही रहता है। अतः मनुष्यों को प्रयासपूर्वक मीठे वचन ही बोलने चाहिएँ। मीठे वचन औषधि के समान होते हैं जो व्यक्ति के आहत मन पर मधुर लेप का कार्य करते हैं। कटुभाषी व्यक्ति सदैव निंदा का पात्र बनता है। उसमें क्रोध, शत्रुता जैसे भावों का विकास होता है, उसका कोई मित्र नहीं बनता, वह अकेला पड़ जाता है जबकि मीठे वचन बोलने वाला मृदुभाषी व्यक्ति सब जगह आदर-सम्मान पाता है। उसके भीतर नम्रता, शिष्टता और सहृदयता जैसे गुणों का स्वतः ही विकास होता चला जाता है। कोयल और कौऐ का उदाहरण हम सबके सामने है ही। कटुभाषी कौए की काँव-काँव सुनते ही सब उसे कंकड़ मारकर भगा देते हैं, किंतु कोयल की मीठी वाणी सुनने की उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा करते हैं। मीठे वचन ही परिवार में और समाज में सुख शांति का आधार होते हैं। वे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सद्भावना एवं सहृदयता का संचार करते हैं। कठिन-से-कठिन परिस्थितियों को भी मृदुभाषी अपनी वाणी के बल पर झेल लेता है और सबका सहयोग प्राप्त कर उन्नति के पथ पर आगे बढ़ता है।

प्रश्न—1. गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।

2. मनुष्य के स्वभाव का ज्ञान किस प्रकार होता है?
3. मनुष्य के गलत व्यवहार का कारण क्या है?
4. कैसे मनुष्यों की तुलना चुंबक से की गई है?
5. मधुर वचन क्यों बोलने चाहिएँ?
6. मधुर वचन वशीकरण के समान क्यों हैं?
7. मधुर वचन बोलने वाले के भीतर किन गुणों का निर्माण स्वतः ही हो जाता है?
8. कटुभाषी व्यक्ति के समक्ष क्या विडंबना होती है?

उत्तर—1. मधुर वचन है औषधि, कटुक वचन हैं तीर।

2. मनुष्य के स्वभाव का ज्ञान उसकी वाणी से होता है।
3. मनुष्य के गलत व्यवहार का कारण मनुष्य का क्रोध के वश में हो जाना है।
4. मधुर वाणी वाले मनुष्यों की तुलना चुंबक से की गई है।
5. समाज में आदर व सम्मान पाने के लिए मधुर वचन बोलने चाहिएँ।
6. मधुर वचन वशीकरण के समान इसलिए हैं कि यह दूसरे व्यक्ति को आपके वश में कर देता है।
7. मधुर वचन बोलने वाले के भीतर शिष्टाचार व नम्रता सरीखे गुणों का निर्माण स्वतः ही हो जाता है।
8. वह समाज में कहीं भी आदर का पात्र नहीं होता।

10

भारतीय इतिहास में 26 जनवरी का दिन बहुत ही महत्वपूर्ण है और प्रतिवर्ष इसी दिन हमारा यह राष्ट्रीय पर्व बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जाता है। सन् 1950 में जब स्वतंत्र भारत का नया संविधान लागू किया गया तो सारे राष्ट्र में हर्षोल्लास की लहर दौड़ गयी थी। वह शुभ दिन 26 जनवरी का ही था। हमारे देश के प्रथम राष्ट्रपति देशरत्न डॉ० राजेन्द्र प्रसाद बनाये गये।

गत गणतंत्र दिवस संपूर्ण राष्ट्र में बड़ी ही धूम-धाम से मनाया गया। इस दिन सार्वजनिक अवकाश था। देश के कोने-कोने में झाँकियाँ निकाली गई थीं। भारत की राजधानी दिल्ली में तो इसकी छटा ही अलग थी।

लगभग 9 बजे प्रातः राष्ट्रपति अब्दुल कलाम अपने निवास स्थान से शानदार सवारी में बैठकर सेना की जल, थल व वायु की टुकड़ियों के अभिवादन के लिए इंडिया गेट पर पहुँचे। वहाँ पहुँचने पर सभी लोगों ने उनका स्वागत किया। 31 तोपों ने उन्हें सलामी दी। तत्पश्चात् देश के अनेकानेक वीरों को उपाधियों व पारितोषिकों से विभूषित किया गया। फिर परेड आरंभ हुई और जल, थल और वायु सेना की कई टुकड़ियाँ सलामी देते हुए राष्ट्रपति के सामने से गुजरती हैं और सेना के विमान पुष्प-वर्षा करते हैं। युद्ध-क्षेत्र में काम आने वाले अनेकानेक उपकरणों व यंत्रों को भी प्रदर्शित किया गया। इस परेड से देश की सैन्य शक्ति की झलक साफ दृष्टिगोचर हुई।

इसके पश्चात् घुड़सवार सेना, ऊँटसवार सेना, सीमा सुरक्षा बल और नेशनल कैडेट कोर की टुकड़ियाँ निकलीं। बीच-बीच में सैनिक बैण्ड बजाते हुए निकले जिससे परेड की शोभा दुगुनी हो गई। अनेक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के बैंडों ने भी इस परेड में भाग लिया। अन्त में राज्यों की भव्य झाँकियाँ हुईं। यह परेड इंडिया गेट से अनेक राजमार्गों पर होती हुई लाल किले के मैदान में पहुँची।

रात्रि के समय राष्ट्रपति भवन तथा अन्य राजकीय भवनों पर भव्य रोशनी की गई। दिल्ली और नई दिल्ली में कई स्थानों पर अत्यंत आकर्षक आतिशबाजी भी छोड़ी जाती है जिसे देखने के लिए बड़ी संख्या में लोग एकत्रित होते हैं। इस प्रकार गणतंत्र दिवस का समारोह समाप्त होता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गणतंत्र दिवस के इस समारोह को देखकर हम गर्व का अनुभव करते हैं और हमारे हृदय में अपने राष्ट्र के प्रति आत्मविश्वास की भावना दृढ़ से दृढ़तर होती है। वास्तव में गणतंत्र दिवस हम सबके लिए प्रतिष्ठा और आत्मविश्वास का प्रेरक है। इस शुभ अवसर पर हमें अपनी स्वतंत्रता को चिरंजीवी बनाये रखने का संकल्प लेना चाहिए, तभी हम इस राष्ट्रीय पर्व को भली प्रकार मानने का गौरव प्राप्त कर सकते हैं। इस दिन भारत का बहुरंगी रूप सामने आ जाता है।

प्रश्न—1. गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।

2. गणतंत्र दिवस सर्वाधिक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय पर्व क्यों है?
3. इस दिन सारे कार्यक्रम आयोजित करने का क्या उद्देश्य है?
4. राष्ट्रीय पर्व का क्या अर्थ है?
5. गणतंत्र दिवस पर राष्ट्रपति की भूमिका का वर्णन करो।
6. इस दिन विभिन्न प्रदेशों की झाँकियों द्वारा क्या प्रदर्शित किया जाता है?
7. 'भारत का बहुरंगी रूप सामने आ जाता है'। वर्णन करो।
8. गणतंत्र दिवस पर कितनी तोपों की सलामी दी जाती है?

उत्तर—1. 26 जनवरी—गणतंत्र दिवस।

2. इस दिन हमारे देश का संविधान लागू हुआ था।
3. इस दिन सारे कार्यक्रम आयोजित करने का उद्देश्य अपने इतिहास को याद करना व अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना है।
4. राष्ट्रीय पर्व अर्थ है—पूरे देश में मनाया जाने वाला त्यौहार।
5. गणतंत्र दिवस पर राष्ट्रपति ध्वजारोहण करते हैं तथा भारतीय सेना की सलामी लेते हैं। वे राष्ट्र के नायक की भूमिका निभाते हैं।
6. विभिन्न प्रदेशों की झाँकियों द्वारा देश की संस्कृति, प्रगति, समृद्धि, वेशभूषा और उद्योग-धंधों का प्रदर्शन किया जाता है।
7. जम्मू-काश्मीर से लेकर केरल राज्य की झाँकियों द्वारा हम पूरे भारत की लोक-संस्कृति, पहनावे और वेशभूषा की झलक पा लेते हैं। इसलिए कहा गया है कि भारत का बहुरंगी रूप सामने आ जाता है।
8. 31 तोपों की।

11

यदि कोई यह सोचे कि वह भाग्य के बल से बिना पुरुषार्थ के जीवन में सुख और उन्नति का आधार पा लेगा तो उसका यह सोचना व्यर्थ ही सिद्ध होगा। सिंह जैसा शक्तिशाली जीवन भी यदि यह सोचे कि शिकार स्वतः उसके मुँह में बिना किसी उद्यम के प्रवेश कर लेगा तो वह बैठा सोचता ही रह जाएगा। एक क्षण का आलस्य उसके आहार को उससे कोसों दूर कर देगा। आलस्य तो कायरों के मन का एक आधार है, कर्म करने में, आलस्य धारण से जब असफलताएँ हाथ लगती हैं तो वे भाग्य को दोष देने लगते हैं।

लोग इसी बात से परेशान रहते हैं कि भाग्य उनका साथ नहीं दे रहा। आप अपने भाग्य का निर्माण स्वयं कर सकते हैं। हातिमताई के विषय में कहा जाता है कि उसे देखकर नदियाँ, खाइयाँ, पहाड़ आदि रास्ता छोड़ देते थे। यह काल्पनिक कहानी नहीं है। इसे प्रतीक रूप में कहा गया है। हातिमताई ने अपने मन की शक्तियों का उपयोग करने की कला जान ली थी। इसलिए उसके मार्ग में आने वाले पर्वत और चट्टान रूपी बाधाएँ स्वयं हट जाती थीं। एक कहावत है—जहाँ चाह वहाँ राह। यदि आप अपने मन से आशंकाएँ, भय और निराशा को निकाल देंगे तो आप अपने भाग्य का निर्माण कर सकते हैं।

मानव में असीम संभावनाएँ होती हैं। उसे कभी हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। जीवन में सफलता का रस वही चख

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सकता है, जो हिम्मती हो। जीवन में असफल होने पर निराशा का अँधेरा हमें घेर लेता है। हम पुनः प्रयास करने का साहस नहीं जुटा पाते। लेकिन हमें हमेशा यह स्मरण रखना चाहिए कि जीवन में जय-पराजय तो लगी ही रहती है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मनुष्य मन से हार न माने और संघर्ष करता रहे। यदि हमारा संकल्प दृढ़ हो तो अपने प्रयासों से हम जीवन की प्रतिकूल परिस्थितियों को भी अनुकूल बना सकते हैं। इतिहास इस बात का साक्षी है कि कई लोगों ने अकेले ही क्रांतिकारी परिवर्तन कर दिए। कर्मठ मनुष्य के शब्दकोश में असम्भव कुछ भी नहीं होता। उसका ऊँचा मनोबल सदा के लिए उसे विजयी ही बनाता है। अतः मनुष्य को भाग्य में नहीं कर्म में विश्वास रखना चाहिए। भाग्य को तो कर्म से बनाया भी जा सकता है और बिगाड़ा भी। यदि कुसंगति में पड़कर हम गलत कर्मों को अपनाने लगें तो अच्छे से अच्छे भाग्य को भी ग्रहण लग सकता है। इसी प्रकार यदि कुसंगति में पड़े व्यक्ति को भी सही-गलत कर्मों का ज्ञान हो जाए तो वह अपना भाग्योदय कर सकता है।

प्रश्न—1. कुछ लोगों की परेशानी का कारण क्या है?
2. हातिमताई के विषय में क्या कहा गया है?
3. हातिमताई ने कौन-सी कला जान ली थी?
4. व्यक्ति अपने भाग्य को कैसे बना सकता है?
5. जीवन में सफलता का रस किस प्रकार का व्यक्ति चख सकता है?
6. भाग्य को किस प्रकार के मनुष्य दोष देते हैं?
7. कर्मठ व्यक्ति के शब्दकोश में कौन सा शब्द नहीं होता?
8. मनुष्य को भाग्य के स्थान पर किस वस्तु में ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर—1. कुछ लोग भाग्य के साथ न देने के कारण परेशान रहते हैं।
2. हातिमताई के विषय में कहा जाता है कि उसके मार्ग से नदियाँ, खाईयाँ और पहाड़ आदि हट जाते थे।
3. हातिमताई ने अपने मन की शक्तियों को वश में करने की कला जान ली थी।
4. व्यक्ति मन से निराशा, भय और आशंका को निकालकर अपने भाग्य का निर्माण कर सकता है।
5. पुरुषार्थी व्यक्ति जीवन में सफलता का रसपान कर सकता है।
6. आलस्य प्रधान व्यक्ति जीवन में भाग्य को दोष देते हैं।
7. असंभव
8. कर्म में।

12

अमरकंटक में नर्मदा नदी अपनी बाल्यावस्था में प्रतीत होती है। यह एक जल-धारा के समान घास के मैदानों और साल के वनों में बहती है। नदी के ऊपर एक छोटी सी पुलिया है। यहाँ नर्मदा की चौड़ाई मुश्किल से 6 फीट है। यह नीले रंग में चमकते हुए धीरे से गिरती-पड़ती पश्चिम की ओर जाती है।

अमरकंटक एक छोटा सा शहर है। अभी व्यापार और उद्योगों ने यहाँ अतिक्रमण नहीं किया है। इसकी तंग गलियों में छोटी-छोटी दुकानों की भरमार है। इन दुकानों पर धार्मिक स्मृति-पेंट, फूल तथा मंदिर में चढ़ाने वाली भेंट बेची जाती हैं। अनेक दुकानों पर ऐसे पत्थरों के ढेर लगे हुए हैं, जिन्हें नर्मदा के शिवलिंग का आकार दिया है। लोगों का विश्वास है कि जो व्यक्ति इन्हें पूजता है उसकी सब मनोकामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं।

झरने से पानी प्राप्त करने वाले तालाब उद्‌गम कुण्ड को नर्मदा का स्रोत माना जाता है। कुण्ड के एक किनारे पर गोमुख के आकार एक फुहारा है। नर्मदा धीरे से इस फुहारे से बाहर निकलती है तथा स्वच्छ निर्मल जल के तालाब का रूप ले लेती है। कुण्ड के तल पर कीचड़ में चमकते हुए सिक्के दिखाई देते हैं। हर साल शिवरात्रि के बाद कुण्ड की सफाई की जाती है। इन सिक्कों को गिनने में दो या तीन दिन लग जाते हैं।

स्रोत कुंड से कुछ दूरी पर एक छोटे बाँध का निर्माण किया गया है। यह नर्मदा के पानी को रोकता है। यहाँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक छोटी-सी झील बन गई है। असंख्य झरनों के पानी ने इसे प्रबलित कर दिया है। यहाँ नर्मदा 80 फुट ऊँची चोटी से गिरती है और वेग से कोलाहल मचाती हुई मैदानों की ओर बहती है। यहाँ इसका जल नीचे चट्टानों से टकराता है। जब नर्मदा पहाड़ के बाहर निकले हुए भाग पर कोलाहल मचाती हुई अपना जल उँडेलती है तो धुँआधार झरने से झाग के बादल ऊपर उठते हैं। प्रपात के नीचे झाग उगलता हुआ पानी वेग से चट्टानों से टकराता है, फिर यह एक गहरे नीले तालाब और एक संकरी घाटी में बह जाता है।

बच्चे सिक्के निकालने के लिए तेज बहते हुए पानी में गोता लगाते हुए दिखाई देते हैं। क्योंकि वे नदी के साथ पलकर बड़े हुए हैं, वे इसका सम्मान करते हैं। वे छिछले पानी में गोता लगाते हैं। लेखिका एक छोटे तालाब में पचास पैसे का सिक्का फेंकती है। पाँच वर्षीय राजू गोता लगाकर पानी के नीचे तैरता है। कुछ क्षण पश्चात् वह सिक्के को हाथ में पकड़े हुए बाहर निकलता है। वह इसे अपने मुँह में डाल लेता है।

प्रश्न—1. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक दीजिए।
2. अमरकंटक में नर्मदा कैसी प्रतीत होती है?
3. अमरकंटक किस प्रकार का शहर है?
4. अमरकंटक में किस प्रकार की दुकानें हैं?
5. नर्मदा नदी का स्रोत किसे माना गया है?
6. कुण्ड के तल में क्या दिखाई पड़ते हैं?
7. इस गद्यांश में एक जलप्रपात के विषय में बताया गया है। उसका नाम बताइए।
8. बच्चे नदी का सम्मान क्यों करते हैं?

उत्तर—1. नर्मदा का उद्गम।
2. अमरकंटक में नर्मदा अपनी बाल्यावस्था में प्रतीत होती है।
3. अमरकंटक एक छोटा सा शहर है जहाँ अभी उद्योगों द्वारा अतिक्रमण नहीं हुआ है।
4. अमरकंटक में छोटी-छोटी दुकानें हैं जिनमें धार्मिक सामान मिलता है।
5. उद्गम कुण्ड को नर्मदा नदी का स्रोत माना गया है।
6. कुण्ड के तल में हजारों की संख्या में सिक्के दिखाई पड़ते हैं।
7. धुँआधार जलप्रपात।
8. बच्चे इसी नदी में खेलते हुए पलकर बड़े हुए हैं, इसीलिए वे इसका सम्मान करते हैं।

13

मिश्र में शवों को रसायनों द्वारा परिरक्षित करके ममियों के रूप में रखना हमेशा से ही लोगों में कौतूहल उत्पन्न करता रहा है। मिश्रवासी शवों को एक विशिष्ट प्रक्रिया 'ममीकरण' द्वारा संभाल कर रखते थे। वे मृत शरीर में से नमी को एकदम समाप्त कर देते थे और मृत शरीर को पूर्णतया सुखा देते थे जिससे उनका अपक्षय न हो। वे सभी आंतरिक अंगों को निकाल देते थे। मस्तिष्क को विशेष प्रकार के हुक द्वारा नथुनों से घुसाकर निकाल लिया जाता था।

यह एक प्रकार की नाजुक ऑप्रेशन प्रक्रिया थी। इसके बाद छाती व पेट के अंगों को पेट के बायीं तरफ चीरा लगाकर निकाल लिया जाता था। दिल को उसी अवस्था में छोड़ दिया जाता था। शरीर के अन्य अंग पेट, यकृत, फेफड़े व आँतों के साथ अलग से एक जार में परिरक्षित कर दिए जाते थे। इन जारों को कैनोपिक जार कहा जाता है। वे लोग जो इस प्रक्रिया को अंजाम देते थे, को ममीकर्ता कहा जाता था। ममीकर्ता शरीर को सोडियम कार्बोनेट से ढक देते थे। यह एक प्रकार का तत्व था जो शुष्कन कारक के रूप में प्रयोग होता था।

सोडियम कार्बोनेट के और अधिक टुकड़ों को शव के अंदर रख दिया जाता था जिससे वह अंदर उपस्थित नमी, यदि बची हो तो, सोख ले। जब शरीर पूरी तरह सूख जाता था तो अंदर रखे गए शुष्कन कारकों के पैकेटों को निकाल लिया जाता था और शव को धोया जाता था। इस प्रकार यह पहचानी जा सकने वाली मानव संरचना बन जाती थी। शव

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

को और जीता-जागता दिखाई देने के लिए वे उसके धँसे हुए भागों को लिनिन व अन्य पदार्थों से भर देते थे। फिर नकली आँखें लगाई जाती थीं। इसके पश्चात् संपूर्ण शरीर को पट्टियों द्वारा लपेटने का कार्य आरंभ होता था। प्रत्येक मम्मी पर सैंकड़ों गज लंबाई की पट्टियाँ लपेटी जाती थीं। वहाँ धार्मिक कृत्यों को अंजाम देने के लिए पुजारी भी होते थे।

मिश्र के पिरामिडों में रखी ये ममियाँ आज तक विश्व के सात आश्चर्यों में से एक मानी जाती हैं। मिश्रवासी ऐसा मानते थे कि यदि इन शवों को छेड़ा गया तो ये नींद से जाग जाएँगे और विश्व को तहस-नहस कर देंगे। इसलिए उन्होंने इनके लिए विशेष रूप से पिरामिडों की रचना करवाई और इन्हें उनमें सुरक्षित बंद कर दिया। आज भी ये ममियाँ उसी प्रकार रखी हैं जैसा कभी मिश्रवासियों ने उन्हे छोड़ा था।

प्रश्न—1. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक दीजिए।

2. लोगों में कौन सी बात कौतूहल उत्पन्न करती है?
3. 'ममीकरण' क्या है?
4. कैनोपिक जार क्या हैं?
5. शवों पर लपेटे जाने वाले शुष्कन कारक का नाम बताइए।
6. शवों को ममी में बदलने वाले लोगों को . . . . कहा जाता है।
7. मिश्र के पिरामिडों के विषय में विश्व के लोगों की क्या धारणा है?
8. मिश्रवासियों का ममियों के विषय में क्या विचार था?

उत्तर—1. मिश्र के ममी व पिरामिड

2. मिश्र में शवों को रसायनों द्वारा परिरक्षित करके ममियों के रूप में रखना हमेशा से ही लोगों में कौतूहल उत्पन्न करता रहा है।
3. मिश्रवासियों द्वारा पुराने समय में शवों को ममी के रूप में परिरक्षित करने के कृत्य को 'ममीकरण' कहा जाता है।
4. शरीर के आंतरिक अंगों को मिश्रवासी जिन जारों में परिरक्षित करके रखते थे, उन्हें कैनोपिक जार कहा जाता है।
5. सोडियम कार्बोनेट।
6. ममीकरण।
7. विश्व के लोग मिश्र के पिरामिडों का सात अजूबों में से एक मानते हैं।
8. मिश्रवासी ऐसा मानते थे कि यदि इन शवों को छेड़ा गया तो ये नींद से जाग जाएँगे और विश्व को तहस-नहस कर देंगे।

14

आज भारत का सूर्योदय काल है। गुलामी की जंजीरों को काटने के बाद वह प्रगति के रथ पर आरूढ़ हो चुका है। आज अमरीका को किसी से खतरा है तो चीन और भारत से। भारत विश्व का तीसरा बड़ा देश है जो विज्ञान-तकनीक और धन-सपंत्ति कमाने में बढ़-चढ़कर लगा हुआ है। कम्प्यूटर-सॉफ्टवेयर में भारत का पूरे विश्व पर दबदबा कायम है। हमारी कम्प्यूटर कम्पनियाँ पूरे संसार को कम्प्यूटरीकृत करने में लगी हुई हैं। हर वर्ष लाखों कम्प्यूटर इंजीनियर अरबों-खरबों रुपयों की धन-संपत्ति कमाकर भारत को समृद्ध बना रहे हैं। अब अमरीका, इंग्लैंड आदि देशों को अंग्रेजी पढ़ाने से लेकर, खाता-बही बनाने की सेवाएँ भारतवासी दे रहे हैं। उन्नत देशों के लोगों में हड़कंप मच गया है कि आने वाले सालों में सारी सेवाएँ भारतीय नागरिक ले जाएँगे। वहाँ बेरोजगारी का भूत मँडराएगा और भारत अपनी बौद्धिक कुशलता पर इतराएगा। अब भारत की कंपनियाँ बहुत शक्तिशाली बनती जा रही हैं। संसार की सबसे बड़ी स्टील कंपनी का मालिक भारतीय उद्योगपति लक्ष्मी मित्तल है। रतन टाटा ने ब्रिटेन की प्रमुख स्टील कंपनी को खरीदकर अंग्रेजों को हिलाकर दिखा दिया है कि अब भारत शक्ति स्रोत बन चुका है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देश में शेयर सूचकांक 20000 का आँकड़ा पार कर चुका है। मुद्रास्फीति की दर घट गई है। रुपये डालर के समक्ष मजबूत स्थिति में है। हमारे देशवासी देश को उन्नत बनाने को दिन-दुगुनी रात-चौगुनी मेहनत कर रहे हैं। भारत में व्यक्तिगत श्रम की कोई कमी नहीं। देश में मेट्रो रेल के शुभारंभ ने भारत को उन्नत देशों के समकक्ष लाकर खड़ा कर दिया है। नई-नई परियोजनाएँ चल रही हैं। देश की सबसे चौड़ी सड़क परियोजना, जो देश के चारों हिस्सों को जोड़ेगी, आरंभ हो चुकी है। जनसंख्या वृद्धि में भी अंकुश लगा है।

भारत सामरिक दृष्टि से भी अत्यधिक मजबूत बन चुका है। अब भारत 1962 वाला भारत नहीं रहा। नई-नई तकनीकों के चलते भारत ने प्रक्षेपास्त्र तकनीक में जो उन्नति की है, वह उल्लेखनीय है। भारत को अपनी अग्नि व पृथ्वी मिसाइलों पर गर्व है। देश में बढ़ती ऊर्जा आवश्यकता की पूर्ति हेतु भारत ने न्यूक्लियर ऊर्जा को आधार बनाने की सोची है। यदि भारत अपने मकसद में कामयाब हुआ तो देश में बिजली आदि की कोई किल्लत नहीं होगी। यदि भारत के समक्ष आतंकवाद की समस्या नहीं होती तो भारत की स्थिति आज अपने समकक्ष चीन से बेहतर होती। पर एक कहावत है 'देर आए दुरुस्त आए'।

प्रश्न—1. उपर्युक्त गद्यांश का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

2. आज अमरीका को किनसे खतरा है?
3. विज्ञान व तकनीक में भारत का विश्व में कौन सा स्थान है?
4. आज विकसित देशों में किस बात को लेकर हड़कंप है?
5. आने वाले समय में भारत किस बात पर इतराएगा?
6. संसार की सबसे बड़ी स्टील कंपनी का मालिक कौन है?
7. वह कौन सी परियोजना है जिसने भारत को विकसित देशों की कतार में ला खड़ा किया है?
8. आतंकवाद की समस्या यदि न होती तो भारत की क्या स्थिति होती?

उत्तर—1. चमकता भारत

2. आज अमरीका को भारत व चीन से खतरा है।
3. विज्ञान व तकनीक में भारत का विश्व में तीसरा स्थान है।
4. आज विकसित देशों में इस बात को लेकर हड़कंप है कि आने वाले सालों में सारी सेवाएँ भारतीय नागरिक ले जाएँगे। जबकि उनके देशों में बेरोजगारी का भूत मँडराएगा।
5. आने वाले समय में भारत अपनी बौद्धिक क्षमता पर इतराएगा?
6. संसार की सबसे बड़ी स्टील कंपनी का मालिक एक भारतीय, लक्ष्मी मित्तल है।
7. मेट्रो रेल परियोजना ने भारत को विकसित देशों की कतार में ला खड़ा किया है।
8. आतंकवाद की समस्या यदि न होती तो भारत आज अपने समकक्ष चीन से कई गुनी अधिक अच्छी आर्थिक स्थिति में होता।

15

पराशर झील मंडी नगर से चालीस किलोमीटर दूर उत्तर-पूर्व में नौ हजार फुट की उँचाई पर स्थित है। दूर से देखने पर इस झील का आकार एक तालाब की तरह लगता है लेकिन इस झील की वास्तविक परिधि आधा किलोमीटर से कुछ कम है। इस झील के चारों ओर ऊँची-ऊँची पहाड़ियाँ देखने में ऐसी लगती हैं मानों प्रकृति ने इस झील की सुरक्षा के लिए इन पहाड़ियों की गोलाकार दीवार खड़ी कर दी है। यह झील जनबस्तियों से काफी दूर एकांत में है। झील के किनारे 'पगोड़ा शैली' में निर्मित ऋषि पराशर का तीन मंजिला मंदिर है। अनुमान है कि इस मंदिर का निर्माण तेरहवीं शताब्दी में तत्कालीन मंडी नरेश बाणसेन द्वारा करवाया गया था। इस मंदिर में की गई काष्ठ कला इतनी बेजोड़ है कि कलाप्रेमी 'वाह-वाह' कर उठते हैं। मंदिर में महर्षि पराशर की भव्य पाषाण प्रतिमा के अलावा विष्णु, महिषासुरमर्दिनी, शिव व लक्ष्मी की कलात्मक मूर्तियाँ भी स्थित हैं। झील के दर्शन करने आए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पर्यटक स्वयमेव ही इस मंदिर में आकर नतमस्तक हो जाते हैं। बैशाख मास में यहाँ एक भव्य मेला लगता है जिसे 'काशी मेला' के नाम से जाना जाता है।

घाटी के प्रमुख पर्यटन स्थलों में रिवाल्वर, कमरूनाग, पराशर झीलों के अलावा कमलागढ़, जंजैहली घाटी, करसोग घाटी, बरोट, जोगिंन्द्रनगर का नाम गिना जा सकता है। ये स्थल जहाँ सौंदर्य-प्रेमियों व श्रद्धालुओं के आकर्षण के केंद्र हैं, वहीं पर्वतारोहण के रसिया भी यहाँ देशभर से आते हैं।

यहाँ के ऐतिहासिक पड्डल मैदान में तो मानो इस शहर का दिल धड़कता है। व्यास और सुकेती नदियों के किनारों को छूता हुआ यह विशालकाय मैदान शहर के एकांत छोर पर है। हरे-भरे पेड़ों से घिरा यह मैदान बुजुर्गों के लिए अपने हम-उम्रों के साथ बैठकर दुख-सुख बाँटने की सर्वाधिक उपयुक्त जगह है। यह युवाओं के लिए तफरीह का स्वर्ग है। इस मैदान में ही खिलाड़ी अपना 'स्टैमिना' बनाते हैं और यहीं जुटता है हर साल शिवरात्रि को पर्यटकों व श्रद्धालुओं का समंदर। इतना ही नहीं, यह मैदान हर साल देवताओं के सान्निध्य से धन्य हो उठता है। ये देवी-देवता कोई स्वर्ग से इस मैदान में नहीं उतरते। बल्कि ये तो मंडी के ग्रामीण देवी-देवता हैं जिन्हें श्रद्धालु पालकियों में सजा-सँवारकर ढोल-नगाड़ों के साथ शिवरात्रि मेले में यहाँ लाते हैं। उत्तरी भारत में इसे देवसमागम का सबसे बड़ा मेला कहा जाता है।

कमरूनाग इस घाटी की तीसरी प्रमुख घाटी है। मंडी नगर से 51 किलोमीटर दूर करसोग घाटी में स्थित यह झील समुद्र तल से नौ हजार फुट की ऊँचाई पर स्थित है। देवदार के घने जंगलों से घिरी यह झील प्रकृति-प्रेमियों को अभिभूत कर देती है। इस झील तक पहुँचने का रास्ता भी बहुत सुरम्य है और यहाँ के लुभावने दृश्यों को देखकर पर्यटक अपनी सारी थकान भूल जाते हैं। झील के किनारे पहाड़ी शैली में निर्मित कमरूनाग देवता का प्राचीन मंदिर भी है जहाँ पत्थर की प्रतिमा स्थापित है। जून माह में यहाँ भारी मेला लगता है। करसोग से शिमला की ओर जाते हुए राह में तत्तापानी नामक खूबसूरत जगह है। वह स्थल सल्फरयुक्त गरम जल के चश्मों के लिए प्रसिद्ध है। एक तरफ बर्फ की तरह सतलुज का ठंडा जल अगर शरीर को सुन्न कर देता है तो वहीं इस नदी के आगोश से फूटता गरम जल पर्यटकों के लिए किसी अजूबे से कम नहीं है।

प्रश्न—1. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक दीजिए।
2. झील के चारों ओर के पहाड़ कैसे प्रतीत होते हैं?
3. 'तत्तापानी' की कौन-सी विशेषता हैरान कर देती है?
4. 'अभिभूत करना' से क्या आशय है?
5. 'चश्मा' के दो भिन्न अर्थ लिखकर उन्हें वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए।
6. पराशर के मंदिर की कौन-सी कला पर्यटकों को मुग्ध कर देती है?
7. मंदिर में प्रतिमाएँ किस चीज़ से निर्मित हैं?
8. 'तफरीह का स्वर्ग' का क्या अर्थ है?

उत्तर—1. पराशर झील की छटा।
2. झील के चारों ओर पहाड़ ऐसे लगते हैं मानों इन्होंने झील की सुरक्षा हेतु एक गोलाकार दीवार खड़ी कर दी है।
3. 'तत्तापानी' में एक तरफ सतलुज का बर्फ जैसा ठंडा जल शरीर को सुन्न कर देता है, तो दूसरी तरफ इस नदी के आगोश से फूटता गरम जल हैरानी का विषय है।
4. शृंगारित करना।
5. झरना—झरने में नहाये तो दूध के स्नान सा एहसास हुआ।
जलप्रपात—धुँआधार जलप्रपात नर्मदा नदी के कुछ मुख्य जलप्रपातों में से एक है।
6. पराशर के मंदिर की काष्ठ कला पर्यटकों को मुग्ध कर देती है।
7. पाषाण।
8. इसका अर्थ है—आमोद-प्रमोद की जगह।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

16

महँगाई के जाल से छुटकारा पाने के लिए सबसे पहले राष्ट्रीय स्तर पर दृढ़ संकल्प और कल्पनाशील इच्छा शक्ति की आवश्यकता है। इसी प्रकार निरंतर बढ़ रही जनसंख्या पर अंकुश लगाने के लिए हमें परिवार नियोजन पर बल देना होगा। जाति और धर्म के आधार पर परिवार नियोजन को अपनाना भारतीयता की भावना से खिलवाड़ है। यदि सही अर्थों में परिवार नियोजन को अपनाया जाए तो महँगाई की समस्या का निदान हो सकता है। इसके साथ ही वस्तुओं के मूल्य में कमी व स्थिरता लाने के लिए उत्पादन बढ़ाना होगा। संग्रह की वृत्ति को त्यागना होगा। सरकार को जमाखोर और मुनाफाखोर व्यक्तियों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही करनी होगी तथा कानून के विरुद्ध चलने पर उन्हें दंडित करना होगा।

महँगाई रोकने में सरकार को भी कई प्रशासनिक कदम उठाने होंगे। शासनिक और प्रशासनिक खर्च घटाने होंगे। सर्वोच्च पदों पर बैठे लोगों को सादगी का आदर्श प्रस्तुत करना होगा। विदेशों से ऋण लेना बंद करना होगा। विकास योजनाओं को देश की आवश्यकताओं एवं साधनों के अनुरूप ढालना होगा। व्यापार पर लगे कोटा, परमिट आदि कृत्रिम बंधनों को हटाकर आयात को घटाना होगा। तस्करों पर प्रहार करके उनको संरक्षण देने वाले भ्रष्ट राजनीतिज्ञों को जेल में बंद करना होगा।

इसके अतिरिक्त बीसियों के स्थान पर तीन-चार प्रमुख कर रखकर कर-निर्धारण प्रक्रिया को सरल बना दिया जाए, ताकि शिक्षित व अशिक्षित सभी लोग आसानी से इस सरलीकृत प्रणाली से देय कर जमा कर सकें। इससे करदाता में चोरी की प्रवृत्ति रुकेगी, सरकार की आय बढ़ेगी और काला धन कम होता जाएगा। चुनाव प्रणाली को सरल बनाकर योग्य व्यक्तियों को आगे आने के अवसर दिए जाएँ। इससे शासन सुयोग्य व्यक्तियों के हाथों में पहुँचकर देश का कल्याण होगा। साथ ही महँगी विदेशी शिक्षा-पद्धति को त्यागकर स्वदेशी शिक्षा-पद्धति और स्वदेशी भाषा व रहन-सहन को अपनाया जाए। सिनेमा और दूरदर्शन से राष्ट्र के प्राचीन गौरव की भावना जगाने वाले देशभक्तिपूर्ण अथवा सामाजिक भावना प्रधान चित्रों को दिखाया जाए। यदि इस प्रकार के उपाय किए जायें तो न केवल महँगाई, बल्कि अन्य समस्याओं का भी समाधान हो सकेगा।

महँगाई की समस्या एक राष्ट्रीय समस्या है। इसके समाधान के लिए सरकारी तंत्र पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं होगा। इसके लिए हर देशभक्त का कर्तव्य हो जाता है कि वह अपनी इच्छाओं और स्वार्थों पर अंकुश रखे। वह भावनात्मक एकता को उजागर कर देश में निर्मित वस्तुओं को अपनाए। देश में उत्पादन बढ़ाकर देश को सम्पन्न व सुखी बनाये। ऐसा होने पर ही कमरतोड़ महँगाई से मुक्ति मिल सकेगी।

प्रश्न—1. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक दीजिए।

2. महंगाई के जाल से छुटकारा पाने के लिए किन बातों की आवश्यकता है?
3. बढ़ती जनसंख्या पर अंकुश किस प्रकार लगाया जा सकता है?
4. कुछ तरीके बताओ जिनसे महँगाई की समस्या पर काबू पाया जा सकता है।
5. महँगाई रोकने के लिए एक देशभक्त का क्या कर्तव्य है?
6. सिनेमा व दूरदर्शन से क्या आशाएँ हैं?
7. यदि सभी देशवासी अपने देश में उत्पन्न हुई वस्तुओं का उपभोग करें तो इससे क्या प्रदर्शित होगा?
8. भारत सरकार किस प्रकार से महँगाई रोक सकती है?

उत्तर—1. महँगाई रोकने के उपाय।

2. महँगाई के जाल से छुटकारा पाने के लिए सबसे पहले राष्ट्रीय स्तर पर दृढ़ संकल्प और कल्पनाशील इच्छा शक्ति की आवश्यकता है।
3. लोगों में जागरुकता लाकर व परिवार नियोजन के तरीके अपनाकर।
4. परिवार नियोजन अपनाकर, उत्पादन बढ़ाकर, संग्रह की वृत्ति को त्यागकर, जमाखोरों पर कार्यवाही करके महँगाई की समस्या पर काबू पाया जा सकता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

5. हर देशभक्त का कर्तव्य है कि वह अपनी इच्छाओं पर अंकुश रखे व देश में निर्मित वस्तुओं को अपनाए।
6. सिनेमा और दूरदर्शन से राष्ट्र में गौरव जगाने वाले देशभक्तिपूर्ण चित्रों को दिखाया जाना चाहिए।
7. इससे हमारे देश में भावनात्मक एकता उजागर होगी।
8. शासनिक और प्रशासनिक खर्च घटाकर महँगाई पर रोक लगाई जा सकती है।

17

मोतियाबिंद आँखों के लैंस का धुंधलापन है। सामान्य लैंस रेटिना पर प्रकाश को आसानीपूर्वक पहुँचने देता है। जब यह धुंधला हो जाता है जो प्रकाश को रेटिना तक नहीं पहुँचने देता, परिणामस्वरूप हम वस्तुओं को साफ नहीं देख पाते। आज की आधुनिक चिकित्सा पद्धति ने मोतियाबिंद के ऑप्रेशन को अत्यधिक आसान व सफल बना दिया है। नई शल्यचिकित्सा पद्धति में इंट्राऑक्यूलर लैंसों द्वारा 97 प्रतिशत तक दृष्टि पुनः प्राप्त की जा सकती है। 1960 के दशक में, डॉक्टर चार्ल्स केलमन, अमेरिका, ने एक पद्धति आरंभ की जिसमें मोतियाबिंद को मामूली चीरे से ठीक किया जा सकता था। तब 1998 में डॉक्टर अमर अग्रवाल, भारत, ने एक पद्धति का आरंभ किया जिसमें मोतियाबिंद को 3 मिमी० का छिद्र खोलकर हटाया जाता है। 2001 में विशेष प्रकार के लैंसों का निर्माण किया गया जिन्हें 1.5 मिमी० का छिद्र बनाकर पिछले प्राकृतिक लैंस की जगह लगा दिया जाता है। इन लैंसों को रॉलेबल इन्ट्राऑक्यूलर लैंस कहा जाता था।

मोतियाबिंद की उत्पत्ति के कारणों का पूरी तरह नहीं पता चला है। यह मूल रूप से बढ़ती उम्र के साथ होने वाली परिघटना है। बढ़ती उम्र के अतिरिक्त अन्य कारण भी मोतियाबिंद की उत्पत्ति में सहायक हो सकते हैं जैसे प्रोटीन व विटामिनों युक्त भोजन की कमी, कुछ विषैली दवाएँ, सामान्य बीमारियाँ जैसे मधुमेह, इन्फेक्शन व चोट आदि। मोतियाबिंद को दूर रखने के लिए व्यक्ति को प्रोटीन व विटामिन युक्त भोजन लेना चाहिए। भोजन जैसे लिवर, अंडे, दूध के उत्पाद, गाजरें, बंद गोभी व खमीर उत्तम हैं। व्यक्ति को अपनी आँखों को धूप, एक्स-रे, अधिक ऊष्मा व चोटों से बचाना चाहिए। बीमारियाँ जैसे मधुमेह व सिफलिस आदि बीमारियों का तुरंत जल्दी से जल्दी उपचार करना चाहिए।

मोतियाबिंद के लिए कोई चिकित्सकीय इलाज नहीं है। इलाज केवल शल्य चिकित्सा ही है। एक बार जब मोतियाबिंद को हटा दिया जाता है, आँख फोकस बनाने योग्य नहीं रहती, इसलिए कृत्रिम लैंस लगाना ही एकमात्र सहारा रह जाता है। वैसे आजकल मोतियाबिंद का इलाज लेजर तकनीक से भी संभव हो गया है। इस तकनीक में ऑप्रेशन की आवश्यकता नहीं होती।

प्रश्न—1. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक दीजिए।
2. मोतियाबिंद क्या है?
3. मोतियाबिंद को दोष होने पर स्पष्ट साफ क्यों नहीं दिखाई देता?
4. मोतियाबिंद की समस्या व्यक्ति को किस उम्र में होती है?
5. मोतियाबिंद होने के क्या कारण हैं?
6. मोतियाबिंद से कैसे बचा जा सकता है?
7. मोतियाबिंद का एकमात्र इलाज क्या है?
8. आजकल कौन सी तकनीक द्वारा मोतियाबिंद का बिना ऑप्रेशन इलाज संभव है?

उत्तर—1. मोतियाबिंद: कारण व निवारण
2. मोतियाबिंद आँखों के लैंस का धुंधलापन है।
3. सामान्य लैंस के समान मोतियाबिंद युक्त लैंस रेटिना पर प्रकाश को आसानीपूर्वक पहुँचने नहीं देता है, परिणामस्वरूप हम वस्तुओं को साफ नहीं देख पाते।
4. यह रोग मूलतः बढ़ती उम्र के साथ होता है।
5. मोतियाबिंद होने का कारण प्रोटीन युक्त सही व संतुलित आहार न लेना है। वैसे मोतियाबिंद का कोई स्पष्ट कारण पता नहीं चल पाया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

6. व्यक्ति को प्रोटीन व विटामीन युक्त भोजन लेना चाहिए, जैसे, लिवर, अंडे, दूध के उत्पाद, गाजरें, बंद गोभी व खमीर। व्यक्ति को अपनी आँखें धूप, एक्स-रे, अधिक ऊष्मा से बचाना चाहिए।
7. मोतियाबिंद का एकमात्र इलाज शल्यचिकित्सा है।
8. आजकल लेजर तकनीक द्वारा मोतियाबिंद का बिना ऑप्रेशन इलाज संभव है।

18

भारत में प्रकृति का अक्षय भंडार है। यहाँ का ऋतु-परिवर्तन संसार के अन्य देशों से सुंदर और मनोहारी है। भारत में छ: ऋतुओं—बसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त व शिशिर का एक सुंदर चक्र है। इन छ: ऋतुओं की प्राकृतिक शोभा सदैव नवीन रूप में विकसित नहीं होती है। वर्षा ऋतु इनमें अपना विशेष महत्त्व रखती है।

सूर्य की गर्मी से तालाबों, झीलों और सागरों का पानी भाप बनकर ऊपर उठता है। यह भाप एकत्र होकर मेघों का रूप धारण कर लेती है। ये मेघ वायु की गति से विभिन्न स्थानों पर पुन: पानी के रूप में बरस पड़ते हैं। उसी को हम वर्षा कहते हैं। शीतल बूँदों का स्पर्श पाकर वनस्पति और पेड़-पौधे आनंद से झूमने लगते हैं, पशु-पक्षी मस्त हो जाते हैं, मानव का मन हर्षतिरेक से नाच उठता है। चारों ओर नई उमंग, नयी आशा और जीवन का संचार होता है।

वर्षा का अपना सौंदर्य होता है। चिर काल से धूल-धूसरित पत्ते धुलकर निर्मल हो जाते हैं। चारों ओर हरियाली छा जाती है। आकाश में काली-काली घटाएँ सुंदर दिखाई देने लगती हैं, बादल गरजते हैं, बिजली चमकती है। ठण्डी-ठण्डी पवन मन में उल्लास भर देती है। सर्वत्र मेंढकों की टर्र-टर्र ध्वनि सुनाई पड़ती है। काले मेघों को देखकर मयूर प्रसन्न होकर नाचने लगते हैं। कोयल का पंचम स्वर कानों में मधुरता का संचार करने लगता है।

वर्षा से अनेक लाभ हैं। वर्षा के ऊपर ही संसार का भरण-पोषण निर्भर है। कृषक का जीवन तो वर्षा पर ही निर्भर है। वर्षा होने पर कृषक अपने खेतों की जुताई करता है और बीज बो देता है। यदि वर्षा न हो तो देश में अकाल की स्थिति पैदा हो जाती है। वर्षा होने पर हरी-हरी घास उग आती है, जो पशुओं के लिए चारे का काम करती है। नदियों व तालाबों में पानी भर जाता है। पशु-पक्षी वर्षा के जल को पीकर आनन्दित हो उठते हैं। वर्षा के जल से बिजली के उत्पादन में भी सहायता मिलती है।

हमारे देश में पर्याप्त वर्षा होती है, परंतु इसका वितरण समान नहीं है। कहीं बहुत अधिक वर्षा होती है व कहीं बहुत ही कम। जहाँ अधिक वर्षा होती है वहाँ हमें बाढ़ आदि का सामना करना पड़ता है वहीं दूसरी तरफ कम वर्षा वाले क्षेत्रों में हमें सूखे का सामना करना पड़ता है। इन सब मुसीबतों से बचने के लिए हमें अधिक संख्या में वृक्ष लगाने चाहिएँ। हमारी सरकार सभी नदियों को एक साथ जोड़ने की परियोजना पर भी विचार कर रही है।

प्रश्न—1. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक दीजिए।
2. भारत में कितनी ऋतुएँ पाई जाती हैं? नाम दीजिए।
3. वर्षा किस प्रकार होती है?
4. वर्षा ऋतु में प्रकृति में होने वाले परिवर्तनों को संक्षेप में बताइए।
5. वर्षा न होने पर क्या हो सकता है?
6. वर्षा द्वारा बनने वाले किसी नवीनीकृत ऊर्जा स्रोत का नाम बताइए।
7. हमारे देश में वर्षा का वितरण क्यों समान नहीं है?
8. 'परियोजना' का तात्पर्य बताइए।

उत्तर—1. वर्षा के लाभ
2. भारत में छ: ऋतुएँ पाई जाती हैं—बसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त व शिशिर।
3. सूर्य की गर्मी से तालाबों, झीलों और सागरों का पानी भाप बनकर ऊपर उठता है जो एकत्र होकर बादलों का रूप धारण कर लेती है तथा वे ही वर्षा का कारण बनते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4. चारों ओर हरियाली छा जाती है। आकाश में काली-काली सुंदर घटाएँ दिखाई देने लगती हैं। बादल गरजने लगते हैं व बिजली चमकने लगती है। ठण्डी-ठण्डी पवन भी चलने लगती है।
5. वर्षा न होने पर भयंकर सूखे का सामना करना पड़ सकता है जिससे कृषि व वनस्पति प्रभावित हो जाएँगी।
6. विद्युत ऊर्जा।
7. कहीं अत्यधिक वर्षा होती है कहीं बहुत ही कम जिससे हमारे देश में पर्याप्त औसत वर्षा होने के उपरांत भी अपर्याप्त वितरण रहता है।
8. एक बड़ी कार्य इकाई।

19

एक लता की आकृति इस बात पर निर्भर करती है कि उसके सहारा प्रदान करने वाली टहनियाँ किस प्रकार का सहारा प्राप्त करती हैं। इसी प्रकार एक शिशु का व्यक्तित्व इस बात पर निर्भर करता है कि उसे सहारा देने वाले अर्थात् उसके माता-पिता किस प्रकार के हैं। एक शिशु का व्यक्तित्व पूरी तरह से उसके माता-पिता के सहारे, प्रेम, देखभाल व मार्गदर्शन पर निर्भर करता है।

एक बालक का संपूर्ण विकास बिना अपने माता-पिता की प्रेरणा व देखभाल के बिना नहीं हो सकता। माता-पिता को चाहिए कि वे बच्चे के विचारों में किसी प्रकार की मनाही न करें। उन्हें अपने विचार या अभिव्यक्ति जबरन बच्चे पर नहीं थोपने चाहिएँ। बच्चे व अभिभावकों के बीच तालमेल में अभाव कभी नहीं होना चाहिए। बच्चे के विचारों में किसी प्रकार की मनाही न करने से यह तात्पर्य कदापि नहीं होना चहिए कि अभिभावक बालक की हर गलत सही आदतों से आँखें मूँद लें। वे सभी विभिन्न विषय-वस्तु जो बच्चे पर प्रभाव डालती हों, मंत्रणा करनी चाहिएँ व बच्चे को अच्छे-बुरे का ज्ञान कराना चाहिए। वे दिन बीत चुके हैं जब बच्चों को सिखाने के लिए डाँट या यदा-कदा पीट भी दिया जाता था। उनके साथ मित्रतापूर्ण तरीके से बर्ताव किया जाना चाहिए जिससे वे अपने दैनिक जीवन के अच्छे-बुरे अनुभवों का ज्ञान कर सकें।

बचपन के अनुभव काफी समय तक बच्चे के मस्तिष्क को प्रभावित करते हैं। ये अनुभव बच्चे के संपूर्ण व्यक्तित्व के लिए उत्तरदायी होते हैं। यदि बच्चे को उचित मार्गदर्शन न मिले या माता-पिता बच्चे की संवेदनाओं, उद्देश्यों या चाह को समझने की कोशिश न करें तो वे जीवन की भूल-भुलैया में खो भी सकते हैं। बच्चा केवल अभिभावकों द्वारा ही नहीं वरन् आसपास के वातावरण से भी काफी-कुछ सीखता है। बच्चा जब बाल्यावस्था में होता है तो उसे हिंसक कार्टून धारावाहिक आदि देखने के संपर्क में नहीं आने देना चाहिए। ये बच्चे के मस्तिष्क पर बुरा प्रभाव डालते हैं। ये हिंसक कार्टून हिंसा को महज एक खेल की भाँति प्रस्तुत करते हैं जिससे बच्चे के मन में भी हिंसा करने की प्रवृत्ति घर कर जाती है।

अपनी तरुणावस्था में आने पर बच्चे को साहित्यज्ञान कराना चाहिए। उसे विभिन्न जाने-माने लेखकों की कृतियों को पढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए व नैतिक शिक्षा पर बल देना चाहिए। अच्छे विचारों का पठन उसके कोमल मन में हमेशा के लिए एक अमिट छाप छोड़ देगा व उसके बौद्धिक स्तर व व्यक्तित्व का विकास करेगा। अभिभावक बालक के प्रथम गुरु होते हैं। अपनी भावी पीढ़ी को किसी योग्य बनाने के लिए उन्हें अपने कीमती समय में से कुछ समय अपने बच्चे के व्यक्तित्व के विकास के लिए निकालना ही होगा।

प्रश्न—1. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक बताइए।
2. एक बच्चे के व्यक्तित्व का विकास किस बात पर निर्भर करता है?
3. बच्चे को अपने जीवन के अच्छे-बुरे अनुभवों का ज्ञान कराने के लिए क्या आवश्यक है?
4. बच्चों के मस्तिष्क को क्या प्रभावित करते हैं?
5. अभिभावकों के अलावा बालक कहाँ से सीखता है?
6. हिंसक कार्टून बच्चे के मस्तिष्क को किस प्रकार प्रभावित करते हैं?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

7. तरुणावस्था में आने के पश्चात् बच्चे को साहित्यज्ञान क्यों कराना चाहिए?
8. माता-पिता बालक के प्रथम गुरु किस प्रकार हैं?

उत्तर—1. बच्चे के व्यक्तित्व का विकास
2. एक बच्चे के व्यक्तित्व का विकास उसके माता-पिता के उसके प्रति दृष्टिकोण पर निर्भर करता है।
3. बच्चे को अपने जीवन के अच्छे-बुरे अनुभवों का ज्ञान कराने के लिए माता-पिता को बच्चे के साथ मित्रतापूर्ण बर्ताव करना चाहिए।
4. बचपन के अनुभव बच्चों के मस्तिष्क को अत्यधिक प्रभावित करते हैं।
5. अभिभावकों के अलावा बालक आस-पास के वातावरण से सीखता है।
6. हिंसक कार्टून हिंसा को महज एक खेल की भाँति प्रस्तुत करते हैं जिससे बच्चे के मन में भी हिंसा करने की प्रवृत्ति घर कर जाती है।
7. तरुणावस्था में आने के पश्चात् बच्चे को साहित्यज्ञान कराना चाहिए क्योंकि अच्छे विचारों का पठन उसके कोमल मन में हमेशा के लिए एक अमिट छाप छोड़ देगा व उसके बौद्धिक स्तर व व्यक्तित्व का विकास करेगा।
8. बच्चा इस संसार में आने के पश्चात् सर्वप्रथम अपने माता-पिता से ही सीखता है। इसलिए माता-पिता बालक के प्रथम गुरु होते हैं।

20

उत्साह अच्छे गुणों में गिना जाता है। उचित कर्मों के लिए किया गया उत्साह शुभ और सुंदर होता है। पर न करने योग्य कार्यों के प्रति वही उत्साह प्रशंसनीय नहीं लगता। उत्साह आनंदप्रधान भी होता है। उदाहरण के लिए हमें अपने किसी मित्र के आने का समाचार प्राप्त होता है। एक स्थिति तो यह है कि उस समाचार को सुन कर हम बैठे ही रहें और केवल मुस्करा भर दें। एक स्थिति यह भी होती है जब समाचार सुन कर हम दौड़ कर आगे जाएँ, मित्र के गले लगें और अत्यधिक प्रसन्न दिखाई दें। दूसरी स्थिति उत्साह है। उत्साह की स्थिति ही मनुष्य से कार्य करवाती है। प्रत्येक कार्य को करने में बुद्धि का सहयोग भी साथ रहता है। किसी कार्य में बुद्धि और शरीर एक ही गति से चलते हैं। ऐसे उत्साही, जिनकी बुद्धि और शरीर समान कार्य करते हैं, कर्मवीर कहलाते हैं।

उत्साह आनंद और साहस का मिला-जुला रूप है। उत्साह में किसी न किसी वस्तु पर ध्यान अवश्य केंद्रित होता है। वह चाहे कर्म पर, कर्म के फल पर और चाहे व्यक्ति अथवा वस्तु पर हो। इन्हीं के आधार पर कर्म करने में आनंद मिलता है। कर्म-भावना से उत्पन्न आनंद का अनुभव केवल सच्चे वीर ही कर सकते हैं क्योंकि उनमें साहस की अधिकता होती है। सामान्य व्यक्ति कार्य पूरा हो जाने पर जिस आनंद को अनुभव करता है सच्चा वीर कार्य प्रारंभ होने पर ही उसको अनुभव कर लेता है।

हमारे जीवन में उत्साह का विशेष स्थान है। किसी काम को करने के लिए सदा तैयार रहना तथा उस काम को करने में आनंद अनुभव करना उत्साह का मुख्य स्थान है। उत्साह कई प्रकार का होता है। परंतु सच्चा उत्साह वही होता है जो मनुष्य को कार्य करने के लिए प्रेरणा देता है। मनुष्य किसी भी कारणवश जब किसी के कष्ट को दूर करने का संकल्प करता है तब जिस सुख को वह अनुभव करता है वह सुख विशेष रूप से प्रेरणा देने वाला होता है। इसी उत्साह के लिए कवियों ने कहा है कि 'साहस से भरी हुई उमंग ही उत्साह है।' जिस भी कार्य को करने के लिए मनुष्य में कष्ट, दुःख या हानि को सहन करने की ताकत आती है, उन सब से उत्पन्न आनंद की उत्साह कहलाता है। उदाहरण के लिए दान देने वाला व्यक्ति निश्चय ही अपने भीतर एक विशेष साहस रखता है और वह है धन-त्याग का साहस। यही त्याग यदि मनुष्य प्रसन्नता के साथ करता है तो उसे उत्साह से किया गया दान कहा जाएेगा। इसी प्रकार युद्ध-क्षेत्र में वीरता दिखाने वाले तथा दया के लिए वीरता दिखाने वाले भी अपने-अपने क्षेत्र में उत्साह का कार्य करने वाले हैं।

प्रश्न—1. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2. उत्साह का मुख्य लक्षण क्या है?
3. कर्मवीर किन्हें माना जाता है?
4. 'इच्छा' शब्द के दो पर्यायवाची लिखिए।
5. दानी व्यक्ति किस प्रकार साहस दिखाता है?
6. मनुष्य के कर्म की गति कब मंद पड़ जाती है?
7. 'अलौकिक आनंद' का क्या अर्थ है?
8. उत्साह किन भावनाओं के मिश्रण से बना है?

उत्तर—1. उत्साह का महत्त्व

2. काम करने में आनंद अनुभव करना उत्साह का सच्चा लक्षण है।
3. कर्मवीर उन्हें माना गया है जिनकी बुद्धि व शरीर समान रूप से कार्य करते हैं।
4. 'इच्छा' शब्द के दो पर्यायवाची हैं—कामना व अभिलाषा।
5. दानी व्यक्ति धन त्याग का साहस दिखाता है।
6. जब मनुष्य को अपने द्वारा किए गए कर्म का फल सुस्पष्ट नहीं दिखाई देता तो मनुष्य के कर्म की गति मंद पड़ जाती है।
7. सभी प्रकार के सांसारिक सुखों से प्राप्त आनंदों से ऊपर आनंद।
8. उत्साह आनंद व साहस का मिला-जुला रूप है।

प्रश्न अभ्यास

21

रघुवीर सहाय ने अपने एक लेख 'कहानी और कविता' में लिखा है, "यह कोई एकमात्र सत्य नहीं है कि मैं लिखने तो कविता बैठता हूँ, लिख देता हूँ कहानी। यह भी सत्य है कि अनेक कविताएँ मैं इसलिए लिख पाया हूँ कि कहानी नहीं लिख पा रहा था। सत्य यह है कि किसी रचना को करने से पूर्व मुझ उसके विषय पर ठीक-ठीक मालूम तो होता है परंतु अंत क्या होगा, यह ठीक-ठीक मालूम नहीं होता। कभी-कभी एक साथ दो रचनाएँ आरंभ कर देता हूँ। उनमें से एक तो रद्द हो जाती है व दूसरी रद्दी निकल जाती है। इस तरह दोनों ही खत्म हो जाती हैं। कभी-कभी दोनों मिलकर एक बन जाती हैं और आगे लिखना असंभव हो जाता है।" वास्तव में, किसी भी कला के माध्यम को आत्मसात करने वाले रचनाकार या लेखक के सामने अपनी रचना से संबंधित मॉडल अवश्य होते हैं। वह उनकी जानकारी रखता है और चाहता भी है। सृजन क्रिया के प्रारंभ में, जो मॉडल मस्तिष्क में होते हैं, अपना शिकंजा खो देते हैं और कथाकार या रचनाकार स्वतः ही स्वतंत्र हो जाता है। इसी कारण उसकी रचना मोटे रूप से, अन्य रचनाओं के समान प्रतीत होते हुए भी मौलिक व अद्वितीय हो जाती है। जितने ही ये गुण अधिक होंगे उतनी ही रचना अच्छी और सफल मानी जाएगी।

मेरी अपनी कविताओं को आधार में रखकर कलाकारों ने चित्र, कोलॉज और रेखाचित्र बनाए हैं। उनकी प्रदर्शनी भी हुई है और दूरदर्शन पर भी उन्हें दिखाया गया है। प्रश्न भी पूछे गए कि क्यों कविताओं को आधार बनाया गया। प्रश्नों का सबसे सहज और उचित उत्तर यही था—क्योंकि ये कविताएँ अच्छी लगीं और अन्य कला-माध्यम के लिए प्रेरक भी। अतः परिणाम के रूप में, इस दिशा में संभव हुआ कार्य भले ही, कभी-कभी योजनाबद्ध भी प्रतीत होता हो लेकिन मूल रूप में वह किसी योजना के तहत हो ही नहीं सकता। एक अन्य अनुभव सुनाता हूँ। एक रात मैंने किसी कुशल नर्तकी का नृत्य देखा। देखते ही मेरे मन में एक सहज प्रेरणा जागी। मैंने एक कविता रच डाली। उस कविता को मैंने ही नहीं, मेरे पाठकों ने भी बहुत पसंद किया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रश्न—1. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।
2. लेखक की कविताओं पर चित्र और रेखाचित्र क्यों बन पाए?
3. रेखाचित्र से आप क्या समझते हैं?
4. लेखक कविता किस मन:स्थिति में लिखता है?
5. रघुवीर सहाय की बातों का सार क्या है?
6. रघुवीर सहाय किसी भी रचना की विधा कब तय करते हैं?
7. 'विदित माडल अपना शिकंजा खो बैठते हैं' का आशय स्पष्ट कीजिए।
8. रचनाकार कब स्वतंत्र हो जाता है और क्यों?

22

हमारी आकाशगंगा में अनेक खगोलीय पिंड हैं जिनमें तारे भी शामिल हैं। तारे सूर्य की भाँति खगोलीय पिंड हैं जो अत्यधिक गर्म होते हैं और उनका अपना प्रकाश होता है। प्रत्येक तारा गर्म गैसों का विशाल समूह होता है और उससे बड़ी-बड़ी ज्वालायें निकलती रहती हैं। तारे, हाइड्रोजन गैस के विशाल बादलों, कुछ हीलियम और धूल के बने होते हैं। सभी तारों में (सूर्य सहित) हाइड्रोजन परमाणु निरंतर हीलियम परमाणुओं में परिवर्तित होते रहते हैं और इस प्रक्रिया के दौरान ऊष्मा और प्रकाश के रूप में काफी अधिक मात्रा में नाभिकीय ऊर्जा निर्मुक्त होती है। यह ऊष्मा और प्रकाश है जो तारे को चमकाता है।

आकाश में अरबों खरबों तारे होते हैं। परंतु स्वच्छ अंधेरी रात में केवल लगभग 2000 तारों को ही खाली आँख से देखा जा सकता है। सभी तारे आकार में काफी बड़े होते हैं। वे छोटे प्रतीत होते हैं क्योंकि वे हम से काफी दूर होते हैं। तारे रात में टिमटिमाते हैं, अर्थात्, उनके प्रकाश की तीव्रता निरंतर बढ़ती और घटती प्रतीत होती है। विभिन्न तारों के अध्ययन से हम बता सकते हैं कि तारों की उत्पत्ति किस प्रकार होती है, वे किस प्रकार विकसित होते हैं और किस प्रकार वे समाप्त हो जाते हैं। परंतु एक तारे को केवल देखकर उसमें होने वाले परिवर्तनों को लिख लेना एक अत्यंत असंभव कार्य है। क्योंकि हमारी आयु तारों की तुलना में अत्यंत कम है। तारों में एक छोटा सा परिवर्तन भी हजारों वर्षों में होता है।

हम, अब प्राचीनकाल में लोगों के लिए तारों के महत्व का वर्णन करेंगे। प्राचीन काल में, लोग दिशाएँ ज्ञात करने के लिए तारों पर निर्भर रहते थे (विशेषतया समुद्री यात्राओं के दौरान)। यह ध्रुव तारे की सहायता से किया जाता था, जो सदैव उत्तर दिशा में स्थित होता है। इसलिए, ध्रुव तारे की सहायता से उत्तरी दिशा ज्ञात करके, अन्य दिशाओं को आसानी से ज्ञात किया जा सकता था। प्राचीन लोग रात्रि में आकाश में तारों की स्थितियाँ देखकर समय का भी अनुभव लगा लेते थे। कारण यह है कि रात्रि में भिन्न-भिन्न समयों पर, मान लें रात्रि के प्रारंभ में, मध्य रात्रि में और देर रात्रियों में कुछ तारे भिन्न-भिन्न स्थितियों पर दिखाई देते हैं। प्राचीन काल के लोग तारों की सहायता से मानसून के आगमन की भविष्यवाणी भी कर सकते थे। उदाहरणार्थ, जब कुछ निश्चित तारे रात्रि आकाश में दिखाई देते थे, लोग जान जाते थे कि वर्षा आने वाली है। वे लोग तब अपने खेतों को जोतने के लिए तैयार हो जाते थे।

प्रश्न—1. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।
2. तारे क्या हैं?
3. तारे किन से बने होते हैं?
4. तारे छोटे क्यों दिखाई देते हैं?
5. तारों में होने वाले परिवर्तनों को प्रतिदिन कागज पर लिख लेना असंभव कार्य क्यों है?
6. प्राचीन समय में लोग समय का अनुमान किस प्रकार लगाते थे?
7. समुद्री यात्राओं के दौरान ध्रुव तारा किस प्रकार उपयोगी सिद्ध होता था?
8. आकाशगंगा का पर्यायवाची लिखिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3

अपठित काव्यांश

दसवीं कक्षा में अपठित बोध के लिए अब एक काव्यांश का भी प्रावधान है। एक गद्यांश के साथ-साथ एक काव्यांश पर भी प्रश्न पूछे जायेंगे। काव्यांश में विकल्प दिया जाएगा। दो काव्यांशों में से कोई एक करना होगा। प्रत्येक काव्यांशों में पाँच प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें दो अतिलघुत्तरात्मक एवं तीन लघुत्तरात्मक प्रश्न होंगे। इन काव्यांशों को देने का उद्देश्य छात्रों की बौद्धिक क्षमता का मूल्यांकन करना है। नीचे कुछ काव्यांश उदाहरण हेतु प्रस्तुत हैं—

1

ज्यों निकलकर बादलों की गोद से,
थी अभी इक बूँद कुछ आगे बढ़ी।
सोचने फिर-फिर यही जी में लगी,
आह, क्यों घर छोड़कर मैं यो कढ़ी।

देव मेरे भाग्य में है क्या बदा,
मैं बचूँगी या मिलूँगी धूल में।
जल उठूँगी गिर अंगारे पर किसी,
चू पड़ूँगी या कमल के फूल में।

बह उठी उस काल इक ऐसी हवा,
वह समंदर ओर आई अनमनी।
एक सुंदर सीप का था मुँह खुला,
वह उसी में जा गिरी, मोती बनी।

लोग अक्सर हैं झिझकते-सोचते,
जबकि उनको छोड़ना पड़ता है घर।
किंतु घर को छोड़ना अक्सर उन्हें,
बूँद लौ कुछ और ही देता है कर।

उपरोक्त अपठित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

1. बूँद कहाँ से निकली?
2. बूँद द्वारा कहा गया 'आह' शब्द किस भाव को व्यक्त करता है?
3. बूँद की चिंता का विषय क्या है?
4. कविता में बूँद के साथ किन लोगों की समानता दिखाई गई है?
5. अंत में बूँद कहाँ जाकर गिर पड़ी और क्या बनी?
6. उपर्युक्त काव्य पंक्तियों में कवि क्या संदेश देता है?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उत्तर—

1. बूँद बादलों की गोद से निकली।
2. बूँद द्वारा कहा गया 'आह' शब्द अफसोस (शोक) के भाव को व्यक्त करता है।
3. बूँद की चिंता का विषय उसका अनिश्चित भविष्य है। वह अपने भविष्य के विषय में अनिश्चित है कि वह बचेगी भी या नहीं।
4. कविता में बूँद के साथ उन लोगों की समानता दिखाई गई है जो सदा अनिश्चय की अवस्था में रहते हैं तथा कुछ भी कार्य करने से पूर्व झिझकते हैं।
5. अंत में बूँद सागर में एक खुले सीप में गिर जाती है तथा मोती बन जाती है।
6. उपर्युक्त काव्य-पंक्तियों में कवि यह संदेश देता है कि हमें अपनी सोच को सकारात्मक बनाना चाहिए। घर छोड़ने में कोई हानि नहीं है, बल्कि यह हमारे भाग्य को भी बदल सकता है।

2

'जिंदगी वहीं तक नहीं, ध्वजा जिस जगह विगत युग ने गाड़ी,
मालूम किसी को नहीं, अनागत नर की दुविधाएँ सारी।
'सारा जीवन नच चुका,' कहे जो वह दास्ता-प्रचारक है।
नर के विवेक का शत्रु, मजुन की मेधा का संहारक है।
जो कहे, सोच मत स्वयं, बात जो कहूँ, मानता चल उसको,
नर की स्वतंत्रता की मणि का तू कह अराति प्रबल उसको।
नर के स्वतंत्र चिंतन से जो डरता कदर्य, अविचारी है,
बेड़ियाँ बुद्धि को जो देता, जुल्मी है, अत्याचारी है।

उपरोक्त अपठित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

1. 'सारा जीवन नच चुका' कहने वाला दासता का प्रचारक कैसे है?
2. बुद्धि को बेड़ियाँ देने से क्या आशय है?
3. प्रस्तुत पद्यांश में स्वतंत्रता की मणि का शत्रु किसे कहा गया है?
4. 'मनुज की मेधा का संहारक है'—इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।
5. अत्याचारी कौन है?

उत्तर—

1. जो व्यक्ति जीवन में कभी विकास की संभावनाएँ नहीं देखता व यह मानता है कि भावी जीवन में विकास व बुद्धि का कोई स्थान नहीं, वह दास भाव का प्रचारक कहा जायेगा।
2. बुद्धि को बेड़ियाँ देने का आशय है कि अपनी सोचने-समझने की शक्ति को समाप्त करना।
3. स्वतंत्रता की मणि का शत्रु वह है जो यह समझता है कि बिना सोचे-समझे उसी की बात को माना जाये।
4. इसका आशय है उससे है जो मनुष्य की बुद्धि को नष्ट करता है।
5. जिसने अपनी सोचने व समझने की शक्ति को समाप्त कर लिया है वही अत्याचारी है।

3

संकटों से वीर घबराते नहीं,
आपदाएँ देख छिप जाते नहीं।
लग गए जिस काम में, पूरा किया,
काम करके व्यर्थ पछताते नहीं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हो सरल अथवा कठिन हो रास्ता,
कर्मवीरों को न इससे वास्ता।
बढ़ चले तो अंत तक ही बढ़ चले,
कठिनतर गिरिश्रृंग ऊपर चढ़ चले।

कठिन पथ को देख मुस्काते सदा,
संकटों के बीच वे गाते सदा।
है असंभव कुछ नहीं उनके लिए,
सरल-संभव कर दिखाते वे सदा।

यह असंभव कायरों का शब्द है,
कहा था नेपोलियन ने एक दिन।
सच बताऊँ, जिंदगी ही व्यर्थ है,
दर्प बिन, उत्साह बिन, औ शक्ति बिन।

उपरोक्त अपठित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

1. उपर्युक्त काव्यांश को उपयुक्त शीर्षक दीजिए।
2. कविता में वीरों की जिन विशेषताओं पर बल दिया गया है, उनमें दो प्रमुख विशेषताएँ क्या-क्या हैं?
3. कर्मवीरों का किस बात से कोई लेना-देना नहीं होता और क्यों?
4. किन विशेषताओं के बिना जीवन निरर्थक है और क्यों?
5. नेपोलियन ने क्या कहा था?

उत्तर—

1. शीर्षक—वीरों का धर्म।
2. वीरों की दो विशेषताएँ हैं। प्रथम, कठिन परिस्थितियों में भी निर्भय रहना; व द्वितीय, किसी भी कार्य को असंभव न समझना।
3. कर्मवीरों को केवल कर्म में विश्वास होता है। उन्हें मार्ग में आने वाली बाधाओं से कोई लेना-देना नहीं होता।
4. जो व्यक्ति स्वाभिमानी, उत्साही व कर्मवीर नहीं हैं, उसका जीवन निरर्थक है।
5. नेपोलियन ने कहा था कि असंभव नामक कोई शब्द नहीं होता।

4

देख कर बाधा विविध, बहु विघ्न घबराते नहीं।
रह भरोसे भाग्य के दुख भोग पछताते नहीं।।
काम कितना ही कठिन हो किंतु उकताते नहीं।
भीड़ में चंचल बने जो वीर दिखलाते नहीं।।
हो गए इक आन में उनके बुरे दिन भी भले।
सब जगह सब काल में वे ही मिले फूले-फले।।
काम को आरंभ करके यों नहीं जो छोड़ते।
सामना करके नहीं जो भूल कर मुख मोड़ते।।

उपरोक्त अपठित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

1. इस काव्यांश में कवि ने किन का वर्णन किया है?
2. कैसा व्यक्ति बाधाओं को देखकर नहीं घबराता और वह क्यों नहीं पछताता?
3. कर्मवीरों के बुरे दिन किस प्रकार भले बन जाते हैं?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4. कर्मवीरों की दो विशेषतायें बताइए।
5. कविता का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

उत्तर—

1. इस काव्यांश में कवि ने उन कर्मवीरों का वर्णन किया है जो किसी भी विपत्ति से नहीं घबराते।
2. पुरुषार्थी व्यक्ति बाधाओं को देखकर नहीं घबराता। वह सदैव कर्म में विश्वास करता है और बुरा फल प्राप्त होने पर भी नहीं पछताता।
3. कर्मवीरों के बुरे दिन भी उनके पुरुषार्थ के कारण भले बन जाते हैं।
4. कर्मवीरों की प्रथम विशेषता यह है कि वे कभी किसी विपत्ति से नहीं घबराते। दूसरी विशेषता यह है कि वे कभी कितने भी कठिन कार्य में भी उकताते नहीं हैं।
5. शीर्षक—कर्मवीर।

5

विषुवत् रेखा का वासी जो,
जीता है नित हाँफ-हाँफ कर।
रखता है अनुराग अलौकिक,
वह भी अपनी मातृभूमि पर।
ध्रुववासी जो हिम में, तम में,
जी लेता है काँप-काँप कर।
वह भी अपनी मातृभूमि पर,
कर देता है प्राण-निछावर।
तुम तो हे प्रिये बंधु! स्वर्ग-सी,
सुखद, सकल विभवों की आकर,
धरा शिरोमणि मातृभूमि में,
धन्य हुए हो जीवन पाकर।।

उपरोक्त अपठित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

1. ध्रुवीय क्षेत्र में रहने वालों के जीवन में क्या-क्या कठिनाइयाँ होती हैं?
2. भारतवासी का जीवन धन्य क्यों है?
3. विषुवत् रेखा का वासी हाँफ-हाँफ कर क्यों जीता है?
4. 'सकल विभवों की आकर' किसे कहा है? क्यों?
5. अंतिम चार पंक्तियों में कवि किन्हें संबोधित कर रहा है?

उत्तर—

1. ध्रुवीय क्षेत्रों में रहने वाले लोगों का जीवन अति कठिनाईपूर्ण होता है। उसे घोर सर्दी व अंधकार के बीच जीना पड़ता है।
2. भारतवासी का जीवन इसलिए धन्य है कि उसे भारतीय धरती पर हर प्रकार के सुख मिलते हैं। यहाँ मौसम की ऐसी कोई विषमताएँ नहीं हैं जैसी ध्रुवीय प्रदेशों व विषुवत रेखा पर हैं।
3. विषुवत रेखा पर सूर्य की किरणें धरती पर सदैव सीधी पड़ती हैं जिसके फलस्वरूप वहाँ सारे-साल अत्यधिक गर्मी पड़ती है तथा ऑक्सीजन की मात्रा भी कम होती है। फलतः यहाँ का वासी हाँफ-हाँफ कर जीता है।
4. 'सकल विभवों की आकर' इस पृथ्वी (मातृभूमि) को कहा गया है क्योंकि यहाँ सभी प्रकार की सुख-सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यह धन-धान्य से परिपूर्ण है।
5. अंतिम चार पंक्तियों में कवि भारतीयों को संबोधित कर रहा है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रश्न-अभ्यास

1

सच हम नहीं सच तुम नहीं,
सच है महज संघर्ष ही।
संघर्ष से हटकर जिएँ हम या कि तुम
जो नत हुआ वह मृत हुआ ज्यों वृंद से झरकर कुसुम
जो लक्ष्य भूल सका नहीं। जो हार देख झुका नहीं।
जिसने प्रणय पाथेय माना जीत उसकी ही रही।
सच हम नहीं सच तुम नहीं।

उपरोक्त अपठित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

1. कवि ने सच किसे कहा है?
2. जो मनुष्य संघर्ष से हटकर जीता है वह किसके समान होता है?
3. जो मनुष्य लक्ष्य को देखकर भूलता नहीं, उस मनुष्य की स्थिति कैसी होती है?
4. 'ज्यों वृंद से झरकर कुसुम में' निहित अलंकार का नाम लिखिए।
5. काव्यांश में से दो तत्सम शब्द लिखिए।
6. प्रणय-पाथेय का भाव स्पष्ट कीजिए।

2

और पैरों के तले पोंखर
उठ रहीं इसमें लहरियाँ
नील तल में जो उगी है घास भूरी
ले रही वह भी लहरियाँ
एक चाँदी का बड़ा-सा गोल खंभा
आँख को है चकमकाता
हैं कई पत्थर किनारे
पी रहे चुपचाप पानी
प्यास जाने कब बुझेगी
चुप खड़ा बगुला डुबाए टाँग जल में,
देखते ही मीन चंचल
ध्यान निद्रा त्यागता है
चट दबाकर चोंच में
नीचे गले के डालता है।

उपरोक्त अपठित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

1. पोखर से क्या उठ रही थी?
2. पोखर की घास लहराती हुई क्यों प्रतीत हो रही है?
3. कवि को चाँद का प्रतिबिंब कैसा लग रहा है?
4. कवि के अनुसार किसकी प्यास नहीं बुझ पा रही है और क्यों?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

5. पानी में कौन खड़ा है, वह क्या कर रहा है?
6. काव्यांश में आए निम्न शब्दों के विशेषण और विशेष्य शब्द अलग करो—घास भूमि, बड़ा सा गोला, मीन चंचल, नील तल।

3

निर्भय स्वागत करो मृत्यु का,
मृत्यु है एक विश्राम-स्थल
जीव जहाँ से फिर चलता है,
धारण कर नव जीवन-संबल।

मृत्यु एक सरिता है, जिसमें,
श्रम से कातर जीव नहाकर।
फिर नूतन धारण करता है,
काया रूपी वस्त्र बहाकर।

उपरोक्त अपठित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

1. कवि ने निर्भय होकर किसके स्वागत के लिए कहा है?
2. मृत्यु को विश्राम स्थल क्यों कहा गया है?
3. 'धारण कर नवजीवन-संबल' से क्या तात्पर्य है?
4. 'काया रूपी वस्त्र' का भाव स्पष्ट कीजिए।
5. 'श्रम से कातर' का क्या अर्थ है?
6. काव्यांश में प्रयुक्त दो अलंकारों के नाम लिखो।
7. कवि ने इस काव्यांश में जीवन के किस शाश्वत सत्य को उजागर किया है?

4

मैंने छुटपन में छिपकर पैसे बोए थे,
सोचा था, पैसों के प्यारे पेड़ उगेंगे।
रुपयों की कलदार मधुर फसलें खनकेंगी,
और फूल-फलकर, मैं मोटा सेठ बनूँगा।
पर बंजर धरती से एक न अंकुर फूटा,
बंध्या मिट्टी ने न एक भी पैसा उगला
सपने जाने कहाँ मिटे, कब धूल हो गए।

उपरोक्त अपठित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

1. कवि ने बचपन में क्या बोया था?
2. कवि के बालक-मन ने क्या सोचा था?
3. भूमि पर अंकुर न फूटने का क्या कारण था?
4. कवि की इच्छा पूरी क्यों नहीं हुई?
5. काव्यांश में से अनुप्रास अलंकार के दो उदाहरण छाँटिए।
6. काव्यांश में से दो विशेषण शब्द छाँटिए।

5

जैसा यह अटल, अडिग-अविचल, वैसे ही भारतवासी।
है अभय हिमालय धरती पर, तो भारतवासी अविनाशी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोई क्या हमको ललकारे,
हम कभी न हिंसा से हारे।
दु:ख-देकर हमको क्या मारे,
गंगा का जल जो भी पी ले, वह दुख में भी मुसकाता है।
गिरिराज हिमालय से भारत का कुछ ऐसा ही नाता है।

उपरोक्त अपठित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

1. इस काव्यांश में गिरिराज हिमालय की क्या विशेषता बताई गई है?
2. भारतवासियों की किस विशेषता का वर्णन किया गया है?
3. भारतवासियों की तुलना हिमालय से क्यों की गई है?
4. गंगाजल की क्या विशेषता बताई गई है?
5. हिमालय को कवि ने क्या कहकर पुकारा है?
6. हिमालय का भारत से कैसा नाता है?
7. हिमालय के लिए प्रयुक्त विशेषण शब्द छाँटिए।

6

काम को आरम्भ करके यों नहीं जो छोड़ते।
सामना करके नहीं जो भूल का मुख मोड़ते।।
जो गगन के फूल बातों से वृथा नहीं तोड़ते।
संपदा मन से करोड़ों की नहीं जो जोड़ते।।
बन गया हीरा उन्हीं के हाथ से है कारबन।
काँच को करके दिखा देते हैं वे उज्जवल रतन।।

उपरोक्त अपठित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

1. 'गगन के फूल तोड़ना' से क्या तात्पर्य है?
2. 'संपदा मन से करोड़ों की नहीं जो जोड़ते' पंक्ति का भावार्थ लिखिए।
3. किन व्यक्तियों के हाथ से हीरा कार्बन बन जाता है?
4. कवि ने काँच के विषय में क्या कहा है?
5. 'उज्जवल रतन' शब्द से विशेषण और विशेष्य शब्द अलग कीजिए।
6. काव्यांश में प्रयुक्त मुहावरा छाँटिए।

7

जो बीत गई सो बात गई
जीवन में एक सितारा था,
माना वह बेहद प्यारा था,
वह डूब गया तो डूब गया।
अम्बर के आँगन को देखो,
कितने इसके तारे टूटे,
कितने इसके प्यारे छूटे।
जो छूट गए फिर कहाँ मिले,
पर बोलो टूटे तारों पर
कब अम्बर शोक मनाता है
जो बीत गई सो बात गई।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उपरोक्त अपठित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

1. 'जो बीत गई सो बात गई' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।
2. काव्यांश में प्रयुक्त 'सितारा' किसका प्रतीक है?
3. सितारा डूबने से कवि का क्या तात्पर्य है?
4. कवि ने 'अम्बर' का उदाहरण क्यों दिया?
5. इस काव्यांश के माध्यम से आपको क्या प्रेरणा मिलती है?
6. काव्यांश की भाषागत दो विशेषताएँ बताइए।

8

प्राइवेट बस का ड्राइवर है तो क्या हुआ?
सात साल की बच्ची का पिता तो है।
सामने गीयर के ऊपर,
हुक से लटका रखी है,
काँच की चार चूड़ियाँ गुलाबी।
बस की रफ्तार के मुताबिक
हिलती रहती हैं,
झुककर मैंने पूछ लिया,
खा गया मानो झटका।

उपरोक्त अपठित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

1. 'प्राइवेट बस का ड्राइवर है तो क्या हुआ' पंक्ति से कवि का क्या अभिप्राय है?
2. ड्राइवर की बेटी कितने साल की है?
3. ड्राइवर ने हुक से कितनी चूड़ियाँ लटका रखी हैं?
4. आपके विचार से ड्राइवर ने चूड़ियाँ क्यों लटकाई हैं?
5. चूडियाँ हिलकर ड्राइवर को किसकी याद कराती हैं?
6. कवि का प्रश्न सुनकर ड्राइवर झटका क्यों खा गया?
7. अंतिम पंक्ति में निहित अलंकार बताइए।
8. काव्यांश में प्रयुक्त अंग्रेजी भाषा के शब्द बताइए।

9

मत काटो तुम ये पेड़
हैं ये लज्जावसन
इस माँ वसुन्धरा के।
इस संहार के बाद
अशोक के तरह
सचमुच तुम बहुत पछताओगे।
बोलो फिर किसी गोद में
सिर छिपाओगे
शीतल छाया फिर कहाँ से पाओगे?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहाँ से पाओगे फिर फल?
कहाँ से मिलेगा
शस्य श्यामला को सींचने वाला जल?
रेगिस्तानों में तब्दील हो जायेंगे खेत
बरसेंगे कहाँ से घुमड़कर बादल?
थके हुए मुसाफिर
पायेंगे कहाँ से
श्रमहारी छाया?

उपरोक्त अपठित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

1. पेड़ किसके लज्जावसन हैं?
2. पेड़ काटने को कवि ने 'संहार' क्यों कहा है?
3. खेत किस रूप में परिवर्तित हो जायेंगे?
4. थके हुए मुसाफिर किस से वंचित हो जायेंगे?
5. काव्यांश में प्रयुक्त तत्सम शब्द छाँटिए (कोई दो)
6. काव्यांश में प्रयुक्त विदेशी शब्द छाँटिए (कोई दो)
7. 'वसुन्धरा' शब्द के पर्यायवाची शब्द बताइए।

10

वह खून कहो किस मतलब का
जिसमें उबाल का नाम नहीं।
वह खून कहो किस मतलब का
आ सके देश के काम नहीं।

वह खून कहो किस मतलब का
जिसमें जीवन न रवानी है।
जो परवश होकर बहता है,
वह खून नहीं है, पानी है।

उस दिन लोगों ने सही-सही,
खून की कीमत पहचानी थी,
जिस दिन सुभाष ने बर्मा में
माँगी उनसे कुर्बानी थी।

उपरोक्त अपठित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

1. कौन सा खून व्यर्थ है?
2. परवश होकर बहने वाला खून कैसा होता है?
3. लोगों ने खून की कीमत कब पहचानी थी?
4. सुभाष चंद्र बोस ने क्या नारा दिया था?
5. इस काव्यांश का मूल संदेश क्या है?
6. 'जीवन' शब्द का विपरीतार्थक शब्द लिखिए।
7. प्रस्तुत काव्यांश में से अनुप्रास अलंकार छाँटिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

11

कोहरे से ढकी सड़क पर बच्चे काम पर आ रहे हैं,
सुबह-सुबह
बच्चे काम पर जा रहे हैं
हमारे समय की सबसे भयानक पंक्ति है यह
भयानक है इसे विवरण की तरह लिखा जाना,
लिखा जाना चाहिए इसे सवाल की तरह
काम पर क्यों जा रहे हैं बच्चे?
क्या अंतरिक्ष में गिर गई हैं सारी गेंदे
क्या दीमकों ने खा लिया है
सारी रंग बिरंगी किताबों को
क्या काले पहाड़ के नीचे दब गए हैं सारे खिलौने
क्या किसी भूकंप में ढह गई हैं
सारे मदरसों की इमारतें।

उपरोक्त अपठित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

1. सुबह-सुबह बच्चे कहाँ जा रहे हैं?
2. बच्चों का बचपन कैसा होना चाहिए?
3. काव्यांश के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है?
4. कवि प्रश्न की तरह क्यों पूछता है कि बच्चे काम पर क्यों जा रहे हैं?
5. आपके विचार से बच्चों को काम पर क्यों जाना पड़ रहा है?
6. काव्यांश की भाषा-शैली की किन्हीं दो विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खंड—ब

रचना

15 अंक

पाठ्यक्रम एवं अंक-वितरण

	अंक
♦ निबंध लेखन (लगभग 200 शब्द)	10
♦ पत्र-लेखन	5
(क) औपचारिक पत्र	
(ख) अनौपचारिक पत्र	
♦ संवाद-लेखन	
योग	15

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निबंध लेखन

(अ) विचारात्मक निबंध

1. पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं
2. पर उपदेश कुशल बहुतेरे
3. करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान
4. मानव व धर्म
5. तेते पाँव पसारिए जेती लंबी सौर
6. परोपकार
7. मन के हारे हार है, मन के जीते जीत
8. सत्संगति सब विधि हितकारी
9. समय का सदुपयोग
10. विपत्ति कसौटी जो कसे सोई साँचे मीत
11. चरित्र-बल
12. जब आवै संतोष धन, सब धन धूरि समान
13. जहाँ चाह वहाँ राह
14. परिश्रम का महत्व
15. दैव दैव आलसी पुकारा
16. दया धर्म का मूल है

(ब) खेल, स्वास्थ्य, समाचार-पत्र, विज्ञान, यात्रा आदि

17. विज्ञापन व हमारा जीवन
18. विज्ञान: वरदान या अभिशाप
19. जीवन में खेलकूद का महत्त्व
20. समाचार पत्र के लाभ
21. मेरा प्रिय खेल
22. कबड्डी: भारतीय खेल
23. स्वास्थ्य और व्यायाम
24. कम्प्यूटर का महत्त्व
25. टेलीविजन: वरदान या अभिशाप
26. दैनिक जीवन में विज्ञान
27. पर्यटन का महत्त्व

(स) राष्ट्रीय सामाजिक समस्याएँ

28. भिखारी समस्या
29. बेरोजगारी: समस्या व समाधान
30. महँगाई की समस्या
31. प्रदूषण की समस्या
32. शहर के जीवन में प्रदूषण
33. दहेज प्रथा: एक अभिशाप
34. सांप्रदायिकता एक अभिशाप
35. आतंकवाद की समस्या
36. भ्रष्टाचार की समस्या
37. लड़का-लड़की एक समान
38. जनसंख्या वृद्धि: एक अभिशाप

(द) विद्यार्थी-संबंधी

39. पुस्तकों का महत्त्व
40. विद्यार्थी व अनुशासन
41. विद्यार्थी व राजनीति
42. आदर्श विद्यार्थी
43. छात्र और शिक्षक
44. मेरे जीवन का लक्ष्य
45. मेरा आदर्श शिक्षक
46. मेरी प्रिय पुस्तक
47. पुस्तकालय व उसका सदुपयोग
48. यदि मैं पुलिस अधिकारी होता
49. यदि मैं शिक्षा मंत्री होता
50. यदि मैं अपने विद्यालय की प्रधानाचार्या होती
51. शिक्षा का गिरता स्तर

(य) त्यौहार, ऋतु तथा दर्शनीय-स्थल

52. पर्वतीय सौंदर्य
53. मेले का वर्णन
54. बसंत ऋतु
55. रेलवे-स्टेशन का दृश्य
56. वन महोत्सव

(र) राष्ट्रीय महत्त्व के निबंध

57. देश-प्रेम
58. कैसा शासन बिन अनुशासन
59. भारतीय मजदूर
60. भारत-पाक संबंध
61. सैनिक की आत्मकथा
62. मेरे सपनों का भारत
63. आदर्श नागरिक
64. हमारा भारत
65. इक्कीसवीं सदी का भारत
66. भारतीय संस्कृति : अनेकता में एकता
67. राष्ट्रीय एकता
68. यदि मैं प्रधानमंत्री होता
69. यदि मैं सैनिक होता
70. गणतंत्र दिवस
71. भारतीय गाँव
72. भारत की राजधानी दिल्ली
73. भारतीय कृषक
74. राष्ट्रभाषा हिंदी
75. हिंदी दिवस

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4

निबंध लेखन

(अ) विचारात्मक निबंध

1. पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं

(CBSE 1991, 94, 97; A.I. CBSE 2004)

रूपरेखा : • *भूमिका* • *स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार* • *परतंत्रता का दुख* • *पराधीनता के प्रकार*

भूमिका : पराधीनता का तात्पर्य है—दूसरों के अधीन। अधीनता में किंचित मात्र भी सुख नहीं। पराधीनता दुःखों की खान है। स्वाभिमानी व्यक्ति एक दिन भी परतंत्र रहना नहीं चाहता। पराधीन व्यक्ति को चाहे कितना ही सुख, भोग व ऐश्वर्य प्राप्त हो, वह उसके लिए विष तुल्य ही है। पराधीन व्यक्ति की बुद्धि कुंठित हो जाती है। किसी कवि ने सत्य ही कहा है—

बस एक दिन की दासता, शत कोटि नरक के समान है।
क्षण मात्र की स्वाधीनता, शत स्वर्ग की मेहमान है।।

स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार : प्रत्येक मनुष्य का जन्म स्वतंत्रता में होता है। किसी भी देश, मनुष्य, समाज को यह कदापि अधिकार नहीं कि वह किसी अन्य व्यक्ति या देश को पराधीन बनाए। आज अधिकांश राष्ट्रों के संविधान में प्रत्येक व्यक्ति को स्वतंत्रता का मूलभूत अधिकार प्रदत्त है।

परतंत्रता का दुख : परतंत्रत मानव को जीवन के हर क्षेत्र में पराश्रित रहना पड़ता है। उसकी प्रतिभा, कला-कौशल व योग्यता दूसरों के लिए होती है। उसका लाभ वह स्वयं नहीं ले पाता। वह पराधीनता के बंधन में जकड़ा हुआ होने से आत्महीनता और तुच्छता का अनुभव करता है।

पराधीनता के प्रकार : राष्ट्र की पराधीनता से राष्ट्र पंगु बन जाता है। उसकी चेतना शक्ति शून्य और निष्क्रिय हो जाती है। राष्ट्रगत पराधीनता के कई रूप हैं—राजनीतिक पराधीनता, आर्थिक पराधीनता, सांस्कृतिक पराधीनता, सामाजिक पराधीनता, धार्मिक पराधीनता आदि।

2. पर उपदेश कुशल बहुतेरे

(CBSE 1994, 98)

रूपरेखा : • *भूमिका* • *उपदेशों की निरर्थकता* • *कथनी व करनी में व्यवहारिकता* • *उपसंहार*

भूमिका : 'पर उपदेश कुशल बहुतेरे' सूक्ति के पीछे एक पौराणिक कथा है। मेघनाद जब युद्ध में मारा जाता है तो मंदोदरी आदि रावण की रानियाँ विलाप करने लगती हैं। उस समय रावण उन्हें यह समझाता है कि संसार तो नश्वर है, हमें विलाप नहीं करना चाहिए। रावण उन्हें तो उपदेश देने लगता है परंतु स्वयं यह भूल जाता है कि एक असहाय पराई नारी को उठा लाना कहाँ की समझदारी है।

उपदेशों की निरर्थकता : बिना अमल किए उपदेश देना कोरी निरर्थकता है। दूसरों को उपदेश देने में तो सभी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुशल होते हैं परंतु उस उपदेश को अपने जीवन में आत्मसात करना और बात है। मनुष्य में उपदेश देने की प्रवृत्ति बहुत ही सामान्य है। उपदेश देकर मनुष्य दूसरों के समक्ष अपनी श्रेष्ठता का ढोंग करता है। एक कहावत है 'थोथा चना बाजे घना', अर्थात जिसके पास कुछ नहीं होता वही अत्यधिक दिखावा करता है। वही अधिक उपदेश देता है।

कथनी व करनी में व्यावहारिकता : कथनी को करनी में परिणत करने वाले विरले ही होते हैं। वे उपदेश नहीं देते वरन् उपदेशों को अपने आचरण में आत्मसात करके उपदेशों की सार्थकता सिद्ध करते हैं। यह तथ्य धर्मराज युधिष्ठिर पर सत्य बैठता था। यह कथन उन असाधारण व्यक्तियों पर भी सटीक बैठता है जो शब्दों की नहीं आचरण की शुद्धता पर विश्वास करते हैं। ऐसे लोगों की वाणी में सरस्वती विद्यमान होती है।

उपसंहार : दुख का विषय है कि समाज में ऐसे लोगों की भरमार है जिनकी कथनी उनकी करनी से एकदम विपरीत होती है। ऐसे ही लोगों से समाज में मिथ्याचार व पाखंड पनपता है। सच्चाई उनसे कोसों दूर होती है। ऐसे व्यक्तियों से समाज का हित कम व अहित अधिक होता है।

3. करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान

(CBSE 1997, 99)

रूपरेखा : *• सूक्ति का उद्‌भव • अभ्यास का महत्व • विद्यार्थी व अभ्यास • उपसंहार*

सूक्ति का उद्‌भव : यह सूक्ति देशरत्न रानाडे की जीवन कथा से जुड़ी है। प्यास से विकल रानाडे ने एक पनिहारिन से पानी पिलाने का आग्रह किया। पानी पीने के लिए वे कुँए की मेंढ़ पर गए। वे उस पर गोल-गोल लंबे गढ्ढों को देखकर चौंक गए। उन्होंने पनिहारिन से पूछा—ये गढ्ढे कैसे पड़ गए। पनिहारिन ने जवाब दिया कि ये रस्सी के आने-जाने से पड़े हैं। गोविंद रानाडे का मन मयूर नाच उठा और वे अनायास कह उठे—

करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान
रसरी आवत जात के, सिल पर होत निशान।

अभ्यास का महत्व : जीवन में उन्नति करने के लिए अभ्यास का बहुत महत्त्व है। इतिहास साक्षी है कि अनेक वीर, महापुरुष, कवि, चित्रकार, साहित्यकार आदि जीवन में इसलिए सफल रहे क्योंकि उन्होंने सतत् परिश्रम किया। कालिदास की कहानी तो सभी जानते हैं। उसने अपनी विदुषी पत्नि की लताड़ सुनकर अभ्यास करने की ठानी व संस्कृत साहित्य का महान कवि बना। मैडम क्यूरी, राइट बंधु, रोनेल्ड रौस आदि अनेक वैज्ञानिकों ने निरंतर अभ्यास द्वारा आश्चर्यजनक खोज करके विश्व को आश्चर्यचकित कर दिया।

विद्यार्थी व अभ्यास : विद्यार्थी के लिए तो निरंतर अभ्यास अत्यावश्यक है। विद्या की प्राप्ति एक दिन में नहीं की जाती। इसके लिए वर्षो की लगन, परिश्रम व सतत अभ्यास चाहिए। विद्यार्थी के लिए अभ्यास की उतनी ही आवश्यकता है, जितनी कि जीवित रहने के लिए वायु।

उपसंहार : संसार के संपूर्ण निर्माण, सारी रचना, संपूर्ण कला-कौशल के पीछे निरंतर अभ्यास एवं परिश्रम का हाथ है। भगवान भी उसी व्यक्ति की सहायता करते हैं जो परिश्रमी हैं।

4. मानव व धर्म

(CBSE 1992, 98)

रूपरेखा : *• परिभाषा • धर्म का उद्देश्य • शिक्षित व्यक्तियों का दृष्टिकोण • सांप्रदायिक दुर्भावना*

परिभाषा : धर्म की परिभाषा विभिन्न बुद्धिजीवियों ने विभिन्न प्रकार से दी है। तुलसीदास जी के अनुसार,

परहित सरिस धर्म नहिं भाई।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।।

अर्थात् परोपकार के समान कोई धर्म नहीं है। मनुस्मृति के अनुसार धैर्य, क्षमा, पवित्रता, आत्मसंयम, सत्य, अक्रोध आदि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE 2025 Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सद्‌गुणों को धारण करना ही वास्तविक धर्म है। धर्म का उद्देश्य लोक कल्याण है। समय-समय पर विभिन्न बुद्धिजीवियों ने धर्म की विभिन्न परिभाषाएँ दी हैं।

धर्म का उद्देश्य : धर्म का वास्तविक उद्देश्य सत्य की खोज है। धर्म के मार्ग पर चल कर ही व्यक्ति सच्चा मानव कहलाने का अधिकारी हो सकता है। परंतु धर्म के नाम पर बहुत से लोगों ने धरती पर ही नरक की पुष्टि कर दी है। आधुनिक युग में मंदिर, मस्जिद तथा अन्य पवित्र स्थान अपराध केंद्र बन गए हैं। जो व्यक्ति काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ आदि से दूर होता है, वही वास्तव में धर्म के अधिक निकट होता है।

शिक्षित व्यक्तियों का दृष्टिकोण : आधुनिक युग में अधिकांश शिक्षित व्यक्ति धर्म को महत्त्व न देकर विज्ञान को अधिक महत्त्व देते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि धर्म के बिना विज्ञान अधूरा है। जो व्यक्ति काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार तथा ईर्ष्या जैसे विकारों से मुक्त होता है, वह स्वयं को ईश्वर के अधिक निकट अनुभव करता है।

सांप्रदायिक दुर्भावना : वर्तमान युग में स्वार्थी लोग धर्म व राजनीति को मिलाकर धर्म को कलंकित कर रहे हैं। कश्मीर में उग्रवादी 'इस्लाम की रक्षा' के नाम पर देश की निर्दोष जनता के रक्त से होली खेल रहे हैं। जिहाद अर्थात् धर्मयुद्ध के नाम पर गरीब जनता का विनाश किया जा रहा है। ऐसी स्थिति में धर्म ही लोगों को सन्मति के मार्ग पर ला सकता है।

5. तेते पाँव पसारिए जेती लंबी सौर

रूपरेखा : • भूमिका • आय-व्यय का संतुलन • आय का सदुपयोग • फैशन व फिजूलखर्ची

भूमिका : सरोवर में जिस प्रकार जल आने के मार्ग होते हैं, उसी प्रकार जल के निकलने के भी मार्ग होते हैं। यदि किसी सरोवर में जल आता रहे, पर जाने के लिए मार्ग न हों तो सरोवर की क्या स्थिति होगी? मनुष्य का जीवन भी एक सरोवर के समान है। जल की भाँति उसमें भी धन आने-जाने के रास्ते बने होते हैं, जिन्हें आय-व्यय कहते हैं। यदि केवल आय ही आय हो, पर व्यय का समुचित मार्ग न हो तो जीवन की मर्यादा टूट जाएगी।

आय-व्यय का संतुलन : आय का अर्थ है—लाभ, कमाई और व्यय का अर्थ है—खर्च। घर-गृहस्थी के चलाने के लिए धन मिलता है जीविकोपार्जन से। इस प्रकार आय-व्यय का चक्र चलता रहता है। आय कम हो और व्यय अधिक करें तो जीवन की गाड़ी नहीं चल सकती। इस प्रकार आय के साथ व्यय संतुलित रूप से चलता रहना चाहिए।

आय का सदुपयोग : व्यक्ति को आपत्ति के लिए कुछ बचाकर रखना चाहिए। भविष्य में जो बचता है, उसी में से अपने चालू व्यय की व्यवस्था करनी चाहिए। यदि व्यय अधिक है और आय कम है तो चिन्ता का विषय हो जाता है। आय का विचार किये बिना आय से अधिक खर्च करने पर कुबेर का खजाना भी खत्म हो जाता है।

फैशन व फिजूलखर्ची : आजकल फैशन व फिजूलखर्ची का रोग बढ़ता जा रहा है। अधिकांश लोग कहते हुए सुने जा सकते हैं कि "महँगाई से तंग आ गए"। वास्तव में वे महँगाई से उतने परेशान नहीं हैं जितने फिजूलखर्ची से हैं। शादी-विवाहों में फिजूलखर्ची पर नियंत्रण किया जाना चाहिए।

6. परोपकार
अथवा
परहित सरिस धर्म नहिं भाई
अथवा
वही मनुष्य है, जो मनुष्य के लिए मरे

(A.I. CBSE 1991)

रूपरेखा : • महत्व • परोपकार : आत्मोत्थान का मूल • विविध उदाहरण • लाभ

परोपकार का महत्व : परोपकार अर्थात् दूसरों के हित के लिए कार्य करना एक अति उत्तव विचार है। नदियाँ अपना जल स्वयं कभी नहीं पीतीं। वृक्ष अपने फल स्वयं नहीं खाते। संत लोग सदैव परोपकार में लगे रहते हैं। वे मानव

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जीवन मिलने का उद्देश्य ही परमार्थ या परोपकार मानते हैं। जो मनुष्य जितना परोपकार के कार्य में लगा रहता है, वह उतना ही महान् बनता है।

परोपकार : आत्मोत्थान का मूल : मनुष्य क्षुद्र से महान् और विरल से विराट तभी बन सकता है जब उसकी परोपकार वृत्ति विस्तृत होती जाती है। वह परमात्मा तक पहुँचता जाता है। ज्यों-ज्यों आत्मा में उदारता बढ़ती जाती है, उतनी ही अधिक आनंद की उपलब्धि बढ़ती जाती है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।।

विविध उदाहरण : महर्षि दधीचि ने राक्षसों के विनाश के लिए अपनी हड्डियाँ देवताओं को दे दीं। गुरु गोविंद सिंह हिंदू धर्म की रक्षा के लिए अपने बच्चों सहित बलिदान हो गए। राजकुमार सिद्धार्थ ने परोपकार के लिए राजसी वैभव को त्याग दिया। लोक-हित के लिए महात्मा ईसा सूली पर चढ़ गए। महात्मा गाँधी ने अहिंसा के लिए अपने सीने पर गोली खाई।

लाभ : परोपकार से मनुष्य में उदारता, आत्मसंयम, सादगी, सहानुभूति जैसे गुण आते हैं। परोपकार से यश व सम्मान की प्राप्ति होती है।

7. मन के हारे हार है, मन के जीते जीत

(CBSE 1994, 1997, 2002)

रूपरेखा : *• मन महाशक्तिवान • मन के दो पक्ष • चंचल मन • मानसिक दुर्बलता का उपचार.*

मन महाशक्तिवान : मन महाशक्तिवान है। यह मानव की सबसे बड़ी शक्ति है। मनुष्य के पास मन है, इसलिए वह मनुज है। इसीलिए वह मनुष्य है। मनुष्य के मानसिक बल के द्वारा ही यह सभ्यता विकसित हुई है।

मन के दो पक्ष : मानव मन के दो पक्ष हैं, आशा व निराशा। आशा के सहारे मानव बड़े-बड़े वीरतापूर्ण और साहसपूर्ण कार्य कर गुजरता है। यही आशा मानव को कर्म करने की प्रेरणा देती है। इसलिए आशा को 'आशा बलवती राजन' कहा गया है।

निराश मन वाला मनुष्य सारे साधनों से युक्त होता हुआ थी युद्ध हार बैठता है। पांडव व कौरवों का युद्ध एक मिसाल है। अतः जीवन में विजयी होना है तो मन को शक्तिशाली बनाओ।

चंचल मन : मन की गति बड़ी चंचल है। मन एक जगह स्थिर नहीं रहता, इसलिए जिन साधकों ने मन को साध लिया, उन्होंने अपनी साधना को सफल बना लिया। एक बड़ा सम्राट भी अपने मन को नहीं साध सकता और एक साधारण सज्जन पुरुष भी अपने मन को साध सकता है। कवि रहीम कहते हैं—

माला फेरत जुग गया, मिटा न मन का फेर।
कर का मनका डारि के, मन का मनका फेर।।

मानसिक दुर्बलता का उपचार : अपनी वेशभूषा, केश-श्रृंगार, बातचीत व व्यवहार के प्रति उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, क्योंकि व्यक्तित्व के निर्माण तथा कार्यों में सफलता के लिए ये बातें सहायक होती हैं। इनसे मन भी प्रसन्न होता है। कई बार हमारे सामने ऐसा कठिन काम आ जाता है कि हम मन हारने लगते हैं। हमें यह सोचना चाहिए कि यह वस्तुतः हमारी परीक्षा का अवसर है।

8. सत्संगति सब विधि हितकारी

अथवा

कबिरा संगति साधु की, हरै और की व्याधि

(CBSE 1991, 1992, 2005)

रूपरेखा : *• भूमिका • सत्संगति व कुसंगति में अंतर • सुसंगति की प्राप्ति और कुसंगति को छोड़ने के उपाय • सुसंगति सब सुखों का मूल*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भूमिका : सत्संगति का अर्थ है—श्रेष्ठ मनुष्यों की संगति। मनुष्य जब अपने से अधिक विद्वान व गुणवान व्यक्ति के संपर्क में आता है, तो उसमें अच्छे गुण स्वत: ही आ जाते हैं। यदि घर के सदस्य भले हैं तो सत्संगति घर से ही प्रारंभ हो जाया करती है।

सत्संगति व कुसंगति में अंतर : सत्संगति मनुष्य की बुद्धि की मूर्खता को दूर करती है, वाणी में सत्य की स्थापना करती है, सम्मान को बढ़ाती है, पापों को नष्ट करती है, मन को प्रसन्न करती है तथा सभी ओर यश फैलाती है। साधारण कीड़ा भी फूल की संगति में आकर देवताओं के मस्तक पर चढ़ जाता है।

दूसरी ओर कुसंगति से मनुष्य की राक्षसी प्रवृत्तियाँ जागृत हो जाती हैं। वह विलासी, स्वेच्छाचारी व अहंकारी बनने लगता है। आवारागर्दी, अपराध, मादक व्यसनों आदि के संपर्क में आ जाता है। वह स्वयं के लिए तो खतरा होता ही है, समाज के लिए भी होता है। कबीरदास जी ने कहा है—

कबिरा संगति साधु की, हरै और की व्याधि।
ओछी संगति नीच की, आठों पहर उपाधि।।

सुसंगति की प्राप्ति और कुसंगति को छोड़ने के उपाय : मनुष्य की दृढ़ इच्छा-शक्ति ही उसे कुसंगति से बचा सकती है। बार-बार अपने मन को समझाने से, विवेक से, अच्छे-बुरे की पहचान से ही कुसंगति से दूर रहा जा सकता है। जिसे कमल की श्रेष्ठता का बोध होगा, वही कीचड़ के बीच रहकर भी कमल जैसा कोमल खिल सकेगा। परंतु केवल बोध भी प्रभावी नहीं होता। दृढ़ इच्छाशक्ति आवश्यक होती है।

सुसंगति सब सुखों का मूल : सत्संगति से सब प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं। अच्छी संगति में रहने वाला मनुष्य पाप-बोध से रहित होता है। उसकी आत्मा स्वच्छ होती है। इसलिए उसके चेहरे पर दु:ख, पश्चात्ताप, निराशा आदि दुर्भाव नहीं होते।

9. समय का सदुपयोग
अथवा
गया समय फिर हाथ नहीं आता
अथवा
समय अमूल्य धन है
अथवा
काल्ह करे सो आज कर, आज करे सो अब

(CBSE 1990, 1992, A.I. CBSE 1996, 2005)

रूपरेखा : • *समय बड़ा बलवान* • *सदुपयोग* • *समय की पाबंदी* • *सफलता में समय का स्थान*

समय बड़ा बलवान : 'मनुष्य बली नहीं होत है, समय होत बलवान'। समय कभी विश्राम नहीं करता। समय का दूसरा नाम काल या महाकाल भी है। इसे देवता व मृत्यु दोनों ही माना गया है। क्या राजा क्या रंक, समय के प्रकोप से कोई नहीं बच पाया। जिसने समय को नहीं पहचाना उसने सदैव पराजय का मुँह देखा है।

समय का सदुपयोग : समय का सदुपयोग यही है कि प्रत्येक कार्य निश्चित समय पर कर दिया जाए। उचित घड़ी बीत जाने पर किया गया कार्य निष्फल होता है। कबीरदास कहते हैं—

काल्ह करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में परलै होयगी, बहुरि करैगो कब।।

समय पर किया गया थोड़ा सा कार्य भी बहुत उपयोगी होता है और समय बीतने पर किया गया महान उपकार भी व्यर्थ चला जाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समय की पाबंदी : हमें समय का पाबंद रहना चाहिए। सूर्य व चंद्रमा अपने समय के अत्यंत पाबंद हैं। यदि प्रकृति अपने समय की पाबंद न हो तो प्रलय हो जाएगी।

अब पछताऐ होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत

नेपोलियन के सेनापति ग्रुशी के केवल पाँच मिनट के विलंब से नेपोलियन को पराजय का मुँह देखना पड़ा था। 1857 की क्रांति की असफलता का मुख्य कारण उसका समय पर आरंभ न होना था।

सफलता में समय का स्थान : समय का सही उपयोग ही जीवन में उन्नति का द्वार है। समय के सही उपयोग का उपाय है 'समय नियोजन'। समय यदि अनुकूल न हो तो मनुष्य के सारे प्रयत्न विफल हो जाते हैं। कार्य के समय कार्य व आराम के समय आराम करने वाला मनुष्य ही जीवन में सफलता का स्वाद चख सकता है।

10. विपत्ति कसौटी जो कसे सोई साँचे मीत

अथवा

मित्रता बड़ा ही अनमोल रत्न है

(CBSE 1997, A.I. CBSE 1998, Foreign 2004)

रूपरेखा : *• मित्र की आवश्यकता • जीवन-संग्राम में मित्र की उपयोगिता • सच्चे मित्र की परख • सच्चा मित्र परम सौभाग्य*

मित्र की आवश्यकता : मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। अपने एकाकी जीवन को दूर करने के लिए व जीवन में उचित तालमेल लाने के लिए उसे मित्रता की अत्यधिक आवश्यकता है। मित्र के साथ मनुष्य अपनी भावनाओं का आदान-प्रदान कर सकता है, अन्यथा वह कुंठित हो जाएगा। परिवार के सदस्यों से बातचीत की कुछ सीमाएँ होती हैं।

जीवन संग्राम में मित्र की उपयोगिता : जिस प्रकार मनुष्य के दोनों हाथ शरीर की अनवरत रक्षा करते हैं, उन्हें कहने की आवश्यकता नहीं होती और न कभी शरीर कहता ही है कि जब मैं पृथ्वी पर गिरूँ तब तुम आगे आ जाना और बचा लेना; परंतु वे एक सच्चे मित्र की भाँति सदैव शरीर की रक्षा में संलग्न रहते हैं। इसी प्रकार एक सच्चा मित्र भी बिना कुछ कहे-सुने अपने मित्र का सदैव हित-चिंतन किया करता है।

सच्चे मित्र की परख : सच्चे मित्र की परख विपत्ति में ही होती है। जो विपत्ति में अपने शरीर के अंग की तरह साथ दे वही सच्चा मित्र होता है। जो निःस्वार्थ भाव से आपकी विपत्ति को अपनी विपत्ति समझे व कभी प्रतिकार न करे, ऐसे ही आदर्श व्यक्ति को अपना मित्र बनाना चाहिए। मूर्खों से कभी मित्रता नहीं करनी चाहिए। कहते हैं कि सौ मूर्खों की दोस्ती से एक बुद्धिमान की दुश्मनी अच्छी होती है। तुलसीदास जी ने कहा है—

धीरज धर्म मित्र अरू नारी, आपत्ति काल परखिए चारी।
जो न मित्र दुख होहि दुखारी, तिनहि विलोकत पातक भारी।।

सच्चा मित्र परम सौभाग्य : विश्वासपात्र मित्र एक खजाना है जो किसी-किसी को ही मिलता है। जिस किसी को एक सहृदय मित्र मिल जाए, उसे अपने आपको परम सौभाग्यशाली समझना चाहिए।

11. चरित्र-बल

(CBSE 1995)

रूपरेखा : *• चरित्र की ताकत • चरित्र पर सर्वस्व न्यौछावर • चरित्र कैसे बनता है? • लाभ*

चरित्र की ताकत : चरित्र तो एक हीरा है जो स्वयं प्रकाशमय होने के साथ-साथ आसपास के वातावरण को भी प्रकाशमय बनाता है। यह एक ऐसी ताकत है जो सब बुरी ताकतों पर हावी हो जाती है तथा राक्षसी वर्ण के लोग भी चरित्रवानों को नमस्कार करते हैं। जिनके पास चरित्ररूपी धन होता है, उनके समक्ष संसार के धन-ऐश्वर्य कोई स्थान नहीं रखते।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चरित्र पर सर्वस्व न्यौछावर : राजा पुरु के चरित्र पर सिकंदर भी समर्पित हो गया था। महात्मा गाँधी के चरित्र को जानकर करोड़ों भारतीयों ने उनके एक आह्वान पर पूरे देश में सत्याग्रह आरंभ कर दिया। संत लोगों के पास जो चरित्ररूपी धन होता है वह धन तो बड़े-बड़े धन्नासेठों के पास भी नहीं होता। चरित्र सब ताकतों का स्वामी है क्योंकि इससे चरित्रवान व्यक्ति व चरित्रवान व्यक्ति से चरित्रवान राष्ट्र की उत्पत्ति होती है।

चरित्र कैसे बनता है? चरित्र विरासत में मिले संस्कारों व आसपास के चरित्रवान वातावरण से बनता है। चरित्र अत्यधिक पढ़ने या बहुत ऊँची उपाधि पाने से नहीं बनता। रावण के पास किस वस्तु की कमी थी? विद्या की? बल की? परंतु उसके पास चरित्र की पूँजी नहीं थी, इसीलिए उसका पतन हुआ। चरित्र तो वह साधना है जिसे अंत:प्रयास से ही उत्पन्न किया जा सकता है। इसका तरीका है कि सद्‌गुणों पर चला जाए व अवगुणों से बचा जाए।

लाभ : चरित्रवान व्यक्ति को अपना जीवन सफल प्रतीत होता है। विश्व के समस्त सुख उसके इर्द-गिर्द घूमते हैं। अपमान भी सम्मान बन जाते हैं व जहर भी अमृत बन जाते हैं।

12. जब आवै संतोष धन, सब धन धूरि समान

(CBSE 1998)

रूपरेखा : • *कामना का दु:ख* • *दु:ख का कारण इच्छाएँ* • *संतुष्टि* • *ईश्वर से प्रार्थना*

कामना का दुख : मनुष्य सदैव अपनी कामनापूर्ति में लगा रहता है मगर यह कभी पूर्ण नहीं होती। एक कामना की पूर्ति होती है, तो दूसरी लग जाती है। गाँधी ने कहा था, ''यह पृथ्वी संसार की सभी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकती है, परंतु केवल एक व्यक्ति के लालच की नहीं।''

दुख का कारण इच्छाएँ : महात्मा बुद्ध ने कहा था कि संसार के समस्त दु:खों का कारण इच्छाएँ हैं। मनुष्य आरंभ से अंत तक विविध भौतिक सुख-सुविधाओं के पीछे पागल हुआ घूमता है। कभी उसे मोटरसाइकिल चाहिए, कभी कार तो कभी हवाई जहाज, कभी सम्मान, कभी सत्ता, कभी कुछ-कभी कुछ। शरीर तृप्त हो जाता है परंतु मन नहीं। यदि पड़ौसी कोई नई चीज ले आए तो हमें जलन होती है। हमारे पास भी होनी चाहिए। इसी प्रतियोगिता में मनुष्य अनायास दुख अपना लेता है।

संतुष्टि : संतोष के मार्ग पर चलकर ही मनुष्य इच्छाओं से मुक्ति पा सकता है और अपने जीवन को सफल बना सकता है। कबीरदास ने कहा है—

गोधन, गजधन, बाजिधन और रतन धन खान
जब आवै संतोष धन, सब धन धूरि समान

अप्राप्य वस्तु के लिए चिंता न करना, प्राप्त वस्तु के लिए सम रहना संतोष है। इससे स्पष्ट है कि संतोष मनुष्य की वह दशा है जिसमें वह अपनी वर्तमान अवस्था से संतुष्ट रहता है। जो मिल जाता है उसमें प्रसन्न रहता है और अधिक की कामना नहीं करता।

ईश्वर से प्रार्थना : भगवान इतना दीजिए जिसमें मेरा व मेरे परिवार का पालन-पोषण भली प्रकार से हो सके और जो भी अतिथि मेरे द्वार पर आए उसका भी मैं भली प्रकार आदर कर सकूँ।

13. जहाँ चाह वहाँ राह

(All India CBSE 2005)

रूपरेखा : • *भूमिका* • *सफलता का मूल मंत्र* • *मुश्किलों पर विजय* • *प्रेरणा*

भूमिका : जहाँ चाह वहाँ राह का अर्थ है कि जब किसी कार्य को करने की इच्छा होती है तो रास्ते स्वयं बन जाते हैं। 'चाह' का अर्थ तीव्र इच्छा से है।

सफलता का मूल मंत्र : सफलता प्राप्त करने के लिए कर्म की चाह होनी अनिवार्य है। जो लोग केवल इच्छा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करते हैं किंतु उसके लिए कुछ करना नहीं चाहते, वे ख्याली पुलाव पकाना चाहते हैं। उनका जीवन असफल होता है। सफल होने के लिए चाह के प्रति पूरा समर्पण होना चाहिए।

मुश्किलों पर विजय : चाह के प्रति समर्पित लोग रास्तों में आई मुश्किलों से नहीं घबराया करते। 'जब ओखली में सिर दिया तो मूसल से क्या डरना' वाली कहावत में विश्वास करने वाले लोग ही मुश्किलों पर विजय पाते हैं। सच्चे चाह रखने वाले मनुष्य मुश्किलों को एक चुनौती के समान लेते हैं। कठिनाइयों को मार्ग निर्माण का साधन समझना चाहिए। गाँधी ने हजारों मुश्किलों को सहकर देश को आजादी दिलाई। 1857 की क्रांति 1947 में जाकर रंग लाई। यदि जेम्स वाट ने भाप का इंजन बनाने की चाह न रखी होती तो हम आज रेलों में सफर न कर रहे होते। यदि ग्राहम बेल ने कभी टेलीफोन की चाह न रखी होती तो हम आज टेलीफोनों पर बात नहीं कर रहे होते।

प्रेरणा : इस कहावत से हमें प्रेरणा मिलती है कि हम अपने प्रबल इच्छा, अपनी चाह को मनमंदिर में आत्मसात करें। वह इच्छा-शक्ति अपने आप रास्ते ढूँढ निकालेगी। इच्छा शक्ति वह ज्वालामुखी है जो पहाड़ों की छाती फाड़कर अपने लिए रास्ते बना ले।

14. परिश्रम का महत्व

रूपरेखा : • *परिश्रम के फल* • *महत्व* • *विद्यार्थी व परिश्रम* • *निष्कर्ष*

परिश्रम के फल : संसार में आज जो भी ज्ञान-विज्ञान की उन्नति और विकास है, उसका कारण परिश्रम है। आदि युग से परिश्रम करता हुआ मानव सभ्यता के इस शिखर पर पहुँचा है। परिश्रम के कारण नहुष इंद्रासन का अधिकारी बना, कालिदास महान कवि, मैडम क्यूरी व एडीसन महान् वैज्ञानिक व अब्राहम लिंकन अमेरिका के राष्ट्रपति। परिश्रम के बल पर मनुष्य ने अन्न उपजाया, वस्त्र, घर, पुल, बाँध आदि बनाए।

परिश्रम के महत्व : परिश्रमी व्यक्ति को असफल होने पर भी पश्चात्ताप नहीं होता, उसके मन में इतना संतोष तो अवश्य रहता है कि उसमें जितनी सामर्थ्य थी, उसने प्रयास किया। फल देना या न देना ईश्वर का कार्य है, मनुष्य का कार्य केवल कर्म करना है। मनुष्य का भाग्य भी परिश्रम से ही बनता है। प्रकृति भी भाग्य के बल से नहीं, व्यक्ति के पुरुषार्थ के बल पर ही झुकती है।

प्रकृति नहीं डरकर झुकती है, कभी भाग्य के बल से,
सदा हारती वह मनुष्य के, उद्यम से, श्रम बल से।

विद्यार्थी व परिश्रम : विद्यार्थी वर्ग के लिए तो आलस्य त्याज्य है। विद्यार्थी जीवन भविष्य की आधारशिला है। जो विद्यार्थी इस काल में परिश्रम नहीं करते हैं जीवन में उनकी सफलता के द्वार बंद हो जाते हैं। जिस प्रकार सोना तपकर कुंदन बनता है, परिश्रम से विद्यार्थी उतना ही अधिक ओजवान होता है।

निष्कर्ष : मनुष्य को चाहिए कि हाथ पर हाथ रखकर न बैठे। समय के एक क्षण को भी बरबाद न करे तथा स्वयं को परिस्थितियों का नहीं, अपितु परिस्थितियों को अपना दास बनाए। परिश्रमशील व्यक्ति के लिए कुछ भी अप्राप्य नहीं, कुछ भी असाध्य नहीं तथा कुछ भी असंभव नहीं।

15. दैव दैव आलसी पुकारा
अथवा
आलस्य मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है

(All India CBSE 2006)

रूपरेखा : • *भूमिका* • *आलस्य की हानियाँ* • *विद्यार्थी व आलस्य* • *निष्कर्ष*

भूमिका : भृर्तहरि ने आलस्य को मानव शरीर का सबसे बड़ा शत्रु बताया है। कोई भी काम केवल मनोरथ करने या सोचने मात्र से ही पूरे नहीं होते, अपितु उनके लिए उद्यम की आवश्यकता होती है। सोते हुए सिंह के मुख में हिरण स्वयं प्रवेश नहीं करते। उसके लिए तो सिंह को प्रयास करना ही पड़ता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उद्यमेनैव हि सिद्धंति कार्याणि न मनोरथ:
न ही सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगा:

आलस्य की हानियाँ : आलस्य करने से मानव जीवन में कभी उन्नति नहीं कर सकता। वह सभी कार्य भाग्य पर छोड़ देता है। परंतु वह यह भूल जाता है कि भाग्य परिश्रम से बनता है। यदि परिश्रम न किया गया तो भाग्य मिट्टी में मिल जाएगा। ईश्वर भी उसी की सहायता करते हैं जो अपनी सहायता स्वयं करते हैं। लक्ष्मी भी पुरुषार्थी मनुष्यों के पास ही निवास करती है। आलसी मनुष्य को कठोर परिश्रम करने में डर लगता है। वह मानसिक सुख के स्थान पर देह सुख को सर्वोपरि मानने लगता है तथा उसका परिवार बहुत ही तंग हालत में चलता है।

विद्यार्थी व आलस्य : विद्यार्थी के लिए आलस्य विष के समान है। आलसी को तो विद्या आ ही नहीं पाती। विद्यार्थी को इस महान् शत्रु से सदैव बचना चाहिए। यदि इस समय विद्यार्थी आलसी बन गया तो यह शत्रु जीवन भर उसका पीछा नहीं छोड़ता तथा उसके संपूर्ण जीवन को असफलता, दु:ख, दीनता तथा निराशा के गर्त में ढकेल देता है।

निष्कर्ष : मनुष्य को चाहिए कि कभी आलस्य न करे। समय के एक क्षण को भी बरबाद न करे। परिश्रमी व्यक्ति के लिए कुछ भी असंभव नहीं।

16. दया धर्म का मूल है

(CBSE 2000)

रूपरेखा : • *धर्म का मूल* • *दया में महानता* • *दया शक्तिशाली का आभूषण* • *उपसंहार*

धर्म का मूल : दया धर्म का मूल है। दया भाव से ही मनुष्य का मन किसी असहाय प्राणी को देखकर द्रवित हो उठता है। किसी असहाय प्राणी को देखकर उसकी सहायता करना ही दया है, धर्म है। वास्तव में दया एक ईश्वरीय गुण है। भगवान श्रीकृष्ण कितने करुणामयी थे, यह इन पंक्तियों से उद्धृत हो जाता है—

परित्राणाय साधूनां, विनाशाय च दुष्कृताम।
अभ्युत्थानं धर्मस्य, तदात्मानं सृजाम्यहम।।

दया में महानता : सभी महापुरुषों के व्यक्तित्व में दयारूपी महानता रही है। भगवान ईसा ने उन्हें भी क्षमा कर दिया जिन्होंने उन्हें सूली पर चढ़ाया था। गाँधी जी ने अच्छा खासा वकालत का व्यवसाय छोड़कर अन्याय के विरुद्ध बिगुल बजाया। महर्षि दधीचि ने देवों पर दया करके उनकी रक्षा के लिए अपनी हड्डियाँ प्रस्तुत कर दीं। जब भी कोई व्यक्ति अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर समाज के किसी भी प्राणी के दयाभाव प्रदर्शित करता है, वह महान बन जाता है।

दया शक्तिशाली का आभूषण : दया तो शक्तिशाली का गहना होता है। यदि कोई शक्तिशाली पुरुष कमजोर व्यक्ति को क्षमा कर दे तो वह कमजोर नहीं बल्कि महान बन जाता है। महाभारत के युद्ध में कर्ण ने चारों पांडवों को पराजित करके क्षमा कर दिया था। यदि कर्ण चाहता तो वह उनके प्राण भी ले सकता था। यही बात कर्ण को महान बनाती है।

क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल हो,
उसको क्या जो दंतहीन, विषहीन, विनीत और सरल हो।

उपसंहार : भगवान ने मनुष्य को दया की भावना इसलिए दी है जिससे यह सृष्टि बनी रहे। कोई अधर्म होने पर यह दया व्यक्ति को दूसरे प्राणी की रक्षा करने की प्रेरणा दे।

(ब) खेल, स्वास्थ्य, समाचार-पत्र, विज्ञान, यात्रा आदि

17. विज्ञापन व हमारा जीवन

(All India CBSE 2005)

रूपरेखा : • *विज्ञापनों का उद्देश्य* • *विविध प्रकार* • *विज्ञापनों की भूमिका* • *सामाजिक दायित्व* • *उपसंहार*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विज्ञापनों का उद्देश्य : किसी वस्तु, कार्यक्रम या संदेश आदि के प्रचार-प्रसार में आने वाली सामग्री को विज्ञापन कहते हैं। विज्ञापनों का उद्देश्य अपने उत्पाद के विषय में दूर-दराज तक जानकारी पहुँचाना होता है। आज लगभग सभी छोटी-बड़ी कंपनियाँ विज्ञापनों के माध्यम से ही अपने उत्पादों की जानकारी कराती हैं।

विविध प्रकार : विज्ञापन अनेक प्रकार से किए जाते हैं। रेडियो द्वारा, टेलीविजन द्वारा, टेलीफोन द्वारा, इश्तहार छपवाकर, व अखबारों में निकलवाकर आदि। विज्ञापन सामाजिक, आर्थिक, नौकरी संबंधी, वैवाहिक, अचल संपत्ति, उद्योग आदि के विषय में होते हैं। व्यापारिक व अचल संपत्ति की खरीद-बेच संबंधी विज्ञापन अत्यंत ही लुभावने पाए जाते हैं।

विज्ञापनों की भूमिका : आज का युग प्रतियोगिता का युग है। हर छोटी-बड़ी कंपनी अपने उत्पादों को और बेहतर बनाने की कवायद करती दिखाई देती हैं। उनके द्वारा दिए गए अलग-अलग विज्ञापनों द्वारा ग्राहक सही निर्णय ले सकता है कि उसे कौन सा उत्पाद खरीदना चाहिए और कौन सा नहीं। जब मनुष्य भारी असमंजस में पड़ जाता है तो ये विज्ञापन ही उसका असमंजस दूर करते हैं।

सामाजिक दायित्व : विज्ञापनों का सामाजिक दायित्व भी होता है। आमतौर पर गलत माल बेचने के लिए भी भ्रामक विज्ञापन निकाल दिए जाते हैं। इसके लिए विभिन्न जानी-मानी हस्तियों या फिल्मी सितारों का भी उपयोग किया जाता है। यह सरासर गलत है। यदि उत्पाद की गुणवत्ता अच्छी नहीं है तो उसके लिए भड़कीले व लुभावने विज्ञापनों का प्रयोग न करना हमारा सामाजिक दायित्व है।

उपसंहार : वास्तव में विज्ञापनों में जनता को प्रभावित करने की अद्‌भुत क्षमता है। ये सरकार, व्यापार व सामान्य व्यक्तियों के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। परंतु कुछ गलत मानसिकता वाले लोग इनके दुरुपयोग से नाजायज फायदे भी उठाते हैं। सरकार को चाहिए कि वह इस दिशा में ठोस कदम उठाए।

18. विज्ञान : वरदान या अभिशाप

(All India CBSE 2005)

रूपरेखा : • *भूमिका* • *वरदान* • *अभिशाप* • *विज्ञान की उपलब्धियाँ* • *समाज व सरकार का दायित्व*

भूमिका : विज्ञान ने प्राय: सभी क्षेत्रों में अपनी विजय पताका फहरा दी है। विज्ञान के कारण ही मानव के सब अंधविश्वास, अज्ञानता और सभी कल्पनाएँ निराधार व निर्मूल हो गई हैं।

वरदान : विज्ञान की सहायता से बड़ी से बड़ी गणनाएँ कंप्यूटर द्वारा क्षणमात्र में हो जाती हैं। विज्ञान ने अंधों को आँखें दीं हैं व बहरों को सुनने की शक्ति। चिकित्सीय विज्ञान ने व्यक्ति के जीवन को दीर्घायु बना दिया है। इसने रोगों को बस में कर लिया है एवं अपंगता को रौंद डाला है। रसोई घर से लेकर ऑफिस तक विज्ञान की ही वाहवाही है।

अभिशाप : सबसे बड़ा खतरा हमारे सामने प्रदूषण का है। आज अत्यधिक, प्लास्टिक के सामानों व विभिन रसायनों के निर्माण से शहरों में साँस लेना दूभर हो गया है। भूमि में अत्यधिक रासायनिक खादों के प्रयोग से भूमि की उर्वर क्षमता बुरी तरह से प्रभावित हुई है।

विज्ञान की उपलब्धियाँ : विज्ञान ने यातायात, संचार, युद्ध, चिकित्सा, मनोरंजन, उद्योग, कृषि, शिक्षा व दैनिक जीवन में अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया है। मानव को ईश्वर ने पंख नहीं दिए थे, वे मानव ने यानों के रूप में ईजाद कर लिए। शक्तिशाली हाथ-पैर नहीं दिए थे, उसकी जगह मानव ने क्रेन का निर्माण कर लिया। विज्ञान की इतनी उपलब्धियाँ हैं कि शब्दों में वर्णन नहीं की जा सकतीं।

समाज व सरकार का दायित्व : एक सब्जी काटने के काम आने वाले चाकू से किसी का जीवन भी छीना जा सकता है। विज्ञान का उपयोग व दुरुपयोग दोनों ही किए जा सकते हैं। सरकार व समाज को चाहिए कि वह विज्ञान का सदुपयोग करे, दुरुपयोग नहीं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

19. जीवन में खेलकूद का महत्व

(CBSE 1990, 92, 98; All India CBSE 1992, 93)

रूपरेखा : • *खेलों का महत्व* • *खेल व स्वास्थ्य* • *दुर्भाग्य* • *स्वस्थ शरीर का महत्व* • *हमारा कर्तव्य*

खेलों का महत्व : कालिदास ने कहा है—

शरीर माद्यं खलु धर्म साधनम्।

सब प्रकार के कर्त्तव्य पालन का प्रथम साधन शरीर ही है। स्वास्थ्य प्राप्ति के अनेक उपायों में खेल-कूद का महत्त्व किसी से कम नहीं है। शिक्षा से बुद्धि का विकास होता है तो खेलों से शरीर का।

खेल व स्वास्थ्य : अच्छे स्वास्थ्य की प्राप्ति के लिए व्यायाम, खेलकूद, जिमनास्टिक आदि का सहारा लिया जा सकता है। कबड्डी, दौड़-कूद, खो-खो, हॉकी, फुटबॉल, क्रिकेट आदि खेलों में व्यायाम के साथ-साथ मनोरंजन भी होता है। इनसे शरीर स्वस्थ, चुस्त व फुर्तीला रहता है। विद्यार्थियों को चाहिए कि वे पर्याप्त खेल-कूद करें। याद रखें कि स्वस्थ तन से ही स्वस्थ मन का विकास होता है।

दुर्भाग्य : विदेशों में खेलकूद पर अधिक ध्यान दिया जाता है। दुर्भाग्य से भारत में अभी खेलकूद पर अधिक ध्यान नहीं दिया जा रहा है। इसीलिए हर खेल में हम प्राय: पीछे रह जाते हैं। एशियाई खेलों के आयोजन के बाद से आशा बँधी है कि अब हमारे यहाँ खेल-कूद पर अधिक ध्यान दिया जाएगा।

स्वस्थ शरीर का महत्त्व : स्वस्थ शरीर से स्वस्थ चित्त बनता है। स्वस्थ चित्त से समस्त कार्य सुगमतापूर्वक संपन्न होते हैं। स्वस्थ शरीर व स्वस्थ चित्त से राष्ट्र का निर्माण होता है। व्यक्ति के चरित्र का निर्माण होता है व व्यक्ति के चरित्र से राष्ट्र के चरित्र का।

हमारा कर्तव्य : हमारा कर्तव्य है कि हम पढ़ने के साथ-साथ खेलकूद पर भी ध्यान दें जिससे हमारा स्वास्थ्य अच्छा बने तथा हम अपने राष्ट्र के निर्माण में संपूर्ण योगदान दे सकें।

20. समाचार पत्र के लाभ
अथवा
ज्ञान का सशक्त माध्यम—समाचार पत्र

(CBSE 1997, 2000, All India CBSE 1995, 98, 2004)

रूपरेखा : • *समाचार-पत्रों की भूमिका* • *आवश्यकता* • *प्रजातंत्र में महत्व* • *हानियाँ* • *व्यापारिक लाभ*

समाचार-पत्रों की भूमिका : मनुष्य की प्रवृत्ति जिज्ञासु है। वह अपने आसपास के वातावरण के प्रति कभी उपेक्षा का भाव नहीं रख पाया। आदिकाल से ही उसमें अपने आस-पास तथा दूर के समाचारों और घटनाओं को जानने की उत्सुकता रही है। समाचार-पत्रों के विकास के पीछे भी मानव की यही भावना है।

समाचार-पत्रों की आवश्यकता : समाचार-पत्रों से ज्ञान की वृद्धि तो होती ही है, उसे पढ़ने से व्यक्ति का मानसिक स्तर भी बढ़ जाता है। उसे इतिहास, भूगोल, राजनीति तथा देश-विदेश की महत्त्वपूर्ण जानकारी मिलती रहती है। यह ज्ञान प्राप्त करने का सबसे सरल, सस्ता तथा उपयोगी साधन है। समाचार-पत्र में राजनीति, शिक्षा, खेलकूद, चलचित्र, बाजार भाव, सरकारी सूचनाएँ, विभिन्न प्रकार के विज्ञापन तथा देश-विदेश की घटनाओं का समन्वय होता है।

प्रजातंत्र में महत्त्व : प्रजातंत्र में समाचार-पत्रों का महत्त्व और भी बढ़ जाता है। समाचार-पत्र ही सरकार की नीतियों की आलोचना करके राष्ट्र-निर्माण में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जनसाधारण में राष्ट्रीय व सामाजिक चेतना जागृत करने का कार्य भी समाचार-पत्रों का है। समाचार-पत्रों के द्वारा ही हम सामाजिक कुरीतियों को दूर कर सकते हैं। समाचार-पत्र राष्ट्र-निर्माण के महान् कार्य में अपना योगदान देते हैं।

हानियाँ : कुछ समाचार-पत्र संकुचित विचार धाराओं से बँधे होने के कारण सांप्रदायिक विद्वेष, प्रांतीयता, जातीयता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आदि विषैले तत्त्वों का प्रचार करते हैं। इससे राष्ट्रीय एकता को ठेस पहुँचती है। कुछ समाचार-पत्र अफवाहें फैलाकर या समाचारों को नमक-मिर्च लगाकर प्रकाशित करके जनभावना को उत्तेजित करते हैं। इससे हिंसा, हड़तालें, सांप्रदायिक दंगे आदि की घटनायें बढ़ती हैं।

व्यापारिक लाभ : व्यापारियों, उद्योगपतियों और फैक्ट्री मालिकों को इससे अत्यंत लाभ है। इनके द्वारा प्रचार व प्रसार से वह देशव्यापी हो जाता है। इससे हम सोना-चाँदी, खाद्य-सामग्री व शेयरों आदि के विषय में जान सकते हैं।

21. मेरा प्रिय खेल

(All India CBSE 1992C, CBSE 1995, 97)

रूपरेखा : • *मेरा प्रिय खेल* • *आरंभ* • *लोकप्रियता* • *ढंग* • *सुझाव*

मेरा प्रिय खेल : मुझे क्रिकेट का खेल अत्यधिक भाता है। इससे जीवन की नीरसता तो दूर होती ही है, शरीर का भी संपूर्ण व्यायाम होता है।

आरंभ : यह खेल इंग्लैंड की देन है। भारत में अंग्रेज शासकों ने राजाओं व नवाबों को सारा दिन व्यस्त रखने के लिए इस खेल का आरंभ किया। तब से आज तक क्रिकेट का खेल लोकप्रियता की कई सीमाओं को पार कर चुका है।

लोकप्रियता : आज क्रिकेट का खेल श्रीलंका, भारत, पाकिस्तान, इंग्लैंड, न्यूजीलैंड, आस्ट्रेलिया, वेस्टइंडीज, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों में खेला जाता है। विदेशी खेलों में क्रिकेट को जितनी लोकप्रियता प्राप्त है, उतनी किसी अन्य खेल को नहीं। इस खेल में धनी-निर्धन, युवा-वृद्ध, नर-नारी, व्यापारी, राजनीतिज्ञ, विद्यार्थी, अध्यापक सभी रुचि रखते हैं। मैच के दिनों में लोग-बाग रेडियो और टी०वी० के इर्द-गिर्द खड़े होकर स्कोर सुनने को उत्सुक होते हैं।

ढंग : क्रिकेट के लिए बड़ा मैदान चाहिए। इसके बीचों-बीच पिच होती है तथा पिच के दोनों ओर तीन-तीन विकटें गड़ी होती हैं। पिच पर खेल के निर्णय का काफी कुछ भाग निर्भर करता है। क्रिकेट में दो दलों में 11-11 खिलाड़ी होते हैं। दो निर्णायक होते हैं, जिन्हें अंपायर कहा जाता है। टॉस के बाद यह निर्णय लिया जाता है कि कौन सी टीम पहले बल्लेबाजी या गेंदबाजी करेगी।

सुझाव : भारतीय खिलाडियों को चाहिए कि वे टीम भावना के साथ खेलें व दृढ़-निश्चय के साथ मैदान में उतरें। वे यह ध्यान रखें कि उनके धैर्य एवं एकाग्रता की कमी से करोड़ों देशवासियों को बहुत निराशा होती है। इसके विपरीत, उनके उत्तम खेल से पूरे देश का मस्तक गर्व से ऊँचा उठ जाता है। कुछ भी हो भारत में क्रिकेट का भविष्य उज्जवल है।

22. कबड्डी : भारतीय खेल

रूपरेखा : • *भूमिका* • *खेल की विशेषताएँ* • *भारत में कबड्डी* • *उपसंहार*

भूमिका : प्रत्येक खेल का उद्देश्य शरीर को पुष्ट करना होता है। मानसिक उन्नति व्यक्ति की शारीरिक उन्नति पर निर्भर करती है। खेलकूद से शरीर की माँसपेशियों का व्यायाम होता है। भारत में आज अनेक प्रकार के खेलकूदों का प्रचलन है। उनमें अनेक खेल पश्चिम से आए हैं, पर कबड्डी पूर्णतया भारतीय खेल है।

खेल की विशेषताएँ : यह खेल भारत के सर्वथा अनुकूल है। यह बहुत ही सस्ता खेल है। इसमें न तो अधिक सामान चाहिए और न ही लंबा-चौड़ा मैदान। बस, जहाँ जी में आया, मैदान बनाया व खेल आरंभ। कबड्डी के खेल में किसी भी प्रकार के विशेष नाप के मैदानों की आवश्यकता नहीं है। कबड्डी का खेल चुस्ती, फुर्ती व लंबी साँस व शक्ति का खेल है। यह खेल प्रातःकाल अथवा सायंकाल कभी भी खेला जा सकता है। कबड्डी के खेल में खर्चा बिल्कुल नहीं होता है। कबड्डी के खेल के लिए रेतीले अथवा समतल मैदान की अत्यंत आवश्यकता पड़ती है। मैदान के बीचोंबीच एक रेखा खींचकर पाला बना लिया जाता है। इस खेल में वही दल जीतता है जिस दल के खिलाड़ी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अधिक शक्तिशाली होते हैं। यद्यपि कबड्डी के खेल में चोट का कोई खतरा नहीं होता परंतु कभी-कभी चोट लग भी जाती है।

भारत में कबड्डी : भारत के शहरों में कबड्डी का प्राय लोप ही हो गया है। टेनिस, बैडमिंटन, क्रिकेट, हॉकी आदि का बोलबाला है, पर आज भी अधिकांश गाँवों में कबड्डी का खेल अत्यंत लोकप्रिय है। हृष्ट-पुष्ट ग्रामीण बड़े उत्साह तथा उमंग से कबड्डी का खेल खेलते हैं।

उपसंहार : कबड्डी एक ऐसा खेल है जिसमें शरीर को पूरा व्यायाम मिलता है तथा शरीर निरोग बनता है। कबड्डी के खेल में आवश्यक है कि खिलाड़ी खेल-भावना से खेलें व हार या जीत के पश्चात् उसे खुले मन से स्वीकार करें। कोई खिलाड़ी किसी व्यक्तिगत ईर्ष्या या दुर्भावना के कारण किसी भी खिलाड़ी को शारीरिक अथवा मानसिक कष्ट न पहुँचाए। आज इस बात की बहुत आवश्यकता है कि इस खेल का जन-जन में प्रचार हो।

23. स्वास्थ्य और व्यायाम

(All India CBSE 2005)

रूपरेखा : • *बिन स्वास्थ्य जीवन बोझ* • *व्यायाम व स्वास्थ्य* • *व्यायाम के लाभ* • *स्वस्थ समाज का निर्माण* • *उपसंहार*

बिन स्वास्थ्य जीवन बोझ : 'पहला सुख निरोगी काया'—यह कथन अक्षरशः सत्य है क्योंकि जिस व्यक्ति का शरीर रोगी है, उसका जीवन ही निरर्थक है। धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष—जीवन के इन लक्ष्यों को स्वस्थ शरीर द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

व्यायाम व स्वास्थ्य : व्यायाम न करने वाले मनुष्य आलसी तथा अकर्मण्य बन जाते हैं। आलस्य को मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु कहा गया है। आलसी व्यक्ति जीवन के हर क्षेत्र में असफल होते हैं। इससे वे निराशा में डूबे रहते हैं। व्यायाम के अभाव में शरीर बोझ-सा प्रतीत होता है; क्योंकि यह बेडौल होकर तरह-तरह के रोगों को निमंत्रण देने लगता है। 'मोटापा' अपने-आप में एक बीमारी है, जो हृदय रोग, मधुमेह, तनाव तथा रक्त-चाप जैसी अन्य बीमारियों को जन्म देता है।

व्यायाम के लाभ : व्यायाम करने से शरीर में रक्त का संचार बढ़ता है। बुढ़ापा जल्दी आक्रमण नहीं करता। शरीर हल्का, चुस्त व गतिशील रहता है। शरीर में कार्य करने की क्षमता बनी रहती है तथा व्यक्ति कर्मठ बनता है। जो व्यक्ति नियमित रूप से व्यायाम करने वाला होगा, उसका जीवन उतना ही उल्लासपूर्ण तथा सुखी होगा।

स्वस्थ समाज का निर्माण : स्वस्थ व्यक्ति से स्वस्थ समाज व स्वस्थ समाज से स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण होता है। स्वस्थ समाज अन्यायों से लड़ पाता है। ऐसा समाज ही प्रेम व दया का परिचय दे सकता है।

उपसंहार : जीवन की सार्थकता अच्छे स्वास्थ्य में ही निहित है। नियमित व्यायाम शरीर को स्वस्थ रखने वाला एवं पौष्टिक भोजन के समान ही है। विद्यार्थी को विशेष रूप से व्यायाम की आदत डालनी चाहिए। यदि हमें धनधान्य से भरी इस पृथ्वी पर व्याप्त अनेक प्रकार के सुखों का उपभोग करना है तो हमें प्रतिदिन व्यायाम करना चाहिए।

24. कम्प्यूटर का महत्व

(All India CBSE 2000)

रूपरेखा : • *कम्प्यूटर क्या है?* • *कम्प्यूटर के लाभ* • *कम्प्यूटर के उपयोग* • *कम्प्यूटर तकनीक से हानियाँ*

कम्प्यूटर क्या है? कम्प्यूटर ऐसे यांत्रिक मस्तिष्कों का रूपात्मक और समन्वयात्मक योग तथा गुणात्मक घनत्व है, जो तीव्रतम गति से न्यूनतम समय में त्रुटिहीन गणना कर सके। आरम्भ में गणित की जटिलतम गणनाएँ करने के लिए ही कम्प्यूटर का विकास किया गया था।

कम्प्यूटर के लाभ : गत अनेक वर्षों से कम्प्यूटर की चर्चा जोर-शोर से हो रही है। देश में सर्वत्र दफ्तरों, बैंकों,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

व्यावसायिक प्रतिष्ठानों, रेलवे आदि में कम्प्यूटर का उपयोग बहुत जोरों से हो रहा है। गणितीय कार्यो व वैज्ञानिक गणना पद्धतियों में सबसे शुद्ध व सबसे उपयोगी गणना करने वाले यंत्र कम्प्यूटर हैं। कम्प्यूटर जटिल से जटिल समस्याओं का हल कुछेक क्षणों में ही कर देता है। ऐसी जटिल समस्याओं का समाधान पाने में मनुष्य को कई दिन, यहाँ तक कि महीनों, लग जाते हैं।

कम्प्यूटर के उपयोग : आज जीवन के कितने ही क्षेत्रों में कम्प्यूटर का व्यापक उपयोग हो रहा है। प्रकाशन के क्षेत्र में, बैंकों में, सूचना आदान-प्रदान में, वैज्ञानिक अनुसंधान में, आरक्षण में, डिजाइनिंग में, कला-संगीत में, औद्योगिकी में, युद्धों में, चुनावों में व ज्योतिष आदि में कम्प्यूटर खूब प्रयोग किया जा रहा है। इसके साथ परीक्षाफल के निर्माण, अंतरिक्ष यात्रा, मौसम संबंधी जानकारी व चिकित्सा के क्षेत्र में भी कम्प्यूटर महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

कम्प्यूटर तकनीक से हानियाँ : जहाँ कम्प्यूटर से कई लाभ हैं, वहाँ कुछ हानियाँ भी हैं। हर क्षेत्र में कम्प्यूटर मानव श्रम को बेकार कर देगा। इससे बेराजगारी और अधिक फैलेगी। कम्प्यूटर कोड के लीक हो जाने से अमेरिका में करोड़ों डॉलर हेरा-फेरी प्रतिवर्ष हो जाती है। ज्योतिष के क्षेत्र में भी सूचनाएँ सही होने की सम्भावनाएँ नहीं हैं। कम्प्यूटर तो हमारे आदेश का पालन करने वाली मशीन मात्र है।

25. टेलीविजन : वरदान या अभिशाप

(All India CBSE 2005)

रूपरेखा : *• भूमिका • टेलीविजन के लाभ • टेलीविजन की हानियाँ • विवाद का विषय • निष्कर्ष*

भूमिका : आज का युग विज्ञान का युग है। इस विज्ञान ने मानव को अनेक उपहारों से उपकृत किया है। उसने उसे मनोरंजन के अनेक साधन भी दिए हैं। इन सबमें रेडियो, चलचित्र व टीवी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं। टेलीविजन का हिंदी नाम दूरदर्शन है।

टेलीविजन के लाभ : टेलीविजन का मनोरंजन में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान है। इससे संगीत, नाटक, खेलकूद आदि का सीधा प्रसारण किया जाता है। अनेक शिक्षाप्रद नाटकों तथा कार्यक्रमों द्वारा यह जन-जागरण कर सकता है। इसके द्वारा खेती-बाड़ी की नई-नई विधियाँ बताई जा सकती हैं। टेलीविजन के द्वारा हम खेल-कूदों व महत्त्वपूर्ण आयोजनों का सीधा प्रसारण देख सकते हैं।

समुद्र के अंदर खोज करने के लिए भी टी०वी० की मदद ली जाती है। इसी के कारण राजनीतिक नेता अपना संदेश जन-जन तक पहुँचा सकते हैं। बच्चों को देश-विदेश की जानकारी उपलब्ध कराने तथा राष्ट्रीय एकता को पुष्ट करने में इसका प्रमुख योगदान है।

टेलीविजन की हानियाँ : अधिक टी०वी० देखने से आँखों की ज्योति क्षीण हो जाती है। यही नहीं, छात्रों के अध्ययन में भी बाधा पड़ती है। रात में देर तक जागने के कारण प्रात: देर से उठना, विद्यालय में विलंब से पहुँचना आदि इसके ही दुष्परिणाम हैं। टेलीविजन के कारण आज के छात्र-छात्राएँ पढ़ने से भी जी चुराते हैं।

निष्कर्ष : टेलीविजन की इन कमियों को दूर किया जा सकता है। टी०वी० पर अच्छी फिल्में दिखाकर सांप्रदायिक एकता तथा धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ाया जा सकता है। आज के टी०वी० में जो कार्यक्रम दिखाये जाते हैं उनमें अधिकांश उद्देश्य की दृष्टि से घटिया होते हैं। चित्रहार में जो गीत दिखाए जाते हैं, उनमें भी यह ध्यान नहीं रखा जाता कि इसका क्या दुष्प्रभाव पड़ेगा।

26. दैनिक जीवन में विज्ञान

(CBSE 1999)

रूपरेखा : *• जन-मानस में क्रांति • उत्पादन में वृद्धि • चिकित्सा पद्धति में सुधार • मनन का विकास • उदाहरण*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जन-मानस में क्रांति : विज्ञान से जन-मानस में क्रांति आ गई है। यातायात, संचार, विपणन व श्रम के क्षेत्र में अभूतपूर्व सुधार हुआ है। 'वसुधैव कुटुंबकम्' कहावत पूरी तरह चरितार्थ हो चुकी है। आज समस्त विश्व विज्ञान के द्वारा एक सूत्र में बँध चुका है। जो वस्तुएँ कभी राजा सोलोमन को भी नसीब नहीं थीं वे वस्तुएँ आज एक आम ग्रहिणी की रसोई में मिल जाती हैं।

उत्पादन में वृद्धि : रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग द्वारा कृषि में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। बिजली के आविष्कार ने उद्योगों में नई जान डाल दी है। इससे कम कीमत पर उत्पादन में वृद्धि हुई है।

चिकित्सा पद्धति में सुधार : आज विज्ञान द्वारा आयुर्विज्ञान अनुसंधान इतनी तरक्की कर चुका है कि उसके लिए मानव शरीर के किसी भी हिस्से की बीमारी से अवगत होना अत्यंत आसान हो गया है। अल्ट्रासाउंड, एम०आर०आई०, सी०टी० स्कैन जैसी तकनीकों ने मनुष्य के भीतरी कार्यकलापों को समझने में बहुत सहायता की है। विज्ञान द्वारा जीवन के स्तर में सुधार आ चुका है व पोलियो, चेचक, मलेरिया जैसी अनेक बीमारियों के विरुद्ध अभियान छेड़ने में सफलता मिली है।

मनन का विकास : विज्ञान मनुष्य के मनन पर भी प्रभाव डालता है। इससे मनुष्य तथ्यों का महत्व समझता है। इससे मनुष्य रूढ़िवादिता से विमुख होता है व तार्किकता के दायरे में आता है। अंधविश्वास दूर होते हैं तथा वास्तविकता में विश्वास बढ़ता है।

उदाहरण : विज्ञान सत्य की खोज का सबसे सशक्त माध्यम है। क्रिकेट के मैच में अंपायर कैच व रन आउट के सूक्ष्म अंतर को पकड़ने में गलतियाँ कर देते थे। इससे टीम का मनोबल टूट जाता था। परंतु विज्ञान की सहायता ने गलतियाँ अत्यंत कम कर दी हैं। विज्ञान कैंसर की पहचान करके जीवन को बढ़ा देता है।

23. पर्यटन का महत्त्व

रूपरेखा : *• पर्यटन में आनंद • लाभ • उद्योग के रूप में पर्यटन • विभिन्न भारतीय पर्यटन स्थल*

पर्यटन में आनंद : कहते हैं कि जो मजा फकीरी में है वह अमीरी में कहाँ। जीवन का असली आनंद घुमक्कड़ी में है, मस्ती और मौज में है। प्रकृति के सौंदर्य का असली मजा तो उसमें डूब कर ही लिया जा सकता है। किसी ने कहा भी है—

सैर कर दुनिया की गाफ़िल, जिंदगानी फिर कहाँ?
जिंदगानी गर रही भी, नौजवानी फिर कहाँ?

लाभ : पर्यटन करने से आनंद पूर्ति के साथ-साथ जिज्ञासा पूर्ति भी होती है। जिस पर्यटन में आनंद भी हो और जानकारी भी मिलती हो, ऐसे पर्यटन में सुख ही सुख है। पर्यटन दैनिक जीवन की उबासी को दूर करता है। इससे देश-विदेश की, वहाँ के लोगों के रहन-सहन, पहनावे, आदतों आदि की जानकारी मिलती है। हमें पता चलता है कि मानव मूल समस्त विश्व में एक ही है। पूरा देश और विश्व अपना सा प्रतीत होता है। प्रकृति का सजीव चित्रण मन-मस्तिष्क में हो जाता है।

उद्योग के रूप में पर्यटन : आधुनिक समय में पर्यटन एक उद्योग बन चुका है। सरकारें भी अखबारों में विभिन्न प्रकार के विज्ञापन देकर विदेशियों को अपने देश में आने के लिए प्रेरित करती हैं। हमारे देश में जितने भी पर्यटन स्थल हैं, वहाँ विदेशों से लोग आते हैं और काफी खर्च करते हैं। इससे पर्यटन-स्थल के लोगों को आजीविका का साधन मिलता है। हमारे देश में मध्यप्रदेश में सर्वाधिक पर्यटन स्थल हैं।

विभिन्न भारतीय पर्यटन स्थल : भारत में कई पर्यटन स्थल हैं जैसे, हरिद्वार, वैष्णो देवी, काबा, कर्बला, चार धाम, गोवा, मसूरी, शिमला, ताजमहल, अजंता-ऐलोरा की गुफाएँ, लाल किला, खजुराहो आदि।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc. No...................
Dated ....

(स) राष्ट्रीय सामाजिक समस्याएँ

24. भिखारी समस्या

(All India CBSE 2002)

रूपरेखा : • *भिखारी समस्या • कारण • राष्ट्र के लिए शर्म • मुक्ति के उपाय*

भिखारी समस्या : भारत में भिखारी समस्या अत्यंत विकट है। भारत की कुल जनसंख्या का 0.5 प्रतिशत हिस्सा भिखारी है। यह संख्या लाखों में बैठेगी। ये भिखारी बड़े शहरों, छोटे-बड़े कस्बों में जहाँ-तहाँ दिखाई पड़ते हैं। भिखारियों का पूरा रैकेट चलता है व रैकेट को चलाने वाले लाखों करोड़ों कमाते हैं।

कारण : भिखारी समस्या का मुख्य कारण बेरोजगारी है। परंतु वास्तविकता तो यह है कि लोग बेरोजगारी के कारण भिखारी नहीं बनते, वरन् बिना कुछ करे-धरे अच्छी आमदनी होने के कारण भिखारी बनते हैं। कुछ बच्चे जन्मजात भिखारी होते हैं। ऐसे बच्चे अभागे होते हैं जो अपने माता-पिता का अनुसरण करते हुए भिखारी बन जाते हैं। कुछ बच्चे अपहृत करके भी लाए गए होते हैं। उन्हें बचपन से ही इस धंधे में डाल दिया जाता है। कुछ भिखारी गरीबी, भुखमरी व अपंगता के कारण हाथ पसारना सीख जाते हैं।

राष्ट्र के लिए शर्म की बात : भिखारी समस्या राष्ट्र के लिए अभिशाप है, एक कलंक है। इससे देश की मानहानि होती है। भिखारी आने वाले पर्यटकों को भीख को बहुत तंग करते हैं जिससे वे अपने देश में भारत की गलत तस्वीर लेकर जाते हैं।

मुक्ति के उपाय : जिन भिखारियों ने भीख को धंधा बना रखा है उन पर सरकार सख्ती से कानूनी कार्यवाही कर सकती है तथा उन्हें अपना धंधा बदलने के लिए मजबूर कर सकती है। भीख का धंधा चलाने वाले गैंगों को सख्ती से कुचला जा सकता है।

जो भिखारी जन्मजात हैं या बेरोजगारी, अपंगता व भुखमरी के कारण भिखारी बने हैं, सरकार उनके पुनर्जागरण के लिए प्रयास कर सकती है। उनके लिए आजीविका के साधन ढूँढने चाहिए।

29. बेरोजगारी : समस्या व समाधान
अथवा
बेकारी की समस्या

(CBSE 1990, 92; Comptt. 1995; All India CBSE 2001)

रूपरेखा : *बेकारी की समस्या • बेकारी के कारण • बेकारी के प्रभाव • मुक्ति के उपाय*

बेकारी की समस्या : भारत में अनेक समस्याएँ हैं। बेकारी की समस्या उनमें सबसे विकराल समस्या है। स्वतंत्रता के 55 वर्षों के बाद भी इस समस्या का कोई समाधान नहीं हो पाया है। आज हमारे देश में अनेक लोग बेरोजगार हैं, जिन्हें पेट भरने को दो जून की रोटी नसीब नहीं होती।

बेकारी के कारण : बेकारी की समस्या के लिए सरकारी नीतियाँ जिम्मेदार हैं। हमारी शिक्षा नीति ने सफेदपोश वर्ग को जन्म दिया है व सरकार ने कुटीर उद्योगों की तरफ कम ध्यान दिया है। देश की बढ़ती हुई जनसंख्या भी चिंता का विषय है। जनसंख्या की वृद्धि की तुलना में रोजगार के साधन उपलब्ध नहीं कराए जा रहे हैं।

बेकारी के प्रभाव : बेकारी के कारण देश में अनुशासनहीनता, भ्रष्टाचार तथा अराजकता बढ़ रही है। बेकारी की समस्या हमारे समाज की जड़ों को खोखला कर रही हैं। बेकारी के कारण ही आज अनेक युवक चोरी, डाका, हिंसा, उपद्रव व आत्महत्या जैसे कुकृत्यों में संलग्न हो जाते हैं। बेकारी के कारण ही आज युवक अपराध-वृत्ति की ओर प्रवृत्त हो रहे हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुक्ति के उपाय : बेकारी की समस्या इतनी व्यापक है कि इसका समाधान आसान नहीं है। फिर भी सर्वप्रथम शिक्षा का नवीनीकरण बहुत आवश्यक है। शिक्षा को रोजगारपरक बनाया जाना चाहिए। आज की शिक्षा में औद्योगिक शिक्षा को स्थान मिलना चाहिए।

बेकारी की समस्या को हल करने में कुटीर उद्योग महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं। बढ़ती हुई जनसंख्या तथा धनाभाव के कारण बड़े-बड़े उद्योग-धंधों की संख्या में उतनी तेजी से वृद्धि नहीं की जा सकती, पर उनके स्थान पर कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। आज के युवकों को अपने उद्योग खोलने तथा श्रम करने की ओर प्रेरित किया जाना चाहिए।

30. महँगाई की समस्या
अथवा
महँगाई से जूझता हमारा जीवन

(All India CBSE 1988, 2003)

रूपरेखा : *• महँगाई की समस्या • महँगाई के कारण • महँगाई के प्रभाव • मुक्ति के उपाय*

महँगाई की समस्या : विकासशील देश अपनी आर्थिक कठिनाइयों के कारण इस समस्या से प्रभावित हुए हैं। इन देशों में लोग आय में वृद्धि की माँग करते हैं। देश के पास धनाभाव होता है, जिसके कारण आय में वृद्धि होने के साथ-साथ मुद्रास्फीति की दर भी बढ़ जाती है व पैसे की कीमत घटती चली जाती है। इसके कारण अंततः महँगाई ही और बढ़ती है।

महँगाई के कारण : भारत जैसे देश में कृषि को मानसून का जुआ कहा जाता है। अतिवृष्टि या अनावृष्टि से प्रायः फसलें सूख जाती हैं या नष्ट हो जाती हैं। बाढ़ आने से बहुत हानि होती है। इसीलिए वस्तुओं के दाम बढ़ते हैं। महँगाई का एक दूसरा कारण जमाखोरी भी है। बड़े-बड़े व्यापारी अनाज को खरीदकर अपने गोदामों में भर लेते हैं तथा बाजार में इसका अभाव दिखा देते हैं। कीमतें बढ़ने पर ही वे इसे बाहर निकालते हैं। इस प्रकार व्यापारी वर्ग अपने स्वार्थ के लिए महँगाई को बढ़ावा देते हैं।

महँगाई का प्रभाव : महँगाई के प्रभाव साफ देखे जा सकते हैं। लोगों का जीवन-स्तर गिर जाता है। अपराध की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलता है। भ्रष्टाचार का बोलबाला हो जाता है। मुद्रास्फीति के कारण रुपये का मूल्य गिर जाता है। देश में चारों ओर अनिश्चितता तथा अविश्वास का वातावरण पैदा हो जाता है। फिर आपाधापी मच जाती है। भारत में ये दुष्प्रभाव देखे जा सकते हैं। महँगाई के कारण आज हमारे देश में निर्धन व्यक्तियों का जीना दूभर हो गया है। मध्यम वर्ग के लोगों पर तो इसका विशेष कुप्रभाव पड़ता है। फलस्वरूप आज चारों ओर रिश्वत का बोलबाला है।

मुक्ति के उपाय : इस समस्या का समाधान करने के लिए सरकार को वितरण प्रणाली में सुधार लाना चाहिए। भ्रष्टाचार को समाप्त करने की हर संभव कोशिश करनी चाहिए। जनसंख्या को नियंत्रित करने की योजनाएँ अपनानी चाहिएँ।

31. प्रदूषण की समस्या

(CBSE 1991, 93, 94, 98, 2000, 2001, 2003, 2004, 2004 F)

रूपरेखा : *• प्रदूषण की समस्या • प्रदूषण के कारण • प्रदूषण के प्रभाव • रोकथाम के उपाय*

प्रदूषण की समस्या : जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ प्राकृतिक वनों आदि को काट-काटकर उद्योग-धंधों का विस्तार किया जा रहा है। खेती योग्य भूमि पर उद्योग धंधों का निर्माण हो रहा है तथा चिमनियों से निकलता धुँआ, गैस व मिलों से बहने वाले पदार्थों से सारा वातावरण दूषित हो गया है।

प्रदूषण का कारण : उद्योग-धंधों के विस्तार के कारण कल-कारखानों से दूषित जल-मल तथा अन्य विषैले पदार्थ बाहर निकलते रहते हैं। चिमनियों से निकलता धुँआ वायुमंडल को दूषित करता है। इस दूषित वायु में साँस लेने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से फेफड़ों के रोग पनपते हैं। जब तक पेड़-पौधों की अधिकता रही और वनों को नहीं काटा गया तब तक वे वायुमंडल को शुद्ध करते रहे। उनके काटे जाने पर प्रदूषण की समस्या का भयंकर रूप सामने आया है।

प्रदूषण के प्रभाव : वायुमंडल के प्रदूषण से जनसाधारण के स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। गंदी वायु में साँस लेने से न केवल फेफड़ों के रोग पनपते हैं, अपितु रक्त शुद्ध नहीं रह पाता है। इससे चर्म रोग हो जाते हैं और आँखों की ज्योति कम होने लगती है। प्रदूषित पानी पीने से पेट के रोग, बढ़ जाते हैं।

रोकथाम के उपाय : प्रदूषण से बचने के लिए यह आवश्यक है कि प्राकृतिक एवं मानव-निर्मित वातावरण में तालमेल बना रहे। मानव उद्योग-धंधों का विकास अवश्य करें, लेकिन प्राकृतिक संतुलन को खंडित न करें। वनों, पर्वतों, नदियों, उपवनों, जलाशयों आदि को नष्ट न किया जाए। शहरों में प्रदूषण अधिक होता है, अत: उद्योग-धंधों को शहरों से दूर रखा जाए। जिन कारखानों में धुँआ, बदबू, मैल आदि निकलता है, उन्हें बस्तियों से बहुत दूर स्थापित जाए।

32. शहर के जीवन में प्रदूषण

रूपरेखा : • *शहरों की विडंबना* • *प्रदूषण के प्रकार* • *प्रदूषण के प्रभाव* • *रोकथाम के उपाय*

शहरों की विडंबना : रोजाना शहरों में बढ़ती जनसंख्या ने शहरों में जनसंख्या घनत्व को इतना अधिक बढ़ा दिया है कि जीवन दूभर हो गया है। बसों में, सार्वजनिक स्थानों में, सिनेमाहॉलों में, समुदाय भवनों में इतनी भीड़ हो गई कि पूछो मत। बढ़ती जनसंख्या के कारण वाहनों की संख्या में भी निरंतर वृद्धि हुई है। दिल्ली जैसे शहर में यमुना नदी पूर्व की तुलना में अधिक प्रदूषित हो गई है।

प्रदूषण के प्रकार : शहरों में धरती कम व लोग अधिक होने से हर प्रकार का प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। शहरों की सड़कों पर हजारों वाहन अंधा-धुंध धुँआ उगलते हैं। पर्याप्त मात्रा में पेड़ न होने से वायु प्रदूषण अत्यधिक बढ़ गया है। महानगरों में जल के स्रोत भी दूषित हो चुके हैं। नदियाँ नाले बन चुके हैं। शोर का तो कहना ही क्या! वाहनों, कल-कारखानों के शोर ने जीवन बर्बाद करके रख दिया है। कहीं जागरण का शोर है तो कहीं कीर्तन का। तीनों तरह के प्रदूषण—वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण व ध्वनि प्रदूषण—तीनों मिलकर पूरा कहर बरपा रहे हैं।

प्रदूषण के प्रभाव : वायु प्रदूषण से लोगों में फेफड़ों की समस्याएँ जैसे टी०बी०, दमा आदि की समस्याएँ तेजी से उत्पन्न हो रही हैं। जल प्रदूषण से व्यक्ति को पेट की गड़बड़ियाँ व हार्मोन असंतुलन उत्पन्न होते हैं। ध्वनि प्रदूषण से श्रवण शक्ति पर बुरा प्रभाव पड़ता है तथा दिमागी तनाव की स्थिति बन जाती है।

रोकथाम के उपाय : यदि हरियाली को यथासंभव बढ़ावा दिया जाए तो प्रदूषण की रोकथाम काफी सीमा तक हो सकता है। फैक्ट्रियों के प्रदूषित जल और कचरे को संसाधित करने का उचित प्रबंध करना चाहिए।

33. दहेज प्रथा : एक अभिशाप

(A.I. CBSE 1999)

रूपरेखा : • *दहेज का अर्थ* • *विकृत रूप* • *हानियाँ* • *कारण* • *समाधान*

दहेज का अर्थ : विवाह के समय कन्यापक्ष द्वारा स्नेह प्रदर्शन हेतु वरपक्ष को यथाशक्ति दिए गए उपहारों को दहेज कहा जाता है। इन उपहारों को देने का उद्देश्य वधु को अपना नया जीवन चलाने के लिए आवश्यक सामग्री प्रदान करना है।

दहेज का विकृत रूप : दुर्भाग्य से आज दहेज प्रथा एक सामाजिक बुराई बन गई है। आज दहेज प्रेमवश दी जाने वाली वस्तु नहीं वरन् अधिकार पूर्वक माँगने की वृत्ति बन गई है। आज वर पक्ष, वधू पक्ष से जबरन धन व वस्तुएँ माँगते हैं चाहे वधूपक्ष की स्थिति इनके लायक न हो।

हानियाँ : इस प्रथा के कारण मध्यम वर्ग की दशा दयनीय हो गई है। इस प्रथा से धन-लोलुपता को बढ़ावा मिला है, जिससे भारतीय समाज पतन की ओर अग्रसर है। बेमेल विवाह, आत्महत्याएँ, भ्रष्टाचार, तलाक आदि कुप्रथाएँ इसी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रथा के कारण बढ़ रही हैं। इस प्रथा के कारण लोग बेईमानी, चोरबाजारी, तस्करी आदि से धन जमा करते हैं तथा दहेज के रूप में देते हैं।

कारण : इसका कारण आज भी नारी को पुरुषों से हीन समझा जाना है। विडंबना तो यह है इस मामले में नारी ही नारी की शत्रु है। पुरुष दहेज पर इतना ध्यान नहीं देता, पर घर की नारियाँ ही वधू को सताती हैं। उस पर व्यंग्य बाणों की वर्षा करके उसका जीवन मुश्किल कर देती हैं।

समाधान : दहेज के प्रति लड़ाई में कानून के प्रति जागरुकता अति आवश्यक है। दहेज उन्मूलन कानून का काफी असर हुआ है परंतु इसका असर तभी देखने में आएगा जब सभी वधू कानून के प्रति जागरुक हों।

34. सांप्रदायिकता एक अभिशाप

रूपरेखा : *• अर्थ • कारण • देशव्यापी समस्या • घटनाएँ • समाधान*

सांप्रदायिकता का अर्थ : सांप्रदायिकता का अर्थ है अपने धर्म को दूसरों के धर्म से अधिक श्रेष्ठ समझने की भावना। सभी धर्म-संप्रदाय, मत और मजहब मानव-मात्र को ईश्वर आस्था, समस्त प्राणियों के प्रति स्नेहभाव, उपकार, स्वार्थ-त्याग व प्रेमभाव की प्रेरणा देते हैं व मानवता को एक सूत्र में बाँधते हैं।

कारण : सभी मनुष्य परमात्मा की संतान हैं और इसी कारण धर्म संप्रदाय से परे मानवता के एक सूत्र में बँधे हैं। इस मूल बात को कुछ भूलकर धर्म के मिथ्या उन्माद में बहक जाते हैं और एक-दूसरे के मजहब को नीचा दिखाने का प्रयत्न करते हैं। ऐसा वही लोग करते हैं जो धर्म के सच्चे स्वरूप को नहीं समझते हैं। वास्तव में व्यक्ति का अहंकार ही सांप्रदायिकता का कारण है। सभी भारतवासियों को यह समझना चाहिए कि—

मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
हिंदी हैं हम, वतन है, हिंदोस्तां हमारा।

देशव्यापी समस्या : भारत में बाहरी आक्रमणकारियों ने धर्म को आधार बनाकर भारत के जन-जीवन को बर्बाद किया, देवी-देवताओं को अपमानित किया। अंग्रेजों की 'फूट डालो व शासन करो' की नीति ने काफी सीमा तक सांप्रदायिकता को बढ़ावा दिया। यह सांप्रदायिकता आज भी भारतीयों के दिलों-दिमाग में है।

घटनाएँ : सांप्रदायिकता को भड़काने में अंग्रेजों का मुख्य योगदान था। उन्होंने देश के विभिन्न हिस्सों में सांप्रदायिक दंगे करवाए। हिंसा को भड़काया। बँटवारे के समय जो खूनी संघर्ष हुआ उसे देखकर मानवता तो रो ही पड़ी थी। अयोध्या में फिर से राम जन्म-भूमि विवाद को लेकर सांप्रदायिकता की आग भड़क उठी थी।

समाधान : यदि सभी धर्मों के अनुयायी दूसरों के धर्मों का सम्मान करें तो यह समस्या सुलझ सकती है। परंतु इसकी शुरुआत हमें स्वयं से करनी होगी।

35. आतंकवाद की समस्या

(CBSE 2003)

रूपरेखा : *• आतंकवाद की परिभाषा • विश्वव्यापी समस्या • कारण • भारत में आतंकवाद • समाधान*

आतंकवाद की परिभाषा : आतंकवाद सीमित व्यक्तियों द्वारा अपनी स्वार्थपूर्ण आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए बलपूर्वक लोगों को भयभीत कर तथा गैर-कानूनी ढंग से चलाया जाने वाला एक हिंसक आंदोलन है। इसका संचालन वर्तमान शासन-व्यवस्था को उखाड़ फेंकने के लिए बम विस्फोट, विमान अपहरण, आक्रमण आदि आतंकवादी, हिंसात्मक व आपराधिक गतिविधियों द्वारा किया जाता है।

विश्वव्यापी समस्या : आज विश्व के प्रमुख देश जैसे अमेरिका, रूस व भारत आदि आतंकवाद की चपेट में हैं। इन देशों के समाचार-पत्र आतंकवाद की घटनाओं से भरे रहते हैं। रेलगाड़ी में विस्फोट, आतंकवादियों द्वारा लोगों की हत्या, सीमापार से आतंकवादियों की घुसपैठ, आतंकवादियों और सेना की झड़प, आतंकवादियों द्वारा राष्ट्रीय प्रतिष्ठानों पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हमलों की धमकी की सुर्खियों में समाचार-पत्र रंगे रहते हैं। आतंकवाद अब केवल भारत की ही नहीं वरन् विश्वव्यापी समस्या बन चुका है।

आतंकवाद का कारण : यह अतिवाद का दुष्परिणाम है। बेरोजगारी, अशिक्षा, सामाजिक-आर्थिक विषमताएँ, राजनीतिक स्वार्थ, शक्तिशाली देशों द्वारा निर्बल देशों के प्रति उपेक्षा का व्यवहार, क्षेत्रवाद, धर्मांधता, भाषाई मतभेद, भौगोलिक एवं ऐतिहासिक कारण, सांस्कृतिक टकराव, प्रशासन की निष्क्रियता, स्वार्थी मनोवृत्ति आदि आतंकवाद के प्रमुख कारण हैं।

भारत में आतंकवाद : भारत में आतंकवाद के मूल में अलगाववादी और विघटनकारी तत्व सक्रिय हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के तत्काल बाद से ही विदेशी शह से आतंकवादी सक्रिय हो उठे थे। इसका दुष्परिणाम यह है कि आज कश्मीर का एक बहुत बड़ा भाग पाकिस्तानी कबाइलियों व पाक सैनिकों के हाथ में पहुँच गया। आज कश्मीर में आतंकवाद अपनी चरम सीमा में है। वहाँ के मूल निवासी अपने ही देश में शरणार्थी बन गए हैं।

समाधान : मानवीय मूल्यों से रहित आतंकवादी विचारधारा को समाप्त करने के लिए विश्व के समस्त देशों को एकजुट होकर इसे कुचलना होगा। तभी संसार आतंकवाद से मुक्ति पा सकेगा।

36. भ्रष्टाचार की समस्या

(CBSE 2003)

रूपरेखा : *• भूमिका • देशव्यापी समस्या • एक नियमित व्यवस्था • कारण • निवारण*

भूमिका : जब बाड़ ही खेत को खाने लगे तो खेत का भविष्य आखिर होगा क्या। आज कानून के रखवाले ही भ्रष्टाचार में व्याप्त हैं तो हमारे देश का भविष्य अंधकारमय है। नियम व कानून की रक्षा करने वाले अधिकारी रिश्वत लेते हैं और पकड़े जाने पर रिश्वत देकर छूट भी जाते हैं। कैसी विडंबना है।

देशव्यापी समस्या : भ्रष्टाचार पूरे देश की समस्या है। भारत में भ्रष्टाचार सकल घरेलू उत्पाद का 2 प्रतिशत है। एक सर्वे के अनुसार विश्व में भ्रष्टाचार के मामले में भारत का दूसरा स्थान है। यदि किसी राष्ट्र के आला अफसर व नेता ही भ्रष्ट हों तो वहाँ का चपरासी भी भ्रष्ट हो जाता है। न्यायपालिका पर भी भ्रष्टाचार के आरोप लगते रहते हैं। कागजों पर ही पुल, अस्पताल, सड़कें बन जाती हैं। यदि सरकारी कोष से एक रुपया चलता है तो लाभान्वितों तक केवल 10 पैसा ही पहुँच पाता है। बाकी बीच में ही हजम हो जाता है।

एक नियमित व्यवस्था : भ्रष्टाचार का आधुनिकीकरण हो गया है। भ्रष्टाचार को प्रीमियम, डोनेशन, सर्विस-टैक्स आदि का नाम प्रदान कर दिया गया है। किसी शीतल पेय को बोतल से निकालकर गिलास में दो, व दस के बीस रुपये ऐंठ लो। यह अधिक कमाने का सबसे आसान तरीका बन गया है।

कारण : भ्रष्टाचार का वास्तविक कारण मनुष्यों की बदनीयत है। काम से जी चुराने की भावना व बैठे-बिठाए धन कमा लेने की सोच भ्रष्टाचार को बढ़ावा देती है। समाज में नैतिक मूल्यों में ह्रास भी इसका मुख्य कारण है। इसके अलावा परिवार व विद्यालयों से विद्यार्थियों को उचित संस्कार न मिलना भी इसका एक कारण है।

निवारण : प्रशासन को स्वयं ईमानदारी से अपने कर्तव्य का निर्वाह करते हुए इस समस्या पर सख्ती से कदम उठाने होंगे। हर भ्रष्टाचारी को उचित दंड दिया जाना चाहिए। चीन में भ्रष्टाचार की एक सीमा को पार करने के पश्चात् मृत्यु की सजा का भी प्रावधान है। हमें अंतर्मन में झाँक कर देखना चाहिए कि जो धन हम भ्रष्टाचार से प्राप्त करते हैं वह धन उस व्यक्ति के लिए कितना उपयोगी होता जिसकी मजबूरी का लाभ उठाकर हमने वह धन प्राप्त किया।

37. लड़का-लड़की एक समान

(All India CBSE 1997)

रूपरेखा : *• भूमिका • पुरुष प्रधान समाज • स्थिति में परिवर्तन • लड़के को महत्व देने के कारण • निष्कर्ष*

भूमिका : पुरुष व स्त्री एक-दूसरे के पूरक हैं। नर के बिना नारी व नारी के बिना नर का जीवन संभव नहीं। सृष्टि के अस्तित्व के लिए दोनों का होना अनिवार्य है। आज लड़कियाँ किसी भी मामले में लड़कों से कमतर नहीं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुरुष प्रधान समाज : हमारा समाज पुरुष प्रधान है। पुरुष ही नारी की उत्थान के लिए कानून बनाते हैं। अत: यह कैसे संभव है कि वह अपने विरुद्ध नियम बनाये। भारत के गाँवों में स्त्रियों को पिता, पति अथवा पुत्र के अधीन रहना पड़ता है। ग्रामीण स्त्रियाँ प्राय: तंगी का शिकार होती हैं। उनके स्वास्थ्य और शिक्षा के विषय में भी अधिक ध्यान नहीं दिया जाता।

स्थिति में परिवर्तन : आधुनिक नारी की स्थिति में परिवर्तन आ रहा है। वह शिक्षित हो रही है। आर्थिक तौर पर मजबूत हो रही है। पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है। वह अपने अस्तित्व व गौरव को पहचान रही है। अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को वापिस ला रही है। चाहे अंतरिक्ष अन्वेषण हो या वैज्ञानिक उपलब्धियाँ, नारी विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का परिचय दे रही है।

लड़के को महत्त्व देने के कारण : लड़कियों को हमारे पुरुष प्रधान समाज में मात्र 'खर्च' माना जाता है। हमारे समाज में यह अत्यंत प्रचलित है कि वंश तो लड़के से ही चलता है व पुरुष योनि में ही मोक्ष मिल सकता है आदि, आदि। लड़की को 'पराया धन' मानते हुए उसका पालन-पोषण उचित प्रकार से नहीं किया जाता है। समाज में उनका दर्जा दोयम माना जाता है।

निष्कर्ष : वास्तव में नर व नारी एक ही रथ के दो पहिए हैं। यदि एक पहिया सशक्त हो व दूसरा कमजोर, तो सशक्त समाज नहीं बन सकता। सौभाग्य से शिक्षित परिवारों में यह अंतर मिट रहा है।

38. जनसंख्या वृद्धि : एक अभिशाप

(All India CBSE, 1998)

रूपरेखा : *• भूमिका • परिवार-कल्याण के मार्गाविरोध • जनसंख्या की अधिकता का प्रभाव • परिवार नियोजन की आवश्यकता • उपसंहार*

भूमिका : भारत के समक्ष अनेक चुनौतियाँ मुँह फाड़े खड़ी हैं। उनमें से एक जनसंख्या विस्फोट है। भारत में प्रतिवर्ष एक आस्ट्रेलिया की वृद्धि हो जाती है। जितनी तेजी से समस्या बढ़ रही है, उतनी तेजी से भारत समस्याओं में घिरता जा रहा है। एक दिन ऐसा भी आएगा जब भारत अपने ही बोझ तले दब जाएगा।

परिवार-कल्याण के मार्गाविरोध : परिवार-कल्याण के मार्ग में सबसे बड़ी रुकावट बढ़ती जनसंख्या है। आज देश की जनसंख्या 100 करोड़ से भी अधिक हो गई है। जिस देश में जनसंख्या वृद्धि पर रोक नहीं लगाई जाती, उसकी आर्थिक स्थिति अत्यंत कमजोर हो जाती है। उसकी जनसंख्या का अधिकांश भाग गरीबी की रेखा के नीचे जीवनयापन करता है। इससे देश का विकास अवरुद्ध व राष्ट्र के अस्तित्व को भी खतरा होने लगता है।

जनसंख्या की अधिकता का प्रभाव : इससे प्राकृतिक संपदा को हानि पहुँचती है। आवास की कमी होने के कारण जंगलों की कटाई होती है जिससे पर्यावरण असंतुलन बढ़ता है। इससे खेती पर जनसंख्या का दबाव बढ़ता है। माँग में वृद्धि होने से कीमतें बढ़ जाती हैं। जीविका की तलाश में लोग गाँवों से शहरों की तरफ पलायन करने लगते हैं जिससे शहरों में भीड़ अत्यधिक बढ़ जाती है।

परिवार नियोजन की आवश्यकता : छोटा परिवार सच्चे सुख का आधार है। परिवार में अधिक सदस्य होने से न तो उन्हें अच्छी शिक्षा मिल पाती है और न ही अच्छी सुविधाएँ। वेरोजगारी फैलती है जो व्यक्ति को अपराध की ओर जाने को प्रोत्साहन देती है। अत: सभी को परिवार नियोजन के साधन अपनाने चाहिएँ। इससे अपराध वृत्ति में भी कमी आऐगी और जीवन स्तर भी सुधरेगा।

निष्कर्ष : परिवार कल्याण के महत्व को भली-भाँति समझ लेने पर ही देश की प्रगति निर्भर है। परिवार-कल्याण के साथ ही देश-कल्याण भी जुड़ा है। अत: प्रत्येक देशवासी का कर्तव्य है कि परिवार कल्याण की ओर ध्यान दें जिससे देश का कल्याण हो सके।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ह) विद्यार्थी-संबंधी

34. पुस्तकों का महत्त्व

(All India CBSE 2002)

रूपरेखा : *• पुस्तकें हमारी मित्र • प्रेरणा की स्रोत • विकास की सूत्रधार • प्रचार व मनोरंजन का साधन*

हमारी मित्र पुस्तकें : पुस्तकें हमारी घनिष्ठ मित्र हैं। इनकी संगति को सुसंगति माना जाता है। वे सच्चे मित्र के समान हमसे कुछ नहीं चाहती बल्कि इसके विपरीत हमें ज्ञान की गंगा प्रदान करती हैं। कोई भी विकास का इच्छुक व्यक्ति इनकी सहायता से जीवन में उन्नति कर सकता है।

प्रेरणा की स्रोत : पुस्तकें प्रेरणा का अथाह सागर हैं। उन्हें पढ़कर जीवन में कुछ विशिष्ट करने की भावना का विकास होता है। महात्मा गाँधी की महानता के पीछे पुस्तकों का योगदान था। उन्होंने गीता, थोरा व टालस्टॉय जैसी महान पुस्तकें पढ़ी थीं। मुंशी प्रेमचंद के देश-प्रेम पर विभिन्न साहित्य पढ़कर भारत के नवयुवकों ने अपनी जान भारत माता के नाम कर दी थी।

विकास की सूत्रधार : मानव सभ्यता का मूल वास्तव में पुस्तकें हैं। भावी पीढ़ी पिछली पीढ़ी का अनुभव पुस्तकों से ही प्राप्त करती है। पुस्तकें तो वह प्रकाश स्तंभ हैं जो अपने प्रकाश से समस्त विश्व को प्रकाशित करते हैं व अंधेरे में नौका को पार लगाते हैं। महाभारत व रामायण जैसी आदियुगीन पुस्तकों का आज की सभ्यता के विकास में अभूतपूर्व योगदान है।

प्रचार व मनोरंजन का साधन : पुस्तकें किसी भी विचार, भावना या संस्कार को व्यक्त करने का सबसे प्रभावशाली माध्यम हैं। तुलसीदास ने रामचरितमानस के द्वारा व बाल्मिकी ने महाभारत की सहायता से अपने विचारों से आने वाली पीढ़ी को युगों-युगों तक प्रभावित किया।

पुस्तकें मानव के मनोरंजन में अहम् भूमिका निभाती हैं। मनुष्य अपने एकांत क्षणों को पुस्तकों के साथ व्यतीत कर सकता है। पुस्तकों के साथ मनोरंजन से जीवन का एकाकीपन खत्म हो जाता है। पुस्तकें सभी विषयों पर उपलब्ध हैं। मनुष्य अपनी रुचि का कोई भी विषय चुनकर पुस्तकों से मनोरंजन प्राप्त कर सकता है।

40. विद्यार्थी व अनुशासन

रूपरेखा : *• भूमिका • अनुशासन का महत्व • अनुशासनहीनता के कारण • विद्यार्थी के कर्तव्य*

भूमिका : राष्ट्र व समाज के विकास के लिए राष्ट्र के विद्यार्थियों का अनुशासनबद्ध रहना आवश्यक है। विद्यार्थी को देश की आशा, देश का भविष्य, भावी पीढ़ी का कर्णधार आदि माना जाता है। जीवन की चार अवस्थाओं में सबसे पहली तथा सर्वाधिक महत्वपूर्ण अवस्था ब्रह्मचर्य आश्रम है—इसी अवस्था को विद्यार्थी-जीवन कहा गया है।

अनुशासन का महत्त्व : विद्यार्थी के लिए अनुशासन एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। विद्यार्थी के लिए पूर्ण रूप से विद्या ग्रहण न करने की एकमात्र अवस्था उसका 'व्यवस्थित' न होना है। छात्र को अपनी दिनचर्या विशेष व्यवस्था के अनुरूप बनानी चाहिए। इससे विद्यार्थी अपने समस्त समय का उचित उपयोग कर सकेगा व कार्यों को रचनात्मक तरीके से पूर्ण कर सकेगा।

अनुशासनहीनता के कारण : आज चारों ओर अराजकता, उच्छृंखलता, भ्रष्टाचार व स्वार्थ का बोलबाला है। आज का विद्यार्थी भी अनुशासनहीन है। वर्तमान शिक्षा अपने मूल में खरी नहीं उतरती जिसके परिणामस्वरूप विद्यार्थी में अच्छे संस्कार नहीं उपज पाते। आज का विद्यार्थी पश्चिमी जीवन शैली से प्रभावित व चलचित्रों का शौकीन है। वह शरीर से दुर्बल, भारतीयता से दूर व नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों से परे है। इस प्रकार की अनुशासनहीनता के लिए दूषित शिक्षा नीति, राजनीति, चलचित्र आदि उत्तरदायी हैं। कॉलेज व अन्य शिक्षण संस्थायें राजनीति के अड्डे बन गए हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विद्यार्थी के धर्म : विद्यार्थी को चाहिए कि वह विद्यार्थी-जीवन में कठोर नियमों का पालन करें, समय का सदुपयोग करे तथा नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों को जीवन में उतारें। इस काल में संस्कार विद्यार्थी के मानस-पटल पर अंकित हो जाते हैं। वे जीवनपर्यन्त उसका साथ नहीं छोड़ते। आज के विद्यार्थी को संसार की मृग-मरीचिका में न पड़कर अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु कृतसंकल्प होना चाहिए।

41. विद्यार्थी व राजनीति

(CBSE 1992)

रूपरेखा : *• भूमिका • पक्ष में विचार • विपक्ष में विचार • तुलना*

भूमिका : विद्यार्थी का अर्थ है—विद्या अर्जित करने वाला। विद्यार्थी जीवन का असली उद्देश्य ज्ञान प्राप्ति है। दूसरी ओर 'राजनीति' शब्द का अर्थ है—राज या शासन चलाने की नीति। इन दोनों परिभाषाओं में किसी भी स्तर पर समानता नहीं दिखाई देती।

पक्ष में विचार : कुछ विद्वान मानते हैं कि विद्यार्थी को राजनीति में भाग लेना चाहिए। जब किसी भी देश में कोई राजनीतिक चेतना जागृत हुई, उसके मूल में उस देश के तरुण-तरुणियाँ अवश्य रही हैं। वर्तमान जीवन भी राजनीति से अत्यधिक प्रभावित है। नवयुवक ही राष्ट्र की रीढ़ की हड्डी हैं। अत: उन्हें राजनीति में अवश्य भाग लेना चाहिए ताकि वे देश की समस्याओं की जानकारी प्राप्त कर सकें व आगे चलकर देश की बागडोर सँभाल सकें।

विपक्ष में विचार : कुछ बुद्धिजीवी यह भी मानते हैं कि जब छात्र राजनीति में भाग लेते हैं तो वे होश के स्थान पर जोश से काम लेते हैं। छात्रों में विवेक की अपेक्षा आवेग की प्रवृत्ति अधिक होती है। इसलिए वे राजनीतिक दलों के बहकावे में आकर रेलों को रोकने, बसों को जलाने, पुलिस पर पथराव करने, कॉलेज की संपत्ति नष्ट करने, दुकानों को लूटने व आगजनी आदि की घटनाओं में संलग्न देखे जाते हैं। इस प्रकार उनका मन ज्ञान प्राप्ति के मार्ग से हट जाता है व अनुशासनहीनता उनमें घर कर जाती है।

तुलना : दोनों ही विचार अपने-अपने स्थान पर महत्त्वपूर्ण हैं। दोनों में से किसी को भी तथ्यहीन नहीं कहा जा सकता। वर्तमान जीवन में राजनीति की अनिवार्यता को देखते हुए इस तथ्य से मुँह नहीं मोड़ा जा सकता कि विद्यार्थियों को राजनीति से बिल्कुल दूर रखना किसी भी स्थिति में उचित नहीं ठहराया जा सकता।

36. आदर्श विद्यार्थी
अथवा
विद्यार्थी जीवन

(All India CBSE 1992)

रूपरेखा : *• विद्यार्थी जीवन का अर्थ • महत्त्व • गुण • कर्तव्य • सुझाव*

विद्यार्थी जीवन का अर्थ : विद्यार्थी जीवन ब्रह्मचर्य आश्रम की अवस्था है। यह अवस्था विद्या प्राप्त करने का काल है। इस अवस्था में विद्यार्थी संसार की सभी चिंताओं से मुक्त हो विद्याध्ययन में पूरा समय व्यतीत करता है। इसके बाद उसे पूरे जीवन का निर्वाह करना पड़ता है और वह अध्ययन के लिए पर्याप्त समय नहीं निकाल पाता।

महत्त्व : विद्यार्थी जीवन पूरे जीवन का स्वर्णिम समय है। इसी अवस्था में ज्ञान प्राप्त किया जाता है तथा अच्छे संस्कारों को अपनाया जाता है क्योंकि इस अवस्था में बुद्धि तीव्र होती है व मन निर्मल होता है। इस काल में विद्यार्थी के भीतर सीखने की उमंग होती है। यह अवस्था सारे जीवन की बुनियाद है जिस पर पूरे जीवन रूपी इमारत टिकी होती है। जो विद्यार्थी इस काल का सदुपयोग नहीं करते उनके हाथ जीवन भर निराशा ही लगती है।

गुण : आदर्श विद्यार्थी के लिए आदर्श पंच गुण निम्न हैं—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काक चेष्टा, बको ध्यानं, श्वान निद्रस्तथैव च।
अल्पहारी गृहत्यागी, विद्यार्थी पंच लक्षणम्।।

विद्यार्थी को कौवे के समान चेष्टाशील, बगुले के समान ध्यानरत्, कुत्ते के समान कम और सावधान निद्रा लेने वाला, कम भोजन करने वाला एवं घर को त्याग कर विद्या प्राप्त करने वाला होना चाहिए। आदर्श विद्यार्थी परिश्रमी, अनुशासनप्रिय, परोपकारी और सच्चरित्र होता है।

कर्तव्य : आदर्श विद्यार्थी को विद्या के प्रति प्रेम होना चाहिए। उसे गुरु पर अपार श्रद्धा होनी चाहिए क्योंकि गुरु ही शिष्य को सच्चा मार्ग दिखलाता है।

सुझाव : आदर्श विद्यार्थी को अनुशासित होना चाहिए। विद्यार्थी जीवन तैयारी काल है। अत: इस जीवन में कठोर अनुशासन का परिचय देना चाहिए। इसके लिए समय का सदुपयोग करके विद्याएँ सीखनी चाहिएँ।

43. छात्र और शिक्षक

(All India CBSE 1992)

रूपरेखा : *• प्राथमिक पाठशाला, प्रथम शिक्षक • शिक्षकों की भूमिका • शिक्षकों का दायित्व • विद्यार्थी का दायित्व • दायित्वों की समझ*

प्राथमिक पाठशाला, प्रथम शिक्षक : माता-पिता प्रत्येक बच्चे के शिक्षक होते हैं। बच्चा सर्वप्रथम इस संसार में आँखें खोलने के पश्चात् माता-पिता से ही सीखता है। उसके पश्चात् व गुरु से व तदुपरांत समाज से सीखता है। बच्चे में संस्कारों की नींव उसके माता-पिता ही डालते हैं।

शिक्षकों की भूमिका : विद्यालय में शिक्षक माता-पिता समान होते हैं। उनके पास अध्ययनरत् सभी छात्र-छात्राएं उनकी संतान के समान होते हैं। छात्र एक कच्ची गीली मिट्टी के समान होता है जिसे शिक्षक हाथों से सँवार कर उद्देश्यपूर्ण आकृति बनाते हैं। शिक्षक अपने छात्रों को प्रेम करते हैं परंतु आवश्यकता होने पर उन्हें डाँटते व यदा-कदा पीटते भी हैं। परंतु यह सब केवल छात्र की भलाई के लिए ही करते हैं।

शिक्षकों का दायित्व : शिक्षकों का दायित्व केवल पुस्तकों को पढ़ाना ही नहीं है। उन्हें चाहिए कि वह विद्यार्थियों को रचनात्मक तरीके से सिखाएँ। उनका दायित्व बच्चों को संस्कारित करने व शुभ कार्यों को करने की प्रेरणा देने का भी होता है।

छात्र का दायित्व : शिक्षकों के दायित्वों की भाँति छात्र का भी दायित्व है कि वह शिक्षकों की बातों को ध्यानपूर्वक सुने। उसे शिक्षकों को पूर्ण सम्मान देना चाहिए क्योंकि विद्या केवल श्रद्धावान को ही प्राप्त होती है।

दायित्वों की समझ : विद्या-प्राप्ति का कार्य शिक्षक व विद्यार्थी दोनों के तालमेल से ही सम्पन्न होता है। यदि विद्यार्थी में ही सीखने की लगन न हो तो शिक्षक की बातें तो भैंस के सामने बीन बजाने समान हो जाऐगी। यदि छात्र में ही दोष हों तो सतुगुरु चाहकर भी कुछ नहीं कर सकता। इसके विपरीत यदि गुरु ही अयोग्य हो तो गुरु व छात्र की स्थिति इस प्रकार हो जाती है—*गूँगे गायें, बहरे बजायें।*

44. मेरे जीवन का लक्ष्य
अथवा
मेरी सबसे बड़ी आकांक्षा

(CBSE 1992, 93, 95)

रूपरेखा : *• भूमिका • जीवन का लक्ष्य • लक्ष्य चुनने का कारण • कर्तव्य*

भूमिका : आज के वैज्ञानिक युग में मानव अपना उद्देश्य भूल गया है। उसकी इच्छाएँ बढ़ती जा रही हैं परंतु वह कर्तव्यों से विमुख होता जा रहा है। उसकी इच्छाएँ बढ़ती जा रही हैं। कबीर के शब्दों में—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मन सागर मनसा लहरि, बूढ़ै बहे अनेक।
कह कबीर ते बाचिहैं, जिनके हृदय विवेक।।

ऐसी परिस्थितियों में अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित करना कठिन जान पड़ता है।

जीवन का लक्ष्य : आज देश की स्थिति इतनी नाजुक है कि उसे देशवासियों की सेवाओं की नितांत आवश्यकता है। ऐसी स्थिति में मैंने निर्णय लिया है कि मैं व्यस्क होकर एक सच्चा मानव बनने का प्रयास करूँगा व मेरे जीवन का उद्‌देश्य 'राष्ट्रोद्धार' होगा। मुझे इस बात की समझ है कि इस कार्य के लिए मुझे अधिक धन नहीं मिलेगा और न ही कोई ऊँचे पद की मुझे अभिलाषा है। फिर भी मैंने यह निश्चय किया है कि सच्चा मानव बनकर ही मैं देश-सेवा में रत रहूँ।

लक्ष्य चुनने का कारण : मैं भी आदर्श महापुरुषों के समान उनकी ही पंक्ति में खड़ा होना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ मैं भी अपने विकासशील देश को विकसित बनाने में पूरा सहयोग दूँ जिससे हर भारतीय को भारतीय होने पर गर्व हो। एक कहावत है कि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता। परंतु मैं कहता हूँ कि महात्मा गाँधी, सुभाष चंद्र बोस इत्यादि भी तो अकेले ही थे।

कर्तव्य : सभी उद्‌देश्यों की पूर्ति के लिए मेरा कर्तव्य है कि मैं विद्योपार्जन करूँ। अच्छी शिक्षा ही व्यक्ति को सच्चा मान बनाती है। मैंने अपने जीवन को नियमित बनाने की चेष्टा की है। नियमित आहार-विहार व संयम का जीवन बिताने का संकल्प मैंने लिया है। मैंने स्वास्थ्य को ठीक रखने के लिए, नित्य व्यायाम व योग अभ्यास भी डाल लिया है।

45. मेरा आदर्श शिक्षक
(CBSE 2000)

रूपरेखा : *• मेरे आदर्श शिक्षक • सहयोगी • अति स्नेही • विषय-विशेषज्ञ • सादगी व सच्चाई*

मेरे आदर्श शिक्षक : मुझे आज तक जितने भी शिक्षक मिले सभी ने मुझे अत्यंत प्रभावित किया। परंतु एक आदर्श अध्यापक के रूप में जो प्रतिबिंब मेरे मन में आता है वह है—श्री एम०के० त्यागी जी, विज्ञान के शिक्षक।

सहयोगी : श्री एम०के० त्यागी जी का स्वभाव अत्यंत सहयोगात्मक था। वे प्रयोगों को अत्यंत सहयोगात्मक तरीके से समझाते थे। कई बार हमसे प्रयोगों में गलती के उपरांत भी उन्होंने हमारी गलतियों को डाँटकर नहीं वरन् प्रेमपूर्वक सुधारा। वे छात्रों को पास बुलाकर नैतिक प्रेरणाएँ भी देते थे।

अति स्नेही : श्री एम०के० त्यागी जी की विशेषता यही थी कि वे सभी विद्यार्थियों से अत्यंत स्नेह करते थे। वे सभी विद्यार्थियों को अपने हृदय के समीप समझते थे। वे विद्यार्थी की कभी-कभी छोटी-मोटी आर्थिक सहायता भी किया करते थे। आज के युग में ऐसा शिक्षक दुर्लभ है।

विषय विशेषज्ञ : अपने विषय विज्ञान के तो वे विशेषज्ञ थे। विषयों व प्रयोगों को इतने रचनात्मक तरीके से बताते थे कि उनके शब्द आज तक मस्तिष्क में ज्यों के त्यों विद्यमान हैं। उनका पढ़ाने का तरीका अत्यंत सरल व विनम्र था। वे बातचीत की शैली में पढ़ाते थे।

सादगी व सच्चाई : श्री एम०के० त्यागी सादा जीवन जीते थे। वे धोती कुर्ता पहनते थे। विद्यार्थी व अन्य शिक्षक भी उनकी सादगी पर मोहित थे। उनके मुख-मंडल की आभा आज भी हमारा पथ-प्रदर्शन करती है। उनके मन में सच्चाई का वास व कर्म की भावना थी। दुर्भाग्य से वे आज हमारे बीच नहीं हैं। वे मेरे मन में सदैव वास करेंगे।

46. मेरी प्रिय पुस्तक

रूपरेखा : *• भूमिका • मेरी प्रिय पुस्तक • विशेषतायें • उपसंहार*

भूमिका : विद्यार्थी होने के नाते मेरी पुस्तकों में रुचि रही है। उनमें से अनेक पुस्तकें मुझे अच्छी लगती हैं, परंतु जिस पुस्तक ने मुझे सर्वाधिक प्रभावित किया, वह है—गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस। इस पुस्तक ने महात्मा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गाँधी में रामराज्य स्थापित करने की उच्च भावना जगाई। हिंदी साहित्य की इस पुस्तक का लगभग विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। तुलसी ने इस ग्रंथ की रचना लगभग 400 वर्ष पूर्व की थी, किंतु आज भी यह ग्रंथ मानव जाति के लिए प्रकाश-स्तंभ बनकर उसका मार्गदर्शन कर रहा है।

मेरी प्रिय पुस्तक : रामचरितमानस एक ऐसा काव्य है, जिस पर हिंदी का ही नहीं, संपूर्ण मानव-जाति का अधिकार है। यह ग्रंथ धर्म और साहित्य का अपूर्व संगम है। इसी कारण इस ग्रंथ की महत्ता को धार्मिक संत-महात्मा, साहित्यकार तथा शोधकर्त्ता सभी स्वीकारते हैं। यह ग्रंथ अपने कथा और शिल्प में अद्वितीय है।

विशेषतायें : रामचरितमानस में प्रत्येक व्यक्ति को कर्त्तव्यपालन की प्रेरणा दी गई है—पत्नी का पति के प्रति, भाई का भाई के प्रति, पुत्र का माता के प्रति, राजा का प्रजा के प्रति, सेवक का स्वामी के प्रति, देवर का भाभी के प्रति क्या कर्तव्य होना चाहिए, यही इस कृति का मूल संदेश है। तुलसी का यह ग्रंथ वेद-पुराण, निगम-आगम का सार रूप है। फिर भी तुलसी ने अपनी मौलिकता का परिचय देते हुए इस ग्रंथ में ऐसे प्रसंगों को चुन-चुनकर रखा है, जो पाठक को द्रवित कर देते हैं।

उपसंहार : तुलसी की यह रचना आज के भौतिक सुखों में मानव के लिए यह सचेतक तथा पथ-प्रदर्शक है। तुलसी की यह रचना बहुजन हिताय व बहुजन सुखाय थी।

47. पुस्तकालय व उसका सदुपयोग

(All India CBSE 2003)

रूपरेखा : *• भूमिका • आधुनिक पुस्तकालय • उपयोग कैसे हो • नियम • व्यवहार*

भूमिका : पुस्तकालय ज्ञान के मंदिर हैं। पुस्तकालयों में ही उन्नति के रास्ते सुरक्षित हैं। कोई भी जीवन में उन्नति का इच्छुक मनुष्य इनकी सहायता से मनवांछित उन्नति कर सकता है।

आधुनिक पुस्तकालय : आज के पुस्तकालय बहुत ही व्यवस्थित हैं। इनमें लाखों की संख्या में पुस्तकें व्यवस्थित होती हैं। सैंकड़ों समाचार-पत्र व पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं। आजकल इलैक्ट्रॉनिक सुविधायें भी उपलब्ध हैं। ये सारी पुस्तकें विषयानुसार अलग-अलग अलमारियों में रखी जाती हैं।

उपयोग कैसे हो : विद्यार्थियों को आरंभ से ही पुस्तकालय का उपयोग करना सीखना चाहिए। विद्यार्थियों को पुस्तकालय के विभिन्न नियमों को भली-भाँति जान लेना चाहिए व उसे बनाये रखने का दृढ़ संकल्प रखना चाहिए।

नियम : पुस्तकालयों के नियम प्रति पुस्तकालय भिन्न-भिन्न होते हैं। कुछ पुस्तकालय एक मास के लिए पुस्तकों को रखने के लिए देते हैं, कुछ पुस्तकालय कम समय के लिए। लाभान्वितों को चाहिए कि वे पुस्तकों को उचित समय पर जमा करायें। लाभान्वितों को समझना चाहिए कि उस पुस्तक की किसी और को भी आवश्यकता हो सकती है। अच्छा विद्यार्थी पुस्तक को सँभालकर रखता है। पुस्तकें पुस्तकालय की संपत्ति होती हैं, उनपर किसी का व्यक्तिगत अधिकार नहीं होता। प्रत्येक को चाहिए कि उस पर कोई निशान इत्यादि न लगाएँ और न ही पन्नों को फाड़ें।

व्यवहार : पुस्तकालय व मंदिर के वातावरण में कोई अंतर नहीं होता। पुस्तकालय में उसी प्रकार शांति स्थापना रखनी चाहिए जितनी मंदिर में रखी जाती है। तेज बोलने या अधिक बोलने की आदत को पुस्तकालय के बाहर ही छोड़कर आनी चाहिए।

48. यदि मैं पुलिस अधिकारी होता

(CBSE 1996F)

रूपरेखा : *• भूमिका • वर्तमान पुलिस स्थिति • पुलिस अधिकारी बनने की तैयारियाँ • उपसंहार*

भूमिका : मैंने अपने जीवन का लक्ष्य एक पुलिस अधिकारी बनना चुन लिया है। हमारे देश में बाहरी आक्रमणों से बचने के लिए हमारी सेना पर्याप्त है। परंतु हमारे भीतरघाती आस्तीन के साँपों को वश में केवल पुलिस ही कर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सकती है। परंतु आज के समाज में पुलिस की साख गिर रही है। मैं उस साख को ऊँचा उठाने के लिए पुलिस सेवा में भर्ती होना चाहता हूँ।

वर्तमान पुलिस स्थिति : आज के समाज में पुलिस अधिकारियों तथा कर्मचारियों को सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता, क्योंकि पुलिस की साख निरंतर घटती जा रही है। आज लोगों की जान-माल तथा प्रतिष्ठा की रक्षक पुलिस भक्षक बनी हुई है। पुलिस अपनी अकर्मण्यता, रिश्वतखोरी व क्रूरता के लिए प्रसिद्ध है। पुलिस की वर्दी पहनकर स्वयं को ईश्वर समझना आज आम बात हो गई है। आए दिन समाचार प्रकाशित होते रहते हैं कि पुलिस लॉक-अप में यातनाएँ दिए जाने के कारण व्यक्ति की मृत्यु हो गई, पुलिस कर्मियों ने मारपीट की, आदि, आदि।

पुलिस अधिकारी बनने की तैयारियाँ : मैं नित्य लगभग 1800 मीटर की दौड़ का अभ्यास करता हूँ। मैं भारतीय पुलिस सेवा की परीक्षा की तैयारी कर रहा हूँ। बहुत कठिन परिश्रम करना पड़ता है परंतु मुझमें पुलिस अधिकारी बनने का दृढ़ निश्चय है।

उपसंहार : मैं भली-भाँति जानता हूँ कि मेरा यह संकल्प बहुत कठिन है तथा पुलिस अधिकारी बनकर इन आदर्शों का पालन करना और भी टेढ़ी खीर है, परन्तु यदि मन में दृढ़ता हो तो कोई भी कठिन से कठिन काम करना अत्यंत सरल होता है। मैंने भी दृढ़ता से भविष्य के लिए कुछ योजनाएँ बनाई हैं जिन्हें पूरी करने में भगवान मेरी सहायता अवश्य करेंगे।

49. यदि मैं शिक्षा मंत्री होता

(CBSE 2001, 1996F)

रूपरेखा : • *आधुनिक शिक्षा के दोष* • *यदि मैं शिक्षा मंत्री होता* • *सुधार की आवश्यकताएँ* • *उपसंहार*

आधुनिक शिक्षा के दोष : शिक्षा मानव जीवन में सर्वोच्च स्थान रखती है। शिक्षा एक प्रकार का प्रकाश है जो समस्त विश्व को प्रकाशमान बनाता है। हमारी शिक्षा व्यवस्था में अत्यंत सुधार की आवश्यकता है। भारत में वर्तमान शिक्षा-पद्धति का आरंभ अंग्रेजों ने अपने कुत्सित स्वार्थों की पूर्ति के लिए किया था। आज तक यही बोझिल व अव्यवहारिक प्रणाली कायम है। इससे छात्रों का सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता। आज की शिक्षा व्यवस्था छात्रों को नैतिक मूल्यों से विमुख करती है।

यदि मैं शिक्षा मंत्री होता : यदि मैं शिक्षा मंत्री बन जाऊँ तो शिक्षा पद्धति में आवश्यक परिवर्तन करके इसमें सुधार लाने का प्रयत्न करूँगा। मैं पाठ्यक्रमों को पुन: निर्धारित करवाकर एक ऐसी राष्ट्रीय शिक्षा-नीति की घोषणा करूँगा जिसमें संपूर्ण भारतवर्ष में एक ही पाठ्यक्रम हो। मैं प्रयास करूँगा कि गाँव-गाँव में पुस्तकालय तथा स्कूलों का निर्माण किया जाए व अध्यापकों का वेतनमान बढ़ाया जाए जिससे प्रतिभाशाली व्यक्ति भी इस क्षेत्र में आगे आयें।

सुधार की आवश्यकताएँ : मैं शिक्षा-मंत्री बनकर माध्यमिक स्तर तक नि:शुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था करूँगा। मेरा प्रयास होगा कि परीक्षा-प्रणाली में सुधार हो। विषयों की अधिकता के स्थान पर केवल पाँच विषय पढ़ाने पर ही बल दूँगा। शिक्षा में खेलकूद एवं नैतिक शिक्षा को सम्मिलित किया जाए तथा इस पर उचित बल भी दिया जाए।

उपसंहार : मैं कह नहीं सकता कि मुझे यह सौभाग्य कभी प्राप्त होगा भी या नहीं। मेरी तो उस परम पिता से यही प्रार्थना है कि एक बार मुझे इस पद पर आसीन कर दे; फिर मैं दिखा दूँगा कि शिक्षा का उद्देश्य क्या होना चाहिए।

50. यदि मैं अपने विद्यालय की प्रधानाचार्या होती

(CBSE 1993, 96)

रूपरेखा : • *भूमिका* • *शिक्षकों के अवगुणों को दूर करने का प्रयास* • *खेल के सामान का प्रबंधन* • *उपसंहार*

भूमिका : मेरी कल्पना अत्यंत सुखद है कि मैं अपने विद्यालय की प्रधानाचार्या होती। प्रधानाचार्या का पद गौरवपूर्ण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एवं उत्तरदायित्वपूर्ण होता है। मैं प्रधानाचार्या होने पर अपने सभी कर्तव्यों का भली-भाँति पालन करती। हमारे विद्यालय में तो प्रधानाचार्या यदा-कदा ही उपलब्ध होती हैं। परंतु मैं नित्य-प्रति विद्यालय आती। अपने विद्यार्थियों व अध्यापकों की समस्याओं को सुनती व उन्हें दूर करने का प्रयास करती।

शिक्षकों के अवगुणों को दूर करने का प्रयास : सामान्यतः शिक्षक विद्यालयों में केवल 'ड्यूटी' निभाने ही आते है। वे विद्यार्थियों को पढ़ाने नहीं आते। वे निजी ट्यूशन देने के लालच में पड़ गए हैं। उनके दिमाग में शेयर बाजार की उठापटक चलती रहती है। शेयरों में मंदी होने पर वे अपना गुस्सा विद्यार्थियों पर निकालते हैं। हमारे अंग्रेजी के अध्यापक ट्यूशन तो पढ़ाते ही हैं साथ ही साथ बीमा कंपनी के ऐजेंट भी हैं। वे अभिभावकों से मीटिंग करते हैं और बीमा कंपनी की पॉलिसियों को समझाते हुए अपना उल्लू सीधा करते हैं। मैं ऐसे शिक्षकों के खिलाफ सख्त कार्यवाही करती तथा उन्हें अपना धर्म निभाने के लिए मजबूर कर देती।

खेल के सामान का प्रबंधन : हमारे विद्यालय में खेल के सामान की कमी है। प्रधानाचार्या होने पर मैं विद्यार्थियों की आवश्यकता के अनुसार खेल का सामान उपलब्ध करवाती। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी मेरा विद्यालय सर्वोत्तम होता। हमारे विद्यालय में कई प्रतिभाशाली लड़के-लड़कियाँ जिन्हें यदि अवसर दिया जाए तो वे खेलों में विद्यालय के लिए गोल्ड मैडल जीत कर ला सकते हैं।

उपसंहार : यदि मैं प्रधानाचार्या होती तो विद्यालय का रूप ही दूसरा होता। मैं ऐसी सूझ-बूझ का परिचय दूँगी कि देश में ही नहीं विदेशों में भी मेरे विद्यालय का नाम हो जाएगा। मुझे आशा है कि मेरी इस कल्पना को ईश्वर अवश्य ही पूरा करेगा।

51. शिक्षा का गिरता स्तर

(CBSE 2000)

रूपरेखा : • *शिक्षा से तात्पर्य* • *वर्तमान शिक्षा व्यवस्था* • *बौद्धिक श्रम को महत्व* • *दोषी कौन*

शिक्षा से तात्पर्य : शिक्षा से अभिप्राय है विद्यार्थी का संर्वागीण विकास। सर्वांगीण विकास में शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास सम्मिलित हैं। शिक्षा का अंत केवल साक्षरता नहीं है। न ही किसी व्यक्ति का साक्षर होना उसका शिक्षित होने का प्रमाण है।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था : यह हमारा दुर्भाग्य है कि मौजूदा शिक्षा व्यवस्था का स्तर अत्यंत क्षीण हो चुका है। आज के विद्यालय विद्यार्थियों को एक विशेष पाठ्यक्रम की शिक्षा देते हैं। इससे बच्चे का सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता। इसका दुष्परिणाम यह होता है कि विद्यार्थियों में नैतिकता, राष्ट्रप्रेम व आदर-सम्मान आदि की भावना पनप नहीं पाती और वह उच्छृंख्ल हो जाता है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था केवल विद्यार्थियों को धन कमाने की मशीन बनाती है, मनुष्य नहीं।

बौद्धिक श्रम को महत्व : वर्तमान शिक्षा व्यवस्था आलस्य प्रधान है। आज का विद्यार्थी बिना शारीरिक श्रम करे ही अधिकाधिक धन कमाने को महत्व देता है। वह चाहता है अधिक से अधिक पढ़ाई करके किसी ऐसे पद पर पहुँच जायें जहाँ कुछ करना ही न पड़ता हो व ए०सी० में बैठें। आज शारीरिक श्रम करके धन कमाने वाले व्यक्तियों को निम्न कोटि का मजदूर वर्ग समझा जाता है।

दोषी कौन : आज धन ही भगवान हो गया है। बाप बड़ा न भैया, सबसे बड़ा रुपैया। पैसे वाले को शरीफ व अभाव वाले को हरीफ समझा जाने लगा है। जिसके पास संस्कार हैं परंतु धन नहीं, उसकी कोई इज्जत नहीं। जिसके पास धन तो है, परंतु संस्कार नहीं, उसकी इज्जत के झंडे बँधे हुए हैं। आखिर दोष किसका है? यह दोष हमारी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था का है जो विद्यार्थी को पर्याप्त संस्कार नहीं प्रदान कर पाती।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(य) त्यौहार, ऋतु तथा दर्शनीय-स्थल

52. पर्वतीय सौंदर्य

रूपरेखा : • *पर्वतीय सौंदर्य का महत्त्व* • *मानव प्रेम* • *कर्तव्य*

पर्वतीय सौंदर्य का महत्त्व : परमपिता ब्रह्मा ने मानव के लिए अमूल्य निधि प्रकृति का निर्माण किया। परमात्मा ने नदी, गगनचुंबी पेड़, पर्वत, हिमपात और न जाने क्या क्या मानव को प्रदान किया। कोई भी प्राणी प्रकृति द्वारा प्रदत्त पर्वतों के सौंदर्य को झुठला नहीं सकता।

मानव प्रेम : मानव सहज रूप से पर्वतों का प्रेमी है। हमारे देश में सभी पर्वतीय स्थल सालों साल पर्यटकों से भरे रहते हैं। मनुष्य की दृष्टि सर्वप्रथम पर्वतों की ओर ही जाती है। पूर्वजों ने भूतकाल में अनेक पर्वत यात्राएँ कीं। श्री रामचंद्र ने विंध्याचल पर्वत को लाँघा था। श्री कृष्ण ने गोर्वधन पर्वत को उठा लिया था। हमारा हिमालय पर्वत अमूल्य खनिज संपदाओं से भरा हुआ है।

कर्तव्य : समस्त भारतवासियों का कर्तव्य है कि वह प्रकृति की इस अमूल्य निधि को संरक्षित रखे। पर्वतीय सौंदर्य पर पहला खतरा यह है कि वृक्षों को वहाँ अंधाधुंध काटा जा रहा है जिससे मृदा अपरदन की समस्या खड़ी हो गई है और वर्षा भी प्रभावित हुई है। पहाड़ बिना वृक्षों के केशविहीन प्रतीत होते हैं। यद्यपि सरकार ने इस दिशाा में कदम उठाये हैं परंतु वे अपर्याप्त हैं।

दूसरा बड़ा खतरा पर्यावरण प्रदूषण का है। लोकप्रिय पहाड़ियों पर कोल्ड् ड्रिंक के विज्ञापन पेंट द्वारा बने होते हैं। ये पेंट विभिन्न प्रकार के रसायनों से बने होने के कारण पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं। वहाँ पर अब उद्योगों द्वारा भी अतिक्रमण होने लगा है। वाहनों की आवाजाही का शोर बढ़ गया है। हमें मिलकर इस स्थिति को समाप्त करना होगा।

53. मेले का वर्णन

(All India 1993; Delhi 1992, 93F)

अथवा

किसी मेले का आँखों देखा वर्णन

(CBSE 1996C)

रूपरेखा : • *भूमिका* • *उत्तर भारत का प्रसिद्ध मेला (नौचंदी)* • *सजावट* • *महत्त्व* • *उपसंहार*

भूमिका : भारतीय सभ्यता और संस्कृति में मेलों का विशेष महत्त्व है। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक तथा असम से लेकर कच्छ की खाड़ी तक न जाने कितने प्रकार के मेले भारत में लगते हैं। इन सभी मेलों का अपना-अपना महत्त्व है।

उत्तर भारत का प्रसिद्ध मेला (नौचंदी) : नौचंदी का मेला लगभग 10-15 दिन तक चलता है। मेले का प्रवेश द्वार 'शम्भूदास गेट' बहुत सजाया जाता है। पूरे मेले में सफाई तथा विद्युत का प्रकाश देखने योग्य होता है। इस मेले में बहुत से बाजार लगते हैं। इनमें पूरे देश भर से व्यापारी अपना-अपना सामान बेचने आते हैं। दिन में यह मेला फीका-फीका सा रहता है। परंतु दोपहर के बाद यहाँ रवानी आनी आरंभ हो जाती है।

सजावट : जैसे ही सूर्य अस्त होने लगता है, पूरे मेले में रोशनी की जगमगाहट फैल जाती है। भीड़ भी धीरे-धीरे बढ़ने लगती है। रात के 9-10 बजे तक भीड़ बढ़ती ही रहती है और पूरी रात मेला चलता है। लोग तरह-तरह की चीजें खरीदते हैं। मेले में अनेक प्रकार के मनोरंजन जैसे सर्कस, झूले, बड़ा झूला, मौत का कुँआ, कवि दरबार, मुशायरा, नाटक, कव्वाली, रंगा-रंग कार्यक्रम तथा अनेक प्रकार के मनोरंजक खेल-कूदों से इसकी शोभा बढ़ जाती है।

महत्त्व : नौचंदी का मेला उत्तर भारत का विशेष मेला है। इसका अपना विशेष महत्त्व है। यह मेला हिंदू-मुस्लिम एकता का प्रतीक है। यहाँ चंडी देवी का मंदिर है तथा 'बालेमियाँ का मजार' भी। हिंदू तथा मुस्लिम दोनों अपनी-अपनी श्रद्धानुसार पूजा करते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उपसंहार : गत वर्ष मार्च में मैंने यह मेला देखा था। मुझे लगा कि पूरा भारतवर्ष ही इस मेले में आ गया है। भारत की सांस्कृतिक तथा धार्मिक एकता के लिए इस प्रकार के मेलों की नितांत आवश्यकता है।

54. वसंत ऋतु

(CBSE 1995, 98)

रूपरेखा : • *भूमिका* • *बसंत का आगमन* • *ऋतुओं का राजा वसंत* • *उपसंहार*

भूमिका : विषुवत् रेखा के निवासी सदैव गर्मी से झुलसते हुए हाँफ-हाँफ कर जीवित रहते हैं। दूसरी ओर बेचारे ध्रुववासी बर्फ से आच्छादित रात्रियों को ठिठुर-ठिठुर कर काटते हैं। यह हम भारतीयों का सौभाग्य है कि हमें सभी प्रकार की ऋतुओं का आनंद मिलता है। उनमें से वसंत एक है।

वसंत का आगमन : वैसे तो वसंत का आगमन शरद ऋतु की समाप्ति के बाद होली के अवसर पर आरंभ हो जाता है। चैत-बैसाख के दो महीने वसंत ऋतु के अपने हैं। पौराणिक कथा के अनुसार वसंत कामदेव का पुत्र है। रूप के देवता कामदेव के घर पुत्र उत्पत्ति का समाचार पाते ही प्रकृति नृत्य करने लगती है। उसका शरीर रोमांचित हो उठता है। नव किसलय रूप अंग-प्रत्यंग में थिरकन भर जाता है। विविध प्रकार के पुष्प उसके आभूषण होते हैं। हरियाली वस्त्र, शीतल सुगंध समीर उसकी गति और कोयल की कूक उसका स्वर बन जाता है।

ऋतुओं का राजा वसंत : श्री सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कविता के अनुसार,

आए महंत वसंत
मखमल के झूले पड़े हाथी सा टीला
बैठे किंशुक छत्र लगा बाँध पाग पीला
चँवर सदृश डोल रहे सरसों के सर अनंत
आए महंत वसंत।

वसंत तो ऋतुओं का राजा है। यह मठ के महंत के समान है। उत्साह, उल्लास व आनंद इसके अनुचर हैं। प्रकृति वसंत ऋतु में उन सभी संचित निधियों को एक साथ हमारे समक्ष प्रस्तुत कर देती है जो मानवमात्र को मोहक व रमणीक लगते हैं।

उपसंहार : वसंत का सही एहसास तो तभी होगा जब समाज में समानता होगी। समाज से भेदभाव को मिटाकर हम एक-दूसरे को समान समझेंगे, तभी वास्तव में वसंत का आनंद भी मिलेगा। प्रकृति जब किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करती तो मानव भेदभाव क्यों करता है।

45. रेलवे-स्टेशन का दृश्य

रूपरेखा : • *भूमिका* • *प्लेटफार्म पर उपलब्ध सुविधाएँ* • *प्लेटफार्म पर भीड़* • *उपसंहार*

भूमिका : आज के युग में विज्ञान ने अनेक क्षेत्रों में प्रगति की है। आज यातायात के अनेकानेक साधन विज्ञान ने ही हमें उपलब्ध कराये हैं। यातायात के साधनों में रेल सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। आज रेलें विभिन्न नगरों और प्रदेशों को जोड़ रही हैं।

प्लेटफार्म पर उपलब्ध सुविधाएँ : रेल के प्लेटफार्म पर यात्रियों के लिए अनेक प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध रहती हैं। यात्रियों के बैठने के लिए बैंचें, पीने के लिए पानी, शौच आदि के लिए शौचालय, खाने-पीने की वस्तुएँ बेचने के स्टाल, पत्र-पत्रिकाओं के स्टाल, पूछताछ कार्यालय, अमानती सामानघर, विश्रामालय, प्रतीक्षालय, तार-घर, भोजनालय आदि अनेक सुविधाएँ उपलब्ध रहती हैं।

प्लेटफार्म पर भीड़ : रेलवे प्लेटफार्म पर गाड़ियों में चढ़ने-उतरने वालों की भीड़ लगी रहती है। कुछ लोग अपने इष्टमित्रों एवं संबंधियों को गाड़ी पर छोड़ने आते हैं तो कुछ लोग उन्हें लेने। गाड़ी के आते ही प्लेटफार्म का दृश्य देखने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लायक होता है। धक्का-मुक्की, बीड़ी-पान, सिगरेट, चाय-कॉफी तथा अन्य सामान बेचने वालों का शोर, कुलियों का इधर से उधर आना-जाना तथा डिब्बों में चढ़ते-उतरते समय आपा-धापी दिखाई पड़ती है। रेलवे प्लेटफार्म पर लगे ध्वनि विस्तारक यन्त्रों से गाड़ियों के आने-जाने संबंधी सूचनाएँ हिंदी व अंग्रेजी में प्रसारित की जाती हैं ताकि किसी भी यात्री को किसी प्रकार की असुविधा न हो। प्लेटफार्म पर कुछ भिखारी भीख भी माँगते रहते हैं। उन्हें नजरअंदाज किया जाना चाहिए।

उपसंहार : गाड़ी के चले जाने पर भीड़-भाड़ से भरा वही प्लेटफार्म सूना सा लगता है। उस पर केवल वही यात्री रह जाते हैं, जिन्हें अगली गाड़ी से जाना होता है। बड़े-बड़े रेलवे स्टेशनों पर एक ही समय में अनेक गाड़ियाँ आती-जाती रहती हैं।

56. वन महोत्सव
अथवा
वनों से लाभ
अथवा
वन व हमारा पर्यावरण

रूपरेखा : *• भूमिका • महत्व • लाभ • वृक्षों के विनाश से हानि • उपसंहार*

भूमिका : वनस्पति से मानव का नाता बहुत पुराना है। यदि मानव इतिहास का अध्ययन पूर्व ऐतिहासिक काल से करें, तो हम देखेंगे कि पाषाण-युग में जब मानव असभ्य था, उस समय वह जंगली तथा हिंसक वन्य-जीवों से रक्षा के लिए वनों का आश्रय लेता था। पेड़ों के ताजे फल ही उसका भोजन था।

महत्व : भारत की प्राचीन संस्कृति में वृक्षों को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है। कुछ वृक्षों को तो पवित्र समझा जाता है तथा आज भी पीपल, तुलसी, बरगद, आम, केला आदि की पूजा की जाती है। प्राचीन काल में ऋषि-मुनियों के आश्रम वनों में होते थे तथा गुरुकुलों की स्थापना भी वनों के सुरम्य वातावरण में ही की जाती थी।

लाभ : वृक्षों ने मानव-सभ्यता तथा मानवता को सदैव सहायता पहुँचाई है। वृक्ष एक समर्थ सहायक, शिक्षक तथा मित्र रहे हैं। छायादार वृक्ष हमें छाया प्रदान करते हैं। वनों से हमें ईंधन, ईमारती लकड़ी, गोंद, लाख, रबर, औषधियाँ, रंग, फल, फूल आदि प्राप्त होते हैं। वनों से वातावरण शुद्ध होता है। इनसे भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ती है। वनों से वर्षा का भी घनिष्ठ संबंध है।

वृक्षों के विनाश से हानि : यदि वृक्षों का कटाव इसी प्रकार बढ़ता गया तो प्राकृतिक संतुलन बिगड़ जाएगा। वर्षा का वितरण असमान हो जाएगा। यह समस्याएँ जन्म तो ले ही चुकी हैं। वनों के कटने से कार्बन डाईऑक्साइड की मात्रा वातावरण में अधिक हो गई है जिससे ग्रीन हाउस प्रभाव उत्पन्न हो गया है। ग्लोबल वार्मिंग का भूत भी मंडरा रहा है।

उपसंहार : हमें स्वयं अपने अंतर्मन को इस समस्या की तरफ जागृत करना होगा। केवल तभी यह समस्या हल हो सकेगी।

(र) राष्ट्रीय महत्त्व के निबंध

57. देश-प्रेम

(AI CBSE 2000)

रूपरेखा : *• देश-प्रेम • त्याग की भावना • देश के लिए समर्पण • देशप्रेम की अनिवार्यता*

देश-प्रेम : देश-प्रेम से तात्पर्य है—देश से लगाव। मनुष्य जिस देश में जन्म लेता है, जिसकी मिट्टी में खेलकर, पलकर बड़ा होता है, जिसकी मिट्टी से उपजा भोजन खाता है, आखिर उससे द्रोह कैसे कर सकता है? देश के प्रति

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लगाव स्वाभाविक है। जो अपने देश से प्रेम नहीं करता उसका जीवन निरर्थक है। माता-पिता, बहन-भाई, गुरु-शिष्य आदि सभी संबंधों से ऊपर है देश-प्रेम का रिश्ता।

त्याग की भावना : सच्चा देश-प्रेमी अपने देश के लिए अपना तन-मन अर्पित कर देना चाहता है। एक सच्चे देश-प्रेमी को देश से कुछ प्राप्त करने की नहीं अपितु प्रदान करने की इच्छा रखनी चाहिए। हमारे पूर्वजों ने अपना खून बहाकर यह आजादी प्राप्त की है। इस आजादी को अक्षुण्ण रखने के लिए हमें अपना सर्वस्व त्याग करने से पीछे नहीं हटना चाहिए।

देश के लिए समर्पण : देश के प्रति समर्पण की भावना एक नि:स्वार्थ एवं शाश्वत भावना है। इसके सामने विश्व के रत्न-धन, पकवान सब फीके हैं। हमारे देश के जवान अपना परिवार तक देश को समर्पित करके सीमा पर तैनात रहते हैं, तब जाकर हम अपने घरों में चैन से बैठते हैं। भारत ने पिछले युद्धों में अपने न जाने कितने वीरों की कुर्बानियाँ दी हैं। उनका बलिदान कभी व्यर्थ नहीं जा सकता।

देशप्रेम की अनिवार्यता : देश-प्रेम वह सूत्र है जिसमें राष्ट्र के सभी मोती पिरे रहते हैं। समस्त नागरिक देश से जुड़े रहते हैं। हमारे राजनीतिक दलों में चाहे कितनी भी प्रतिद्वंद्विता हो, चाहे कितनी ही गंदी राजनीति करते हों, देश पर संकट आते ही सब एक स्वर में 'भारत माता की जय' गुंजायमान करते हैं।

58. कैसा शासन बिन अनुशासन

अथवा

अनुशासन का महत्त्व

(CBSE 1993, 98, 2004)

रूपरेखा : • भूमिका • अनुशासन का महत्त्व • विद्यार्थी में अनुशासनहीनता • कारण

भूमिका : समस्त प्राणियों में परमपिता ब्रह्मा ने केवल मानव को सोचने, समझने व निष्कर्ष निकालने की क्षमता दी है। प्रकृति अपना समस्त कार्य पूर्ण अनुशासन में करती है। सूर्य अपने समय पर उदय होता है व समय पर अस्त भी होता है। ऋतुएँ अपने समय पर आती जाती हैं। मानव को भी इससे अनुशासन की सीख लेनी चाहिए।

अनुशासन का महत्त्व : अनुशासन चाहे किसी भी क्षेत्र का हो, इसका महत्त्व अपार है। अनुशासन अराजकता, उद्दंडता व हिंसा आदि प्रवृत्तियों को दूर करता है। अनुशासन मानवीय चरित्र में मील का पत्थर साबित होता है। अनुशासन ही जीवन का आधार है। सिकंदर की मुट्ठीभर परंतु अनुशासित सेना ने विश्वविजय पा ली थी। अनुशासन के बिना सेना एक बर्बर भीड़ के समान है।

विद्यार्थी में अनुशासनहीनता : समाज के सभी वर्गों के साथ विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता एक विकट समस्या बन गई है। शिक्षण संस्थानों में तोड़-फोड़, शिक्षकों के साथ दुर्व्यवहार, बसों व भवनों में आग लगा देना आज आम बात है। आज विद्यार्थी दल उपद्रव करने से भी बाज नहीं आते हैं। महानगरों में अनुशासनहीनता अत्यंत बढ़ गई है। यहाँ विद्यार्थी विभिन्न कुसंगति में फँस कर अपना समय नष्ट करते हैं।

कारण : इसका सर्वप्रथम कारण है, माता-पिता का अनुचित लाड़-प्यार। आज बच्चा बचपन में अपने घर में ही उचित संस्कार प्राप्त नहीं कर पाता। फलस्वरूप बड़ा होकर उसमें अनुशासनहीनता घर कर जाती है। दूसरा कारण है—आधुनिक शिक्षा का व्यवहारिक जीवन से अलग होना। बच्चे जो कुछ पढ़ते हैं, सीखते हैं, वास्तविक जीवन का उससे कोई संबंध नहीं होता। बड़ी-बड़ी डिग्रियाँ प्राप्त करके भी वे स्वयं को सामाजिक जीवन के अनुरूप नहीं ढाल पाते।

59. भारतीय मजदूर

(CBSE 1992)

रूपरेखा : • भूमिका • मजदूर की मजबूरी • अथाह परिश्रमी • अशिक्षा व अज्ञान • उत्थान के उपाय

भूमिका : दुख, भूख, अभाव, मजबूरी व नाना प्रकार के कष्ट, ये सभी बातें भारतीय मजदूर का एक चित्र प्रस्तुत करती हैं। भारतीय मजदूर थोड़े में भी गुजारा करके प्रसन्न रहता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मजदूर की मजबूरी : कोई भी मनुष्य अपनी इच्छा से मजदूर नहीं बनना चाहता। भारत की अधिकतर जनसंख्या निरक्षर है। उनके पास जीविका का एकमात्र सहारा मजदूरी है। मजदूरों की संख्या अत्यधिक होने के कारण मजदूरी बहुत सस्ती है। भारतीय मजदूर की इतनी विवशता है कि सारा दिन की मेहनत करने के पश्चात् भी समय पर पर्याप्त भोजन नहीं मिलता, और वह ईश्वर से शिकायत भी नहीं करता।

अथाह परिश्रमी : भरी वर्षा हो या आँधी, गर्मी हो या सर्दी, मजदूर सदैव अपने शरीर को मरुस्थल बनाकर औरों के लिए नखलिस्तान की स्थापना करते हैं। वह भोर होते ही जागता है व रात्रि होने पर अपने घर का दिया जलाता है। वह सारा जीवन अमीरों के महलों को बनाता है परंतु अपने घर की घास-फूँस की छत को ठीक नहीं कर पाता। एक मजदूर के शब्दों में—

मैं मजदूर, मुझे देवों की बस्ती से क्या,
अगणित बार धरा पर मैंने स्वर्ग बनाए।
अपने घर के अंधकार की मुझे न चिंता,
मैंने तो औरों के बुझते दीप जलाए।।

अशिक्षा व अज्ञान : भारतीय मजदूर स्वयं तो निरक्षर है परंतु इतना भी नहीं कर पाता कि अपनी संतति को साक्षर बना सके। सरकार बहुत से कल्याणकारी पग मजदूरों के लिए उठाती है परंतु उन अवसरों का लाभ उन्हें नहीं मिल पाता। उनकी शिक्षा व अवसरों के अभाव में उनकी भावी संतति भी मजदूर बन जाती है।

उत्थान के उपाय : मजदूरों की दशा में सुधार लाने के लिए अनेक मजदूर संगठन प्रयासरत हैं। सरकार ने भी मजदूर न्यायालयों की स्थापना की हुई है जिससे उनके अधिकार उन्हें अवश्य मिलें। परंतु अभी इस क्षेत्र में और कदम उठाए जाने आवश्यक हैं।

60. भारत-पाक संबंध

(CBSE 1992)

रूपरेखा : *भारत-पाक संबंध • पाकिस्तानी नीति • परमाणु नीति • भारत के शांति प्रयास*

भारत-पाक संबंध : जब से पाकिस्तान की उत्पत्ति हुई, उसने भारत को कभी चैन से नहीं बैठने दिया। पाकिस्तान के जन्म का आधार घृणा था। तब से आज तक पाकिस्तान सदैव घृणा के ही बीज बोता रहा है। अंग्रेजों की पाकिस्तान बनाने के पीछे यह नीति रही थी कि पाक व भारत आपस में सदैव लड़ते-झगड़ते रहें व कभी तरक्की न कर सकें। वे अपनी इस चाल में काफी सीमा तक कामयाब भी रहे।

पाकिस्तानी नीति : पाकिस्तान की नीति भारत से प्रत्यक्ष रूप से युद्ध करने की नहीं वरन् आतंकवाद को भड़काकर परोक्ष रूप से युद्ध करने की रही है। क्योंकि प्रत्यक्ष युद्धों में कई बार मुँह की खा चुका है इसलिए वह आतंकवाद को बढ़ावा देकर भारत की अखंडता को क्षुण्ण कर देना चाहता है। परंतु आतंकवाद का भस्मासुर आज स्वयं उसी के लिए अभिशाप बन चुका है।

परमाणु नीति : पाकिस्तानी प्रधानमंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो ने एक बार कहा था कि वे पचास वर्षों तक घास खाएँगे परंतु परमाणु बम जरूर बनाएँगे। इस बात से साफ हो जाता है कि परमाणु बम बनाने के पीछे पाकिस्तान की मंशा क्या है। भारत ने परमाणु बम का विकास अपनी न्यूनतम परमाणु प्रतिरोधक क्षमता सिद्धांत के तहत किया है जबकि पाकिस्तान ने परमाणु बम का विकास भारत पर प्रयोग करने के लिए किया है।

भारत के शांति प्रयास : भारतीय प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी बस लेकर लाहौर गए। यह भारत का अपनी ओर से शांति प्रयास था। परंतु पाकिस्तान ने कारगिल पर अतिक्रमण करके विश्वासघात किया। दोनों देशों के लोग आपस में क्रिकेट खेलने लगे। भारत ने आगरा शिखर वार्ता आरंभ की परंतु पाकिस्तान की कश्मीर विरोधी व आतंकियों को नैतिक समर्थन देने की नीति के चलते वह विफल हो गई।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

61. सैनिक की आत्मकथा

(CBSE 1992)

रूपरेखा : • *स्वःपरिचय* • *सेना में भर्ती* • *प्रशिक्षण* • *अनुभव* • *अनुशासन व कर्तव्यपरायणता*

स्वःपरिचय : मैं भारतीय सेना का एक जवान हूँ। मेरा नाम विश्वजीत सिंह है। मैं पश्चिमी उत्तरप्रदेश के मुजफ्फर नगर जिले के कंडेला नामक ग्राम से संबंधित हूँ। मेरा जन्म 20 जुलाई 1955 को हुआ।

सेना में भर्ती : सबसे पूर्व मेरी प्रारंभिक डॉक्टरी परीक्षा हुई तथा फिर 1800 मीटर की दौड़। मैं सबसे आगे रहा। बाद में मुझे पुनः विस्तृत डॉक्टरी जाँच के लिए भेजा गया। उस जाँच के बाद मेरे अफसर ने मुझसे हाथ मिलाया और मेरे चुने जाने पर बधाई दी।

प्रशिक्षण : तीन दिन बाद मुझे प्रशिक्षण के लिए मेरठ छावनी भेजा गया। हमें नौ मास का कठिन प्रशिक्षण दिया गया। उस प्रशिक्षण की याद आते ही मुझे आज भी सिहरन आ जाती है। कई बार मन करता था कि प्रशिक्षण पूरा किए बिना ही घर भाग चलूँ। प्रशिक्षण की अवधि पूरी होने पर मुझे 10 दिन की छुट्टी दी गई।

अनुभव : सितंबर, 1971 में पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण कर दिया। उस समय मेरी नियुक्ति बरेली छावनी में थी। पाकिस्तान को अपने अमेरिका से प्राप्त पैटन टैंकों का बहुत घमंड था। हमारी ब्रिगेड ने उनके 30 टैंकों का सफाया कर दिया। पाकिस्तानी सेना में भगदड़ मच गई। मुझे युद्ध में एक विशिष्ट सेवा-पदक मिला।

अनुशासन व कर्त्तव्यपरायणता : मेरा जीवन अत्यंत अनुशासित, परिश्रमी, नियमित व खतरों से भरा है। परंतु मैंने अपने देश की सेवा करने का जो बीड़ा उठाया है, जो कर्तव्य निभाने का मैंने प्रण लिया है, उसके सामने यह तो कुछ भी नहीं। समय आने पर मैं अपने कर्तव्य का निर्वाह करते हुए अपने प्राणों की आहुति भी दे सकता हूँ।

62. मेरे सपनों का भारत
अथवा
मेरा भारत महान

(CBSE 1990, 91, 92, 93, 2001)

रूपरेखा : • *मेरी कल्पना* • *सांस्कृतिक विरासत* • *शांतिदूत भारत* • *अध्यात्म का मंदिर*

मेरी कल्पना : अपने इस विराट देश के लिए मेरी एक कल्पना है, जिसे पूरा करने के लिए मैं प्रयत्नशील हूँ। मेरी यही कामना है कि मेरे देश में कोई भूखा न रहे, न कोई रोगी हो, न नग्न और न ही गरीब हो। सभी शिक्षित हों और स्वस्थ तन-मन वाले हों।

सांस्कृतिक विरासत : अपनी सांस्कृतिक विरासत पर भारत को सदा से ही अभिमान रहा है। परंतु जिस सांस्कृतिक समृद्धि वाले में भारत का सपना मैं देख रही हूँ वह और भी भव्य तथा चमत्कारपूर्ण है। मेरे सपने के भारत में प्रत्येक नगर और उपनगर में बड़े-बड़े सांस्कृतिक-केंद्र स्थापित हो चुके होंगे जहाँ विविध प्रकार की सांस्कृतिक गतिविधियाँ सम्पन्न होंगी।

शांतिदूत भारत : भारत आदि काल से ही शांतिदूत रहा है। आज तक के इतिहास में भारत ने कभी किसी दूसरे मुल्क पर हमला नहीं किया। किसी की संप्रभुता व अखंडता के लिए खतरा उत्पन्न नहीं किया। यद्यपि भारत ने इतिहास में अनेकों आक्रमण सहन किए। इतिहास को देखें तो भारत पर इतने बाहरी अतिक्रमण हुए हैं कि आत्मा सिहर उठती है। कुछ पंक्तियाँ इकबाल ने यूँ कही हैं:

यूनान, मिस्र औ रोम, सब मिट गए जहां से
बाकी अभी तलक है, नामोनिशां हमारा
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों से रहा है दुश्मन दौर-ए-जमाना हमारा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्यात्म का मंदिर : सदा से ही भारत की अध्यात्म में आस्था रही है। भारतीयों की मान्यता है कि सच्चा सुख केवल अध्यात्म से मिल सकता है। मैं चाहता हूँ कि अध्यात्म की यह विद्या भारत में फिर से फले-फूले, जिससे दुःखी संसार को शांति से जीने का सहारा मिले।

56. आदर्श नागरिक

(CBSE 1990, 91, 92, 93, 2001)

रूपरेखा : • *आदर्श नागरिक का तात्पर्य* • *कर्तव्य* • *कानूनों का पालक* • *देश के प्रति समर्पण*

आदर्श नागरिक का तात्पर्य : आदर्श नागरिक का अर्थ है ऐसा देशवासी, जिसका व्यवहार व कार्य देश के तथा देशवासियों के हित में हो।

कर्तव्य : एक आदर्श नागरिक का कर्तव्य है कि वह आसपास के वातावरण पर कड़ी नजर रखे। यदि राष्ट्र के विरुद्ध कोई संभावित घटना का उसे अंदेशा हो जाए तो वह तुरंत पुलिस को फोन करे। उसे किसी भी प्रकार की अवांछित हरकतों या उपद्रव में शामिल नहीं होना चाहिए। उसे सांप्रदायिक नहीं होना चाहिए। उसे धार्मिक सौहार्द की भावना की स्थापना करनी चाहिए। एक आदर्श नागरिक को देश की सभी भाषाओं का आदर करना चाहिए।

कानूनों का पालक : एक आदर्श नागरिक वही होता है जो राष्ट्र की एकता व अखंडता को अक्षुण्ण रखे। वह किसी भी प्रकार की कानून विरोधी हरकतों में न पड़े। आदर्श नागरिक सदैव अपने देश के कानून का सम्मान करता है। समय पड़ने पर वह कानून की मदद भी करता है। वह कोई भी कानून विरुद्ध बात को स्वीकार नहीं करता।

देश के प्रति समर्पण : एक आदर्श देशवासी अपने देश पर सर्वस्व न्यौछावर करने की भावना रखता है। वह कभी राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रीय गान व राष्ट्र की भाषाओं का निरादर सहन नहीं करता। वह अपने देश की मिट्टी को संसार की समस्त नेमतों से बढ़कर मानता है। वह देश से कुछ प्राप्त करने की भावना नहीं रखता, इसके विपरीत त्याग की भावना रखता है। भारत माता के साथ अपने रिश्ते को वह बाकी सभी रिश्तों से ऊपर समझता है। हर भारतीय के मन में एक ही बात घूमती है:

सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्तां हमारा
हम बुलबुले हैं इसकी ये गुलिस्तां हमारा।

64. हमारा भारत

(CBSE 2006)

रूपरेखा : • *ऐतिहासिक व सांस्कृतिक महत्त्व* • *विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र* • *विविधता में एकता* • *कृषि प्रधान देश*

ऐतिहासिक व सांस्कृतिक महत्त्व : भारत विश्व का प्राचीनतम देश है। संसार की सभी सभ्यताओं में सर्वप्रथम भारत की सभ्यता ही उन्नति के शिखर पर पहुँची थी। हमारे प्राचीनतम ग्रंथ रामायण आदि अक्षरक्षः सत्य हैं। अमेरिकी संस्था नासा ने इस बात की पुष्टि कर दी है कि श्रीलंका व भारत के बीच समुद्र के अंदर बना सेतुसमुद्रम कई हजार वर्ष पुराना है।

विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र : भारत विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में जाना जाता है। यहाँ जनता द्वारा चुने गए प्रतिनिधि सरकार चलाते हैं। जनता जिसे चाहे सत्ता से हटा सकती है व जिसे चाहे सत्ता में ला सकती है। भारत में कोई वंशवाद नहीं है। सौ करोड़ से अभी अधिक जनता को एक साथ लेकर देश चलाना वाकई एक करिश्मा है। हमारे देश में लोकतंत्र की मिसाल विश्व के सभी देश देते हैं।

विविधता में एकता : जब भारत ने स्वतंत्रता प्राप्त की व पाकिस्तान का गठन हुआ तो समस्त विश्व बिरादरी यह अनुमान लगा रही थी कि आने वाले समय में भारत के कई टुकड़े और होने हैं क्योंकि यहाँ सैंकड़ों धर्म हैं, कई

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रांत हैं जिनकी अपनी अलग संस्कृति है, सोच है, विचारधारा है। भारत में भाषा, रहन-सहन आदि की इतनी विविधताएँ हैं कि भारत सबको साथ लेकर नहीं चल सकता। परंतु हमने सिद्ध कर दिया है कि यहाँ विविधता में भी एकता है।

कृषि प्रधान देश : भारत एक कृषि प्रधान देश है। कृषक देश का दिल हैं। भारत के अधिकांश लोग कृषि पर निर्भर हैं। यहा के किसान सौ करोड़ से अधिक लोगों का पेट भरते हैं। इसके पश्चात् भी सरकार अन्न का निर्यात कर देती है।

65. इक्कीसवीं सदी का भारत

रूपरेखा : • *भूमिका* • *शिक्षा पद्धति में मूलभूत परिवर्तन* • *औद्यौगिक विकास* • *सूचना प्रोद्यौगिकी* • *निष्कर्ष*

भूमिका : हम इक्कीसवीं सदी में प्रवेश कर गए हैं। इक्कीसवीं सदी की कल्पना अत्यंत जिज्ञासापूर्ण एवं आह्लादकारी है जिसमें भारत उपलब्धियों से भरपूर होगा। इस सदी में कम्प्यूटर व सूचना प्रोद्यौगिकी का बोलबाला होगा।

शिक्षा पद्धति में मूलभूत परिवर्तन : भारत सरकार नई शिक्षा नीति लाने की तैयारी जोर-शोर से कर रही है। नवोदय विद्यालयों की स्थापना का फल तो मिलना आरंभ हो ही गया है। इन विद्यालयों से निकलने वाले प्रतिभावान छात्र-छात्रायें देश की कायापलट करने में सक्षम होंगे।

औद्यौगिक विकास : भारत में आद्यौगिक विकास की दर में तेजी आई है। इक्कीसवीं सदी के आगमन के साथ हमारे उद्‌योग पूरी गति के साथ उत्पादन कर सकेंगे। उद्योगों की नई इकाईयाँ स्थापित की जा रही हैं। आशा है कि इक्कीसवीं सदी में उद्योगों का जाल बिछ जाएगा व हम विश्व-बाजार में प्रतिस्पर्धा कर सकेंगे।

सूचना प्रोद्यौगिकी : इक्कीसवीं सदी सूचना-प्रोद्यौगिकी की होगी। इस सदी में कंप्यूटर, ई-मेल, इंटरनेट, फैक्स आदि की सुविधाओं से क्रांति आ जाएगी। भारत विश्व के अन्य देशों से टक्कर लेने में सक्षम हो जाऐगा। हमारे भूतपूर्व राष्ट्रपति ए०पी०जे० अब्दुल कलाम का यह संकल्प पूरा होकर रहेगा कि भारत विकासशील प्रक्रिया से निकलकर विकसित देशों की श्रेणी में आ जाए। उन्हीं के मार्गदर्शन में भारत परमाणु सम्पन्न देश बन सका है।

निष्कर्ष : इक्कीसवीं सदी में भारत एक मजबूत राष्ट्र के रूप में उभरेगा। आतंकवादी गतिविधियाँ समाप्त होंगी तथा देश में एकता व अखंडता की भावना का विकास होगा। वैश्वीकरण के द्वारा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' सत्य सिद्ध हो जाएगा। हमें पूर्ण आशा है कि इक्कीसवीं सदी में भारत एक विकसित राष्ट्र बन जाएगा।

66. भारतीय संस्कृति : अनेकता में एकता

रूपरेखा : • *संस्कृति का तात्पर्य* • *भारतीय संस्कृति* • *सत्य व अहिंसा* • *नृत्य-संगीत का समागम* • *त्यौहार*

संस्कृति का तात्पर्य : संस्कृति सामाजिक संस्कारों का दूसरा नाम है, जिसे कोई समाज विरासत के रूप में प्राप्त करता है। दूसरे शब्दों में संस्कृति एक विशिष्ट जीवन शैली है, एक ऐसी विरासत है जिसके पीछे एक लंबी परंपरा होती है।

भारतीय संस्कृति : भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम एवं महत्त्वपूर्ण संस्कृतियों में से एक है। प्राचीन ग्रंथों के आधार पर इसकी प्राचीनता का अनुमान लगाया जा सकता है। हमारे वेद संसार के प्राचीनतम ग्रंथ हैं। आज जबकि अनेक सभ्यता व संस्कृति महज इतिहास बनकर रह गई हैं, भारतीय संस्कृति आज भी जीवित है व निरंतर विकास के पथ पर आसीन है। 'अनेकता में एकता' भारतीय संस्कृति की विशिष्ट पहचान है।

सत्य व अहिंसा : भारतीय संस्कृति में सत्यता व अहिंसा कूट-कूट कर भरी है। सत्य, अहिंसा, त्याग, दया व परोपकार को भारतीय संस्कृति में अति विशिष्ट स्थान दिया गया है।

नृत्य-संगीत का समागम : भारतीय संस्कृति में नृत्य व संगीत के क्षेत्र में भी समन्वय की भावना विद्यमान है। भरतनाट्‌यम, ओडिसी, कुचिपुड़ी, कथकली, मणिपुरी, कत्थक आदि सभी शैलियों में देवी-देवताओं की आराधना की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भावना लक्षित होती है। कत्थक नृत्यशैली में मुगल दरबार की संस्कृति का बड़ा सुंदर रूप देखने को मिलता है। भारतीय संगीत की विविधता में भी हमें एकता की भावना दृष्टिगोचर होती है।

त्यौहार : भारत पर्वों और उत्सवों का देश है। हमारे पर्व-त्यौहार अनेकता में एकता की संस्कृति को प्रतिबिंबित करते हैं। हमारे त्यौहार सभी के साँझे हैं और इन्हें सभी लोग मिल-जुल कर मनाते हैं। देश के विभिन्न भाषा-समुदायों के बावजूद भारतीय एकता की बात ही अलग है।

67. राष्ट्रीय एकता

(CBSE 1994, 95, 96, 97)

रूपरेखा : *एकता में बल • एकता की आवश्यकता • बाधक तत्व • एकता के विरोधी • एकता कैसे मजबूत हो?*

एकता में बल : दियासलाई की एक तीली को कोई बच्चा भी तोड़ सकता है, परंतु यदि पूरी दियासलाई की तीलियाँ एक हो जाएँ तो उन्हें तोड़ना असंभव प्रतीत हो जाता है। यही ताकत है एकता की। यही एकता का सूत्र है। अलगाव शक्ति को कम करता है जबकि एकता शक्ति को बढ़ाती है।

एकता की आवश्यकता : हम भारत के नागरिक हैं। हम सब मिलकर भारत को एक राष्ट्र बनाते हैं। कोई देश राष्ट्र तभी बनता है जब उसके नागरिकों में एकता हो, समर्पण की भावना हो। भारत जैसे देश में, जो विविधताओं का देश है, एकता और भी अनिवार्य हो जाती है।

बाधक तत्व : भारत में धर्म, प्रांत, भाषा, रहन-सहन, रंग-रूप, खान-पान व आचार-विचार में इतनी असमानता है कि राष्ट्रीय एकता एक अत्यंत दुष्कर कार्य है। कहीं उल्फा, कहीं बोडो तो कहीं कश्मीरी आतंकवादी अलगाववाद को बढ़ावा देने में लगे हैं। कुछ मुट्ठी भर लोग अपने निजी स्वार्थ के लिए हमारी एकता में दरारें डालना चाहते हैं।

एकता के विरोधी : पिछले कई सालों से कुछ देश हमारी इन्हीं विविधताओं का लाभ उठाकर देश को बाँटने का प्रयास कर रहे हैं। वे हिंदू-मुस्लिम-सिक्ख-ईसाई संप्रदायों में मतभेद उत्पन्न करके हमारी एकता को खत्म करके देश को तोड़ना चाहते हैं। कुछ आस्तीन के साँप सफेदपोश उच्च वर्गीय लोग भी इस घृणित कार्य में लिप्त हैं। हमारे देश के नेता भी अपने वोट-बैंक के लिए जातीय व प्रांतीय आधार पर एकता को चोट पहुँचाते हैं।

एकता कैसे मजबूत हो? यदि भेदभाव पैदा करने वाली सभी सामाजिक बुराईयाँ खत्म कर दी जाएँ व स्वार्थी नेताओं को सलाखों के पीछे पहुँचा दिया जाए तो एकता स्वतः ही मजबूत हो जाएगी।

68. यदि मैं प्रधानमंत्री होता

(All India CBSE 1994)

रूपरेखा : *• मेरा स्वप्न • विदेश नीति • सांप्रदायिकता पर रोक • भ्रष्टाचार पर रोक • औद्योगिक विकास*

मेरा स्वप्न : बचपन से ही कुछ पंक्तियाँ मेरी रग-रग में समा गई हैं:

तन समर्पित, मन समर्पित
और यह जीवन समर्पित
चाहता हूँ देश की धरती
तुझे कुछ और भी दूँ।

यदि मेरी प्रधानमंत्री बनने की कल्पना सत्य हो जाए तो मैं देश का कायापलट कर दूँगा। मैं अपनी तीनों सेनाओं को इतना समृद्ध बनाउंगा कि कोई मेरे प्यारे देश की ओर आँख उठाकर नहीं देखेगा।

विदेश नीति : मैं भारत के संबंध सभी राष्ट्रों के साथ अच्छे संबंध बनाने की हर संभव कोशिश करूँगा। मैं विश्व बिरादरी को पाकिस्तान की भारत विरोधी आतंकी नीतियों से अवगत कराता।

सांप्रदायिकता पर रोक : भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है। मैं भारत में सक्रिय सांप्रदायिक ताकतों को कुचलवा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देता। भारत सांप्रदायिक झगड़ों में अपना काफी धन बल खर्च करता है। मैं जातीय, अल्प-संख्यक व बहुसंख्यक दूरियाँ खत्म करता। मैं सभी धर्मों के लोगों को देश की उन्नति के लिए योगदान करने की अपील करता।

भ्रष्टाचार पर रोक : भारत में भ्रष्टाचार का बोलबाला है। यहाँ कालाबाजारी विश्व के अन्य देशों की अपेक्षा अत्यधिक होती है। यहाँ इतने अधिक घोटाले होते हैं कि विश्व रिकॉर्ड बन जाए। मैं सभी भ्रष्टाचारियों को चुन-चुनकर दंड देता। उन्हें उनके पद से विमुक्त करके उनकी संपत्ति को जब्त करवा लेता।

औद्यौगिक विकास : प्रधानमंत्री बनने पर मैं शिक्षा, उद्योग व सूचना प्रौद्यौगिकी के क्षेत्र में क्रांति ला देता। मैं अपने उद्योगों को बढ़ावा देता। मैं सभी बहुराष्ट्रीय कंपनियों को निकाल बाहर करता जिससे स्वदेशी माल की खपत बढ़ती व भारत से बेरोजगारी दूर होती।

69. यदि मैं सैनिक होता

रूपरेखा : • *मेरा स्वप्न* • *मेरी प्रेरणा* • *पाकिस्तानी चुनौती* • *मेरी तैयारियाँ*

मेरा स्वप्न : मैं आरंभ से सेना में भर्ती होना चाहता था।

नहीं चाहना किसी सुरबाला के बालों में गूँथा जाऊँ
नहीं चाहना चढूँ देवों के सिर और भाग्य पर इठलाऊँ
मुझे तोड़ लेना बनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक

जब भी मैं इन पंक्तियों को याद करता हूँ मेरे मन में भी अपने प्रिय देश के लिए कुछ कर गुजरने की भावना जागृत हो जाती है।

मेरी प्रेरणा : मुझे भारतीय सेना में भर्ती होने की प्रेरणा मनोज कुमार अभिनीत फिल्म 'हकीकत' ने दी। इस फिल्म को देखकर मेरी आँखों में अश्रु आ गए। मैंने ठान लिया कि मैं भी अपने देश की सेवा सेना में भर्ती होकर करूँगा व समय आने पर अपने प्राणों की आहुति दे दूँगा।

पाकिस्तानी चुनौती : कुछ वर्ष पूर्व जब पाकिस्तान ने कारगिल पर अतिक्रमण किया, तो मेरा रोम-रोम पाकिस्तानियों को युद्ध में छकाने के लिए मचलने लगा। काश! उस समय मैं सैनिक बनकर कारगिल में होता तो मैं दिखा देता कि भारत का एक-एक सिपाही उसके सौ-सौ पर भारी पड़ता है। मृत्यु तो एक दिन सभी की आनी है, परंतु शान से मरना, देश को जीवन देना वीरगति प्राप्त करना है। जन्म-जन्मांतर के पाप इससे धुल जाते हैं।

मेरी तैयारियाँ : मैंने अपने स्कूल में एन० सी० सी० को चुना है। मैं एन० सी० सी० में कठिन परिश्रम करता हूँ। मैं दो बार कैंप में प्रशिक्षण लेने भी जा चुका हूँ। यदि ईश्वर ने चाहा तो वह दिन दूर नहीं जब मैं सेना में भर्ती होकर अपने देश की सेवा कर रहा हूँगा।

70. गणतंत्र दिवस

(All India 1992C)

रूपरेखा : • *भूमिका* • *ऐतिहासिक महत्त्व* • *समारोह* • *हमारा कर्तव्य*

भूमिका : भारत एक प्राचीनतम देश है। हम अपने देश की वीरता, शौर्य एवं महान परंपराओं की कथाएँ कहते थकते नहीं, मगर यही देश आपसी फूट, ईर्ष्या, कलह व एकता के अभाव के कारण सैकड़ों वर्षों तक गुलामी की जंजीरों में जकड़ा रहा एवं शोषण की चक्की में पिसता रहा। फिर वह दिन आया जब मंगल पाण्डेय की आरंभ की गई चुनौती रंग लाई।

ऐतिहासिक महत्त्व : स्वतंत्रता प्राप्ति के समय हमारे देश के संविधान का निर्माण चल रहा था। उस समय ब्रिटिश कानून ही लागू थे। भारत गणराज्य नहीं था। भारतीय संविधान 26 जनवरी, 1950 से लागू किया गया। उस समय भारत

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE 2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

को गणतंत्र का दर्जा मिला। संविधान लागू करने की तारीख 26 जनवरी चुनने का कारण यह था कि 26 जनवरी 1930 को लाहौर में रावी नदी के तट पर कांग्रेस ने पूर्ण स्वराज्य की घोषणा की थी।

समारोह: यह पर्व राजधानी दिल्ली में धूमधाम से मनाया जाता है। इस दिन भारत के राष्ट्रपति इंडिया गेट पर चौदह घोड़ों वाली बग्गी में बैठकर आते हैं। वहाँ उनका स्वागत प्रधानमंत्री करते हैं। उस मौके पर तीनों सेनाओं के सेनाध्यक्ष उपस्थित होते हैं। ध्वजारोहण के पश्चात् राष्ट्रीय गान होता है। तदुपरांत तीनों सेनाओं की टुकड़ियाँ राष्ट्रपति को सलामी देती हैं। विभिन्न प्रकार की झाँकियाँ निकाली जाती हैं तथा शस्त्र व मिसाइल प्रदर्शन भी होता है जिससे विश्व को भारतीय शक्ति की झलक मिल जाए।

हमारा कर्तव्य : इस दिन हमें शपथ लेनी चाहिए कि हम सांप्रदायिक भेदभाव को त्यागकर अपने राष्ट्र के नवनिर्माण में सहयोग दें। इसकी उन्नति के लिए तन-मन-धन अर्पण कर दें।

71. भारतीय गाँव

रूपरेखा : *• भूमिका • गाँवों का देश भारत • गाँवों की दुर्दशा व कारण • सुधारात्मक प्रयास*

भूमिका : भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ का सत्तर प्रतिशत भाग गाँव है। गाँवों में भारत का हृदय बसता है। भारतीय ग्राम भारत का दर्पण हैं। गाँवों को ईश्वर ने बसाया है इसलिए जो नैसर्गिक सुंदरता गाँवों में देखने को मिलती है वह मानव निर्मित शहरों में कहाँ।

गाँवों का देश भारत : भारत में लगभग छः लाख गाँव हैं। शहरों में रहने वाले लोगों के अन्नदाता ग्रामवासी ही हैं। उन्हीं के द्वारा उपजाऐ गए धन से शहरवासियों का पेट पलता है। भारतीय अर्थव्यवस्था गाँवों पर ही निर्भर है।

गाँवों की दुर्दशा व कारण : एक समय था जब हमारे गाँव अत्यधिक सुखी तथा समृद्ध थे। पर आज स्थिति बदल चुकी है। आज गाँव शहरों के उपनिवेश बन चुके हैं। बेरोजगारी के चलते रोजगार की तलाश में गाँव शहरों में पलायन कर रहे हैं। खेतों में कार्य करने वाले व्यक्तियों की संख्या कम हो गई है। ग्रामवासियों को अशिक्षा व दरिद्रता ने दबोच रखा है। धन्नासेठों द्वारा किसानों का शोषण जारी है। किसान आत्महत्या करने को मजबूर हैं। मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखित उपन्यास 'दो बीघा जमीन' गाँवों के किसान का सटीक वर्णन करता है।

सुधारात्मक प्रयास : स्वतंत्रता के पश्चात् गाँवों की दुर्दशा सुधारने के प्रयासों में तेजी आई है। आज ग्रामीण रोजगार गारंटी योजनाओं व कृषि के नए उपकरणों द्वारा वहाँ जीवन कुछ सरल हुआ है। जमींदार प्रथा का उन्मूलन काफी सीमा तक कर दिया गया है। किसानों को आज साहुकारों से ऋण लेने की आवश्यकता नहीं है। वे अब बैंकों से सस्ती ब्याज दरों पर ऋण ले सकते हैं व आसान किश्तों में चुका भी सकते हैं।

72. भारत की राजधानी दिल्ली

रूपरेखा : *• भूमिका • ऐतिहासिक महत्त्व • चहल-पहल • व्यापारिक केंद्र • शैक्षणिक संस्थान*

भूमिका : भारत की राजधानी दिल्ली को 'भारत का दिल' कहते हैं। आखिर हो भी क्यों नहीं, यह अनेक सभ्यताओं, संस्कृतियों, भाषाओं व जीवन स्तरों का संगम जो है। दिल्ली को लगभग हर भारतीय प्रांत के मनुष्य ने अपने हाथों से बनाया, बसाया है। यहाँ इतनी राष्ट्रीय विविधताएँ हैं कि हम दिल्ली को एक लघु भारत भी कह सकते हैं।

ऐतिहासिक महत्त्व : दिल्ली का इतिहास बहुत ही रोचक है। इतिहास में भी यह विभिन्न शासकों की राजधानी रही है। पांडवों ने भी इंद्रप्रस्थ के नाम से दिल्ली को ही अपनी राजधानी बनाया था। मुगल शासकों व पृथ्वीराज चौहान जैसे शासकों की भी यही राजधानी रही है। दिल्ली में बादशाह शाहजहाँ द्वारा बनाया गया लालकिला, विश्व की सबसे बड़ी जामा मस्जिद, गुलाम वंश के संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा बनाई गई कुतुबमीनार प्रमुख हैं।

चहल-पहल : दिल्ली के बाजारों में चहल-पहल देखते ही बनती है। पर्वों पर तो दिल्ली यौवन पर होती है। यहाँ होली, दिवाली, दशहरा, दुर्गा-पूर्जा आदि खूब उल्लास के साथ मनाए जाते हैं। दिल्ली में महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय पर्व जैसे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गणतंत्र दिवस व स्वतंत्रता दिवस भी मनाए जाते हैं। इन पर्वों पर दिल्ली की रौनक देखने योग्य होती है। एक बार हैदराबाद के निजाम ने मिर्जा गालिब को बुलावा भेजा जिस पर मिर्जा ने कहा—कद्रदान तो वहाँ भी हैं बहुत, पर कौन जाएगा दिल्ली की ये गलियाँ छोड़कर।

व्यापारिक केंद्र : दिल्ली एक प्रमुख व्यापारिक केंद्र है। यहाँ चाँदनी चौक, करोलबाग, दरियागंज, नई सड़क, सदर बाजार आदि कई मुख्य व्यापारिक केंद्र हैं।

शैक्षणिक संस्थान : शिक्षा के क्षेत्र में दिल्ली का जवाब नहीं। दिल्ली विश्वविद्यालय विश्व के अग्रणी विश्वविद्यालयों में से एक गिना जाता है। विभिन्न देशों से छात्र-छात्राएँ यहाँ अध्ययन हेतु आते हैं।

73. भारतीय कृषक

रूपरेखा : • *पालनकर्ता कृषक* • *परिश्रमी* • *बेहाल दशा व कारण* • *दशा में सुधार*

पालनकर्ता कृषक : भगवान विष्णु को सृष्टि का पालन कर्ता माना गया है। यदि कृषक को भी भगवान विष्णु की उपमा दी जाऐ तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। संसार के समस्त जल-स्थलचर प्राणी अपनी जीवन के लिए कृषक पर ही निर्भर हैं।

परिश्रमी : भारतीय कृषक अत्यंत परिश्रमी है। कड़कड़ाती जाड़ों की भयानक रातें हों या शरीर को चीरकर बाहर निकलने वाली सर्द हवायें, किसान हाथ में फावड़ा लिए खेत में बैठा रहता है। चारों ओर के घनीभूत अंधकार, जिसमें निकट के वृक्ष भी प्रेत दिखाई देते हैं; जंगली जानवरों के रोने की आवाज व उल्लुओं की अशुभ ध्वनियों के बावजूद वह अपने खेतों में पानी देता रहता है। जब गर्म हवा शरीर को झुलसा रही होती है वह खेतों में हल चला रहा होता है।

बेहाल दशा व कारण : हमारे कृषकों की दशा अत्यंत शोचनीय है। वे जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं तक से वंचित हैं। साहुकारों के चंगुल में फँसे, जैसे-तैसे अपनी जमीनें बचाने की कोशिश करते हमारे किसान अज्ञानता के शिकार हैं। इसका कारण हमारे किसानों का निरक्षर होना है। बिना शिक्षा के उनका मानसिक विकास नहीं हुआ है। वे कूपमंडूक ही बने हुए हैं। उन्हें तकनीक का ज्ञान नहीं है जिससे वे अपनी कम जमीन पर अधिकाधिक उत्पादन करके लाभ कमा सकें।

दशा में सुधार : अब नई सरकारी नीतियों से हमारे कृषकों के आँसू कुछ थमे हैं व उसके चेहरे पर मुस्कुराहट आई है। जमींदारों व साहुकारों के शोषण से उसे सर्वथा मुक्ति मिल चुकी है। परंतु इतने पर भी हमारा कृषक पूरी तरह खुश नहीं है। अधिक परिश्रम करने पर भी उसे कम पारिश्रमिक मिलता है। इस कारण वह गरीबी रेखा से नीचे जीवन-यापन करता है।

74. राष्ट्रभाषा हिंदी
अथवा
निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल

(CBSE 1998)

रूपरेखा : • *भाषा: विचारों का माध्यम* • *मातृभाषा का महत्त्व* • *विडंबना* • *सुधार कैसे हो*

भाषा : विचारों का माध्यम : भाषा भावों की वाहिका व विचारों का माध्यम होती है। अतः किसी भी जाति अथवा राष्ट्र का भावोत्कर्ष और विचारों की सार्थकता उसकी मातृभाषा से स्पष्ट होती है। मातृभाषा व्यक्ति को व्यक्ति से, जाति को जाति से व राष्ट्र को राष्ट्र से मिलाती है। भाषा द्वारा ही राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोया जा सकता है।

मातृभाषा का महत्त्व : यह निर्विवाद सत्य है कि व्यक्तित्व का समुचित विकास अपनी ही भाषा के पठन-पाठन से होता है। आज देश में जिस प्रकार अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों की बाढ़ आई हुई है तथा जिस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम द्वारा पढ़ाने को अनिवार्य मानने लगा है, उसे देखकर तो ऐसा नहीं लगता कि हिंदी हमारे संविधान द्वारा स्वीकृत हमारे देश की राष्ट्रभाषा है। विदेशी भाषा के माध्यम से पढ़ने के कारण बालक अपने विचारों को पूरी तरह व्यक्त नहीं कर पाता। वह यथेच्छ ज्ञान भी प्राप्त नहीं कर पाता क्योंकि अंग्रेजी में पढ़ी हुई सामग्री को वह ठीक से समझता नहीं, रट लेता है। इसीलिए शिक्षाविद् मानते हैं कि प्रारंभिक कक्षाओं में शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होनी चाहिए।

विडंबना : यह हमारा दुर्भाग्य है कि हमारे देश में हिंदी का महत्त्व दिन-प्रतिदिन कम होता जा रहा है। समाज में जो व्यक्ति फर्राटेदार अंग्रेजी बोलता है उसे शिक्षित माना जाता है परंतु शुद्ध हिंदी बोलने को महत्त्व नहीं दिया जाता। दुनिया के सभी उन्नत देश अपनी मातृभाषा के माध्यम से ही शिक्षा-संचालन करते हैं व इसी प्रकार उन्नत बने हैं।

सुधार कैसे हो : हमें माध्यमिक स्तर तक शिक्षा का माध्यम हिंदी को अनिवार्य बना देना चाहिए। इसका यह अर्थ नहीं है कि हम अन्य भाषाओं को न सीखें। सीखें, परंतु व्यावहारिकता में, न कि उसे अपने व्यक्तित्व में शामिल करें।

75. हिंदी दिवस

(CBSE 1996, 98)

रूपरेखा : *• भूमिका • हिंदी दिवस-हास्यास्पद विषय • हिंदी दिवस मनाने का औचित्य • दुर्भाग्य • उपसंहार*

भूमिका : आज प्रतिवर्ष सरकारी कार्यालयों, बैंकों, सार्वजनिक उपक्रमों आदि में हिंदी-दिवस (14 सितंबर) मनाना फैशन बन गया है। उसमें भाषण देने वाले महानुभाव और राज्य अधिकारी हिंदी को विकसित करने और उसका अधिकाधिक प्रयोग करने का उपदेश तो दे डालते हैं परंतु अनजाने में हिंदी के प्रयोग को निरुत्साहित करते हैं।

हिंदी दिवस—हास्यास्पद विषय : यह एक हास्यास्पद विषय है कि केवल हिंदुस्तान में ही हिंदी दिवस मनाया जाता है। हम हिंदी दिवस को इस प्रकार मनाते हैं जैसे हम अपने पूर्वजों का श्राद्ध मना रहे हों। हम अपने ही देश में अपनी भाषा का प्रयोग नहीं करते। कुछ अंग्रेजी शब्द तो हमारी जिह्वा पर ऐसे जम गए हैं कि वे ही हम हिंदी के शब्द मानने लगे हैं।

हिंदी दिवस मनाने का औचित्य : महात्मा गाँधी ने बहुत सोच-विचार कर हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने की सलाह दी थी। गाँधीजी गुजराती के लिए नहीं लड़े। सुभाषचंद्र बोस, जवाहर लाल नेहरू आज भी दूरदर्शन पर हिंदी में भाषण देते हुए दिखाई देते हैं। बड़े-बड़े नेता हिंदी के पक्ष में बोलकर चले गए किंतु हिंदी की दशा नहीं सुधरी। हमारी हिंदी अमर है। इसका संघर्ष भी अमर रहेगा, यही हिंदी-दिवस मनाने का वास्तव में औचित्य है।

दुर्भाग्य : अंग्रेज चले गए परंतु अपनी अंग्रेजी को हम पर शासन करने के लिए छोड़ गए। वे हिंदी को गरीब व छोटे आदमियों की भाषा मानते थे। दुख है कि यह धारणा आज भी नहीं मिटी है।

उपसंहार : हमें चाहिए कि लाखों-करोड़ों रुपये खर्च करके हिंदी दिवस मनाने की अपेक्षा हम स्वयं इसके प्रयोग पर बल दें। हमें राष्ट्रभाषा के रूप में इसे दृढ़तापूर्वक प्रतिष्ठित करना चाहिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab-Jammu

कुछ अन्य निबंधों की रूपरेखा

1. साहित्य व समाज

1. साहित्य समाज का दर्पण
2. साहित्य समाज का सच्चा इतिहास
3. साहित्य समाज का पथ-प्रदर्शक
4. आजादी के आंदोलन में साहित्य का योगदान
5. गीता के उपदेश जन-जन के कल्याण हेतु
6. साहित्य समाज को दिशा प्रदान करता है, प्रेरणा देता है
7. तुलसी, सूर भारतीय संस्कृति का निर्माण किया
8. साहित्य व समाज का अटूट संबंध

2. अधजल गगरी छलकत जाय *(CBSE 1996, 99)*

1. अधूरा ज्ञान दो-धारी तलवार समान
2. थोथा चना बाजे घना
3. गाँधीजी का उदाहरण—अकेले अंग्रेजो को निकाल बाहर किया
4. सुभाषचंद्र बोस का उदाहरण—अकेले आजाद हिंद फौज लेकर अंग्रेजों से भिड़ गया
5. महाराणा प्रताप का उदाहरण—अकेले ही अकबर से टक्कर ली
6. अकेला जुगनू रात्रि के अंधेरे से लड़ता है
7. दिया रात को दिन में परिवर्तित करने का साहस रखता है
8. मनुष्य के लिए सीख—जहाँ हो, संघर्ष करते रहो

3. आज की भारतीय नारी *(CBSE 1996, 99)*

1. बदलता स्वरूप
2. प्राचीनकाल की नारी पुरुषों के समान अधिकार वाली
3. ईश्वर के सभी रूपों में नारी की महिमा
4. आक्रमणकारियों के भय के कारण पर्दा प्रथा
5. बाहरी जीवन से संपर्क टूटा
6. आधुनिक नारी, पुरुष की दासी नहीं सहयोगिनी
7. आज नारी चाहरदीवार छोड़ हर दिशा में पुरुष के साथ
8. दहेज व शारीरिक दुर्बलता, पग-पग पर काँटे
9. आर्थिक रूप से स्वतंत्र
10. सम्मान में वृद्धि

4. भारत का भविष्य

1. भारत का अर्थ—भा + रत—भास्वरता में रत, तेज में लीन, ज्ञान और शक्ति की साधना में लीन
2. प्राचीन काल में सोने की चिड़िया
3. भारत की चकाचौंध के कारण इस पर आक्रमण
4. सौभाग्य से आज भारत उदय
5. औद्यौगिक क्रांति का आरंभ
6. विश्व का सबसे बड़ा बाजार
7. विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र
8. इक्कीसवीं सदी का भारत
9. तकनीक में भारत के कदम आगे की ओर
10. शक्तिशाली भारत, आक्रमणों का मुँहतोड़ जवाब देने में सक्षम
11. बाधाएँ—भ्रष्टाचार, महँगाई, गरीबी, साधनहीनता, कर्ज, विदेशी दबाव, परंतु जागरुक
12. भारत पुन: विश्वगुरु बनेगा

5. यदि मैं शिक्षामंत्री होता

1. काल्पनिकता का अपना ही आनंद है
2. यदि मैं शिक्षा मंत्री होता तो शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण क्रांति का आरंभ
3. शिक्षा के ढाँचे में परिवर्तन
4. हाई-टेक स्कूल व कॉलिज
5. माध्यमिक स्तर तक शिक्षा का माध्यम हिंदी
6. अध्यापकों से अच्छा पढ़ाने की अपील
7. खेल-कूद व सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अच्छे प्रदर्शन पर जोर
8. नकल को पूरी तरह से रोकना
9. विभिन्न अलग प्रकार की प्रतियोगिताओं व पुरस्कारों की घोषणा करना
10. मेधावी छात्रों के लिए छात्रवृत्ति की योजना

6. वर्षा का एक दिन *(CBSE 1996, 99)*

1. वर्षा का एक दिन, सबके लिए मनमोहक
2. किसी के लिए लाभकारी, किसी के लिए मनमोहक
3. भीषण गर्मी के बाद वर्षा अति मनमोहक
4. खुशी का माहौल—किसानों के लिए, आम व्यक्ति के लिए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

5. मजदूरों का काम बंद
6. रास्तों पर पानी जमा, ट्रैफिक रुका, स्कूटरें पानी में फँसी
7. एक ट्रक सब पर कीचड़ उछालता हुआ
8. सड़कों पर रंग-बिरंगी छतरियाँ
9. उपसंहार

7. साहित्य का उद्देश्य

1. अर्थ—कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध आदि भावनात्मक साहित्य
2. उद्देश्य—भावनाओं से परिचय कराना, संस्कृति से साक्षात्कार, सामाजिक बुराइयों पर कुठाराघात
3. आदर्शों की स्थापना—लोगों को व्यवहार का ज्ञान देना, बुरे लोगों को हकीकत का आइना दिखाना
4. लोगों को सन्मार्ग पर लाना, स्वस्थ मनोरंजन करना
5. अनुभूतियों को समझने-परखने का अवसर, बुद्धि को विकसित करना
6. आंदोलन को फैलाने का प्रभावशाली साधन

8. नारी-शिक्षा का महत्त्व

1. नारी शिक्षा का महत्त्व
2. बिन शिक्षा नारी अधूरी, अविकसित, गँवार, असभ्य, व जीवन के गहन आनंद से वंचित
3. नारी की शिक्षा—आज की अत्यंत आवश्यकता, हर घर में विश्वविद्यालयों की उत्पत्ति हो सकती है
4. समाज को सभ्य बनाने में नारी की भूमिका
5. पत्नी के रूप में नारी का शिक्षित होना आवश्यक
6. नारी को शिक्षा से वंचित रखने वाले लोग मूर्ख व कुटिल
7. नारी को अज्ञान के अँधेरे में रख अपने घर में प्रकाश संभव नहीं
8. नारी गुणों की खान, परिवार की शान व जीवन में तालमेल बैठाने वाली

9. अस्पृश्यता

1. अस्पृश्यता का अर्थ, समाज पर अभिशाप
2. अस्पृश्यता अर्थात् छुआछूत का उद्भव—समाज का जातियों में विभाजन
3. सवर्ण जातियों द्वारा निचली जातियों को परेशान किया जाना
4. मध्यकाल में मुसलमानों के आक्रमण, हिंदू समाज ने जातीय सुरक्षा के लिए पवित्रता का कवच अपनाया
5. अछूतों पर अमानवीय अत्याचार
6. छुआछूत का विरोध—सभी संतों, महात्माओं द्वारा
7. सुधारवादी आंदोलन—गाँधीजी द्वारा, राजा राममोहन राय द्वारा। अछूतों के लिए 'हरिजन' शब्द। अछूतों की बस्ती में गाँधीजी का रहना
8. नौकरियों में वरीयता, छुआछूत (रोकथाम) कानून
9. चेतना की आवश्यकता, समाज पर कलंक व मानवता पर अपराध
10. उपसंहार

10. भारत की वर्तमान समस्याएँ *(CBSE 1993)*

1. प्रत्येक युग में कोई न कोई समस्याएँ
2. भीषण जनसंख्या, महागरीबी, भ्रष्टाचार, सांप्रदायिकता, जातिवाद, प्रांतवाद आदि
3. हिंदी का औचित्य
4. देशभक्ति का अभाव
5. आरक्षण, अनपढ़ता, पिछड़ापन, महँगाई आदि का दंश
6. उद्योगों का अभाव
7. बढ़ता कर्ज, योजनाओं का अभाव
8. स्थिर सरकार का न होना
9. सामाजिक समस्याएँ—बाल मजदूरी, अनुशासनहीनता व दहेज प्रथा आदि
10. गंदी राजनीति

10. मेरे सपनों का भारत *(CBSE 1992)*

1. मेरा सपना—भारत उदय, भारत विश्व का चमकता सितारा बने
2. खोया गौरव वापस लौटे, पुनः विश्व-गुरु की उपाधि से नवाजा जाए
3. ज्ञान, कला व संस्कृति में सबसे ऊँचा बने
4. युद्ध कला में अग्रणी बने, विश्व की अग्रणी सेनाओं में से एक बने
5. शांति का अग्रदूत बने
6. गुट-निरपेक्ष आंदोलन की अगुवाई करे
7. विश्व में शांति कायम करने की सच्ची कोशिश करे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

8. गरीबी उन्मूलन, भ्रष्टाचारियों को कड़ा दंड, रोजगार व शिक्षा के स्तर में बढ़ोतरी हो
9. निरक्षरता उन्मूलन व सभी प्रकार की सामाजिक बुराइयों का उन्मूलन

12. किसी प्रदर्शनी का आँखों देखा वर्णन *(CBSE 1999)*

1. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला, दिल्ली के प्रगति मैदान में आयोजित, 14 नवंबर से 30 नवंबर, खुशनुमा वातावरण।
2. मुख्य द्वार, अनगिनत भीड़, लंबी कतारें, सड़कों पर वाहनों की अटूट श्रंखला
3. मेले में संपूर्ण भारत, सभी प्रदेशों की विविधताऐं
4. कहीं उच्छृंखलता नहीं, शरारत नहीं। मार्गों पर खाने पीने की दुकानें
5. मार्गों में भीड़ ही भीड़, सपरिवार भीड़, सभी प्रदेशों की प्रगति का ब्यौरा, जिनमें आधुनिक जीवन-स्तर की नई वस्तुओं का आकर्षक प्रदर्शन
6. दो तीन भवनों में ही घंटों खर्च
7. बाहर कई रेस्तरां, एक फव्वारों भरा उद्यान, अनेक हरे-भरे लॉन
8. आनंद से भरा अनुभव

13. कैदी की आत्मकथा *(CBSE 2003)*

1. मैं बंदी—मेरा नाम—अपराध—क्यों अपराध किया
2. प्रायश्चित्त की भावना, जेल में घर का महत्त्व जाना
3. परिवार की यादें, अधिकतर साथी पेशेवर अपराधी, किसी के सुधरने की आशा नहीं, ढीठ
4. पछतावा करने वालों की बहुत कम संख्या, कुछ निरपराध भी बंदी, दहेज कानूनों में दुर्भावनापूर्वक फँसे हुए
5. घुट-घुटकर जीना, घर की अत्यंत याद, पत्नी व बच्चों से नजरें मिलाना कठिन
6. समाज में घर की इज्जत, सोचते ही सिहर जाना। वृद्ध माता-पिता की समाज में स्थिति
7. बदले की भावना से किया गया कोई भी कार्य कदापि उचित नहीं
8. पुनः कोई गलत कार्य न करने की सौगंध

14. चिड़ियाघर की सैर *(All India CBSE 2004)*

1. दिल्ली का चिड़ियाघर, सुबह 10.00 बजे टिकट खरीदीं
2. अंदर खुला जंगल, जंतुओं का अभ्यारण्य, शेर, अन्य जानवर
3. लंगूर व बंदरों का झुंड, चने फेंके, विभिन्न चिड़ियाएँ दिखाई दीं
4. आवश्यकता के हिसाब से प्राकृतिक वातावरण
5. जंगली क्षेत्र के साथ-साथ खाइयाँ व बाड़
6. कुशल चिकित्सक भी उपलब्ध, जानवरों व मनुष्य दोनों के
7. पानी का अभाव, आराम करने के लिए छायादार पेड़, लोग परिवारों के साथ समूहों में
8. चलते-चलते थकान, लगभग 2.00 बजे प्रस्थान

15. गरीबी एक अभिशाप

1. गरीबी—मनुष्यता पर कलंक, साधनहीनता शक्तिहीनता, मजबूरी की द्योतक
2. आजादी, अधिकार, स्वाभिमान, स्वावलंबन, देश-प्रेम आदि में कमी
3. गरीब की सारी शक्ति जीवन की मूलभूत सुविधाएँ जुटाने में व्यर्थ
4. अशांति, भ्रष्टाचार, चोरी, हिंसा की जनक
5. करोड़ों लोग गरीबी रेखा के नीचे
6. कारण
7. निवारण
8. उपसंहार

16. साक्षरता आंदोलन

1. साक्षरता का अर्थ
2. अक्षर ब्रह्म है, ज्ञान है
3. ज्ञान के बिना मनुष्य अधूरा
4. निरक्षर व्यक्ति को सुख नहीं
5. सहायता के लिए मुख ताकना
6. दुनिया का हाल जानने में असमर्थता
7. साक्षरता में खुशी ही खुशी, जीवन में उल्लास
8. समाज के शिक्षित नवयुवकों का कर्तव्य
9. बच्चों की अनिवार्य शिक्षा
10. सरकार पर निर्भरता अनुचित
11. अपने दायित्वों का निर्वाह अवश्यंभावी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

17. मनुष्य वही जो मनुष्य के लिए मरे

1. मानवता का अर्थ—मनुष्य के लिए जीना मरना
2. नर सेवा नारायण सेवा
3. परोपकार की भावना का विकास
4. स्वस्थ चित्त व स्वस्थ मन ही परोपकार की भावना जगाता है
5. विभिन्न उदाहरण—महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू, सुभाषचंद्र बोस, विवेकानंद आदि
6. करुणा की भावना का विकास अति आवश्यक
7. महान बनने के लिए स्वार्थ त्याग की भावना
8. छोटी छोटी वस्तुओं में ईमानदारी रखना भी अपने आप में बहुत बड़ी बात

18. राष्ट्रभाषा हिंदी

1. भारतीय संविधान द्वारा अंगीकृत
2. अट्ठारह राष्ट्रीय भाषाओं में से एक
3. राष्ट्रभाषा होने के साथ-साथ राजभाषा भी
4. वर्तमान दशा—उचित सम्मान नहीं, केवल कागजों पर महत्त्व, अंग्रेजी का मोह
5. सरकारी अफसरशाही के कारण दुर्दशा
6. समाधान—हिंदी को उचित सम्मान दिलाने के लिए सरकार व जनता दोनों का प्रयास आवश्यक, हिंदी को प्रोत्साहन, सरकारी कामकाज का हिस्सा बनाना
7. प्रयास—हिंदी साहित्य का विकास

19. भारतीय संस्कृति

1. भारतीय संस्कृति—प्राचीनतम संस्कृति, विश्व गुरु
   यूनान, मिस्र, रोम, सब मिट गए जहाँ से
   बाकी अभी तलक नामो निशां हमारा
   कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
   सदियों से रहा है दुश्मन दौर-ए-जमाना हमारा
2. ज्ञान, त्याग, अहिंसा, धर्म व शांति का संगम
3. आध्यात्मिक ज्ञान के लिए प्रसिद्ध
4. कभी दूसरे देश पर आक्रमण नहीं
5. बौद्ध धर्म की स्थापना यहीं, प्रचार पूरे विश्व तक
6. महान महापुरुषों की जननी—महात्मा गाँधी, विनोबा भावे, कबीरदास, तुलसीदास आदि
7. विविधता में एकता
8. शांतिप्रिय संस्कृति

20. बाढ़ का वीभत्स दृश्य *(CBSE 1995)*

1. सन् 1995 में भीषण बाढ़, गंगा यमुना का जलस्तर बढ़ा
2. हरियाणा के रोहतक और भिवानी पूरे के पूरे बाढ़ की चपेट में
3. 8 से 10 फुट ऊपर तक पानी
4. जान-माल, संपत्ति का अथाह नुकसान
5. जन-जीवन अस्त-व्यस्त, न पानी, न बिजली, ऊपर से वर्षा
6. दिन में भीषण गर्मी, नावें चलाई गई, हवाई जहाजों द्वारा भोजन के पैकेट गिराना
7. नावों में डॉक्टरों द्वारा उपचार की व्यवस्था
8. अनेक सामाजिक संस्थाओं द्वारा सेवा कार्य
9. कई दिनों तक पानी खड़ा—बदबू, मच्छर, महामारी की संभावना, नरक सा दृश्य

21. फुटबाल

1. मेरा प्रिय खेल—फुटबाल
2. खेलों की आवश्यकता
3. एक रोमांचक खेल, लोकप्रिय व सस्ता भी
4. फुटबाल के लिए मैदान, खेलने की विधि, नियम, खिलाड़ियों की संख्या, गोलकीपर
5. आक्रामक दल, रक्षक दल, खेल में आक्रामकता आवश्यक, तेज गति, पूरी शक्ति, सिर व पैर का उपयोग, बीच-बीच में संघर्ष, टक्कर, धक्कामुक्की
6. रेफरी द्वारा नियम का उल्लंघन पर लाल कार्ड, पीला कार्ड
7. निर्णय न होने पर पेनल्टी स्ट्रोक के जरिए निर्णय होना, रुचिपूर्ण खेल

22. नर हो न निराश करो मन को *(CBSE 1993)*

1. नर का अर्थ—पुरुष वह जो मजबूत हो, दृढ़ता ही जीवन का आधार
2. कविता—
   जब नाव जल में छोड़ दी
   तूफ़ान ही में मोड़ दी
   दे दी चुनौति सिंधु को
   फिर धार क्या मझधार क्या?
3. पुरुष हर निराशा को आशा में परिवर्तित करने मे सक्षम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

4. पुरुष की चिंगारी से भीषण आग प्रज्वलित
5. अकेला जुगनू पूरी रात से लड़ता है
6. उदाहरण—महाराणा प्रताप, महात्मा गाँधी, सुभाषचंद्र बोस, भगतसिंह आदि
7. दीपक के सामने तम की बिसात क्या?
8. मनुष्य तुम जहाँ भी हो, प्रयास करो

23. जीवन में खेलों का महत्व

1. खेल-कूद प्रकृति का विधान
2. शारीरिक विकास के लिए खेल-कूद आवश्यक
3. विद्यालयों में खेल-कूद की स्थिति
4. खेल-कूद से लाभ
5. खेल-कूद से आत्मविश्वास की भावना का विकास
6. छात्रों के लिए खेल-कूद का महत्व
7. खेल-कूद अब थकावट दूर करने में सक्षम
8. खेल-कूद प्रतियोगिताओं का विभिन्न स्तरों पर आयोजन

24. कोई राष्ट्रीय पर्व

1. राष्ट्रीय पर्व किसे कहते हैं—कौन-कौन से राष्ट्रीय पर्व हैं
2. गणतंत्र दिवस को राष्ट्रीय पर्व मनाने के कारण
3. गणतंत्र दिवस 26 जनवरी को मनाने का कारण
4. गणतंत्र दिवस का मुख्य समारोह
5. दिल्ली में परेड का आयोजन—परेड का उद्देश्य
6. परेड का विवरण
7. उपसंहार

25. आदर्श विद्यार्थी

1. विद्यार्थी का अर्थ—विद्यार्थी जीवन का महत्व, उद्देश्य
2. आदर्श विद्यार्थी के गुण
   (क) विनम्र, सुशील, अनुशासित
   (ख) सत्यवादी और आज्ञाकारी
3. पाठ्य-पुस्तकों के अतिरिक्त पत्र-पत्रिकाओं का अध्ययन का गुण
   (क) पढ़े और सुने का गुनना
   (ख) पाठ्येत्तर विषयों में भाग लेना
   (ग) समय का सदुपयोग करना
4. मनोयोग पूर्वक अध्ययन
5. सादा जीवन उच्च विचार
6. समाज के प्रति दायित्व
7. उपसंहार

26. भारत में बेकारी की समस्या

1. देश में बढ़ती बेकारी की समस्या
2. बेकारी के कारण
3. उचित शिक्षा का अभाव, उचित प्रशिक्षणों का अभाव
4. उद्योग-धंधों को दृष्टि-ओझल करना
5. बढ़ती जनसंख्या
6. सरकारी विभागों में छँटनी, नौकरियों का अभाव
7. बेकारी से हानि
8. बेकारी दूर करने के उपाय
9. उपसंहार

27. मेरी प्रथम रेल यात्रा

1. यात्रा क्यों—रेल यात्रा की चाह, पूर्ति का अवसर
2. यात्रा की तैयारी, टिकट आरक्षण
3. यात्रा का आरंभ, रेलवे प्लेटफार्म का दृश्य
4. रेलगाड़ी का प्रस्थान, शोरगुल में कमी
5. सहयात्रियों से परिचय
6. रात की घटी घटना
7. डिब्बे में आतंक, जंजीर खींचना, रेल का रुकना
8. कभी न भुलाया जा सकने वाला अनुभव

28. प्राकृतिक आपदा—बाढ़

1. प्रकृति का निर्माणकारी व विनाशकारी स्वरूप
2. आपदा का एक रूप—बाढ़
3. बाढ़ का कारण
4. बाढ़ की विनाशलीला का दारुण एवं करुणात्मक दृश्य
5. नागरिक सुरक्षा
6. सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं का योगदान
7. पीड़ित लोगों की सहायता, पुनर्वास कार्य

29. युद्ध की विभीषिका

1. मानव स्वभाव, अन्य प्राणियों से मनुष्य की तुलना
2. युद्ध की स्थिति, युद्ध का स्वरूप
3. युद्ध के कारण—स्वार्थ, विस्तारवादी भावना, अहं की तुष्टि
4. पिछले युद्धों से उत्पन्न विनाश का वर्णन
5. युद्ध की विभीषिका, परिणाम
6. युद्ध की आवश्यकता—मानव कल्याण या दूसरे की सहायता के लिए किया जाए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

30. परहित सरिस धर्म नहिं भाई

1. उक्ति का तात्पर्य, परहित सबसे बड़ा धर्म
2. प्रकृति और परहित—नदी, वृक्ष, बादलों का उदाहरण
3. मानव जीवन का उद्देश्य—परहित
4. परहित की भारतीय परंपरा
5. मानव ही परहित कर सकता है, पशु नहीं
6. परहित सबसे बड़ा धर्म, परहित करने के ढंग
7. उपसंहार—परहित से महान कोई अन्य धर्म नहीं

31. विज्ञान की देन

1. ज्ञान और विज्ञान का महत्त्व
2. विज्ञान की आवश्यकता, आधुनिक युग की समस्याएँ
3. आधुनिक विज्ञान की देन—यातायात, मनोरंजन, ज्ञान, युद्ध, रोग, दैनिक उपयोग, कृषि, चिकित्सा
4. विज्ञान की देन का प्रभाव
5. विज्ञान की देन के लाभ
6. विज्ञान की देन से हानि
7. बुद्धिमत्ता, कुशलता एवं कल्याणकारी प्रवृत्ति

32. अनुशासन

1. अर्थ व उसका महत्त्व
2. जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अनुशासन का स्थान
3. अनुशासन की प्रथम पाठशाला—परिवार
4. अनुशासन—जीवन, परिवार, देश और समाज की उन्नति का आधार
5. व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन—दोनों के लिए अनुशासन आवश्यक
6. अनुशासनहीनता के दुष्परिणाम
7. अनुशासन एक जीवन-मूल्य

33. मेरा प्रिय त्यौहार

1. भारत त्यौहारों का देश—अनेक त्यौहार
2. मेरा सर्वाधिक प्रिय त्यौहार—दीपावली, प्रिय होने के कारण
3. दीपावली मनाने के कारण
4. दीपावली मनाने की लिए तैयारी
5. दीपावली मनाने का ढंग—लक्ष्मीपूजा, नए वस्त्र पहनकर लक्ष्मी-गणेश की पूजा, मिठाई का लेन-देन
6. दीपावली को मनाने में सावधानी
7. उपसंहार

34. पराधीन को सुख नाहीं

1. पराधीनता से तात्पर्य
2. पराधीनता के प्रभाव—पराधीन मनुष्य अपना सर्वांगीण विकास नहीं कर पाता, शारीरिक-मानसिक यातनाएँ, स्वप्न में भी सुख प्राप्ति नहीं
3. स्वतंत्रता मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार—प्रत्येक प्राणी स्वतंत्र रहना चाहता है
4. पराधीनता के प्रकार
5. पराधीनता से हानि
6. पराधीनता से मुक्ति के उपाय
7. उपसंहार

35. दूरदर्शन व उसकी उपयोगिता

1. दूरदर्शन विज्ञान का चमत्कारिक आविष्कार, भारत में टेलीविजन का प्रयोग
2. भारत में दूरदर्शन की स्थापना, रंगीन टेलीविज़न का प्रचलन
3. टेलीविजन या दूरदर्शन की उपयोगिता—मनोरंजन, शिक्षा, विज्ञान, जनमत निर्माण का साधन, सामाजिक कुरीतियों से मुक्ति का साधन
4. टेलीविजन अथवा दूरदर्शन से हानि
5. उपसंहार—व्यापक उपयोगिता

36. देशाटन अथवा पर्यटन

1. मानव का जिज्ञासु होना ही पर्यटन या देशाटन का कारण
2. पर्यटन से पहले उचित तैयारी
3. पर्यटन से लाभ, मनोरंजन, ज्ञान, शिक्षा, स्वास्थ्य, चरित्र, अनुभव आदि
4. पर्यटन के लिए पर्यटक के गुण
5. पर्यटन राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय उद्योग
6. पर्यटन को बढ़ावा देने के प्रयास
7. उपसंहार

37. मेरे जीवन का लक्ष्य

1. पूर्व चलने के बटोही बाट की पहचान कर ले
2. जीवन तभी रसमय है, जब मनुष्य उद्देश्य लेकर चलता है।
3. लक्ष्यहीन जीवन नाविकहीन समुद्री नाव के समान है
4. जीवन का लक्ष्य तय करना, मनुष्य का प्रथम कर्तव्य

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

5. मेरा लक्ष्य—शिक्षक बनना
6. ज्ञान का प्रसार
7. प्रेरणा स्रोत—चाणक्य से राधाकृष्णन तक

38. निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल

1. स्वतंत्र राष्ट्रभाषा
2. राष्ट्र का गौरव
3. राष्ट्रभाषा—जनता की भाषा
4. राष्ट्रभाषा के लिए योग्यताएँ
5. सर्वगुणसम्पन्न हमारी भाषा
6. 26 जनवरी, 1950 को
7. हिंदी भाषा देश के कोने-कोने में
8. हिंदी भारतमाता के भाल की बिंदी
9. अन्य भारतीय भाषाओं से क्षमतावान
10. राजनीति प्रेरित विरोध
11. राष्ट्रीय एकता हेतु अनिवार्य

39. कितना निराला मेरा देश

1. भारत विशेषताओं का भंडार
2. मानवता का निर्माणकर्ता
3. सत्य, अहिंसा, प्रेम का प्रदाता
4. करुणा, दया, प्रेम व शांति का प्रतीक
5. प्राकृतिक सौंदर्य, भावात्मक सौंदर्य
6. करुणा, दया, प्रेम व शांति का प्रतीक
7. प्राकृतिक सौंदर्य
8. भावात्मक सौंदर्य, सभ्यता का सूर्योदय
9. त्याग व तपस्या की भूमि
10. मेरा भारत महान

40. भारत की आधुनिक समस्याएँ

1. भारत एक प्रगतिशील देश
2. वर्तमान में प्रगति के पथ पर अग्रसर
3. शांति की आवश्यकता
4. समस्याएँ—बढ़ती जनसंख्या, सांप्रदायिकता, क्षेत्रवाद, पिछड़ापन, अंधविश्वास, भाषा भेद, गरीबी, प्रदूषण, बेरोजगारी
5. सभी देश के विकास में बाधक
6. एक दूरगामी नीति सब समस्याओं का समाधान
7. सामुदायिक भावना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रश्न-अभ्यास

विचारात्मक निबंध

1. पर उपदेश कुशल बहुतेरे
2. नर हो न निराश करो मन को
3. अपना हाथ जगन्नाथ
4. अहिंसक भारत में हिंसा का दौर
5. यदि फूल नहीं बन सकते तो काँटे तो मत बनो
6. माँ और मातृभूमि स्वर्ग से भी बड़ी है
7. अनुशासन है तो प्रगति है
8. कितना बदला मेरा गाँव
9. सिनेमा का प्रभाव
10. बिना माँगे मोती मिले, माँगे मिले न भीख
11. भाग्य व पुरुषार्थ
12. विज्ञापनों की दुनिया
13. सदाचार व अनुशासन
14. सत्संगति का महत्त्व
15. अधजल गगरी छलकत जाय
16. साँच को आँच नहीं

खेल, स्वास्थ्य, समाचार-पत्र, विज्ञान, यात्रा आदि

17. देशाटन का महत्त्व
18. रेलयात्रा का वर्णन
19. किसी ऐतिहासिक स्थल की सैर
20. समुद्र-तट की सैर

शिक्षा संबंधी

21. शिक्षा का व्यवसायीकरण
22. बेकारी की समस्या
23. सहशिक्षा
24. विद्यार्थी व राजनीति
25. वर्तमान शिक्षा-प्रणाली
26. शिक्षा और आजीविका

काल्पनिक

27. अगर मैं करोड़पति होता
28. अगर मैं शिक्षक होता
29. यदि मैं हिंदी का अध्यापक होता
30. यदि मैं राष्ट्रपति होता
31. यदि मैं अरबपति होता

विद्यार्थी संबंधी

32. विद्यार्थियों में बढ़ता असंतोष
33. छात्र व अनुशासन
34. छात्र व राष्ट्र निर्माण
35. आज के बच्चे कल के भविष्य
36. छात्र व अध्यापक
37. मेरे जीवन का आदर्श

विज्ञान संबंधी

38. विज्ञान का हमारे जीवन में योगदान
39. विज्ञान के लाभ व हानियाँ
40. विज्ञान अच्छा सेवक है परंतु बुरा हथियार
41. विज्ञान व धर्म
42. विज्ञान व मानवता

दृश्य, रमणीक स्थल

43. नगर के चौक का दृश्य
44. किसी आँखों देखी दुर्घटना का वर्णन
45. दूरदर्शन धारावाहिक जो मुझे पसंद है
46. अति व्यस्त बाजार का दृश्य

ऋतु संबंधी

47. ये सुहानी ऋतुएँ
48. लू का तपता हुआ दिन
49. ठंड से भरी एक रात
50. आए महंत बसंत
51. फागुन का मौसम
52. गर्मी का एक दिन

राष्ट्रप्रेम

53. राष्ट्र के प्रति हमारा दायित्व
54. इक्कीसवीं सदी का भारत
55. भारत का भविष्य
56. भारतीय नारी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

5

पत्र लेखन

पत्र लेखन एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण कला है। आज के अति व्यस्त युग में इसका महत्त्व और भी अधिक हो जाता है। आज मनुष्य के संबंध अत्यधिक बढ़ गए हैं। उसे दिन-प्रतिदिन कितने ही व्यक्तियों, संबंधियों, कार्यालयों से संपर्क साधना पड़ता है। हर स्थान पर वह व्यक्तिगत रूप से उपस्थित नहीं हो सकता। अत: उसे पत्र का सहारा लेना पड़ता है। पत्र स्वयं व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं। एक अच्छी बात यह है कि यदि हमारे मन में क्रोध भी है तो अक्षर क्रोध प्रकट नहीं करते। कार्यालयी पत्र तो व्यापार व प्रशासन का अनिवार्य अंग बन चुके हैं। प्रार्थना-पत्र के बिना कोई कार्यालयी-कार्य सम्पन्न नहीं होता। अत: छात्र के लिए पत्र-लेखन सीखना अनिवार्य है।

सामान्यत: यह धारणा होती है कि पत्र लिखने के लिए कोई प्रयास नहीं करने पड़ते और न ही किसी कुशलता की आवश्यकता होती है। परंतु वास्तव में पत्र लिखना भी एक बहुत बड़ी और अद्भुत कला है। यह कला प्रयत्नों के द्वारा ही हासिल की जा सकती है। सही व रचनात्मक ढंग से लिखा गया पत्र निश्चित रूप से न केवल हमारा प्रभुत्व बढ़ाता है, बल्कि हमारे व्यक्तित्व की छाप भी पाठक पर अवश्य छोड़ता है। हम पत्रों के माध्यम से न केवल दूसरों के दिलों में जगह बना सकते हैं वरन् मैत्री भी बढ़ा सकते हैं तथा अपने समाज को वश में कर सकते हैं। अत: पत्र लिखना एक ऐसी कला है जिसके लिए बुद्धि और ज्ञान की परिपक्वता, विचारों की विविधता, विषय का ज्ञान, अभिव्यक्ति की शक्ति और भाषा पर नियंत्रण की आवश्यकता है। इसके बिना हमारे पत्र अत्यंत साधारण होंगे। किसी को प्रभावित करना तो दूर, वे हमारी अल्प बुद्धि का प्रतीक बन जायेंगे। पत्र केवल हमारे कुशल समाचारों के आदान-प्रदान का माध्यम ही नहीं, उसके द्वारा आज के वैज्ञानिक युग में सम्पूर्ण व्यापार कार्य चलता है तथा इसकी आवश्यकता और उपयोगिता को नकारा नहीं जा सकता। अत: इसे लिखने व इसके आकार-प्रकार की पूरी जानकारी होनी अति आवश्यक है।

पत्र अनेक प्रकार के होते हैं। कक्षा 9 व 10 में जितने प्रकार के पत्र पाठ्यक्रम के अंतर्गत रखे गए हैं उनका विस्तृत वर्णन नीचे प्रस्तुत है।

I. अनौपचारिक (व्यक्तिगत) पत्र

1. मित्र को नववर्ष की शुभकामनाएँ व्यक्त करने के लिए पत्र।
2. नये संवत् की शुभकामनाओं हेतु मित्र को पत्र।
3. विवाह पर निमंत्रण हेतु पत्र।
4. गृह प्रवेश के अवसर पर शुभकामनायें व्यक्त करने हेतु पत्र।
5. दिवाली की मंगल कामनाओं हेतु पत्र।
6. जन्मदिन पर शुभकामनाओं हेतु पत्र।
7. विवाह की वर्षगाँठ पर शुभकामनाओं हेतु पत्र।
8. यात्रा की मंगलकामना हेतु पत्र।
9. मित्र को बैंक मैनेजर बनने पर शुभकामना पत्र।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

10. भाई को एम०कॉम० उत्तीर्ण करने पर शुभकामना पत्र।
11. मित्र को बधाई पत्र वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम आने पर।
12. चाचा को बधाई पत्र चुनाव जीतने पर।
13. प्रोन्नति मिलने पर बड़े भाई को बधाई पत्र।
14. सहपाठी को वार्षिक परीक्षा में प्रथम आने पर बधाई पत्र।
15. विवाह में अनुपस्थित रहने पर यथोचित कारण सहित मित्र को पत्र।
16. गायन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर मित्र को बधाई पत्र।
17. जन्मदिवस पर उपहार के लिए कृतज्ञता पत्र।
18. बधाई पत्र के प्रत्युत्तर में सखी को कृतज्ञता पत्र।
19. किसी अपरिचित को खोई वस्तु लौटाने पर कृतज्ञता पत्र।
20. बीमारी में देखभाल पर कृतज्ञता पत्र।
21. पर्यटन स्थलों की सैर कराने पर मित्र को धन्यवाद पत्र।
22. मित्र के पिता के आकस्मिक देहांत पर शोक पत्र।
23. मित्र के परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने पर संवेदना पत्र।
24. मौसेरे भाई के घर चोरी होने पर संवेदना पत्र।
25. सखी को दुर्घटना में चोट लगने पर सांत्वना पत्र।
26. मित्र को उसकी फैक्ट्री में आग लगने पर संवेदना पत्र।
27. मित्र को उसकी माताजी के देहांत पर शोक पत्र।
28. मित्र को जन्मदिन के उत्सव में आमंत्रित करने हेतु पत्र।
29. नामकरण संस्कार में आने हेतु निमंत्रण पत्र।
30. दुकान के मुहूर्त पर उपलक्ष में मित्र को निमंत्रण पत्र।
31. विवाह का निमंत्रण पत्र तैयार करना।
32. गृह-प्रवेश के अवसर पर निमंत्रण पत्र।
33. दुकान के उद्घाटन पर निमंत्रण पत्र।
34. कुसंगति से बचने की सलाह का चेतावनी पत्र।
35. सीख पर आचरण करने के आश्वासन का पत्र।
36. घड़ी खरीदने हेतु रुपये भेजने का निवेदन पत्र।
37. साक्षरता अभियान के अंतर्गत किए जा रहे कार्यों का विवरण पत्र।
38. रक्षाबंधन के अवसर पर राखी को भेजते हुए छोटे भाई को पत्र।
39. विद्यालय के वार्षिकोत्सव का संदर्भ पत्र।
40. माताजी की बीमारी का सूचना पत्र।
41. बहन द्वारा भाई को नियमित व्यायाम करने का महत्व बताते हुए पत्र।

II. औपचारिक पत्र

42. प्रधानाचार्य को आर्थिक सहायता प्राप्त करने हेतु प्रार्थना पत्र।
43. चरित्र प्रमाणपत्र प्राप्त करने हेतु प्रार्थना पत्र।
44. विद्यालय में खेल का सामान मँगाने हेतु प्रधानाचार्य को प्रार्थना पत्र।
45. प्रधानाचार्य को दस दिन के अवकाश हेतु प्रार्थना पत्र।
46. स्वास्थ्य लाभ हेतु अवकाश का आवेदन।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

47. जुर्माना माफी का निवेदन पत्र।
48. बुराई से लड़ने की भावना विकसित करने हेतु आग्रह पत्र।
49. फीस माफी हेतु प्रार्थना पत्र।
50. बधाई पत्र के प्रत्युत्तर में धन्यवाद पत्र।
51. भजन-गान पर बधाई व धन्यवाद पत्र।
52. खेल उत्सव सफलतापूर्वक सम्पन्न होने पर अध्यापकों व स्कूल कर्मचारियों को धन्यवाद पत्र।
53. बैंक की उत्कृष्ट सेवा के 150 वर्ष पूरे होने पर बैंक मैनेजर को शुभकामना पत्र।
54. प्रोन्नति हेतु सहकर्मी को शुभकामना पत्र।
55. 'पाठकनामा' कॉलम प्रारंभ करने पर दैनिक पत्र के संपादक को शुभकामना पत्र।
56. 'सर्वश्रेष्ठ उत्पादक' का सम्मान प्राप्त करने पर बधाई पत्र।
57. सर्वोत्कृष्ट अध्यापिका चुनाव में सफलता पर बधाई पत्र।
58. प्रोन्नति मिलने पर बधाई पत्र।
59. शिक्षा निदेशक की छात्रवृत्ति हेतु आवेदन पत्र।
60. निम्न श्रेणी के लिपिक पद हेतु आवेदन पत्र।
61. उपसंपादक के पद हेतु आवेदन पत्र।
62. सहायक अध्यापक के पद हेतु आवेदन पत्र।
63. अंशकालिक शिक्षक के पद हेतु आवेदन पत्र।
64. 'प्रचारक' के पद हेतु व्यापार प्रबंधक को आवेदन पत्र।
65. विद्यालय में प्रवेश पाने हेतु आवेदन पत्र।
66. पुस्तकें मँगाने हेतु प्रकाशक को पत्र।
67. गलत माल का शिकायती पत्र।
68. कार खरीदने पर डिस्काउंट हेतु पूछताछ पत्र।
69. शहर की दीवारें स्वच्छ रखने हेतु जन जागृति के प्रति संपादक को पत्र।
70. आवारा पशुओं की समस्या पर दैनिक जागरण पत्र के संपादक के नाम पत्र।
71. बढ़ती महँगाई के विषय में संपादक को पत्र।
72. बढ़ते प्रदूषण की समस्या पर संपादक को पत्र।
73. दहेज प्रथा की बुराई पर संपादक के नाम पत्र।
74. कानून व्यवस्था की बिगड़ती स्थिति पर संपादक को पत्र।
75. आपके क्षेत्र में बढ़ती जुआखोरी पर चिंतन-मनन संबंधी संपादक के नाम पत्र।
76. बिजली संकट पर संपादक के नाम पत्र।
77. संसद-सदस्य को शिकायती पत्र क्षेत्र की समस्याओं से संबंधित।
78. थानाध्यक्ष के नाम बढ़ती चोरियों के विषय में।
79. जलभराव की समस्या पर नगर-निगम अधिकारी को पत्र।
80. बिजली कटौती पर क्षेत्र के विद्युत अधिकारी को पत्र।
81. अनधिकृत झुग्गी-झोंपड़ी कालोनी के कारण समस्याओं पर निगम आयुक्त को पत्र।
82. छात्रावास की भोजनशाला के निरंतर गिरते स्तर पर अधीक्षक को पत्र।
83. अनधिकृत मकानों के निर्माण की रोकथाम हेतु जिलाधीश को पत्र।
84. पेयजल की समस्या पर स्वास्थ्य अधिकारियों को पत्र।
85. रिहायशी क्षेत्र में उद्योगों को बंद कराने हेतु प्रार्थना पत्र।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

I. अनौपचारिक (व्यक्तिगत) पत्र

अनौपचारिक (व्यक्तिगत) पत्र व्यक्तिगत रूप से अपने माता-पिता व अन्य सगे-संबंधियों को लिखे जाते हैं। ये पत्र औपचारिकतापूर्ण व विविधतापूर्ण होते हैं। ये पत्र भावना प्रधान होते हैं। ये संबंधियों की राजी-खुशी को व्यक्त करते हैं। यह भेजने वाले के विचारों का दर्पण होते हैं। इनमें सूचनाओं के साथ भावनाओं का भी आदान-प्रदान होता है। इनमें संबोधन, अभिवादन, औपचारिकता, शिष्टाचार आदि का समन्वय होता है। इस प्रकार के पत्रों में किसी विशेष प्रकार की विधि अथवा नियम-पद्धति की आवश्यकता नहीं होती। इस प्रकार के पत्रों में किसी प्रकार की औपचारिकता के निर्वाह का बंधन नहीं होता। इन पत्रों में प्रेषक अपनी बात व भावना को उन्मुक्तता के साथ, बिना लाग-लपेट के लिख सकता है। इन पत्रों का प्राण तत्त्व अत्माभिव्यक्ति, निजता व आत्मीयता है। ये आकार-प्रकार में अत्यंत लचीले होते हैं, अर्थात् संक्षिप्त भी हो सकते हैं तो अत्यंत विस्तृत भी।

अनौपचारिक पत्र का नमूना

प्रेषक का नाम . . . .
प्रेषक का पता . . . .
स्थान . . . .
दिनांक . . . .

संबोधन (प्राप्तकर्ता को) . . . .

. . . .
. . . .
. . . . कथ्य सामग्री . . . .
. . . .
. . . .

औपचारिक अंतिम वाक्य (अनुशंसा)

सर्वनिर्देश (आपका आज्ञाकारी/अभिन्न हृदय आदि)

हस्ताक्षर

संबोधन व अभिवादन

संबोधन व अभिवादन दोनों महत्त्वपूर्ण होते हैं। इनमें पत्र-लेखक को सावधानी, कुशलता व सहृदयता का परिचय देना चाहिए। संबोधनों में विशेषण भी महत्त्वपूर्ण होते हैं। उदाहरणतया कुछ संबोधन तथा अभिवादन नीचे तालिका में प्रस्तुत हैं:

संबंधी	*संबोधन*	*अभिवादन*
1. दादा, पिता	श्रद्धेय दादाजी पूज्य दादाश्री/पूज्य पिताश्री	सादर चरण स्पर्श! सश्रद्ध प्रणाम!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

		सादर नमस्कार!
		चरण वंदना!
2. माता, दादी, नानी	परम पूज्य . . . . . जी	सदर चरण स्पर्श प्रणाम!
		सश्रद्ध नमस्कार!
3. मामा, चाचा, मौसा, फूफा	आदरणीय/पूज्य . . . जी	सादर नमस्कार!
4. पुत्र, पुत्री	चिरंजीवी प्रिय पुत्र	सुखी रहो!
	आयुष्मती क.ख.ग.	सुखी रहो!
5. मित्र	मित्रवर, प्रियवर/प्रिय क.ख.ग.	सस्नेह प्रणाम
	परम स्नेही मित्र क.ख.ग.	मधुर स्मृति! प्रेम! स्नेह!
6. बड़ा भाई, बहन	आदरणीय भाई साहब	सादर प्रणाम!
	आदरणीया बहन जी	सादर प्रणाम!
7. छोटा भाई, छोटी बहन	प्यारे/प्रिय क.ख.ग.	सस्नेह नमस्कार!
	स्नेहमयी क.ख.ग.	स्नेह! प्रेम!

मुख्य विषय

पत्र का मुख्य विषय सहज-स्वाभाविक होना चाहिए। उसमें रिश्तों की मधुर सुगंध होनी चाहिए। विषय में औपचारिकता की बजाय हृदय की सच्चाई प्रकट होनी चाहिए। विषय के आरंभ में परिवारजनों का हाल-चाल पूछना चाहिए तथा अंत में उनके लिए उचित आदर या स्नेह प्रकट करना चाहिए। उदाहरण के लिए,

विषय का प्रारंभः तुम्हारा पत्र मिला। पढ़कर हाल मालूम हुआ। आशा है तुम स्वस्थ और प्रसन्न होंगे।

विषय का अंतः सभी बड़े बुजुर्गों को आदर व सम्मान व छोटों को स्नेह। शेष शुभ! शेष मिलने पर आदि, आदि।

अब हम नीचे अनौपचारिक (व्यक्तिगत) पत्रों के कुछ उदाहरण प्रस्तुत करेंगे।

1. शुभकामनाओं हेतु पत्र (अनौपचारिक पत्र के संदर्भ में)

शुभकामना पत्रों में वे पत्र आते हैं जिनमें अपने किसी मित्र, भाई इत्यादि को किसी त्यौहार, नव-वर्ष, विवाह, वैवाहिक वर्षगाँठ, जन्मदिन आदि के अवसर पर शुभकामनाएँ प्रस्तुत की जाती हैं। ये पत्र अत्यंत लघु होते हैं। इनका उद्देश्य केवल शुभकामना प्रधान होता है, व्यक्तिगत विचार प्रकट करना नहीं।

1. अपने मित्र विकास नेगी को नव-वर्ष की शुभकामनाएँ व्यक्त करने के लिए पत्र लिखिए। आप हनुमंत सिंह, बी ब्लॉक, हर्ष विहार, दिल्ली के निवासी हैं।

हनुमंत सिंह
बी ब्लॉक, हर्ष विहार
दिल्ली—110 093

29 दिसंबर, 2008

प्रिय विकास नेगी

सप्रेम स्नेह!

1 जनवरी 2008 को आरंभ होने वाला नववर्ष आपके व आपके परिवार के लिए सुख-समृद्धि लेकर आए। आपका जीवन खुशियों से भर जाए। मेरी शुभकामनाएँ स्वीकार कीजिए।

तुम्हारा प्रिय मित्र

हनुमंत सिंह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2. 16, कुमार बिल्डिंग, स्वाति नगर, भोपाल के निवासी कुलदीप सिंह की ओर से वैभव को पत्र लिखकर नए संवत् की शुभकामनाएँ दीजिए।

कुलदीप सिंह
16 कुमार बिल्डिंग, स्वाति नगर
भोपाल

29 दिसंबर, 2008

प्रिय मित्र वैभव

सप्रेम नमस्कार!

नया संवत् आपके व आपके परिवार के लिए सुख-समृद्धि लेकर आए। आपका जीवन खुशियों से भर जाए। मेरी शुभकामनाएँ स्वीकार कीजिए।

तुम्हारा प्रिय मित्र
कुलदीप सिंह

3. कौशल कुमार के विवाह पर आपको निमंत्रण है, किंतु उस दिन आपको ऑफिस के काम से बाहर जाना है। अतः कौशल कुमार से क्षमा-याचना करते हुए उनके विवाह की शुभकामनाएँ भेजिए। आपका परिचय है—सौरभ चंदेल, 25, तुलसी निकेतन, गाजियाबाद

सौरभ चंदेल
25, तुलसी निकेतन
गाजियाबाद

22 अक्तूबर, 2008

प्रिय कौशल कुमार,

सप्रेम स्नेह!

आपको विवाह की कोटि-कोटि शुभकामनाएँ। जीवन का नया सफर अति सुहाना हो। मेरी शुभकामनाएँ स्वीकार करो।

मित्र, आपके विवाह से एक दिन पूर्व मेरा एक कार्यक्रम अमेरिका में तय है। मैं विवाह में उपस्थित नहीं हो पाऊँगा, इसलिए फिर कभी आकर भेंट करूँगा। पुनः मेरी शुभकामनाएँ स्वीकार कीजिए।

आपका
सौरभ चंदेल

4. आपके एक पुराने मित्र संदीप यादव ने गुड़गाँव में एक अपार्टमेंट खरीदा है। गृह-प्रवेश के अवसर पर आप आमंत्रित हैं किंतु जा सकने में असमर्थ हैं। पत्र द्वारा शुभकामनाएँ व्यक्त कीजिए। आपका परिचय है—भीम सिंह, बी ब्लॉक, हर्ष विहार, दिल्ली।

भीम सिंह
बी ब्लॉक, हर्ष विहार
दिल्ली

22 अक्तूबर, 2008

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रिय संदीप यादव

कुशल मंगल!

आपको नया अपार्टमेंट लेने की सहस्र शुभकामनाएँ। नये मकान में जीवन अति सुहाना हो। मेरी शुभकामनाएँ स्वीकार करो।

मित्र, आपके गृह प्रवेश की तिथि से एक दिन पूर्व मेरा गाँव में जाना तय है। मैं गृह-प्रवेश में उपस्थित नहीं हो पाऊँगा, इसलिए फिर कभी आकर भेंट करूँगा। पुनः मेरी शुभकामनाएँ स्वीकार कीजिए।

आपका

भीम सिंह

5. आप हैं—गुरप्रीत सिंह निवासी बी2, अमर कालोनी, दिल्ली। अपने प्रिय मित्र रामलाल व उसके परिवार जनों को दिवाली की मंगल कामनाएँ पत्र द्वारा भेजिए।

गुरप्रीत सिंह

बी2, अमर कालोनी

दिल्ली

24 जनवरी, 2008

प्रिय मित्र रामलाल

सप्रेम नमस्ते!

मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि यह दिवाली आपके व आपके परिवार के लिए मंगलमय हो व समृद्धि लेकर आए। मेरी मंगलकामना स्वीकार कीजिए।

आपका

गुरप्रीत सिंह

6. अपने मित्र राजीव शुक्ला के जन्म-दिन पर शुभकामना-पत्र लिखो। तुम ग्राम बालौर, जिला बहादुरगढ़, हरियाणा के निवासी अरविंद हो।

अरविंद

ग्राम बालौर

जिला बहादुरगढ़

हरियाणा

26 फरवरी, 2008

प्रिय मित्र राजीव

सप्रेम स्नेह!

जन्मदिन मुबारक हो। तुम्हारे जीवन का यह सत्रहवाँ बसंत उमंग, मस्ती, प्रेम व सफलता लेकर आए। तुम जीवन की ऊँचाइयों को छुओ। मेरी शुभकामनाएँ स्वीकार करो।

आपका

अरविंद

7. तुम 39, जंगपुरा, दिल्ली के निवासी सोनम हो। अपनी दीदी विनीता व जीजा विपुल के विवाह की वर्षगाँठ पर हार्दिक शुभकामनाएँ भेजिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सोनम
39, जंगपुरा
दिल्ली

24 मार्च, 2008

आदरणीय दीदी व जीजा जी
सादर प्रणाम!
आपको विवाह की प्रथम वर्षगाँठ की सहस्र शुभकामनाएँ। ईश्वर करे, आपकी यह प्रसन्न जोड़ी सदा हँसती-खेलती व जीवन में तरक्की करती रहे। मेरी शुभकामनाएँ स्वीकार करें।
भवदीया
सोनम

8. तुम्हारी प्रिय सखी संजना कॉलेज से स्कॉलरशिप प्राप्त करके ब्रिटेन जा रही है। उसकी यात्रा की मंगलकामना हेतु पत्र लिखिए। आपका परिचय इस प्रकार है—प्रीति, 39, कसौली अपार्टमेंट, शिमला।

प्रीति
39, कसौली अपार्टमेंट
शिमला

22 अक्तूबर, 2008

प्रिय सखी संजना
सप्रेम स्नेह!
आपको कॉलेज से छात्रवृत्ति मिलने पर लंदन जाने पर सहस्र शुभकामनाएँ। मुझे यह सुनकर अति प्रसन्नता हुई। मेरी मंगलकामनाएँ तुम्हारे साथ हैं। तुम दिन दूनी रात चौगुरी तरक्की करो। तुम्हारी यात्रा शुभ हो।
धन्यवाद!

आपकी शुभचिंतक
प्रीति

9. अपने मित्र राजन को बैंक मैनेजर बनने पर एक शुभकामना पत्र लिखिए। आप हैं—राहुल कुमार, 36 चैंबर लेन, कलकत्ता।

राहुल कुमार
36, चैंबर लेन
कलकत्ता

28 अगस्त, 2008

प्रिय राजन
सप्रेम नमस्कार!
आपको मैनेजर मनोनीत होने पर मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ। मैं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करूँगा कि आपको जीवन में समृद्धि व प्रोन्नति मिले।

आपका
राहुल कुमार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

10. अपने भाई अजय को एम.कॉम. उत्तीर्ण करने पर एक शुभकामना पत्र लिखिए। आप हैं—रमेश, 42 जीटीबी इंक्लेव, दिल्ली।

रमेश
42, जीटीबी इंक्लेव
दिल्ली

21 जून, 2008

प्रिय अनुज अजय

प्रेम! स्नेह!

तुम्हारे एम.कॉम. की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर तुम्हें कोटि-कोटि शुभकामनाएँ। तुम जीवन में दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की करो। ईश्वर तुम्हारे मार्ग की समस्त रुकावटें दूर करे। पुनः मेरी मंगलकामनाएँ स्वीकार करो।

तुम्हारा ज्येष्ठ भ्राता
रमेश

2. बधाई हेतु पत्र (अनौपचारिक पत्र के संदर्भ में)

बधाई पत्रों में वे पत्र आते हैं जिनमें अपने किसी मित्र, भाई इत्यादि को परीक्षा में सफलता प्राप्त करने पर, या किसी कार्य में सफल होने पर बधाई दी जाती है, शामिल होते हैं। इनका उद्देश्य प्रेषक की प्रेषित को सहृदयता प्रदर्शित करना होता है।

11. अपने मित्र के वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम आने पर एक बधाई-पत्र लिखिए।

(CBSE 1993, A.I. CBSE 2004)

आप सविता हैं। आपकी बहन सुलेखा वाद-विवाद प्रतियोगिता में पूरी दिल्ली में प्रथम आई है। आप अपनी बहन सुलेखा को एक बधाई पत्र लिखिए। आप 375, कविलाश नगर, अहमदाबाद की रहने वाली हैं।

सविता
375, कविलाश नगर
अहमदाबाद

20 जुलाई, 2008

प्रिय सुलेखा

सप्रेम स्नेह!

मुझे अभी पता चला है कि तुमने अपने विद्यालय में होने वाली संपूर्ण दिल्ली वाद-विवाद प्रतियोगिता में भाग लिया था और उसमें प्रथम स्थान पर आई हो। जब से तुम्हें यह गौरव प्राप्त हुआ है मैं स्वयं को बहुत सम्मानित करने लगी हूँ।

सुलेखा! जितनी खुशी मुझे तुम्हारी इस कामयाबी से हुई है, उसका वर्णन मैं शब्दों में नहीं कर सकती। यह पत्र अत्यंत लघु पड़ जाएगा परंतु शब्द समाप्त नहीं होंगे। जब से मैंने यह खबर टेलीविजन पर सुनी है, मैं तुम्हें पत्र लिखने को आतुर हो उठी हूँ। मेरी तरफ से तुम्हें हार्दिक बधाई। माताजी व पिताजी ने भी तुम्हें बधाईयाँ भेजी हैं।

तुम सचमुच इस सम्मान की अधिकारी भी हो। हम अपने वातावरण में रहने वाले अन्य बच्चों को तुम्हारा उदाहरण देते हैं। वे भी इस बात से प्रेरणा लेते हैं। तुम्हें अपनी इस प्रतिभा को और अधिक निखारना है व विश्व में छाना है। तुम्हारी प्रतिभा व साधना अवश्य ही तुम्हारा मार्गदर्शन करेंगी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम्हारी इस जीत के लिए पता नहीं हमें कब लड्डू प्राप्त होंगे, इसकी मुझे प्रतीक्षा रहेगी।

तुम्हारी बहन

सविता

12. मतदाताओं की अपेक्षाओं पर खरे उतरने की कामना करते हुए अपने चाचाजी को चुनाव जीतने की बधाई देने के लिए एक पत्र लिखिए। *(CBSE 1993, A.I. CBSE 2004)*

कुशाल भारद्वाज
653, सुंदर नगरी
दिल्ली

21 अगस्त 2008

आदरणीय चाचाजी

सादर चरणस्पर्श प्रणाम!

मुझे अभी टेलीविजन पर पता चला है कि अपने इस वर्ष में सम्पन्न हुए लोकसभा चुनावों में अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी को भारी मतों से हरा दिया है। अब आप देश के सर्वोच्च सभा के सम्मानित सदस्य बन गए हैं। इसमें आपका तो सम्मान बलवती हुआ ही है, यह हमारे लिए भी कोई कम सौभाग्य व सम्मान की बात नहीं है। आप सांसद बन गए हैं, यह खबर सुनते ही मुझसे रहा नहीं गया और मैं आपको बधाई हेतु पत्र लिखने बैठ गया।

चाचाजी ईश्वर ने आपको समाज सेवा का जो मौका दिया है, मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप अपने दायित्व का पूर्णरूपेण निर्वाह करेंगे। आपको हमारे समस्त परिवार की ओर से शुभकामनाएँ। अनुज राहुल को मेरा स्नेह।

आपका प्रिय

कुशाल भारद्वाज

13. आप 74, पीतमपुरा, दिल्ली के निवासी ऋषिकेष गुप्ता हैं। आपके बड़े भाई की प्रोन्नति अध्यापक पद से प्राध्यापक पद पर हो गई है। अपने बड़े भाई को बधाई हेतु एक पत्र लिखिए।

ऋषिकेष गुप्ता
74, पीतमपुरा
दिल्ली

21 अगस्त 2008

आदरणीय भाईसाहब

सादर नमस्कार!

आपका पत्र मिला। यह बड़े ही हर्ष का विषय है कि आप प्रोन्नत होकर प्राध्यापक हो गए हैं। आप पिछले पंद्रह वर्षों से पूरी लगन व हिम्मत से विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। आप इस प्रोन्नति के हकदार भी थे। अपने पिछले पंद्रह वर्षों से आपने जो लगन विद्यार्थियों को शिक्षित करने में दिखाई थी, बिरले ही ऐसा करते हैं। आपकी प्रोन्नति आपकी मेहनत व प्रतिभा का ही परिणाम है। इस प्रोन्नति से मुझमें भी कुछ कर गुजरने की प्रेरणा आई है।

ईश्वर करे आप इसी प्रकार तरक्की की सीढ़ियाँ चढ़ते जाएँ। मेरी शुभकामनाएँ आपके साथ हैं। शेष मिलने पर।

आपका प्रिय

ऋषिकेष गुप्ता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

14. अपने सहपाठी को वार्षिक परीक्षा में प्रथम स्थान पर आने पर बधाई देते हुए पत्र लिखिए।
(A.I. CBSE 1998C)

अथवा

अपने मित्र को उसके परीक्षा में प्रथम आने पर बधाई देते हुए पत्र लिखिए। *(CBSE 1999)*

अथवा

तुम 540, शाहदरा, दिल्ली के रहने वाले देवेश हो। तुम्हारा मित्र सौरभ बोर्ड की परीक्षाओं में प्रथम आया है। उसे बधाई देते हुए पत्र लिखो।

देवेश
540, शाहदरा
दिल्ली

22 अगस्त, 2008

प्रिय सखा सौरभ

सप्रेम नमस्ते!

कल के अखबार वीर अर्जुन में तुम्हारा फोटो दिखाई दिया। उत्सुकतावश मैंने खबर पढ़ी तो पाया कि तुम अपनी बोर्ड की परीक्षा में पूरी दिल्ली में प्रथम स्थान पर आए हो। मेरा सीना गर्व से चौड़ा हो गया। तुम जैसे प्रतिभावान विद्यार्थी से ऐसी ही उम्मीद की जा सकती है। खबर पढ़ते ही मैं तुम्हें पत्र लिखने बैठ गया और मन में इतने विचार उमड़ रहे हैं कि वे सब मिलकर ही बताए जा सकते हैं। परमात्मा का कोटि-कोटि धन्यवाद कि तुम्हें यह सम्मान प्राप्त हुआ है।

प्रिय सौरभ! अपनी इस शानदार सफलता पर मेरी सहस्र बधाईयाँ स्वीकार कीजिए। मैं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करूँगा कि आने वाले समय में तुम दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की करो। परंतु हे मित्र! तरक्की की सीढ़ियों पर चढ़ने के साथ-साथ अपने इस तुच्छ मित्र को भूल न जाना। शेष बातें मिलने पर होंगी। बड़ों को आदर व छोटों को प्यार।

शेष कुशल मंगल।

तुम्हारा प्रिय मित्र
देवेश

15. आप 786, कैलाश नगर, भुवनेश्वर के निवासी दयाचंद हैं। आप अपने मित्र रमेश की बहन के विवाह पर किसी कारणवश उपस्थित नहीं हो पाएँगे। रमेश को एक बधाई पत्र लिखिए जिसमें आपके विवाह में उपस्थित न होने का कोई यथोचित कारण हो।

दयाचंद
786, कैलाश नगर
भुबनेश्वर

21 नवंबर, 2008

प्रिय मित्र रमेश

सप्रेम नमस्ते

यहाँ सब कुशल मंगल है। आशा करता हूँ कि आप भी कुशल होंगे। आपके द्वारा भेजा गया प्रिय बहन मोनिका के विवाह का निमंत्रण पत्र प्राप्त हुआ। यह बड़े ही हर्ष का विषय है कि कल गोद में खिलाई गई नन्हीं गुड़िया अपने नाजुक कंधों पर एक परिवार की जिम्मेदारी लेने जा रही है। ईश्वर दीदी व जीजा जी के नव-विवाहित जीवन में सुख-समृद्धि की वर्षा करे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

परंतु मित्र मैं अपने व्यापारिक कारणों के कारण विवाह में उपस्थित नहीं हो पाऊँगा। परंतु मित्र, मेरा शरीर भले ही विवाह मंडप में उपस्थित न हो, परंतु मेरा चित्त व हृदय वहीं उपस्थित रहेगा। मेरी व मेरे परिवार की ओर से दीदी के विवाह की लख-लख बधाइयाँ स्वीकार करो।

आपका प्रिय मित्र
दयाचंद

16. तुम रमेश हो व 319, रोहिणी, दिल्ली के निवासी हो। तुम्हारे मित्र अभिजीत सावंत ने अभी 'इंडियन आइडल गायन प्रतियोगिता' में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। अपने मित्र को इस उपलब्धि के लिए हार्दिक बधाई भेजिए।

रमेश
319, रोहिणी
दिल्ली

21 नवंबर, 2008

प्रिय अभिजीत
सप्रेम नमस्ते!

तुम्हारे विषय में एक मैग्जीन में पढ़ा। पढ़कर पता चला कि तुमने अभी 'इंडियन आइडल गायन प्रतियोगिता' में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। मेरा मन अपने मित्र को इस उपलब्धि के लिए हार्दिक बधाई भेजने को मचल उठा और मैं यह पत्र लिखने बैठ गया। स्कूल के समय से तुम्हें गायन में काफी रुचि थी। तुम्हारी गायन में इतनी लगन को देखते हुए मुझे पूर्ण विश्वास था कि एक दिन तुम गायन के शीर्ष को छुओगे। आज तुम्हें अपनी मंजिल पर खड़े देखकर मुझे भी प्रेरणा मिली है कि यदि इरादे बुलंद हों तो मंजिलें आसान हो जाती हैं।

मेरी तहे दिल से सहस्र बधाईयाँ स्वीकार करो। मित्र, इतनी ऊँचाई पर पहुँचकर अपने मित्र रमेश को भूल न जाना। जितना जल्दी हो सकेगा मैं तुमसे मिलने आऊँगा। शेष मिलने पर।

आपका प्रिय मित्र
रमेश

3. धन्यवाद हेतु पत्र (अनौपचारिक पत्र के संदर्भ में)

किसी के किसी कार्य में सहयोग देने पर, उपहार देने या किसी प्रकार का प्रसन्नतापूर्वक व्यवहार करने पर धन्यवाद-पत्र लिखने की आवश्यकता होती है। ऐसे पत्रों की कुछ विशेषताएँ होती हैं। ये बहुत लघु होते हैं व धन्यवाद या कृतज्ञता से आरंभ होते हैं। ये पत्र समाप्त धन्यवाद पर ही होते हैं। पत्र के मध्य में उपकार या सहयोग का महत्त्व बताया जाता है। पत्र में औपचारिक शिष्टता प्रकट न होकर गहन आत्मीयता और सच्चाई झलकती है।

17. मित्र आशीष को पत्र लिखकर उनके द्वारा आपके जन्म-दिवस पर भेजे गए उपहार के लिए कृतज्ञता वयक्त कीजिए। आप हैं कौशल, 3/24, गंगाधर बिल्डिंग, मदुरै। *(All India CBSE 2004, 2005)*

कौशल
3/24, गंगाधर बिल्डिंग
मदुरै

13 सितंबर, 2008

प्रिय मित्र आशीष,
प्रेम! स्नेह!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आपके द्वारा मेरे जन्मदिन पर भेजा गया बधाई पत्र व उपहार के रूप में कम्प्यूटर प्राप्त हुआ। यह एक बहुत ही आकर्षक कम्प्यूटर है। आप जानते थे कि मैंने अभी-अभी एक कम्प्यूटर कोर्स सीखने के लिए एक विद्यालय में दाखिला लिया था और मुझे कम्प्यूटर की अत्यंत आवश्यकता थी। पता नहीं आपने कैसे मेरे मन की यह बात पढ़ ली कि मुझे कम्प्यूटर की आवश्यकता है। इसकी सहायता से मैं अपना अभ्यास और बेहतर तरीके से कर सकता हूँ। इस उपहार के लिए एक बार पुनः धन्यवाद!

आदरणीया चाचीजी को सादर नमस्कार तथा पप्पू, मोनी को स्नेह!

भवदीय
कौशल

18. तुम 540, प्रतापनगर, जयपुर की निवासी सुलेखा हो। तुम्हें अपनी सखी संजीवनी ने पत्र द्वारा बधाई भेजी है, जिसमें तुम्हें जीवन में अधिक तरक्की करने की प्रेरणा दी गई है। अपनी सखी को इस बधाई-पत्र के प्रत्युत्तर में एक कृतज्ञता-पत्र लिखिए।

सुलेखा
540, प्रतापनगर
जयपुर

13 सितंबर, 2008

प्रिय सखी संजीवनी
प्रेम! स्नेह!

तुम्हारा बधाई पत्र मिला। पढ़कर अति प्रसन्नता हुई। तुम मेरी वास्तविक शुभचिंतक हो। वैसे तो मुझे ढेरों बधाई पत्र प्राप्त हुए। मेरे चाचा-चाची, मामा-मामी, मित्रों आदि सभी ने मुझे बधाई भेजी। सबने मुझसे ऊँचाई पर पहुँचने पर खुशी जताई थी। परंतु तुम्हारा बधाई पत्र अन्यों से एकदम अलग था। तुमने अपने बधाई पत्र में मुझे निरंतर मेहनत करने की प्रेरणा दी। तुमने मुझे प्रेरणा दी कि यह ऊँचाई अधिक नहीं है, मुझे और भी आगे जाना है। मेरी सखी, तुमने मुझे सफलता के क्षणों में ही नहीं, असफलता के क्षणों में भी उत्साह दिया है। मेरी इस सफलता में तुम्हारे उत्साह का अत्यधिक योगदान है।

किन शब्दों में तुम्हारी बधाई के लिए कृतज्ञता व्यक्त करूँ। मेरे पास शब्दों का अकाल पड़ गया है। शेष मिलने पर।

माता-पिता को सादर नमस्कार!

तुम्हारी तुच्छ सखी
सुलेखा

19. खोई हुई वस्तु को लौटाने के लिए किसी अपरिचित को एक कृतज्ञता प्रकट करने के लिए पत्र लिखिए।

अथवा

आप 53, अर्जुन मौहल्ला, मौजपुर, दिल्ली के निवासी विनीत हैं। आपका पर्स एक बस में छूट गया, जिसे हरिसिंह नामक एक अपरिचित व्यक्ति ने डाक से आपके घर पहुँचवा दिया। पर्स को लौटाने के लिए हरिसिंह को एक कृतज्ञता पत्र लिखिए जिसमें पर्स को लौटाने के लिए धन्यवाद भी प्रकट किया गया हो।

विनीत
53, अर्जुन मौहल्ला
मौजपुर
दिल्ली

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant
28 जनवरी, 2008

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सम्माननीय हरिसिंह जी

सादर नमस्कार!

यद्यपि हम दोनों का आपस में कोई पूर्व परिचय नहीं है तथापि आपने मेरे बस में छूटे पर्स को डाक द्वारा मेरे पास भिजवाकर यह सिद्ध कर दिया है कि इस झूठी दुनिया में, जहाँ चोरी-मक्कारी व स्वार्थ का बोलबाला है, आज भी मनुष्यता जीवित है। आप जैसे सच्चे मनुष्यों के कारण ही इस पृथ्वी पर जीवन बाकी है। आज भी चहुँ ओर फैले स्वार्थ के अंधकार में ईमानदारी रूपी दीपक की एक लौ भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। मेरे पर्स में मेरी बहुत सी महत्त्वपूर्ण वस्तुएँ थीं जैसे लाइसेंस, बस पास, परिचय पत्र आदि। उसमें दस हजार रुपये भी थे। पत्र पढ़कर मैंने गिने तो पूरे थे।

किन शब्दों में तुम्हारी ईमानदारी के लिए कृतज्ञता व्यक्त करूँ। शब्द नहीं हैं।

आपका हृदय से धन्यवाद!

भवदीय

विनीत

20. सुनील का भाई संदीप अचानक विद्यालय के हॉस्टल में बीमार पड़ गया था। उसके मित्र विपुल ने उसकी बहुत देखभाल की व दवाएँ इत्यादि दिलवाईं। आप सुनील की ओर से विपुल को कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए पत्र लिखिए।

सुनील
एम-85 वेंकटेश नगर
तिरुअनंतपुरम

11 फरवरी, 2008

प्रिय विपुल

परम स्नेह!

सर्वप्रथम मैं आपका आभार व्यक्त करता हूँ कि आपने मेरे अनुज संदीप की बीमार पड़ने पर हॉस्टल में इतनी अच्छी प्रकार देखभाल की कि कदाचित् मैं उसका सगा भाई होते हुए भी नहीं कर पाता। जो कर्तव्य मेरा था, उसे आपने अपना कर्तव्य समझकर श्रेष्ठतापूर्वक निभाया। प्रिय विपुल! आपके मन में मनुष्य की सेवा का जो जज्बा है उसे कभी समाप्त न होने देना। बुजुर्ग कहते हैं—नर सेवा नारायण सेवा। इस उक्ति को कहना अलग है और यथार्थ में लाना अलग।

विपुल! मैं आपका तहे दिल से ऋणी हूँ। समझ में नहीं आता कि मैं इस ऋण को कैसे चुकाऊँगा। इतना कह सकता हूँ कि यदि जीवन में कभी मेरी आवश्यकता हो, तो अवश्य याद करना। आपका पुनः धन्यवाद।

भवदीय

सुनील

21. गर्मियों की छुट्टियों में आपके एक पहाड़ी मित्र ने आपको अपने पास बुलाकर अनेक पर्यटन स्थलों की सैर कराई। इसके लिए उसका आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद पत्र लिखिए। *(CBSE 2005)*

अरविंदन
परीक्षा भवन
राजकीय उच्चतम माध्यमिक विद्यालय
दिल्ली

13 सितंबर, 2008

प्रिय मित्र सुरेंद्र

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab-Jammu

स्नेह!

अत्र कुशलम् त्रतास्तु। आज जब मैं अपने घर पर एकाकीपूर्ण बैठा हूँ, मुझे तुम्हारे साथ मसूरी में बिताए दिनों की अत्यंत याद आ रही है। देहरादून के पास उत्तरांचल के प्रकृति के आँचल में बसा यह क्षेत्र मुझे अपनी ओर अब भी आकर्षित करता है। दिल्ली जैसे भीड़-भाड़ भरे एकाकीपूर्ण जीवन की तुलना में मसूरी के नैसर्गिक सौंदर्य की तुलना करना बेमानी है।

मित्र, मैं तुम्हारा कृतज्ञ हूँ कि तुमने मुझे इस प्रकृति का इतने पास से एहसास कराया। उससे भी अधिक था तुम्हारा प्रेममय निमंत्रण व स्नेह। मुझे जब-जब इन स्थलों की याद आएगी, तुम भी याद आओगे। तुम्हारी इस प्रेममयी आवभगत के लिए हार्दिक धन्यवाद!

माता-पिता को सादर नमस्कार देना!

भवदीय

अरविंदन

4. संवेदना व्यक्त करने हेतु पत्र (अनौपचारिक पत्र के संदर्भ में)

अपने किसी मित्र, संबंधी या किसी परिचित की किसी हानि या मृत्यु पर लिखे जाने वाले पत्रों को संवेदना पत्र कहते हैं। ऐसे पत्रों में पत्र की भाषा अत्यंत सहानुभूतिपूर्ण होती है। सर्वप्रथम पत्र की पंक्ति सहानुभूतिपूर्ण ही होनी चाहिए। दुख के कारण पर सहानुभूतिपूर्ण टिप्पणी करने के पश्चात् हमदर्दी जतानी चाहिए, उदाहरणार्थ, 'यह सचमुच एक बहुत बड़ी हानि है व ईश्वर आपको इस मुसीबत का सामना करने की शक्ति दे', आदि। तत्पश्चात् सांत्वना देनी चाहिए जैसे, 'जो वस्तु चली गई व वास्तव में हमारी थी ही नहीं, उसपर किसी का अधिकार नहीं था।' या 'ईश्वर के सामने मनुष्य की एक नहीं चलती'। यदि किसी व्यक्ति का देहांत हो गया हो तो, 'होनी तो होकर ही रहती है', 'आत्मा तो अजर-अमर है, केवल शरीर ही नाशवान् है' आदि आदि लिखना चाहिए। इसके बाद शोकाकुल व्यक्ति को साहस प्रदान करना चाहिए, 'इस प्रकार की मुसीबतों में असीम साहस दिखाने की आवश्यकता है', 'आप घर के बड़े हैं, आपको समझ है जो चीज बनी है उसे समाप्त भी होना है'। अंत में अपने सहयोग की पेशकश करनी चाहिए। जैसे, 'दुःख की इस घड़ी में यदि मेरे लिए कोई कार्य हो तो मुझे अत्यंत प्रसन्नता होगी' आदि।

कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं:

22. मित्र के पिता के आकस्मिक देहांत पर एक शोक-पत्र लिखो।

नरेंद्र

10, आदित्य सदन

कनाट प्लेस

दिल्ली

15 जुलाई, 2008

प्रिय मित्र सुनील

सप्रेम नमस्कार!

कल मुझे यह अत्यंत दुखद समाचार प्राप्त हुआ कि तुम्हारे पिता का देहांत हो गया है। सुनकर हृदय को चोट पहुँची। कुछ दिन पूर्व ही उनसे मेरी मुलाकात हुई थी। वे पूर्ण रूप से कुशलमंगल थे। अच्छे हँस बोल रहे थे। कोई आशा ही नहीं कर सकता था कि यह सब इस प्रकार हो जाएगा। फिर न जाने, किस प्रकार यह अनहोनी घट गई।

सुनील! संकट की इस घड़ी में अपने आपको संभाले रखना। तुम घर में चारों बहनों में सबसे बड़े एकमात्र भाई हो। परिवार का दायित्व तुम्हारे कंधों पर आ गया हैं। ऐसे संकट में निराश होने की आवश्यकता नहीं। मनुष्य को परखने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के लिए ईश्वर उसकी तरह-तरह से परीक्षा लेते हैं। यह भी तुम्हारी परीक्षा की घड़ी है। संकट की इस घड़ी में मैं सदैव तुम्हारे साथ हूँ। परमपिता परमात्मा पिताजी की आत्मा को शांति प्रदान करे व तुम्हें दुख सहने की सामर्थ्य दे।

तुम्हारा शोकाकुल मित्र
नरेंद्र

23. आप डिब्रूगढ़, असम के नवोदय विद्यालय के श्यामलाल छात्रावास में कमरा नंबर 18 में रहते हैं। आपका नाम भूपेंद्र है व आपका मित्र गजेंद्र कक्षा 9 में अनुत्तीर्ण हो गया है। उसे एक संवेदना पत्र लिखो जिसमें उसके लिए कोई प्रेरणा भी हो।

भूपेंद्र
18, श्यामलाल छात्रावास
डिब्रूगढ़
असम

14 फरवरी, 2008

प्रिय मित्र गजेंद्र
सप्रेम नमस्ते!

मुझे कल आपके बड़े भाई दीपक के द्वारा भेजा गया पत्र प्राप्त हुआ। दीपक के 75 प्रतिशत अंक देखकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई। परंतु मुझे यह जानकर अत्यंत दुःख हुआ कि तुम कक्षा नवीं में अनुत्तीर्ण हो गए हो। मैं इसकी कल्पना भी नहीं कर सकता था। इतना मेधावी विद्यार्थी जो कक्षा 8 में अपने संपूर्ण विद्यालय में सबसे अधिक 85 प्रतिशत अंक लाया हो, उसकी यह स्थिति! अवश्य ही तुम किन्हीं और मामलों में पड़ गए होंगे।

खैर, गजेंद्र, जीवन में सफलताएँ व असफलताएँ तो चलती ही रहती हैं। यदि कोई व्यक्ति मेहनत करते हुए असफल हो गया हो तो बात और है। परंतु हमें असफलताओं से भी सबक लेना चाहिए। असफलता एक बहुत बड़ी सफलता का द्योतक भी है, बशर्ते व्यक्ति दृढ़-निश्चयी हो। महाराणा प्रताप ने घास की रोटियाँ खाईं परंतु अकबर की आधीनता स्वीकार नहीं की थी। ईश्वर तुम्हें इस दुःख से उबरने की शक्ति दे। यदि मेरी कभी किसी सहायता की आवश्यकता हो तो अवश्य याद करना।

तुम्हारा मित्र
भूपेंद्र

24. आप सैक्टर 11, नौएडा, जनपद गौतमबुद्ध नगर के निवासी पुलकित हैं। आपके मौसेरे भाई दिवाकर के निवास स्थान 324, देशराज कालोनी, पानीपत, हरियाणा में चोरी हो गई है। चोर घर का सभी सामान ले गए हैं। आप अपने मौसेरे भाई को इस मामले पर एक संवेदना पत्र लिखें।

पुलकित
11, नौएड़ा
जनपद गौतमबुद्धनगर
उत्तर प्रदेश

15 जुलाई, 2008

प्रिय भ्राता दिवाकर
प्रेम! स्नेह!

मुझे यह समाचार मिलकर अत्यंत दुख पहुँचा कि तुम्हारे नए मकान में, जहाँ तुमने अभी-अभी निवास किया था,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चोरी हो गई है। यह भी पता चला है कि चोर घर का लगभग सारा सामान ले गए हैं व लाखों का नुकसान हो गया है। आजकल चोरों का हौसला बहुत बढ़ गया है। घर को एक मिनट के लिए भी अकेला छोड़ना मुहाल हो गया है। परंतु दिवाकर यह भी एक अच्छी बात है कि घर के किसी सदस्य को कोई हानि नहीं पहुँची।

भ्राता दिवाकर, यह सब भाग्य का खेल है। जो हानियाँ हमारी किस्मत में लिखी हैं वे होकर ही रहती हैं। तुम धैर्य रखो। ईश्वर भविष्य में इतना देगा कि तुम यह दुख भूल जाओगे। चोरों का न तो कोई भाग्य होता है और न ही चोरी से किसी का काम चलता है।

भाई! ऐसे दुःख की घड़ी में मैं सदैव तुम्हारे साथ हूँ। यदि किसी प्रकार की कोई समस्या हो, आर्थिक या कोई अन्य, तो मुझसे कहने में हिचकना मत। मैं यथा-संभव मदद करूँगा। यदि दुख में अपने ही काम नहीं आयेंगे तो कौन आयेगा? भाभी को मेरी ओर से सांत्वना देना।

तुम्हारा शोकाकुल अनुज
पुलकित

25. आपकी सखी मनोरमा को एक दुर्घटना में चोट लगी है। आप उसे एक पत्र लिखकर सांत्वना दें।

प्रिया
20, लॉर्ड करजन रोड
कनाट प्लेस
दिल्ली

27 दिसंबर, 2008

प्रिय सखी मनोरमा
सप्रेम नमस्ते!

कल मुझे टेलीफोन पर यह अत्यंत दुखद समाचार प्राप्त हुआ कि तुम जिस बस में यात्रा कर रही थीं, उसकी एक ट्रक से भिड़ंत हो गई थी और तुम्हें काफी चोटें आईं थीं। आशा है कि तुम अब स्वस्थ होगी। दुर्घटना का नाम सुनते ही मन में न जाने कैसे कैसे भयानक ख्याल आने लगते हैं। पर ईश्वर का शुक्र है कि बस में किसी को गंभीर चोट नहीं आई। मुझे तो तुम्हारी चोटग्रस्त स्थिति की कल्पना करते ही अत्यंत दुख हो रहा है। ईश्वर की कृपा है कि हड्डी में कोई क्रैक नहीं आया।

अभी वार्षिक परीक्षाएँ आने वाली हैं। परंतु मेरी पूर्ण आशा है कि तुम परीक्षाओं से पूर्व ठीक भी हो जाओगी व अपनी तैयारियाँ भी कर सकोगी।

तुम्हारी शुभचिंतक
प्रिया

26. अपने मित्र देवीलाल की फैक्ट्री में आग लगने पर जीवनलाल सरकार, 445, इंडस्ट्रियल एस्टेट, नोएडा की ओर से संवेदना पत्र लिखिए।

जीवनलाल सरकार
445, इंडस्ट्रियल एस्टेट
नौएडा

27 दिसंबर, 2008

प्रिय मित्र देवीलाल
सप्रेम नमस्ते!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जब से मुझे तुम्हारी फैक्ट्री में आग लगने की खबर का पता चला है, मैं तुम्हें पत्र लिखने को व्याकुल हो उठा। ईश्वर की कृपा से फैक्ट्री में किसी मजदूर के हताहत होने का कोई समाचार नहीं है। यह भी अच्छा ही है कि मैंने और आपने दो मास पहले अपनी-अपनी फैक्ट्रियों के सामान का बीमा करवाया था। अब काफी हद तक घाटे की भरपाई हो जाएगी। परंतु फिर भी तुम्हारी आर्थिक स्थिति को बड़ा तगड़ा झटका लगा होगा। मित्र, यदि किसी प्रकार की कोई समस्या हो तो मुझे अवश्य लिखना। यदि मैं तुम्हारे किसी भी काम आ सका तो मैं स्वयं को अत्यंत भाग्यशाली समझूँगा।

देवीलाल! इस मुसीबत का हिम्मत से सामना करना। मैं पुनः कहता हूँ कि यदि किसी प्रकार से मेरी सहायता की आवश्यकता हो तो लिखना। मैं भरसक प्रयत्न करूँगा।

तुम्हारा शुभचिंतक
जीवनलाल सरकार

27. अपने मित्र को उसकी माताजी के देहांत पर एक शोक-पत्र लिखिए। आप हैं नकुल, निवासी सी-95, गंगाधर नगर, इन्दौर।

नकुल
सी-95, गंगाधर नगर
इन्दौर

27 दिसंबर, 2008

प्रिय मित्र देवेश
प्रेम! स्नेह!

कल मुझे यह अत्यंत दुखद समाचार प्राप्त हुआ कि तुम्हारी माताजी का देहांत हो गया है। सुनकर हृदय को झटका लगा। कुछ दिन पूर्व ही उनसे मेरी मुलाकात हुई थी। वे पूर्ण रूप से कुशलमंगल थीं। अच्छी प्रकार हँस बोल रही थीं। कोई आशा नहीं थी कि वे इस प्रकार चल बसेंगी। पता नहीं किस प्रकार यह अनहोनी घटना घट गई।

सुनील! संकट की इस घड़ी में अपने आपको संभाले रखना। तुम घर में सबसे बड़े हो। परिवार को सांत्वना देने का तुम्हारा कर्तव्य है। ऐसे में निराश होने की आवश्यकता नहीं। जो जीव इस पृथ्वी पर आया है, उसे एक दिन जाना ही है। अंतर यही है कि कुछ लोग पहले चले जाते हैं, कुछ देर से। दुःख की इस घड़ी में मैं सदैव तुम्हारे साथ हूँ। परमपिता परमात्मा माताजी की आत्मा को शांति प्रदान करे व तुम्हें दुख सहने की सामर्थ्य दे।

तुम्हारा शोकाकुल मित्र
नकुल

5. निमंत्रण हेतु पत्र

अपने किसी मित्र, संबंधी या किसी परिचित को किसी शुभ अवसर पर बुलाने के लिए निमंत्रण पत्र लिखे जाते हैं। इनकी दो प्रकार की शैली होती हैं। कुछ पत्र व्यक्तिगत होते हैं व कुछ सामाजिक। व्यक्तिगत जहाँ स्वयं लिखे जाते हैं वहीं सामाजिक पत्र छपवाए जाते हैं। व्यक्तिगत निमंत्रण पत्र आम अनौपचारिक पत्रों की तरह होते हैं जबकि सामाजिक निमंत्रण पत्रों की लेखन विधि अलग होती है।

व्यक्तिगत निमंत्रण पत्र

28. आप आकाश जैन, निवासी बी 540-महबूब नगर, हैदराबाद के निवासी हैं। अपने मित्र सुमित को अपने जन्म दिन उत्सव में आमंत्रित करने हेतु पत्र लिखिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अथवा

अपने मित्र को अपने जन्म दिन पर निमंत्रित करने के लिए पत्र लिखिए। *(All India CBSE 1999)*

आकाश जैन
बी 540, महबूब नगर
हैदराबाद

15 जनवरी, 2008

प्रिय रंजन
स्नेह!

आशा करता हूँ कि आप स्वस्थ व प्रसन्न होंगे। मैं यहाँ कुशल हूँ। समाचार यह है कि इस बार मेरे माता-पिता द्वारा मेरा जन्मदिन मनाने की तैयारी है। अतः तुम आने वाली 10 फरवरी को मुझे समर्पित कर दो। तुम दो दिन पूर्व ही यहाँ आ जाना और जब तक तुम्हारा मन चाहे तब तक रहना। यदि तुम जल्दी जाना भी चाहोगे तो भी मैं तुम्हें जाने न दूँगा। अभी कार्यक्रम के निमंत्रण पत्र छपने शेष हैं। जब भी छपेगा मैं तुम्हारे पास भेज दूँगा। याद रखना, 10 फरवरी।

तुम्हारा मित्र
आकाश जैन

29. आप संजय शुक्ला, निवासी सी 356-कृष्ण एंक्लेव, मथुरा के निवासी हैं। अपने पुत्र के जन्म के उपलक्ष में आप नामकरण संस्कार करा रहे हैं। अपने मित्र सुभाष को पत्र लिखिए जिसमें उसके लिए नामकरण संस्कार में आने का निमंत्रण हो।

संजय शुक्ला
सी 356, कृष्ण एंक्लेव
मथुरा

11 मार्च, 2008

आदरणीय भाई साहब
सादर नमस्कार!

मुझे आशा नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि आप व आपका समस्त परिवार कुशल मंगल होगा। मैं आपको एक खुशी की सूचना देना चाहता हूँ कि हमें परसों ही पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई है। पुत्र के नामकरण संस्कार की तारीख 23 मार्च, 2007 है। इस अवसर पर मैं आपको व आपके समस्त परिवार को मथुरा आने का निमंत्रण देता हूँ। अतिथियों को किसी प्रकार की समस्या न हो, इसके लिए रहने, खाने व सोने का संपूर्ण प्रबंध है। मेरा नवजात पुत्र तुम्हारा आशीर्वाद पाकर धन्य हो जाएगा। कृपया पत्रोत्तर देकर अपने आगमन की पुष्टि करें।

तुम्हारा मित्र
संजय शुक्ला

30. आप अर्जुन रामपाल, निवासी 38-अंधेरी, मुंबई के निवासी हैं। आप एक नई रेडिमेड गारमेंट्स की दुकान खोलने जा रहे हैं जिसके मुहूर्त के उपलक्ष में आप अपने मित्र राजन को निमंत्रित करना चाहते हैं। राजन के नाम एक निमंत्रण पत्र लिखिए।

अर्जुन रामपाल
38, अंधेरी
मुंबई

29 मार्च, 2008

©2020 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आदरणीय भाई साहब

सादर नमस्कार!

मुझे आशा नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि आप व आपका समस्त परिवार कुशल मंगल होगा। मैं आपको सूचना देना चाहता हूँ कि मैं एक नए बने बनाए कपड़ों के शोरूम का शुभारंभ आने वाले मास की दस तारीख से कर रहा हूँ। दुकान का मुहूर्त 10 अप्रैल, 2008 को प्रातः दस बजे किया जाएगा। पंडित जी के अनुसार दुकान आरंभ करने का यही शुभ मुहूर्त है। मुहूर्त दोपहर 12 बजे तक समाप्त हो जाएगा। तत्पश्चात् प्रीतिभोज का भी प्रावधान है। आपसे सपरिवार आने की विनम्र प्रार्थना है कि आप बिना कोई बहाना बनाए हमारे शोरूम के मुहूर्त में पहुँचकर हमें कृतार्थ करें।

तुम्हारा मित्र

अर्जुन रामपाल

सामाजिक निमंत्रण पत्र

31. नीचे दिए गए विवरण के आधार पर विवाह का निमंत्रण पत्र तैयार कीजिए।

38, जीटीबी एंक्लेव, नंदनगरी, दिल्ली के निवासी
वीरेंद्र (सुपुत्र श्री अभय सिंह व श्रीमती विमला देवी) व
ऋतु (सुपुत्री श्रीमती एवं श्री सर्वेश्वरदयाल, गोरखपुर वासी) का
विवाह कार्यक्रम 1 अप्रैल, 2008, दिन बुधवार
घुड़चढ़ी शाम 5 बजे तथा बारात 7 बजे प्रस्थान करेगी
2 अप्रैल 2008 वीरवार को शाम 7.00 बजे स्वागत भोज होगा।

श्रीमती व श्री अभयसिंह अपने सुपुत्र

चिरंजीव वीरेंद्र

एवं

आयु० ऋतु

(सुपुत्री श्रीमती एवं श्री सर्वेश्वरदयाल, गोरखपुर)

के शुभ विवाहोत्सव पर

आपको अपने निवास स्थान 38, जीटीबी इंक्लेव, नंदनगरी, दिल्ली पर सादर आमंत्रित करते हैं।

-: कार्यक्रम :-

दिनांक, 1 अप्रैल 2008, बुधवार

घुड़चढ़ी : 5.00 बजे सायं

बारात प्रस्थान : 7.00 बजे सायं

दिनांक, 2 अप्रैल 2008, वृहस्पतिवार

स्वागत भोज : 7.00 बजे शाम

विनीत:

स्वागतोत्सुक:

सभी मित्र एवं संबंधी

लक्ष्मण सिंह

लक्ष्मी देवी

32. आप शशिकांत हैं। आपने हरिहरन कालोनी, कोलकाता, में मकान नंबर 355 का नया निर्माण कराया है। 16 मार्च, शनिवार को प्रातः 9.00 बजे आप गृह-प्रवेश करने जा रहे हैं। हवन के पश्चात् प्रीतिभोज का प्रबंध होगा। एक निमंत्रण-पत्र तैयार कीजिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रियवर!

परमात्मा की असीम अनुकंपा से हम
16 मार्च 2008, शनिवार
अपने नव-निर्मित निवास
355, हरिहरन कालोनी, कोलकाता
में निवास हेतु प्रस्थान कर रहे हैं।

गृह प्रवेश

के इस शुभ अवसर पर
आप सादर आमंत्रित हैं

कार्यक्रम

हवन : प्रातः 9 बजे
जलपान : पूर्वाह्न 10:30 बजे

विनीत

शशिकांत एवं समस्त परिवारजन
दूरभाष: 234592

33. आप हरिहरन, निवासी 2059ए, टैंक रोड, जोधपुर हैं। आप जोधपुर में नई रेडीमेड गारमेंट्स की दुकान के मालिक हैं। आप दिनांक 01.01.2008 को प्रातः 11.00 बजे अपनी नई दुकान का उद्‌घाटन कर रहे हैं। एक निमंत्रण पत्र तैयार कीजिए।

वक्रतुंड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव, सर्वकार्येषु सर्वदा ।।

हम

श्री वैष्णवी रेडीमेड गारमेंट्स

के नाम से 2059ए, टैंक रोड, जोधपुर
में एक नई दुकान का शुभारंभ कर रहे हैं।
इसके उद्‌घाटन अवसर पर आप सपरिवार
01.01.2008 बुधवार, प्रातः 11.00 बजे
सादर आमंत्रित हैं।

विनीतः

यश अरोड़ा
मैसर्ज श्री वैष्णवी रेडिमेड गारमेंट्स

6. अन्य विविध पत्र

34. अपने छोटे भाई को कुसंगति से बचने की सलाह देते हुए एक चेतावनी पत्र लिखिए।

इंद्रकुमार
बी-456, अमर कालोनी
नई दिल्ली-110 064

15 जनवरी, 2008

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रिय सोनू

चिरंजीव रहो!

आज तुम्हारे प्रधानाचार्य का पत्र मिला। उसे पढ़कर अत्यंत दुःख हुआ कि तुम कुसंगति में फँस गए हो। ऐसे विद्यार्थियों के साथ उठते-बैठते हो, जिनके जीवन का न तो कोई लक्ष्य है और न ही पढ़ाई-लिखाई की ओर ध्यान है।

जरा सोचो, जब तुमने छात्रावास में प्रवेश लिया था, उस समय तुम्हारे सभी अध्यापक तुम्हारी प्रशंसा करते नहीं थकते थे। वे कहा करते थे कि सोनू हमारे विद्यालय का नाम रोशन करेगा। मगर अब वही कहते हैं कि तुम्हारी परीक्षा में उत्तीर्ण होने में भी आशंकाएँ हैं।

बुरी संगति का परिणाम बड़ा ही भयंकर होता है। जो भी व्यक्ति कुसंगति में फँस जाता है, वह किसी काम का नहीं रहता। उसमें अनेक व्यसन तथा दुर्गुण आ जाते हैं। विशेष रूप से विद्यार्थी-जीवन में यदि कोई छात्र कुसंगति में पड़ जाता है, तो वह बड़ा होकर न तो अपना, न अपने परिवार का तथा न अपने राष्ट्र का हित कर सकता है।

अतः तुम मेरा कहना मानो, अभी कुछ नहीं बिगड़ा, बुरे छात्रों की संगति छोड़ो और अध्ययन में मन लगाओ। मुझे पूर्ण आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि तुम अपने खोए हुए स्थान को पुनः प्राप्त करोगे तथा कु:संगति से बचोगे। घर पर सब कुशलपूर्ण है। अपनी कुशलता का समाचार लिखते रहना। शेष अगले पत्र में।

तुम्हारा हितैषी

इंद्र कुमार

35. अपने बड़े भाई को एक पत्र लिखिए, जिसमें उनके द्वारा दी गई सीख का आचरण करने का आश्वासन हो। *(CBSE 1993)*

दीपक

परीक्षा भवन

दिल्ली-110007

20 फरवरी 2008

पूज्य भाई साहब

सादर चरण स्पर्श!

मैं कुशलपूर्वक हूँ। आशा है कि आप सभी कुशल होंगे।

भाई साहब! आपका कृपा-पत्र पाकर मन बहुत प्रसन्न हुआ। आपने मुझे जो एक आदर्श और सच्चा विद्यार्थी बनने की शिक्षा दी है, उसे मैंने अपने इस जीवन में उतारने के लिए कमर कस ली है। मैं बिल्कुल हृदय से कह रहा हूँ कि मैंने सभी प्रकार के अनाचारों व दुराचारों को छोड़ने का दृढ़ संकल्प कर लिया है। इससे मुझे बहुत आनंद एवं सुख अनुभव हो रहा है। धीरे-धीरे मैं पहले से अधिक संतुष्टि व शांति को प्राप्त करने लगा हूँ। इस तरह मैं आपको यह आशा एवं विश्वास दिलाता हूँ कि मैं आपकी प्रत्येक आज्ञा का पालन तन-मन से करूँगा।

मेरी ओर से पूज्य पिताजी व माताजी को सादर चरण स्पर्श। पत्र की प्रतीक्षा में,

आपका अनुज

दीपक

36. अपने बड़े भाई को एक घड़ी खरीदने के लिए रुपये भेजने का निवेदन करते हुए पत्र लिखिए। *(CBSE 1993)*

प्रसेनजीत सिंह

परीक्षा भवन

दिल्ली-110002

14 फरवरी, 2007

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पूज्य भाई साहब

सादर चरण स्पर्श!

मैं कुशलपूर्वक हूँ। आशा है कि आप सभी कुशल होंगे।

आदरणीय भाई-साहब! मेरी परीक्षा आगामी 2 मार्च से आरंभ होने वाली है। इसकी तैयारी में मैं जी-जान से जुट गया हूँ। परेशानी की बात यह है कि समय देखने के लिए कोई घड़ी नहीं है। इससे कार्य का ठीक समय मुझे ज्ञात नहीं होता। फलत: कोई भी कार्य समयानुसार न पूरा होता है और न ही ठीक से ही हो पाता है। इसका प्रभाव मेरी परीक्षा पर भी पड़ेगा।

अत:एव आपसे सादर निवेदन है कि आप मुझे कोई भी एक घड़ी यथाशीघ्र खरीदने के लिए पैसे भेज दें। समय का विभाजन करके मैं न केवल योजनाबद्ध ढंग से अध्ययन करूँगा, अपितु बहुत अच्छे अंक भी प्राप्त कर लूँगा।

मेरी ओर से पूज्य पिताजी व माताजी को सादर चरण स्पर्श। पत्र की प्रतीक्षा में,

आपका अनुज

प्रसेनजीत सिंह

37. अपने मित्र को पत्र लिखकर साक्षरता अभियान के अंतर्गत आपके द्वारा किए जा रहे कार्यों का विवरण दीजिए। *(CBSE 1993C)*

अतुल

परीक्षा भवन

दिल्ली-110001

14 फरवरी, 2008

परम मित्र योगेश

प्रेम! स्नेह!

तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ। पढ़कर प्रसन्नता हुई कि तुम मेरे प्रत्येक विचारों व कार्यों से सहमत हो। मित्रवर! तुम्हें यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव होगा कि हमारे विद्यालय के कुछ विद्यार्थियों के दल को साक्षरता अभियान के लिए चुन लिया गया है। उस अभियान दल में मैं भी शामिल हूँ।

हम लोगों के इस अभियान दल ने सभी निरक्षरों को साक्षर बनाने का दृढ़ संकल्प कर लिया है। यही नहीं कुछ निरक्षरों को पढ़ाना भी आरंभ कर दिया गया है। इस अभियान में हम लोगों ने 100 निरक्षरों को पढ़ाने की सूची बना ली है। मैं इस अभियान दल का निरीक्षक हूँ। इसलिए मुझे अत्यधिक मेहनत करनी पड़ती है। प्रसन्नता की बात यह है कि समाचार पत्रों में भी इस अभियान दल की प्रशंसा की गई है।

आशा है कि तुम इससे प्रेरणा लोगे। इस विषय में अपना विचार प्रस्तुत करो।

इस विश्वास के साथ!

तुम्हारा मित्र

अतुल

38. बड़ी बहन के नाते अपने भाई को रक्षाबंधन के अवसर पर राखी भेजते हुए पत्र लिखिए।

इंदु

35, दरियागंज

दिल्ली-110001

14 अगस्त, 2008

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रिय मनोज

शुभाशीर्वाद!

मैं सपरिवार मंगलपूर्वक हूँ। तुम्हारी मंगलकामना किया करती हूँ। मैं तुम्हें आने वाले पवित्र पर्व रक्षाबंधन के शुभ अवसर पर भाई-बहन के अमर प्रेम के प्रतीक स्वरूप 'राखी' भेज रही हूँ। परीक्षा के कारण तुम भी आने में असमर्थ हो। इसीलिए इसे डाक के द्वारा भेज रही हूँ। समय मिलते ही तुम अवश्य आओगे, ऐसा मुझे विश्वास है। यहाँ पर पिताजी, माताजी एवं छोटी बहन मंजू सब ठीक से हैं।

'राखी' प्राप्त होते ही पत्र लिखोगे। इस विश्वास के साथ।

तुम्हारी बड़ी बहन

इंदु

39. अपने पिता को पत्र व्यवहार करके बताइए कि आपके विद्यालय में वार्षिकोत्सव किस प्रकार मनाया गया।

राकेश

356, सत्य साँई एंक्लेव

पुट्टापर्थी

30 मार्च, 2008

पूज्य पिताश्री

सादर चरण स्पर्श!

पिछले कई दिनों से आपका कोई कृपा-पत्र प्राप्त नहीं हुआ। थोड़ा चिंतित था। इधर मैं भी आपको कोई पत्र नहीं लिख सका, क्योंकि हमारे विद्यालय में वार्षिकोत्सव की तैयारियाँ चल रही थीं। कल हमारा वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ। अत: मैंने आज सोचा कि आपको पत्र द्वारा इसका विवरण लिख भेजूँ।

इस बार हमारे विद्यालय की रजत जयंती मनाई गई थी। इस अवसर पर वार्षिकोत्सव में अनेक प्रकार के सांस्कृतिक व रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए थे। कई गणमान्य अतिथि वहाँ इस अवसर पर उपस्थित थे। सर्वप्रथम राष्ट्रीय गान हुआ। तत्पश्चात् प्रधानाचार्य ने अपना भाषण सुनाया। वहाँ प्रदेश के विधायक जी भी उपस्थित थे। उन्होंने कार्यक्रम पेश करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कारों से सम्मानित किया। यहाँ शास्त्रीय संगीत व गायन का भी प्रोग्राम था।

यदि आप इस अवसर पर पधारते तो इस मनोरंजक तथा आकर्षक कार्यक्रम का आनंद लेते।

मेरी पढ़ाई ठीक प्रकार से चल रही है। पूज्य माताजी को सादर प्रणाम कहिएगा। मीना और सोनू को शुभ प्यार।

आपका आज्ञाकारी पुत्र

राकेश

40. अपनी माताजी की बीमारी की सूचना एक पत्र के द्वारा अपने मामाजी को दीजिए।

राहुल

परीक्षा भवन

भुवनेश्वर

14 अगस्त, 2008

पूज्यनीय मामाजी

सादर चरण स्पर्श!

मैं कुशलपूर्वक हूँ। आपकी कुशलता चाहता हूँ। मैं अपनी पढ़ाई भली-भाँति कर रहा हूँ। पूज्य मामाजी! दु:ख एवं चिंता की बात यह है कि आजकल माताजी का स्वास्थ्य ठीक नहीं है। उनको रक्तचाप और दिल का दौरा आज से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पंद्रह रोज पहले पड़ा था। इसीलिए वह अस्पताल में रहीं। खुशी की बात यह है कि अब उनके स्वास्थ्य में सुधार आ रहा है। डॉक्टर का कहना है कि अब वह ठीक हो जाएगी।

अत:एव आपको समय मिले तो आप एक-दो दिन के लिए आ जाइए। माताजी से भेंट कर लीजिए। आपको वह याद भी कर रही हैं, शेष सब ठीक है। पत्र की प्रतीक्षा में।

आपका भानजा

राहुल

41. बहन की ओर से छात्रावास में रहने वाले भाई को नियमित व्यायाम का महत्त्व बताते हुए पत्र लिखिए। *(CBSE 2006)*

दीपिका

बी-32

हरिवंश एंक्लेव

इलाहाबाद

26 अगस्त 2007

प्रिय सुधांशु

शुभाशीष!

कई दिनों से तुम्हारी ओर से कोई पत्र की प्राप्ति नहीं हुई थी। कुछ चिंता सी मन-मस्तिष्क में थी। परंतु आज की डाक से माताजी का पत्र आया तो मन हलका हो गया। परंतु पत्र पढ़कर मुझे तुम्हारे बारे में निराशा हुई। माता जी ने तुम्हारे स्वास्थ्य के विषय में चिंता प्रकट की थी। उन्होंने लिखा है कि तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता जिसका कारण तुम्हारी अनियमित जीवनचर्या है।

प्रिय भाई! स्वास्थ्य सबसे बड़ी संपत्ति है। जिसके पास सारे विश्व की नेमतें हों, परंतु स्वास्थ्य अच्छा न हो, वे नेमतें व्यर्थ। मनुष्य इस पृथ्वी पर पाए जाने वाली वस्तुओं का रसपान केवल तभी कर सकता है जब उसका स्वास्थ्य अच्छा हो।

शरीर को पुष्ट बनाने में व्यायाम का बहुत योगदान होता है। व्यायाम न केवल शरीर की माँसपेशियाँ दृढ़ करता है बल्कि चित्त को भी प्रसन्न करता है। इससे शरीर में स्फूर्ति व सौंदर्य की वृद्धि होती है। शरीर में रक्त संचरण भी बढ़ता है। इससे आलस्य दूर भागता है व पढ़ाई में भी मन लगता है।

मुझे विश्वास है कि तुम मेरी सलाह पर ध्यान केंद्रित करोगे व व्यायाम की आदत डालकर अपने शरीर की दुर्बलता दूर करोगे।

तुम्हारी बहन

दीपिका

II. औपचारिक पत्र

औपचारिक पत्र सगे संबंधियों को नहीं लिखे जाते। अनौपचारिक पत्रों के सर्वथा विपरीत ये पत्र व्यावसायिक, संपादकीय, शिकायती आदि होते हैं। इस प्रकार के पत्र में अनावश्यक विस्तार से बचना चाहिए। पत्र जितना संक्षिप्त व गठा हुआ होगा, उतना ही अधिक प्रभावशाली भी होगा। संक्षिप्तता का अर्थ यह भी नहीं कि पत्र अपने-आप में पूर्ण न हो। जो कुछ भी पाठक को कहा जाना है, वह व्यर्थ के शब्द-जाल से मुक्त होना चाहिए। यही नहीं किसी बात की बार-बार आवृत्ति भी आपकी अविद्वता का प्रदर्शन ही होगा। अतः जो कुछ भी पत्र में कहा जाए, वह साफ, सरल भाषा तथा संक्षेप में होना चाहिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

1. प्रार्थना-पत्र

पाठ्यक्रम में इस प्रकार के पत्र विद्यालय के प्रधानाचार्य को लिखने के लिए पूछे जाते हैं। इन प्रार्थना पत्रों की एक निश्चित शैली होती है। ऐसे पत्र छात्रों द्वारा लिखे जाते हैं इसलिए इनमें प्रधानाचार्य के आदर का भाव होता है। इनकी संरचना इस प्रकार है:

सेवा में
प्राचार्य महोदय/प्रधानाचार्य जी
विद्यालय का नाम . . . .
विद्यालय का स्थान . . . . . .
विषय . . . . . .
संबोधन (प्रधानाचार्य को)

सविनय निवेदन है कि . . . .
. . . .
. . . . कथ्य सामग्री . . . .
. . . .
. . . .

औपचारिक अंतिम वाक्य (अनुशंसा)

आपका आज्ञाकारी शिष्य
नाम
अनुक्रमांक
दिनांक

42. आप नवोदय विद्यालय, जयपुर में दसवीं-ए में पढ़ते हैं। आपका नाम ईश्वरदयाल व अनुक्रमांक 38 है। पिता के व्यवसाय की निश्चितता न होने के कारण आप पढ़ाई नियमित रूप से नहीं कर पाते। अपने प्रधानाचार्य को एक पत्र लिखिए जिसमें छात्रवृत्ति प्रदान करने की प्रार्थना की गई हो।

अथवा

अपने प्रधानाचार्य को आर्थिक सहायता प्राप्त करने हेतु आवेदन पत्र लिखिए। *(CBSE 1996; 2000C)*

सेवा में
प्रधानाचार्य महोदय
नवोदय विद्यालय
जयपुर (राजस्थान)
विषय: छात्रवृत्ति प्राप्त करने हेतु प्रार्थना पत्र
श्रीमान जी

सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय की कक्षा 10-ए का छात्र हूँ। मेरा पढ़ाई का स्तर अब तक बहुत ही अच्छा रहा है। गत वर्ष कक्षा 9 में मैंने 90 प्रतिशत अंक प्राप्त किए थे। मेरी बहुत आगे तक पढ़ने व अपने विद्यालय का नाम रोशन करने की बहुत इच्छा है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मान्यवर, मेरे पिता पिछले दो वर्षों से अस्वस्थ चल रहे हैं। अब तक परिवार को जैसे-तैसे चलाया है। अब मेरे पिता मेरी पढ़ाई का खर्च उठा सकने में असमर्थ हैं। मेरा आपसे विनम्र निवेदन है कि आप मुझे इस वर्ष रुपये 1,000 की छात्रवृत्ति देने की कृपा करें जिससे मेरी पढ़ाई निरंतर जारी रहे। आपकी अति कृपा होगी।

धन्यवाद!

आपका आज्ञाकारी
ईश्वरदयाल
कक्षा 10 ए
अनुक्रमांक 38
दिनांक 14.3.2008

मिलता जुलता पत्र: *शिक्षा-निदेशक को छात्रवृत्ति के लिए एक आवेदन पत्र लिखिए।* *(CBSE 1995C)*

43. प्रधानाचार्य को चरित्र प्रमाण पत्र प्राप्त करने के लिए पत्र लिखिए।

सेवा में
प्रधानाचार्य महोदय
राजकीय उच्चतम माध्यमिक विद्यालय
मंडोली, दिल्ली

विषय: चरित्र प्रमाणपत्र प्राप्त करने हेतु प्रार्थना पत्र

श्रीमान जी

सविनय निवेदन है कि मैंने इस वर्ष आपके विद्यालय से दशम कक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है। मैंने पढ़ाई के अतिरिक्त अन्य बहुत सी सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में भाग लिया है। मैंने स्कूल के लिए कई ट्रॉफियाँ भी जीतीं थीं।

मान्यवर, मुझे नेशनल डिफेंस ऐकेडमी (NDA) के आवेदन-पत्र के साथ संलग्न करने के लिए आपके द्वारा किए गए सदाचार प्रमाणपत्र की आवश्यकता है। अत: आप से निवेदन है कि मुझे एक चरित्र प्रमाण-पत्र यथाशीघ्र प्रदान करने की कृपा करें।

धन्यवाद!

आपका आज्ञाकारी
विशेष
कक्षा 10 बी
अनुक्रमांक 38
दिनांक 28.3.2008

44. अपने प्रधानाचार्य को प्रार्थना पत्र लिखकर खेल संबंधी कठिनाइयों से अवगत कराइए और उन्हें दूर करने की प्रार्थना कीजिए। *(All India 1992)*

अथवा

अपने प्राचार्य को पत्र लिखिए जिसमें खेलों के सामान की समुचित व्यवस्था का आग्रह किया गया हो।

अथवा

अपने विद्यालय में खेल का सामान मँगवाने के लिए प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए।

सेवा में
प्रधानाचार्य महोदय
राजकीय उच्चतम माध्यमिक विद्यालय
नंद नगरी, दिल्ली

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विषयः खेलों का सामान मंगवाने हेतु प्रार्थना पत्र

श्रीमान जी

सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय की खेल-कूद टीम का कप्तान हूँ। मान्यवर, हमारा विद्यालय पढ़ाई के मामले में दिल्ली के सर्वश्रेष्ठ विद्यालयों में से एक गिना जाता है। परंतु खेलों में हमारे विद्यालय की यह स्थिति नहीं है।

मान्यवर, हमारे विद्यालय में खेलकूद के सामानों का अभाव है। मैं आपका ध्यान खेल के सामान की यथासमय आपूर्ति की ओर दिलाना चाहता हूँ। गत वर्ष सामान खिलाड़ियों को देर से प्राप्त हुआ था जिससे वे ठीक से प्रशिक्षण नहीं कर पाए। इसलिए आपसे निवेदन है कि खेलों का पूरा सामान यथाशीघ्र मंगा लिया जाए जिससे पढ़ाई के साथ-साथ खेलों में भी हमारे विद्यालय का नाम ऊँचा हो सके।

धन्यवाद सहित!

आपका कृपापात्र
शंभुनाथ
कक्षा 10 सी
अनुक्रमांक 35
दिनांक 14.3.2008

45. प्रधानाचार्य से दस दिन के अवकाश हेतु प्रार्थना पत्र लिखिए।

अथवा

दुर्घटनाग्रस्त होने के कारण परीक्षा देने में असमर्थता प्रकट करते हुए अपने प्रधानाचार्य को एक प्रार्थना-पत्र लिखिए। *(CBSE 1993)*

सेवा में
प्रधानाचार्य
राजकीय उच्चतम माध्यमिक विद्यालय
हुबली

विषयः दस दिन का अवकाश प्राप्त करने हेतु प्रार्थना पत्र

श्रीमान जी

सविनय निवेदन है कि प्रार्थी आपके विद्यालय की कक्षा 10 बी का छात्र है। सड़क पार करते समय एक मोटरसाइकिल से टकरा जाने के कारण मेरा सिर फट गया है। मेरी टाँग में फ्रैक्चर भी आया है। मुझे डॉक्टर ने कम से कम दस दिन तक चलने-फिरने से मना किया है। अतःएव इन दिनों होने वाली परीक्षा में सम्मिलित होने में मैं एकदम असमर्थ हूँ।

अतःएव आपसे प्रार्थना है कि आप मुझे 20 दिनों तक का अवकाश प्रदान करने की कृपा करें।

धन्यवाद सहित!

आपका कृपा-पात्र
केशव कुमार
कक्षा 10
अनुक्रमांक 11
दिनांक 15.6.2008

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

47. प्रधानाचार्य को पत्र लिखकर स्वास्थ्य-लाभ हेतु दो दिन के अवकाश का निवेदन कीजिए।

सेवा में
प्रधानाचार्य जी
केंद्रीय विद्यालय
तिरुअनंतपुरम्

विषय: दो दिन का अवकाश प्राप्त करने हेतु प्रार्थना पत्र

श्रीमान जी

सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय की कक्षा 10 सी का छात्र हूँ। मैं कल रात्रि से तेज बुखार से ग्रस्त हूँ। डॉक्टर ने मुझे दो दिन घर रहने का सुझाव दिया है। इसी कारणवश विद्यालय आने में असमर्थ हूँ।

अत: आपसे प्रार्थना है कि आप मुझे 6-7 मार्च, 2008 का अवकाश प्रदान करें।

सधन्यवाद!

आपका आज्ञाकारी शिष्य
सुनील कुमार
कक्षा 10 सी
अनुक्रमांक 15
दिनांक 08.06.2008

48. प्रधानाचार्य को पत्र लिखकर जुर्माना माफी का निवेदन कीजिए।

सेवा में
प्रधानाचार्य
केंद्रीय विद्यालय
इंदौर

विषय: जुर्माना माफी हेतु प्रार्थना पत्र

श्रीमान जी

सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय की कक्षा 10 सी का छात्र हूँ। मैं तेज बुखार से ग्रस्त होने के कारण पिछले यूनिट टैस्ट नहीं दे पाया था जिसके फलस्वरूप मुझ पर 50 रुपये जुर्माना कर दिया गया था। मैंने अपने कक्षाध्यापक को चिकित्सकीय जाँच पत्र भी दिखा दिया है। मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप मेरी मजबूरी को समझें व मेरा जुर्माना माफ कर दें।

धन्यवाद!

आपका आज्ञाकारी शिष्य
गौतम विमल
कक्षा 10 ए
अनुक्रमांक 15
दिनांक 09.07.2008

49. आप रवींद्रनाथ टैगोर उच्चतम माध्यमिक विद्यालय, कोलकाता के दशम 'ए' (अनुक्रमांक 39) के छात्र वरुण शर्मा हैं। आप जब घर से स्कूल की ओर आ रहे थे तो अपने सहपाठी आशुतोष को कुछ गुंडागर्दी करने वाले लड़कों से निबटते देखा। आशुतोष में बुराई से लड़ने की भावना को बढ़ाने हेतु प्रधानाचार्य से उसको सम्मानित करने का आग्रह कीजिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अथवा

अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को एक पत्र लिखिए जिसमें आपके सहपाठी के प्रशंसनीय व साहसिक व्यवहार के लिए उसे सम्मानित करने का अनुरोध हो। *(All India CBSE 1998)*

सेवा में
प्रधानाचार्य
रवींद्रनाथ टैगोर उच्चतम विद्यालय
कोलकाता

मान्यवर

मैं इसी विद्यालय की कक्षा 10 'ए' का छात्र हूँ। मैं आपसे अत्यंत विनयपूर्वक अपने मित्र आशुतोष का साहस वर्णन करना चाहता हूँ।

श्रीमान जी, कल दोपहर जब हमारे विद्यालय की छुट्टी हुई तो सभी छात्र-छात्राएँ एक साथ प्रसन्नता के साथ मेन गेट से बाहर निकल रहे थे। बाहर कुछ आवारा व शरारती किस्म के लड़के खड़े थे। वे हमारे विद्यालय के नहीं थे। उन्होंने गेट से बाहर निकलने वाली लड़कियों पर छींटाकशी आरंभ कर दीं। हमारी कक्षा के छात्र आशुतोष ने उन्हें इस प्रकार की गलत हरकतें न करने की चेतावनी दी। तभी उन्होंने चाकू निकालकर आशुतोष पर आक्रमण कर दिया। आशुतोष ने भी उन्हें ललकारा। तभी विद्यालयों के अन्य बच्चों ने आशुतोष का पक्ष लेकर उन बदमाशों की हालत खराब कर दी। वे गिड़गिड़ाते हुए फिर कभी वहाँ न आने की कसमें खाने लगे। उन्होंने उन लड़कियों से माफी भी माँगी।

मान्यवर यदि सभी लड़के आशुतोष के समान गलत हरकतों के विरोध की पहल करने लगें तो यह हमारे विद्यालय के लिए बड़े गौरव की बात होगी। मेरा आपसे निवेदन है कि आप प्रार्थना मैदान में आशुतोष को पूरे विद्यालय के सामने सम्मानित करें जिससे उसमें समाज-हित की भावना और अधिक बलवती बने।

धन्यवाद!

आपका आज्ञाकारी शिष्य
वरुण शर्मा
कक्षा 10 'ए'
अनुक्रमांक 39
दिनांक 15.03.2008

50. अपनी आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण आप इस बार स्कूल की फीस भर सकने में असमर्थ हैं। अपनी आर्थिक कठिनाइयों का वर्णन करते हुए फीस माफ करने के लिए प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए।

सेवा में
श्रीमान प्रधानाचार्य जी
राजकीय सह-शिक्षा माध्यमिक उच्चतर विद्यालय
हर्ष विहार, दिल्ली

मान्यवर

मैं आपके विद्यालय में दसवीं 'ख' कक्षा का छात्र हूँ। मैं एक अत्यंत निर्धन परिवार से हूँ। मेरे पिताजी एक साधारण मजदूर हैं। वे मजदूरी से केवल 2,000 रुपये प्रति माह ही कमा पाते हैं। मेरे घर में मेरे अलावा दो भाई-बहन और भी हैं। 2,000 रुपये में हमारे परिवार का घर का खर्च भी ठीक प्रकार से नहीं चल पाता है। अब तक पिताजी कैसे न कैसे स्कूल की फीस भर दिया करते थे। परंतु इस मास बहन के विवाह के पश्चात् तंगी अधिक हो गई है। मेरा अध्ययन तक छुड़वाने की नौबत आ गई है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मान्यवर, मैं एक मेधावी छात्र हूँ। पिछली बार कक्षा नवम् में मैंने 85 प्रतिशत अंक प्राप्त किए थे। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आगे भविष्य में भी इसी प्रकार के अंक लाता रहूँगा। अपने व्यवहार से गुरुजनों को सदैव प्रसन्न रखने की कोशिश करूँगा। कृपया इस माह मेरा पूर्ण शुल्क माफ करने का कष्ट करें। यदि मुझे पूर्ण शुल्क मुक्ति न मिली तो मेरे लिए आगे अध्ययन करना असंभव हो जाएगा।

सधन्यवाद!

आपका आज्ञाकारी शिष्य

नवल

दशम 'ख'

दिनांक: 15 जुलाई, 2008

2. धन्यवाद पत्र (औपचारिक)

धन्यवाद पत्र, शुभकामना पत्र व बधाई पत्र अनौपचारिक व औपचारिक दोनों प्रकार से लिखे जाते हैं। दोनों की शैलियाँ भी भिन्न-भिन्न होती हैं। औपचारिक रूप से लिखे गए इन पत्रों की शैली निम्न प्रकार से होती है :

प्रेषक का नाम . . . .
प्रेषक का पता . . . .

दिनांक . . . .

सेवा में
प्राप्तकर्ता का नाम . . . .
प्राप्तकर्ता का पता . . . .

. . . .
. . . .
. . . . कथ्य सामग्री . . . .
. . . .
. . . .

सधन्यवाद

स्वनिर्देश

नाम

अनुक्रमांक

दिनांक

51. केंद्रीय विद्यालय, जयपुर के प्राचार्य नवीन अग्रवाल विश्व हिंदी सम्मेलन में भाग लेने के लिए अमेरिका जा रहे हैं। उनके विद्यालय के शिक्षक की ओर से उन्हें बधाई पत्र प्राप्त हुआ। इस पर प्राचार्य द्वारा धन्यवाद पत्र लिखिए।

नवीन अग्रवाल

प्राचार्य

केंद्रीय विद्यालय, जयपुर

20 जुलाई, 2008

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सेवा में
श्री दीपचंद बंधु जी
हिंदी शिक्षक, केंद्रीय विद्यालय
जयपुर

श्रीमान जी

सादर नमस्कार!

आपका भेजा बधाई पत्र प्राप्त हुआ। सच कहूँ तो मैं अमेरिका जाने में हिचक रहा था। पता नहीं सम्मेलन कैसा रहेगा, क्या होगा, आदि, आदि। इस प्रकार के नकारात्मक विचार मन में उठ रहे थे। परंतु आपके पत्र को पढ़कर पता लगा कि आप सभी को मुझसे कितनी आशाएँ हैं। आप द्वारा भेजे गए बधाई पत्र का मैं हृदय से धन्यवाद करता हूँ। वापस आने पर वहाँ का अनुभव आपको बताऊँगा।

धन्यवाद!
भवदीय
नवीन अग्रवाल

52. आप केंद्रीय विद्यालय, जींद, हरियाणा के प्रधानाचार्य रविकांत देसाई हैं। आपके निमंत्रण पर प्रसिद्ध भजन गायक देवेंद्र शर्मा द्वारा भजन गान पर उन्हें उनके निवास पर बधाई धन्यवाद पत्र प्रेषित कीजिए।

रविकांत देसाई
प्रधानाचार्य
केंद्रीय विद्यालय, जींद

14 अगस्त, 2008

सेवा में
श्री देवेंद्र शर्मा जी
5, मानसरोवर गार्डन
दिल्ली

श्रीमान जी

सादर नमस्कार!

आपने जो गायन कार्यक्रम हमारे विद्यालय में प्रस्तुत किया वह अत्यंत सराहनीय था। वहाँ अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे। आपका कार्यक्रम इतना अधिक सफल हुआ कि दो प्रमुख समाचार पत्रों में प्रथम पृष्ठ पर इसका उल्लेख हुआ है। मैं आपकी इस प्रसिद्धि के लिए आपको अपनी व समस्त विद्यालय के अध्यापकों की ओर से बधाई देता हूँ। ईश्वर करे आपकी यह प्रसिद्धि खूब फले-फूले।

धन्यवाद!
भवदीय
रविकांत देसाई

53. आप स्प्रिंगडेल्स पब्लिक स्कूल, कानपुर के प्रधानाचार्य चिरौंजीलाल हैं। आपके विद्यालय में राज्य स्तर पर खेलों का उत्सव था जो सफलतापूर्वक समाप्त हो गया। आप अपने अध्यापकों व अन्य स्कूल के कर्मचारियों को धन्यवाद पत्र लिखिए।

चिरौंजीलाल
स्प्रिंगडेल्स पब्लिक स्कूल
कानपुर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

14 अगस्त, 2008

सेवा में
समस्त अध्यापक व कर्मचारी गण
स्प्रिंगडेल्स पब्लिक स्कूल
कानपुर

प्रिय अध्यापक व कर्मचारीगण,

सादर नमस्कार!

गत दिनों हमारे विद्यालय में राज्य स्तर पर आयोजित खेलों का उत्सव भली-भाँति सम्पन्न हो गया। इसकी सफलता में आप सभी का निष्ठापूर्वक सहयोग था। मैं आप सबका इसके लिए हृदय से धन्यवाद प्रदर्शित करता हूँ।

धन्यवाद!
भवदीय
चिरौंजीलाल

3. शुभकामना पत्र (औपचारिक)

54. संदीप बजाज बैंक ऑफ बड़ौदा के जनरल मैनेजर हैं। बैंक ने अभी अपनी उत्कृष्ट सेवा के 150 वर्ष पूरे किए हैं। पत्र व्यवहार द्वारा श्री संदीप बजाज को शुभकामना पत्र भेजिए। आप हैं, राहुल विमल, शांति निकेतन, अरुण विहार, दिल्ली।

राहुल विमल
शांति निकेतन
अरुण विहार, दिल्ली

24 अक्तूबर, 2008

सेवा में
श्री संदीप बजाज
जनरल मैनेजर, बैंक ऑफ बड़ौदा
दिल्ली

श्रीमान जी

सादर प्रणाम!

आपके आदरणीय बैंक ने अपनी उत्कृष्ट सेवा के 150 वर्ष पूरे कर लिए हैं। यह कोई कम बड़ी उपलब्धि नहीं है। ईश्वर की कृपा से आपका बैंक दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की करे। मेरी शुभकामनाएँ स्वीकार करें।

भवदीय
राहुल विमल

55. आप एक लिपिक कर्मचंद हैं। आपका एक सहकर्मी लिपिक के पद से प्रोन्नति हेतु एक लिखित परीक्षा में भाग ले रहा है। अपने सहकर्मी को एक शुभकामना पत्र लिखिए।

कर्मचंद, लिपिक
रॉस एंड बॉस कंपनी
नौएडा, उत्तर प्रदेश

24 अक्तूबर, 2008

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सेवा में
श्री गोकुलचंद जी, लिपिक
रॉस एंड बॉस कंपनी
नौएडा, उत्तर प्रदेश

श्रीमान जी

सादर प्रणाम!

मुझे श्री सुनील जी से पता चला है कि आप प्रोन्नति हेतु एक लिखित वार्षिक परीक्षा में भाग ले रहे हैं। ईश्वर आपकी प्रोन्नति सुनिश्चित करे। मेरी शुभकामनाएँ आपके साथ हैं।

भवदीय
कर्मचंद

56. नवभारत टाइम्स दैनिक अखबार के संपादक एक नया कॉलम पाठकनामा आरंभ करने जा रहे हैं जिसमें दिल्ली के निवासी अपनी समस्याएँ रख सकेंगे। आप दैनिक के नियमित पाठक हैं। संपादक को शुभकामनाओं भरा एक पत्र लिखिए।

हुकुमसिंह
5, अंसारी रोड
दरियागंज, नई दिल्ली

21 जून, 2008

सेवा में
संपादक
नवभारत टाइम्स
बहादुरशाह जफर मार्ग, दिल्ली

श्रीमान जी

सादर प्रणाम!

मैंने आपके 20 जून, 2008 के नवभारत टाइम्स में आपके द्वारा आरंभ किए जाने वाले 'पाठकनामा' कॉलम के विषय में पढ़ा। मैं व मेरे जैसे नियमित पाठकों की ओर से आपके इस प्रयास के लिए शुभकामनाएँ स्वीकार करें। कदाचित् इससे दिल्लीवासियों की समस्याओं पर नेताओं का कुछ ध्यान जाएगा। पुनः शुभकामनाएँ।

भवदीय
हुकुमसिंह

4. बधाई पत्र (औपचारिक)

57. यूनिवर्सल केमिकल्स, 5-जयपुर रोड के मालिक संदीप मित्तल हैं। अपनी ओर से श्री विमलेश जैन, नेशनल केमिकल्स एंड लेबोरेटरी प्रॉडक्ट्स, 7-जयपुर रोड को वर्ष 2007 का 'सर्वश्रेष्ठ उत्पादक' सम्मान प्राप्त करने पर बधाई पत्र लिखिए।

संदीप मित्तल
यूनिवर्सल केमिकल्स
5-जयपुर रोड
राजस्थान

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

21 जून, 2008

सेवा में
विमलेश जैन
नेशनल केमिकल्स एंड लेबोरेटरी प्रॉडक्ट्स
7-जयपुर रोड
राजस्थान

महोदय

सादर प्रणाम!

मुझे यह जानकार अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है कि आपकी आदरणीय कंपनी को वर्ष 2008 के 'सर्वश्रेष्ठ उत्पादक' के खिताब से परिभूषित किया गया है। यह आपकी कंपनी के कार्यकर्ताओं की कार्यकुशलता व लगन का ही परिणाम है कि आज आपकी कंपनी को यह सम्मान मिला। मेरी सहस्र बधाईयाँ स्वीकार कीजिए।

भवदीय
संदीप मित्तल

58. आप डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल, दिल्ली की प्राचार्या सुहानी सहाय हैं। आपके विद्यालय की एक प्राध्यापिका श्रुति श्रीवास्तव को सर्वोत्कृष्ट अध्यापिका के रूप में चुना गया है। एक बधाई पत्र लिखिए।

सुहानी सहाय
प्राचार्या, डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल
दिल्ली

24 मार्च, 2008

सेवा में
श्रुति श्रीवास्तव
प्राध्यापिका, डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल
दिल्ली

महोदया

सादर प्रणाम!

मुझे यह जानकर अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है कि दिल्ली के शिक्षा विभाग ने आपको वर्ष 2008 की सर्वोत्कृष्ट प्राध्यापिका के रूप में चुन लिया है। यह आपकी प्रतिभा, लगन व निष्ठापूर्वक कार्य करने की पहचान है। आपको हार्दिक बधाई!

आपकी शुभचिंतक
सुहानी सहाय

59. आप सौरव देशपांडे छात्र प्रतिनिधि हैं। आपके गणित के अध्यापक श्री सुधीर कुमार को गणित के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ योगदान के लिए प्रोन्नति मिली है। एक बधाई पत्र लिखिए।

सौरव देशपांडे
छात्र प्रतिनिधि, केंद्रीय विद्यालय
दिल्ली

21 जून, 2008

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सेवा में
श्री सुधीर कुमार
अध्यापक, केंद्रीय विद्यालय
दिल्ली

श्रीमान जी
सादर नमस्कार!
मुझे यह जानकार अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है कि आपकी पदोन्नति हो गई है। यह पदोन्नति आपके गणित के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान के लिए एक श्रद्धांजलि है। मेरी सहस्र बधाईयाँ स्वीकार करें।
भवदीय
सौरव देशपांडे

5. आवेदन पत्र

दैनिक जीवन में प्राय: आवेदन-पत्र या प्रार्थना-पत्र लिखने की आवश्यकता पड़ती है। अवकाश चाहने, किसी विभाग में नियुक्ति चाहने, आवास प्राप्ति हेतु, स्थानांतरण या पदोन्नति हेतु किसी भी विषय में निवेदन करने आदि से संबंधित पत्र आवेदन-पत्र या प्रार्थना-पत्र कहे जाते हैं। इनका प्रारूप निम्न प्रकार है:

प्रेषक का पता . . . .
दिनांक . . . .

सेवा में
प्राप्तकर्ता का नाम . . . .

विषय: . . . .

महोदय/महोदया
. . . .
. . . .
. . . . कथ्य सामग्री . . . .
. . . .
. . . .

सधन्यवाद

प्रार्थी
हस्ताक्षर
संलग्नक

नोट: कथ्य सामग्री के मध्य में व्यक्तिगत विवरण भी (आवश्यकतानुसार) दिया जा सकता है।

60. शिक्षा निदेशक को छात्रवृत्ति के लिए आवेदन पत्र लिखिए। *(CBSE 1995C)*

अशोक विहार
नई दिल्ली
24 मार्च, 2008

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सेवा में
शिक्षा निदेशक
शिक्षा निदेशालय
यमुना विहार
दिल्ली

महोदय

सविनय निवेदन है कि प्रार्थी ने इस वर्ष कक्षा 10 संपूर्ण दिल्ली में सर्वोच्च अंकों से उत्तीर्ण की है। परीक्षा के सभी विषयों में कुल प्राप्तांक 98 प्रतिशत हैं। आपसे विनम्र प्रार्थना है कि प्रार्थी को उसकी योग्यतानुसार छात्रवृत्ति प्रदान करें जिससे उसके आत्मविश्वास में वृद्धि हो सके व आगे कक्षा 12वीं में भी इसी प्रकार संपूर्ण दिल्ली में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने हेतु प्रयासरत रहे।

इसके लिए प्रार्थी आपका सदैव आभारी रहेगा।

धन्यवाद!

प्रार्थी
अरुण जैन

संलग्न: 1. अंक विवरणिका दशम् कक्षा
2. प्रमाणपत्र दशम कक्षा

61. निम्न श्रेणी के लिपिक पद के लिए रेलवे भर्ती बोर्ड नई दिल्ली के सहायक सचिव के नाम आवेदन पत्र लिखिए। *(CBSE 1994)*

540, तुलसी निकेतन
भौपुरा
गाजियाबाद

18 अगस्त, 2008

सेवा में
रेलवे भर्ती बोर्ड
पूर्वोत्तर सीमांतर रेलवे
गुवाहाटी

विषय: लिपिक के पद हेतु आवेदन पत्र

महोदय

दिनांक 25.7.2008 के दैनिक नवभारत टाइम्स में आपके कार्यालय में लिपिक पद हेतु कुछ पद रिक्त होने के विषय में पता चला। मैं इस पद हेतु अपनी सेवाएँ प्रस्तुत करने का इच्छुक हूँ।

मेरा विवरण इस प्रकार है:

नाम	:	दुर्गेश कुमार
पिता का नाम	:	सोमेश सिंह
जन्मतिथि	:	20.7.1980
पता	:	540, तुलसी निकेतन, भौपुरा, गाजियाबाद

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शैक्षणिक योग्यताएँ :

कक्षा	बोर्ड	उत्तीर्ण वर्ष	प्राप्तांक प्रतिशत	विषय
10वीं	उत्तर प्रदेश बोर्ड	1996	55	अंग्रेजी, हिंदी, गणित, सामाजिक ज्ञान, एवं विज्ञान
12वीं	उत्तर प्रदेश बोर्ड	1998	54	अंग्रेजी, गणित, भौतिकी, जीवविज्ञान, एवं रसायन विज्ञान

टंकण: हिंदी—35 शब्द प्रति मिनट; अंग्रेजी—40 शब्द प्रति मिनट
कार्यानुभव: मिल्की वे कंस्ट्रक्शन्स प्राईवेट लिमिटेड, गाजियाबाद में दो वर्ष से कार्यरत
आशा करता हूँ कि आप मुझे साक्षात्कार का अवसर अवश्य देंगे जिससे मैं अपनी क्षमताओं का परिचय दे सकूँ।
प्रार्थी
दुर्गेश कुमार
संलग्न: 1. अंक विवरणिका एवं प्रमाण पत्र—दशम् कक्षा की प्रतिलिपि
2. अंक विवरणिका एवं प्रमाण पत्र—बारहवीं कक्षा की प्रतिलिपि

मिलता जुलता पत्र: *बैंकिंग सेवा भर्ती बोर्ड, दिल्ली के सचिव को लिपिक पद के लिए आवेदन पत्र लिखिए।* *(CBSE 1996)*

62. दैनिक जागरण में उप-संपादक पद के लिए आवेदन करें।

232, आदर्श निकेतन
चरखी-दादरी
हरियाणा

15 अगस्त, 2008

सेवा में
वरिष्ठ प्रबंधक
दैनिक जागरण
दिल्ली

विषय: उप-संपादक के पद हेतु आवेदन पत्र

मान्यवर,

दिनांक 25.7.2008 के दैनिक जागरण से आपके अपने समाचार पत्र हेतु उप-संपादक का एक पद रिक्त होने के विषय में जानकारी प्राप्त हुई थी। मैं इस पद के लिए अपनी सेवाएँ प्रस्तुत करता हूँ। मेरा परिचय एवं शैक्षणिक योग्यताएँ निम्नलिखित हैं:

नाम : दिनेश वर्मा
पिता का नाम : विपिन प्रसाद वर्मा
जन्मतिथि : 20 जुलाई, 1980
पता : सी-43, नंद नगरी, दिल्ली—110 093

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शैक्षणिक योग्यताएँ :

कक्षा	बोर्ड	उत्तीर्ण वर्ष	प्राप्तांक प्रतिशत	विषय
10वीं	सी०बी०एस०ई०	1996	83	अंग्रेजी, हिंदी, गणित, सामाजिक ज्ञान, एवं विज्ञान
12वीं	सी०बी०एस०ई०	1998	78	अंग्रेजी, हिंदी, भूगोल, राजनीति विज्ञान, एवं इतिहास
B.A.	दिल्ली विश्वविद्यालय	2002	72	हिंदी, इतिहास, अंग्रेजी, भूगोल
जर्नलिज्म	इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय (मुक्त) विश्वविद्यालय	2005	65	

कार्यानुभव: क्राइम समाचार, जयपुर से प्रकाशित समाचारपत्र में 2 वर्ष का कार्यानुभव

विश्वविद्यालय की परीक्षाओं के प्रमाणपत्र तथा मेरे द्वारा लिखे गए संपादकीयों की प्रतियाँ साथ भेज रहा हूँ। आशा करता हूँ कि आप मुझे साक्षात्कार का अवसर अवश्य देंगे जिससे मैं अपनी क्षमताओं का परिचय दे सकूँ।

सधन्यवाद!

प्रार्थी
दुर्गेश कुमार

63. सहायक अध्यापक के पद हेतु शिक्षा-निदेशक के नाम आवेदन पत्र लिखिए। *(CBSE 1995)*

26, बलबीर नगर
दिल्ली

13 जुलाई, 2008

सेवा में
शिक्षा निदेशक
शिक्षा निदेशालय
दिल्ली—110 006

विषय: सहायक अध्यापक पद के लिए आवेदन

मान्यवर,

पिछले सप्ताह दिनांक 25.7.2008 के वीर अर्जुन दैनिक में सहायक अध्यापक के छ: रिक्त पदों का विज्ञापन दिया गया था। इस पद के प्रत्याशी के रूप में मैं अपना आवेदन प्रस्तुत करता हूँ। मेरा परिचय एवं शैक्षणिक योग्यताएं निम्नलिखित हैं:

नाम	:	कांतिप्रसाद
पिता का नाम	:	शांतिप्रसाद
जन्मतिथि	:	20 जनवरी, 1980
पता	:	सी-54, जी०टी०बी० एंक्लेव
		दिल्ली—110 093

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शैक्षणिक योग्यताएँ :

कक्षा	बोर्ड	उत्तीर्ण वर्ष	प्राप्तांक प्रतिशत	विषय
10वीं	सी०बी०एस०ई०	1996	81	अंग्रेजी, हिंदी, गणित, सामाजिक ज्ञान, एवं विज्ञान
12वीं	सी०बी०एस०ई०	1998	75	अंग्रेजी, हिंदी, भूगोल, राजनीति विज्ञान, एवं इतिहास
B.A.	दिल्ली विश्वविद्यालय	2002	76	हिंदी, इतिहास, अंग्रेजी, भूगोल
बी०एड०	इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय (मुक्त) विश्वविद्यालय	2007	55	

विश्वविद्यालय की परीक्षाओं के प्रमाणपत्रों की प्रतिलिपियाँ संलग्न कर रहा हूँ। आशा करता हूँ कि आप मुझे साक्षात्कार का अवसर अवश्य देंगे जिससे मैं अपनी क्षमताओं का परिचय दे सकूँ।

सधन्यवाद!

प्रार्थी
कांतिप्रसाद

64. सर्वशिक्षा अभियान के अतर्गतचल रहे रात्रिकालीन शिक्षण केंद्रों में प्रौढ़ शिक्षा हेतु अंशकालिक शिक्षकों की आवश्यकता है जो कम से कम दसवीं कक्षा तक पढ़े हों। इस कार्य हेतु प्रौढ़ शिक्षा, जयपुर, राजस्थान को आवेदन पत्र लिखिए। *(CBSE 2004)*

32, पुनहाना
जिला अलवर
राजस्थान

26 जुलाई 2008

सेवा में
प्रौढ़ शिक्षा निदेशक
प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय
जयपुर (राजस्थान)

विषयः प्रौढ़ शिक्षा के लिए अंशकालिक शिक्षकों के पद हेतु

श्रीमान

25 जुलाई 2008 के अमर उजाला दैनिक समाचार पत्र के माध्यम से मुझे ज्ञात हुआ कि आपके सर्वशिक्षा अभियान के अंतर्गत आपको प्रौढ़ शिक्षा हेतु अंशकालिक शिक्षकों की आवश्यकता है। मैं इस पद हेतु अपना नामांकन प्रस्तुत करता हूँ। मेरा व्यक्तिगत विवरण इस प्रकार है:

नाम	:	भारत
पिता का नाम	:	नरसिंह
जन्मतिथि	:	20 अगस्त, 1984
पता	:	32, पुनहाना, जिला अलवर, राजस्थान
शिक्षा	:	कक्षा 12 (कला) उत्तीर्ण
अनुभव	:	नर्सरी विद्यालय में पाँच वर्ष का कार्यानुभव

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कक्षा 12 वीं की अंकविवरणिका व प्रमाणपत्र की प्रतिलिपि कार्यानुभव की प्रतिलिपि के साथ संलग्न कर रहा हूँ। आशा करता हूँ कि आप मुझे सेवा का अवसर अवश्य प्रदान करेंगे।

सधन्यवाद!

भवदीय

भारत

65. डिटर्जेंट पाउडर बनाने वाली कंपनी 'शाइन डिटर्जेंट लिमिटिड' को घर-घर जाकर प्रचार करने हेतु युवक-युवतियों की आवश्यकता है। कंपनी के व्यापार-प्रबंधक को आवेदन पत्र लिखिए। *(All India CBSE 2004)*

25/2, अर्जुन मौहल्ला

मौजपुर

दिल्ली—110093

29 जनवरी, 2008

सेवा में

व्यापार प्रबंधक

शाइन डिटर्जेंट लिमिटेड, कनॉट प्लेस

दिल्ली

विषयः घर-घर प्रचार कार्य हेतु आवेदन पत्र

श्रीमान

आपके विज्ञापन को पढ़कर पता चला कि आपको अपनी कंपनी के उत्पादों के प्रचार हेतु युवक-युवतियों की आवश्यकता है। इस सेवा के लिए मैं अपने आपको समर्पित करता हूँ। मुझे टूथपेस्ट बनाने वाली कंपनी के उत्पाद बेचने का लंबा अनुभव है। मैं इस प्रकार का कार्य पिछले 9 वर्षों से कर रहा हूँ। मेरा व्यक्तिगत विवरण इस प्रकार है:

नाम	:	भगत
पिता का नाम	:	जगत
जन्मतिथि	:	29 फरवरी, 1975
पता	:	25/2, अर्जुन मौहल्ला, मौजपुर, दिल्ली—110 093
शिक्षा	:	कक्षा 12 (वाणिज्य) उत्तीर्ण
अनुभव	:	ब्राइट टूथ टूथपेस्ट प्राइवेट लिमिटेड में 8 वर्ष का अनुभव

कक्षा 12 वीं के प्रमाणपत्र व कार्यानुभव की प्रतिलिपि साथ में संलग्न कर रहा हूँ। आशा करता हूँ कि आप मुझे सेवा का अवसर अवश्य प्रदान करेंगे।

सधन्यवाद!

भवदीय

भगत

66. नवल दसवीं के बाद ग्याहरवीं (विज्ञान) में प्रवेश पाने का इच्छुक है। ग्रीन फील्ड पब्लिक स्कूल, दिलशाद गार्डन में आवेदन पत्र लिखिए।

एस-5,

नवीन शाहदरा

दिल्ली—110032

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

21 मार्च, 2008

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सेवा में
प्रधानाचार्य
ग्रीन फील्ड पब्लिक स्कूल
दिलशाद गार्डन
दिल्ली—110093

विषयः ग्यारहवीं कक्षा (विज्ञान) में प्रवेश हेतु आवेदन पत्र

मान्यवर

निवेदन है कि मैंने इसी वर्ष कक्षा दस 85 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण की है। मैं आपके आदरणीय स्कूल में कक्षा 10 में प्रवेश पाने का इच्छुक हूँ। मेरा व्यक्तिगत विवरण इस प्रकार है:

नाम	:	सचिन
पिता का नाम	:	जतिन
जन्मतिथि	:	28 जून, 1990
पता	:	एस-5, नवीन शाहदरा, दिल्ली—110 032
शिक्षा	:	कक्षा 10 उत्तीर्ण
अंक प्रतिशत	:	85 प्रतिशत
उत्तीर्ण वर्ष	:	2007
प्राप्तांक	:	426/500
दूरभाष	:	3424939
विद्यालय	:	राजकीय उच्चतम माध्यमिक विद्यालय, मंडोली, दिल्ली—110093

कृपया मेरे उपर्युक्त वृत्तचित्र को संज्ञेय रखते हुए मुझे कक्षा 11 में प्रवेश प्रदान करने की कृपा करें। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि पूरी मेहनत से विद्यालय का नाम ऊँचा करूँगा।

धन्यवाद सहित!

भवदीय
सचिन

6. व्यावसायिक पत्र

व्यावसायिक पत्रों में अब 'सेवा में' लिखे जाने का प्रचलन नहीं है। अब सीधे ही पत्र प्राप्त करने वाले का नाम व व्यावसायिक पता अलग पंक्ति में लिखा जाता है। इन पत्रों में संबोधन महोदय/महोदया के रूप में किया जाता है। इनमें विषय को अत्यंत संक्षिप्त व यथा-वस्तुपरक लिखा जाता है। इन पत्रों में भावना, अनुभूति या संवेदना का कोई स्थान नहीं होता। इसलिए आवश्यक संदेश देकर पत्र को समाप्त कर देना चाहिए। व्यावसायिक पत्रों को निम्नलिखित चरणों में लिखा जाता है:

प्राप्तकर्ता का नाम . . . .

विषयः . . . .

महोदय/महोदया
. . . .
. . . .

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

. . . . कथ्य सामग्री . . . .

. . . .

. . . .

सधन्यवाद!

भवदीय

हस्ताक्षर

प्रेषक का पता . . . .

दिनांक . . . .

67. सन-इंडिया पब्लिकेशंस, अंसारी रोड, दरियागंज को पत्र व्यवहार करके पुस्तकें मंगाइए।

प्रबंधक

सन इंडिया पब्लिकेशंस

अंसारी रोड, दरियागंज

नई दिल्ली—110002

विषय: पुस्तकों का क्रय

महोदय,

कृप्या निम्नलिखित पुस्तकें वी०पी०पी० द्वारा जितनी जल्दी संभव हो सके, भेजें। रुपये 1000 का अग्रिम बैंक ड्राफ्ट साथ भेज रहा हूँ। इस बात का अवश्य ध्यान रखें कि पुस्तकों पर छूट उचित हो। सभी पुस्तकों का संस्करण नवीन होना चाहिए व मैली-कुचैली अथवा फटी हुई नहीं होनी चाहिए। इस प्रकार की पुस्तकों को वापस कर दिया जाएगा।

पुस्तकों की सूची

क्रम संख्या	*पुस्तक का नाम*	*कक्षा*	*लेखक*	*प्रतियाँ*
1	इंजीनियरिंग ड्राइंग	कक्षा बारह	ईश्वर दयाल	2
2	जीव विज्ञान	कक्षा बारह	अरुण सक्सेना	4
3	बिजिनेस मैथमैटिक्स	इंजीनियरिंग	ईश्वर दयाल	4

सधन्यवाद!

भवदीय

अंकुर

राजकीय उच्चतम माध्यमिक विद्यालय

ई-ब्लॉक, नंद नगरी

दिल्ली—110 093

दिनांक 24.09.2008

68. गलत माल की शिकायत करते हुए खेल का सामान बेचने वाले प्रतिष्ठान 'क्रीड़ा-विहार' को एक पत्र लिखिए।

प्रबंधक महोदय

जनता स्पोर्ट्स, दरियागंज

दिल्ली

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विषयः गलत माल की वापसी

महोदय

निवेदन है कि हमने आपकी दुकान से दिनांक 20 अगस्त 2008 को क्रिकेट का कुछ सामान खरीदा था। आपने इस समान का एक बिल, जिसकी संख्या 234 थी, बनाकर दिया था। इस ऑर्डर में निम्नलिखित सामान मंगाया गया था।

सामान	सामान की संख्या
1. क्रिकेट बैट	5
2. विकेट	12
3. पैड	6
4. बॉल	12
5. हेलमेट	3

आपके द्वारा भेजा गया यह सामान हमें 22 अगस्त, 2008 को कूरियर 'स्पीड' से प्राप्त हुआ था। हमें अत्यंत खेद के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि आपके द्वारा भेजे गए पैडों में से 2 पैड फटे हुए थे व एक बॉल की सिलाई भी खराब थी। अतः यह सामान वापस भेजा जा रहा है। कृपया उचित सामान यथाशीघ्र भिजवाने का कष्ट करें तथा सामान भेजने से पूर्व निरीक्षण करवा लिया करें कि सही सामान ही भेजा जाए।

धन्यवाद सहित!

भवदीय
जावेद
6/11, मालवीय नगर
दिल्ली
26 अगस्त, 2008

69. टी०आर० साहनी सेल्स एंड सर्विस, दिल्ली को एक पत्र लिखकर पूछिए कि वे कार खरीदने पर क्या डिस्काउंट आदि देंगे?

प्रबंधक महोदय
टी०आर० साहनी सेल्स एंड सर्विस
दिल्ली

विषयः कार पर डिस्काउंट आदि की पूछताछ

महोदय

हमारा विचार एक मारुति वैगन-आर कार खरीदने का है। कृपया ऐसी कोई स्कीम बताने का कष्ट कीजिए जिस पर अधिक से अधिक डिस्काउंट प्राप्त हो सके। कृपेया कार का मूल्य व इंश्योरेंस संबंधी जानकारी देने का भी कष्ट करें।

धन्यवाद!

भवदीय
अब्दुल करीम
33-सी, चंद्रलोक, शाहदरा
दिल्ली
22 अगस्त, 2008

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

7. संपादकीय पत्र

किसी विषय पर जनता या प्रेस का ध्यान आकर्षित करने के लिए संपादकीय पत्र लिखे जाते हैं। इससे आपकी अच्छी या बुरी प्रतिक्रिया व्यक्त की जाती है। संपादकीय पत्र लिखते समय यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि संपादक को अधिक काट-छाँट न करनी पड़े तथा वह आपके विचारों को ज्यों का त्यों छाप सके। पत्र छोटा व सटीक होना चाहिए। उसकी विषय-वस्तु गोलमोल व घुमावदार न होकर सुस्पष्ट व सीधी होनी चाहिए। पत्र सामान्यतः जनता की ओर उन्मुख होना चाहिए, संपादक या किसी खास वर्ग की ओर नहीं।

70. चुनाव के दिनों में आपके शहर की दीवारें नारे लिखने व पोस्टर चिपकाने से गंदी हो गई हैं। इस समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए किसी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए। *(CBSE 2005)*

सेवा में
मुख्य संपादक
दैनिक जागरण
दिल्ली

विषयः पोस्टर चिपकाए जाने की समस्या

महोदय

मैं आपके लोकप्रिय अखबार दैनिक जागरण का नियमित पाठक हूँ। मैं अपने कुछ विचार आपके अखबार के माध्यम से जनता तक पहुँचाना चाहता हूँ। कृपया इन्हें प्रकाशित करने की कृपा करें।

हर चुनाव की तरह इस बार भी पूरे दिल्ली शहर की दीवारें रंग-बिरंगे पोस्टरों से भर गई हैं। जहाँ देखो वहाँ पोस्टर। बस स्टैंड पर बसों के नंबरों पर पोस्टर, यातायात संकेतों पर पोस्टर, सार्वजनिक भवनों व जगहों पर पोस्टर। ऐसा लगता है जैसे दिल्ली रूपी कपड़े पर किसी ने पोस्टरों के पैबंद लगा दिए हों। सबसे अधिक बुरी हालत सरकारी भवनों व जगहों की हैं। इनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं। इसलिए उन पर एक सेंटीमीटर जगह भी खाली नहीं बची है।

यह एकदम गैरकानूनी है। चुनाव आयोग के नियम कायदों की धज्जियाँ उड़ाई जा रही हैं। इसके विरुद्ध सख्त से सख्त कानूनी कार्यवाही होनी चाहिए। मेरा प्रशासन से अनुरोध है कि वह शीघ्रातिशीघ्र इस प्रकार के मिथ्या प्रचार को बंद कराए व सभी प्रकार के पोस्टरों को हटवाए। दिल्ली की सुंदरता को पोस्टरों से खराब न करने दें।

धन्यवाद!

भवदीय
राकेश गर्ग
245, पॉकेट 'एफ'
दिलशाद गार्डन
दिल्ली—110 093
19 अगस्त, 2008

71. किसी दैनिक समाचार को पत्र लिखिए जिसमें नगर में जगह-जगह आवारा घूमने वाले पशुओं की समस्या पर जनता तथा अधिकारियों का ध्यान खींचा गया हो। आप हैं शाह आलम, 35 शांति कुंज, मथुरा के निवासी।

सेवा में
संपादक
नवभारत टाइम्स
बहादुरशाह ज़फ़र मार्ग
दिल्ली

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विषयः आवारा पशुओं की समस्या

महोदय

मैं आपके लोकप्रिय समाचार पत्र नवभारत टाइम्स का नियमित पाठक हूँ। मैं अपने कुछ विचार आपके अखबार के माध्यम से जनता तक पहुँचाना चाहता हूँ। कृपया इन्हें प्रकाशित करने की कृपा करें।

आज जहाँ देखो आवारा पशु सड़कों पर घूमते नजर आ जाते हैं। इनमें से कई के या तो मालिक नहीं हैं या फिर वे इन्हें जानबूझकर खुला छोड़ देते हैं। इनमें कुत्ते, सांड, गाय, बछड़े, सुअर, पिल्ले, गधे आदि बहुतायत में होते हैं। ये महानगरों की बहुत बड़ी समस्या बन गए हैं।

शहर में कुत्तों का आतंक बढ़ गया है। वे आए दिन लोगों को काटते रहते हैं। सांड, गाय, बछड़े, सुअर, गधे आदि सभी मिलकर सड़कों को गंदा कर रहे हैं। इनमें से सुअर ऐसा जीव है जो गंदगी में ही पलता है। ये जानवर झुंड में रहना पसंद करते हैं। कई बार तो इनके झुंड के झुंड शहर का यातायात जाम कर देते हैं। प्रायः इनके कारण दुर्घटनाएँ हो जाती हैं। ये निरीह पशु भोजन को ढूँढते हुए पॉलीथीन की थैलियों को भी निगल जाते हैं जो इनके पाचन तंत्र में पहुँचकर इनकी मृत्यु का कारण बनती हैं।

समझ में नहीं आता कि प्रशासन क्या सो गया है? सूअर-पालन का योजनाबद्ध बिना किसी खर्च के उद्योग किया जा रहा है और प्रशासन की नाक को जुकाम नहीं है! न तो किसी अधिकारी की गंदगी पर निगाह जाती है और न ही कोई इसके विरुद्ध आवाज ही उठाता है। अतः एक जागरुक नागरिक होने के नाते मेरा कर्तव्य बनता है कि मैं नगर निगम को इस समस्या से अवगत कराऊँ जिससे वे समय रहते इस पर नियंत्रण करें।

धन्यवाद!

भवदीय
शाह आलम
35, शांति कुंज
मथुरा, उत्तर प्रदेश
12 सितंबर, 2008

72. बढ़ती हुई महँगाई के विषय में जनसत्ता के संपादक को चिंता व्यक्त करो।

सेवा में
मुख्य संपादक
जनसत्ता
बहादुरशाह जफ़र मार्ग
दिल्ली

विषयः कमरतोड़ महँगाई

महोदय

मैं आपके लोकप्रिय अखबार जनसत्ता का नियमित पाठक हूँ। मैंने इसके कई संपादकीयों से प्रेरणा भी ली है। मैं कुछ विचार 'जनसत्ता' के माध्यम से जनता व सरकार तक पहुँचाना चाहता हूँ। इन्हें प्रकाशित करें व मुझे कृतार्थ करें।

बढ़ती महँगाई से जनता त्राहि-त्राहि कर उठी है। आलू, प्याज, गेहूँ आदि सब कुछ गरीब की मुट्ठी से रेत की तरह फिसलता जा रहा है। इसका सबसे बड़ा कारण जमाखोरी है। बडे-बड़े व्यापारी दैनिक उपभोग की वस्तुओं को खरीदकर अपने गोदामों में भर लेते हैं तथा बाजार में इसका अभाव दिखा देते हैं। कीमतें बढ़ने पर ही वे इसे बाहर निकालते हैं। इससे लोगों का जीवन स्तर गिर गया है व अपराध वृत्ति को बढ़ावा मिला है। देश में निर्धन व्यक्ति का जीना दूभर हो गया है। इस कारण आज सर्वत्र भ्रष्टाचार व्याप्त हो गया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हमारे नेता शायद कहीं सो गए लगते हैं। इनकी कुंभकर्णी नींद को भंग करना अति अनिवार्य है।

धन्यवाद!

भवदीय
विवेक
23, जे एंड के
दिलशाद गार्डन
दिल्ली—110093
19 अगस्त 2007

73. दैनिक ट्रिब्यून में संपादक को पत्र लिखिए जिसमें बढ़ते प्रदूषण के प्रति चिंता व्यक्त की गई हो।

सेवा में
मुख्य संपादक
दैनिक ट्रिब्यून
दिल्ली

विषयः प्रदूषण की बढ़ती समस्या

महोदय

मैं आपके लोकप्रिय समाचार पत्र दैनिक ट्रिब्यून का नियमित पाठक हूँ। मैं आपके समाचार पत्र के माध्यम से सरकार व जनता का ध्यान बढ़ते प्रदूषण की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। आप इस मामले की गंभीरता को देखते हुए इन विचारों को प्रकाशित करने की कृपा करें।

बढ़ता हुआ प्रदूषण सुरसा के समान मुँह बाये खड़ा है। हमारे क्षेत्र के आसपास इतनी अधिक फैक्ट्रियाँ हैं कि प्रदूषण की समस्या अत्यंत बढ़ गई है। इससे फेफड़ों की समस्याएँ जैसे दमा आदि की समस्या बढ़ती ही जा रही है। यहाँ औद्योगीकरण की प्रवृत्ति बढ़ती ही जा रही है। रात में तो धुँए का यह आलम है कि चांद तक दिखाई नहीं देता तारों की तो बिसात ही क्या? वाहनों के शोर ने कानों के पर्दे जाम कर दिए हैं।

न जाने यह प्रदूषण हमारे जीवन को कहाँ लाकर छोड़ेगा। नित्य नए रोग उत्पन्न हो रहे हैं। मच्छर, तिलचट्टों व अन्य कीड़ों की फौज ने नई-नई समस्याओं को जन्म दिया है।

प्रदूषण से बचने के लिए हमारी आवासीय जगह पर घने वृक्ष लगाए जाने चाहिएँ। इस प्रकार सड़क के किनारों पर भी वृक्ष होने चाहिएँ। प्रदूषण रोकने के लिए कठोर प्रदूषण रोकथाम नियम बनाए जाएँ।

धन्यवाद!

भवदीय
विनीत
45, जीवन कुंज अपार्टमेंट्स
दिलशाद गार्डन
दिल्ली—110 093
10 अगस्त, 2008

74. आप जीवनज्योति बिल्डिंग, 86ए, भुवनेश्वर के निवासी रमाकांत हैं। आप दहेज प्रथा की बुराई पर वीर अर्जुन समाचार पत्र के संपादक को एक पत्र लिखिए।

सेवा में
संपादक
वीर अर्जुन
दिल्ली

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विषयः दहेज प्रथा की बढ़ती समस्या

महोदय

मैं आपके लोकप्रिय समाचार पत्र दैनिक वीर अर्जुन का नियमित पाठक हूँ। मैं आपके समाचार पत्र के माध्यम से सरकार व जनता का ध्यान बढ़ती दहेज प्रथा की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। आप इस मामले की गंभीरता को देखते हुए इन विचारों को प्रकाशित करने की कृपा करें।

दुर्भाग्य से आज दहेज प्रथा एक सामाजिक बुराई बन गई है। आज दहेज प्रेमवश दी जाने वाली वस्तु नहीं वरन् अधिकारपूर्वक माँगने की वृत्ति बन गई है। आज वर पक्ष, वधू पक्ष से जबरन धन व वस्तुएँ माँगते हैं चाहे वधूपक्ष की स्थिति इनके लायक न हो। इस प्रथा के कारण मध्यम वर्ग की दशा दयनीय हो गई है। इस प्रथा से धन-लोलुपता को बढ़ावा मिला है, जिससे भारतीय समाज पतन की ओर अग्रसर है। बेमेल विवाह, आत्महत्याएँ, भ्रष्टाचार, तलाक आदि कुप्रथाएँ इसी प्रथा के कारण बढ़ रही हैं। इस प्रथा के कारण लोग बेईमानी, चोरबाजारी, तस्करी आदि से धन जमा करते हैं तथा दहेज के रूप में देते हैं। मेरे विचार में विवाह का निर्णय युवकों को अपने हाथ में लेना चाहिए क्योंकि अक्सर दहेज की आवाज अधिकतर बड़े बुजुर्ग ही उठाते हैं।

हालांकि आज कानून अत्यंत कड़े हैं। दहेज के विरोध में आवाजें भी उठाई जाती हैं। परंतु सब व्यर्थ। इतने उपाय करने के बाद भी दहेज का दानव बढ़ता ही जा रहा है। अब मध्यमवर्ग का आदमी अपने पुत्र पर खर्च किया गया जीवन भर कर धन सूद सहित वापस पाना चाहता है। गरीबों की कन्याओं को कोई नहीं पूछता। अमीरों की अयोग्य कन्याओं को भी सजीले वरों के साथ ब्याह दिया जाता है।

भवदीय
रामसहाय
86ए, जीवनज्योति बिल्डिंग
भुवनेश्वर
16 मार्च, 2008

75. अपने क्षेत्र में कानून-व्यवस्था की बिगड़ती हुई स्थिति पर किसी दैनिक पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

सेवा में
वरिष्ठ संपादक
सांध्य टाइम्स
दिल्ली

विषयः लचर कानून-व्यवस्था

महोदय

मैं आपके समाचार पत्र सांध्य टाइम्स का एक नियमित पाठक हूँ। मैं सांध्य टाइम्स के माध्यम से सरकार व जनता का ध्यान अत्यंत लचर कानून-व्यवस्था की ओर लाना चाहता हूँ। क्योंकि यह एक गंभीर मामला है, इसलिए मेरे इन विचारों को प्रकाशित करने की कृपा करें।

आजकल गाजियाबाद व इसके अंतर्गत आने वाले क्षेत्र अपराध का प्रमुख अड्डा बन चुके हैं। दिन दहाड़े अपहरण करना, डकैती, चोरी, बलात्कार आदि के मामले बढ़ते ही जा रहे हैं। क्षण भर अपना वाहन खड़े करने में भी खतरा है। अखबार चेन छीने जाने, आगजनी व तोड़फोड़ आदि की घटनाओं से पटे पड़े रहते हैं। दिन-दहाड़े बंदूकों की नोक पर बारात को लूट लिया गया। यदि पुलिस के पास रिपोर्ट लिखाने जाओ, तो वे उलटे जनता को ही खरी खोटी सुनाते हैं। प्रशासन तो आँखें मूँदे पड़ा है। ऐसा जान पड़ता है कि इस प्रदेश में पुलिस जैसी कोई संस्था है ही नहीं। ऐसी पुलिस

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

व प्रशासन का क्या औचित्य है जो जनता की समस्याओं को भी न सुलझा सके? नगर प्रशासन से निवेदन है कि कुछ 'सकारात्मक' कदम उठाए जाएँ जिससे हम नगरवासी चैन से घर से बाहर निकल सकें।

भवदीय
गंगाधर ओंकारनाथ शास्त्री
23-ए, गली नंबर 3
गरिमा गार्डन
गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)
12 मार्च, 2008

76. अपने नगर के समाचार पत्र में क्षेत्र में बढ़ती हुई जुआखोरी पर चिंतन-मनन कीजिए।

सेवा में
वरिष्ठ संपादक
नवभारत टाइम्स
बहादुरशाह जफर मार्ग
दिल्ली

विषय: क्षेत्र में बढ़ती जुआखोरी

महोदय

मैं आपके इस समाचार पत्र के माध्यम से आपका ध्यान अपने क्षेत्र में बढ़ती हुई जुआखोरी की समस्या की ओर आकृष्ट करना चाहता हूँ। संज्ञेय हेतु बात यह है कि इस बुरी आदत में बच्चे व किशोर फँसते ही जा रहे हैं जिससे इनका भविष्य उज्जवल होने के स्थान पर अंधकारमय होता जा रहा है। पुलिस द्वारा जुआखोरी रोकने के जितने भी प्रयास रहे हैं वे अपर्याप्त थे तथा पूरी तरह विफल रहे हैं। लोग चोरी-छिपे जुआ खेलते ही रहते हैं। अत: आपसे व आपके इस समाचार पत्र के माध्यम से प्रशासन को ऐसा कदम उठाने के लिए सुझाव प्रस्तुत करें, जिससे यह बुरी आदत यथाशीघ्र समाप्त की जा सके और हमारा यह नगर फिर से अच्छे वातावरण में परिवर्तित हो सके।

प्रार्थी
जीवनलाल बजाज
ई-4/345
नंद नगरी
दिल्ली—110 093
13 मार्च, 2008

77. अपने क्षेत्र में बिजली के संकट व उससे उत्पन्न विपत्तियों का वर्णन करते हुए 'दैनिक जागरण' के संपादक के नाम एक पत्र लिखो।

सेवा में
संपादक
दैनिक जागरण
दिल्ली

विषय: क्षेत्र में बढ़ता बिजली संकट

महोदय

मैं आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से 'बी०एस०ई०एस० यमुना पावर लिमिटेड' के अधिकारियों का ध्यान

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बिजली संकट से उत्पन्न कठिनाइयों की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ तथा दिल्ली निवासियों की कठिनाइयों को अधिकारियों तक पहुँचाना चाहता हूँ। कृपया अपने समाचार-पत्र में इसे उचित स्थान पर प्रकाशित करके अनुगृहीत करें।

मान्यवर, आए दिन दिल्ली की जनता को बिजली का संकट सहना पड़ रहा है। गर्मी के मौसम में बिजली के चले जाने से जन-जीवन कितना कठिन हो जाता है तथा लोगों को कितनी कठिनाई का सामना करना पड़ता है, इसका अनुमान आप स्वयं ही लगा सकते हैं।

प्राय: उन्हीं इलाकों की बिजली अधिक जाती है, जो सर्वाधिक भीड़भाड़ के क्षेत्र हैं। चाँदनी चौक, अजमेरी गेट, कश्मीरी गेट इन तीनों क्षेत्रों की बिजली घंटों गायब रहती है। दिल्ली में ये तीनों क्षेत्र भीड़भाड़ से भरे क्षेत्र माने जाते हैं। यहाँ के बाजारों में हजारों लोगों की भीड़ रहती है। बिजली के बिना व्यापारियों तथा ग्राहकों को बड़ी परेशानी उठानी पड़ती है।

आश्चर्य की बात यह है कि 'विद्युत-विभाग' के अधिकारियों को इस बारे में कई बार मौखिक तथा लिखित रूप में सूचित किया गया; लेकिन उन्होंने स्थिति में सुधार लाने के लिए कोई प्रयत्न नहीं किया। अत: आप से विनती है कि संबंधित अधिकारियों को उचित निर्देश दिया जाए जिससे इन क्षेत्रों के निवासियों को बिजली की उचित आपूर्ति सुनिश्चित की जा सके।

भवदीय
राकेश
बी-3/421, गली नंबर 23
मालवीय कालोनी
दिल्ली
13 अप्रैल, 2006

8. शिकायती पत्र

प्रशासन में होने वाली ढिलाई या कमी के कारण विभिन्न शासकीय अधिकारियों को लिखे गए पत्र 'शिकायती पत्र' कहलाते हैं। इस प्रकार के पत्र संपादकीय पत्रों के समान ही होते हैं परंतु वे संपादक को संबोधित न होकर शासकीय अधिकारी को संबोधित होते हैं।

78. अपने क्षेत्र की समस्याओं व असुविधाओं की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए क्षेत्र के संसद-सदस्य को पत्र लिखकर उन्हें दूर करने का अनुरोध कीजिए। *(All India CBSE 2004F)*

सेवा में
निगम पार्षद
सरोजिनी नगर क्षेत्र
दिल्ली

विषय: सड़कों की खस्ता हालत व आवारा जानवरों का आतंक

मान्यवर,

मैं आपका ध्यान अपनी कालोनी की दो मुख्य समस्याओं से अवगत कराना चाहता हूँ। वैसे तो हमारी कालोनी समस्याओं से भरी पड़ी है। परंतु दो समस्याएँ सबसे मुख्य है—सड़कों की खस्ता हालत व आवारा जानवरों का आतंक। सड़कों में जगह-जगह गढ्ढे हो गए हैं जिससे रात्रि में साइकिल, मोटरसाइकिल अन्य दुपहिया चालक अनेक दुर्घटनाओं का शिकार हो चुके हैं। खाज में कोढ़ वाली बात यह है कि पता नहीं कहाँ-कहाँ से आवारा जानवर सड़कों पर उतर आते हैं और यातायात को जाम कर देते हैं व सड़कों को गंदा कर देते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह एक स्थायी समस्या बन चुकी हैं। सड़कों में गढ्ढे होने से वहाँ जलभराव की समस्या उत्पन्न हो जाती है जिससे मच्छर आदि भी पनपते हैं। आवारा पशुओं की लीद, गोबर आदि उन गड्ढों में भरकर सड़कों की सुंदरता में चार चाँद लगा देते हैं।

मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि आप अपने प्रभाव का उपयोग करते हुए इस समस्या को जल्द से जल्द दूर करें जिससे कालोनीवासियों को आपको चुनाव में जीत दिलाने के अपने निर्णय पर गर्व हो।

भवदीय
लोकेश त्यागी
बी-5/234, गली नंबर 27
सरोजिनी नगर
दिल्ली
16 मार्च, 2008

89. आपके क्षेत्र में आए-दिन चोरियाँ हो रही हैं। उनकी रोकथाम के लिए थानाध्यक्ष को गश्त बढ़ाने हेतु पत्र लिखिए। *(CBSE 2000)*

सेवा में
श्रीमान थानाध्यक्ष महोदय
थाना नंदनगरी
दिल्ली—110 093

विषयः क्षेत्र में बढ़ती चोरियाँ व पुलिस की भूमिका

मान्यवर,

मैं आपका ध्यान अपनी कालोनी की चोरी की समस्या से अवगत कराना चाहती हूँ। हमारी कालोनी की सुध लेने वाला तो जैसे कोई था ही नहीं तिस पर चोरी की वारदातें अब सर्पदंश के समान होती जा रही हैं। हमारी कालोनी में अधिकतर गरीब जनसंख्या है। पिछले एक मास से क्षेत्र में लगातार चोरी की वारदातें होती जा रही हैं। मेरी अपनी दृष्टि में पाँच चोरियाँ पिछले सप्ताह हुई हैं। चोर भी 'हाई-टेक' हैं। वे सामान या टी०वी० आदि चुराने में यकीन नहीं रखते क्योंकि उसे ढोना कठिन होता है। वे तो नकदी या जेवरों पर ही हाथ मारते हैं। घर के मालिक जब सुबह उठकर देखते हैं तो वे लुट चुके होते हैं। पुलिस के पास लगभग रोजाना प्राथमिकियाँ दर्ज होती हैं। अभी तक तो कोई चोर पकड़ा नहीं जा सका है।

आपसे निवेदन है कि इस क्षेत्र में पुलिस की गश्त को बढ़ा दिया जाए जिससे भयभीत नागरिकों के मन में पुलिस के प्रति कुछ विश्वास उत्पन्न हो व चोरों का उत्साह ठंडा पड़े।

भवदीया
रीना
बी-2/540, गली नंबर 23
हर्ष विहार
दिल्ली—110093
20 अक्तूबर, 2008

80. नगर निगम के अधिकारी को पत्र लिखकर जल-भराव से संबंधित समस्या के समाधान की प्रार्थना कीजिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सेवा में
डिप्टी-कमिशनर
दिल्ली नगर निगम
दिल्ली

विषय: क्षेत्र में जल-भराव की समस्या

महोदय

मैं आपका ध्यान अपने क्षेत्र की जलभराव की समस्या की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। हमारे क्षेत्र में नालियों की समुचित व्यवस्था न होने से जलभराव की समस्या उत्पन्न हो गई है। वर्षा के समय तो स्थिति और भी भयंकर हो जाती है। नगर-पालिका द्वारा सफाई कार्यों पर लगाए गए कर्मचारी साफ-सफाई पर पूर्ण ध्यान नहीं देते। फलस्वरूप नाले भर जाते हैं तथा उनमें बहने वाला गंदा पानी सड़कों पर भर जाता है।

इससे अत्यधिक मात्रा में मच्छरों की उत्पत्ति होती है। पूरे सत्यवती नगर क्षेत्र में मच्छरों का प्रकोप छाया हुआ है। दिन हो या रात सर्वत्र मच्छरों के झुंड नजर जाते हैं। क्षेत्र में मलेरिया, डेंगू आदि का प्रकोप बढ़ता ही जा रहा है। प्राय: प्रत्येक घर में मलेरिया का कोई न कोई रोगी मिल ही जाएगा।

मैं सत्यवती नगर के वासियों की ओर से प्रशासन से आग्रह करता हूँ कि मच्छरों को समाप्त करने के लिए घरों में मच्छरनाशक दवाई छिड़की जाए व नालियों में निकास की समुचित व्यवस्था की जाए। सफाई कर्मचारियों को कार्य के प्रति सख्त किया जाना चाहिए। हमारी कालोनी के निवासी आपके ऋणी होंगे।

भवदीय
साहिब सिंह
34, सत्यवती नगर
अशोक विहार
दिल्ली—110 093
22 अक्तूबर, 2008

81. अपने क्षेत्र के विद्युत अधिकारी को बिजली की कटौती के कारण पढ़ाई में आने वाली कठिनाइयों की चर्चा करते हुए, इसमें सुधार के लिए पत्र लिखिए। *(All India 2000C)*

सेवा में
प्रबंधक
बी०एस०ई०एस० यमुना पावर लिमिटेड
दिल्ली—110 093

विषय: क्षेत्र में बिजली कटौती की समस्या

महोदय

मैं आपका ध्यान अपने क्षेत्र की बिजली कटौती की समस्या की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। हमारे क्षेत्र में पिछले छ: मास में रात के 6 से 9 बजे के बीच बिजली की अत्यंत कटौती होती है जिससे गृहिणियों के लिए रसोई का कार्य करना मुश्किल हो जाता है। सबसे अधिक समस्या विद्यार्थियों के लिए होती है। परीक्षाओं का समय अब समीप आ गया है। मेरी अधिकारियों से प्रार्थना है कि परीक्षाओं के इस समय में बिजली कटौती न करें। यदि करनी भी पड़े तो कृपया रात के समय न करें। यदि ऐसा ही चलता रहा तो विद्यार्थियों का कैरियर चौपट होने की संभावना है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भवदीय
प्रदीप कुमार
एम-83, सुंदर नगरी
नंद नगरी
दिल्ली—110 093
12 जनवरी, 2008

82. आपकी कालोनी के पूर्वी ओर अनधिकृत झुग्गी-झोंपड़ियों के बसे होने से आपके क्षेत्रवासियों को विभिन्न प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। निगम प्रमुख को पत्र लिखिए जिसमें इन्हें हटाने के लिए प्रार्थना की गई हो।

सेवा में
श्रीमती शीला दीक्षित
मुख्यमंत्री
दिल्ली सरकार

विषयः अनधिकृत झुग्गी-झोंपड़ियों को हटाये जाने के विषय में

महोदय,

मैं आपका ध्यान अपने क्षेत्र की अनधिकृत झुग्गियों की तरफ आकर्षित करना चाहता हूँ। हमारे क्षेत्र में इन झुग्गियों में असामाजिक तत्व पलते हैं जो विभिन्न प्रकार की असामाजिक गतिविधियों में शामिल रहते हैं। पुलिस रिकॉर्ड्स से पता चलता है कि जितनी भी चोरियाँ, अपहरण आदि की वारदातें अशोक विहार क्षेत्र में होती हैं वे सभी वारदातें इन्हीं झुग्गियों में रहने वाले असामाजिक तत्व ही अंजाम देते हैं। इन झुग्गियों में अनेक प्रकार के अवैध व गैर-कानूनी धंधे होते हैं। जैसे अवैध शराब बनाना, जुआ आदि। यदि समय रहते इन झुग्गियों को यहाँ से नहीं हटाया गया तो स्थिति और भी विस्फोटक हो सकती है।

मुझे पूर्ण आशा है कि मुख्यमंत्री अपनी जनता के हितों की रक्षा के लिए इन अनधिकृत झुग्गी-झोंपड़ियों को हटाने का पूरा प्रयत्न करेंगी।

धन्यवाद!

भवदीय
नवल यादव
85, ज्ञान निवास
अशोक विहार, फेज-3
दिल्ली
15 फरवरी, 2008

83. कावेरी छात्रावास के अधीक्षक को अनुराधा की ओर से पत्र लिखकर, छात्रावास की भोजनशाला के निरंतर गिरते स्तर की ओर उनका ध्यान आकृष्ट कीजिए। *(All India CBSE 2006)*

सेवा में
छात्रावास अधीक्षक
कावेरी छात्रावास, महरौली
दिल्ली

विषय: भोजन का निरंतर गिरता स्तर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

महोदय,

मैं आपका ध्यान छात्रावास में परोसे जाने वाले भोजन के घटिया स्तर के विषय में लाना चाहती हूँ। पिछले एक सप्ताह से भोजन अत्यंत घटिया स्तर का बनकर आ रहा है। ऐसा भोजन तो जेलों में भी नहीं मिलता। चावलों की गुणवत्ता एकदम तीसरे दर्जे की है। दालों में पानी ही पानी नजर आता है। आलू की सब्जी में आलू नजर ही नहीं आते। पीने के पानी की भी गुणवत्ता अच्छी नहीं है। दूध तो नाम का ही है, वास्तव में वह सफ़ेद पानी है।

आप स्वयं इस मामले को देखें कि आखिर मामला क्या है। अवश्य ही इसमें कोई कुछ हेरा-फेरी कर रहा है। मुझे पूर्ण आशा है कि आप इस मामले को नजरअंदाज नहीं करेंगे।

धन्यवाद!

भवदीय
अनुराधा
कक्षा 10
अनुक्रमांक 14
कावेरी छात्रावास नंबर 3
दिल्ली
15 फरवरी, 2008

84. आपके नगर में अनधिकृत मकान बनाए जा रहे हैं। इनकी रोकथाम के लिए जिलाधिकारी को पत्र लिखिए। *(All India CBSE 2006)*

सेवा में
जिलाधिकारी महोदय
जयपुर (राजस्थान)

विषय: अनधिकृत मकानों का निर्माण

महोदय,

निवेदन है कि आजकल अनधिकृत रूप से बहुत से मकान बनाए जा रहे हैं। आश्चर्य की बात तो यह है कि सब कुछ जिला प्रशासन की नाक के नीचे हो रहा है। नगरपालिका का कोई कर्मचारी उन्हें रोकने नहीं आया। ऐसा लगता है कि पूरा प्रशासन कुंभकर्णी नींद सो गया है जिन्हें जगाने के सभी उपाय बेमानी साबित हो रहे हैं।

आपसे प्रार्थना है कि समय रहते अवैध निर्माण को ढहा दिया जाए अन्यथा यह स्थिति प्रशासन के लिए ही भस्मासुर बन जाएगी।

धन्यवाद!

भवदीय
चिरंजीव प्रकाश
14, नेहरू विहार
जयपुर (राजस्थान)
17 अगस्त, 2008

85. अपने क्षेत्र में पेय जल की समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए स्वास्थ्य अधिकारी को एक पत्र लिखिए।

सेवा में
अधिशासी अभियंता
राजेंद्र नगर
गाजियाबाद (उ०प्र०)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विषय: दूषित पेयजल व बाधित आपूर्ति

महोदय,

निवेदन यह है कि हमारी कालोनी में इन दिनों जून की भीषण गर्मी में पानी की आपूर्ति का अकाल पड़ गया है। एक तो भीषण गर्मी तिस पर पानी की कमी! तीन दिनों बाद पानी की आपूर्ति की तो गई परंतु दूषित पानी की आपूर्ति की गई। मुझे तो लगता है कि नदी-नालों के पानी को पूर्ण रूप से शुद्ध किए बिना ही सप्लाई कर दिया गया है। दूषित पानी को पीकर हमारी कालोनी के बच्चे बीमार पड़ गए हैं। एक तो मरते-मरते बचा।

मेरा आपसे विनम्र निवेदन है कि यथाशीघ्र शुद्ध जल की आपूर्ति सुनिश्चित की जाए।

धन्यवाद!

भवदीय
भीष्म वर्मा
23, अर्चना अपार्टमेंट्स
शालीमार गार्डन
गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)
12 अगस्त, 2008

86. स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए जिसमें रिहायशी क्षेत्रों में व्यावसायिक प्रतिष्ठानों व उद्योगों को बंद करने की अपील की गई हो।

सेवा में
स्वास्थ्य अधिकारी
नई दिल्ली

विषय: आवासीय क्षेत्रों में व्यावसायिक प्रतिष्ठानों व उद्योगों को बंद करने की सिफारिश

महोदय,

निवेदन यह है कि हमारी आवासीय कालोनी में बहुत से औद्योगिक प्रतिष्ठान खुल गए हैं। प्राय: हर मकान में एक दुकान तो है ही। कहीं दर्जी की दुकान, कहीं मिठाई की दुकान, कहीं मांस की दुकान, कहीं बड़े-बड़े शोरूम खुल गए हैं। दुकानें तो दुकानें लोगों ने तो गलियाँ तक घेर ली हैं। उन दुकानों के मालिक अपने-अपने वाहन सड़क पर खड़े कर देते हैं। तीस फुट की सड़क पर जब दोनों ओर वाहन खड़े हो जाते हैं तो वह दस फुट की ही रह जाती है। वहाँ सदैव बदबू व गंदगी रहती है। कुछ कार्यशालाओं में रसायनों का प्रयोग होता है जिससे अत्यधिक प्रदूषण फैल रहा है। यहाँ बर्तन बनाने की छोटी-छोटी इकाईयाँ हैं जिनसे हर समय शोरगुल रहता है। अंदर की गलियों में इन दुकानदारों के गोदाम या कार्यशालाएँ हैं। किसी-किसी घर में दर्जी के कारीगर, हलवाई के कारीगर आदि जोर-जोर से टेप बजाने लगते हैं व विरोध करने पर लड़ने को उतारू हो जाते हैं।

जनहित को देखते हुए इस प्रकार की अवैध दुकानें, जो आवासीय इलाकों में चलाई जा रही हैं, बंद की जानी चाहिएँ। मेरा आपसे विनम्र निवेदन है कि इस प्रकार की इकाइयों पर तुरंत अंकुश लगाया जाना चाहिए।

धन्यवाद!

भवदीय
सुभाष अरोड़ा
456, जीटीबी एंक्लेव
नंद नगरी
दिल्ली
23 अक्तूबर, 2008

©Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रश्न-अभ्यास

प्रार्थना पत्र

1. प्रधानाचार्यजी को आवश्यक कार्य हेतु अवकाश माँगते हुए पत्र लिखिए।
2. दण्ड-क्षमा हेतु प्रधानाचार्या को प्रार्थना पत्र लिखिए।
3. अंकों के पुनर्मूल्यांकन के लिए प्रधानाचार्य को प्रार्थना-पत्र लिखिए।
4. अन्य राज्य से आए हुए छात्र की ओर से दाखिले के लिए शिक्षा अधिकारी को प्रार्थना-पत्र लिखिए।
5. दिल्ली के ऐतिहासिक स्थलों के भ्रमण की व्यवस्था करवाने के लिए प्रधानाचार्या को प्रार्थना-पत्र लिखिए।

आवेदन पत्र

6. दूरदर्शन के भारत-भारती चैनल के प्रबंधक को समाचार उद्घोषक वाचक के पद के लिए आवेदन कीजिए।
7. अपनी योग्यता का विवरण देते हुए अ.ब.स. पब्लिक स्कूल के प्रधानाचार्य को सहायक अध्यापक के पद के लिए आवेदन पत्र लिखिए।
8. अ.ब.स. लिमिटेड साबुन बनाने वाली कंपनी को घर-घर जाकर प्रचार करने वाले युवक-युवतियों की आवश्यकता है। इस कार्य के लिए अपनी रुचि प्रकट करते हुए कंपनी के प्रबंधक को आवेदन-पत्र लिखिए।

बधाई पत्र

9. दाखिले के लिए प्रतियोगी परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर मित्र को बधाई-पत्र लिखिए।
10. उच्च शिक्षा के लिए विदेश जाने का सुअवसर प्राप्त होने पर बड़ी बहन को बधाई-पत्र लिखिए।
11. गणित तथा विज्ञान में 100 प्रतिशत अंक पाने पर अपने भाई सुमित को बधाई पत्र लिखिए।
12. अपने प्रिय अध्यापक को राज्य शिक्षक सम्मान के लिए चुने जाने पर बधाई पत्र लिखें।

धन्यवाद पत्र

13. आप विद्यालय में छात्र-प्रतिनिधि हैं। आपके विद्यालय के छात्रों ने मोहल्ले के सफाई अभियान में बढ़-चढ़कर भाग लिया। इसके लिए छात्रों को धन्यवाद देते हुए पत्र लिखिए।
14. बस यात्रा के दौरान खोए हुए आपके प्रमाण पत्रों की फाइल किसी अज्ञात महिला द्वारा लौटाए जाने पर उसे धन्यवाद पत्र लिखिए।
15. गणित की अध्यापिका के द्वारा विद्यालय समय के बाद एक घंटा अतिरिक्त पढ़ाई करवाने की व्यवस्था करवाने पर अध्यापिका को धन्यवाद-पत्र लिखिए।

शुभकामना पत्र

16. अपने माता-पिता के विवाह की 25वीं वर्षगाँठ पर उनके खुशहाल जीवन की कामना करते हुए पत्र लिखिए।
17. आपके चाचा शैक्षणिक यात्रा के लिए दो वर्ष के लिए विदेश यात्रा पर जा रहे हैं। उनकी मंगलमय यात्रा और प्रवास की कामना करते हुए पत्र लिखिए।
18. अपने अभिन्न मित्र अनंत को बोर्ड परीक्षा में सफलता की कामना करते हुए पत्र लिखिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिकायती पत्र

19. मोहल्ले में महिलाओं और लड़कियों के साथ होने वाली छेड़खानियों की जानकारी देते हुए पुलिस अधीक्षक को पत्र लिखिए।
20. विद्यालय के गेट के पास खड़े गंदी वस्तुएँ बेचने वाले खोमचे वालों की शिकायत करते हुए पुलिस अधिकारी को पत्र लिखें।
21. मोहल्ले में लाउडस्पीकर के शोर से सामान्य नागरिक को होने वाली कठिनाइयों का वर्णन करते हुए समाचार पत्र के सम्पादक को पत्र लिखें।
22. आपके मौहल्ले के प्रमुख कूड़ाघर की नियमित सफाई न होने से उत्पन्न मक्खी, मच्छर व दुर्गंध के प्रकोप का उल्लेख करते हुए सफाई की उचित व्यवस्था के लिए निगम स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखें।
23. नि:शुल्क पुस्तकें वितरित करने में देरी होने पर छात्रों को अध्ययन में आने वाली कठिनाइयों का वर्णन करते हुए एस.सी.ई.आर.टी. के निर्देशक को एक पत्र लिखें।
24. अपने क्षेत्र के जल विभाग के अधिकारी को स्वच्छ, नियमित और पर्याप्त रूप से जल न मिलने की शिकायत करते हुए पत्र लिखिए।
25. अपने क्षेत्र में बच्चों और युवाओं को नशीली वस्तुएँ बेचने वालों की जानकारी देते हुए पुलिस अधीक्षक को पत्र लिखिए।
26. अपने मोहल्ले में अनाधिकृत रूप से बिजली के प्रयोग और बिजली चोरी से होने वाली असुविधाओं का वर्णन करते हुए विद्युत अधिकारी को पत्र लिखिए।

संवेदना पत्र

27. आपके मित्र की बहन की 'जम्मू बस दुर्घटना' में मृत्यु हो गई है। अपने मित्र को दु:ख प्रकट करते हुए सांत्वना पत्र लिखिए।
28. एक सड़क दुर्घटना में आपके मित्र की दुखद मृत्यु हो जाने पर उसकी माताजी को संवेदना पत्र लिखिए।
29. बोर्ड की परीक्षा में फेल हो जाने पर संवेदना व्यक्त करते हुए इस बार अधिक परिश्रम करने की प्रेरणा देते हुए अपने चचेरे भाई आलोक को पत्र लिखिए।

निमंत्रण पत्र

30. अपने भतीजे के नामकरण समारोह में आमंत्रित करते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए।
31. गर्मी की छुट्टियाँ साथ मनाने के लिए अपने हमउम्र बुआ के बेटे को दिल्ली आने का निमंत्रण देते हुए पत्र लिखिए।
32. बड़े भाई के विवाह का निमंत्रण देते हुए अपने अभिन्न मित्र को पत्र लिखिए।

विविध पत्र (निजी, घरेलू)

33. आपका छोटा भाई पढ़ाई की ओर ध्यान न देकर हर समय कम्प्यूटर चलाता है। इससे होने वाले नुकसानों का वर्णन करते हुए पढ़ाई में ध्यान देने की सलाह देते हुए अपने भाई को पत्र लिखिए।
34. नशीले पदार्थों का नुकसान बताते हुए उनसे बचने की सलाह देते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए।
35. विद्यालय में झगड़ा करने पर आपके विद्यालय के प्रधानाचार्य ने आपके पिताजी को बुलाकर उन्हें चेतावनी दी। अपने पिताजी से इस बात के लिए क्षमा-प्रार्थना करते हुए पत्र लिखिए।
36. 'मोबाइल फोन' पर समय व्यर्थ न करके पढ़ाई में ध्यान देने की सलाह देते हुए छोटी बहन को पत्र लिखिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE 2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गत परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्न

1. अपने नगर विकास प्राधिकरण के सचिव को अपनी कालोनी के पार्क के विकास हेतु पत्र लिखिए। *(All India CBSE 1996)*
2. पूर्वोत्तर सीमा रेलवे के कनिष्ठ निरीक्षक के पद के लिए अपनी योग्यताओं का विवरण देते हुए आवेदन-पत्र लिखिए। *(All India 1997)*
3. शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय में नर्सरी-अध्यापक के प्रशिक्षण हेतु अपनी योग्यताओं का विवरण देते हुए आवेदन कीजिए। *(CBSE 1997)*
4. अपने क्षेत्र में पेय-जल की समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए अपने स्वास्थ्य अधिकारी को एक पत्र लिखिए। *(CBSE 1997)*
5. आप अपने सहपाठियों के साथ बस की प्रतीक्षा में खड़े हैं। तभी आपके पड़ौस का एक आवारा लड़का वहाँ आता है और पास में खड़ी लड़कियों के साथ अभद्र व्यवहार करता है। आपसे उसका यह व्यवहार देखा नहीं जाता। आप उसे समझाते हैं तो वह मारपीट करने लगता है। इसकी शिकायत थानाध्यक्ष को लिखिए। *(All India CBSE 1998)*
6. गत दिनों से आपके क्षेत्र में अपराध बढ़ने लगे हैं। उनकी रोकथाम के लिए थानाध्यक्ष को पत्र लिखिए। *(CBSE 1998)*
7. एन.सी.ई.आर.टी. में लिपिक पद के रिक्त स्थानों को भरने हेतु 'रोजगार समाचार' में विज्ञापन आया है। उसका हवाला देते हुए निदेशक के नाम एक आवेदन-पत्र लिखिए। *(All India CBSE 1998, 2002)*
8. अपने नगर के विद्युत प्रदाय संस्थान के महाप्रबंधक को पत्र लिखकर परीक्षा के दिनों में बारंबार बिजली कटौती के विषय में पत्रव्यवहार कीजिए। *(All India CBSE 1999)*
9. आपका टेलीफोन गत दो सप्ताह से खराब है। क्षेत्रीय कार्यालय में आपने कई बार शिकायत की है, किंतु परिणाम ज्यों-का-त्यों है। इसकी शिकायत करते हुए किसी प्रसिद्ध समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए। *(All India 1999C)*
10. अपने इलाके में डाक-वितरण की व्यवस्था ठीक न होने की ओर ध्यान खींचते हुए डाकपाल को पत्र लिखिए। *(CBSE 1999)*
11. अपने मोहल्ले की सफाई के लिए स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए। *(All India 2000C)*
12. सहायक अध्यापक के पद के लिए शिक्षा-अधिकारी के नाम आवेदन पत्र लिखिए। *(All India 2000C)*
13. आप दुर्घटनाग्रस्त हो गए हैं। इसका विवरण देते हुए अवकाश माँगने हेतु प्रधानाचार्य को आवेदन पत्र लिखिए। *(All India 2000C)*
14. आपके राज्य में प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापक के रिक्त स्थान भरने हेतु 'रोजगार समाचार' में विज्ञापन आया है। उसका विवरण देते हुए शिक्षा-निदेशक के नाम एक आवेदन पत्र लिखिए। *(All India CBSE 2000C)*
15. दिल्ली परिवहन निगम की बस में आप बैग भूल गए। उसका पता लगाने हेतु दिल्ली परिवहन निगम के प्रबंधक को पत्र लिखिए। *(CBSE 2000C)*
16. आपकी मोटरसाइकिल चोरी हो गई है। उसकी रिपोर्ट दर्ज कराने के लिए थानाध्यक्ष को पत्र लिखिए। *(CBSE 2000C)*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

17. परिवहन निगम के महाप्रबंधक को कुछ दिन पहले हुई बस-दुर्घटना का विवरण देते हुए एक पत्र लिखिए जिसमें चालक की दिलेरी, कर्तव्यनिष्ठा और सूझ-बूझ की प्रशंसा हो। *(CBSE 2000)*
18. नगर निगम में कार्यालय सहायक पद हेतु एक आवेदन पत्र लिखिए। *(All India CBSE 2001C)*
19. आपकी परीक्षा निकट है व बिजली घंटों गुल रहती है। इसकी शिकायत करते हुए दिल्ली विद्युत बोर्ड के प्रबंधक को पत्र लिखिए। *(CBSE 2001C)*
20. बस कंडक्टर के अशिष्ट व्यवहार की शिकायत करते हुए अपने प्रदेश के शिक्षा-अधिकारी के नाम आवेदन पत्र लिखिए। *(CBSE 2001)*
21. बिजली के बार-बार गुल हो जाने और कई-कई घंटे न आने के कारण आपकी पढ़ाई में बाधा पड़ रही है। इसकी शिकायत करते हुए अधिशासी अभियंता को एक पत्र लिखिए। *(CBSE 2001)*
22. गली-मुहल्ले की सड़कों और नालियों की नियमित व समुचित सफ़ाई न होने की शिकायत करते हुए नगरपालिका के अध्यक्ष को पत्र लिखिए। *(CBSE 2002 AI)*
23. 'दीपायन' संस्था को पुस्तकालय सहायक की आवश्यकता है। संस्था अध्यक्ष को पत्र लिखिए। *(CBSE 2002C)*
24. शिक्षा-विभाग द्वारा अपने विद्यालय के भवन की उपेक्षा किए जाने पर किसी दैनिक पत्र के संपादक को एक पत्र लिखिए। *(CBSE 2002C)*
25. विद्युत विभाग द्वारा अपने क्षेत्र की उपेक्षा किए जाने पर किसी दैनिक पत्र के संपादक को एक पत्र लिखिए। *(CBSE 2002 C)*
26. उदयपुर स्थित 'सहेली' संस्था को घर-घर जाकर आँकड़े एकत्र करने के लिए कुछ सहायकों की आवश्यकता है। संस्था अध्यक्ष को पत्र लिखो। *(CBSE 2002 C)*
27. खोई हुई चैक बुक प्राप्त करने के लिए प्रशांत नाम के किसी अपरिचित को पत्र लिखिए। *(All India 2003)*
28. स्वास्थ्य में अपेक्षित सुधार लाने के लिए नित्य व्यायाम करने की प्रेरणा देते हुए अपने छोटे भाई को पत्र लिखिए। *(CBSE 2003)*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

6

संवाद लेखन

किन्हीं दो या दो से अधिक व्यक्तियों का परस्पर बातचीत करना 'संवाद लेखन' कहलाता है। यह विषय एक कला है। संवाद लेखन में कौन-कौन से गुण होने चाहिएँ, इसका उल्लेख इस पुस्तक में 'वार्तालाप' शीर्षक के अंतर्गत 'बातचीत या संवाद' भाग में किया गया है। इस पुस्तक में संवाद लेखन के अनेक उदाहरण विविध शीर्षकों के अंतर्गत दिए गए हैं। जैसे—मित्रों के साथ बातचीत, परिचय लेना, पास-पड़ौस में संपर्क आदि।

विद्यार्थियों की सुविधा हेतु नीचे संवाद-लेखन के कुछ अन्य उदाहरण भी प्रस्तुत हैं। परीक्षा में रेलवे, बस-अड्डा आदि से विभिन्न विषयों से पूछताछ संबंधी विचार लिखने के लिए कहा जा सकता है। नीचे कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं:

1. सुबह के चार बजे हैं। आप अंतर्राज्यीय बस अड्डा, दिल्ली पर खड़े हैं। आपको करनाल जाना है। बस अड्डा पूछताछ कक्ष से पूछताछ कीजिए कि आपको कौन सी बस किस समय मिलेगी व कौन से स्टैंड पर आपको खड़े होना है।

पूछताछ कर्मचारी : बस पूछताछ सेवा।

आप : जी हाँ, कृपया आप मुझे बताने का कष्ट करेंगे कि करनाल जाने वाली बस कितने बजे आती है?

पूछताछ कर्मचारी : श्रीमान्, पहली बस ठीक 3:45 पर करनाल के लिए रवाना होती है।

आप : फिर तो मुझे देर हो गई है। श्रीमान जी कृपया बताइये कि अगली बस किस समय आती है?

पूछताछ कर्मचारी : जी अगली बस साढ़े चार बजे आएगी।

आप : यह बस किस किस राज्य की होगी व कौन से नंबर स्टैंड पर मिलेगी?

पूछताछ कर्मचारी : श्रीमान यह बस हरियाणा रोड़वेज की होगी व स्टैंड नंबर 4 पर तैयार खड़ी है।

आप : आपका बहुत-बहुत धन्यवाद महोदय।

पूछताछ कर्मचारी : सुस्वागतम्।

2. ग्रेटर कैलाश में श्री विजेंद्र कुमार जी, जो पेशे से इतिहास विषय के प्रवक्ता हैं, आपके पड़ोस में रहते हैं। आपका नाम रामचंद्र है। वे आपके पास संपर्क के लिए आते हैं। आपकी व श्री विजेंद्र की बातचीत प्रस्तुत कीजिए।

विजेंद्र : नमस्कार।

रामचंद्र : नमस्कार, आइए भाई साहब! बैठिए।

विजेंद्र : मैं आपके साथ वाले घर में रहता हूँ। मेरा नाम विजेंद्र है।

रामचंद्र : आपसे मिलकर प्रसन्नता हुई। आसन ग्रहण कीजिए।

विजेंद्र : क्या मैं जान सकता हूँ कि आप क्या व्यवसाय करते हैं?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रामचंद्र : जी मैं इतिहास का अध्यापक हूँ। यहीं राजकीय सर्वोदय विद्यालय में पढ़ाता हूँ।
विजेंद्र : अरे वाह! यह तो बड़ा ही अच्छा संयोग है। मैं भी इतिहास का ही प्रवक्ता हूँ।
रामचंद्र : यह तो बहुत ही खुशी की बात है। मुझमें व आपमें अच्छी छनेगी।
विजेंद्र : धन्यवाद! यदि किसी समय कोई आवश्यकता या समस्या हो तो याद कीजिएगा।

3. राकेश के पिता प्रतिदिन रेलगाड़ी से शाम चार बजे घर पहुँच जाते हैं। आज छः बज गए किंतु वह घर नहीं पहुँचे। रेलवे पूछताछ कार्यालय से मालूम कीजिए कि गाड़ी की क्या स्थिति है?

राकेश : हैलो! क्या यह रेलवे पूछताछ केंद्र है?
कर्मचारी : जी श्रीमान। मैं आपकी क्या सहायता कर सकता हूँ?
राकेश : मैं जानना चाहता हूँ कि श्रीनगर से दिल्ली के लिए रवाना होने वाली जम्मू-तवी एक्सप्रेस क्या विलंब से आ रही है?
कर्मचारी : जी श्रीमान। यह गाड़ी 4 घंटे विलंब से चल रही है व पाँच मिनट पश्चात् पहुँचने वाली है।
राकेश : धन्यवाद महोदय।

4. आपका मित्र सोनू बहुत दिनों पश्चात् अचानक मेनरोड़ पर मिल जाता है। अपने व उसके बीच होने वाले संवाद प्रस्तुत कीजिए।

आप : मित्र सोनू! कैसे हो? कहाँ जा रहे हो?
सोनू : अहा मित्र सुरेश! बहुत दिनों पश्चात् मुलाकात हुई। मैं यहीं गाँधीनगर किसी कारणवश जा रहा हूँ।
आप : मैं बहुत दिनों से याद कर रहा था कि बहुत दिनों से सोनू से मुलाकात ही नहीं हुई। घर जाने पर तुम कभी मिलते नहीं हो। आज संयोगवश मुलाकात हो ही गई।
सोनू : मैं भी तुम्हें बहुत याद करता हूँ मित्र। परंतु इतनी व्यस्तता में समय ही नहीं निकाल पाता। रविवार की भी छुट्टी नहीं होती।
राकेश : खैर कोई बात नहीं। जब भी तुम्हारे पास समय हुआ करे मुझे फोन कर दिया करो। तुम्हारे लिए मैं सदैव रिक्त रहता हूँ।
सोनू : यह तो आपकी भलमनसाहत है।

4. अंजली टूँडला से दिल्ली होते हुए अमृतसर जाना चाहती है। इसके लिए कोई सीधी गाड़ी नहीं है। अतः वह पूछताछकर्मी से ऐसी गाड़ियाँ पूछना चाहती है जिन पर सवार होकर वह सरलतापूर्वक अमृतसर जाकर वापस टूँडला पहुँच सके। आप अंजलि की ओर से फोन करके पूछताछ कीजिए।

पूछताछ कर्मी : जी हाँ, रेलवे पूछताछ सेवा प्रस्तुत है।
अंजली : जी, मैं टूँडला से अमृतसर जाना चाहती हूँ। कृपया मुझे बताएँ कि टूँडला से चलने वाली कौन-सी गाड़ी हैं जो आगे अमृतसर की गाड़ी से सम्बद्ध है?
कर्मी : आप प्रातः जाना चाहती हैं या शाम।
अंजली : प्रातःकाल में।
कर्मी : आप प्रातः सात बजे टूँडला से 1127 मेल पकड़िए। वह आपको 8.00 बजे दिल्ली पहुँचाएगी। वहाँ से 8.30 पर अमृतसर के लिए एक्सप्रेस गाड़ी है।
अंजली : यह गाड़ी किस नंबर प्लेटफार्म से चलती है?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कर्मी : यह गाड़ी नौ नंबर प्लेटफार्म से चलती है।

अंजली : क्या मुझे इसके लिए टूँडला से ही दोनों टिकटें प्राप्त हो जायेंगी।

कर्मी : जी अवश्य।

अंजली : श्रीमान जी, कृपा करके शाम को वापसी की कोई सम्बद्ध ट्रेनें हों तो वह भी बता दें।

कर्मी : अमृतसर से 8 बजे रात को दिल्ली के लिए एक्सप्रेस गाड़ी है। वह मध्यरात्रि उपरांत दिल्ली पहुँचाएगी। फिर दिल्ली से गाजियाबाद के लिए सवा दो पर गाड़ी प्लेटफार्म 4 पर मिलेगी।

अंजली : धन्यवाद।

5. शामली से दिल्ली आने वाली एक बस दुर्घटनाग्रस्त हो गई है। बस में आपके परिचित भी सवार हैं। इसमें कई लोग जख्मी भी हुए हैं। आपके मामा भी शामली से दिल्ली आ रहे थे। आप व्यथित हैं। बस-अड्डे के पूछताछ-कार्यालय से पूछताछ कीजिए।

आप : हैलो, दिल्ली अंतर्राज्यीय बस अड्डा पूछताछ केंद्र?

कर्मी : जी श्रीमान, कहिए मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?

आप : विदित हुआ है कि शामली से दिल्ली आने वाली यू०पी० रोडवेज दुर्घटनाग्रस्त हो गई है। इसमें कई व्यक्तियों के हताहत होने की खबर भी है।

कर्मी : जी हाँ महोदय। दिल्ली आने वाली एक रोडवेज बस सड़क की बाईं ओर पलट गई है। परंतु किसी की मृत्यु की कोई सूचना नहीं है।

आप : जी उस गाड़ी में मेरे मामा भी सवार हो सकते हैं। वे भी आज शामली से दिल्ली आ रहे थे। क्या आपके पास हताहत व्यक्तियों के नाम उपलब्ध हैं?

कर्मी : जी नहीं श्रीमान। ऐसी कोई सूचना मेरे पास उपलब्ध नहीं है।

आप : क्या किसी यात्री को गंभीर चोट भी लगी है?

कर्मी : नहीं श्रीमान किसी यात्री को गंभीर चोट नहीं लगी है।

आप : क्या आप मुझे अस्पताल का पता बता सकते हैं?

कर्मी : जी लिखिए . . .

6. अहमदाबाद के बस-अड्डे के पूछताछ-अधिकारी से फोन पर पूछिए कि ब्यावर के लिए आखिरी बस वहाँ से कितने बजे चलती है?

यात्री : हैलो, बस-अड्डा पूछताछ केंद्र, अहमदाबाद?

अधिकारी : जी हाँ, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?

यात्री : जी मैं जानना चाहता हूँ कि अहमदाबाद से ब्यावर जाने वाली बस सेवा कितने बजे चलती है।

अधिकारी : आप दिन में लगभग कितने बजे जाना चाहते हैं?

यात्री : मैं प्रथम बस से ही जाना चाहता हूँ?

अधिकारी : आप प्रातः साढ़े पाँच बजे वाली बस से जा सकते हैं।

यात्री : धन्यवाद महोदय।

7. शिवचरण, फरीदाबाद से चलकर 8.00 बजे रात्रि मथुरा पहुँचने वाली बस से घर जाते हैं। आज 9:00 बजे तक वे घर नहीं पहुँचे। उनकी पत्नी सीमा परेशान है। वह बस-अड्डे के पूछताछ-कार्यालय से पूछताछ करती है। आप सीमा की ओर से बात कीजिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सीमा : हैलो, क्या आप मथुरा बस अड्डा से बोल रहे हैं?
कर्मी : जी, बोल रहे हैं।
सीमा : मेरे पति श्री शिवचरण फरीदाबाद से मथुरा आने वाले थे। वे अभी तक नहीं आए हैं। गाड़ी मथुरा में सामान्यतः 8 बजे आ जाती है। परंतु अब 10 बज गए हैं। आखिर बात क्या है?
कर्मी : जी बस के ड्राईवर की अचानक तबीयत बिगड़ने के कारण बस दो घंटे देरी से आ रही है। परेशान होने की आवश्यकता नहीं है।
सीमा : मैं तो परेशान ही हो गई थी। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

8. दिल्ली के केवल कृष्ण ने हजरत निजामुद्दीन से चेन्नई के लिए परिवार के चार सदस्यों का आरक्षण कराया था, जो कि सुनिश्चित नहीं हो सका था। इस विषय में आरक्षण कार्यालय से फोन द्वारा जानकारी लीजिए।

केवल कृष्ण : हजरत निजामुद्दीन रेलवे पूछताछ केंद्र?
कर्मी : जी श्रीमान, कहिए मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?
केवल कृष्ण : मेरा नाम केवल कृष्ण है। मैंने चेन्नई के लिए अपने परिवार के चार सदस्यों का आरक्षण कराया था जो प्रतीक्षा श्रेणी में था व अभी तक सुनिश्चित नहीं हो सका है। कृपया उसकी स्थिति स्पष्ट कीजिए।
कर्मी : अपना पी०एन०आर० नंबर बताइए।
केवल कृष्ण : जी हाँ, नोट करें 3239232442
कर्मी : यह अभी प्रतीक्षा श्रेणी में हैं। एक या दो दिन में इसकी आर.ए.सी. मिलने की आशा है।
केवल कृष्ण : क्या मेरा आरक्षण सुनिश्चित हो जाएगा?
कर्मी : यह तो पक्का नहीं कहा जा सकता। परंतु आपको आर०ए०सी० तो मिल ही जाएगी।

9. अपने मामाजी के अचानक आने पर रवि को अति आश्चर्य हुआ है। रवि व उसके मामाजी के बीच वार्तालाप के कुछ अंश बताओ।

रवि : आइए मामाजी, सुस्वागतम्।
मामाजी : जीते रहो बेटे, बहनजी व जीजा जी कहाँ हैं?
रवि : माताजी व पिताजी दोनों कुछ खरीदारी करने बाजार गए हैं। कृपया बैठिए, मैं आपके लिए कुछ ठंडे या गर्म का प्रबंध करता हूँ।
मामाजी : नहीं पुत्र। इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। बहनजी व जीजाजी के आने पर ही यह सब ठीक रहेगा।
रवि : ठीक है। जैसी आपकी इच्छा। मैं आपकी और क्या सेवा कर सकता हूँ?
मामाजी : तुम थोड़ी देर केवल मेरे पास बैठ जाओ। तुम्हारी शिक्षा कैसी चल रही है? कुछ तो बातें करो।
रवि : बहुत अच्छी मामाजी। मैंने अभी अर्द्धवार्षिक परीक्षाओं में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।
मामाजी : तुम अच्छी तरक्की करो। मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

9. जीवन अपना साक्षात्कार देने एक अच्छी कंपनी में गया। वहाँ नियोक्ता व जीवन के बीच हुए साक्षात्कार के कुछ अंश बताइए।

नियोक्ता : आपकी शिक्षा कहाँ तक है?

जीवन : जी मैं ग्रेजुएट हूँ। मैंने दिल्ली विश्वविद्यालय से बी०ए० किया है।

नियोक्ता : आपने यही नौकरी करने की क्यों सोची?

जीवन : जी मैं जीवन में निरंतर कुछ न कुछ नवीन करने का प्रयत्न करते रहना चाहता हूँ। इस नौकरी में निरंतर कुछ सीखने व नया करने के पर्याप्त अवसर हैं।

नियोक्ता : आपका निवास स्थान हमारे ऑफिस से कितनी दूरी पर है?

जीवन : जी केवल आठ किलोमीटर।

नियोक्ता : आपके सभी प्रमाणपत्रों व पिछले अनुभवों को ध्यान में रखते हुए मैं आपको यह नौकरी देने का आश्वासन देता हूँ।

जीवन : आपका धन्यवाद श्रीमान।

10. आपको एक कम्प्यूटर खरीदना है। कंपनी के प्रबंधक से फोन वार्तालाप लिखिए कि आपके लिए कौन सा कम्प्यूटर अधिक उपयुक्त रहेगा।

आप : हैलो, माइक्रो नेटवर्क इंडिया प्राइवेट लिमिटेड?

प्रबंधक : जी श्रीमान, कहिए हम क्या सहायता कर सकते हैं?

आप : जी मैं एक ग्राफिक्स निर्माता हूँ। मुझे किस प्रकार का कम्प्यूटर खरीदना चाहिए।

प्रबंधक : श्रीमान आपको 3 GH युक्त प्रोसेसर व 1 जीबी की डीरैम युक्त कम्प्यूटर की आवश्यकता है।

आप : श्रीमान क्या इससे मेरी अन्य घरेलू आवश्यकताएँ पूरी हो सकेंगीं। क्या इससे म्यूजिक आदि का आनंद भी लिया जा सकेगा?

प्रबंधक : नि:संदेह आपकी सभी आवश्यकताएँ पूरी होंगी।

आप : जानकारी के लिए धन्यवाद।

कहानी पढ़कर संवाद लेखन

इसकी भी काफी संभावनाएँ कि परीक्षा में विद्यार्थियों को किसी कहानी के आधार पर संवाद लेखन दे दिया जाए। इस प्रकार के संवाद नीचे प्रस्तुत हैं:

1

कहानी की घटनाएँ अट्ठाहरवीं शताब्दी में घटित होती हैं। ब्लू बोर सराय का दृश्य है, जो हॉन्स्लो हीथ के किनारे स्थित है। एक युवक एक सोफे पर लेटा हुआ है, जो कमाचलाऊ पलंग का काम करता है। उसका रंग पीला पड़ चुका है। एक वृद्ध महिला श्रीमती ब्रिजैट उसके निकट स्टूल पर बैठी है। वह रोगी की देखभाल कर रही है। तभी रियूबिन स्ट्रौंगिथार्म कमरे में प्रवेश करता है। वह 65 वर्ष का एक वृद्ध व्यक्ति है और ब्लू बोर का मालिक है। वह युवक के स्वास्थ्य के विषय में पूछता है। श्रीमती ब्रिजैट उसे बताती है कि उसकी हालत तो बिगड़ती जा रही है। उसकी शक्ति कम हो रही है। उसका घाव रिस रहा है और वह रक्तस्राव रोक नहीं पा रही। अब तो केवल एक डॉक्टर ही उसे बचा सकता है। रियुबिन खेद व्यक्त करता है कि रात्रि के इस समय डॉक्टर को बुलाना अत्यंत कठिन है। रात्रि के बारह बज चुके हैं फिर मौसम भी बहुत खराब है और भारी वर्षा हो रही है। उनकी एकमात्र आशा यही हो सकती है कि शायद कोई यात्री उधर आ निकले, परन्तु इसकी सम्भावना भी बहुत कम है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इसी बीच रोगी अपनी आँखें खोल देता है। उसे आश्चर्य होता है कि वह वहाँ कैसे पहुँचा। रियुबिन उसे उसके तथा कप्तान स्टार्क में हुए मल्ल युद्ध के विषय में बताता है। लगभग तीन घंटे पूर्व वे वहाँ आये। उन्होंने मदिरापान किया व ताश खेलने लगे। शायद स्टार्क ने बेईमानी की। उनमें झगड़ा हो गया। स्टार्क ने उसे छुरा भोंक दिया।

उत्तर—काल: 18वीं शताब्दी ब्लूबोर नामक सराय का आंतरिक भाग। यह सराय हौन्सलो हीथ के किनारे पर स्थित है। रियूबिन एक साहसी 65 वर्षीय वृद्ध व्यक्ति जो ब्लूबोर का मालिक भी है, के सामने एक रोगी मृतप्राय: लेटा हुआ है।

रियुबिन	:	ठीक है ब्रिजैट? अब लड़के की क्या स्थिति है?
ब्रिजैट	:	बहुत बुरा हाल है मालिक। उसका चेहरा देखा नहीं जा रहा। उसकी शक्ति निरंतर घट रही है। मैं उसके घाव का बहना रोक नहीं सकती। वह मेरी सहायता के बाहर है। केवल एक डॉक्टर ही इसे बचा सकता है।
रियुबिन	:	परंतु रात को इस समय डॉक्टर को कहाँ से लाया जाए? बारह बजने को हैं और मेरा बूढ़ा शरीर मौसम की इस विषमता को सहन नहीं कर सकता। बेचारा मेरा मन तो समय पर सहायता न कर पाने पर ही अत्यंत व्यथित हो रहा है। हाय! मेरा बुढ़ापा (उदासी से सिर हिलाता है)।
ब्रिजैट	:	बातों से काम नहीं चलेगा मालिक। हमसे जितना बने उससे कुछ अधिक ही करना होगा। इसकी संभावना भी है कि कोई यात्री इधर से आ निकले।
रियुबिन	:	क्या कह रही हो? इस समय? नि:संदेह यह असंभव है।
ब्रिजैट	:	श: श: वह जाग गया है। देखो इसके ओंठ हिल रहे हैं।
रियुबिन	:	(बिस्तर के पास झुक कर और रोगी का हाथ उठाते हुए) शांति से महाशय। अपने शरीर को पीड़ा मत दो। (ब्रिजेट से) ब्रांडी दो।
ब्रिजैट	:	(ब्रांडी का गिलास देते हुए) यह लो, इससे फायदा होगा।
अपरिचित	:	(हाँफते हुए) मैं यहाँ कैसे आया?
रियुबिन	:	भूल गए श्रीमान? तुम्हारे व कैप्टन स्टार्क के बीच जो मल्ल युद्ध हुआ? दुष्ट ने तुम्हें इसी कमरे में ही एक-दो घंटे पहले चाकू मारकर गिरा दिया और तुम्हें मरा जानकर चला गया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खंड—स

मौखिक अभिव्यक्ति—IX

10 अंक

पाठ्यक्रम एवं अंक-वितरण

	अंक
♦ **सुनना** वर्णित या पठित सामग्री को सुनकर अर्थग्रहण करना। वार्तालाप, वाद-विवाद, भाषण, कविता-पाठ आदि को सुनकर समझना, मूल्यांकन करना और अभिव्यक्ति के ढंग को जानना।	5
♦ **बोलना** भाषण, वाद-विवाद गति, लय, आरोह-अवरोह सहित सस्वर कविता वाचन वार्तालाप और उसकी औपचारिकताएँ कार्यक्रम-प्रस्तुति कथा-कहानी अथवा घटना सुनाना परिचय देना, परिचय प्राप्त करना भावानुकूल संवाद-वाचन	5
	योग 10

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

7
मौखिक अभिव्यक्ति

यदि गहराई से देखें तो आज संसार पर 'वसुधैव कुटुम्बकम' की अवधारणा सत्य प्रतीत हो रही है। इस कुटुम्ब में वही मनुष्य सफल है जो अन्य मनुष्य से बेहतर संवाद व लेख का आदान-प्रदान कर सके। यदि मनुष्य किसी अन्य के सुख-दुःख में अपनी हृदय से भागीदारी दर्शाना चाहता है तो उसका भाषा-संवाद कौशल व लेखन अच्छा होना चाहिए। सभी केवल उसी व्यक्ति के करीब रहना चाहते हैं जो सही समय पर सही शब्द चुनकर लोगों के समक्ष प्रस्तुत करता हो। इतिहास में ऐसे बहुत से नेता हुए हैं जो अपनी वाक्पटुता तथा संवाद कौशल के जरिए लोगों के दिलों में जगह बना गए। हिटलर जैसा व्यक्तित्व जो जर्मनी की सेना में एक छोटे से पद पर नियुक्त हुआ था, अपनी भाषा कौशल व संवाद अदायगी से पूरी जर्मनी की सेना का अध्यक्ष बन गया। उसका भाषा प्रवाह ऐसा था कि शत्रु भी उसका भाषण सुनने को उत्साहित रहते थे।

मौखिक अभिव्यक्ति अपने स्वतंत्र विचारों को दूसरों के समक्ष रखने का एक माध्यम है। अनेक बुद्धिजीवी ऐसे हैं जो भरी भीड़ में अपनी बात कहने में झिझकते हैं। वे सोचते हैं कि कहीं कुछ गलत न बोल बैठें। वे भीड़ को संबोधित करने में अपने आपको सहज नहीं पाते। उनके शब्द उनका साथ नहीं देते। परंतु यदि भाषण देने अथवा अपनी बात कहने से पूर्व अपने शब्दों को पूर्व में ही सोच लिया जाए तो काफी समस्या दूर हो जाती है। एक बार जब अभिव्यक्ति आरंभ हो जाती है तो फिर झिझक का कोई स्थान नहीं रहता।

एक बार की बात है जब स्वामी विवेकानंद को अमरीका में एक विशाल जनसभा को संबोधित करना था। वहाँ बड़े-बड़े विद्वानों ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति की। वे सभी मँजे हुए वक्ता थे। एक हजारों की संख्या में उमड़े विशाल जनसमुदाय को संबोधित करना उन विद्वानों के लिए कोई मुश्किल कार्य नहीं था। उन विद्वानों के बीच स्वामी विवेकानंद एकमात्र भारतीय थे। प्रत्येक विद्वान अपना भाषण आरंभ करने से पूर्व भीड़ का अभिवादन 'लेडीज एंड जेन्टिलमैन' कहकर करता था। जब स्वामी विवेकानंद की बारी आई तो वे लगभग दो मिनट तक झिझक स्वरूप कुछ कह नहीं पाए। फिर अनायास कह उठे, "माई अमेरिकन ब्रदर्स एंड सिस्टर्स" और तालियों की गड़गड़ाहट से सारा आकाश गूँज गया।

उपरोक्त घटना के आधार पर हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि मौखिक अभिव्यक्ति की कितनी उपयोगिता है। आपसी सामाजिक संवाद में कुशलता लाने के लिए सतत अभ्यास की आवश्यकता है। बिना अभ्यास के सीधे किसी प्रतियोगिता अथवा मंच पर जाने से आत्मविश्वास डगमगा जाता है। लोग हीनभावना अनुभव करते हैं। छात्रों को चाहिए कि वे अपने अध्यापक की सहायता से कुछ विशिष्ट काल्पनिक स्थितियों जैसे विवाह, शोक, दुर्घटना आदि के विषय में वार्तालाप करें। यदि कक्षा में यह संभव न हो सके तो लिखित अभ्यास करें।

आज जबकि विज्ञान इतनी अधिक उन्नति कर चुका है तथा मनुष्य के संपर्क साधन अत्यधिक विकसित व विस्तृत हो चुके हैं, मनुष्य निरंतर अपनी संवाद शैली में गिरावट लाए जा रहा है। आज हम छात्रों को अक्सर कहते हुए सुनते हैं, "यह चैप्टर बहुत हार्ड है", "मैंने अपना वर्क फिनिश कर लिया", आदि आदि। ये सभी वाक्य भ्रष्ट भाषा के नमूने हैं जो दुर्भाग्यवश विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में भर गए हैं। विद्यार्थियों को इनसे मुक्ति पाने का मार्ग सोचना चाहिए। विद्यार्थी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इन बातों को निम्न प्रकार भी कह सकते हैं—''यह अध्याय अत्यंत जटिल है'', ''मैंने अपना कार्य समाप्त कर लिया है''।

छात्रों को अंग्रेजी छोड़कर धीरे-धीरे हिंदी की ओर बढ़ना चाहिए। परंतु इसका यह कतई मतलब नहीं है कि हमें दूसरी भाषाओं को कम महत्त्व देना चाहिए। हमें उन्हें भी महत्त्व देना चाहिए परंतु अपनी हिंदी भाषा को उनसे अधिक महत्त्व देना चाहिए। यदि छात्र विभिन्न प्रचलित अंग्रेजी शब्दों के स्थान पर हिंदी शब्दों का प्रयोग करने की आदत बनायेंगे तो वे स्वतः ही जिह्वा पर चढ़ जायेंगे। परंतु यदि छात्र लिखेंगे हिंदी में और सोचेंगे अंग्रेजी में तो गड़बड़ होने की आशंका बनी ही रहेगी। हिंदी एक संपूर्ण व समृद्ध भाषा है तथा छात्रों को इसका प्रयोग प्रचुर मात्रा में करना चाहिए।

1. श्रवण

सुनना व देखना ईश्वर द्वारा मानव को प्रदान किया गया एक वरदान है। इन्हीं के द्वारा मनुष्य इस संसार को जानता है, समझता है। जितना महत्त्व बोलने का है उतना ही सुनने का भी है। श्रवण शक्ति तो प्रकृति ने समस्त प्राणियों में विद्यमान की है जिससे वे उसकी बनाई प्रकृति का संपूर्ण आनंद उठा सकें। किंवदंतियों के अनुसार राग मेघमल्हार में इतनी कशिश थी कि प्रकृति भी उसे सुनकर बरबस बरस पड़ती थी। पेड़-पौधे तक को प्रकृति ने श्रवण शक्ति प्रदान की है, चाहे वे बोल न सकते हों। पेड़-पौधों को विभिन्न प्रकार के सुर-संगीत बहुत भाते हैं, वैज्ञानिक शोधों द्वारा यह बात साबित हो चुकी है।

सुनना एक कला है जो सभी व्यक्तियों में नहीं होती। कुछ व्यक्ति अच्छी बातों को सुनना ही नहीं चाहते या अच्छी प्रकार ध्यान ही नहीं देते जबकि कुछ व्यक्तियों की यह कला इतनी विकसित होती है कि वे एक बार सुनकर ही उस बात को मन में धारण कर लेते हैं। वे कही गई बातों का तुरंत अनुसरण भी करते हैं। उनका संपूर्ण मन वक्ता की बात सुनने में लगा होता है। उनका चित्त अत्यंत ही संवेदनशील होता है।

कई बार वक्ता अपनी बात को उबाऊ होने से बचाने के लिए बीच-बीच में हास्य व्यंग्य करता रहता है। वक्र ढंग से अपनी बात प्रस्तुत करता है। फिर श्रोता का भी दायित्व बन जाता है कि वास्तविक अर्थ पता करने का प्रयास करे। वह व्यंग्य पर न जाए, व्यंग्य की गूढ़ता को समझे। यह आवश्यक नहीं है कि वक्ता की बात को श्रोता ज्यों का त्यों याद रखे। अधिकांश व्यक्तियों के लिए यह संभव भी नहीं है। परंतु यदि श्रोता चार कानों से काम ले तो वक्ता के काफी महत्त्वपूर्ण अंशों को तो वह आत्मसात कर ही सकता है।

कई बार वक्ता अपना भाषण, कविता पाठ, वाद-विवाद करते हुए कुछ प्रश्न भी पूछ लेता है। उस समय श्रोता के और अधिक सावधानी बरतने का काम होता है। श्रोता को चाहिए कि वह प्रश्नों को स्पष्ट रूप से समझे तथा उसमें विश्लेषण करने की तत्परता व उत्तर देने की क्षमता भी होनी चाहिए। यदि श्रोता अच्छा हो तो वक्ता भी और अच्छा ही कहने का प्रयास करता है। अच्छे श्रोता को वक्ता की बात सुनते हुए सभी संभावित प्रश्नों का अनुमान हो जाता है तथा उनका उत्तर वह तत्परता से लिखता चला जाता है। श्रोता के पास एक कागज व पैंसिल भी होनी चाहिए जिससे वह वक्ता के महत्त्वपूर्ण बिंदुओं को कहीं नोट कर ले।

महत्वपूर्ण बिंदुओं को नोट करना भी एक कला है। उदाहरण के लिए आपको एक दूरभाष संदेश अपनी माताजी के लिए छोड़ना है तो इसके निम्न दो प्रकार हो सकते हैं—

> *अपनी माताजी से कहना कि भैया श्रीप्रकाश का फोन आया था। बहुत ही आवश्यक कार्य है। भतीजे का रिश्ता तय हो गया है। गोदभराई की रस्म पूरी करने लड़की वालों के यहाँ जाना है। यदि वे नहीं जा सकें तो जीजाजी को भेज दें। तत्पश्चात् विवाह संबंधी अन्य तैयारियाँ भी करनी हैं।*

विद्यार्थी को चाहिए कि एक रफ पेपर पर निम्नलिखित बिंदुओं को लिख लें—

मामाजी श्रीप्रकाश का फोन—आवश्यक कार्य

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भतीजे का रिश्ता—गोदभराई—लड़की वालों के यहाँ जाना
यदि संभव नहीं तो पिताजी जायें—तत्पश्चात् अन्य तैयारियाँ।

यदि सुनी गई बात को उपरोक्त के समान संक्षेप में लिख लिया जाए तो भी विस्तार से कहने की आवश्यकता होती ही है। इसके लिए आवश्यक है कि जिस व्यक्ति ने बात को संकेतों के रूप में लिखा है उसे अपने संकेतों को समझना भी आना चाहिए। कभी-कभी कई दिनों के पश्चात् संकेतों में लिखी गई बात मस्तिष्क से निकल जाती है। इसके लिए अच्छा यही है कि तुरंत ही पूरी बात स्पष्ट रूप से विस्तारपूर्वक लिख ली जाए।

मौखिक परीक्षा में परीक्षक आपको केवल प्रश्नावली देगा। उस प्रश्नावली में विभिन्न प्रकार के प्रश्न हो सकते हैं। परीक्षक आपको केवल भाषण, विचार, कविता अथवा वार्तालाप केवल 'सुनायेगा' तथा उसे सुनकर ही आपको अपेक्षित प्रश्नों के उत्तर देने हैं। परीक्षक द्वारा दिया गया भाषण, विचार, कविता अथवा वार्तालाप केवल मौखिक रूप में मिलेगा, लिखित रूप में नहीं। आपको पुनः सुनने का अवसर भी नहीं दिया जायेगा। इसलिए छात्रों को चाहिए कि पहली बार में ध्यानपूर्वक सुन लें।

(क) अनुच्छेद श्रवण

श्रवण कौशल की जाँच हेतु कुछ अनुच्छेद एवं परीक्षण प्रश्न प्रस्तुत हैं—

1. प्रारंभ से ही प्रकृति व मनुष्य का अटूट संबंध रहा है। प्रकृति ने मानव के लिए जीवनदायक तत्वों को प्रदान किया। मनुष्य ने वृक्षों के फल, बीज, जड़ें आदि खाकर अपनी भूख मिटाई। इस प्रकार पेड़-पौधे हमारे मित्र ही नहीं, जीवनदाता भी हैं। पेड़-पौधे केवल हमें भोजन ही प्रदान नहीं करते अपितु जीवनदायिनी वायु ऑक्सीजन भी प्रदान करते हैं। ये वातावरण से कार्बन डाइऑक्साइड को ग्रहण करते हैं और ऑक्सीजन बाहर निकालते हैं। पृथ्वी पर हरियाली के स्रोत पेड़-पौधे ही हैं। मनुष्य ने अपने स्वार्थ के लिए तथा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वनसंपदा का विनाश कर दिया है। परिणामस्वरूप प्रदूषण में वृद्धि हो गई है। यहाँ अनेक प्रकार का प्रदूषण उत्पन्न हो गया है। प्रदूषण से अनेक प्रकार की घातक बीमारियाँ बढ़ रही हैं। अभी भी वृक्षों की कटाई जारी है। वृक्षों की अंधाधुंध कटाई करके हम अपने पैरों पर स्वयं कुल्हाड़ी मार रहे हैं। यहाँ पर्यावरण संतुलन के हिसाब से तैंतीस प्रतिशत भाग पर वन होने चाहियें, किंतु यहाँ केवल 19 प्रतिशत भाग पर वन हैं। इस पर्यावरण संरक्षण के लिए अनेक आंदोलन चलाए गए। 'चिपको आंदोलन' वन संरक्षण अभियान का साहसिक कदम है। पर्यावरण संतुलन के लिए हमें वृक्ष काटने की बजाय वृक्ष लगाने चाहियें। प्रतिवर्ष प्रति व्यक्ति को एक वृक्ष अवश्य लगाना चाहिए और उसका संरक्षण भी करना चाहिए। हमें योजनाबद्ध तरीके से वृक्षारोपण करके वन संरक्षण करना चाहिए। वन संरक्षण हमारा पुनीत कर्तव्य है।

अब निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दो—

1. प्रकृति और मनुष्य का संबंध कैसा रहा है?
2. मनुष्य ने वृक्षों के क्या-क्या अंग खाकर भूख मिटाई?
3. पेड़-पौधे हमारे लिए मित्र के अलावा क्या हैं?
4. पेड़-पौधे वातावरण से कौन-सी गैस ग्रहण करते हैं?
5. मनुष्य ने वनसंपदा के साथ क्या किया है?
6. प्रदूषण से क्या बढ़ रही हैं?
7. पर्यावरण संतुलन के लिए कितने भाग पर वन होने चाहियें?
8. पर्यावरण संतुलन के लिए कौन सा आंदोलन उपयोगी है?
9. इस गद्यांश में क्या करने की सलाह दी गई है?
10. यहाँ किसने बारे में चिंता उजागर हो रही है?

2. देश-प्रेम, प्रेम का वह अंश है जिसका आलंब है सारा देश—उसमें व्यापक हैं प्रत्येक कण अर्थात् मनुष्य, पशु, पक्षी, नदी, नाले, वन, पर्वत इत्यादि। यह एक सहचर्यगत् प्रेम है अर्थात् जिसके सान्निध्य का हमें अभ्यास पड़ जाता है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उनके प्रति लोभ या राग हो जाता है। कोई भी व्यक्ति सच्चा देश-प्रेमी कहला सकने की तभी सामर्थ्य रखता है जब वह देश के प्रत्येक मनुष्य, पशु, पक्षी, लता, गुल्म, पेड़, पत्ते, वन, पर्वत, नदी, निर्झर आदि सभी को अपनत्व की भावना से देखेगा। इन सबकी सुधि करके विदेश में भी आँसू बहाएगा। जो व्यक्ति राष्ट्र के मूलभूत जीवन को भी नहीं जानता और उसके बाद भी देश-प्रेमी होने का दावा करे तो यह उसकी भूल है। जब तुम किसी के सुख-दुख के भागीदार ही नहीं बने तो उसे सुखी देखने के स्वप्न तुम कैसे कल्पित करोगे? उससे अलग रहकर अपनी बोली में तुम उसके हित की बात तो करो पर उसमें प्रेम के माधुर्य जैसे भाव नहीं होंगे। प्रेम को तराजू में नहीं तोला जा सकता। ये भाव तो मनुष्य के अंतःकरण से जुड़े हुए हैं।

परिचय से प्रेम की उत्पत्ति होती है। यदि आप समझते हैं कि आपके अंतःकरण में राष्ट्र-प्रेम के भाव उजागर हों तो आप राष्ट्र के स्वरूप से परिचित हो जाइए और अपने को उस स्वरूप में समा जाने दीजिए तभी आपके अंतःकरण में इस इच्छा का सचमुच उदय होगा कि वह हमसे कभी न छूटे। उसके धनधान्य की वृद्धि हो। सब सुखी हों।

वास्तव में आजकल देश के प्रति परिचय तथाकथित बाबुओं की लज्जा का विषय हो गया है और देश-प्रेम मात्र दिखावा रह गया है।

अब निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

1. देश-प्रेम का आलंबन क्या है?
2. देश-प्रेम कैसा प्रेम है?
3. क्या राष्ट्र के मूलभूत जीवन को न जानने वाला देश-प्रेमी हो सकता है?
4. प्रेम को क्या तराजू में तोला जा सकता है?
5. प्रेम का भाव किससे जुड़ा होता है?
6. प्रेम की उत्पत्ति किससे होती है?
7. कौन-सा भाव देश-प्रेम के लिए अंतःकरण में होना आवश्यक है?
8. बाबुओं के लिए क्या विषय लज्जा का हो गया है?
9. लेखक ने किस शैली में उदाहरण प्रस्तुत किया?
10. गेहूँ के पेड़ के बारे में पूछने वाले कहाँ थे?

(ख) वार्तालाप श्रवण

आदित्य : मित्र रंजन! कहाँ से चले आ रहे हो?

रंजन : अरे, क्या बताऊँ? बिजली बोर्ड के दफ्तर से आ रहा हूँ।

आदित्य : क्यों, क्या बात हो गई।

रंजन : बात तो कुछ नहीं हुई, ये दो हजार रुपये का बिजली बिल आया था, जबकि हर बार यह पाँच-छ सौ रुपये का होता था।

आदित्य : क्या उन्होंने बिल ठीक कर दिया?

रंजन : उनके मुँह तो खून लग गया है। पहले तो सुनते ही नहीं हैं और ज्यादा कहो तो पाँच सौ रुपये रिश्वत माँगते हैं।

आदित्य : क्या रिश्वत देने के लिए हाँ कर आए हो?

रंजन : मुझे बता, वह उपाय।

आदित्य : हम दोनों 'सतर्कता विभाग' में चलकर उसकी लिखित शिकायत कर देते हैं। वे उसे रंगे हाथों पकड़ लेंगे।

रंजन : पर क्या यह ठीक रहेगा? कहीं उसकी नौकरी ही न चली जाए?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आदित्य : हमारी इसी कमजोरी का ये लोग गलत फायदा उठाते हैं। इन्हें सबक सिखाना बहुत आवश्यक है।

रंजन : पर हम किस-किस को सबक सिखायेंगे। यहाँ तो ऊपर से लेकर नीचे तक सभी भ्रष्ट हैं। राजनेता कौन-से अछूते हैं?

आदित्य : पर कभी-न-कभी तो हमें इस भ्रष्टाचार के विरुद्ध खड़ा होना ही पड़ेगा। तुम डरो नहीं, मैं तुम्हारे साथ हूँ।

रंजन : शायद तुम ठीक कहते हो। हमें इस बढ़ते भ्रष्टाचार पर लगाम लगानी ही होगी।

अब निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो।

1. यह वार्तालाप किन-किन के मध्य हो रहा है?
2. रंजन कहाँ से आ रहा है?
3. वह वहाँ क्यों गया था?
4. क्या उसका काम हो गया?
5. कितनी रिश्वत की माँग की गई?
6. रंजन के मन की स्थिति कैसी है?
7. आदित्य के स्वभाव की क्या विशेषता उभरती है?
8. आदित्य ने कहाँ जाने की सलाह दी?

(ग) कविता श्रवण

लीक पर वे चलें जिनके
चरण दुर्बल और हारे हैं,
हमें तो जो हमारी यात्रा से बने
ऐसे अनिर्मित पंथ प्यारे हैं।
साक्षी हों राह रोके खड़े
पीले बाँस के झुरमट,
कि उनमें गा रही है जो हवा
उसी से लिपटे हुए सपने हमारे हैं।
शेष जो भी हैं—
वक्ष खोले डोलती अमराइयाँ,
गर्व से आकाश थामे खड़े
ताड़ के ये पेड़,
हिलती क्षितिज की झालरें;
झूमती हर डाल पर बैठी
फलों से मारती
खिलखिलाती शोख अल्हड़ हवा;
गायक-मंडली से थिरकते आते गगन में मेघ,
वाद्य यंत्रों से पड़े टीले,
नदी बनने की प्रतीक्षा में, कहीं नीचे
शुष्क नाले में नाचता एक अंजुरी जल
सभी, बन रहा है कहीं जो विश्वास

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जो संकल्प हम में
बस उसी के ही सहारे हैं।
लीक पर वे चलें जिनके
चरण दुर्बल और हारे हैं,
हमें तो जो हमारी यात्रा से बने
ऐसे अनिर्मित पंथ प्यारे हैं।

अब निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो शब्दों में दो।

1. बनी बनाई लीक पर कौन चलते हैं?
2. राह रोके कौन खड़े हैं?
3. कवि के सपने किससे लिपटे हैं?
4. वक्ष खोले कौन खड़ी हैं?
5. ताड़ के वृक्ष कैसे लगते हैं?
6. हवा कैसी है?
7. गगन में मेघ कैसे आते हैं?
8. टीलों को किसके समान बताया गया है?
9. शुष्क नाले में क्या हो रहा है?
10. कवि किसके सहारे है?

2. मेरा देश बड़ा गर्वीला, रीति-रसम-ऋतु रंग-रंगीली।
नीले नभ में बादल काले, हरियाली में सरसों पीली।।
यमुना-तीर घाट गंगा के, तीर्थ-तीर्थ में बाँट छाँव की।
सदियों से चल रहे अनूठे ठाठ गाँव के, हाट गाँव की।।
शहरों को गोदी में लेकर, चली गाँव की डगर नुकीली।
मेरा देश बड़ा गर्वीला, रीति-रसम-ऋतु रंग रंगीली।।

खड़ी-खड़ी फुलवारी फूले, हार पिरोए बैठ गुजरिया।
बरसाए जलधार बदरिया, भीगे जग की हरी चदरिया।।
तृण पर शबनम, तरु पर जुगनू, नीड़ रचाएँ तीली-तीली।
मेरा देश बड़ा गर्वीला, रीति-रसम-ऋतु रंग-रंगीली।।

घास-फूस की खड़ी झोंपड़ी, लाज संभाले जीवनभर की।
कुटिया में मिट्टी के दीपक, मंदिर में प्रतिमा पत्थर की।।
जहाँ बास कंकड़ में हरि का, वहाँ नहीं चाँदी चमकीली।
मेरा देश बड़ा गर्वीला, रीति-रसम-ऋतु रंग रंगीली।।

जो कमला के चरण पखारे, होता है वह कमल कीच में।
तृण, तंदुल तांबूल, ताम्र, तिल, घी के दीपक बीच-बीच में।
सीधी-सादी पूजा अपनी, भक्ति लजीली मूर्ति सजीली।
मेरा देश बड़ा गर्वीला, रीति-रसम-ऋतु रंग-रंगीली।

बरस-बरस पर आती होली, रंगों का त्यौहार अनूठा।
चुनरी इधर, उधर पिचकारी, गाल-भाल पर कुमकुम फूटा।।
लाल-लाल बन जाते काले, गोरी सूरत पीली-नीली।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरा देश बड़ा गर्वीला, रीति-रसम-ऋतु रंग-रंगीली।
दीवाली दीपों का मेला, झिलमिल महल, कुटी गलियारे।
भारत भर में उतने दीपक, जितने जलते नभ में तारे।।
सारी रात पटाखे छोड़े नटखट बालक, उमर हठीली।
मेरा देश बड़ा गर्वीला, रीति-रसम-ऋतु रंग-रंगीली।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो शब्दों में दो।

1. कवि को अपना देश कैसा प्रतीत होता है?
2. सरसों को किस रंग का बताया गया है?
3. गाँव की डगर कैसी है?
4. हार पिरोने का काम कौन कर रही है?
5. शबनम किसे कहा गया है और वह कहाँ पर है?
6. घास-फूस की झोंपड़ी से किन लोगों की ओर संकेत है?
7. ईश्वर का वास कहाँ बताया गया है?
8. कमल कहाँ उगता है?
9. गाल-भाल पर कुमकुम कब फूटता है?
10. बालकों की उमर को कैसा बताया गया है?

(घ) वाद-विवाद

विषय: साहित्य समाज का दर्पण है।

उपरोक्त विषय के पक्ष-विपक्ष में वाद-विवाद प्रतियोगिता में भाग लेने वालों के तर्क:

ज्ञान : साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्य का समाज से बहुत पुराना संबंध है। आज तक यह रिश्ता चलता आ रहा है।

रवि : साहित्य समाज का दर्पण नहीं है। यदि साहित्य समाज का दर्पण होता तो संसार को बदलने की बात ही न उठती। साहित्य और समाज का रिश्ता बदलता रहता है।

ज्ञान : साहित्यकार निश्चित तौर पर सामाजिक जीवन से प्रभावित होता है। वह समाज के दबाव की उपेक्षा नहीं कर सकता। यह बात भी स्पष्ट करती है कि साहित्य समाज का दर्पण है।

रवि : नहीं, ऐसी बात नहीं है। साहित्यकार को समाज के गलत दबाव की उपेक्षा करनी ही चाहिए। यदि वह ऐसा नहीं करेगा तो नए समाज का निर्माण भी नहीं कर पाएगा। साहित्यकार तो प्रजापति होता है। वह ब्रह्मा के समान एक समाज का निर्माण करता है। यदि साहित्य समाज का दर्पण होता तो साहित्यकार का काम तो केवल दर्पण दिखाने वाले का रह जाता है।

ज्ञान : क्या साहित्यकार सामाजिक प्राणी नहीं होता?

रवि : साहित्यकार एक सामान्य व्यक्ति की भाँति एक सामाजिक प्राणी होता है। उसकी रचना का आधार भी मानव-संबंध ही होते हैं। अंतर केवल इतना है कि साहित्यकार मानव-संबंधों में व्याप्त विषमताओं से असंतुष्ट होकर समाज को अपनी कल्पना और रुचि के अनुसार नया रूप देता है। जीवन की यथार्थता को दर्पण की भाँति प्रतिबिंबित न करके उसे अपनी रुचि के अनुसार वर्णित करके एक नवीन समाज का निर्माण करना साहित्यकार का जन्मसिद्ध अधिकार है।

ज्ञान : इससे तो यह ध्वनित होता है कि साहित्य मानव-संबंधों से परे होता है।

रवि : नहीं, साहित्य मानव-संबंधों से परे नहीं है। साहित्यकार तो जब विधाता पर साहित्य-रचना करता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है तो उसे भी मानव के साकार रूप में लाकर खड़ा कर देता है। साहित्यकार के असंतोष की जड़ में सामाजिक मानव संबंध ही हैं। साहित्यकार इस संसार में परिवर्तन करना चाहता है। वह उन कारणों को भी स्पष्ट करता है कि उसे वर्तमान स्थिति से अरुचि क्यों है और वह किस प्रकार का परिवर्तन चाहता है? यदि वह ऐसा नहीं कर पाया तो वह ऐसा नकलची बन जाता है जिसकी अपनी कोई असलियत नहीं होती।

अब निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो शब्दों में दीजिए—

1. इस वाद-विवाद का विषय क्या है?
2. इसमें कौन-कौन भाग ले रहे हैं?
3. विषय के पक्ष में कौन है और विपक्ष में कौन?
4. पक्ष वाले व्यक्ति की मान्यता क्या है?
5. विपक्ष वाला व्यक्ति क्या स्थापित करना चाह रहा है?
6. साहित्यकार किससे प्रभावित होता है?
7. क्या साहित्यकार भी समाज का एक सामान्य प्राणी है?
8. साहित्यकार कब साहित्य का निर्माण करता है?
9. साहित्यकार को अन्य कौन सा नाम दिया जा सकता है?
10. यदि साहित्य समाज का दर्पण होता तो साहित्यकार क्या बन जाता?

2. बोलना

भाषा के मौखिक रूप का प्रयोग करना ही बोलना होता है। इसलिए बोलचाल को ही भाषा का वास्तविक रूप माना जाता है। मानव जीवन में लिखने की अपेक्षा बोलने का अधिक महत्त्व है। हम अपने दैनिक जीवन के अधिकांश कार्य बोलकर ही सम्पन्न करते हैं। हास-परिहास, वार्तालाप, भाषण, विचार-विमर्श, प्रवचन आदि कार्यों में बोलने का उपयोग स्वयंसिद्ध है। सार्वजनिक जीवन में मौखिक अभिव्यक्ति का विशेष महत्त्व है। जो वक्ता बोलने में अधिक कुशल होता है, वह श्रोताओं को अधिक प्रभावित करता है तथा अपना लक्ष्य सिद्ध कर लेता है।

भाषण कला

सामाजिक संवाद में कुशल बनने के लिए प्रयोग और अभ्यास भी अनिवार्य है। बिना अभ्यास के आत्म-विश्वास डगमगाने लगता है। यह आवश्यक नहीं है कि अभ्यास के लिए स्थिति सामने लाई जाये क्योंकि शादी, मृत्यु आदि का अवसर कक्षा में नहीं लाया जा सकता। अतः छात्रों को अध्यापक की सहायता से काल्पनिक स्थिति बनाकर अभ्यास करना चाहिए।

बोलते समय वक्ता को अपनी आवाज उच्च, स्पष्ट व उत्साह से परिपूर्ण रखनी चाहिए। उसे अपनी व्यवहारिक भाषा का प्रयोग करना चाहिए तथा वे शब्द चुनने चाहियें जो जनता को अधिक स्पष्ट सुनाई दें। एक सफल वक्ता मुहावरों व लोकोक्तियों के प्रयोग से अपने संवादों को रुचिकर बनाता है। हमें विनीत व स्पष्ट भाषा का प्रयोग करना चाहिए तथा कैसा भी विषय हो उसे जनजीवन से जोड़ना चाहिए। भाषण का प्रारंभ कुछ इस प्रकार होना चाहिए कि उसमें नवीनता हो तथा श्रोता पर प्रथम असर प्रभावी हो।

एक कुशल वक्ता को अपनी आवाज की लय बदलते रहना चाहिए। महत्त्वपूर्ण बिंदुओं पर स्वर उच्च कर लेना चाहिए। कभी-कभार भाषण में जोश का उफान भी कर लेना चाहिए तथा कभी-कभी निराशा की ठंडी सांस भी कर लेनी चाहिए। कुल मिलाकर अपना संपूर्ण दिमाग भाषण को प्रभावित करने वाला बनाने में लगा देना चाहिए। यदि वक्ता बीच-बीच में कोई हास्यपूर्ण चुटकुला, मज़ाक, घटना अथवा कोई मार्मिक प्रसंग छेड़ दे तो भाषण में चार चांद लग जाते हैं। परंतु इस बात का अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि ये प्रसंग विषय के सर्वथा अनुकूल हों।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यदि वक्ता को कोई कविता आदि भी आती हो तथा वह प्रसंग में फिट बैठती हो उसका प्रयोग करना चाहिए। वक्ता को भाषण की बजाए 'चित्रण' पर ध्यान देना चाहिए। जैसे—जलियांवाला बाग हत्याकांड में कितने ही लोग मर गए। इस वाक्य में रेखांकित भाग को कितनी ही गोदें सूनी हो गईं अथवा कितनी ही मांगें उजड़ गईं भी लिखा जा सकता है। वक्ता को जिस विषय पर भाषण देना हो उसके विचार बिंदु पहले ही सोच लेने चाहिएँ। विषय की प्रस्तुति एकदम स्पष्ट और लगातार होनी चाहिए कि विषय एक श्रेणी के समान अपने आप सरल होता व बढ़ता चला जाए। अगली बात पिछली बात से निकलती हुई सी प्रतीत होनी चाहिए। यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि भाषण में कोई बात फालतू नहीं होनी चाहिए तथा उसमें अधूरापन भी नहीं होना चाहिए। भाषण अंतत: किसी न किसी निष्कर्ष पर भी पहुँचना चाहिए। इस प्रकार का भाषण अवश्य ही श्रोताओं को प्रभावित करता है।

भाषण में समय-समय पर आदरणीय व विशिष्ट मेहमानों व श्रोतागणों को संबोधित भी करना होता है। यह संबोधन श्रोताओं की स्थिति के अनुसार होना चाहिए। भाषण के आरंभ में सभी श्रोताओं को संबोधित किया जाता है न कि केवल मंच पर उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों को। समारोह में भाषण आरंभ करने से पूर्व श्रोताओं को संबोधित करने के बाद उपस्थित मुख्य अतिथि को संबोधित किया जाता है। सामान्यत: इसके लिए 'आदरणीय', 'सम्माननीय', 'माननीय' आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है। संबोधन श्रोताओं में रुचि उत्पन्न करता है इसलिए पुरुषों, युवकों, महिलाओं, बच्चों आदि के लिए भी कोई उपयुक्त संबोधन होना ही चाहिए। भाषण की सफलता के लिए यदि श्रोताओं को बीच-बीच में उनकी उपस्थिति का एहसास कराने में कोई बुराई नहीं होती। उदाहरण के लिए—मेरे सामने जो ये सज्जन बैठे हैं; आदरणीय मुख्यअतिथि जी! आदि।

(क) वाद-विवाद

वाद-विवाद किसी विषय के पक्ष-विपक्ष में विचार करने का साधन है। इसका उद्देश्य किसी विवादास्पद मसले पर जनता का ध्यान आकर्षित करना होता है। इसमें भाग लेने वाले कम से कम दो छात्र होते हैं। एक पक्ष में बोलता है तथा दूसरा विपक्ष में बोलता है। ये वक्ता भरी सभा में बोलते हैं तथा पूरे सदन को संबोधित करते हैं।

वाद-विवाद में सभापति एक निर्णायक मंडल होता है। दोनों वक्ताओं का उद्देश्य संपूर्ण सदन को अपने विचारों से सहमत करना होता है। इसमें एक-दूसरे की बात काटना व अपनी बात रखना होता है।

वाद-विवाद में ध्यान रखने योग्य बातें—

1. हर प्रतियोगी को अपने पक्ष को तर्क व मजबूती के साथ प्रस्तुत करना चाहिए।
2. पक्ष में बोलने वाला वक्ता शांत स्वर में अपने विषय को तर्क व उदाहरणों से पुष्ट करता है।
3. विपक्ष में बोलने वाला वक्ता आक्रामक होता है। उसके स्वर में धारा प्रवाह बोलने की क्षमता होती है।
4. पक्ष या विपक्ष दोनों वक्ताओं को व्यक्तिगत टिप्पणी, कटाक्ष व अभद्र बातों से बचना चाहिए।
5. दोनों वक्ताओं को सबसे पहले सदन को संबोधित करके विषय बताना होता है।
6. प्रारंभिक पंक्तियों में ही वक्ता को स्पष्ट कर देना चाहिए कि वह पक्ष में बोल रहा है या विपक्ष में।
7. वाद-विवाद की अपनी सीमाएँ हैं।
8. प्राय: वाद-विवाद का आरंभ इस प्रकार होता है—
   आदरणीय अध्यक्ष महोदय, निर्णायक मंडल व उपस्थित श्रोताओं, आज की वाद-विवाद प्रतियोगिता का विषय है . . . .।
9. वाद-विवाद में भाषण कला के सभी गुणों का उपयोग करना चाहिए।

उदाहरण

विषय : क्या चाँद पर अंतरिक्ष यान भेजना भारत के लिए उचित है?

पक्ष में—मैं यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं मानता कि पृथ्वीवासियों के लिए अंतरिक्ष विज्ञान एक कौतुहल का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विषय रहा है। तारों, ग्रहों, आकाशगंगाओं का अध्ययन व अंतरिक्ष यात्रा सैकड़ों वर्षों से महत्वपूर्ण है। चार हजार वर्ष पूर्व इतालवी दार्शनिक तथा खगोलविद् ब्रुनो ने कहा था कि ब्रह्मांड अनगिनत तारों से भरा पड़ा है, जिनके चारों ओर असीमित मात्रा में ग्रह हैं, जो 'होमोसेपियन्स' के लिए खासा शोध का विषय है और रहेगा। गौरतलब है कि मौजूदा 'हाईटेक युग' में अंतरिक्ष को लेकर की जाने वाली खोजों एवं अभियानों पर नजर दौड़ाएँ तो इनमें एक तेज वृद्धि नजर आ रही है। इस हलचल को देखकर आसानी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि इक्कीसवीं सदी में नक्षत्रीय दोहन के लिए बहुत बड़ी राशि का निवेश किया जाने वाला है। 12 वर्षों बाद विश्वभर के वैज्ञानिकों की निगाहें 'चंदा मामा' पर टिकी हैं और इन दिनों वाजयाफ्ता भारत ने 'मिशन टु मून' हेतु चंद्रयान को भेजने (2008) का निर्णय लिया है, जो न सिर्फ प्रासंगिक, उचित, समयानुकूल व देशहित में है, अपितु इससे देश के चतुर्दिक विकास को भी एक अभूतपूर्व आयाम मिलेगा।

इससे जहाँ अंतरिक्ष विज्ञान के कई अनसुलझे रहस्य सुलझेंगे, वहीं भारत के चाँद पर अपनी दावेदारी होने से इसकी मिट्टी में पड़े लाखों टन हीलियम-3 से विश्व सहित भारत को आने वाले दिनों में होने वाली ऊर्जा संकट से मुक्ति मिलेगी। इससे अंतरिक्ष टेक्नोलॉजी को उन्नति मिलेगी जो अंततः भारत के मिसाइल विकास कार्यक्रम को नई व उन्नत जानकारी देगी और भारत भी यू०एस०ए० की तरह 'एयर डिफेंस सिस्टम' बना सकेगा, जो पूर्णतः देशी तकनीक पर आधारित होगा। कहने का आशय है कि भारतीय लूनर मिशन की सफलता देश की सुरक्षा व खुफिया व्यवस्था को एक नया आयाम देगा।

हालांकि भारत जैसे गरीब व विकासशील देश में इस पौने चार अरब रुपये की महँगी यात्रा को अव्यवहारिक बताया जा रहा है, लेकिन मेरा एक सवाल है कि गरीबी व निर्धनता की आड़ लेकर नई तकनीक को तिलांजलि देना कहाँ की बुद्धिमानी है? इसरो के आँकड़ों पर यदि नजर दौड़ायें तो पायेंगे कि प्रक्षेपण और यान की परिक्रमा पर यह खर्च हमारे सालाना अंतरिक्षीय बजट में महज 5-7 फीसदी की वृद्धि है जिसकी अनदेखी अंतरिक्ष विज्ञान और अनुसंधान की दृष्टि से सक्षम राष्ट्र भारत के लिए उचित नहीं है। ध्यातव्य है कि पिछले तीस वर्षों में भारत ने 29-30 उपग्रह स्थापित किए हैं और इन पर कुल दस-बारह हजार करोड़ खर्च आया, जो अमरीका के 3-4 विफल हो गए अभियानों के खर्च के बराबर है। ऐसे में चाँद पर आधिपत्य को लेकर यह खर्च सहज ही वहन किया जा सकता है, ताकि बाद में कम-से-कम हम अपने देशवासियों की अपेक्षाओं पर खरे उतर सकें। हकीकत तो यह है कि हम भारतीय भय, भूख, बेरोजगारी व गरीबी से तो लड़-भिड़ सकते हैं, लेकिन वैचारिक, मानसिक व तकनीकी पिछड़ेपन से कदापि नहीं। यह हम भारतीयों की विडंबना है।

मैं 'मिशन टु मून' चंद्रयान की वकालत इसलिए भी करना चाहता हूँ कि जिस प्रकार आज अंटार्कटिका की अकूत खनिज संपदा पर अपना-अपना अधिकार जताने को लेकर विभिन्न देशों में आपाधापी मची हुई है उसी तरह भविष्य में यदि चाँद की संपत्ति को लेकर कानूनी पक्ष उभरता है, तो उस समय भारत अपना पॉजिटिव पक्ष तभी रख सकेगा जब आज वह चाँद पर जाने की प्रक्रिया को अंजाम देगा। इस नजरिए से भारत का 'मिशन टु मून' और भी प्रासंगिक व जरूरी हो जाता है, ताकि बाद में चाँद की चाँदी (खनिज संपदा) पर हम भी दावे पेश कर सकें।

विवादों में पड़कर हम एक उपलब्धि, एक अभियान, एक नई टेक्नोलॉजी को तिलांजलि नहीं दे सकते, और फिर हम अगर यह लक्ष्य पाने में देर करेंगे, तो बाजी हमारे हाथ से निकल जायेगी। ऐसी स्थिति में हमें दूसरे देशों के सामने 'याचक मुद्रा' में खड़े रहना पड़ेगा, जो नागवार गुजरेगा। जरा सोचिए! एक स्वाभिमानी देश के वैज्ञानिक ऐसी स्थिति को किसी सूरत में गँवारा नहीं करेंगे। इतिहास साक्षी है कि हर विषम व विपरीत परिस्थितियों में हमारे वैज्ञानिकों ने अपने 'सुपर ब्रेन' का परिचय दिया है चाहे वह अमरीका द्वारा नकारे जाने पर 'सुपर कम्प्यूटर' की ईजाद हो या रूस से क्रायोजेनिक इंजन न मिलने पर स्वयं के द्वारा उत्पन्न किया गया क्रायोजेनिक इंजन हो या फिर स्वयं के बूते हरित क्रांति जैसा लक्ष्य पाना हो।

खैर! इस बात को लेकर जितना भी ऊहापोह हो परंतु इतना तय है कि 'मिशन टु मून—2008' वर्तमान समय का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

तकाजा है, क्योंकि इससे न सिर्फ़ तेजी से बदलती दुनिया के अंतरिक्ष में भारत का सिक्का जमेगा अपितु नक्षत्रीय अभियानों के चुनिंदा क्लब का सदस्य बनकर भविष्य में होने वाली गतिविधियों पर भारतीय दावेदारी को मजबूत करेगा।

विपक्ष में—वर्तमान समय में भारत के चंद्रयान-प्रथम अभियान की चर्चा जोरों पर है और साथ ही साथ यह विवाद भी उठ खड़ा हुआ है कि भारत द्वारा सन् 2008 में पहला चंद्रयान भेजा जाना उचित है या नहीं? मेरी दृष्टि में भारत द्वारा चंद्रमा पर यान भेजने का निर्णय अनुचित ही नहीं, निरर्थक भी है।

सर्वविदित है कि 21 जुलाई 1969 को ही चंद्रमा पर अमरीकी यान अपोलो-द्वितीय नील ए० आर्मस्ट्रांग को लेकर पहुँच चुका था और उसके बाद कई यान और कई वैज्ञानिक चंद्रमा पर जा चुके हैं और कई महत्त्वपूर्ण खोजें हो भी चुकी हैं। आज जबकि चंद्रमा के संबंध में बहुत कुछ जाना भी जा चुका है तो फिर चंद्रमा पर 2008 में अपना यान भारत द्वारा भेजे जाने का क्या औचित्य है?

भारत के इस चंद्रयान-प्रथम अभियान पर चार अरब रुपये के व्यय का अनुमान है। यदि इतने पैसे खर्च करके भारत कोई उन्नत सैटेलाइट छोड़े तो उसे संचार, सूचना आदि के क्षेत्रों में ज्यादा लाभ होगा, यदि इतने पैसे बेरोजगारी, निरक्षरता आदि के उन्मूलन पर खर्च किए जायें तो ठोस परिणाम संभव है।

अब तक जिन राष्ट्रों ने अपने यान चंद्रमा की धरती पर भेजे हैं, उनकी उच्च तकनीक का लोहा सारा विश्व मानता है। उन राष्ट्रों की तकनीक के आगे भारतीय तकनीक शिशु अवस्था में है। अत: हमारे भारतीय वैज्ञानिक अब तक हुई खोजों से अलग चंद्रमा पर कुछ खोज कर लेंगे यह बात गले नहीं उतरती।

भारत द्वारा छोड़े गए एक सैटेलाइट के पुर्जे 60-70 प्रतिशत विदेशी होते हैं, इस चंद्रयान में भी अधिकांश पुर्जे विदेशी ही लगे होंगे। स्पष्टत: इस अभियान से भारतीय तकनीक को कोई लाभ पहुँचने वाला नहीं है।

इस चंद्रयान अभियान के बाद जैसा कि कहा जाता है कि भारत की प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी ऐसा कुछ होने वाला नहीं है। सारे विश्व को पता है कि भारत के स्वदेशी यान के सारे पुर्जे विदेशी हैं। यह तो वही बात हुई कि 'कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा, भानुमति ने कुनबा जोड़ा'।

भारत की इस बिना लाभ की योजना के पीछे न केवल धन की बर्बादी होगी वरन मानव ऊर्जा जो किसी अन्य तरफ उचित कार्य में लगती, वह भी बर्बाद ही होगी।

भारत जैसे गरीब राष्ट्र में जहाँ एक तरफ लोगों की न्यूनतम बुनियादी आवश्यकताएँ जैसे रोटी, कपड़ा व मकान ही पूरी नहीं होती, वहीं दूसरी ओर इतना धन चंद्रयान-प्रथम जैसी अलाभकारी योजनाओं पर खर्च किए जाएँ, यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है।

अंतत: केवल इतना ही कहा जा सकता है कि चंद्रयान-प्रथम अभियान अनावश्यक एवं अनुचित है और हमारे नीतिनिर्धारकों को इस प्रकार के अनावश्यक कार्यों से परहेज करना चाहिए।

(ख) कविता सुनाना

कविता सुनाना भी अपने-आप में एक कला है। यह कला कुछ लोगों में जन्म से पाई जाती है तो कुछ इसे अभ्यास द्वारा सीख सकते हैं। कवि सम्मेलनों में जाने तथा कवियों के सान्निध्य से कविता पाठ सुनकर अभ्यास किया जाए तो सीखने का कार्य सरल हो जाता है। कविता पाठ में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है—

1. सर्वप्रथम ऐसी कविता का चयन करें जो अपनी रुचि के अनुसार हो, जिसे आप अपने हृदय से पसंद करते हों, क्योंकि ऐसी कविता में ही आप उन भावों को भर सकते हैं, जो आपके हृदय से निकलते हैं।
2. कविता को पूर्णत: याद कर लें। याद की गई कविता से लय बनती है।
3. उस कविता का बारंबार अभ्यास करें।
4. याद की गई कविता को नज़दीकी लोगों को सुनायें।
5. एकांत कमरे में दर्पण के समक्ष खड़े होकर अपने हाव-भाव को कविता की प्रवृत्ति के अनुसार बनायें।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

6. जो शब्द या वाक्य आपके प्रवाह में बाधक हों, उन्हें बदलकर उनके स्थान पर पर्यायवाची रख दें।
7. शब्द परिवर्तन से कविता के अर्थ में परिवर्तन नहीं आना चाहिए।
8. उच्चारण पर विशेष ध्यान देना चाहिए।
9. कविता सुनाते समय मुक्त कंठ से कविता का उच्चारण करें।
10. श्रोता की रुचि व आराम का विशेष ख्याल रखें।
11. श्रोताओं के हाव-भाव पढ़ने का प्रयास करें।
12. भावों के अनुसार स्वरों में उतार-चढ़ाव होना भी आवश्यक है। हास्य, व्यंग्य व करुणा के भावों के अनुसार वाणी का उतार-चढ़ाव अधिक प्रभावशाली बन जाता है।
13. कविता रुक-रुक कर सुनाई जानी चाहिए, ताकि श्रोतागण उसका पूरा आनंद ले सकें।
14. श्रोतागण के आनंद को उनके द्वारा दी गई दाद/तालियों से समझा जा सकता है। ऐसे अवसरों पर कविता की उस पंक्ति को पुनः दोहराया जाना चाहिए।
15. जिन पंक्तियों को आप श्रोता का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं, उन पंक्तियों को दोहराना चाहिए।
16. कविता को गाकर भी सुनाया जा सकता है।
17. कविता का चयन अवसरानुकूल होना चाहिए।
18. कविता के भावपूर्ण स्थलों को हृदय से सुनाकर श्रोतागण को भाव-विभोर करना ही श्रेष्ठ कविता का वाचन होता है।

उदाहरण 1. सुभद्रा कुमारी चौहान की निम्नलिखित कविता का वाचन प्रभावी ढंग से कीजिए।

इस समाधि में है छिपी
एक राख की ढेरी।
जलकर जिसने स्वतंत्रता की
दिव्य आरती फेरी।।

यह समाधि, यह लघु समाधि है
झाँसी की रानी की।
अंतिम लीलास्थली यही है
लक्ष्मी मर्दानी की।।

यहीं कहीं पर बिखर गई वह
भग्न विजय-माला सी।
उसके फूल यहाँ संचित हैं
है यह स्मृति-शाला सी।।

सहे वार पर वार अंत तक
लड़ी वीर बाला सी।
आहुति सी गिर चढ़ी चिता पर
चमक उठी ज्वाला सी।

उदाहरण 2. नागार्जुन की निम्नलिखित कविता का वाचन अपने शब्दों में कीजिए।

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास।
कई दिनों तक कानी कुतिया, सोई उसके पास।
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त।
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दाने आए घर के अंदर कई दिनों के बाद।
धुआँ उठा आँगन के ऊपर कई दिनों के बाद।
चमक उठी घर भर की आँखें कई दिनों के बाद।
कौए ने खुजलाई पाँखें कई दिनों के बाद।।

(ग) बातचीत या संवाद

बातचीत या संवाद एक ही चीज हैं। संवाद एकदम स्वाभाविक होता है। उसमें अपनी बात को अपने स्वभाव और चित के अनुसार कहने पर बल दिया जाता है। उसमें न तो बनावट होती है और न किसी को प्रभावित करने की इच्छा।

बातचीत अथवा संवाद स्थापित करने के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना चाहिए। बातचीत में रिश्तों की महक बनी रहे, इसके लिए मित्र के साथ मित्रता, बड़ों के साथ पूज्य भाव, छोटों के साथ स्नेह व्यक्त होना चाहिए। बातचीत में संबोधन बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। अकेला संबोधन ही बातचीत की दिशा परिवर्तित कर सकता है। यदि किसी शत्रु को अच्छे संबोधन से बुलाया जाए तो वह भी द्रवित हो जाता है। इसी प्रकार यदि किसी अच्छे मित्र को अपमानजनक संबोधन से बुलाया जाए तो वह चिढ़ जाता है।

बातचीत दिल खोल कर होनी चाहिए जिसमें कोई दुराव अथवा छिपाव नहीं होना चाहिए। सीधी सच्ची बात सीधी-सादी अभिव्यक्ति में कहनी चाहिए। बातचीत को हृदय प्रेरित होना चाहिए, मस्तिष्क प्रेरित नहीं। बहुत सोच-विचारकर व सोच-समझकर कही गई बात बनावटी व नीरस होती है, ढोंग होती है और अवास्तविक होती है। इस प्रकार की बातचीत का मित्रों में कोई स्थान नहीं होता। इस प्रकार की बातचीत व्यवसायियों अथवा राजनीतिज्ञों के बीच ही अच्छी होती है।

बातचीत में एक प्रकार का खुलापन होता है जो एक साँचे में ढली हुई सी व अनुशासनहीन होती है। उसमें कुशल-क्षेम, हँसी-मजाक या मूड अपसैट करने के अवसर भी होते हैं। इन अवसरों का बातचीत में एक विशेष महत्त्व होता है। बातचीत अवसर के अनुकूल होनी चाहिए। यदि दुख है तो बातचीत मन को हलका करने वाली होनी चाहिए। यदि खुशी हो तो बातचीत से ऐसा लगना चाहिए कि हम दूसरे व्यक्ति की खुशी में उतने ही खुश हैं जितने कि अन्य।

नीचे विभिन्न लोगों से हुई बातचीत के नमूने प्रस्तुत हैं—

1. वर्तमान शिक्षापद्धति पर रमेश व रमा के वार्तालाप संवाद रूप में लिखें।

रमा : वर्तमान में शिक्षा के राजनीतिकरण के विषय में तुम्हारा क्या तर्क है?

रमेश : राजनीति का शिक्षा पर कुप्रभाव पड़ रहा है। कोई भी सरकार आती है वह शिक्षा को अपनी राजनैतिक विचारधारा के अनुरूप बदलती रहती है। यह अत्यंत गंभीर विषय है। शिक्षा पद्धति स्थाई तथा राष्ट्रीय विचारधारा से प्रभावित होनी चाहिए।

रमेश : आज के जीवन में हमें किस प्रकार की शिक्षा प्रणाली अपनानी चाहिए?

रमा : शिक्षा तो शिक्षा है। इसमें किस प्रकार से क्या मतलब?

रमेश : नहीं। मेरा तात्पर्य यह है कि कोरी विद्यालयी शिक्षा या कामकाजी शिक्षा।

रमा : मेरे विचार से तो कामकाजी शिक्षा का महत्त्व ज्यादा है।

रमेश : हाँ। पर आज का युग धन प्रधान युग है, अतः कामकाज की शिक्षा भी आवश्यक है।

रमा : सोचना पड़ेगा। क्या ऐसा नहीं हो सकता कि विद्यालयी शिक्षा के साथ-साथ ही कामकाज की शिक्षा भी ग्रहण की जाए।

रमेश : यह ठीक रहेगा। आज की शिक्षा प्रणाली इसी प्रकार की होनी चाहिए।

2. एक ग्रामीण तथा नागरिक संवाद स्थापित कीजिए।

ग्रामीण : हमारे ग्राम तो स्वर्ग तुल्य हैं। क्यों भाई शहरी! तुमने यह सुना ही होगा कि ग्रामों को ईश्वर ने बनाया है और नगरों को शैतान ने।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शहरी : सुना तो मैंने भी है परंतु तुम जानते ही हो कि ग्रामों का नगरों से क्या मुकाबला? ग्रामों में न तो सिनेमा, ने रेडियो, न अस्पताल, न डाकखाने, बीमार पड़े तो मर के ही उठे, फिर न स्कूल और न ही कॉलेज। ग्रामीण जीवन तो आधा पशु जीवन है।

ग्रामीण : अरे मित्र शहरी! तुमने ग्रामों का देखा ही क्या है? प्रातःकाल का सुंदर समीरण, शुद्ध स्वच्छ दूध और घी तुम्हें नगरों में कहाँ प्राप्त हो सकता है? नगर भी बनावटी है और उनकी वस्तुएँ भी बनावटी। यदि हमारा जीवन पशु जीवन है तो तुम्हारा जीवन नितांत कृत्रिम है।

शहरी : अज्ञानता भी संसार में महान् पाप है। तुम ग्रामीणों को न तो अपना कुछ पता है और न संसार का। जहाँ तुम पैदा होते हो वहीं मर कर निकलते हो। तुमने अपने ईश्वर के संसार का देखा ही क्या है? जैसे आए हो वैसे ही चले जाओगे।

ग्रामीण : तुम्हारा शहर का संसार छल-कपट से परिपूर्ण है। नगरों में बात-बात पर झूठ, ठगी तथा मक्कारी है। तुम्हारी इस दुनिया से हम ग्रामीण लोग दूर ही भले हैं। हमारे यहाँ सब प्रकार का सत्य व्यवहार है। सब मिलकर रहते हैं। एक-दूसरे के हम सुख-दुःख के साथी हैं। ऐसा नैसर्गिक प्रेम नगरों में कहाँ देखने को मिलता है।

शहरी : तुम्हारी मातृभाषा और प्रेम का हमें पूर्ण ज्ञान है। तुम्हारे यहाँ बात-बात पर मुकद्दमे लड़े जाते हैं। बात-बात पर तुम्हारे यहाँ तलवारें चलती हैं। फिर भी तुम मिलजुल कर रहने का श्रेय लेते हो। यह कितनी विचित्र बात है।

ग्रामीण : तुम इसे हमारी कमजोरी समझो या अच्छाई कि हम अपनी-अपनी आन पर जान दे सकते हैं। परंतु तुम्हारे शहरी जीवन में तो चरित्र का कोई स्थान नहीं। सब प्रकार के पाप व अपराध तुम्हारे शहरी जीवन में होते हैं। ईश्वर हमें तुम्हारे शहरी जीवन के तो दर्शन ही न कराये।

शहरी : ऐसा लगता है कि हम दोनों अपने-अपने स्थान पर ठीक कहते हैं। एक दृष्टि से नगर अच्छे हैं तो ग्राम बुरे, व दूसरी दृष्टि से ग्राम अच्छे हैं तो नगर बुरे।

ग्रामीण : तो आओ फिर ईश्वर से प्रार्थना करें कि वह नगरो की अच्छाइयों को ग्रामों में वितरित कर दे और ग्रामों की अच्छाइयों को नगरों में।

शहरी : ईश्वर ऐसा ही करे।

(घ) परिचर्चा

परिचर्चा समूह में की गई बातचीत को कहते हैं। इसका उद्देश्य किसी विषय को पूरी तरह से खोलना, समझना व उसके सभी पक्षों को जानना होता है। इसमें कुछ पक्ष में बोलते हैं तो कुछ विपक्ष में। परिचर्चा में एक संयोजक होता है जो अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत करता है।

परिचंर्चा का एक तरीका यह होता है कि पहले कोई एक सदस्य किसी निर्धारित विषय पर अपने विचार प्रकट करे। कई बार ऐसा होता है कि बाहर से किसी बुद्धिजीवी को बुला लिया जाता है जिससे वह तय विषय पर अपने विचार प्रस्तुत कर सके। तत्पश्चात् अन्य सदस्य उन्हीं से प्रश्न करके चर्चा को आगे बढ़ाते हैं। यह चर्चा अधिक सफल होती है। इसमें अनुशासन का अत्यधिक महत्त्व होता है तथा एक समय में एक व्यक्ति ही अपनी बात रखता है। फिर उसका उत्तर तत्काल दिया जाता है तथा इसी प्रकार प्रश्नों में से प्रश्न निकलते रहते हैं तथा उनका उत्तर भी तुरंत मिलता रहता है। यह बिल्कुल आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक प्रश्न का उत्तर उपस्थित बुद्धिजीवी ही दे। सभा में उपस्थित अन्य कोई व्यक्ति भी उसका उत्तर दे सकता है।

यदि परिचर्चा में कोई मुख्य वक्ता नहीं हो तो कोई न कोई अध्यक्ष, सभापति या सूत्रधार अवश्य ही होता है। अन्यथा परिचर्चा दिशाहीन भी हो सकती है। कई बार ऐसा भी होता है कि परिचर्चा किसी हल तक न भी पहुँचे परंतु उसके सभी पक्ष अवश्य ही खुल जाते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

परिचर्चा के कुछ आवश्यक तत्व हैं—

1. परिचर्चा में एक संयोजक अवश्य होना चाहिए।
2. इसमें अपनी बात कहकर दूसरों की भी सुननी चाहिए।
3. इसमें सभी सदस्यों को बोलना चाहिए।
4. बातचीत में निंदा, उग्रता नहीं होनी चाहिए।
5. असहमति हेतु भी विनम्रतापूर्वक अपनी बात कहनी चाहिए।
6. संयोजक को विषय के केंद्रबिंदु पर रहना चाहिए।
7. अच्छी बातों को स्वीकार करना चाहिए, चाहे वे आपके विरोध में क्यों न हों।

उदाहरण

संगठित रूप से और प्रलोभन देकर कराए जा रहे धर्मपरिवर्तन पर प्रतिबंध लगना चाहिए। इस विषय पर परिचर्चा करायें।

गोकुल : मित्रों, परीक्षक ने हमें परिचर्चा का जो विषय दिया है, वह है 'संगठित रूप से और प्रलोभन देकर कराए जा रहे धर्म परिवर्तन पर प्रतिबंध लगना चाहिए'। स्पष्ट शब्दों में कहें तो यह बात निर्विवाद है कि जब कोई व्यक्ति अपने अंत:करण को संतुष्ट करने हेतु एक नए धर्म को अपनाने का निर्णय लेता है, तो अपनी इच्छा से वह जहाँ और जब ऐसा करना चाहे, उसे इसकी स्वतंत्रता होनी चाहिए, लेकिन संगठित रूप से धर्मांतरण की प्रक्रिया बलपूर्वक, धमकी देकर, प्रलोभन देकर या बहला-फुसलाकर की जा रही है, इस प्रकार का निंदनीय कार्य विदेशी हितों को पूरा करने के लिए सुनियोजित विदेशी हस्तक्षेप और उनकी सोची समझी रणनीति हो सकती है। वास्तव में, विश्व हिंदू परिषद द्वारा हाल ही में आरोप लगाया गया कि गरीब व निरक्षर हरिजन और आदिवासियों को उनके विश्वास के कारण नहीं, बल्कि प्रलोभन देकर अथवा बहला-फुसला, यहाँ तक कि धन, बल और बेहतर सामाजिक स्तर सुलभ कराने के वायदे के साथ इस्लाम और ईसाई धर्म में अंतरण करवाया गया। मुझे विश्वहिंदू परिषद के इस आरोप में सत्य दिखाई देता है। मेरी दृष्टि में इस विवाद की जड़ यह है कि ऊँची जातियाँ—ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इस प्रकार के ध र्मांतरण के आयोजनों का लक्ष्य नहीं होतीं क्योंकि कुल मिलाकर ये जातियाँ आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से काफी प्रतिष्ठित हैं और इनसे संबंधित विपन्न या निर्धन लोगों को भी बहलाया-फुसलाया या प्रलोभन नहीं दिया जा सकता। इन हरिजनों के विरुद्ध शताब्दियों से चले आ रहे सामाजिक भेदभाव या वर्णभेद और उनके प्रति हो रहे अत्याचार के कारण भी यह परिवर्तन हो सकता है। संभव है कि उन्होंने अपनी निरक्षरता व गरीबी दूर करने के लिए धर्म परिवर्तन कर लिया हो। धर्म परिवर्तन इतने बड़े पैमाने पर हुआ कि कुछ गाँवों के हरिजनों की पूरी की पूरी जनसंख्या ने ही रातों रात इस्लाम धर्म अंगीकार कर लिया। इसलिए यह नहीं कहा जा सकता कि उन्होंने अपने अंत:करण की संतुष्टि हेतु धर्मांतरण किया, बल्कि उनके अवश्य कुछ और भी उद्देश्य रहे होंगे। ऐसा प्रतीत होता है कि इस धर्मांतरण में विदेशी धन और निधि ने भी अपनी भूमिका निभाई है। इस धर्मांतरण से उन्हें 'सामाजिक स्तर की समानता' का प्रलोभन दिया गया तथा देश में या मध्यपूर्व के देशों में रोजगार देने, इस्लाम स्वीकार करने के पश्चात्, और आवास के अतिरिक्त नए कपड़े व अन्य वस्तुएँ प्रदान करने का भी लालच दिया गया। इस मामले की जाँच से यह पता चलता है कि पश्चिम एशियाई अरब देशों से आया तेल का पैसा इस धर्मांतरण में लगाया गया, इसलिए प्रथम दृष्टया यहाँ इस मामले में प्रलोभन, बहलाने-फुसलाने और धमकी के प्रभाव मिले हैं। इसलिए मेरा मानना है कि इस प्रकार के धर्मांतरण को प्रतिबंधित कर दिया जाना चाहिए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और इसे अमान्य तथा वर्जित घोषित किया जाना चाहिए। जो भी इन घटनाओं के लिए जिम्मेदार हों, उन्हें इसका कड़ा दंड मिलना ही चाहिए।

वेंकटेश : मित्रों, हमारे सहयोगी श्रीमान गोकुल जी ने अभी इस विषय में विस्तारपूर्वक बताया कि बड़े पैमाने पर धर्मांतरण की घटनाएँ अब हमारे देश में प्रमुख मुद्दा बन गई हैं। समाचार पत्रों ने इन खबरों को सुर्खियों में प्रकाशित किया जिससे जनता भड़क गई। कुछ इस प्रकार की खबरें भी मिली हैं कि इसी प्रकार के धर्मांतरण के कार्यक्रम देश के अन्य भागों में भी हो सकते हैं, यह ठीक है कि हमारा संविधान अनुच्छेद 25 के अंतर्गत मौलिक अधिकारों में धर्म की स्वतंत्रता के अधिकार की गारंटी देता है। लेकिन कोई भी मौलिक अधिकार राष्ट्रीय सुरक्षा से संबंध सरोकारों पर कुठाराघात नहीं करता है। मुस्लिम शासन काल में तलवार के डर से लाखों हिंदुओं का बलात् धर्मांतरण कराया गया। इसके पश्चात् भी बड़े पैमाने पर धर्मांतरण हुए, जिनमें से अधिकांश स्वतंत्रता पूर्व ही हुए। ईसाई मिशनरियों ने विदेशी धन के बल पर हरिजनों को ईसाई धर्म में अंतरण करवा लिया था, लेकिन उन्होंने रचनात्मक कार्य भी किए। मिशनरियों के फादर हरिजन बस्तियों में रहे, हरिजनों को पढ़ाया लिखाया, उनके जीवन के मार्ग को सुधारा तथा उनकी स्वच्छता पर भी ध्यान दिया। वे भी इस बात से सहमत थे कि हरिजन यदि ईसाई धर्म अपना लें, तो यह धार्मिक रूप से बेहतर होगा। स्वतंत्रता के पश्चात् डॉक्टर अम्बेडकर ने हरिजनों के बौद्ध धर्म में अंतरण के लिए एक अभियान चलाया, इसका उतना हिंसक विरोध नहीं हुआ जितना कि देश के विभाजन के समय पाकिस्तान में बड़े पैमाने पर बलात् धर्म-परिवर्तन कराने पर हुआ। लेकिन मुझे आश्चर्य है कि इस प्रकार धर्मांतरण पर प्रतिबंध लगा देना क्या इस समस्या का स्थाई हल है? 5 अक्तूबर, 2002 को तमिलनाडु सरकार द्वारा लाए गए अध्यादेश का तीव्र विरोध किया गया और वह भी राज्य के एक दलित संगठन द्वारा। इस अध्यादेश में धर्मांतरण पर प्रतिबंध लगाने की व्यवस्था थी, चाहे वह बलात् करवाया गया हो, प्रलोभन देकर अथवा बहला-फुसलाकर। धर्मांतरण कराने पर तीन वर्ष तक की जेल और पचास हजार जुर्माना लगाने का प्रावधान भी था। उस दलित संगठन ने धमकी दी कि इस अध्यादेश को वापिस ले लिया जाए अन्यथा दो करोड़ हिंदू इस्लाम धर्म ग्रहण कर लेंगे। यहाँ तक कि छद्म धर्म-निरपेक्ष पार्टियों जैसे समाजवादी, जेडीयू (एस) और वामपंथी दलों ने भी इस अध्यादेश का यह कहकर विरोध किया कि संघ परिवार को तुष्ट करने के लिए एआईएडीएमके पार्टी की प्रमुख और तमिलनाडु की मुख्यमंत्री सुश्री जयललिता ने यह अध्यादेश प्रस्तुत किया है। इस घटनाक्रम द्वारा इसको राजनीतिक रंग दे दिया गया, जबकि यह स्पष्ट है कि इसी प्रकार के कानून उड़ीसा (1967), मध्यप्रदेश (1968) और अरुणाचल प्रदेश (1977) में पहले ही बने हुए हैं।

सौरभ : वास्तविकता यह है कि इस प्रकार के संगठित धर्मांतरणों के लिए आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों से जूझ रहा हरिजन वर्ग एक उर्वर भूमि है। हमें स्वयं को इसके लिए जिम्मेदार ठहराना चाहिए। हरिजनों के उत्थान की दृष्टि से गाँधीजी द्वारा किए गए प्रयासों तथा कई विधानों के बावजूद वे आज भी उपेक्षित हैं और उनके साथ भेदभाव किया जा रहा है। उन्हें मंदिरों में प्रवेश करने से रोक दिया जाता है, यहाँ तक कि उन्हें कुँओं, तालाबों, टैंकों से वंचित कर दिया जाता है और इन सबसे ऊपर उच्च हिंदू जाति द्वारा यह अत्याचार अभी भी जारी है। यदि हिंदू जाति अनुसूचित जाति/जनजाति इत्यादि के विषय में युगों-युगों से प्रचलित अवधारणाओं को बदल दें तो धर्मांतरण की समस्या समाप्त हो जायेगी।

विमल : श्रीमान गोकुल व श्रीमान वेंकटेश दोनों ने ही इस बात की पुष्टि कर दी है कि बड़े पैमाने पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सामूहिक धर्म परिवर्तन के लिए विदेशी हाथ और विदेशी धन की मुख्य भूमिका है। इस दिशा में सरकार का पहला कार्य विदेशी धन के प्रवाह पर प्रतिबंध लगाना होना चाहिए। इस प्रकार की कुछ खबरें समाचार पत्रों में भी आई हैं कि देश के कुछ स्थानों पर भड़के सांप्रदायिक दंगों में विदेशी धन और हथियारों का प्रयोग बहुतायत में किया गया। इसलिए जब हम एक बार विदेशी धन का प्रवाह रोक देंगे, तब इस प्रकार के संगठित धर्मांतरण की घटनाएँ भी स्वत: ही समाप्त हो जायेंगी।

(ङ) धन्यवाद देना व कृतज्ञता व्यक्त करना

समाज में वही सभ्य नागरिक माना जाता है जिसे उठने-बैठने, बोलने-चालने के सामान्य तरीके आते हों। आपको उचित अवसरों पर धन्यवाद, सत्कार, स्वागत आदि से संबंधित बातें कहनी चाहियें। धन्यवाद के एक शब्द से व्यक्ति का मुखमंडल खिल उठता है। वह अपने सभी कष्ट भूलकर प्रसन्नचित्त हो जाता है। उचित अवसर पर स्वागत, सत्कार, धन्यवाद व कृतज्ञता के वचन कहने पर आपके सभ्य होने की पहचान हो जाती है। इसी प्रकार इस प्रकार के किसी अवसर पर मौन व उदासीन रहने पर असभ्य होना प्रस्तुत होता है। व्यक्ति को चाहिए कि वह उचित अवसर पर धन्यवाद अवश्य करे।

कृतज्ञता व्यक्त करना धन्यवाद व्यक्त करने से अधिक गंभीर होता है। यदि किसी ने आपको गहरी मुसीबत से बचाया हो या आपको किसी कष्ट से मुक्ति दिलाई हो तो उसके प्रति कृतज्ञता की भावना अवश्य ही होनी चाहिए। उसका उपकार सदैव मानना चाहिए व मौका पड़ने पर सहायता भी करनी चाहिए। व्यक्ति का कृतज्ञता माध्यम हलका-फुलका नहीं वरन् पूर्ण निष्ठा व मन से होना चाहिए।

धन्यवाद व्यक्त करने अथवा कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए कुछ शब्द व वाक्य इस प्रकार हैं—

1. आपने मुझ पर जो कृपा की है, उसे इसी प्रकार बनाए रखिएगा।
2. धन्यवाद के शब्द आपके लिए बहुत छोटे हैं प्रियवर!
3. मैं आपका बहुत आभारी हूँ।
4. बहुत-बहुत शुक्रिया।
5. इस नेक सुझाव के आपका हार्दिक धन्यवाद।
6. मैं आपके प्रति हृदय से कृतज्ञ हूँ।
7. आपका किन शब्दों में धन्यवाद व्यक्त करूँ, शब्दों का अकाल सा पड़ गया है।
8. आपका यह एहसान में जीवनपर्यंत नहीं भूलूँगा।
9. मुसीबत के समय यदि आपने मेरी सहायता न की होती तो मैं गहन संकट में फँस गया होता।
10. आपने वास्तव में मुझे बचा लिया।
11. आपके उपकारों को मेरी सात पीढ़ियाँ याद रखेंगी। मैं आपका ऋणी हूँ।
12. आपने यहाँ पधार कर हम पर अति कृपा की है। हम आपके आभारी हैं।
13. आपकी सलाह के लिए शुक्रिया।

उदाहरण

1. आपकी सखी संजीवनी ने तुम्हें जीवन में अधिक तरक्की करने की प्रेरणा दी है। इसके प्रत्युत्तर में आप उसके प्रति धन्यवाद व्यक्त करें।

उत्तर—तुम मेरी वास्तविक शुभचिंतक हो जो मुझे निरंतर मेहनत करने की प्रेरणा देती हो। तुमने मुझे प्रेरणा दी कि यह ऊँचाई अधिक नहीं है, मुझे और भी आगे जाना है। तुम्हारा धन्यवाद।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2. खोई हुई वस्तु को लौटाने के लिए किसी अपरिचित को कृतज्ञता प्रकट करने के लिए पत्र लिखिए।

उत्तर—महोदय अपने मेरा पर्स लौटाकर मुझ पर बहुत बड़ी कृपा की है। मेरे पर्स में मेरी बहुत सी महत्त्वपूर्ण वस्तुएँ थीं जैसे लाइसेंस, बस पास, परिचय पत्र आदि। उसमें दस हजार रुपये भी थे। किन शब्दों में तुम्हारी इमानदारी के लिए कृतज्ञता व्यक्त करूँ। शब्द नहीं हैं। फिर भी इतना ही कहना चाहूँगा कि—धन्यवाद।

3. आपका भाई अचानक विद्यालय के हॉस्टल में बीमार पड़ गया था। आपके भाई के मित्र ने उसकी बहुत देखभाल की व दवाएँ इत्यादि दिलवाईं। अपने भाई के मित्र को कृतज्ञता व्यक्त कीजिए।

उत्तर—सर्वप्रथम मैं आपका आभार व्यक्त करता हूँ कि आपने मेरे अनुज की बीमार पड़ने पर हॉस्टल में इतनी अच्छी प्रकार देखभाल की। आपने मेरे कर्तव्य को अपना समझकर निभाया। मैं आपका हृदय से ऋणी हूँ। मैं इस ऋण को कभी नहीं चुका पाऊँगा। यदि जीवन में कभी मेरी आवश्यकता हो, तो अवश्य याद करना। आपका पुनः धन्यवाद।

4. गर्मियों की छुट्टियों में आपके मित्र ने आपको अनेक पर्यटन स्थलों की सैर कराई। इसके लिए उसका धन्यवाद व्यक्त कीजिए।

उत्तर—मित्र, मैं तुम्हारा कृतज्ञ हूँ कि तुमने मुझे इस प्रकृति का इतने पास से एहसास कराया। उससे भी अधिक था तुम्हारा प्रेममय निमंत्रण व स्नेह। मुझे जब-जब इन स्थलों की याद आयेगी, तुम भी याद आओगे। तुम्हारी इस प्रेममयी आवभगत के लिए हार्दिक धन्यवाद!

5. आप स्कूटर पर जा रहे हैं। रास्ते में आपकी पुस्तकें गिर गईं। किसी ने आपकी पुस्तकें लौटा दीं। आप उसका धन्यवाद करें।

उत्तर—महोदय, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। आपने ये पुस्तकें लौटाकर मुझपर अत्यंत उपकार किया है, क्योंकि इन्हीं पुस्तकों से मैंने परीक्षा की तैयारी की थी। आपने मुझे बड़े संकट से बचा लिया।

6. मंच-संचालक की भूमिका में कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री मैथिली प्रसाद का धन्यवाद कीजिए।

उत्तर—मैं कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री बलजीत सैनी का संपूर्ण विद्यालय व अपनी ओर हार्दिक धन्यवाद व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस अवसर पर पधारकर हमारे कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। आपके आगमन से हमारे विद्यालय का गौरव बढ़ा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप भविष्य में भी हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे।

7. आपके घर आपके मामाजी सपरिवार कोलकाता से पधारे हैं। उनके आने पर धन्यवाद प्रकट कीजिए।

उत्तर—आपके पधारने का बहुत-बहुत धन्यवाद। आपके आने पर समस्त परिवार प्रसन्नता का अनुभव कर रहा है। आपके आगमन से हमारी यह तुच्छ कुटिया पवित्र हो गई है।

(च) संवेदना प्रकट करना

अपने किसी मित्र, संबंधी या किसी परिचित की किसी हानि या मृत्यु पर संवेदना व्यक्त की जाती है। ऐसी अभिव्यक्ति में बोले जाने वाले शब्द अत्यंत सहानुभूतिपूर्ण होते हैं। अक्सर देखा जाता है कि किसी दुख के अवसर पर हमारी वाणी मौन हो जाती है तथा हमारे शब्द हमारा साथ नहीं देते। हम उस समय दुखी के दुख को शांत नहीं कर पाते। जो हो गया उसमें कोई कुछ नहीं कर सकता परंतु कुछ महत्वपूर्ण शब्दों को बोलकर उनका दुख कुछ कम अवश्य ही कर सकते हैं। अतः विद्यार्थियों को चाहिए कि ऐसे अवसरों पर कहने योग्य शब्दों का ज्ञान प्राप्त करें। संवेदना अभिव्यक्ति के कुछ सामान्य रूप निम्नलिखित हैं—

1. यह तो बहुत बुरा हुआ।
2. यह अचानक क्या हो गया?
3. इसकी तो बिल्कुल उम्मीद न थी।
4. होनी को नहीं टाला जा सकता।
5. न जाने, ईश्वर की क्या इच्छा है?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

6. मनुष्य कर भी क्या सकता है?
7. सृष्टि का नियम ही ऐसा है।
8. शायद ईश्वर की यही इच्छा थी।
9. आपका दुःख हमारा भी दुःख है।
10. यह खबर सुनकर मुझे बहुत अफसोस हुआ।
11. अफसोस! दवा-दारू भी कुछ न कर सके।
12. दुःख की इस घड़ी में हम आपके साथ हैं।
13. भगवान् आपको यह कष्ट सहने की शक्ति दे।
14. यह समाचार सुनकर बहुत दुःख हुआ।
15. मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह आपको दुःख सहने की शक्ति दे।
16. जो होना होता है, वह होकर रहता है।
17. दुःख सहने के सिवाय चारा नहीं है।
18. हम कुछ कर सकते तो कोई कसर उठा न रखते।
19. अब गए हुए आदमी को वापस नहीं लाया जा सकता।

उदाहरण

1. आपके मित्र के पिता का लंबी बीमारी के पश्चात् देहांत हो गया है। अपने मित्र को सांत्वना दीजिए।

मुझे यह जानकर अत्यंत दुख की अनुभूति हुई कि आपके पिता का देहांत हो गया है। सुनकर हृदय को चोट पहुँची। मित्र! संकट की इस घड़ी में अपने आपको संभाले रखना। संकट की इस घड़ी में मैं सदैव तुम्हारे साथ हूँ। परमपिता परमात्मा पिताजी की आत्मा को शांति प्रदान करे व तुम्हें दुख सहने की सामर्थ्य दे।

2. आपके मौसेरे भाई दिवाकर के यहाँ चोरी हो गई है। चोर घर का सभी सामान ले गए हैं। आप अपने मौसेरे भाई को इस मामले पर सांत्वना दें।

मुझे यह समाचार मिलकर अत्यंत दुख पहुँचा कि तुम्हारे मकान में चोरी हो गई है। भ्राता दिवाकर, यह सब भाग्य का खेल है। जो हानियाँ हमारी किस्मत में लिखी हैं वे होकर ही रहती हैं। तुम धैर्य रखो। ईश्वर भविष्य में इतना देगा कि तुम यह दुख भूल जाओगे। चोरों का न तो कोई भाग्य होता है और न ही चोरी से किसी का काम चलता है। भाई! ऐसे दुःख की घड़ी में मैं सदैव तुम्हारे साथ हूँ। यदि किसी प्रकार की कोई समस्या हो, आर्थिक या कोई अन्य, तो मुझसे कहने में हिचकना मत। मैं यथासंभव मदद करूँगा। यदि दुख में अपने ही काम नहीं आयेंगे तो कौन आयेगा?

3. आपकी सखी मनोरमा को एक दुर्घटना में चोट लगी है। आप उसे एक पत्र लिखकर सांत्वना दें।

दुर्घटना का नाम सुनते ही मन में न जाने कैसे-कैसे भयानक ख्याल आने लगते हैं। पर ईश्वर का शुक्र है कि बस में किसी को गंभीर चोट नहीं आई। मुझे तो तुम्हारी चोटग्रस्त स्थिति की कल्पना करते ही अत्यंत दुख हो रहा है। ईश्वर की कृपा है कि हड्डी में कोई क्रैक नहीं आया। मेरी पूर्ण आशा है कि तुम परीक्षाओं से पूर्व ठीक भी हो जाओगी व अपनी तैयारियाँ भी कर सकोगी।

4. अपने मित्र की फैक्ट्री में आग लगने पर अपनी ओर से संवेदना दीजिए।

जब से मुझे तुम्हारी फैक्ट्री में आग लगने की खबर का पता चला है, मैं तुम्हें पत्र लिखने को व्याकुल हो उठा। ईश्वर की कृपा से फैक्ट्री में किसी मजदूर के हताहत होने का कोई समाचार नहीं है। तुम्हारी आर्थिक स्थिति को बड़ा तगड़ा झटका लगा होगा। मित्र, यदि किसी प्रकार की कोई समस्या हो तो मुझे अवश्य लिखना। यदि मैं तुम्हारे किसी भी कार्य आ सका तो मैं स्वयं को अत्यंत भाग्यशाली समझूँगा।

5. श्री ईश्वरचंद स्कूल में प्राध्यापक थे। सेवाकाल में ही उनकी हृदयगति रुकने से मृत्यु हो गई। आप विद्यालय के प्राचार्य के रूप में एक शोकसभा आयोजित कीजिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्यारे बच्चों और विद्वान साथियों! बड़े दु:ख की बात है कि आज 27 सितंबर को प्रात: छ: बजे काल के क्रूर हाथों ने हमारे लोकप्रिय व विद्वान शिक्षक श्री ईश्वरचंद को छीन लिया। रात्रि में उन्हें दिल का दौरा पड़ा। उन्हें तुरंत अस्पताल ले जाया गया, जहाँ डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। वे आदर्श शिक्षक थे। मैं उनकी मृत्यु पर संवेदना प्रकट करता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि दु:ख की इस घड़ी में उन्हें अपार सहनशक्ति प्रदान करें।

6. विमला के पति का लंबी बीमारी के पश्चात् देहांत हो गया है। उसके तीन छोटे-छोटे बच्चे हैं। वह घरेलू महिला है तथा शोक के कारण उसकी हालत खराब हो रही है। आप पड़ोसिन होने के नाते उसे सांत्वना दीजिए।

हिम्मत रख विमला! तेरे साथ जो हुआ, बहुत बुरा हुआ। ईश्वर भी कितना क्रूर है जो कमजोरों को अधिक कष्ट देता है। देख, तेरे छोटे-छोटे बच्चे हैं। इनकी देखभाल भी तुझे करनी है। हिम्मत रख, ईश्वर ने कष्ट दिया है, वही आगे का रास्ता दिखायेगा। हौंसला रख तथा बच्चों को संभाल।

(छ) बधाई देना

बधाई देना एक सामाजिक व्यवहार है जो किसी सगे-संबंधी द्वारा खुशी के अवसर पर किसी को दिया जाता है। बधाई देने से आप अपने सगे-संबंधी का दिल जीत सकते हैं। किसी खुशी के मौके पर मौन रहने वाले व्यक्ति को समाज में महत्व नहीं मिलता। खुशी के हर मौके पर बधाई दीजिए। यह भी एक मौखिक अभिव्यक्ति का एक रूप है। बधाई देते समय निम्नलिखित बातों का विशेषत: ध्यान रखिए—

1. बधाई अवसरानुकूल हो।
2. बधाई हृदय की अथाह गहराई से दी जानी चाहिए।
3. बधाई अवसर के अनुकूल होनी चाहिए।
4. केवल बधाई शब्द बहुत ऊपरी लगता है, इसलिए इसके साथ एकाध वाक्य अवश्य होना चाहिए।
5. लिखित या औपचारिक बधाई उतनी बेहतर नहीं होती जितनी मौखिक बधाई। मौखिक बधाई देते समय आपके मुखमंडल की प्रसन्नता से व्यक्ति को आभास हो जाता है कि आप सच्ची बधाई दे रहे हैं।
6. बधाई देते समय हाथ मिलाना चाहिए या गले मिलना चाहिए।

कुछ विशेष अवसरों पर निम्नलिखित शब्द बधाईयों के लिए प्रयोग किए जा सकते हैं—

किसी साधनापूर्ण सफलता पर

- आपकी सफलता पर हार्दिक बधाई।
- आखिर मेहनत रंग लाई।
- सफलता का यह दिन बार-बार आए।
- और आगे मित्र! और आगे!
- ईश्वर करे, तुम ऐसे ही बढ़ते रहो।
- यह सफलता आपकी साधना का फल है। बधाई!
- उन्नति की सीढ़ियाँ चढ़ते रहो।

विवाह पर

- आपका विवाहित जीवन सुख एवं समृद्धि से भरपूर हो।
- आपकी जोड़ी प्रसन्न रहे।
- शादी मुबारक!
- आपके विवाह पर हार्दिक बधाई!
- आपका युगल जीवन आनंदमय हो।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किसी भी खुशी पर

- आपको बहुत-बहुत बधाई हो।
- आपकी खुशियाँ दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती जायें।
- आप सदा सुखी रहें।
- भगवान आपको और खुशियाँ दे।

गृह-प्रवेश पर

- गृह-प्रवेश के अवसर पर मेरी ओर से बधाई।
- नया घर आपको नई खुशियाँ दे।
- यह नया घर आपको फले-फूले।
- नया घर आपको मुबारक हो।

जन्मदिन पर

- आपको जन्मदिन मुबारक हो।
- तुम जियो हजारों साल!
- यह दिन बार-बार आए।
- जुग-जुग जियो।
- जन्मदिन पर हार्दिक अभिनंदन।
- जन्मदिन की ढेर सारी बधाईयाँ।

दीवाली पर

- दीवाली की शुभकामनाएँ!
- दीवाली आपके जीवन में खुशियाँ लाए, प्रकाश लाए, जगमगाहट लाए।
- दीवाली मुबारक!

मंगलमय यात्रा के लिए

- आपकी यात्रा शुभ हो।
- आपकी यात्रा आनंदमय हो।
- यात्रा की शुभकामनाएँ!
- तुम्हारी यात्रा सुखद हो।

दुकान के उद्घाटन पर

- भगवान करे, आप फले-फूलें।
- नया व्यापार आपके लिए शुभ हो।
- यह नई दुकान या कार्यालय आपके व्यवसाय को खूब बढ़ाये।

नववर्ष पर

- नववर्ष मंगलमय हो।
- नववर्ष आपको सुख-समृद्धि प्रदान करे।
- नया साल आपको नया उत्साह दे।
- नये साल की बधाईयाँ।

सेवानिवृत्ति (रिटायर) होने पर

- आपकी कृतकार्यता/सफलता पर बधाई!
- आपने बेदाग नौकरी की, बधाई!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- आपने यशस्वी जीवन जिया, बधाई!
- आपने नौकरी खूब निभाई, बधाई!
- मुक्ति का यह जीवन आपको नए अनुभव दे।

सफलता की कामना के लिए

- आप सफल हों।
- तुम्हें हर कदम पर सफलता मिले।
- आपको परीक्षा में सफलता मिले।
- सफलता तुम्हारे चरण चूमे।

भाग्य से मिली सफलता पर (जैसे लाटरी निकलना आदि)

- इस खुशी के मौके पर मेरी बधाई।
- भाग्य आपके साथ हो।
- यह दिन बार-बार आए।
- भगवान आप पर मेहरबान रहे।
- भाग्य आप पर सदैव प्रसन्न रहे।

संतान होने पर

- शिशु के जन्म पर हार्दिक बधाई।
- नए जन्म से जीवन नया हो।
- नव-शिशु आपके जीवन को उमंग से भर दे।

उदाहरण

1. अपने मित्र के वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम आने पर बधाई दीजिए।

उत्तर—मुझे पता चला है कि अपने विद्यालय में होने वाली संपूर्ण दिल्ली वाद-विवाद प्रतियोगिता में तुम प्रथम स्थान पर आई हो। जितनी खुशी मुझे तुम्हारी इस कामयाबी से हुई है, उसका वर्णन मैं शब्दों में नहीं कर सकती। मैं तुम्हारी इस सफलता के लिए मेरी तरफ से हार्दिक बधाई।

2. अपने चाचाजी को चुनाव जीतने की बधाई दीजिए।

उत्तर—आप यह चुनाव जीतकर देश के सर्वोच्च सभा के सम्मानित सदस्य बन गए हैं। मेरी व मेरे समस्त परिवार की ओर से आपको शुभकामनाएँ। ईश्वर करे आप दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की करें।

3. आपके बड़े भाई की प्रोन्नति अध्यापक पद से प्राध्यापक पद पर हो गई है। अपने बड़े भाई को बधाई दीजिए।

उत्तर—यह बड़ी ही खुशी का अवसर है कि आप प्रोन्नत होकर प्राध्यापक हो गए हैं। आप इस प्रोन्नति के हकदार भी थे। आपकी प्रोन्नति आपकी मेहनत व प्रतिभा का ही परिणाम है। ईश्वर करे आप इसी प्रकार तरक्की की सीढ़ियाँ चढ़ते जायें। मेरी शुभकामनाएँ आपके साथ हैं।

4. अपने सहपाठी को वार्षिक परीक्षा में प्रथम स्थान पर आने पर बधाई दीजिए।

उत्तर—प्रिय सौरभ! अपनी इस शानदार सफलता पर मेरी सहस्र बधाईयाँ स्वीकार कीजिए। मैं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करूँगा कि तुम खूब तरक्की करो।

(ज) मित्रों के साथ बातचीत

मित्रों के साथ की गई बातचीत का अलग ही अंदाज होता है। उसमें किसी प्रकार की बनावट नहीं होती। मित्रों में बातचीत का कोई विषय नहीं होता। वह किसी भी विषय पर स्वत: कंठ से निकलने लगती है। कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

1. देव व नरेश दसवीं कक्षा के छात्र हैं। देव दसवीं कक्षा में फेल हो गया है। एक बातचीत स्थापित कीजिए।

देव : नरेश! तुमने देख लिया है कि मैंने इस बार परीक्षा में पास होने के लिए कितना परिश्रम किया था, परंतु ऐसा लगता है कि मेरी किस्मत भगवान ने टूटी कलम से लिख रखी है। मैं इस बार फिर फेल हो गया यार!

नरेश : देव! हताश होने की कोई बात नहीं है। यह कोई कुंभ का मेला थोड़ा ही है। अगले साल फिर इम्तिहान होंगे। उनमें तैयारी कर लेना।

देव : मजाक मत करो, मित्र।

नरेश : देव! हताश मत होओ। अवश्य ही तुम्हारी तैयारी में कोई कमी रही होगी, भाग्य कोई वस्तु नहीं।

देव : यदि भाग्य न होता तो मनुष्य जो कुछ चाहता है उसके पूर्ण प्रयत्न करने पर भी वह सफल नहीं होता?

नरेश : इसका कारण भाग्य नहीं है, प्रत्युत्त पहले तो मनुष्य उतना प्रयत्न ही नहीं करता जितना कि सफलता के लिए अभीष्ट होता है। यदि इतना प्रयत्न करने पर भी सफलता नहीं मिलती तो मनुष्य को उसके कर्मों का फल भी मिलना होता है।

देव : कई सुयोग्य तथा श्रेष्ठ व्यक्ति भी संसार में दुखी देखे जा सकते हैं। यद्यपि वे कर्म भी अच्छे करते हैं।

नरेश : ऐसे लोग पूर्वजन्म का फल भोगते हैं। अकारण तो किसी को दुःख नहीं मिलता। यदि ऐसा माना जाए तो परमात्मा न्यायकारी नहीं रह सकता।

देव : फिर कोई तो वस्तु है जो बाधा बनती है।

नरेश : बाधा कोई चीज नहीं बनती। मनुष्य को कर्म-फल के सिद्धांत पर विश्वास रखकर कार्य करते रहना चाहिए। जो लोग पुरुषार्थ न करके केवल भाग्य पर आश्रित रहते हैं, वे निरुद्यम होकर कष्ट भोगते रहते हैं। इस कर्मफल को चाहे भाग्य मान लो या पुरुषार्थ।

देव : तो आपका विचार यह है कि पुरुषार्थ करते रहना चाहिए। कर्मफल के लिए तैयार रहना चाहिए।

नरेश : बिल्कुल सही। अब तुम समझ गए होंगे कि पुरुषार्थ क्या है और भाग्य क्या वस्तु है?

2. दो मित्रों रामलाल व मोहनसिंह की सरकारी और प्राइवेट शिक्षण संस्थानों के विषय में हुई बातचीत को लिखिए।

रामलाल : ओहो मोहनसिंह! क्या हाल है भाई! सब ठीक तो है!

मोहनसिंह : मैं तो ठीक हूँ! तुम अपनी सुनाओ। कहाँ से आ रहे हो?

रामलाल : विद्यालय के प्रधानाचार्य से मिलकर आ रहा हूँ। आजकल यह समझ भी नहीं आता कि बच्चों को कहाँ पढ़ाया जाए।

मोहनसिंह : कहाँ क्या! स्कूल में ही तो पढ़ाओगे।

रामलाल : हाँ! पर, सरकारी स्कूल में या प्राइवेट में। यह समझ नहीं आता।

मोहनसिंह : भाई देखो! सरकारी विद्यालयों में फीस कम लगेगी और प्राइवेट में अधिक।

रामलाल : पर पढ़ाई की व्यवस्था व अनुशासन भी तो देखना है।

मोहनसिंह : तुम्हारा मतलब! सरकारी विद्यालयों में पढ़ाई नहीं होती?

रामलाल : मैंने तो यही सुना है।

मोहनसिंह : नहीं गलत। मेरे बच्चे सरकारी विद्यालय में ही पढ़ते हैं। और प्रतिवर्ष प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रामलाल : हाँ। हाँ। मैंने भी सुना है आजकल सरकारी विद्यालयों में भी नित नए तरीकों से पढ़ाई करते हैं। अच्छा मोहनसिंह मैं कुछ जल्दी में हूँ। मैं आज शाम को तुम्हारे घर आऊँगा। वहीं बातचीत करेंगे। अच्छा, नमस्ते!

मोहनसिंह : नमस्ते मित्र!

3. देश में भ्रष्टाचार के बढ़ते स्वरूप को लेकर पड़ोस के दो मित्रों में हुई बातचीत को प्रस्तुत कीजिए।

जितेंद्र : अरे रमेश! सुबह-सुबह कहाँ से आ रहे हो?

रमेश : अपने क्षेत्र के विधायक के घर गया था भैया।

जितेंद्र : ऐसा कौन सा कार्य आ पड़ा कि इतनी सुबह-सुबह उसके घर जाना पड़ा?

रमेश : अरे भाई, क्या बताऊँ, पिछले दस दिनों से किसी खराबी के कारण बिजली बंद है।

जितेंद्र : पर इसमें क्षेत्र का विधायक क्या करेगा?

रमेश : जितेंद्र, तुम भी भोले ही रहे। बिजली वालों के चक्कर काट-काटकर मैं थक गया हूँ, उन्होंने एक न सुनी। अब विधायक जी से फोन करवाया है। कहते हैं कि आज ठीक करवा देंगे।

जितेंद्र : यह तो बहुत ही सोचनीय बात है। हमारे देश में भ्रष्टाचार इस हद तक बढ़ गया है जब तक किसी नेता या बड़े अधिकारी से सिफारिश न करवाओ, कोई काम बनता ही नहीं।

रमेश : भाई क्या करें। आप तो जानते हैं, मैं अपना काम ईमानदारी से करता हूँ, पर क्या करूँ अब अपने काम के लिए सिफारिश लगानी पड़ी।

जितेंद्र : पर यदि यह भ्रष्टाचार इसी प्रकार बढ़ता गया, तो देश में कानून और व्यवस्था नाम की कोई वस्तु ही नहीं रहेगी।

रमेश : अरे भाई! वह बची ही कहाँ है। आज जिधर देखिए, भ्रष्टाचार का बोलबाला है, रिश्वतखोरी, भाई-भतीजावाद और सिफारिशों का दौर है।

4. जीवन व कमल बारहवीं कक्षा के छात्र हैं। भारत व पाकिस्तान के बीच ट्वेंटी-ट्वेंटी मैच का फाइनल हुआ था। एक बातचीत स्थापित कीजिए।

जीवन : अरे भाई कमल! सुनो तो! कहाँ भागे जा रहे हो।

कमल : जीवन तुमने सुना नहीं? भारत ट्वेंटी-ट्वेंटी मैच का फाइनल पाकिस्तान के साथ जीत चुका है।

जीवन : हाँ सुना भी है और देखा भी। मैं अभी-अभी धुँआधार आतिशबाजियाँ करके ही आ रहा हूँ।

कमल : मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। भारत दूसरी बार विश्वविजेता बना है। इस टूर्नामेंट में भारत ने पाकिस्तान को दो बार हराया है।

जीवन : पाकिस्तान का मिसबाह तो जम ही गया था। तीन छक्के लगातार मारकर उसने तो भारतीय टीम की कमर ही तोड़ दी थी।

कमल : हाँ एक बार को तो मुझे सदमा लग गया था। पाकिस्तान के विषय में सोचा भी नहीं जा सकता था कि वह फिर से मैच में वापसी कर लेगा।

जीवन : आखिरी गेंद पर मिसबाह ने गेंद को जितनी ऊँचाई पर अपने बल्ले से पहुँचाया तो मुझे तो शत प्रतिशत पाकिस्तान के विश्व-विजेता बनने की पुष्टि हो गई थी।

कमल : हमारे फील्डरों का तो जवाब ही नहीं। उस अंतिम गेंद को कैसे कैच किया और भारत मैच जीत गया। मैं तो चला मित्रों के पास जश्न मनाने।

जीवन : अरे रुको! मैं भी आ रहा हूँ।

5. अभी-अभी दो नई पिक्चरों की रिलीज होने पर दो मित्र अलग-अलग फिल्म देखकर आए हैं। संवाद स्थापित कीजिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अशोक : क्या हालचाल है सुनील! सब ठीक-ठाक। कहाँ से आ रहे हो?

सुनील : मैं अभी-अभी नेहरू प्लेस से फिल्म देखकर आ रहा हूँ।

अशोक : क्या कहा? कौन से सिनेमा हॉल से आ रहे हो? कौन सी फिल्म देखी है?

सुनील : मैं अभी-अभी नेहरू प्लेस स्थित सत्यम सिनेप्लेक्स में नई रिलीज फिल्म 'सांवरिया' देखकर आ रहा हूँ।

अशोक : क्या बात है अशोक! मैं भी वहीं से आ रहा हूँ। परंतु मैंने 'ओम शांति ओम' देखी थी।

सुनील : वह तो मैंने कल देखी थी। तुम्हें 'ओम शांति ओम' कैसी लगी?

अशोक : 'सांवरिया' की तुलना में कहीं अधिक अच्छी है।

सुनील : ठीक कहते हो। मेरा भी ऐसा ही विचार है। वास्तव में रणवीर कपूर को अभी शाहरुख खान से बहुत कुछ सीखना है।

(झ) पास-पड़ोस में संपर्क

प्रत्येक मनुष्य को पड़ोस की आवश्यकता होती है क्योंकि वह एक सामाजिक प्राणी है। वह जहाँ भी जाता है, जहाँ भी रहता है, वहाँ आस-पड़ोस के व्यक्तियों से मेलजोल बढ़ाने की कोशिश करता है। पड़ोसियों से की गई बातचीत में औपचारिकता नहीं होती। पड़ोसियों के साथ संपर्क जितना घनिष्ठ होता है, उनके साथ एक निश्चित दूरी भी होनी चाहिए। पड़ोसी से संपर्क बनाते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

1. पड़ोसी के साथ बातचीत गर्मजोशी के साथ करनी चाहिए।
2. उसकी बातचीत में रुचि लेनी चाहिए।
3. मिलते समय एक-दूसरे को प्रणाम करना चाहिए तथा अपने घर पर आने के लिए आमंत्रित करना चाहिए।
4. कुछ औपचरिक वाक्यों का भी प्रयोग करना चाहिए।
5. वार्तालाप के समय आत्मीयता होनी चाहिए।
6. मुलाकात के अंत में विदा लेते समय 'आपको कष्ट दिया', 'आपसे मिलकर प्रसन्नता हुई' आदि वाक्य कहने चाहियें। सद्भावना के साथ मुलाकात का अंत करना चाहिए। यदि रात का समय है तो 'शुभ रात्रि' कहा जा सकता है।

उदाहरण

1. आपका पड़ोसी विपुल अचानक मेनरोड़ पर मिल जाता है। अपने व उसके बीच होने वाले संवाद प्रस्तुत कीजिए।

आप : मित्र विपुल! कैसे हो? कहाँ जा रहे हो?

विपुल : अहा मित्र सुरेश! बहुत दिनों पश्चात् मुलाकात हुई। मैं यहीं गाँधीनगर किसी कारणवश जा रहा हूँ।

आप : मैं बहुत दिनों से याद कर रहा था कि विपुल से मिला जाए। आज संयोगवश मुलाकात हो ही गई।

विपुल : मेरा भी मन तुमसे बातचीत करने को करता है मित्र। परंतु इतनी व्यस्तता में समय ही नहीं निकाल पाता। रविवार की भी छुट्टी नहीं होती।

आप : खैर कोई बात नहीं। जब भी तुम्हारे पास समय हुआ करे घर आ जाया करो। तुम्हारे लिए मैं सदैव रिक्त हूँ।

विपुल : यह तो आपकी भलमनसाहत है।

2. श्री विनय कुमार जी, जो पेशे से गणित के अध्यापक हैं, आपके पड़ोस में रहते हैं। आपका नाम सुभाष है। वे आपके पास संपर्क के लिए आते हैं। आपकी व श्री विजेंद्र की बातचीत प्रस्तुत कीजिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विनय कुमार	:	नमस्कार भाई साहब!
सुभाष	:	नमस्कार, आइए भाई साहब! बैठिए। मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?
विनय कुमार	:	मैं आपके साथ वाले घर में रहता हूँ। मेरा नाम विनय है।
सुभाष	:	आपसे मिलकर प्रसन्नता हुई। आसन ग्रहण कीजिए।
विनय कुमार	:	क्या मैं जान सकता हूँ कि आप क्या व्यवसाय करते हैं?
सुभाष	:	जी मैं गणित का अध्यापक हूँ। यहीं राजकीय सर्वोदय विद्यालय में पढ़ाता हूँ।
विनय कुमार	:	अरे वाह! मैं भी गणित का ही अध्यापक हूँ।
सुभाष	:	यह तो बहुत ही खुशी की बात है। मुझमें व आपमें अच्छी छनेगी।
विनय कुमार	:	धन्यवाद! यदि किसी प्रकार की कोई आवश्यकता या समस्या हो तो याद कीजिएगा।

(ञ) कार्यक्रम प्रस्तुति/उद्घोषणा/सभा संचालन

प्राय: स्कूल में ऐसे अनेक अवसर आते हैं, जब स्कूल में सभा या समारोह का आयोजन किया जाता है। इन अवसरों पर विद्यार्थियों को समारोह आयोजित करने और उनका संचालन करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। इससे वे सभा-संचालन की औपचारिकताओं से परिचित हो सकेंगे और अवसर के अनुकूल विनीत भाषा का प्रयोग करना सीख सकेंगे।

समारोह-आयोजन और सभा-संचालन में सामान्यत: कोई विशिष्ट व्यक्ति अध्यक्ष होता है। अत: सर्वप्रथम संचालक द्वारा अध्यक्ष और मुख्य अतिथि को मंचासीन होने के लिए आमंत्रित किया जाता है। संचालक अध्यक्ष आदि का विशेष परिचय देते हुए उन्हें आमंत्रित करता है। ऐसे अवसरों पर संचालक द्वारा संक्षिप्त स्वागत-भाषण, दीप-प्रज्वलन, प्रार्थना आदि का आयोजन होता है। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न प्रतिभागियों को मंच पर आमंत्रित करते समय उनका भी संक्षिप्त परिचय दिया जाता है। कार्यक्रम पूरा होने पर अध्यक्षीय भाषण और धन्यवाद ज्ञापन होता है। अध्यक्षीय भाषण में कार्यक्रम के विषय में या पूर्व वक्ताओं के विचारों के विषय में उल्लेख होता है और अध्यक्ष के अपने अभिमत का भी। धन्यवाद ज्ञापन में हमें महत्व के अनुसार क्रमश: उन सभी व्यक्तियों का नामोल्लेख करना चाहिए, जिनके सहयोग से कार्यक्रम सम्पन्न हुआ है।

कविता-कहानी या भाषण देने के समान उद्घोषणा करना भी एक कला है। विद्यालय से संबंधित कार्यक्रमों की उद्घोषणा मंच-संचालन का अंग है। कुशल मंच-संचालक कुशल उद्घोषणा द्वारा सभी कार्यक्रमों में जान डाल देता है। उसमें प्रस्तुति की वह कला होती है जिसके बल पर वह श्रोताओं की रुचि और जिज्ञासा बनाये रखता है।

उद्घोषणा करना केवल कृत्रिम कार्य नहीं है कि वह रटे-रटाये नोटिस को जैसे तैसे पढ़कर छुट्टी पा ले। उसका कार्य अत्यधिक चुनौतीपूर्ण होता है। वह ज्ञानवान, प्रतिभाशाली, बुद्धिमान व हाजिरजवाब होता है। एक सफल उद्घोषक को निम्नलिखित बातों का अवश्य ध्यान रखना चाहिए—

1. उद्घोषक को कुछ वाक्य रटकर नहीं आना चाहिए अपितु आवश्यकता पड़ने पर अवसरानुकूल बोलने की क्षमता भी होनी चाहिए।
2. उद्घोषक/संचालक को शालीन वेशभूषा में मंच पर आना चाहिए।
3. उसे कार्यक्रम से संबंधित समस्त जानकारी होनी चाहिए।
4. दर्शकों/श्रोताओं को बाँधकर रखने की कला उसमें होनी चाहिए।
5. कलाकारों/कार्यक्रमों की सूचना देते समय कविता की पंक्तियों/सूक्तियों का प्रयोग करना आना चाहिए।
6. अवसरानुकूल वाणी में उतार-चढ़ाव करना आना चाहिए।
7. उद्घोषक के लिए प्रस्तुत होने वाले कार्यक्रम का विषय जानना नितांत आवश्यक होता है क्योंकि उद्घोषक को कार्यक्रम पेश होने से पूर्व वैसी ही भूमिका निभानी होती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

8. उद्घोषक को कम से कम बोलना चाहिए। दो कार्यक्रमों के बीच आधे मिनट से दो मिनट को जो रिक्त समय होता है, उसे बस उसी का ही इस्तेमाल करना चाहिए।

9. उद्घोषक की आवाज सुरीली होनी चाहिए।

10. उद्घोषक तथा समाचार वाचक में अंतर स्पष्ट होना चाहिए।

उदाहरण—मुख्य अतिथि के सम्मान में

1. यह हमारा परम सौभाग्य है कि आज हमारे मध्य दिल्ली सरकार के शिक्षामंत्री उपस्थित हैं। आप तालियाँ बजाकर उनका स्वागत कीजिए।

मैं विद्यालय की प्रिंसिपल श्रीमती विमलादेवी से प्रार्थना करूँगा कि वे मुख्य अतिथि पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत करें।

2. अब आपके सम्मुख दीप-प्रज्वलित कर मुख्य अतिथि कार्यक्रम का शुभारंभ करेंगे। मैं मुख्य अतिथि से प्रार्थना करता हूँ कि वे मंच पर आकर दीप-प्रज्वलित करने की कृपा करें। इस कार्य में उपप्रधानाचार्य सुश्री निलोफर उनकी सहायता करेंगी।

3. दीप-प्रज्वलन का कार्यक्रम विधिवत् संपन्न हुआ। अब मैं अध्यक्ष की अनुमति से सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रारंभ करता हूँ।

4. सबसे पहले इस विद्यालय की छात्राएँ 'सरस्वती वंदना' प्रस्तुत करेंगी। सरस्वती विद्या की अधिष्ठात्री देवी हैं। उन्हीं के आशीर्वाद से हम शिक्षा प्राप्त करने में सफल रहते हैं।

5. अब प्रस्तुत है—गुजरात का लोकप्रिय नृत्य 'गरबा'। यह नृत्य उत्साह एवं मस्ती का पर्याय है। इसे प्रस्तुत कर रहे हैं दसवीं कक्षा के विद्यार्थी। लीजिए 'गरबा' प्रस्तुत है।

इसी प्रकार कार्यक्रम निरंतर आगे बढ़ता रहेगा।

अंत में मैं मुख्य अतिथि से विनम्र प्रार्थना करता हूँ कि वे हमें मार्गदर्शन प्रदान करें।

(ट) परिचय कराना

व्यक्तियों में सामान्य और परस्पर परिचय का आदान-प्रदान कहीं भी, किसी भी स्थान पर हो सकता है। किसी अतिथि का परिचय दो प्रकार का होता है—औपचारिक व अनौपचारिक।

परिचय देते समय अतिथि का नाम, काम तथा उससे संबंधित संस्थान का पूरा नाम व पता होना चाहिए। यदि ये सब जानकारियाँ लिखित रूप में हो जायें तो सबसे अच्छा होता है। आवश्यकतानुसार जी, साहब, महोदय आदि सम्मानसूचक शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। यदि अतिथि के नाम के साथ कोई उपाधि या गौरव बढ़ाने वाला विशेषण हो तो उसका अवश्य ही प्रयोग करना चहिए जैसे डॉक्टर, आई.ए.एस. इंजीनियर आदि।

साधारणतया परिचय संक्षिप्त व सारगर्भित होता है तथा उसमें कसाव होना चाहिए। यदि मुख्य अतिथि का परिचय कराना हो तो उसके परिचय देते समय उसकी उस खूबी को केंद्र में रखना चाहिए जिसके लिए वह लोकप्रिय होता है। जन्म, पढ़ाई, व्यवसाय आदि के व्यक्तिगत आँकड़ों को कम महत्व देना चाहिए तथा उसके विशेष गुणों व सार्वजनिक उपलब्धियों का प्रमुखता से परिचय कराना चाहिए।

जब किसी व्यक्ति का परिचय कराया जाए तो वह ध्वंसात्मक न होकर रचनात्मक होना चाहिए। भूलकर भी अतिथि की बुराई नहीं करनी चाहिए। बुराई न करने का यह तात्पर्य नहीं है कि उसकी अधिक चापलूसी ही की जाए। चापलूसी से परिचय अपनी महत्ता खो देती है।

परिचय कराने वाले को भी कंजूस नहीं होना चाहिए। उसे हर अच्छी बात की प्रशंसा करनी चाहिए। प्रशंसा बड़ी नहीं होनी चाहिए। परिचय में कही जाने वाली बातें पहले बिंदु-रूप में लिख लेनी चाहिये।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ठ) परिचय लेना

किसी समारोह में व्यक्ति मिलते हैं। किसी अपरिचित व्यक्ति से परिचय कराना और उसके विषय में जानकारी लेना व्यवहार कुशलता है। किसी भी व्यवहार कुशल व्यक्ति का परिचय क्षेत्र इतना व्यापक होता है कि वह हर कार्य को पूर्ण कर लेता है।

किसी अपरिचित का परिचय लेते समय यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि उसे यह लगे कि परिचय लेने वाला व्यक्ति उसमें रुचि ले रहा है। परिचय लेते समय परिचय देने वाले की प्रत्येक बात को ध्यानपूर्वक सुनना चाहिए। परिचय लेने के बाद यदि आप उसकी किसी बात को भूल जायें तो यह शालीनता के विरुद्ध माना जाता है। परिचय विनम्रता पूर्वक पूछना चाहिए तथा व्यवहार में अपनत्व होना चाहिए व जिज्ञासापूर्ण प्रश्न पूछने चाहियें।

उदाहरण

देवेश ने एम.एस.सी. (गणित) व पी.एच.डी. किया है। वह किसी विद्यालय में नौकरी हेतु साक्षात्कार देने आया है। वहीं वह मोहन को देखता है। वह भी साक्षात्कार हेतु वहाँ आया हुआ है। विनय मोहन से परिचय करना चाहता है। वह किस प्रकार परिचय करे।

विनय : नमस्कार भाई साहब!

मोहन : नमस्कार, आइए भाई साहब! कहिए। मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?

विनय : आप भी साक्षात्कार हेतु आए हैं?

मोहन : हाँ, भाई साहब।

विनय : यह तो अच्छी बात है। हम एक से दो तो हुए। मैं अकेला बैठा सोच रहा था कि कहीं गलत दिन तो नहीं आ गया?

मोहन : अभी तो सही हुआ ही नहीं है। हम दोनों एक घंटा पहले आ गए हैं। अभी थोड़ी देर बाद यहाँ टिड्डी दल के समान लोग आने लगेंगे। नौकरियाँ कम हैं और उम्मीदवार बहुत।

विनय : क्या आप यहाँ के स्थानीय निवासी हैं?

मोहन : हाँ, मैं यहीं आर० के० पुरम में रहता हूँ।

विनय : आप की शिक्षा कहाँ तक है?

मोहन : मैंने एम० एस० सी० गणित विषय में किया है।

विनय : किस यूनिवर्सिटी से?

मोहन : दिल्ली यूनिवर्सिटी से।

विनय : मैंने भी यहाँ से अपनी शिक्षा पूरी की है। वर्ष 2000 के दीक्षांत समारोह में मुझे विश्वविद्यालय ने डिग्री प्रदान की थी। आप मैडम प्रतिभा लूथरा को तो जानते ही होंगे।

मोहन : हाँ, मैं उन्हें भली भाँति जानता हूँ। अब तो मैं उन्हीं के निर्देशन में शोध कर रहा हूँ।

विनय : यह तो बहुत ही अच्छी बात है और मेरा सौभाग्य है कि मुझे आप जैसे व्यक्तित्व से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। फिर तो आप शोध भी गणित पर ही कर रहे होंगे।

मोहन : जी आपने एकदम सही अनुमान लगाया।

विनय : आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई।

मोहन : मुझे आपसे भी अधिक।

विनय : बातों ही बातों में आपका नाम तो पूछना भूल ही गया।

मोहन : मेरा नाम मोहन है।

विनय : और मैं विनय। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ड) अपना परिचय कराना

किसी व्यक्ति पर अपने व्यक्तित्व की प्रथम छाप ही अंतिम छाप होती है। यदि हम अपने व्यक्तित्व का सही परिचय दें तो ही हम दूसरों पर अपने व्यक्तित्व का सिक्का जमा सकते हैं। आज मनुष्य को कितनी ही जगहों पर जाना पड़ता है जहाँ उसे नित नये लोग मिलते हैं। यदि ऐसे में अपना परिचय कराने की बात आ जाए तो यह स्वयं पर एक बड़ी जिम्मेदारी होती है कि हम अपना परिचय यथार्थ व सही दिशा में करायें। हमें स्वयं से अलग परिचय नहीं कराना चाहिए और न ही जानबूझकर कोई बात छिपानी चाहिए। अपना परिचय कराना कोई साधारण कार्य नहीं है। यह बहुत ही बुद्धिजीवियों का कार्य है। चाहते तो सभी हैं कि हम अपना अच्छा परिचय दें परंतु उपयुक्त शब्द नहीं मिल पाते हैं। इसके लिए भी सतत अभ्यास की आवश्यकता है। हम विद्यार्थियों की सहूलियत हेतु कुछ बातें प्रस्तुत कर रहे हैं जिनका यदि विद्यार्थी ध्यान रखें तो समस्या काफी आसान हो सकती है।

1. परिचय में सर्वप्रथम पूर्ण विनम्रतापूर्वक अपना नाम बताना चाहिए जिसमें बड़प्पन की बू नहीं होनी चाहिए।
2. तत्पश्चात् अपने निवास के विषय में बताना चाहिए। यदि सभा में विभिन्न नगरों के लोग इकट्ठा हों तो पहले नगर का नाम बताना चाहिए। इसी प्रकार यदि विभिन्न देशों/विद्यालयों के लोग उपस्थित हों तो पहले देश, फिर नगर, फिर मुहल्ले तथा फिर विद्यालय आदि की जानकारी देनी चाहिए।
3. फिर अपने विद्यालय व कक्षा का नाम बताना चाहिए। यदि आपने पहली कुछ कक्षायें किसी अन्य विद्यालय से की हों तो उस विद्यालय का भी उल्लेख करना चाहिए।
4. इतना परिचय तो साधारणतया सभी को दिया जाता है। इसके बाद परिचय अवसर पर भी निर्भर करता है।

कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत हैं जिनसे विद्यार्थियों को काफी लाभ होगा।

उदाहरण 1. निम्नलिखित विवरण के आधार पर सभा में अपने स्थान पर खड़े होकर अपना परिचय दीजिए। कृपया पूरे वाक्यों का प्रयोग करें।

विवरण

नाम	:	कमल
पिता का नाम	:	देवीसिंह
माता का नाम	:	सुनीता
निवास स्थान	:	उत्तम नगर, दिल्ली
विद्यालय	:	राजकीय सर्वोदय उच्चतम माध्यमिक विद्यालय, नंद नगरी, दिल्ली।
कक्षा	:	बारह
आजकल	:	एम०बी०बी०एस० परीक्षा की तैयारी।
माता-पिता का व्यवसाय	:	पिता : ज्वैलरी का कार्य
		माता : घरेलू कार्य

उत्तर—मेरा नाम कमल है। मेरे पिता का नाम श्री देवीसिंह तथा माता का नाम सुनीता है। मैं उत्तम नगर, दिल्ली का निवासी हूँ। मैं राजकीय सर्वोदय उच्चतम माध्यमिक विद्यालय, जो कि नंद नगरी, दिल्ली में स्थित है, में अध्ययनरत् हूँ। मैं कक्षा बारह का छात्र हूँ तथा इन दिनों एम०बी०बी०एस० की तैयारी कर रहा हूँ। मेरे पिता का व्यवसाय ज्वैलरी डिजायनिंग है तथा मेरी माता एक घरेलू महिला हैं।

उदाहरण 2. निम्नलिखित विवरण के आधार पर सभा में अपने स्थान पर खड़े होकर अपना परिचय दीजिए। कृपया पूरे वाक्यों का प्रयोग करें।

विवरण

नाम	:	रूपकिशोर भारद्वाज
पिता का नाम	:	गयासिंह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

माता का नाम	:	हीरादेवी
निवास स्थान	:	रोहताश नगर, शाहदरा, दिल्ली।
विद्यालय	:	राजकीय सर्वोदय उच्चतम माध्यमिक विद्यालय, शाहदरा, दिल्ली।
कक्षा	:	10वीं
अभिरुचि	:	गायन, नृत्य।
उपलब्धि	:	एन०सी०सी० में 'बी' प्रमाणपत्र व निशानेबाजी में गोल्ड मैडल।

उत्तर—मेरा नाम रूपकिशोर भारद्वाज है। मैं श्री गयासिंह व श्रीमती हीरादेवी का एकमात्र सुपुत्र हूँ। मेरा निवास स्थान राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के शाहदरा इलाके में स्थित रोहताश नगर में है। मेरी शिक्षा शाहदरा के ही राजकीय सर्वोदय उच्चतम माध्यमिक विद्यालय में जारी है। मैं दसवीं कक्षा का छात्र हूँ तथा मेरी गायन व नृत्य में विशेष रुचि है। इसके अलावा मैंने एन०सी०सी० में 'बी' प्रमाणपत्र भी हासिल किया है तथा निशानेबाजी में गोल्ड मैडल भी प्राप्त किया है। मैं भविष्य में सेना में सम्मिलित होने की लालसा रखता हूँ।

उदाहरण 3. एक सम्मेलन में देशभर के कलाकार इकट्ठे हुए हैं। सभी आपस में मिल रहे हैं। आप सफल नृत्यांगना हैं—भरतनाट्यम में खासी निपुण हैं तथा ऐसे सम्मेलन में आपने प्रथम बार भाग लिया है। आप मूलतः दिल्ली से हैं तथा दिल्ली विश्वविद्यालय से ही बी०एस०सी० (ऑनर्स) कर रही हैं। आपने भरतनाट्यम में ढेरों पुरस्कार जीते हैं। इस सम्मेलन में भी एक भरतनाट्यम का पुरस्कार पेश करने जा रही हैं। किसी अन्य राज्य से आई एक कलाकार आपसे आपका परिचय पूछ रही है। आप उत्साहपूर्वक अपना परिचय प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर—सबको मेरा शत्-शत् नमन। मेरा नाम हिमांशी है। मैं दिल्ली से हूँ तथा भरतनाट्यम में खासी प्रवीण भी हूँ। मैंने दिल्ली विश्वविद्यालय से बी०एस०सी० (ऑनर्स) की है तथा देश के विभिन्न मंचों पर भरतनाट्यम की प्रस्तुति की है जिसके लिए मुझे विभिन्न पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं। मैंने इस प्रकार के सम्मेलन में प्रथम बार भाग लिया है। मेरा इस मंच पर कार्यक्रम भी है जिसे आप अवश्य देखियेगा। धन्यवाद। आपसे मिलकर बहुत प्रसन्नता हुई।

उदाहरण 4. अग्रलिखित विवरण के आधार पर सभा में अपने स्थान पर खड़े होकर अपना परिचय दीजिए। कृपया पूरे वाक्यों का प्रयोग करें।

विवरण

नाम	:	गीता
पिता का नाम	:	जीवट नेगी
माता का नाम	:	वीना देवी
निवास स्थान	:	कमला नगर, दिल्ली
विद्यालय	:	दिल्ली पब्लिक स्कूल, दिल्ली।
कक्षा	:	11वीं
लक्ष्य	:	विमान परिचारिका।
उपलब्धि	:	संचार-सूचना में उत्कृष्ट उपलब्धियाँ

उत्तर—मेरा नाम गीता है। मेरे पिता का नाम जीवट नेगी तथा माता का नाम वीना देवी है। मैं दिल्ली के कमला नगर में रहती हूँ तथा यहीं दिल्ली पब्लिक स्कूल की ग्याहरवीं कक्षा की छात्रा हूँ। जीवन में मेरा लक्ष्य विमान परिचारिका बनने का है। मैंने संचार सूचना में उत्कृष्ट उपलब्धियाँ अर्जित की हैं।

(ढ) स्वागत करना

भारतीय संस्कृति में अतिथि को देवता का रूप माना जाता है। इसलिए अतिथि का स्वागत प्रेम, आदर और उत्साहपूर्वक करना चाहिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्वागत करते समय ध्यान रखने योग्य बातें—

1. जिसका स्वागत कर रहे हों, उसका पूरा नाम और परिचय आपको पता होना चाहिए।
2. स्वागत मुस्कराहट के साथ किया जाना चाहिए।
3. अवसर के अनुकूल विनम्रता और मिठास में कोई कमी नहीं रखनी चाहिए।
4. स्वागत के भाव शरीर से, मुखमुद्रा से और आपकी क्रियाओं से तो प्रकट होने ही चाहियें, शब्दों से भी प्रकट होने चाहियें। इसके लिए आपको कुछ सम्मानपूर्ण और कोमल शब्द याद रखने चाहियें।
5. स्वागत करते समय अपनी और अतिथि की अवस्था, उम्र और संबंध का ध्यान करते हुए उससे मिलना चाहिए। अगर बराबरी की उम्र और रिश्ता हो तो हाथ मिलाना या गले मिलना ठीक रहता है। यदि अतिथि की आयु बड़ी हो तो नमस्कार, चरण-स्पर्श, घुटने छूना, झुककर नमस्ते करना आदि होना चाहिए। यदि अतिथि उम्र में छोटा हो तो उसे आशीर्वाद देना, उसके कंधे थपथपाना या गले मिलना चाहिए। महिला अतिथि होने पर मुस्कुराहट और शालीनता का लेप ही गरिमापूर्ण लगता है।
6. स्वागत में, 'आइए', 'बड़ी खुशी हुई', 'मेरा सौभाग्य', 'बहुत-बहुत स्वागत', 'मैं धन्य हो गया', 'आपसे मिलकर अति प्रसन्नता हुई' आदि सम्मानपूर्ण शब्दों का एकाधिक बार प्रयोग होना चाहिए।
7. 'लीजिए' या 'आइए' जैसे विनम्रता भरे शब्दों का व्यवहार होना चाहिए। साथ में जी, साहब, कृपया जैसे सम्मानबोधक शब्दों का प्रयोग भी हो तो अच्छा है।
8. स्वागत में मुख्य अतिथि के साथ आने वालों को भी आदर और प्रेम मिलना चाहिए। अतिथि की पत्नी को विशेष सम्मान मिलना चाहिए। बच्चों को प्रेम से दुलारना चाहिए।
9. स्वागत के अवसर पर सुख देने वाले शब्द ही प्रयोग होने चाहियें।
10. स्वागत के समय अतिथि के संबंध में ही बात होनी चाहिए।

उदाहरण

प्रश्न—कोई अतिथि स्वागत संबंधी संवाद स्थापित कीजिए।

उत्तर—

आतिथेय	:	नमस्कार, आइए, आइए!
अतिथि	:	जी, ठीक हूँ। आप सुनाइए। आप कैसे हैं?
आतिथेय	:	आपकी कृपा है। आप सुनाइये, परिवार में सब कुशल मंगल तो है?
अतिथि	:	जी आप लोगों की कृपा व आशीर्वाद से सब ठीक-ठाक है।
आतिथेय	:	अच्छा! यह बताइए कि ठंडा लेंगे या गर्म?
अतिथि	:	जी, कुछ नहीं। औपचारिकता की आवश्यकता नहीं। एक गिलास ठंडा पानी पिला दीजिए।
आतिथेय	:	हाँ, हाँ वह तो आ ही रहा है, लेकिन औपचारिकता कैसी? अब इतने दिन बाद तो आपके दर्शन हुए हैं।

प्रश्न—विनीत का मित्र सतीश उसके निमंत्रण पर पहली बार घर आया है। उसका स्वागत 30-40 शब्दों में कीजिए।

उत्तर—आओ मित्र, सतीश! मैं तुम्हारी राह देख रहा था। मेरे घर में आपका बहुत-बहुत स्वागत है। तुम्हारे आने से मेरा हृदय फूला नहीं समा रहा है।

प्रश्न—आप राजकीय उच्च विद्यालय के प्राचार्य हैं। आपके विद्यालय में कविवर हरिओम जी आये हैं। आप विद्यार्थियों के समक्ष उनका स्वागत करें।

उत्तर—प्रिय विद्यार्थियों! आज हमारा सौभाग्य है कि हिंदी के प्रसिद्ध कवि कविवर हरिओम जी विद्यालय में पधारे हैं। मैं उनका हार्दिक स्वागत करता हूँ तथा अभिनंदन करता हूँ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ण) कहानी कहना

कहानी एक पारंपरिक लोकप्रिय साहित्यिक विधा है। इसमें प्राय: सभी अवस्था के लोगों की रुचि रहती है। मौखिक रूप से कहानी कहने की पद्धति सभी समाजों में मिलती है। हमारे लोक साहित्य में विभिन्न अवसरों पर सुनाने योग्य विभिन्न कहानियाँ प्रचलित हैं, जिन्हें सभी तीज-त्योहारों के अवसर पर सुना-सुनाया जाता है। मौखिक अभिव्यक्ति की कुशलता को विकसित करने के लिए कहानी विधा का प्रयोग किया जा सकता है। इसके लिए छात्रों की अवस्था व रुचि को संज्ञान में रखना चाहिए। कहानी सरल, संक्षिप्त और मनोरंजक होनी चाहिए। इसे सुनाने की शैली नाटकीय होनी चाहिए। कहानी सुनाते समय निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखना चाहिए—

1. कहानी ठीक प्रकार याद होनी चाहिए। बीच-बीच में कहानी भूल जाना गलत प्रभाव बनाता है।
2. कहानी में स्पष्टता होनी चाहिए।
3. कहानी कहने में वर्णन एवं संवाद दोनों शैलियों का समन्वय करना चाहिए।
4. कहानी कहते समय स्वर के उतार-चढ़ाव, स्वराघात, बलाघात का ध्यान रखना चाहिए।
5. कहानी उद्‌देश्यपूर्ण होनी चाहिए और किसी निष्कर्ष पर अवश्य पहुँचनी चाहिए।

उदाहरण

1. कहानी : बुद्धिमान चोर और चोर राजा

एक बार चार चोर चोरी करते रंगे हाथ पकड़े गए। चारों को राजा के समक्ष पेश किया गया। राजा ने चारो चोरों को मौत की सजा सुना दी। अगले दिन एक-एक कर चोरों को फाँसी पर लटकाया जाने लगा। जब तीन को फाँसी लग गई तो चौथे चोर को अपने बचने की उम्मीद न रही। वह पहली बार में ही चोरी करते पकड़ा गया था। वह कल से ही जान बचाने का उपाय सोच रहा था।

अंतिम समय में उसे एक युक्ति सूझ गई। जब जल्लाद उसे लेने आए तो उसने कहा, ''रुको, जरा मेरा एक काम कर दो। राजा को जाकर बताओ कि मैं एक ऐसा हुनर जानता हूँ जिससे सोने की खेती की जाती है। यदि मैं मर गया तो यह हुनर मेरे साथ ही समाप्त हो जायेगा। राजा से कहो कि खेती का हुनर सीखना हो तो मुझे फाँसी देने से पूर्व सीख लें।''

जल्लादों ने यह खबर राजा को दी। राजा ने चोर को अपने पास बुला लिया। चोर के आने पर राजा ने पूछा, ''तुम सोने की खेती का हुनर जानते हो?''

चोर बोला, ''जी हुजूर, वह हुनर केवल मैं ही जानता हूँ।'' राजा बोला, ''तो बताओ, कैसे की जाती है सोने की खेती?'' चोर ने उत्तर दिया, ''हुजूर, सबके सामने बता दूँ? इस तरह तो सब जान जायेंगे और खेती कर धनवान बन जायेंगे। फिर आपका हुक्म कौन मानेगा?''

राजा को झटका लगा। बात तो सही है। चोर अक्लमंद है। वह उसे निजी कक्ष में ले गया। चोर ने बताया, ''हुजूर, एक किलो सोने के सरसों जैसे दाने सुनार से बनवाकर मंगवा दीजिए। और अपने ही राजमहल के प्रांगण में क्यारी बनाने की जगह मुझे बता दीजिए। जब तक सोने के दाने आयेंगे तब तक मैं क्यारियाँ तैयार कर लूँगा।''

राजा ने एक बड़े सुनार को सोने के दाने बनाकर भेजने का आदेश भिजवा दिया और चोर को क्यारी के लिए जगह बता दी। चोर बोला, ''अब, आप मुझे देखते रहिए, कैसे क्यारी बनती है?'' चोर ने फावड़े से मिट्‌टी खोदी। फिर खुरपा और हाथों की सहायता से मिट्‌टी भुरभुरी की। उसने खेत में गोबर की खाद, आटा इत्यादि कई चीजें मिलाईं।

जब सोने के दाने आ गए तो चोर ने बताया, ''हुजूर, आप अपने हाथों से इन क्यारियों में सोने का यह बीज बो दें। मैं अपने हाथों से इन्हें नहीं बो सकता क्योंकि मैंने चोरी की है। सोने की खेती केवल वही कर सकता है जिसने कभी चोरी न की हो।''

राजा शर्मिंदा होकर बोला, ''यार, मैंने तो एक षड्‌यंत्र पहले राजा को मरवाकर राजशाही हथियाई थी, इसलिए मैं भी चोर हुआ।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चोर बोला, ''किसी मंत्री को बुला लीजिए।'' राजा ने एक-एक मंत्री को सोने की खेती की शर्त बताकर पूछताछ की तो पता चला कि वेतन कम और खर्चे अधिक होने के कारण राज-काज के खर्चों में कभी-कभी हेराफेरी करनी पड़ती है। फिर अफसरों से संपर्क किया गया। वे भी हेरा-फेरी करने वाले निकले। नगर के व्यापारियों में से कोई ईमानदार ढूँढने की कोशिशों के दौरान पता चला कि वे टैक्स की चोरी, घटतौली और मिलावट करते हैं।

राजा इससे चकरा गया। बोला, ''चोर भाई, यहाँ तो सभी चोर हैं।'' चोर हाथ जोड़कर बोला, ''हुजूर, मेरी फाँसी तो है तय, एक बात जाते-जाते कहना चाहूँगा, जिस राज्य का राजा चोर हो, वहाँ जनता से ईमानदारी की अपेक्षा करना न्यायपूर्ण नहीं है। राजा को यदि जनता की दुख-तकलीफों से कोई मतलब नहीं है, सिर्फ अपने ऐशोआराम से मतलब है तो वहाँ अपराध होंगे ही।''

थोड़ा रुककर चोर ने आगे कहा, ''यहाँ आपके कृपापात्र जमींदार किसानों को लूटते हैं, व्यापारी उत्पादकों और ग्राहकों को, अफसर जनता को लूटते हैं। आप या आपके परिवार के लोग कोई काम धंधा न कर मुफ्त की आमदनी, मतलब जनता की मेहनत की कमाई में से जबरदस्ती लिए जाने वाले टैक्स पर ऐश करते हैं। मैं भी जब बेरोजगारी और परिवार की भुखमरी से तंग हो गया तब चोरों के गिरोह में शामिल हुआ। यदि सभी को रोजगार, ईमानदार शासन-प्रशासन मिले तो कोई बेईमान, अपराधी न बने।''

राजा बड़ा लज्जित हुआ। उसने चोरी की सजा माफ कर उसे सोने सहित जाने दिया और अपना सलाहकार नियुक्त कर लिया।

2. कहानी : एकता

किसी गाँव में एक गरीब किसान रहता था। उसके चार बच्चे और पत्नी बहुत ही स्नेह से अपना समय बिताते थे। वे सभी कृषि से ही अपना पेट पालते थे। एक बार वहाँ वर्षा नहीं हुई और अकाल पड़ गया। अब उनका वहाँ रहना मुश्किल हो गया। उन्होंने सोचा कि अब किसी दूसरे गाँव में चला जाए। एक दिन उन्होंने अपना सारा सामान ऊँट गाड़ी पर डाला और शाम के समय वहाँ से रवाना हो गए।

मार्ग में रात होने जाने से वहाँ पर रुक गए। उनके पास थोड़ा-बहुत खाने के लिए जो कुछ था वह खा लिया। किसान ने अपने बेटों से कहा कि तुम 'सींणियें' उखाड़कर लाओ और मैं उनसे 'डोरिये' बनाऊँगा। देहाती लोगों का ऐसा ही स्वभाव होता है कि वे समय को व्यर्थ नहीं गँवाते। उनका कहना है कि खाली बैठे रहने से बेगार ही भली। कुछ देर बाद उसके बेटे 'सींणियें' ले आए और उसने 'डोरिये' बनाना आरंभ कर दिया। तभी वहाँ एक विशाल दैत्य उपस्थित हुआ जो पास वाले तालाब में छिपा हुआ था। उसने किसान से पूछा कि तुम इन 'डोरियों' से क्या करोगे? किसान की दृष्टि यह सुनते ही उस पर गई और एक बार तो वह डर गया लेकिन उसने बुद्धि से काम लिया।

उसने जवाब दिया कि हम 'डोरियों' से तुझे बाँधेंगे। अब वह दैत्य भयभीत हो गया। यदि आप मुझे बाँधेंगे नहीं तो मैं आपको बहुत सारा धन और स्वर्णाभूषण दे दूँगा।

तब किसान ने कहा कि ठीक है। हम आपको बाँधेंगे नहीं। आप धन दौलत लाकर हमारी गाड़ी में रख दो। बाद में वे सो गए।

सुबह जल्दी उठकर किसान ने देखा कि गाड़ी में रुपये व आभूषण भरे पड़े थे। इसलिए वे उसी समय सभी अपने गाँव की ओर रवाना हो गए व सूर्योदय से पूर्व गाँव पहुँच गए।

एक दिन पड़ौसी की पत्नी उस किसान की पत्नी के पास आई तो उसने वहाँ पर बहुत सारा धन देखा तो उसने उससे धन के विषय में पूछा। किसान की भोली-भाली पत्नी ने उसे वह पूरी बात बता दी जो उनके साथ घटित हुई थी।

अब पड़ोसी की पत्नी जल्दी से अपने घर गई और पूरी बात अपने पति को बताई। उन्होंने भी वैसा ही करना चाहा। उसने अपनी पत्नी से खाना बनवाया और अपनी पत्नी व बेटों के साथ शाम को ऊँट गाड़ी पर रवाना हो गया। वह उस तालाब के पास पहुँचा और वहाँ पर खाना खाया। खाना खाने के पश्चात् उसने अपने बेटों से कहा कि जाओ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'सीणिये' लाओ। उसके बेटों ने पूछा, ''क्या करोगे''। तब उसने कहा कि वह सीणियों से 'डोरिये' बनायेगा। किसान ने बताया कि वह डोरियों से दैत्य को बाँधेगा। तब उसके बेटों ने कहा कि हम तो नहीं लायेंगे। उन बच्चों में तू-तू-मैं-मैं आरंभ हो गई। इतने में वहीं पर पास में छिपा हुआ दैत्य प्रकट होकर बोला कि मुझे पता चल गया कि आपको धन की चाह है। आपके बेटों में एकता नहीं है। यह तुम्हारे वश में नहीं हैं। मैंने उस किसान ने डरकर नहीं बल्कि उसके बेटों की एकता से प्रसन्न होकर धन दिया था।

3. कहानी : जो होता है अच्छे के लिए होता है।

यहूदी पुजारी (रब्बी) अकीबा बहुत दूर, रेगिस्तान के पार की यात्रा पर थे। एक शाम वे छोटे से गाँव में पहुँचे और वहीं रात गुजारने का फैसला किया। लेकिन वह आश्चर्यचकित और निराश हुए इस बात को जानकर कि गाँव के लोग अजनबी यात्रियों को बेहद शक की निगाहों से देखते हैं। वे समझ गए कि उन्हें कोई भी पनाह नहीं देगा।

इस बात पर यकीन करना मुश्किल था कि कोई व्यक्ति इतना आतिथ्य सत्कार विहीन भी हो सकता है। अकीबा ने सोचा, ''लेकिन ईश्वर न्यायप्रिय है और जो भी होता है, अच्छा ही होता है।''

कपड़ों के अलावा उनके पास मात्र चार वस्तुएँ थीं। एक पुस्तक, एक बत्ती, अल-सुबह बाँग देकर उन्हें जगाने वाला एक मुर्गा और एक गधा, जिसपर वह सवारी किया करते थे।

गाँव वालों द्वारा पनाह देने से इंकार करने पर वह थोड़ी दूर आगे बढ़े और एक पेड़ के नीचे अपनी व्यवस्था कर ली। उन्होंने बत्ती जलाई और किताब खोली ताकि सोने से पूर्व कुछ पढ़ लें। उन्होंने अभी केवल एक ही पृष्ठ पढ़ा था कि हवा का तेज झोंका आया और बत्ती बुझ गई।

''क्या!'' रब्बी ने आश्चर्य से कहा, ''मुझे पढ़ने की इजाजत नहीं है? लेकिन ईश्वर न्यायप्रिय है और जो भी होता है अच्छे के लिए ही होता है।''

वह अपने आप को ठंडी-नंगी जमीन पर पसारकर कुछ घंटों के लिए सोने का प्रयास करने लगे। जैसे ही वे आधी नींद में पहुँचे, उन्हें मुर्गे की तेज चीख सुनाई पड़ी और साथ पंखों की जोरदार फड़फड़ाहट भी सुनाई दी। एक भेड़िये ने मुर्गे को पकड़ लिया था।

''मेरा विश्वासपात्र साथी चला गया'' रब्बी ने सोचा, ''और वह भी इतनी दारुण स्थिति में''। ''परंतु ईश्वर न्यायप्रिय है और जो भी होता है, अच्छा ही होता है।''

आगे चलकर रात में एक शेर ने झपट्टा मारा और गधे को उठा ले गया। इस बार रब्बी ने स्वयं से कहा कि जो भी हुआ है, अच्छे के लिए ही हुआ है। निद्रा विहीन रात्रि के पश्चात् वह फिर से गाँव में गए यह सोचकर कि शायद आगे की यात्रा के लिए कोई सवारी या घोड़ा उन्हें मिल जाये। लेकिन वे दहल उठे। उन्होंने देखा कि गाँव के सारे घर रात में लुटेरों द्वारा लूट लिए गए थे और उसमें रहने वालों को मार डाला था।

''यदि इन लोगों ने मुझे दूर नहीं कर दिया होता तो मैं भी इनके साथ मारा गया होता'' रब्बी ने सोचा, ''और यदि हवा के झोंके से मेरी बत्ती बुझी न होती तो लुटेरों को मेरा भी पता लग गया होता और जंगली जानवर मेरे पशुओं को उठा नहीं ले गए होते तो उनकी आवाज से हत्यारों को मेरी उपस्थिति का ऐहसास हो जाता और मेरी भी जान चली जाती। ईश्वर न्यायप्रिय है और जो भी होता है अच्छा ही होता है।''

4. कहानी : आशीर्वाद

लाजवंती के यहाँ कई पुत्र उत्पन्न हुए, पर सभी बचपन में ही मर गए। वह अपने अंतिम पुत्र हेमराज को बहुत प्यार करती थी। वह उसके जीवन का सहारा था। इसलिए वह उसे सदा छाती से लगाए रहती थी। वह हेमराज का बहुत ध्यान रखती थी, फिर भी वह एक दिन बीमार पड़ गया। उसने सिर में दर्द होने की शिकायत की। लाजवंती अपने पुत्र को बीमार देख बहुत घबरा गई क्योंकि पहले भी इसी ऋतु में उसका पहला पुत्र उससे छिन गया था। हेमराज के सिरदर्द से लाजवंती व्याकुल हो गई। वह उड़ती हुई गाँव के वैद्य दुर्गादास के पास गई। लाजवंती के कहने पर वैद्य दुर्गादास लाजवंती के साथ हो लिए। हेमराज बेसुध पड़ा था। वैद्य जी ने नाड़ी देखी, माथे पर हाथ रखा और कहा कि चिंता की कोई बात नहीं है। उन्होंने दवा दे दी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कई दिन बीत जाने पर भी हेमराज का बुखार नहीं उतरा। कई दवाईयाँ बदलने पर भी दवा का असर नहीं हुआ। लाजवंती दिन-रात अपने बेटे की सेवा में लगी रहती थी। वैद्य जी ने बताया कि, ''यह मियादी बुखार है। अपनी मियाद पूरी करके उतरेगा।'' वैद्यजी के कहने पर लाजवंती ने अपने पति रामलाल सुखदेव को तार भेजकर बुला लिया। हेम की दशा देखकर लाजवंती और रामलाल बहुत परेशान थे। रामलाल दवाएँ लेकर बेटे के सिरहाने बैठ गए। लाजवंती भी व्याकुल थी। वह संध्या समय देवी के मंदिर पहुँची और देवी के समक्ष गिरकर देर तक रोती रही। थोड़ी देर बाद उसे लगा कि देवी ने उसकी पुकार सुन ली है। उसने मान्यता माँगी, ''देवी माता! मेरा हेम बच जाए, तो मैं तीर्थ यात्रा करूँगी।'' लाजवंती को विश्वास हो गया कि हेम को अब कोई भय नहीं है। जब वह घर लौटी तो उसने अपने पति को बताया, ''मैं तीर्थ यात्रा की मान्यता माँग आई हूँ।''

तीर्थ यात्रा के खर्च का अनुमान कर रामलाल का हृदय बैठ गया, पर पुत्र स्नेह के कारणवश उसकी यह चिंता भी बहुत समय तक न रह सकी। वह मुस्कराकर बोला, ''अच्छा किया। रुपये का क्या है, हाथ का मैल है, आता है तथा चला जाता है। परमेश्वर ने एक लाल दिया है, वह जीता रहे। यही हमारी दौलत है।''

वैद्यजी ने हेम को देख प्रसन्नता प्रकट की और बोले, ''यह सब लाजवंती के परिश्रम का फल है। यह तो दूसरी सावित्री है। उसने मरे हुए पति को जिलाया था, और लाजवंती ने अपने पुत्र को मृत्यु के मुख से निकाला है।''

तीन मास बीत गए। तीर्थ यात्रा के लिए लाजवंती तैयारी करने लगी। उसके आँगन में सारा गाँव इकट्ठा हो रहा था। खुशी का वातावरण था। सारा गाँव प्रसन्न था, पर लाजवंती की पड़ोसन हरो बहुत दुखी थी। लाजवंती तीर्थ यात्रा पर जाने के लिए तैयार थी, सहसा उसे किसी की सिसकी भरने की आवाज सुनाई दी। उसने पड़ोसिन के आँगन में झुककर आवाज लगाई, ''माँ हरो''

लाजवंती ने अपने पड़ोसिन ''हरो'' से उसके रोने का कारण पूछा। हरो के रुके हुए आँसुओं का बाँध टूट गया। वह सिसकियाँ भर-भर कर रोने लगी। हरो ने लाजवंती से कहा, ''कुँवारी बेटी का दुःख खा रहा है। रात-रात भर रोती रहती हूँ। जाने, यह नैया कैसे पार लगेगी?''

हरो के जेठ ने बेटी के विवाह के लिए दो सौ रुपये के गहने व कपड़े बनवा दिए थे परंतु मिठाई आदि का प्रबंध नहीं किया। उसके पास बारातियों को खिलाने के लिए सत्तू भी नहीं था।

लाजवंती ने कुछ सोचकर कहा, ''क्या गाँव के लोग एक गरीब ब्राह्मणी की कन्या का ब्याह नहीं कर सकते? और यह उनकी दया न होगी, उनका धर्म होगा।''

हरो अपनी बेटी के विवाह के लिए किसी से कुछ माँगना नहीं चाहती थी। वह सोचती थी कि किसी के सामने हाथ फैलाना मरने से भी बुरा है।

लाजवंती ब्राह्मणी की अवस्था देखकर काँप गई। उसका हृदय दुख से पानी पानी हो गया। उसने जोश से कहा, ''चिंता न करो, तुम्हारा संकट मैं दूर करूँगी। तुम्हारी बेटी का ब्याह होगा और बारात के लोगों को भोजन मिलेगा। तेरी बेटी तेरी ही बेटी नहीं मेरी भी है।''

लाजवंती ने तीर्थ यात्रा का विचार छोड़ दिया और हरो की बेटी के विवाह के लिए दो सौ रुपये संदूक से निकालकर उसे दे दिए। गाँव के सब लोग लाजवंती से नाराज हो गए, पर लाजवंती प्रसन्न थी। लाजवंती ने सहसा सुना, कोई प्रार्थना कर रहा था, ''देवी माता! उसे सदा सुहागिन रखो। यह एक बूढ़ी ब्राह्मणी की प्रार्थना है। इसे सुनो और स्वीकार करो।'' यह ब्राह्मणी हरो थी। लाजवंती का रोम-रोम खिल उठा। रात को उसने स्वप्न में देखा देवी की मूर्ति ने उसे गले लगा लिया है और कहा, ''तूने एक गरीब की सेवा की है, मानो मेरी सेवा की है। लोग तीर्थ यात्रा करते हैं। तूने महातीर्थ यात्रा की है। सेवा तीर्थ यात्रा से बढ़कर है। तुझे आशीर्वाद देती हूँ।''

उदाहरण 5. निम्न कहानी को रोचक ढंग से सुनाइए—

पुराना संदूक

एक समय की बात है। एक गाँव में सोहन नाम का एक व्यक्ति रहता था। वह बहुत गरीब था। वह दूसरों के खेतों में बीज बोने व बोझा ढोने का काम करता था। इसके बदले में उसे जो कुछ मिलता उसी से वह अपना जीवन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निर्वाह करता था। धीरे-धीरे गाँव के लोगों ने ट्रैक्टरों से खेतों में काम करना आरंभ कर दिया जिसके कारण सोहन की रोजी-रोटी छिन गई। उसे अब चिंता सताने लगी कि वह अपना जीवन निर्वाह कैसे करेगा? अब गाँव में काम मिलना मुश्किल हो गया था। उसने सोचा, शायद शहर में उसे कोई काम मिल जाए। यह सोचकर वह शहर आ गया। शहर में कई दिनों तक काम की तलाश में इधर-उधर भटकता रहा। लेकिन कोई काम नहीं मिला।

एक दिन वह नदी के किनारे बैठकर अपनी दुर्दशा पर आँसू बहा रहा था। एक सहृदय लालाजी वहाँ से गुजरे। उसे दुःखी अवस्था में देखकर बोले, ''क्यों भाई! क्या बात है?''

वह बोला, ''मैं शहर में काम की तलाश में आया था। परंतु यहाँ कोई काम नहीं मिला। इसलिए मेरा गुजारा बड़ी मुश्किल से चल रहा है। आप मुझे कोई काम दिला दीजिए।'' यह सुनकर लालाजी को उस पर दया आ गई। वे बोले, ''क्या तुम मेरी में साफ-सफाई का काम करोगे?'' सोहन इस काम के लिए तुरंत सहमत हो गया। लाला जी ने उसे अपने साथ हवेली ले लिया और हवेली की ओर चल पड़े।

लालाजी ने उसे हवेली में रहने के लिए जगह दे दी। वह बड़ी लगन व मेहनत से हवेली में काम करने लगा। लालाजी उसके काम से बहुत प्रसन्न थे। काम करने के पश्चात् जो थोड़ा समय मिलता वह उसे पढ़ने-लिखने में लगा देता था। एक दिन लालाजी ने उसे कुछ लिखते हुए देखा। वे उसकी सुंदर लिखावट देखकर बहुत प्रसन्न हुए। अब लालाजी ने उसे पत्र लिखने का कार्य सौंप दिया। वह उस कार्य को भी बड़ी मेहनत व लगन से करने लगा। पत्र में जहाँ कहीं भी हिसाब-किताब की बात आती वह उसे पूरी तरह समझा कर लिखता। लालाजी ने जब उसके पत्र देखे तो उसे दुकान का मुनीम बना दिया।

अब सोहन के मुनीम बन जाने से अन्य मुनीम उससे ईर्ष्या करने लगे। वे उसे नीचा दिखाने के लिए लालाजी के सम्मुख उसकी बुराई करते। परंतु लालाजी को कभी उनकी बात पर विश्वास नहीं हुआ। सोहन लालाजी की हवेली में रहता था। उन्होंने उसे रहने के लिए दो कमरे दे रखे थे। वह अपने एक कमरे में सदैव ताला लगाकर रखता था और एक कमरे में स्वयं रहता था। प्रतिदिन वह सुबह उस बंद कमरे को खोलता, कुछ देर अंदर रहने के बाद बाहर आकर फिर ताला लगाकर चला जाता। यह उसकी दिनचर्या का हिस्सा था।

एक दिन एक मुनीम ने जब उसे ऐसा करते हुए देखा तो उसकी कुटिल बुद्धि में एक विचार आया। अगली सुबह जैसे ही सोहन ने ताला खोला, वह अंदर जाकर लालाजी को बुला लाया। उसने कहा कि सोहन एक कमरे में अपनी बेईमानी की कमाई रखता है। वह प्रतिदिन इस कमाई को गिनकर फिर इस कमरे में ताला लगा देता है। उस कमरे को बंद देखकर लालाजी को कुछ शक हुआ। उन्होंने पूछा, ''अंदर कौन है?'' कोई उत्तर न मिलने पर लालाजी ने ज़ोर से चिल्लाते हुए पूछा, ''सोहन, तुम अंदर क्या कर रहे हो?'' कुछ देर बाद सोहन ने दरवाज़ा खोला।

लालाजी ने पूछा, ''तुमने कमरे में क्या छुपा रखा है?'' सोहन के कोई उत्तर न देने पर उनका शक और बढ़ गया। उनका शोर सुनकर हवेली के अन्य लोग भी वहाँ आ गए।

लाला जी उसे हटाते हुए कमरे में ले गए। वहाँ कमरे में एक पुराना संदूक रखा हुआ था। लालाजी ने सोहन को संदूक खोलने के लिए कहा। सोहन ने संदूक खोल दिया। परंतु उसकी आँखों में आँसू टपक रहे थे। संदूक खुलते ही सभी हैरानी से सोहन की ओर देखने लगे। लालाजी ने पूछा, ''यह सब क्या है?'' सोहन बोला, ''अन्नदाता! ये वही वस्त्र हैं जिन्हें मैं गाँव से पहनकर आया था। यह मेरा अतीत है। मैंने इन्हें संभालकर रखा हुआ है। मैं इन्हें खोलकर रोजाना इसलिए देखता हूँ ताकि मेरे मन में अहंकार न आने पाये। मैं अपना कार्य उतनी ही मेहनत व ईमानदारी से करता रहूँ जितना पहले से करता आया हूँ।'' लालाजी ने अपनी भूल के लिए सोहन से माफी माँगी और उसे गले से लगा लिया।

(त) चित्र देखकर कहानी सुनाना

किसी प्रसिद्ध घटना या कहानी से संबंधित चित्र देखकर उसे सुनाना भी अपने आप में एक कला है। इसमें स्मरण शक्ति, कल्पनाशीलता, वक्तृता तथा संवाद-कथन की आवश्यकता होती है। उदाहरण के रूप में कुछ चित्र आगे प्रस्तुत हैं। इन्हें देखकर संबंधित कहानी लिखिए—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चित्रावली-1

कहानी—दोपहर के समय पाठशाला से लौटते हुए सभी बच्चे दानव के बगीचे में खेलने जाते थे। दानव का बगीचा बहुत ही बड़ा और सुंदर था। उसमें नरम-नरम घास का गलीचा बिछा हुआ था। जहाँ-तहाँ क्यारियों में रंग-बिरंगे फूल खिले थे। बगीचे में आडू के कई पेड़ थे जिनमें गर्मियों में गुलाबी और सफेद फूल खिलते थे। कुछ ही दिनों में आडू के वे पेड़ फलों से लद गए। इन पेड़ों पर बैठ कर पक्षी मधुर संगीत गाते और कई बार बच्चे अपना खेल भूलकर उनके संगीत में खो जाते।

दानव अपने मित्र के यहाँ गया हुआ था। वहाँ कुछ समय बिताने के बाद वह घर लौटा। जैसे ही अपने बगीचे में घुसा, उसे बच्चे खेलते हुए दिखाई दिए। वह ऊँची आवाज़ में चिल्लाया, ''तुम यहाँ कर रहे हो?''

बच्चों ने उनकी भयानक आवाज़ सुनी तो भाग खड़े हुए।

''यह बगीचा मेरा है और किसी को इसमें घुसने की आज्ञा नहीं है। मैं स्वयं इसमें रहूँगा और स्वयं ही इसके फल खाऊँगा।'' दानव ने चिल्लाकर कहा। उसने बगीचे के आसपास एक ऊँची चारदीवार बनवाई और बाहर एक तख्ती लटका दी। उस तख्ती पर लिखा था—अंदर आना मना है।

बेचारे बच्चों के खेलने का स्थान छिन गया। अब वे धूल भरी सड़क पर खेलते थे। कहाँ बगीचे का नरम-नरम घास का गलीचा और पेड़ों की ठंडी छाया और कहाँ धूलभरी गरम सड़क। वे सोचते थे कि बगीचे में खेलकर वे कितने प्रसन्न थे।

वसन्त ऋतु आई। पेड़ों में नई कोपलें निकलीं। पक्षी चहचहाने लगे। चारों ओर रंग-बिरंगे फूल खिल उठे। सुगंधित हवा बहने लगी। परंतु स्वार्थी दानव के बगीचे के पेड़ ठूँठ से खड़े रहे। न उनमें नई कोपलें निकलीं और न बगीचे में कोई फूल ही खिला। नरम-नरम घास भी सूखकर पीली पड़ गई। कोई पक्षी उस बगीचे में नहीं चहका। ठंडी और सूखी हवाएँ चलती रहीं और दानव मन-ही-मन सोचता रहा। कब यह सर्दी समाप्त होगी और वसंत आएगा। परंतु दानव के बगीचे में वसंत को न आना था, न आया।

एक दिन दानव अपने घर में लेटा हुआ था। अचानक उसे कहीं से मधुर संगीत सुनाई दिया। वह तुरंत उठ बैठा। एक चिड़िया उसकी खिड़की के बाहर चहचहा रही थी। दानव ने बहुत समय से किसी पक्षी की आवाज नहीं सुनी थी। इसलिए इस चिड़िया का चहचहाना उसे स्वर्गिक संगीत जैसा लगा। ओह! तो आ गया वसंत! वह अपने बिस्तर से कूदा और बाहर बगीचे में देखने लगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दानव ने अपने बगीचे में एक अनुपम दृश्य देखा। बगीचे की चारदीवारी में एक सूराख हो गया था। उसमें से बच्चे बगीचे में घुस आए थे। पेड़ों के आस-पास बच्चे प्रसन्नता से नाच रहे थे और पेड़ों की शाखाएँ झूम-झूम कर उनका स्वागत कर रही थीं। पेड़ों में नई कोंपले निकल आई थीं और कलियों से फूल झाँकने लगे थे। चारों ओर रंग-बिरंगे फूल अपना सिर उठाये मुस्करा रहे थे। बच्चों की खिलखिलाहट और पक्षियों के चहचहाने से बगीचे में एक नैसर्गिक दृश्य उपस्थित हो गया।

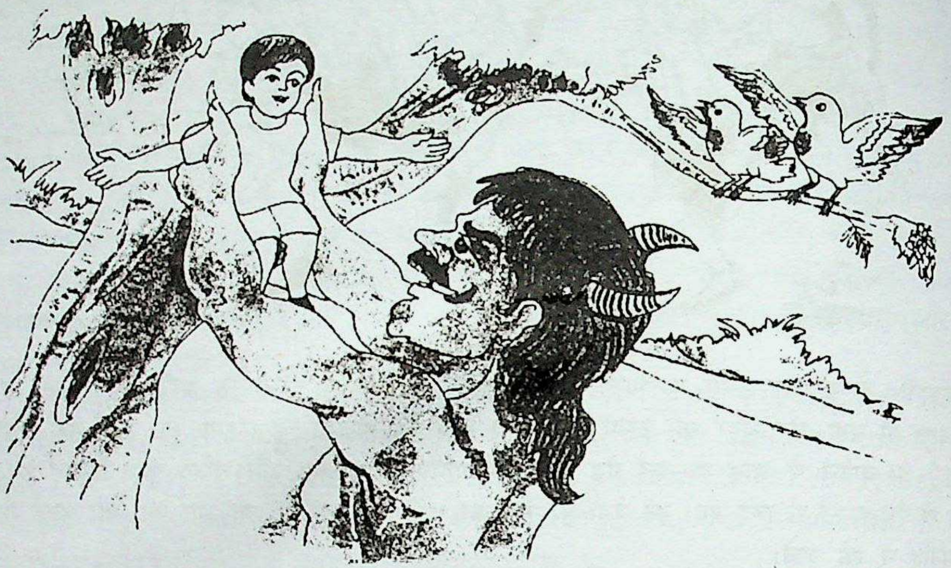

बगीचे का एक कोना अभी भी सूना था। वहाँ एक छोटा सा बच्चा खड़ा था। वह इतना छोटा था कि डालियों को छू भी नहीं सकता था। वह पेड़ के आस-पास चक्कर लगाता हुआ रो रहा था। पेड़ बार-बार अपनी टहनियों को झुकाता कि बालक उसे छू सके और उस पर भी बहार आ जाये। पर बालक के हाथ डालियों तक न पहुँच पाते।

दानव ने जैसे ही यह दृश्य देखा, उसका हृदय पिघल गया। उसने सोचा कि मैं कितना स्वार्थी हूँ। मैंने इन बच्चों को अपने बगीचे में घुसने से मना कर दिया था। इसलिए मेरे यहाँ वसंत नहीं आया। मैं यहाँ की दीवार तोड़ दूँगा और बच्चों को अपने बगीचे में खेलने दूँगा।

दानव धीरे से आया और पेड़ के नीचे रोते हुए उस बच्चे के पास पहुँचा। बगीचे में दानव को आते देख सभी बच्चे भाग खड़े हुए। छोटा बच्चा सहम गया। दानव ने उसे पुचकारकर गोद में उठा लिया, उसे प्यार किया और पेड़ की शाखाओं तक पहुँचा दिया। पेड़ की शाखाएँ प्रसन्नता से झूम उठीं और तुरंत उनमें कलियाँ चटकने लगीं। पक्षी उस पेड़ पर बैठकर गाने लगे। छोटे बच्चे ने अपनी बाँहें दानव के गले में डालीं और उससे लिपट गया मानो वह उसका धन्यवाद कर रहा हो।

बगीचे की टूटी दीवार से कुछ बच्चे झाँक रहे थे। उन्होंने जब दानव को बच्चे से प्यार करते देखा तो वे बगीचे के भीतर आ गए और उनके साथ मुस्कराता हुआ वसंत भी बगीचे में आ गया।

दानव ने कुदाल उठाई और चारदीवारी तोड़ने लगा। बच्चे उसके आस-पास कूदने लगे। दोपहर को वहाँ से गुजरते हुए लोगों ने देखा कि दानव के बगीचे में बच्चे खेल रहे हैं। बगीचा पूर्व के समान बहुत सुंदर हो गया है। सबसे आश्चर्यजनक बात उन्होंने यह देखी कि दानव स्वयं बच्चों के साथ खेल रहा है। बच्चों की हँसी और कहकहों से सारा बगीचा गूँज रहा है। उनमें सबसे ऊँची हँसी की आवाज़ दानव की थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चित्रावली-2

कहानी—प्राचीन काल की बात है। कश्मीर के दक्षिण में मद्र नाम का एक प्रदेश था। वहाँ अश्वपति नामक राजा राज्य करते थे। वे बड़े धर्मात्मा, दयालु तथा न्यायप्रिय थे। राजा की एक पुत्री थी। उसका नाम सावित्री था।

सावित्री बहुत ही सुंदर थी। उसके रूप और गुणों की प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैली हुई थी। राजा अश्वपति चाहते थे कि सावित्री को उसके रूप के अनुरूप ही वर मिले। पर यह नहीं हो सका। अंत में राजा ने पुत्री को स्वयं अपने लिए वर चुनने की स्वतंत्रता दे दी।

सावित्रि का रथ चला जा रहा था। एक रमणीक स्थान पर सावित्री ने रथ रुकवा लिया। वहाँ उसे एक युवक दिखाई दिया जिसके सिर पर जटा व शरीर पर वृक्ष की छाल थी। उसके मुख-मंडल पर अपूर्व तेज था। सावित्री ने मंत्री से कहा, ''आज यहीं विश्राम किया जाए।''

रथ रुकते देख युवक ने पूछा, ''आप कौन हैं और कहाँ से पधारे हैं?''

मंत्री ने युवक को उत्तर दिया, ''ये मद्र प्रदेश की राजकुमारी सावित्री हैं।'' युवक उनका परिचय पाकर उनसे अपने माता-पिता के पास चलने का आग्रह करने लगा। सावित्री और मंत्री तैयार हो गए।

मार्ग में युवक अपना परिचय देते हुए बोला, ''मेरा नाम सत्यवान है। किसी समय मेरे माता-पिता शल्य देश के राजा थे। अब वे नेत्रहीन हैं। इस समय यहाँ तपस्या कर रहे हैं। मैं इन्हीं की सेवा करता हूँ।'' सावित्री सत्यवान की ओर आकर्षित हुई। उपयुक्त समय पाकर मंत्री ने राजा को सावित्री के मन की बात बता दी। राजा बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने तुरंत सावित्री को विवाह की आज्ञा दे दी।

उसी समय वीणा बजाते हुए नारद मुनि वहाँ आ पहुँचे। जब नारदजी को ज्ञात हुआ कि सावित्री ने सत्यवान को अपना वर चुना है तो वे बोले, ''यह क्या किया आपने? सत्यवान तो केवल एक वर्ष और जीवित रहेगा।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सावित्री के माता-पिता यह सुनकर बहुत दुखी हुए। उन्होंने पुत्री को समझाने का बहुत प्रयास किया। किंतु वह न मानी। वह अपनी हठ पर अड़ी रही और बोली, ''आप लोगों से जो शिक्षा मुझे मिली है, मैं उसी का पालन कर रही हूँ। मैंने अपना वर चुन लिया है। अब मैं अपने आदर्शों से नहीं गिर सकती।''

पुत्री की हठ देखकर माता-पिता ने सावित्री का विवाह सत्यवान से कर दिया। सावित्री बहुत प्रसन्न थी। उसे मनचाहा वर मिल गया था। वह सत्यवान के साथ आश्रम में रहने लगी। उसने अपने राजसी वस्त्र और आभूषण त्याग दिए। वह साधारण वस्त्र पहनती थी तथा सास-ससुर की सेवा में लगी रहती थी। वह प्रत्येक दिन संध्या के समय पति की दीर्घायु के लिए भगवान से प्रार्थना करती थी।

एक दिन सत्यवान लकड़ी काटने जंगल में गया तो थोड़ी देर में उसे चक्कर आने लगा। पेड़ से उतरकर वह जमीन पर लेट गया। सावित्री ने झट से उसका सिर अपनी गोद में रख लिया। तभी यमदूत सत्यवान के प्राण लेने वहां आ पहुँचे।

सावित्री ने साहस करके पूछा, ''आप कौन हैं?''

यमदूत ने उत्तर दिया, ''मैं यमराज हूँ। तुम्हारे पति के प्राण लेने आया हूँ। उसका जीवनकाल पूरा हो चुका है।''

सत्यवान के प्राण लेकर यमराज जाने लगा। सावित्री यमराज के पीछे-पीछे चलने लगी।

यमराज ने कहा, ''तुम व्यर्थ ही मेरा पीछा कर रही हो। ईश्वर निर्णय अटल है। सत्यवान के जीवन का अंत हो चुका है। हाँ, मैं तुम्हारी पति-भक्ति देखकर प्रसन्न हूँ। तुम सत्यवान के प्राण छोड़कर कोई और वरदान चाहो तो माँग सकती हो।''

सावित्री ने कहा, ''भगवान! मुझे वरदान दीजिए कि मेरे सास-ससुर की आँखें पुनः ठीक हो जायें और वे फिर से देख सकें।''

यमराज ने कहा, ''जाओ, ऐसा ही होगा।'' यह कहकर वे चल पड़े। सावित्री ने फिर भी यमराज के पीछे-पीछे चलती रही। यमराज ने बहुत समझाया और कहा, ''अच्छा एक वरदान और माँग लो।''

सावित्री ने कहा, ''मेरे सास-ससुर का खोया राज्य उन्हें वापस मिल जाए।''

यमराज ने कहा, ''जाओ, तुम्हारी यह इच्छा भी पूर्ण होगी।'' यह कहकर यमराज फिर जाने लगे। सावित्री ने फिर भी उनका पीछा नहीं छोड़ा।

यमराज ने सावित्री को बहुत समझाया कि अब वह वापस लौट जाए पर सावित्री नहीं मानी।

यमराज बोले, ''अच्छा तुम एक अंतिम वर और माँग सकती हो। बोलो तुम्हें क्या चाहिए?''

सावित्री बोली, ''महाराज! मुझे यह वर दीजिए कि मैं पुत्रवती हो जाऊँ।''

यमराज ने कहा, ''अच्छा, ऐसा ही होगा।'' यह कहकर यमराज चलने लगे। सावित्री फिर पीछे-पीछे जाने लगी।

यमराज ने पूछा, ''अब तो तुम्हारे तीनों वरदान पूरे हो गए हैं। अब क्यों मेरे पीछे आ रही हो?''

सावित्री बोली, ''भगवान! आपने मुझे पुत्रवती होने का वरदान दिया है और मेरे पति के प्राण अपने साथ लिए जा रहे हैं। आपका यह वरदान बिना पति के कैसे पूर्ण होगा?''

यमराज सावित्री की बुद्धिमानी भाँप गए। वे बोले, ''सावित्री तुम धन्य हो। मैं तुम्हारी पति-भक्ति देखकर अत्यंत प्रसन्न हूँ। लो, मैं तुम्हारे पति सत्यवान के प्राण लौटाता हूँ।''

सावित्री ने देखा सत्यवान के मृत शरीर में प्राण वापस आ रहे हैं। वह थोड़ी देर में जीवित हो उठा।

इस प्रकार अपनी तप और भक्ति से सावित्री ने अपने मृत पति को फिर से जीवित कर लिया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चित्रावली-3

कहानी—प्रातः का समय था। शिवाजी का डेरा रायगढ़ में था और माता जीजाबाई प्रतापगढ़ में थी। माता हाथी-दाँत के कंघे से बाल सँवार रही थीं कि खिड़की में से पहाड़ की चोटी जैसा चमकता हुआ सिंहगढ़ मस्तक दिखाई दिया। जीजाबाई के दिल में एक बरछी-सी चुभ गई। सिंहगढ़ मुगलों के हाथ में। क्या एक क्षत्राणी को सह्य हो सकता था। माता ने उसी वक्त एक दूत रायगढ़ रवाना किया। रायगढ़ पहुँचकर दूत ने शिवाजी को संदेश दिया कि माता ने आज्ञा दी है कि इसी समय चले आओ।

आज्ञापालक पुत्र उस समय भोजन कर रहा था। माता की आज्ञा सुनकर उसने मस्तक झुकाया। भोजन बीच में छोड़कर हाथ धोए और शस्त्रों से सजकर वह घोड़े पर सवार हो गया। वायुवेग से वह प्रतापगढ़ पहुँचा। जीजाबाई प्रतीक्षा कर रही थीं।

शिवाजी ने अंदर घुसकर देखा कि पासों के खेल का सामान तैयार पड़ा है। आज्ञा हुई कि बाजी लगाओ। विस्मित परंतु नम्र हृदय से बिना कोई प्रश्न पूछे, शिवाजी पासे फेंकने लगे। माता ने भवानी का ध्यान करके खेलना प्रारंभ किया और शीघ्र ही शिवाजी को परास्त कर दिया। शिवाजी ने माता से कहा आप मेरा कोई भी किला माँग सकती हैं। जीजाबाई ने झट-से उत्तर दिया—सिंहगढ़ चाहिए। शिवाजी, अब समझे।

सिंहगढ़ को दुश्मन से लेना कोई आसान काम नहीं था। उसका किलेदार उदयभानु पूरा दैत्य था। एक दिन में दो भेड़ें और बीस सेर चावल खा जाना उसके लिए साधारण बात थी। उदयभानु के बारह पुत्र थे जो पिता से भी अधिक बलवान समझे जाते थे। किले में एक खूनी हाथी था जिसका नाम चंद्रावली था और सीदीहिलाल नाम का एक शूरवीर योद्धा था। इन दोनों को जीतने वाला वीर मिलना कठिन था। ऐसे रावण द्वारा किले को लेना लोहे के चने चबाने जैसा था। परंतु जैसे क्षत्राणी अपने आदेश को वापस नहीं ले सकती वैसे ही क्षत्रिय भी वचन देकर झूठा नहीं बन सकता। शिवाजी ने सिंहगढ़ का किला जीतकर माता के चरणों में रखने की प्रतिज्ञा की।

शिवाजी का ध्यान अपने बालसखा नानाजी मालसुरे पर गया। नानाजी मालसुरे शिवाजी के सुख-दुःख का साथी था। वह विश्वविख्यात पराक्रमी था। शिवाजी ने उसके पास संदेश के साथ तीव्रगामी दूत भेजा कि नानाजी मालसुरे तीन दिन के अंदर बारह हजार सिपाहियों के साथ रायगढ़ पहुँच जायें।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जब दूत नानाजी के पास पहुँचा तो वह अपने पुत्र रायबा के विवाह की तैयारी में लगा हुआ था। शिवाजी का संदेश पाते ही उत्सव बंद करा दिए गए और तीन दिन पूरे होने से पूर्व बारह हज़ार सिपाहियों के साथ नानाजी रायगढ़ के द्वार पर जा पहुँचा। शिवाजी प्रतीक्षा कर ही रहे थे। ज्योंही उन्होंने मराठा सेना की ध्वजाएँ देखीं त्यों ही वे बाहर आकर नानाजी से मिले। नानाजी ने शिवाजी को उलाहना दिया कि तुमने मुझे पुत्र के विवाहोत्सव से क्यों बुलाया?

शिवाजी ने उत्तर दिया, "मैंने नहीं माता जी ने बुलाया है। इसके बाद उन्होंने नानाजी को पूरी बात बताई। माता जीजाबाई ने नानाजी की आरती उतारी। माथा चूमा और जयमाला पहनाकर, तिलक लगाया। फिर उन्होंने नानाजी को विजय प्राप्ति के लिए आशीर्वाद दिया। नानाजी ने आशीर्वाद ग्रहण करते हुए जीजाबाई के चरण छूकर सिंहगढ़ जीतने की प्रतिज्ञा की।

अंधेरा होते ही मराठा सेनाएँ सिंहगढ़ की तलहटियों में घूमने लगीं। नानाजी ने स्वयं देहाती का वेश धारण कर दुर्ग की परिक्रमा की और जानने योग्य बातों का पता लगाया। रात के घोर अंधकार में, जब सिंहगढ़ के रक्षक गहरी नींद में सो रहे थे, नानाजी चुने हुए सिपाहियों के साथ कल्याण द्वार के नीचे पहुँच गया। किला एक ऊँची चोटी पर बना हुआ था जिसके चारों ओर खाई थी। ऊपर चढ़ना दुष्कर था।

संदूकची में से शिवाजी के प्रसिद्ध घोड़पड़ (गोह) यशवंत को निकालकर नानाजी ने उसके माथे पर चंदन लगाया। गले में माला पहनाई और कमर में कमंद बाँधकर उसे ऊपर फेंका। ऊँचाई अधिक होने की वजह से वह चोटी पर नहीं पहुँच सका और वापस आ गया। तब नानाजी ने कहा यदि इस बार भी यशवंत लौट आया तो मैं इसे मार डालूँगा। फिर इसे पूरे जोर से ऊपर फेंका। अबकी बार उसने चोटी पर पंजे गाड़ दिए।

कमंद के सहारे मराठा सैनिक धड़ाधड़ ऊपर चढ़ने लगे। चढ़ने वालों में सबसे आगे नानाजी थे। तलवार को हाथों में थाम और जान हथेली पर लेकर वह वीर दुर्ग पर चढ़ गया। किंतु पचास सैनिक चोटी पर चढ़े ही थे कि कमंद टूट गई। ऊपर के सैनिक ऊपर और नीचे के नीचे रह गए।

असली नेता वही है जिसका दिमाग कठिनाई के समय शांत रहे। नानाजी के एक ओर दुश्मनों से भरा हुआ दुर्ग और दूसरी ओर भयंकर खाई। विचार-शक्ति को कायम रखते हुए मराठा सेनापति ने किले पर धावा करने का निश्चय किया। दबे पाँव जाकर उन लोगों ने कल्याण द्वार तथा अन्य द्वारों पर जो सिपाही पहरा दे रहे थे उन्हें मार गिराया।

उदयभानु को शत्रु के आने का समाचार मिला तो उसने पहले चंद्रावली हाथी को और फिर सोदीहिलाल को आगे बढ़ने का हुक्म दिया। नानाजी अपने समय का प्रसिद्ध तलवार चलाने वाला था। चंद्रावली की सूँड और सीदीहिलाल का सिर उसकी तलवार की भेंट हो गए। उदयभानु ने अपने बारह लड़कों को मैदान में भेजा। वे भी युद्ध में मारे गए।

तब उदयभानु नंगी तलवार लेकर मुगलों की फौज के साथ स्वयं किले के बाहर निकला और मराठों पर टूट पड़ा। वह आक्रमण बड़ा वेगवान था। दोनों सेनापति आमने-सामने आकर भिड़ गए। उदयभानु की तलवार नानाजी पर और नानाजी की तलवार उदयभानु पर एक ही समय पर गिरी। दोनों वीर एक साथ ही धराशाई हो गए। उदयभानु की मृत्यु से किले वालों का साहस छूट गया परंतु मराठे हतोत्साहित नहीं हुए।

नानाजी के भाई सूर्याजी के नेतृत्व में मराठा सिपाही 'हर-हर महादेव' की ध्वनि से आकाश को गुँजाते हुए किले पर टूट पड़े। द्वार पर कब्जा कर लिया गया और शीघ्र ही सिंहगढ़ की चोटी पर महाराष्ट्र का भगवा झंडा फहराने लगा।

सिपाहियों ने किले के बाहर घुड़साल के कुछ छप्परों में आग लगाकर शिवाजी की सिंहगढ़-विजय की सूचना दे दी।

सिंहगढ़-विजय की सूचना पाकर शिवाजी नानाजी को बधाई देने के लिए खुशी-खुशी चल पड़े। पर जब वहाँ पहुँचकर वीर नानाजी की मृत्यु का समाचार सुना तो वे शोक से व्याकुल हो उठे। उन्होंने अपने मित्र तथा सेनापति के शव को छाती से लगा लिया। उनके मुख से सहसा निकल पड़ा—गढ़ आया, पर सिंह गया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चित्रावली-4

कहानी—गंगा की तराई में एक घना जंगल था। जंगल में हिरन बहुत थे। जंगल के बीचों-बीच एक झील थी। सबको पानी पीने के लिए इसी झील पर आना पड़ता था। हिरनों के लिए चारों ओर खतरा रहता था। दोपहर को हिंसक जानवर खा-पीकर सो जाते थे। हिरनों के लिए पानी पीने का यही समय सबसे अच्छा था।

जंगल में हिरनों के कई झुंड थे। सबसे बड़े झुंड में लगभग पचास हिरन थे। इन हिरनों का सरदार काले रंग का था। काले हिरनों का वंश संसार में लगभग समाप्त हो चुका था। केवल इस जंगल में इनका एक छोटा सा परिवार था—काला हिरन, उसकी पत्नी और दो बच्चे। काला हिरन दूसरे हिरनों से अधिक तेज़ दौड़ सकता था। वह बुद्धिमान भी था और वही था हिरनों के झुंड का सरदार। झुंड को अपने सरदार पर पूर्ण विश्वास था। सरदार भी जी-जान से अपने कर्तव्य का पालन करता था।

काला हिरन देखने में अद्‌भुत लगता था। उसकी चमकीली लाल-लाल आँखें बहुत सुंदर थीं।

एक दिन विचित्र घटना घटी। जंगल में शिकारियों का एक दल शिकार के लिए आया। काफी खोज करने पर भी उनके हाथ कोई शिकार नहीं लगा। दोपहर हो चुकी थी। सूरज तप रहा था। प्यास के मारे उनका बुरा हाल था। शिकारी पानी की तलाश में इधर-उधर भटकने लगे। एकाएक उनकी नज़र झील पर पड़ी। शिकारियों की जान में जान आई। उन्होंने पेटभर पानी पिया। वे थक गए थे। पेड़ों की घनी छाया देखकर वे रुक गए। उन्होंने बंदूकें उठाकर एक पेड़ के सहारे रख दीं। वे सोना चाहते थे कि आहट पाकर चौकन्ने हो गए।

हिरनों का झुंड पानी पीने आया था। यह उसी की आहट थी। काला हिरन झुंड का नेतृत्व कर रहा था। हिरनों ने शिकारियों को देख लिया। शिकारियों के बंदूकों की ओर हाथ बढ़ाने से पूर्व ही हिरनों का झुंड बड़ी-बड़ी झाड़ियों के पीछे छिप गया। शिकारी भी हाथ आए शिकार को यों छोड़ना नहीं चाहते थे। उन्होंने हिरनों का पीछा किया।

हिरन भागे नहीं थे। वे झील के किनारे झाड़ियों की ओट में दम साधे खड़े थे। शिकारियों ने समझा कि हिरन मैदान की ओर निकल गए हैं। वे दूसरी तरफ चले गए। हिरनों पर आई विपत्ति टल गई। शिकारियों ने काले हिरन को देख लिया था। शिकारियों में उस देश का राजकुमार भी था। वह काले हिरन को देखकर आश्चर्यचकित रह गया। यह तो सचमुच ही अद्‌भुत हिरन है, राजकुमार ने मन में सोचा।

राजकुमार काले हिरन को जीवित पकड़ना चाहता था। दूसरे दिन उसने कुछ चतुर शिकारी बुलाए। बड़े-बड़े जाल हाथ में लेकर वे लोग जंगल की ओर चल पड़े। उन्होंने झील के किनारे पर आकर जाल बिछा दिया। उन्हें विश्वास

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

था कि हिरनों का झुंड झील पर पानी पीने अवश्य आएगा। शिकारी दम साधे हिरनों की प्रतीक्षा करने लगे।

कुछ ही देर में शिकारियों को हिरन आते दिखाई दिए। शिकारी झाड़ियों के पीछे छिप गए। हिरनों का झुंड झील की ओर बढ़ा। काला हिरन झुंड के आगे-आगे चल रहा था। शिकारी उसे घेरना चाहते थे। एक शिकारी झाड़ियों की ओट लेता हिरनों के पास पहुँच गया। उसने हवा में गोलियाँ चलाईं। गोली की आवाज सुनकर हिरनों में भगदड़ मच गई। उसी भागदौड़ में काला हिरन जाल में फँस गया। शिकारी भी तो यही चाहते थे। उन्हें हिरनों का शिकार करना तो था नहीं।

राजकुमार ने अपने साथियों को पीछे हटने का आदेश दिया। वह बाकी हिरनों को जान-बूझकर भगा देना चाहता था। मगर यह क्या? राजकुमार आश्चर्य में पड़ गया। काले हिरन को जाल में फँसा देखकर हिरन भागते-भागते रुक गए। सारे हिरन एक घेरा बनाकर काले हिरन के पास जाकर खड़े हो गए। जानवरों के संगठन का अद्भुत दृश्य उपस्थित हो गया। लगता था सारे हिरन अपने नेता के लिए आत्मसमर्पण करने को तैयार हैं। उसी समय हिरनी घेरे से बाहर निकली। उसकी आँखें आँसुओं से गीली थीं। वह धीरे-धीरे हिरन के पास आई और प्यार से उसे खुजलाने लगी। मूक पशु कहता भी क्या।

राजकुमार को यह सब सपना जैसा लग रहा था। वह भी थोड़ा आगे बढ़ा। उसे विश्वास था कि उसके पास जाने से हिरनी भाग खड़ी होगी। किंतु ऐसा नहीं हुआ। हिरनी उसी तरह खड़ी हिरन को खुजलाती रही। राजकुमार चाहता तो आसानी से हिरनी को पकड़ सकता था। किंतु उस समय वह सब भूल गया।

''छोड़ दो इसे'', एकाएक राजकुमार ने आदेश दिया। हिरनी की करुणा भरी मूक प्रार्थना ने राजकुमार का हृदय पिघला दिया। काले हिरन को छोड़ दिया गया। देखते-देखते हिरनों का झुंड आँखों से ओझल हो गया। राजकुमार और उसके साथी लौट आए।

कुछ दिन बाद राजकुमार राजा बन गया। राजा बनते ही उसने जंगली जानवरों के शिकार पर रोक लगा दी। जंगल के सभी जानवर निर्भय होकर सुख से रहने लगे।

चित्रावली-5

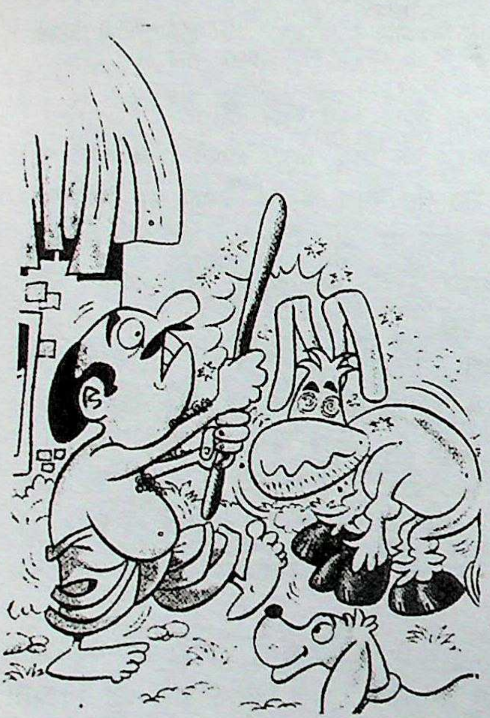

कहानी—काशी नगरी में कर्पूर पटक नाम का एक धोबी रहता था। एक रात जब वह अपनी पत्नी के साथ मकान में सोया हुआ था तो मौका देखकर एक चोर घर में घुस आया।

धोबी के आँगन में उसका कुत्ता और गधा बँधे हुए थे। चोर को आया देखकर गधे ने कुत्ते से कहा, ''इस समय स्वामी को तुम्हारी आवश्यकता है। तुम भौंक-भौंक कर स्वामी को सावधान कर दो। नहीं तो यह चोर चोरी करके भाग जायेगा।''

कुत्ता बोला, ''भाई! तुम्हें मेरे काम की चिंता नहीं होनी चाहिए क्योंकि तुम भली-भाँति जानते हो कि मैं दिन-रात इस घर की रखवाली करता हूँ, फिर भी मालिक मेरी सेवा का कुछ ख्याल नहीं रखता। अब तो वह समय पर मुझे भोजन भी नहीं देता। जब तक उसका कोई भारी नुकसान नहीं होगा, वह मेरा महत्व नहीं समझेगा। उसने तो मेरी ओर से पूरी उदासीनता बरत रखी है।''

यह सुनकर गधा कहने लगा, ''अरे मूर्ख! भला यह भी अपना महत्व जताने का समय है। सुन, जो सेवक काम पड़ने पर अपने स्वामी से कोई माँग उपस्थित करता है, उसे अच्छा सेवक नहीं समझा जाता।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुत्ता बोला, ''और जो स्वामी काम पड़ने पर ही सेवक से बात करे, अथवा उसका महत्व समझे, उस स्वामी को भी तो अच्छा स्वामी नहीं माना जा सकता क्योंकि अपने आश्रितों का भरण-पोषण, स्वामी-सेवा, धर्म-सेवा और पुत्र उत्पन्न करने में कोई किसी का प्रतिनिधि नहीं हो सकता।''

यह सुनकर गधा क्रोधित हो उठा। वह बोला, ''अरे दुष्ट! तू तो बड़ा पापी है जो मालिक के कार्यों की उपेक्षा कर रहा है। यदि तू नहीं भौंकता तो मैं ही कोई उपाय करता हूँ क्योंकि कहा भी गया है कि मनुष्य को सूर्य की सेवा पीठ से, अग्नि की सेवा पेट से और स्वामी की सेवा तो कपटशून्य होकर सब ओर से करनी चाहिए।''

ऐसा कहकर वह गधा अपने मालिक को जगाने के लिए जोर-जोर से रेंकने लगा। गधे का रेंकना सुनकर धोबी की नींद टूट गई। असमय रेंकने पर उसे गधे पर बहुत गुस्सा आया। उसने डंडा उठाया और गधे पर पिल पड़ा। गधे पर इतने डंडे पड़े कि उसने वहीं दम तोड़ दिया।

(थ) भावानुकूल संवाद वाचन

संवाद वाचन एक कला है जो अभिनय के क्षेत्र में आती है। इसे 'वाचिक अभिनय' भी कहते हैं। रेडियो आदि पर अक्सर आप इस प्रकार का संवाद वाचन सुनते ही हैं। किसी भी नाटक या मंच पर प्रस्तुति में भावानुकूल संवाद-वाचन अत्यंत आवश्यक होता है। सामान्य बातचीत में भी भावानुकूल उतार-चढ़ाव बहुत प्रभावित करता है। आप चाहें दो मित्रों की बातचीत सुनें या किसी भीड़ को संबोधित किया जाने वाला भाषण, सब में एक विशेष उतार-चढ़ाव आता है तथा विशिष्ट हावभावों का प्रदर्शन होता है, जो आपको बाँध लेते हैं। इसके विपरीत, जो वार्ताकार या वक्ता एक ही लय में, पूर्ण शांति या उग्रता से बातचीत करते हैं, उनकी बातचीत उबाऊ बन जाती है।

सामान्य जीवन में जब भी मनुष्य क्रोध, प्रेम, घृणा, आश्चर्य, भय आदि की मनोदशा में होता है, तब वह बिना हाव-भाव के बात ही नहीं करता। घर में अपराधी और आप शांतिमय वार्तालाप अपनाएँ? यह संभव ही नहीं है। उस समय तो आप क्रोध, भय व उग्रता से भरकर आप आत्ममंथन करेंगे। छात्र ध्यान रखें कि संवाद-वाचन में भी ठीक वही तेवर व हावभाव चाहिए जो जीवन में देखने को मिलता है। संवाद-वाचक को चाहिए कि वह संवाद-वाचन में अति-अभिनय व बनावटी हाव-भाव प्रदर्शित न करे। यदि ऐसा हो तो संवाद-वाचन अभिनय प्रतीत होता है, सत्य प्रतीत नहीं होता। संवाद-वाचक को अपनी प्राकृतिक भाव-भंगिमा में ही संवाद वाचन करना चाहिए।

निम्नलिखित उदाहरण को ध्यानपूर्वक पढ़ें—

1

विनोद : वाह पुजारी जी (दोस्ती का हाथ बढ़ाते हुए) बड़ा ही मनोरम दृश्य है। वाह! क्या मनोरम मौसम है। सर्वथा नैसर्गिक! सर्वथा मनोहारी!

पुजारी : हाँ, इस शीतल बयार के चलने से तो लगता है कि वर्षा होने वाली है।

विनोद : कुछ भी हो पुजारी जी, मनुष्य के लाख कृत्रिम उपकरण भी इस प्रकार की मनोहारी ठंडक नहीं दे सकते।

पुजारी : हाँ, भला मनुष्य का प्रकृति से क्या मुकाबला? मनुष्य जहाँ सोचना बंद कर देता है, प्रकृति वहाँ से सोचना आरंभ करती है।

विनोद : बड़े ही दुख की बात है कि आज मनुष्य अपने ही हाथों से प्रकृति द्वारा उसे प्रदान की गई धरोहर को नष्ट कर रहा है।

पुजारी : जिस दिन मनुष्य को यह छोटी सी बात समझ में आ जायेगी कि हमें इस पृथ्वी को अपनी भावी संतति के लिए उसी प्रकार संजो कर रखना है जिस प्रकार हमारे पूर्वजों ने हमारे लिए संजोई थी, तो सारे फसाद मिट जायेंगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2

अशोक : तुम कौन हो देवि? और रणभूमि में क्यों आई हो?

पद्मा : मैं कलिंग नरेश की पुत्री पद्मा हूँ। मैंने भी रण में भाग लिया है। मैं अशोक से प्रतिशोध लेना है। मैं उसे बता दूँगी कि कलिंग की नारियों में भी आत्मसम्मान की भावना है जिन्हें मरना स्वीकार है परंतु पराधीनता नहीं।

अशोक : अशोक तो मैं ही हूँ। परंतु मैं स्त्रियों से युद्ध नहीं करता। मेरे अपने कुछ सिद्धांत हैं।

पद्मा : तो तुम हो अशोक! तुम सिद्धांतों की बात करते हो? जिस क्रूरता का परिचय तुमने इस युद्ध में दिया है, जिस निर्ममता से तुम्हारे सिपाही कलिंग के सैनिकों की लाशों पर तांडव कर रहे हैं, इस पर तुम सिद्धांतों की बात करते हो? जब इतने निरपराधों का रक्त पानी के समान बहा ही दिया है, जब समस्त स्त्रियों के सुहाग उजाड़ ही दिए हैं तो अब कलिंग की समस्त नारियों की सेना तुम्हारे सामने खड़ी है। इन्हें और मारकर अपनी वीरता का परिचय दो सम्राट अशोक! उसके बाद इस वीरान भूमि का राज्य कर लेना।

अशोक : (हथियार डालते हुए) नहीं मैं स्त्री हत्या नहीं करूँगा।

पद्मा : अभी तुम कलिंग को जीत नहीं पाए हो सम्राट अशोक। कलिंग तो तुम हमें मारकर ही जीत पाओगे,, अन्यथा नहीं। यदि तुम स्त्रियों पर वार नहीं करना चाहते, तो हमें भी निहत्थों पर वार करने की कोई इच्छा नहीं है। तुम चाहो तो हार मानकर जा सकते हो।

अशोक : मैं अपनी हार स्वीकार करता हूँ देवि। कलिंग पर अब मेरा कोई अधिकारी नहीं। (सैनिकों की ओर मुड़कर आदेश देते हुए) वापस चलो सैनिकों, मगध की ओर। अब हमें इस संसार से वैराग्य हो गया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खंड द

व्यावहारिक व्याकरण—IX

15 अंक

पाठ्यक्रम तथा अंक-वितरण

	अंक
♦ विशेषण, लिंग और वचन का विशेषण पर प्रभाव	3
♦ परसर्ग 'ने' का क्रिया पर प्रभाव	3
♦ वाक्य-रचना—सरल और संयुक्त वाक्य	3
♦ पर्यायवाची, विलोम, श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द	3
♦ मुहावरे	3
योग	15

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

8

हिंदी भाषा एवं व्याकरण

विद्यार्थियों के पुनः स्मरण हेतु यहाँ हिंदी व्याकरण का संक्षिप्त परिचय पुनः प्रस्तुत है क्योंकि व्याकरण अध्ययन के समय इसकी आवश्यकता पुनः पड़ सकती है।

1. साधारण परिचय

भाषा के माध्यम से मनुष्य अपने मन के भावों को बोलकर या लिखकर दूसरों को प्रेषित करता है। भाषा के दो प्रकार हैं—मौखिक व लिखित। मौखिक प्रकार मुँह से बोला जाता है जबकि लिखित प्रकार लिखकर प्रकट किया जाता है। भाषा का सामान्य स्वरूप मौखिक होता है।

जिन लेखन-चिह्नों के द्वारा भाषा की ध्वनियों को व्यक्त किया जाता है, उन्हें लिपि कहते हैं। प्रत्येक भाषा की लिपि अलग होती है। देवनागरी हिंदी भाषा की लिपि का नाम है।

भारत में कई प्रांत हिंदीभाषी हैं। इनमें सामान्यतः हिंदी में ही अभिव्यक्ति होती है। झारखंड, राजस्थान, बिहार, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, मध्यप्रदेश, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली व छत्तीसगढ़ हिंदी भाषा के प्रांत हैं। पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र अन्य प्रांत हैं जहाँ हिंदी संपर्क भाषा के रूप में प्रयोग होती है। कई दक्षिण व पूर्वी भारतीय प्रांतों तमिलनाडु, कर्नाटक, अरुणाचल प्रदेश, पश्चिम बंगाल आदि में हिंदी समझी अवश्य जाती है परंतु आमतौर पर बोली नहीं जाती। वहाँ अपनी प्रांतीय भाषा में ही अधिकतर अभिव्यक्तियाँ होती हैं।

हिंदी खड़ी बोली का ही विकसित रूप नहीं है। उसका निर्माण अनेक प्रकार की बोलियों से हुआ है। ब्रज, मैथिली, भोजपुरी, अवधी आदि भी हिंदी की ही बोलियाँ हैं। तभी तो जायसी, सूरदास, गोस्वामी तुलसीदास आदि कवियों को हिंदी भाषा के कवियों की मान्यता दी गई है।

हिंदी की बोलियों का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया गया है:

पश्चिमी हिंदी : इसके अंतर्गत बाँगरू (जिसे हरियाणवी भी कहा जाता है), खड़ी बोली, ब्रज, बुंदेली व कन्नौजी बोलियाँ आती हैं। ब्रज के श्रेष्ठतम कवियों में सूरदास व नंददास के नाम प्रमुखता से लिए जाते हैं। सूरदास कृत 'सूरसागर' व 'भ्रमरगीत' इसके गौरवशाली ग्रंथ हैं। खड़ी बोली मेरठ, शामली, सहारनपुर, गाजियाबाद व दिल्ली के आसपास के इलाकों में बोली जाती है।

पूर्वी हिंदी : इसके अंतर्गत बघेली, अवधी व छत्तीसगढ़ी बोलियाँ आती हैं। अवध के श्रेष्ठतम कवियों में गोस्वामी तुलसीदास व जायसी के नाम प्रमुखता से लिए जाते हैं। तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' एवं जायसी कृत 'पद्मावत' अवधी भाषा के गौरवशाली महाकाव्य हैं।

राजस्थानी : इसमें राजस्थान में बोली जाने वाली निम्नलिखित चार बोलियाँ आती हैं—मेवाती, मारवाड़ी, हाड़ोती तथा मेवाड़ी।

पहाड़ी : मंडियाली (हिमाचल प्रदेश), गढ़वाली व कुमाऊँनी बोलियाँ इसके अंतर्गत आती हैं।

बिहारी : मैथिली, मगही और भोजपुरी बोलियाँ इसके अंतर्गत आती हैं। मैथिली बोली के लोकप्रिय कवियों में विद्यापति का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। उनकी 'विद्यापति पदावली' अपनी भाषा सरसता के लिए प्रसिद्ध है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भाषा एवं व्याकरण

किसी भाषा की नियमावली को सामान्यतः उसका **व्याकरण** कहते हैं। प्रत्येक भाषा के अपने नियम होते हैं। उसकी ध्वनियाँ, शब्द, पद, वाक्य-रचना के नियम भी भिन्न-भिन्न होते हैं। व्याकरण का कार्य किसी भाषा के सब नियमों को एकत्र करना, उन्हें पाठकों को समझाना तथा भाषा का मानक रूप स्थापित करना है।

निम्नलिखित स्तरों पर भाषा का विश्लेषण व्याकरण के अंतर्गत किया जाता है—

- वर्ण-व्यवस्था स्तर
- पद-व्यवस्था स्तर
  (अ) शब्द स्तर
  (ब) पद स्तर
- वाक्य-व्यवस्था स्तर

2. वर्ण विचार एवं वर्तनी

वर्ण एवं वर्णमाला

'वर्ण' भाषा की सबसे छोटी मौखिक ध्वनि या उसका लिखित रूप होता है। इसके खंड नहीं हो सकते। उदाहरणतया क्, अ, त्, प्, आ आदि वर्ण हैं। इनके खंड नहीं हो सकते। अतःएव भाषा की मौखिक या लिखित लघुतम इकाई जिसके खंड नहीं हो सकते, **वर्ण** कहलाती है व किसी भाषा की मूल ध्वनियों के व्यवस्थित समूह को **वर्णमाला** कहते हैं।

मानक देवनागरी वर्णमाला

निम्नलिखित वर्ण देवनागरी वर्णमाला में सम्मिलित हैं—

स्वर—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

इन स्वरों को जब व्यंजनों के साथ प्रयुक्त किया जाता है तो इनके स्थान पर इनके मात्रा-चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। ये मात्राएँ निम्नलिखित हैं—

अनुस्वार	—	अं (ं)
अनुनासिक	—	अँ (ँ), एवं
विसर्ग	—	अः (:)

व्यंजन—व्यंजन स्वर की सहायता के बिना स्वतंत्र रूप से नहीं बोले जा सकते। इसलिए सुविधा हेतु सभी व्यंजन में 'अ' का समावेश कर दिया जाता है। जैसे—क् + अ = 'क'। यहाँ व्यंजनों के ऐसे ही 'अ' स्वर-युक्त रूप दिए जा रहे हैं—

च, छ, ज, झ, ञ	(चवर्ग)
ट, ठ, ड, ढ, ण, ड़, ढ़	(टवर्ग)
त, थ, द, ध, न	(तवर्ग)
प, फ, ब, भ, म	(पवर्ग)
य, र, ल, व	(अंतःस्थ)
श, ष, स, ह	(ऊष्म)
ऑ, ज़, फ़	(गृहीत)
क्ष, त्र, ज्ञ, श्र	(संयुक्त व्यंजन)

याद रखें—'क्ष' में क् + ष; 'त्र' में त् + र; 'श्र' में श् + र तथा 'ज्ञ' में ज् + ञ ध्वनियाँ हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हल् चिह्न (्)—किसी भी व्यंजन को स्वर-रहित करने के लिए उसके नीचे हल चिह्न लगाया जाता है। जैसे—

'अ' स्वर-युक्त व्यंजन (अक्षर के रूप में)	स्वर-रहित व्यंजन (वर्ण के रूप में)
द	द्
ट	ट्
थ	थ्
प	प्
य	य्

अतः स्पष्ट है कि हल् चिह्न (्) स्वर-रहितता को प्रदर्शित करता है।

अंक-चिह्न—मानक वर्णमाला के अनुसार, संख्यावाची अंकों हेतु भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूप स्वीकृत हैं, जो निम्नवत् हैं—

मानक अंक	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9
देवनागरी अंक	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९

3. शब्द निर्माण

उपसर्ग, प्रत्यय, संधि और समास का हिंदी में नवीन शब्दों के बनाने में प्रयोग होता है।

उपसर्ग

ऐसे शब्द जो किसी शब्द से पूर्व लगकर उस शब्द का अर्थ परिवर्तित कर देते हैं या उसमें नई विशेषता उत्पन्न कर देते हैं। जैसे—सु + व्यवस्थित = सुव्यवस्थित।

हिंदी में प्रचलित कुछ उपसर्ग निम्नलिखित हैं।

तत्सम (संस्कृत) उपसर्ग

अति- अत्यंत = अति + अंत
आ- आकंठ = आ + कंठ
नि- नियम = नि + यम
सम् (सं)- संकल्प = सम् + कल्प
कु- कुकर्म = कु + कर्म

हिंदी उपसर्ग

अध- अधपन्ना - आधा (अध) + पन्ना

प्रत्यय

प्रत्यय वे शब्दांश हैं जो धातु रूप या शब्दों के अंत में लगकर नए शब्द बनाते हैं। जैसे—महान + ता = महानता में 'ता' प्रत्यय है। उदाहरण,

ता — डूब + ता = डूबता
आन — मिल + आन = मिलान
इयल — मर + इयल = मरियल
इया — दुखी + इया = दुखिया
आस — मीठा + आस = मिठास
पा — बूढ़ा + पा = बुढ़ापा
अक्कड — घूम + अक्कड़ = घुमक्कड़

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4. संधि

संधि का अर्थ है—मेल। दो ध्वनियों के आपस में मिल जाने के परिणामस्वरूप दो ध्वनियों की संधि होती है। उदाहरण—हिम + आलय। यहाँ 'हिम' का अंतिम 'अ' तथा 'आलय' का आरंभिक 'आ' मिलकर 'आ' बन गए हैं।

हिम् + (अ) + (आ) + लय = हिम् + आ + लय = हिमालय

संधि-विच्छेद

संधि-विच्छेद संधि-युक्त शब्द को काटकर पुनः पूर्वावस्था में पहुँचाना है। उदाहरण—हिमालय = हिम + आलय।

संस्कृत के संधि नियम

संस्कृत शब्दों में होने वाली संधि के तीन प्रकार हैं—

- स्वर संधि,
- व्यंजन संधि, एवं
- विसर्ग संधि

स्वर संधि

स्वर संधि दो स्वरों के मेल के परिणामस्वरूप होने वाला परिवर्तन है। यह पाँच प्रकार की होती है—

दीर्घ संधि—ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ के आगे क्रमशः ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ आ जायें तो दोनों मिलकर क्रमशः आ, ई, ऊ बन जाते हैं। जैसे—

अ + अ = आ = भाव + अनुसार = भावानुसार
आ + आ = आ = महा + आत्मा = महात्मा
इ + इ = ई = अभि + इष्ट = अभीष्ट
इ + ई = ई = गिरि + ईश = गिरीश
उ + उ = ऊ = सु + उक्ति = सूक्ति
ऊ + ऊ = ऊ = भू + ऊर्जा = भूर्जा

गुण संधि—

नियम—1. 'अ' या 'आ' के आगे 'इ' या 'ई' आने पर दोनों के संयोजन से 'ए' बनता है।
2. 'अ' या 'आ' के आगे 'उ' या 'ऊ' आने पर दोनों के संयोजन से 'ओ' बनता है।
3. 'अ' या 'आ' के आगे 'ऋ' आने पर दोनों के संयोजन से 'अर्' बनता है।

अ + इ = ए = देव + इंद्र = देवेंद्र
अ + ई = ए = नर + ईश = नरेश
अ + उ = ओ = वीर + उचित = वीरोचित
आ + उ = ओ = महा + उत्सव = महोत्सव
आ + ऋ = अर् = महा + ऋषि = महर्षि

वृद्धि संधि—

नियम—1. अ/आ से परे ए/ऐ आने पर दोनों मिलकर 'ऐ' हो जाते हैं।
2. अ/आ से परे ओ/औ आने पर दोनों मिलकर 'औ' हो जाते हैं।

अ + ए = ऐ = एक + एक = एकैक
आ + ए = ऐ = सदा + एव = सदैव
अ + ऐ = ऐ = मत + ऐक्य = मतैक्य
आ + औ = औ = महा + औषध = महौषध

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यण संधि—

नियम—1. इ/ई के पश्चात् किसी भिन्न स्वर के आने पर इ/ई का 'य' हो जाता है।

2. उ/ऊ के पश्चात् किसी भिन्न स्वर के आने पर उ/ऊ का 'व' हो जाता है।

3. 'ऋ' के पश्चात् किसी भिन्न स्वर के आने पर 'ऋ' का 'र' हो जाता है।

इ + अ = य = अति + अधिक = अत्यधिक

इ + आ = या = अति + आचार = अत्याचार

इ + उ = यु = उपरि + उक्त = उपर्युक्त

इ + ए = ये = प्रति + एक = प्रत्येक

उ + आ = वा = सु + आगत = स्वागत

अयादि संधि—

नियम—ए, ऐ, ओ, औ से आगे इनसे भिन्न स्वर आ जाने पर ए का अय्, ऐ का आय्, ओ का अव् तथा औ का आव् बन जाता है।

ए + अ = अय् = ने + अन = नयन

ऐ + अ = आय् = गै + अक = गायक

औ + इ = आवि = नौ + इक = नाविक

व्यंजन संधि

व्यंजन संधि जैसे व्यंजन ध्वनि के निकट स्वर या व्यंजन आने से व्यंजन में होने वाला परिवर्तन होता है।

दिक् + गज = दिग्गज

परि + नाम = परिणाम

उत् + श्वास = उच्छ्वास

सम् + मुख = सम्मुख

उत् + लेख = उल्लेख

वाक् + मय = वाङ्मय

विसर्ग संधि

विसर्ग संधि विसर्ग के पश्चात् स्वर या व्यंजन आने पर विसर्ग में होने वाला परिवर्तन होता है। जैसे—

अध: + गति = अधोगति

नि: + पक्ष = निष्पक्ष

नि: + चल = निश्चल

नि: + धन = निर्धन

नि: + आकार = निराकार

5. समास

समास दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से नए शब्द बनाने की क्रिया है। 'समास' शब्द का निर्माण संस्कृत धातु 'अस' में 'सम्' उपसर्ग लगाकर होता है, जिसका अर्थ होता है—मिलाप अथवा मिलाहार। इसमें दो या अधिक पदों अथवा शब्दों को मिलाकर एक पद का निर्माण कर लिया जाता है। इस विधि से बने नये शब्दों को **समस्त-पद** कहा जाता है। जब समस्त-पदों का पुनः पृथक्करण किया जाता है तो इसे **समास-विग्रह** कहा जाता है।

समास का वर्गीकरण

समास का वर्गीकरण अग्रवर्णित प्रकार से किया जाता है :

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तत्पुरुष समास, उदाहरण—शोक से आकुल = शोकाकुल; कष्ट से साध्य = कष्टसाध्य

कर्मधारय समास, उदाहरण—महान देव = महादेव; पुरुषों में उत्तम = पुरुषोत्तम

द्विगु समास, उदाहरण—चार मासों का समूह = चौमासा; चार मुखों का समूह = चतुर्मुख

बहुव्रीहि समास, उदाहरण—एक दाँत वाला = एकदंत; महान् वीर = महावीर; अंत नहीं जिसका = अनंत

द्वंद्व समास, उदाहरण—राधा और कृष्ण = राधा-कृष्ण; छोटा या बड़ा = छोटा-बड़ा; हानि और लाभ = हानि-लाभ

अव्ययीभाव समास: उदाहरण—आवश्यकता के अनुसार = आवश्यकतानुसार; आज्ञा के अनुसार = आज्ञानुसार

उपरोक्त उदाहरणों से सर्वथा स्पष्ट है कि समास से शब्द-रचना करने में परसर्ग, संयोजन आदि को लुप्त करके एक नए पद का निर्माण कर लिया जाता है।

6. शब्द-भंडार

शब्द की परिभाषा

निश्चित अर्थ वाला स्वतंत्र वर्ण समूह शब्द कहलाता है। जैसे—परिपाटी, मित्र, देवता, आहार, विहार, पराधीन आदि। वर्ण-समूह तभी शब्द कहलाता है, जब उसका कोई अर्थ हो। अर्थहीन वर्ण-समूह शब्द नहीं होते।

शब्दों का वर्गीकरण

हम शब्दों का वर्गीकरण निम्नलिखित दृष्टियों से करेंगे—

1. अर्थ की दृष्टि से
2. इतिहास या स्रोत की दृष्टि से
3. रचना की दृष्टि से
4. व्याकरणिक विवेचन की दृष्टि से

1. अर्थ की दृष्टि से वर्गीकरण : वास्तव में शब्द तो अर्थ की अभिव्यक्ति का ही एक माध्यम है। **शब्द के द्वारा जो प्रतीति होती है, उसे अर्थ कहते हैं।** अर्थ के आधार पर शब्दों के चार भेद होते हैं—

(अ) एकार्थी शब्द : ऐसे शब्दों के प्राय: एक से अधिक अर्थ नहीं होते। जैसे रुपया, लोटा, चम्मच आदि।

(ब) अनेकार्थी शब्द : ऐसे शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं। वे शब्द अलग-अलग प्रसंगों में अलग-अलग अर्थ प्रदान करते हैं। कुछ अनेकार्थी शब्द जो हिंदी में प्रयुक्त होते हैं निम्नलिखित हैं—

अक्ष—आँख, सर्प, ज्ञान, मंडल, रथ, धुरी, पहिया, आत्मा।

अर्थी—धनी, आकांक्षी, गरमंद।

आपत्ति—विपत्ति, ऐतराज।

चारा—उपाय, जानवरों का भोजन

(स) पर्यावाची शब्द : एक अर्थ को प्रकट करने वाले अनेक शब्दों को पर्यायवाची या समानार्थी कहते हैं। कुछ महत्त्वपूर्ण पर्यायवाची शब्दों की सूची निम्नलिखित है—

अंक—संख्या, भाग, परिच्छेद, नाटक के अंक, गिनती के अंक।

कर—हाथ, सूँड, टैक्स, किरण।

घन—बादल, हथौड़ा, भारी।

चोटी—मूर्धा, सानु, भृंग, शीर्ष।

जन्म—आविर्भाव, उत्पत्ति, उद्‌भव, पैदाइश।

(द) विलोम शब्द : शब्दों के ऐसे युग्म जो परस्पर विरोधी होते हैं, विलोम या विपरीतार्थक होते हैं। उदाहरणार्थ—

सुख—दुख	खोना—पाना	यश—अपयश	लोक—परलोक
आना—जाना	लाभ—हानि	विजय—पराजय	आकाश—पाताल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आविर्भाव—प्रादुर्भाव जीवन—मरण आदि—अनंत आत्मा—परमात्मा

2. इतिहास या स्रोत की दृष्टि से : हिंदी एक समन्वयक व समृद्ध भाषा है। इसमें अनेक विदेशी व स्वदेशी भाषाओं के शब्दों का मिश्रण है। उद्‌गम या स्रोत के आधार पर हिंदी में पाँच प्रकार के शब्द हैं—

(अ) तत्सम—वे शब्द जो संस्कृत भाषा से मौलिक रूप में हिंदी में शामिल कर लिए गए हैं, वे तत्सम शब्द कहलाते हैं। जैसे—सुंदर, कर्म, धर्म, श्रीमान्, भगवान, आयुष्मान्, घनिष्ठ, अस्त, निलय, उत्तीर्ण, अग्नि, बालक आदि।

(ब) तद्‌भव—वे शब्द जो संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश के समय से लेकर समय के साथ परिवर्तित होकर हिंदी में प्रचलित हैं, वे तद्‌भव कहलाते हैं। वास्तव में तद्‌भव शब्द राशि ही हिंदी की अपनी संपत्ति हैं। उदाहरणार्थ—नृत्य से नाच, ग्राम से गाँव, छिद्र से छेद, पक्षी से पंछी, वधू से बहू, ज्येष्ठ से जेठ, कूप से कुँआ, पौत्र से पोता आदि।

(स) देशज या देशी—जिन शब्दों का स्रोत संस्कृत नहीं है तथा जो भारत की जनजातियों या ग्राम्य क्षेत्रों की बोलियों से लिए गए हैं। उदाहरणतया—झाड़ू, मुकुट, चूड़ी, ऊखल, खटखट, मक्खन, भाई-भतीजावाद आदि।

(द) विदेशी—हमारी हिंदी भाषा में कई विदेशी शब्द भी इस प्रकार रच-बस गए हैं कि हमें पता ही नहीं चल पाता कि वे विदेशी हैं या स्वदेशी। ये शब्द अन्य देशों की भाषाओं से आए हैं। उदाहरणार्थ,

तुर्की से—ताप, चम्मच, दरोगा, चिक, कुली, चोगा, कैंची आदि।

पुर्तगाली से—गिरजा, आलू, बालटी, पलटन, गोदाम, चाबी, कमीज, तौलिया आदि।

अंग्रेजी से—बटन, कप, प्लेट, ड्राईवर, पोस्टकार्ड, बिस्कुट, डायरी, पैन, राशन, पुलिस आदि।

3. रचना की दृष्टि से : प्राय: देखने में आता है कि प्रत्येक भाषा में कुछ शब्द तो बने बनाये ही प्रयोग होते हैं जबकि कुछ प्रचलित शब्द जोड़कर बना लिए जाते हैं। ये मुख्यत: तीन प्रकार के होते हैं—

(अ) रूढ़ शब्द—रूढ़ का अर्थ है 'जमा हुआ'। अर्थात् जिन शब्दों के दो सार्थक खंड नहीं किए जा सकते उन्हें रूढ़ शब्द कहा जाता है। उदाहरण के लिए—लोग, जल, रोटी, कपड़ा, मकान आदि।

(ब) यौगिक शब्द—जो शब्द किसी रूढ़ तथा उपसर्ग या प्रत्यय या अन्य शब्द के समन्वय से बनते हैं, उन्हें यौगिक शब्द कहा जाता है। उदाहरण के लिए—निर + धन = निर्धन; आ + जीवन = आजीवन आदि।

(स) योगरूढ़ शब्द—योगरूढ़ का संधिविच्छेद है—योग + रूढ़। अर्थात् वे शब्द जिनमें योग है, अनेक सार्थक खंड हैं फिर भी वे रूढ़ हैं। पारिभाषिक रूप से, जिन यौगिक शब्दों का अर्थ किसी तीसरे अर्थ के लिए रूढ़ हो जाता है, उन्हें योगरूढ़ शब्द कहते हैं। उदाहरणतया—अ (न) + मृत (मरे) = अमृत (एक तत्व)।

3. व्याकरणिक विवेचन की दृष्टि से : व्याकरणिक विवेचन की दृष्टि से शब्दों को निम्नलिखित दो प्रकारों में विभक्त किया जा सकता है—

(अ) विकारी शब्द—लिंग, वचन, कारक के आधार पर जिन शब्दों के रूप परिवर्तित हो जाते हैं, उन्हें विकारी कहते हैं। जैसे—'लड़का' शब्द में स्त्रीलिंग प्रत्यय लगने पर 'लड़की', बहुवचन पुल्लिंग प्रत्यय लगने पर लड़के, लड़कों, आदि पद बनते हैं। हिंदी में विकारी शब्दों के चार भेद माने जाते हैं—संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण व क्रिया।

(ब) अविकारी शब्द—ऐसे शब्द जिनमें लिंग, वचन, विभक्ति, पुरुष, वाच्य आदि के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता, अविकारी शब्द कहलाते हैं। वे अपने मूल रूप में बने रहते हैं। इसी कारण उन्हें अव्यय भी कहा जाता है। जैसे—आज, वहाँ, यहाँ, कौन, धीरे, अपना, किंतु, परंतु, लेकिन आदि।

7. पद

पद की परिभाषा—शब्द जब तक कोश में रहते हैं, शब्द कहलाते हैं। जब वे वाक्य में प्रयोग किए जाते हैं तो 'पद' बन जाते हैं। इनके निम्नलिखित प्रकार हैं—1. संज्ञा, 2. वचन, 3. लिंग, 4. कारक, 5. सर्वनाम, 6. विशेषण व 7. क्रिया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

1. संज्ञा

किसी भी वस्तु, व्यक्ति, गुण, भाव, स्थिति का परिचय कराने वाले शब्द को 'संज्ञा' कहते हैं।

संज्ञा के भेद

संज्ञा के तीन भेद निम्नलिखित हैं—

(अ) व्यक्तिवाचक संज्ञा—जो शब्द किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु, स्थान या प्राणी के नाम का बोध कराते हैं, व्यक्तिवाचक संज्ञा कहलाते हैं। उदाहरण के लिए—राकेश, अंजलि (मनुष्य के नाम), चेतक, गौरा (प्राणियों के नाम), बैंगलूर, चीन (स्थान), गंगा, महाभारत (नदी अथवा वस्तु)।

(ब) जातिवाचक संज्ञा—किसी प्राणी, पदार्थ या समुदाय की पूरी जाति का बोध कराने वाले शब्द जातिवाचक संज्ञा कहलाते हैं। उदाहरण के लिए—पर्वत, कुत्ता, नदी, नाले, समुद्र, पक्षी आदि।

(स) भाववाचक संज्ञा—किसी गुण, दशा, कार्य, स्वभाव या भाव का बोध कराने वाले शब्दों को भाववाचक संज्ञा कहा जाता है। उदाहरण के लिए—बुढ़ापा, जवानी, दुश्मनी, मित्रता, क्रोध, कुरुपता, चालाकी आदि।

2. वचन

शब्द के जिस रूप से उसके एक अथवा अनेक होने का बोध हो, उसे वचन कहते हैं।

वचन के प्रकार

वचन दो प्रकार के होते हैं—

(अ) एकवचन—शब्द का जो रूप उसके एक (संख्या में) होने का बोध कराता है, उसे एकवचन कहते हैं। जैसे—लड़का, पुस्तक, पुरुष आदि।

(ब) बहुवचन—शब्द का वह रूप जो उसे एक से अधिक (बहुसांख्यिक) में होने का बोध कराता है, उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे—गाड़ियाँ, पतंगें, पुस्तकें, लड़के आदि।

3. लिंग

शब्द के जिस रूप से ज्ञात हो कि वह पुरुष जाति का है अथवा स्त्री जाति का, उसे लिंग कहते हैं।

लिंग के प्रकार

लिंग दो प्रकार के होते हैं—

(अ) पुल्लिंग—शब्द का जो रूप उसके पुरुष रूप में होने का बोध कराता है, उसे पुल्लिंग कहते हैं। जैसे—तोता, कौवा, कुत्ता, गायक आदि।

(ब) स्त्रीलिंग—शब्द का वह रूप जो उसका स्त्री रूप में होने का बोध कराता है, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं। जैसे—मैना, कोयल, चिड़िया, गायिका आदि।

4. कारक

कारक का अर्थ है—'करने वाला', 'क्रिया का निष्पादक या संपादक'। संस्कृत व्याकरण में भी यही परिभाषा दी गई है कि जो क्रिया का जनक होता है उसे कारक कहते हैं।

कारक के प्रकार

हिंदी में कारक आठ प्रकार के हैं, जिनके नाम व विभक्तियाँ निम्न प्रकार हैं—

कारक	*लक्षण*	*कारक—प्रत्यय (परसर्ग)*
कर्ता	जिसके द्वारा क्रिया (कार्य) संपन्न की जाती है।	०, ने
कर्म	जिस पर क्रिया का प्रभाव पड़ता हो	०, को
करण	जो क्रिया सम्पन्न करने का साधन हो	से, द्वारा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संप्रदान	जिसके लिए क्रिया की जाती है	को, के लिए
अपादान	क्रिया जिससे अलग होती है	से
संबंध	क्रिया से भिन्न शब्दों के साथ संबंध सूचित करता है	का, के, की, रा, रे, री, ना, ने, नी
अधिकरण	क्रिया जिस पर आधारित रहती है	में, पर
संबोधन	जिस संज्ञा को पुकारा जाए	हे! अरे! ओ!

5. सर्वनाम

संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। सभी नामों के स्थान पर प्रयुक्त होने के कारण भी ये सर्वनाम कहलाते हैं।

सर्वनाम के भेद

सर्वनाम के निम्नलिखित अन्य भेद हैं—

(अ) **पुरुषवाचक सर्वनाम** : जैसे—मैं, हम, हम सब, हम लोग, वे, ये, यह, आप आदि।

(ब) **निश्चयवाचक सर्वनाम** : जैसे—यह, ये, वह, वे, इनका, इन्हें आदि।

(स) **अनिश्चयवाचक सर्वनाम** : जैसे—कोई, कुछ।

(द) **संबंधवाचक सर्वनाम** : जैसे—**जो** सोएगा, **सो** खोएगा; **जिसकी** लाठी, **उसकी** भैंस।

(ध) **प्रश्नवाचक सर्वनाम** : जैसे—कौन, किससे, क्या आदि।

(त) **निजवाचक सर्वनाम** : जैसे—आप, अपने आप, स्वयं, निज, स्वतः आदि।

6. विशेषण

ये संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता प्रकट करने वाले शब्द होते हैं। जैसे—

योग्य छात्रों के **गुणवान** मित्र होते हैं।

उपरोक्त वाक्य में 'योग्य' छात्रों का विशेषण है तथा 'गुणवान' मित्रों का विशेषण है।

विशेष्य व विशेषण—जिसकी विशेषता बताई जाती है उसे 'विशेष्य' या 'विशिष्ट' कहते हैं और जिस शब्द के द्वारा विशेषता बताई जाती है उसे विशेषण कहते हैं। उपरोक्त वाक्य में 'छात्र' व 'मित्र' शब्द विशेष्य हैं।

विशेष्य विशेषण व विधेय विशेषण—वाक्य में स्थान की दृष्टि से विशेषण का प्रयोग दो प्रकार से होता है—विशेष्य विशेषण व विधेय विशेषण। जो विशेषण वाक्य में विशेष्य से पूर्व आते हैं, उसे **विशेष्य विशेषण** कहते हैं; उदाहरणार्थ—योग्य छात्रा, सुंदर लड़की। जो विशेषण विशेष्य तथा क्रिया के बीच में आते हैं, उसे **विधेय विशेषण** कहते हैं; उदाहरणार्थ—वह कपड़ा गीला है। वह छात्र योग्य है।

विशेषण के भेद

विशेषण के निम्नलिखित अन्य भेद हैं—

(अ) **गुणवाचक विशेषण** : उदाहरण के लिए—परिश्रमी, बीमार, बाहरी, पश्चिमी, बूढ़ा, जवान, कर्कश आदि।

(ब) **परिमाणवाचक विशेषण** : उदाहरण के लिए—दस किलो दूध, चार किलो आटा, थोड़ा अनाज आदि।

(स) **संख्यावाचक विशेषण** : उदाहरण के लिए—दस फुट जमीन, दो संतरे आदि।

(द) **सार्वनामिक विशेषण** : उदाहरण के लिए—यह, वह, किसी आदि।

7. क्रिया

किसी कार्य के होने, करने अथवा किसी स्थिति का बोध कराने वाले शब्द क्रिया कहलाते हैं। क्रिया वाक्य का अनिवार्य अंग है। वाक्य रचना क्रिया की अनुपस्थिति में संभव ही नहीं है। क्रिया के मूल रूप को **धातु** कहा जाता है। उदाहरण के लिए—चल, गा, पढ़, रो, देख, लिख, खेल, आ, हँस आदि।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्रिया के प्रकार

क्रिया के मुख्यत: दो प्रकार हैं—(अ) अकर्मक क्रिया, व (ब) सकर्मक क्रिया।

(अ) अकर्मक क्रिया—कर्म रहित क्रिया अकर्मक क्रिया कहलाती है। अकर्मक क्रिया का फल सीधे कर्ता पर पड़ता है। जैसे—

श्याम खेल रहा है।

रमा हँसती है।

(ब) सकर्मक क्रिया—सकर्मक का अर्थ है कर्म के साथ। जिस क्रिया का फल कर्ता को छोड़कर कर्म पर पड़े वह क्रिया सकर्मक क्रिया कहलाती है। जैसे—

राधा मिठाई खाती है।

गायक गीत गाता है।

प्रेरणार्थक क्रिया

संरचना की दृष्टि से यह क्रिया का एक भेद है। प्रेरणार्थक क्रियाएँ वे होती हैं जिनका कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी दूसरे को प्रेरित करके काम करवाए। इनमें दो कर्ता होते हैं। जैसे—

अध्यापक विद्यार्थी से पुस्तक पढ़वाता है।

हमने मजदूरों से अपने घर में कार्य करवाया।

वृत्ति/क्रियार्थ

वृत्ति या क्रियार्थ का भावार्थ है—मन:स्थिति अथवा चित्त। क्रिया के जिस रूप में वक्ता या लेखक की मन:स्थिति का ज्ञान होता है, उसे **वृत्ति** कहते हैं। जैसे—

आज्ञा, आदेश, स्वीकृति, अस्वीकृति, प्रार्थना, उपदेश, संभावना, संदेश, इच्छा, शर्त, कर्तव्य आदि।

आज्ञार्थ—क्रिया के जिस रूप से कार्य-व्यापार की आज्ञा का बोध हो, उसे आज्ञार्थ कहते हैं। इसके अंतर्गत आदेश, स्वीकृति, अस्वीकृति, आग्रह या प्रार्थना तथा उपदेश आदि आते हैं। उदाहरण के लिए—

सदा सच बोलो।

इच्छार्थ—क्रिया के जिस रूप से इच्छा, कामना, आशीर्वाद, वरदान, शाप आदि स्थितियों का बोध हो, उसे इच्छार्थ कहते हैं। उदाहरण के लिए—

आज तो ईश्वर वर्षा कर दें।

निश्चयार्थ—कार्य होने की निश्चितता का बोध क्रियारूप निश्चयार्थ कहलाते हैं। जैसे—

किसान खेत में हल चला रहा है।

संभावनार्थ—अनुमान, संभावना आदि का बोध कराने वाले क्रियारूप संभावनार्थ कहलाते हैं। उदाहरण के लिए—

कल शायद राम आ जाय।

संदेहार्थ—इस क्रिया रूप में कार्य के पूरा होने का लगभग निश्चय होता है, परंतु थोड़ा सा संदेह भी बना रहता है। उदाहरण—

किसान खेत में हल चला रहा होगा।

संकेतार्थ—जिस वाक्य में दो क्रियाएँ इस प्रकार संयुक्त होती हैं कि एक क्रिया दूसरी क्रिया के लिए कारण बनकर प्रस्तुत होती है, वहाँ संकेतार्थ होता है। जैसे—

परिश्रम करोगे तो सफलता मिलेगी।

प्रश्नार्थ—मन में जिज्ञासा या अनिर्णय की स्थिति प्रश्न के रूप में व्यक्त कराने वाले क्रियारूप प्रश्नार्थ कहलाते हैं। जैसे—

कहाँ जाऊँ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काल

क्रिया के जिस रूप से उसके होने के समय का बोध होता है, उसे 'काल' कहते हैं। काल के मुख्यतः तीन भेद होते हैं जो निम्नलिखित हैं—वर्तमान काल; भूतकाल व भविष्यत् काल।

वर्तमान काल—जो समय चल रहा है, वर्तमान काल कहलाता है। उदाहरणतया—सीता खाना बनाती है।

भूतकाल—जो समय बीत चुका है, भूतकाल कहलाता है। उदाहरणतया—राम ने अपना पाठ याद कर लिया।

भविष्यत् काल—आने वाले समय को भविष्यत् काल कहते हैं। जैसे—परीक्षाएँ मार्च में सम्पन्न होंगी।

वाच्य

क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया का मुख्य विषय कर्ता है, कर्म है अथवा भाव, उसे 'वाच्य' कहते हैं। जैसे—

राम हल चला रहा है।

वाच्य के भेद

वाक्य में कर्ता, कर्म अथवा भाव की प्रधानता के आधार पर हिंदी में सामान्यतया वाच्य के तीन भेद माने जाते हैं—(अ) कर्तृवाच्य; (ब) कर्मवाच्य; (स) भाववाच्य।

1. **कर्तृवाच्य**—इसमें क्रिया का सीधा संबंध कर्ता से होता है तथा क्रिया के लिए वचन भी कर्ता के अनुसार ही होता है। इस प्रकार **जिस प्रयोग में क्रिया द्वारा कही गई बात का मुख्य विषय कर्ता हो, उसे कर्तृवाच्य कहते** हैं, जैसे—मैं पुस्तक लिखता हूँ।

2. **कर्मवाच्य**—इसमें क्रिया का सीधा संबंध कर्म से होता है। कर्म की प्रधानता के कारण या तो कर्ता का लोप हो जाता है या कर्ता के उपरांत 'से' अथवा 'द्वारा' का प्रयोग होता है। जैसे—रमेश द्वारा भोजन किया जा चुका है।

3. **भाववाच्य**—जिस वाक्य में कर्ता की प्रधानता न होकर अकर्मक क्रिया की प्रधानता हो, उसे भाववाच्य कहते हैं। उदाहरणतया—अंजलि से गीत नहीं गाया जाता।

अव्यय

अव्यय का अर्थ है 'अविकारी' अर्थात् जिनमें परिवर्तन न आए। इस प्रकार, अव्यय वे शब्द कहलाते हैं जिनके रूप में लिंग, वचन, पुरुष, काल आदि कोई परिवर्तन नहीं करते। हिंदी में निम्न प्रकार के अविकारी शब्द होते हैं—

(अ) क्रिया विशेषण—क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्दों को 'क्रिया विशेषण' कहा जाता है। क्रिया विशेषण निम्नलिखित प्रकार के होते हैं—

1. **कालवाचक** : जैसे—आज, कल, परसों, कभी-कभी, प्रायः।
2. **स्थानवाचक** : जैसे—यहाँ, वहाँ, वहीं, कहीं, ऊपर, नीचे आदि।
3. **रीतिवाचक** : जैसे—तेज, झटपट, अचानक आदि।
4. **परिमाणवाचक** : जैसे—उतना, कितना, जितना आदि।

(ब) समुच्चयबोधक—ऐसे अव्यय शब्द जो दो शब्दों, वाक्यांशों अथवा वाक्यों को परस्पर मिलाते हैं, समुच्चयबोधक कहलाते हैं। इन्हें योजक भी कहा जाता है। उदाहरणार्थ—मैं बाजार गया **और** मैंने फल खरीदे। समुच्चयबोधक के निम्नलिखित दो भेद हैं—

1. **समानाधिकरण समुच्चयबोधक** : समानार्थक अव्यय समान घटकों (वाक्यांशों, वाक्यों, वाक्यांशों) को परस्पर मिलाते हैं। उदाहरण के लिए—और, या, किंतु आदि।

2. **व्यधिकरण समुच्चयबोधक** : व्यधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय एक या अधिक आश्रित उपवाक्यों को प्रधान वाक्यों से जोड़ते हैं। जैसे—यदि मैं दौडकर जाता **तो** उसे बचा लेता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(स) संबंधबोधक—जो अव्यय संज्ञा-सर्वनाम के साथ जुड़कर उनका संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों से बताते हैं, संबंधबोधक कहलाते है। उदाहरणार्थ—

राहुल उसके **साथ** गया है।

रमा घर **के भीतर** गई है।

(द) विस्मयादिबोधक—ऐसे अविकारी शब्द विस्मयाधिबोधक कहलाते हैं जो हर्ष, शोक, आश्चर्य, प्रशंसा, घृणा आदि भावों को प्रकट करते हैं। जैसे—

वाह! कितना मनोरम चित्रण! खबरदार! हिलना नहीं वरना गोली मार दूँगा!

विस्मयादिबोधक अव्ययों के भेद

हर्षसूचक	:	अहा!, आहा!, शाबाश!, बहुत खूब! आदि
शोकसूचक	:	अहा!, हाय!, ओह!, उफ!, अफसोस, राम-राम! आदि
भयसूचक	:	बाप रे बाप!, अरे रे! आदि
आश्चर्यसूचक	:	क्या?, ऐं!, हैं! आदि
तिरस्कारसूचक	:	छिः!, हट!, दुर्!, हट, धिक्! आदि
स्वीकारसूचक	:	हाँ!, जी! जी हाँ, हाँ जी!, बहुत अच्छा!, ठीक! आदि
अभिवादनसूचक	:	नमस्ते!, नमस्कार!, प्रणाम!, सलाम!, बधाई! आदि
चेतावनीसूचक	:	होशियार!, खबरदार!, सावधान! आदि

9. वाक्य रचना

ऐसा सार्थक शब्द समूह, जो व्यवस्थित हो तथा पूरा आशय प्रकट कर सके, ***वाक्य*** *कहलाता है।*

वाक्य के अंग

उद्देश्य व विधेय

कर्ता व क्रिया-पक्ष के अनुसार के दो पक्ष हो जाते हैं—उद्देश्य व विधेय।

उद्देश्य—वाक्य में जिसके विषय में कुछ कहा गया हो, उसे उद्देश्य कहा जाता है।

विधेय—उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाता है, उसे विधेय कहा जाता है।

10. वाक्य के भेद

रचना व अर्थ के आधार पर वाक्यों में भेद किए जाते हैं।

रचना के आधार पर वाक्य के भेद

1. संयुक्त वाक्य—जहाँ दो या दो से अधिक उपवाक्य किसी समुच्चयबोधक (योजक) अव्यय शब्द से जुड़े होते हैं, संयुक्त वाक्य कहलाते हैं। जैसे—उन्होंने सुबह से शाम तक बाजार की खाक छानी, किंतु कार्य सम्पन्न नहीं हुआ।

2. मिश्र वाक्य—जिन वाक्यों की रचना एक से अधिक ऐसे उपवाक्यों से हुई हो, जिनमें एक प्रधान तथा अन्य वाक्य गौण हों, उन्हें मिश्र वाक्य कहते हैं। जैसे—प्रबंधक ने कहा कि कल छुट्टी रहेगी।

3. साधारण वाक्य—मुख्य क्रिया युक्त वाक्यों को साधारण वाक्य कहा जाता है। उदाहरणार्थ—छात्र खेल रहे हैं।

अर्थ के आधार पर वाक्य भेद

अर्थ के आधार पर वाक्यों में निम्न आठ भेद होते हैं—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

1. **विधानवाचक वाक्य**—विधानवाचक वाक्यों से किसी क्रिया के करने या होने की सामान्य सूचना मिलती है।

जैसे—
पृथ्वी सूर्य के चारो ओर परिक्रमा करती है।
सूर्य पूर्व से उगता है।

2. **निषेधवाचक वाक्य**—निषेधवाचक वाक्यों से किसी कार्य के निषेध (न होने) का बोध होता है। जैसे—
मैं आज गृहकार्य नहीं करूँगा।

3. **आज्ञावाचक वाक्य**—आज्ञावाचक वाक्यों से आज्ञा या अनुमति प्रदान करने का बोध होता है। जैसे—
शांत रहिए।
आग्नेयास्त्र प्रतिबंधित हैं।

4. **विस्मयादिवाचक वाक्य**—आश्चर्य (विस्मय), हर्ष, शोक, घृणा आदि के भाव व्यक्त करने वाले वाक्य विस्मयादिवाचक वाक्य होते हैं। जैसे—
अरे! इतनी सुंदर साड़ी!
छि:! कितनी बदबू!

5. **प्रश्नवाचक वाक्य**—प्रश्नवाचक वाक्यों में प्रश्न किया जाता है अर्थात् किसी से कोई बात पूछी जाती है।

जैसे—
क्या आप घर जाओगे?
क्या तुम पढ़ोगे?

6. **इच्छावाचक वाक्य**—इच्छा, आशा या आशीर्वाद को व्यक्त करने वाले वाक्य इच्छावाचक वाक्य कहलाते हैं।

जैसे—
ईश्वर तुम्हारी सहायता करे!
भगवान तुम्हें चिरंजीवी करे!

7. **संकेतवाचक वाक्य**—संकेतवाचक वाक्यों से एक क्रिया के दूसरी क्रिया पर निर्भर होने का बोध होता है।

जैसे—
मैं जल्दी पहुँचता तो ट्रेन में बैठ जाता।
परिश्रम करते तो अवश्य सफल होते।

8. **संदेहवाचक वाक्य**—संदेहवाचक वाक्यों में कार्य के होने में संदेह अथवा संभावना का बोध होता है। जैसे—
संभवत: वह शाम को घर आ जाए।
यह कार्य संभवत: आज संपन्न हो जाऐगा।

11. अलंकार

अलंकार शब्द दो शब्दों के योग से बना है—'अलम्' और 'कार'। 'अलम्' का अर्थ है—भूषण, सजावट अर्थात् जो विभूषित करे अथवा सुंदरता बढ़ाए तथा 'कार' का अर्थ है—करने वाला। इस प्रकार अलंकार शब्द का अर्थ हुआ—वह साधन जिसके द्वारा शोभा उत्पन्न की जाए। जिस प्रकार आभूषण मनुष्य की सौंदर्य वृद्धि में सहायक होते हैं, उसी प्रकार अलंकार काव्य के अलंकरण हेतु प्रयोग किए जाते हैं।

हिंदी भाषा के कुछ महत्वपूर्ण अलंकार निम्नलिखित हैं—

अनुप्रास अलंकार—जहाँ व्यंजनों की आवृत्ति के कारण काव्य में चमत्कार उत्पन्न होता है, वहाँ अनुप्रास अलंकार का प्रयोग होता है। जैसे—कूके लागी कोयलें कदंबन पै बैठी केरी।

यमक अलंकार—जहाँ एक शब्द बारंबार आए किंतु उसका अर्थ बदल जाए, वहाँ यमक अलंकार होता है। उदाहरण के लिए—

माला फेरत जग मुआ, गया न मन का फेर।
कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर।।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यहाँ 'मनका' शब्द दोनों बार भिन्न-भिन्न अर्थ में प्रयोग किया गया है। पहली बार 'माला' के लिए तथा तदुपरांत 'मन के' के लिए। अतः यहाँ यमक अलंकार है।

श्लेष अलंकार—'श्लेष' का अर्थ है—चिपकना। जहाँ एक शब्द के एक से अधिक अर्थ निकलें, वहाँ श्लेष अलंकार होता है। जैसे—

चरन धरत शंका करत, चितवत, चारिहु ओर।
सुबरन को ढूँढत फिरत, कवि कामी अरु चोर।।

यहाँ 'सुबरन' शब्द का अर्थ है—सोना। अच्छे वर्ण एवं अच्छा रंग।

उपमा अलंकार—जब किसी वस्तु या व्यक्ति की विशेषता दर्शाने के लिए उसकी समानता उस गुण में बढ़ी हुई किसी अन्य वस्तु या व्यक्ति से की जाती है, वहाँ उपमा अलंकार होता है। जैसे—

सिंधु सा विस्तृत और अथाह,
एक निर्वासित का उत्साह।

यहाँ 'उत्साह' की 'सिंधु' से समता की गई है, अतः उपमा अलंकार है।

उपमा के अंग—उपमा अलंकार के चार अंग होते हैं—

1. **उपमेय**—जिसकी अन्य वस्तु से समता की जाए (तुलना की जाए), उसे उपमेय कहते हैं। इसे 'विषय' या प्रस्तुत भी कहा जाता है।
   उपर्युक्त पंक्तियों में 'उत्साह' उपमेय है।
2. **उपमान**—जिस समान गुणधर्म वाली वस्तु से उपमेय की समानता या तुलना की जाए, उपमान कहलाता है। इसे 'विषयी' या 'अप्रस्तुत' भी कहते हैं।
   उपर्युक्त पंक्तियों में 'सिंधु' उपमान है।
3. **साधारण धर्म**—उपमेय और उपमान में जो रूप, गुण और कर्म की समानता दिखाई जाती है, वही साधारण धर्म है।
   उपर्युक्त उदाहरण में 'विस्तृत' तथा 'अथाह' साधारण धर्म है।
4. **वाचक शब्द**—उपमेय और उपमान में समानता स्पष्ट करने वाले शब्द को वाचक शब्द कहते हैं।
   उपर्युक्त पंक्तियों में 'सा' वाचक शब्द है।

रूपक अलंकार—जहाँ गुण की अत्यंत समानता दर्शाने हेतु उपमेय व उपमान को 'अभिन्न' अर्थात् 'एक' कर दिया जाए; अर्थात् उपमान को उपमेय पर आरोपित कर दिया जाए, वहाँ रूपक अलंकार होता है। एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत है—

पायो जी मैंने राम रतन धन पायो

इस पंक्ति में 'राम' नाम में 'रतन धन' का आरोप होने से रूपक अलंकार है।

उत्प्रेक्षा अलंकार—जहाँ उपमेय और उपमान की समानता के कारण उपमेय में उपमान की संभावना या कल्पना की जाए, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। इसके वाचक शब्द हैं—जनहु, मनहु, जानो, मानो, मनु, जनु आदि। उदाहरण के लिए—

लताभवन ते प्रगट भे तेहिं अवसर दोउ भाइ।
निकसे जनु जुग विमल बिधु जलद पटल बिलगाइ।।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उपर्युक्त उदाहरण में लताओं के बने भवन से निकलते हुए राम और लक्ष्मण—दोनों भाइयों के संबंध में कहा गया है कि वे ऐसे लगते हैं मानो बादलों के बीच से दो निर्मल चंद्रमा निकल आए हों।

अतिशयोक्ति अलंकार—अतिशयोक्ति अलंकार वहाँ होता है जहाँ किसी गुण या स्थिति का बढ़ा-चढ़ा कर वर्णन किया जाए। जैसे—

हनुमान की पूँछ में लगन न पाई आग।
सारी लंका जल गई गए निसाचर भाग।

यहाँ हनुमान की पूँछ जो लंका दहन हेतु थी, में आग लगने से पहले ही सारी लंका का जल जाना वर्णित है, अतः अतिशयोक्ति अलंकार है।

अन्योक्ति अलंकार—अन्योक्ति अलंकार वहाँ होता है जहाँ किसी उक्ति के माध्यम से किसी अन्य को कोई बात कही जाए। कथन कहीं, निशाना कहीं। जैसे—

जिन दिन देखे वे कुसुम, गई सु बीति बहार।
अब अलि रही गुलाब में अपत कँटीली डार।।

इस दोहे में 'अलि' (प्रस्तुत) को संबोधित करके किसी गुणवान व्यक्ति (अप्रस्तुत) की ओर संकेत दिया गया है। जिस प्रकार पत्र-पुष्प वाला गुलाब का पेड़ अब मात्र कँटीली डार रह गया है वैसे ही वह व्यक्ति जो कभी संपन्न था आज सब कुछ लुट जाने के कारण निर्धन हो गया है। प्रस्तुत में अप्रस्तुत का आरोप होने के कारण यह अन्योक्ति अलंकार का उत्कृष्ट उदाहरण है।

मानवीकरण अलंकार—मानवीकरण अलंकार वहाँ होता है जहाँ मानवेतर प्राणियों या जड़ पदार्थों पर मानवीय भावनाओं का आरोप होता है। जैसे—

दिवावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही
संध्या सुंदरी परी सी धीरे-धीरे

इस पद्यांश में संध्या को सुंदर सी स्त्री की भाँति कार्य करते हुए दिखाया गया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

9

विशेषण—लिंग और वचन का प्रभाव

1. लिंग

परिभाषा—पुरुष जाति अथवा स्त्री-जाति का बोध कराने वाले शब्दरूपों को लिंग कहते हैं। हिंदी भाषा में दो लिंग होते हैं—पुल्लिग व स्त्रीलिंग। पुरुषत्व का बोध कराने वाले शब्दों को पुल्लिग कहा जाता है, जैसे लड़का, देश, हाथी आदि। स्त्रीत्व का बोध कराने वाले शब्दों को स्त्रीलिंग कहा जाता है, जैसे हथिनी, लड़की आदि।

लिंग-भेद संबंधी नियम—हिंदी भाषा में शब्दों के तीन प्रकार हैं। प्रथम प्रकार में वे शब्द आते हैं जो शारीरिक रूप से पुरुष जाति के हैं। द्वितीय प्रकार वे आते हैं जो शारीरिक लक्षणों से ही स्त्री-जाति के हैं। तृतीय प्रकार उनका है जिनमें पुरुष या स्त्री जैसा कुछ भी नहीं है। उदाहरणार्थ—पहाड़, नदी, कंकड़, लकड़ी, कागज आदि।

इन तीसरे प्रकार के शब्दों का लिंग निर्धारण परंपरानुसार किया जाता है। प्राचीन काल से जो शब्द पुल्लिंग रूप में जाने जाते रहे हैं, उन्हें पुल्लिंग शब्दों की कोटि में रख दिया गया है व जो शब्द स्त्रीलिंग रूप में पहचाने जाते हैं, उन्हें स्त्रीलिंग मान लिया गया है। इन शब्दों को स्त्रीलिंग या पुल्लिंग मानने के पीछे कोई सिद्ध कसौटी नहीं है।। सभी नियमों में कुछ न कुछ तो अपवाद तो पाये ही जाते हैं जिनमें से कुछ नीचे प्रस्तुत हैं—

प्राणिवाचक संज्ञाओं का लिंग-निर्धारण

पुरुषत्व का बोध कराने वाली संज्ञाएँ सामान्यत: पुल्लिंग कहलाती हैं तथा स्त्रीत्व का बोध कराने वाली संज्ञाएँ 'स्त्रीलिंग' के रूप में जानी जाती हैं। किंतु कुछ संज्ञाएँ **नित्य पुल्लिंग** व **नित्य स्त्रीलिंग** के रूप में प्रचलित हैं। जैसे—

नित्य पुल्लिग शब्द—खरगोश, तोता, उल्लू, कौआ, भेड़िया, पक्षी, खटमल, मच्छर, पशु आदि।

नित्य स्त्रीलिंग शब्द—लोमड़ी, गिलहरी, सन्तान, सवारी, मछली, मक्खी, मकड़ी, मैना, बुलबुल, भेड़ आदि।

उभयलिंगी शब्द

वर्तमान समाज में कुछ पद-वाची शब्द ऐसे हैं दो स्त्रीलिंग व पुल्लिग दोनों ही रूपों में प्रचलित हैं। इनमें लिंग परिवर्तन नहीं होता है। जैसे—डॉक्टर, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, मंत्री, प्रिंसिपल, मैनेजर आदि।

उभयलिंगी शब्दों में लिंग पहचान क्रिया द्वारा होती है। जैसे—डॉक्टर आ **चुके हैं**। डॉक्टर आ **चुकी हैं**।

वर्तमान समय में महिला अध्यक्ष के लिए 'अध्यक्षा' शब्द का प्रयोग होने लगा है। इसी प्रकार सामान्यत: प्रधानमंत्री महोदया, डॉक्टर महोदया आदि शब्द प्रचलित हैं।

अप्राणिवाचक संज्ञाओं का लिंग निर्धारण

अप्राणिवाचक संज्ञा शब्दों के लिंग की पहचान उनके साथ क्रिया या विशेषण लगाने से होती है। उदाहरणार्थ—

स्कूटर चल गया।	(क्रिया से पहचान)
मेज टूट गई।	(क्रिया से पहचान)
यह कुर्सी अच्छी है।	(विशेषण से पहचान)
यह सोना खोटा है	(विशेषण से पहचान)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अप्राणिवाचक संज्ञाओं में पाए जाने वाले कुछ नियम निम्नलिखित हैं—

पुल्लिंग

- **देशों के नाम**—चीन, पाकिस्तान, भारत, जापान आदि।
- **पेड़ों के नाम**—नीम, बरगद, आम आदि। अपवाद—मेंहदी, चंपा, चमेली आदि।
- **धातुओं के नाम**—सोना, लोहा, लैड आदि। अपवाद—चाँदी, एल्युमीनियम आदि।
- **दिनों के नाम**—सोम, मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र, शनि, रवि।
- **महीनों के नाम**—मार्च, अप्रैल, चैत्र, आषाढ़, दिसंबर, नवंबर। अपवाद—जनवरी, फरवरी, मई, जुलाई।
- **ग्रहों के नाम**—चंद्र, सूर्य, मंगल, शनि, तारा ध्रुव आदि। अपवाद—पृथ्वी।
- **समुद्रों के नाम**—प्रशांत महासागर, हिंद महासागर आदि।
- **अनाजों के नाम**—बाजरा, चना, गेहूँ, चावल, जौ, आटा आदि। अपवाद—मक्का, सरसों, अरहर।
- **पर्वतों के नाम**—हिमालय, राकी, हिंदुकुश, ऐंडीज, अल्टाई आदि।
- **बहुमूल्य पदार्थों के नाम**—हीरा, मोती, जवाहरात, माणिक्य, पन्ना, नगीना आदि। अपवाद—मणि, रूबी।
- **द्रव पदार्थों के नाम**—दूध, अर्क, शरबत, तेल, इत्र, पानी आदि। अपवाद—लस्सी, मदिरा आदि।
- **वर्णों के नाम**—क, ख, ग, घ, च, छ, ज आदि। अपवाद—इ, ई आदि।
- **भाववाचक संज्ञाएँ**—आ, आव, आवा, पा, पन, ना, त्व, वट आदि प्रत्ययों युक्त भाववाचक संज्ञाएँ अधिकांशतः पुल्लिंग होती हैं, जैसे—

आव	बहाव, फैलाव, जमाव, रुकाव, स्राव।
आवा	दिखावा, चढ़ावा, पहनावा।
पा	पुजापा, मोटापा, बुढ़ापा।
पन	बचपन, परायापन, अपनापन, सीधापन।
ना	हँसना, रोना, सोना, खाना, पीना।
त्व	स्वत्व, मित्रत्व, स्वामित्व, तत्व।
वट	लिखावट, सजावट, बनावट आदि।

- प्रायः मोटी, भद्दी, भारी भरकम व बेडौल वस्तुएँ पुल्लिंग रूप में जानी जाती हैं—रस्सा, गहरा गड्ढा, रोड रोलर आदि।
- संस्कृत के पुल्लिंग व नपुंसकलिंग शब्द पुल्लिंग रूप में प्रचलित हैं। जैसे—देव, बालक, मुनि, फल, पुष्प आदि। अपवाद—आत्मा, अग्नि, वायु, ऋतु, जय, पराजय आदि शब्द संस्कृत में पुल्लिंग हैं किंतु हिंदी में स्त्रीलिंग हैं।
- अधिकांश अकारान्त शब्द पुल्लिंग होते हैं जैसे—पहाड़, मोहन, जंगल, मन, ढोंग आदि।
  अपवाद—आँख, नाक, कान, देह आदि।
- आकारान्त शब्द प्रायः पुल्लिंग होते हैं। जैसे—भतीजा, चरखा, बेटा, डंडा, छिलका, घोड़ा आदि।
  अपवाद—मैना, बरखा, दया, लता आदि।

स्त्रीलिंग

- ईकारान्त शब्द प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे—उदासी, बोली, चिट्ठी, नदी, रोटी आदि।
  अपवाद—पानी, मोती, दही व घी।
- भाषाओं के नाम प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे—तमिल, हिंदी, मराठी, असमिया, बंगला आदि।
- **लिपियों के नाम**—ब्राह्मी, शारदा, पाली, देवनागरी, रोमन आदि।
- **नदियों के नाम**—कावेरी, यमुना, रावी, गंगा, चंबल, कृष्णा, गोदावरी आदि।
- **वर्णमाला के अक्षर**—इ, ई, ऋ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- **तिथियों के नाम**—प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पहली, दूसरी आदि।
- **संस्कृत के शब्द**—रजनी, दिशा, आशा, लता, सरिता आदि।
- ति, आई, आवट, ता, आहट, न इत्यादि वाली भाववाचक संज्ञाएँ प्रायः स्त्रीलिंग होती हैं। जैसे—

ति	आकृति
आई	चटाई, मोटाई, जुदाई।
आवट	सजावट, लिखावट, बनावट।
ता	नीचता, क्रूरता, जातीयता।
आहट	घबराहट, चिकनाहट, गर्माहट।
न	सड़न, चुभन।

- 'इया' प्रत्यय युक्त या 'इया' पर समाप्त होने वाले शब्द अधिकतर स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे—बछिया, पुलिया, चिड़िया, दुखिया, बिटिया आदि। अपवाद—डाकिया, भेड़िया, भेदिया।
- कुछ शब्दों के जोड़े अप्राणीवाचक संज्ञाओं में भी होते हैं। जैसे—पहाड़-पहाड़ी, नगर-नगरी, डिब्बा-डिबिया, बोरा-बोरी आदि। इनमें स्त्रीत्व का बोध कराने वाली संज्ञाएँ भी स्त्रीलिंग होती हैं।

लिंग परिवर्तन संबंधी नियम

पुल्लिंग संज्ञाओं को स्त्रीलिंग बनाने हेतु जिन प्रत्ययों को उपयोग में लिया जाता है, स्त्रीवाची प्रत्यय कहे जाते हैं। इस प्रकार के कुछ प्रत्यय निम्नलिखित हैं—

1. 'अ' तथा 'आ' को 'ई' करने से

पुल्लिंग	*स्त्रीलिंग*	*पुल्लिंग*	*स्त्रीलिंग*
पुत्र	पुत्री	नाना	नानी
हिरण	हिरणी	पीला	पीली
दास	दासी	मेंढक	मेंढकी
गधा	गधी	हिरण	हिरणी
गोप	गोपी	मुर्गा	मुर्गी
देव	देवी	घोड़ा	घोड़ी
ब्राह्मण	ब्राह्मणी	मामा	मामी

2. 'अ' तथा 'आ' को 'इया' करने से

पुल्लिंग	*स्त्रीलिंग*	*पुल्लिंग*	*स्त्रीलिंग*
चूहा	चुहिया	लोटा	लुटिया
डिब्बा	डिबिया	बूढ़ा	बुढ़िया
बेटा	बिटिया	बछड़ा	बछिया
चिड़ा	चिड़िया	गुड्डा	गुड़िया

3. व्यवसायवाचक, जातिवाचक व उपनामवाचक शब्दों में 'इन' या 'आइन' जोड़ने से

पुल्लिंग	*स्त्रीलिंग*	*पुल्लिंग*	*स्त्रीलिंग*
चमार	चमारिन	साँप	साँपिन
पापी	पापिन	हलवाई	हलवाइन
नाई	नाइन	जुलाहा	जुलाहिन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहार	कहारिन	दर्जी	दर्जिन
जोगी	जोगिन	माली	मालिन
लुहार	लुहारिन	तेली	तेलिन
धोबी	धोबिन	भंगी	भंगिन

4. संबंध, जाति तथा उपनामवाचक शब्दों में 'आनी' जोड़ने से

पुल्लिंग	*स्त्रीलिंग*	*पुल्लिंग*	*स्त्रीलिंग*
रुद्र	रुद्राणी	पठान	पठानी
इंद्र	इंद्राणी	सेठ	सेठानी
मुगल	मुगलानी	मेहतर	मेहतरानी
क्षत्रिय	क्षत्राणी	चौधरी	चौधरानी

5. प्राणीवाचक व जातिवाचक संज्ञाओं में 'नी' का योग करने से

पुल्लिंग	*स्त्रीलिंग*	*पुल्लिंग*	*स्त्रीलिंग*
जाट	जाटनी	भाट	भाटनी
स्यार	स्यारनी	सिंह	सिंहनी
शेर	शेरनी	भील	भीलनी
राजपूत	राजपूतानी	रीछ	रीछनी
मोर	मोरनी	ऊँट	ऊँटनी

6. तत्सम अकारांत शब्दों के अंत में 'आ' का योग करके

पुल्लिंग	*स्त्रीलिंग*	*पुल्लिंग*	*स्त्रीलिंग*
बाल	बाला	श्याम	श्यामा
कांत	कांता	तनुज	तनुजा
पालित	पालिता	पूज्य	पूज्या
चंचल	चंचला	प्रिय	प्रिया

7. तत्सम् संज्ञा शब्दों में 'अक्' या 'इका' का योग करने से

पुल्लिंग	*स्त्रीलिंग*	*पुल्लिंग*	*स्त्रीलिंग*
नायक	नायिका	संयोजक	संयोजिका
सेवक	सेविका	गायक	गायिका
अध्यापक	अध्यापिका	बालक	बालिका
पाठक	पाठिका	लेखक	लेखिका

8. तत्सम शब्दों में 'ता' का 'त्री' करने से

पुल्लिंग	*स्त्रीलिंग*	*पुल्लिंग*	*स्त्रीलिंग*
दाता	दात्री	वक्ता	वक्त्री
धाता	धात्री	कर्ता	कर्त्री

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

9. तत्सम शब्दों में 'मान' व 'वान' का क्रमशः 'मती' तथा 'वती' करने से

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
बलवान	बलवती	धनवान	धनवती
आयुष्मान	आयुष्मती	शक्तिमान	शक्तिमती
पुत्रवान	पुत्रवती	सौभाग्यवान	सौभाग्यवती
श्रीमान	श्रीमती	भगवान	भगवती

10. 'इनी' प्रत्यय जोड़ने से ('अ' और 'ई' का 'इनी' और 'इणी' होना)

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
यशस्वी	यशस्विनी	हंस	हंसिनी
एकाकी	एकाकिनी	हाथी	हथिनी
मनोहारी	मनोहारिणी	स्वामी	स्वामिनी

11. नित्य पुल्लिंग व नित्य स्त्रीलिंग शब्दों में क्रमश मादा व नर जोड़ने से

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
भालू	मादा भालू	मगरमच्छ	मादा मगरमच्छ
गैंडा	मादा गैंडा	खरगोश	मादा खरगोश
चील	नर चील	मक्खी	नर मक्खी
गिलहरी	नर गिलहरी	छिपकली	नर छिपकली

12. हिंदी में कुछ पुल्लिंग शब्द अपने स्त्रीलिंग शब्द से भिन्न होते हैं।

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
पिता	माता	पुरुष	स्त्री
विद्वान	विदुषी	ससुर	सास
सम्राट	साम्राज्ञी	कवि	कवयित्री
राजा	रानी	वर	वधू
बहन	भाई	पति	पत्नि

13. कुछ सर्वनाम शब्दों का लिंग परिवर्तन इस प्रकार होता है

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
तुम्हारा	तुम्हारी	उसका	उसकी
मेरा	मेरी	तेरा	तेरी

14. बहुत जगह पर एक ही वस्तु के वाचक एक ही भाषा के दो शब्द दो लिंगों में प्रयोग होते हैं

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
प्रेम	प्रीति	वक्ष	छाती
दु:ख	पीड़ा	काठ	लकड़ी
पाषाण	शिला	चाम	खाल
जगत्	जगती	वचन	वाणी
दैव, भाग्य	नियति	डंडा	लाठी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रश्न अभ्यास 1

1. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलिए—

विदुषी	फूफा	बेगम	कवि ....
सम्राट	भाई	साला	उँट ....
पापी	भंगी	रूपवती	अभिमानी ....
लोटा	क्रिया	सदस्य	बंदर ....
राक्षस	कबूतर	कवि	नर्तक ....
निवेदिका	गायक	बाबू	पिता ....
गुड्डा	विधुर	रूपवती	अभिमानी ....

2. निम्नलिखित शब्दों के स्त्रीलिंग रूप लिखिए—

कहार	प्रार्थी	प्राचार्य	युवक ....
देव	मुर्गा	जेठ	चौधरी ....
हलवाई	ब्राह्मण	याचक	भिखारी ....
वीर	देव	गायक	ठाकुर ....
मंत्री	सदस्य	विधुर	बेटा ....
चूहा	शेर	धोबी	लेखक ....
सखा	प्रेमी	नपुंसक	आदमी ....
जीजा	देवर	हाथी	महोदय ....

3. रेखांकित शब्दों का लिंग-परिवर्तन करके रिक्त-स्थानों की पूर्ति करें—

(क) सीरी सभागार में अनेक गायक व .... उपस्थित थे।

(ख) शादियों में घोड़े का नहीं वरन् .... का उपयोग होता है।

(ग) लता का भाई व .... आपस में लड़ रहे हैं।

(घ) कवि सम्मेलन में एक कवि और एक .... को आमंत्रित किया गया। *(A.I. CBSE 1997)*

(ङ) मैं अपने नाती और .... से बातें कर रहा था। *(CBSE 1997)*

(च) नाटक में नायक व .... की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। *(CBSE 1997)*

(छ) गृहस्वामी बहुत देर तक .... की प्रतीक्षा करता रहा। *(A.I. CBSE 1998)*

(ज) बालकों ने अखबार पढ़ा और .... ने पत्रिका। *(CBSE 1998)*

(झ) अध्यापक ने गणित पढ़ाया और .... ने हिंदी। *(CBSE 1998)*

(ट) सम्मेलन में विभिन्न राज्यों से अनेक विद्वान व .... आए हैं। *(CBSE 1999)*

(ठ) फिल्मोत्सव में सर्वश्रेष्ठ अभिनेता और .... को पुरस्कार प्रदान किए गए। *(CBSE 2000)*

(ड) दुर्गस्वामी व .... दोनों ही आए। *(CBSE 2000)*

(ढ) कवि सम्मेलन में चार कवि व एक .... आई हुई थी। *(CBSE 2001)*

(ण) जायसी एक अच्छे कवि हैं व महादेवी एक अच्छी ....। *(CBSE 2001C)*

4. निम्नलिखित शब्दों का लिंग परिवर्तन कीजिए—

(क) पाठक, गुणवती, पुस्तक, वीरांगना, भाग्यवान, देवर *(CBSE 1992)*

(ख) विधुर, सेठानी, कवि, विदुषी *(CBSE 1993)*

(ग) श्रीमान, नायिका, अध्यापक, पुरुष, ग्वाला *(CBSE 1994)*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(झ) पंडा, वधू, कवयित्री, महाराज, जेठ (CBSE 1995)
(ङ) नाती, देवरानी, वर, वृद्धा, सेवक, हिरण (CBSE 1996)
(च) सुनार, धोबी (CBSE 2003)
(छ) वृद्ध, गुरु (CBSE 2006)

5. दस नित्य स्त्रीलिंग शब्द लिखिए।
6. दस नित्य पुल्लिंग शब्द लिखिए।
7. निम्न अप्राणिवाचक संज्ञा शब्दों के लिंग बनाइए—

लंका शस्त्र चंद्रमा चैत्र नदियाँ चाँदी हीरा दाँत

8. पुल्लिंग व स्त्रीलिंग बनाने के मुख्य नियमों को उदाहरण सहित लिखिए।

2. वचन

शब्द के जिस रूप से उसके एक अथवा अनेक होने का बोध हो, उसे वचन कहते हैं। हिंदी में वचन के दो प्रकार हैं—एकवचन तथा बहुवचन।

एकवचन—शब्द के जिस रूप से केवल एक ही व्यक्ति या वस्तु का बोध हो, उसे एकवचन कहा जाता है। उदाहरण के लिए—पुस्तक, कलम, तोता आदि।

बहुवचन—शब्द के जिस रूप से दो या दो से अधिक व्यक्तियों या वस्तुओं का बोध हो, उसे बहुवचन कहा जाता है। उदाहरण के लिए—कौए, पुस्तकें, लड़के आदि।

गणनीय व अगणनीय संज्ञाएँ—गणनीय और अगणनीय भी वचन का एक भेद है। कुछ संज्ञाएँ गिनी जा सकती हैं। जैसे—पुस्तकें, गाड़ी, पुरुष आदि। ये गणनीय संज्ञाएँ हैं। इनके बहुवचन रूप इनके एकवचन रूप से अलग होते हैं।

कुछ संज्ञाएँ ऐसी होती होती हैं जो गिनी नहीं जा सकतीं। उनका माप-तोल ही संभव है। जैसे—दूध, चीनी, दही आदि। इन्हें अगणनीय संज्ञाएँ कहा जाता है। इनके एकवचन व बहुवचन रूप एक जैसे होते हैं।

वचन संबंधी नियम

साधारणतया एक संख्या के लिए एकवचन का और अधिक के लिए बहुवचन का प्रयोग किया जाता है। लेकिन कुछ अपवाद भी हैं जो निम्नलिखित हैं—

- आदर प्रकट करने के लिए एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण—
  (i) गाँधीजी महान देशभक्त थे।
  (ii) सूरदासजी एक प्रसिद्ध कवि थे।
- अपना अधिकार, अभिमान या बड़प्पन दर्शाने हेतु भी एकवचन 'मैं' के स्थान पर बहुवचन 'हम' का उपयोग किया जाता है। उदाहरण—
  (i) हम अपना मुकाम हासिल करके दिखाएँगे।
  (ii) हमारा आदेश सभी को मानना होगा।
- कुछ संज्ञा शब्द सदैव बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं। उदाहरण—लोग, बाल, हस्ताक्षर, आँसू आदि।
  (i) कृपया अपने आँसू पोंछ लें।
  (ii) लोग कहीं जा रहे थे।
  (iii) सुभाषचंद्र बोस ने सभी देशभक्तों से आजादी के लिए रक्त के हस्ताक्षर करवाए।
  (iv) मेरे बाल बहुत लंबे हैं।
- 'तू' एकवचन सर्वनाम का अपमानार्थ या बहुत ही छोटे अथवा प्रिय के लिए ही प्रयोग किया जाता है। सम्मान प्रकट करने के लिए 'तू' के स्थान पर 'तुम' संबोधन किया जाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- जनता, दूध, पानी, वर्षा, पुलिस, भीड़, आग आदि शब्द सदैव एकवचन में प्रयुक्त होते हैं। उदाहरण—
  - (i) भारत में **जनता** का शासन है।
  - (ii) **वर्षा** के कारण बाढ़ आ गई।
  - (iii) सिंचाई हेतु **पानी** चाहिए।
  - (iv) **दूध** एक संपूर्ण आहार है।
  - (v) **आग** सब कुछ जला देती है।
  - (vi) **पुलिस** ने भीड़ को नियंत्रित कर लिया।
- कुछ एकवचन शब्द गण, लोग, जन, वृंद आदि समूहवाचक शब्दों के साथ जुड़कर बहुवचन के रूप में प्रयुक्त होते हैं। उदाहरण—
  - (i) **अध्यापकगण** आदरणीय होते हैं।
  - (ii) **मजदूर** लोग अपने अधिकारों हेतु संघर्षरत हैं।
  - (iii) **छात्रवृंद** परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं।
  - (iv) **प्रजाजन** शासनादेश की अवहेलना कर रहे हैं।
- जिन शब्दों के साथ जाति, दल, सेना, समूह आदि प्रयुक्त होता है, उनका प्रयोग एकवचन में होता है। जैसे—
  - (i) **मनुष्य-जाति** को सभी वन्य जीवों की रक्षा करनी चाहिए।
  - (ii) **छात्र**-दल अध्ययनरत है।
  - (iii) जन-समूह क्षिप्रा नदी पर एकत्र हुआ।
  - (iv) छात्र-**सेना** प्रतियोगिता हेतु मुकाबले के लिए तैयार है।
- भाववाचक संज्ञाएँ एकवचन में प्रयुक्त होती हैं। जैसे—
  - (i) प्रेम किया नहीं **जाता**, हो **जाता** है।
  - (ii) उसकी बोली में **मिठास** है।
  - (iii) प्रकृति की सुंदरता मन को मोह लेती है।
- धातुओं का बोध कराने वाली जातिवाचक संज्ञाएँ एकवचन में प्रयुक्त होती हैं। जैसे—
  - (i) सोना अत्यंत चमकीला है और लोहा मजबूत है।
  - (ii) चाँदी सस्ती है व सोना महँगा।
- अकारांत, इकारांत, ईकारांत, उकारांत, एकारांत, ओकारांत तथा औकारांत पुल्लिंग शब्द परसर्ग-रहित होने पर बहुवचन और एकवचन दोनों स्थितियों में एक-समान रहते हैं; परंतु उनके क्रियारूप यथारूप व्यवहार करते हैं। जैसे—

एकवचन	*बहुवचन*
ग्वालबाल पूजा करता है।	ग्वालबाल पूजा करते हैं।
बधिक आया।	बधिक आए।
डमरू बिक गया।	डमरू बिक गए।
छात्र जाता है।	छात्र जाते हैं।
जौ पड़ा है।	जौ पड़े हैं।
श्रीवास्तव हँस रहा है।	श्रीवास्तव हँस रहे हैं।

वचन बदलने के नियम

नीचे लिखे वाक्य देखिए—

उनके पास **कारें** हैं।   वे **कारों पर** सवार हैं।

अनेक **लड़के** जा रहे थे।   अनेक **लड़कों ने** जाने का कार्यक्रम बनाया।

उपरोक्त वाक्यों में कारें, कारों, लड़के, लड़कों बहुवचन के रूप हैं। अंतर यह है कि 'कारें' और 'लड़के' विभक्ति-रहित हैं, जबकि 'कारों' और 'लड़कों' विभक्ति-सहित हैं। अतः बहुवचन दो प्रकार के होते हैं—

(i) विभक्ति-रहित बहुवचन।

(ii) विभक्ति-सहित बहुवचन।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विभक्ति-रहित बहुवचन बनाने के नियम

पुल्लिंग संज्ञाओं में वचन-परिवर्तन—आकारांत संज्ञाओं के अंतिम 'आ' के स्थान पर 'ए' बना दिया जाता है। जैसे—

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
तमगा	तमगे	इरादा	इरादे
कपड़ा	कपड़े	भाला	भाले
घोड़ा	घोड़े	इशारा	इशारे
भेड़िया	भेड़िये	रास्ता	रास्ते
तेंदुआ	तेंदुए	कसीदा	कसीदे

अपवाद—1. कुछ शब्दों में यह नियम लागू नहीं होता। जैसे—लाला, पापा, काका, मामा, चाचा, नाना आदि **संबंध सूचक** शब्दों में। इसके अलावा पंडा, ओझा, दरोगा जैसे **पदसूचक** शब्दों में भी यह नियम लागू नहीं होता है।

कुछ अन्य **आकारांत संस्कृत पुल्लिंग** शब्दों में भी यह नियम लागू नहीं होता है। जैसे—पिता, युवा, राजा, कर्ता, चंद्रमा, देवता आदि।

2. अकारांत, इकारांत, ईकारांत, उकारांत व ऊकारांत पुल्लिंग शब्दों के दोनों वचनों के रूप एक-जैसे ही रहते हैं। जैसे—

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
कवि	कवि	योगी	योगी
साधु	साधु	बालक	बालक

स्त्रीलिंग संज्ञाओं में वचन परिवर्तन

1. 'अ' को 'एँ'—अकारांत स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अंत में आने वाले 'अ' को 'एँ' बना देते हैं। जैसे—

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
कलम	कलमें	बात	बातें
पुस्तक	पुस्तकें	आँख	आँखें
रात	रातें	बहन	बहनें
किताब	किताबें	माँग	माँगें

2. 'याँ'—इकारांत स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अंत में 'याँ' जोड़कर एकवचन को बहुवचन कर दिया जाता है। जैसे—

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
नीति	नीतियाँ	समिति	समितियाँ
तिथि	तिथियाँ	लिपि	लिपियाँ
राशि	राशियाँ	पंक्ति	पंक्तियाँ
कुरीति	कुरीतियाँ		

3. 'ई' को 'इयाँ'—इकारांत स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अंत में 'ई' को 'इयाँ' बना देते हैं। जैसे—

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
टोपी	टोपियाँ	रोटी	रोटियाँ
नदी	नदियाँ	सखी	सखियाँ
थाली	थालियाँ	लड़की	लड़कियाँ
हथिनी	हथिनियाँ	जाली	जालियाँ

4. अनुनासिक-(ँ)—'या' से अंत होने वाली संज्ञाओं को बहुवचन बनाने हेतु अंत में अनुनासिक (ँ) जोड़ दिया जाता है। जैसे—

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
गुड़िया	गुड़ियाँ	डिबिया	डिबियाँ
खटिया	खटियाँ	लुटिया	लुटियाँ
चुहिया	चुहियाँ	पुलिया	पुलियाँ

5. 'ए'—ऊकारांत, आकारांत, औकारांत आदि शेष स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अंत में 'एँ' जोड़कर बहुवचन बनाए जाते हैं। अंतिम 'ऊ' को समाप्त कर दिया जाता है। जैसे—

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
माता	माताएँ	कन्या	कन्याएँ
गाथा	गाथाएँ	लता	लताएँ
बहू	बहुएँ	कविता	कविताएँ
सभा	सभाएँ	वस्तु	वस्तुएँ

विभक्ति-सहित संज्ञाओं के बहुवचन बनाने के नियम

1. 'ओं' का समावेश—संज्ञाओं के अंतिम 'अ' व 'आ' के स्थान पर 'ओं' कर दिया जाता है। जैसे—

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
घंटा	घंटों	महीना	महीनों
सैंकड़ा	सैंकड़ों	देवता	देवताओं
साल	सालों	हजार	हजारों
मील	मीलों	सदी	सदियों

2. 'आ' से समाप्त होने वाले जिन शब्दों के विभक्ति-रहित रूपों के बहुवचन में कोई परिवर्तन नहीं होता, उनके विभक्ति-सहित रूपों के अंत में बहुवचन बनाने के लिए 'ओं' प्रत्यय लगता है। जैसे—

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
माता	माताओं	कन्या	कन्याओं
लता	लताओं	कविता	कविताओं
राजा	राजाओं	गाथा	गाथाओं

3. उकारांत या ऊकारांत शब्दों के अंत में 'ओं' लगाकर बहुवचन बनाए जाते हैं। ऐसी स्थिति में 'ऊ' का 'उ' हो जाता है। जैसे—

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
आलू	आलुओं	बहू	बहुओं
डाकू	डाकुओं	चाकू	चाकुओं
कचालू	कचालुओं	साधू	साधुओं

4. ओं—'अ' और 'आ' से समाप्त होने वाले शब्दों में संबोधन करते समय अंतिम स्वर बदलकर 'ओ' हो जाता है। उदाहरणार्थ—

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
बहन	बहनों	लोग	लोगों
लड़का	लड़कों	कन्या	कन्याओं

5. यों—'इ' तथा 'ई' से अंत होने वाले विभक्ति युक्त बहुवचन में 'यों' लगता है। ऐसी स्थिति में 'ई' का परिवर्तन 'इ' में हो जाता है। जैसे—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
गाड़ी	गाड़ियों	कहानी	कहानियों
रात्री	रात्रियों	लड़की	लड़कियों
नदी	नदियों	व्यक्ति	व्यक्तियों
दवाई	दवाइयों	रानी	रानियों

6. 'यों'—संबोधन करते समय इकारांत व ईकारांत शब्दों में 'यों' का समावेश हो जाता है। जैसे—

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
नारी!	नारियों!	साली!	सालियों!
सखी!	सखियों!	चाची!	चाचियों!
पड़ोसी!	पड़ोसियों!	मामी!	मामियों!

प्रश्न अभ्यास 2

1. निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलिए—

चिड़िया	....	श्रीमती	....	वधू	....	धोबी	....
ग्वालिन	....	परीक्षा	....	झील	....	शक्तियाँ	....
आँख	....	लड़की	....	नातिन	....	डिबिया	....
पुस्तक	....	ग्रंथ	....	माला	....	झाड़ू	....
सीना	....	कमेटी	....	कुत्ता	....	पड़ौसी	....
माला	....	सेज	....	कलम	....	विद्यालय	....
पुस्तक	....	गाय	....	भैंस	....	टहनी	....
पड़ोसिन	....	पापी	....	देवरानी	....	पत्नी	....
पति	....	दादा	....	चाचा	....	मामी	....
कापी	....	चमारिन	....	अध्यापिका	....		

2. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्दों के वचन बदलकर फिर से वाक्य-रचना करें—
   (i) जनतंत्र में समाचार-पत्र का बहुत महत्त्व है।
   (ii) हमनें चिडियाघर में हाथी, शेर, बंदर, भालू, मगरमच्छ और शेर के दर्शन किए।
   (iii) हमारी गली में कुत्ते, सुअर और बंदर देखे जा सकते हैं।
   (iv) लड़के खेलने जा रहे हैं।
   (v) आवाज सुनकर चिडिया उड़ गई।
   (vi) हमें बाजार से पुस्तक खरीदनी है।
   (vii) हमारा सैनिक विश्वास के योग्य है।
   (viii) हमारे नेता, अभिनेता, और नायक कर्तव्य से जी चुराते हैं।
   (ix) बेईमान नेता और भ्रष्ट कर्मचारी के होते देश की व्यवस्था नहीं सुधर सकती।
   (x) अच्छा लड़का और योग्य पत्नी पारिवारिक जीवन के दो वरदान हैं।
3. निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन-रूप लिखिए—

डाकू	....	कक्षा	....	कुर्सी	....	मुनि	....
कथा	....	बहू	....	रानी	....	गाय	....
गुड़िया	....	माला	....	चिड़िया	....	कहानी	....
शिक्षक	....	महिला	....	गृहिणी	....	आँसू	....

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

युवा	....	विद्यार्थी	....	शत्रु	....	धोबी	....
जाति	....	बस	....	कमरा	....	परछाईं	....
दरवाजा	....	नदी	....	आँख	....	कान	....

4. वचन बदलिए—
   (i) माला, चिड़िया, विद्यार्थी, शत्रु, गाय *(CBSE 1992)*
   (ii) बहू, राशि *(CBSE 1993)*
   (iii) कटोरी, नदी, पुस्तक, स्त्री, लता, आँसू, कविता, दासी
   (iv) वस्तु, समिति *(CBSE 1992F)*
   (iv) बेटी, धोबी, वधू, उल्लू *(A.I. CBSE 2000)*
5. आदरसूचक (आदरार्थक) बहुवचन से क्या तात्पर्य है? उदाहरण सहित समझाइए।
6. निम्न वाक्यों के वचन बदलिए—
   (i) विद्यार्थी ने गाना गया।
   (ii) लड़की विद्यालय जा रही है।
7. पुल्लिंग व स्त्रीलिंग का अंतर उदाहरण सहित बताइए।

3. विशेषण

ये संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता प्रकट करने वाले शब्द होते हैं। जैसे—

योग्य छात्रों के मित्र **गुणवान** होते हैं।

उपरोक्त वाक्य में 'योग्य' छात्रों का विशेषण है तथा 'गुणवान' मित्रों का विशेषण है। इसी प्रकार एक अन्य वाक्य प्रस्तुत है—**चरित्रवान** व्यक्ति **अच्छे** कर्म करता है। इस वाक्य में 'चरित्रवान' व्यक्ति की विशेषता है जबकि 'अच्छे' व्यक्ति द्वारा किए गए कर्म की विशेषता है।

विशेष्य व विशेषण—जिसकी विशेषता बताई जाती है उसे 'विशेष्य' या 'विशिष्ट' कहते हैं और जिस शब्द के द्वारा विशेषता बताई जाती है उसे विशेषण कहते हैं। प्रथम वाक्य में 'छात्र' व 'मित्र' शब्द विशेष्य हैं।

उद्देश्य/विशेष्य विशेषण व विधेय विशेषण—वाक्य में स्थान की दृष्टि से विशेषण का प्रयोग दो प्रकार से होता है—विशेष्य विशेषण व विधेय विशेषण। जो विशेषण वाक्य में विशेष्य से पूर्व आते हैं, उसे **विशेष्य विशेषण** कहते हैं। उदाहरणार्थ—योग्य छात्रा, सुंदर लड़की। जो विशेषण विशेष्य तथा क्रिया के बीच में आते हैं, उसे **विधेय विशेषण** कहते हैं; उदाहरणार्थ—वह कपड़ा गीला है। वह छात्र योग्य है। उदाहरण—

चतुर बालक **अपना** कार्य कर लेते हैं। (विशेष्य विशेषण)
वह बालक **चतुर** है। (विधेय विशेषण)

'उद्देश्य विशेषण' उद्देश्य भाग का अंश होता है जबकि 'विधेय विशेषण' वाक्य के विधेय भाग का अंश होता है। ज्ञातव्य है कि विशेषण चाहे उद्देश्य विशेषण हो या विधेय विशेषण, दोनों ही स्थितियों में उनका रूप संज्ञा या सर्वनाम के अनुसार बदलता है।

उद्देश्य विशेषणों के रूप

लंबा लड़का जा रहा है। (विधेय विशेषण दोनों पुल्लिंग एकवचन)
लंबे लड़के जा रहे हैं। (विशेषण-विशेष्य दोनों पुल्लिंग बहुवचन)
लंबी युवती खेल रही है। (विशेषण और विशेष्य दोनों स्त्रीलिंग विशेषण)
लंबी युवतियाँ खेल रही हैं। (स्त्रीलिंग विशेषण समान रहता है)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विधेय विशेषणों के रूप

वह लड़का लंबा है। (विधेय-विशेष्य दोनों पुल्लिंग एकवचन)
वे लड़के लंबे हैं। (विशेषण-विशेष्य दोनों पुल्लिंग बहुवचन)
वह युवती मोटी है। (विशेषण और विशेष्य दोनों स्त्रीलिंग विशेषण)
वे युवतियाँ मोटी हैं। (स्त्रीलिंग विशेषण समान रहता है)

प्रविशेषण

जो विशेषण विशेषणों की भी विशेषता बताते हैं, वे प्रविशेषण कहलाते हैं। जैसे—

मोहन **बहुत** <u>सुंदर</u> बालक है।

उपरोक्त वाक्य में रेखांकित भाग विशेषण है तथा 'बहुत' प्रविशेषण क्योंकि यह 'सुंदर' की विशेषता प्रकट करता है। कुछ अन्य उदाहरण निम्नलिखित हैं—

वह **बहुत** वीर है।
सुनीता **अत्यंत** सुंदर है।
वह **कठिन** परिश्रमी है।
यह जीवनी **अत्यंत** मधुर है।

यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि क्रियाविशेषणों की विशेषता प्रकट करने वाले विशेषणों को भी 'प्रविशेषण' कहा जाता है। जैसे—

राहुल द्रविड़ **बहुत** धीमा खेलता है।
आज हॉकी का खेल **बहुत अधिक** लंबा नहीं चल पाया।

विशेषण के भेद

अर्थ की दृष्टि से विशेषण के चार भेद होते हैं—

1. गुणवाचक विशेषण
2. परिमाणवाचक विशेषण
3. संख्यावाचक विशेषण
4. सार्वनामिक विशेषण

1. गुणवाचक विशेषण—संज्ञा या सर्वनाम के गुण या दोष का बोध कराने वाले शब्द गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं। जैसे—वह <u>छोटे कद</u> का व्यक्ति है। इस वाक्य में रेखांकित पद गुणों का बोध करा रहा है।

गुणवाचक विशेषण के अंतर्गत निम्नलिखित प्रकार के विशेषण पाए जाते हैं—

गुणबोधक	परिश्रमी, अच्छा, ज्ञानी, विद्वान, सरल।
दोषबोधक	अभिमानी, कंजूस, पापी, दुष्ट, झूठा।
स्वादबोधक	नमकीन, खट्टा, मीठा, कड़वा, तीखा।
गंधबोधक	सुगंधित, दुर्गंधित, बदबूदार, खुशबूदार।
रंगबोधक	नीला, पीला, हरा, काला, लाल।
आकारबोधक	छोटा, मोटा, गोल, चौकोर, लंबा।
स्पर्शबोधक	मुलायम, नरम, गुदगुदा, सख्त, कठोर।
ध्वनिबोधक	कर्कश, मधुर।
कालबोधक	दोपहर, कल, नवीन, प्राचीन, साप्ताहिक, मासिक।
स्थानबोधक	विदेशी, राजस्थानी, शहरी, ग्रामीण।
दशाबोधक	बीमार, रोगी, निरोगी, बिगड़ा हुआ।
स्थितिबोधक	पाँचवा, सातवाँ, अंतिम, अगला, पिछला।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दिशाबोधक भीतरी, बाहरी, पूर्वी, उत्तरी, पश्चिमी।
अवस्थाबोधक सूखा, गीला, नम, तला हुआ, बूढ़ा, जवान, जला हुआ।

2. संख्यावाचक विशेषण—संज्ञा या सर्वनाम की संख्या संबंधी विशेषता का बोध कराने वाले विशेषणों को संख्यावाचक विशेषण के नाम से जाना जाता है। ये दो प्रकार के होते हैं—(क) निश्चित संख्यावाचक; (ख) अनिश्चित संख्यावाचक।

(क) निश्चित संख्यावाचक—जिन विशेषणों से निश्चित संख्या का बोध होता है, वह निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं। जैसे—दो, चौथा, तिगुना आदि। इनके भी निम्नलिखित छः भेद होते हैं—

(i) **अंकबोधक**—जिन विशेषणों से अंक या गिनती का बोध हो। उदाहरण के लिए, एक, दो, आठ, आधा, चौथाई, साढ़े छः आदि, सवा नौ आदि। अंकबोधक विशेषणों के भी दो विभाजन किए जा सकते हैं—
अपूर्ण संख्याबोधक—½ (आधा), ¼ (एक-चौथाई), ¾ (तीन चौथाई) आदि।
पूर्ण संख्याबोधक—0, 1, 2, 3, 4, 5 आदि पूर्ण संख्याएँ।

(ii) **क्रमबोधक**—जिन विशेषणों से क्रम का बोध हो। उदाहरण के लिए, पहला, दूसरा, तीसरा, आठवाँ आदि।

(iii) **आवृत्तिबोधक**—किसी संज्ञा/सर्वनाम की तहों या गुणन का बोध कराने वाले विशेषण आवृत्ति-बोधक कहलाते हैं। उदाहरण के लिए, दूना, तिगुना, इकहरा आदि।

(iv) **समुदायबोधक**—कुछ संख्याओं के इकट्ठे समूह का बोध कराने वाले विशेषण समुदायबोधक विशेषण होते हैं। उदाहरण के लिए, तीनों, दोनों, सभी, सारे के सारे आदि।

(v) **समुच्चयबोधक**—ये विशेषण संज्ञा या सर्वनाम के किसी प्रचलित समुच्चय को प्रकट करने वाले होते हैं। जैसे—दर्जन, ग्रुस, रिम, पच्चीसी, जोड़ा, सैंकड़ा आदि।

(vi) **प्रत्येकबोधक**—प्रत्येक अथवा विभाग का बोध कराने वाले विशेषण प्रत्येक-बोधक विशेषण कहलाते हैं। उदाहरण के लिए—हर एक, प्रत्येक, हर मास, एक-एक, तीन-तीन आदि।

(ख) अनिश्चित संख्यावाचक—ये विशेषण संज्ञा या सर्वनाम को किसी निश्चित संख्या का बोध नहीं कराते, बल्कि उसका अस्पष्ट अनुमान प्रस्तुत करते हैं। जैसे—कुछ, थोड़ा सा, बहुत सारा आदि। कुछ अनिश्चित संख्यावाचक विशेषणों के वाक्यों में प्रयोग नीचे प्रस्तुत हैं:

थोड़ा सा दही कम रह गया।
तूफान बहुत **जोरों** पर है।
इस कार्य में **बहुत सारा** समय व्यर्थ हो गया।
मुझे **कुछ** रुपये चाहिएँ।

3. परिमाणवाचक विशेषण—जो अपने विशेष्य की मात्रा या नाप-तौल संबंधी विशेषता बताते हैं, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहा जाता है। जैसे—दस किलो दूध, चार किलो आटा, थोड़ा अनाज, चार गज जमीन आदि। ये भी दो प्रकार के होते हैं—(क) निश्चित परिमाणवाचक; (ख) अनिश्चित परिमाणवाचक।

(क) निश्चित परिमाणवाचक—जो शब्द अपने विशेष्य की निश्चित मात्रा या नाप-तौल बताते हैं, वे निश्चित परिमाणवाचक कहलाते हैं। जैसे—दो किलो आलू, दस किलो पपीता आदि।

(ख) अनिश्चित परिमाणवाचक—जो शब्द अपने विशेष्य की निश्चित मात्रा या नाप-तौल नहीं बताते हैं, वे अनिश्चित परिमाणवाचक कहलाते हैं। जैसे—कुछ आलू, थोड़ा सा पपीता आदि।

संख्यावाचक विशेषण और परिमाणवाचक विशेषण में अंतर

संख्यावाचक विशेषण का प्रयोग गणनीय वस्तुओं के लिए होता है, जबकि परिमाणवाचक विशेषण का प्रयोग अगणनीय वस्तुओं के लिए किया जाता है। सेब, पेंसिल, किताब, आदि गणनीय हैं, जबकि चावल, गेहूँ, दूध, तेल आदि अगणनीय वस्तुएँ हैं। उदाहरण हेतु—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आज उसने अधिक संतरे खा लिए। (संख्या)

थोड़ी दही मेरे लिए रख देना। (परिमाण)

4. सार्वनामिक विशेषण—विशेषण के रूप में प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं। जैसे—वह बल्ब टूट जाएगा। यहाँ 'वह' सर्वनाम 'बल्ब' की विशेषता प्रकट कर रहा है। अतः यह सार्वनामिक विशेषण है। सार्वनामिक विशेषण के चार भेद हैं—

(क) निश्चयवाचक/संकेतवाचक सार्वनामिक विशेषण—संज्ञा या सर्वनाम की ओर निश्चयात्मक संकेत करने वाले विशेषण निश्चयात्मक/संकेतात्मक सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं। उदाहरणार्थ—

यह पुस्तक रख दो।

इसे नहीं, **उस** पुस्तक को पूरा करो।

(ख) अनिश्चयवाचक सार्वनामिक विशेषण—संज्ञा या सर्वनाम की ओर अनिश्चयात्मक संकेत करने वाले विशेषण अनिश्चयात्मक सार्वनामिक विशेषण होते हैं। जैसे—

कोई महिला मिलने आई है।

किसी आतंकवादी को पुलिस ने पकड़ लिया है।

(ग) प्रश्नवाचक सार्वनामिक विशेषण—संज्ञा या सर्वनाम से संबंधित प्रश्नों का बोध कराने वाले विशेषण प्रश्नवाचक सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं। जैसे—

कौन आया है?

अपने साथ **किसे** लाए हो?

(घ) संबंधवाचक सार्वनामिक विशेषण—जो विशेषण एक संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य में प्रयुक्त अन्य संज्ञा या सर्वनाम शब्द के साथ जोड़ते हैं। जैसे—

जिस गाँव जाना नहीं, **उसके** कोस मत गिनो।

जिस व्यक्ति को तुम जानते नहीं, **उसके** विषय में जानकर क्या करना।

सार्वनामिक विशेषण व सर्वनाम में अंतर

यदि सार्वजनिक विशेषण का प्रयोग संज्ञा या सर्वनाम शब्द से पहले हो, तो यह सार्वनामिक विशेषण कहलाएगा और यदि अकेले (संज्ञा के स्थान पर) प्रयुक्त हो तो सर्वनाम कहलाएगा। जैसे—

यह विद्यार्थी अति प्रखर बुद्धि वाला है। (सार्वनामिक विशेषण)

उसके परिवार के सदस्य सौम्य स्वाभाव के हैं। (सर्वनाम)

विशेषणों की तुलना

दो या दो से अधिक वस्तुओं की विशेषताओं की तुलना करना विशेषणों की तुलना कहलाती है। तुलना की तीन स्थितियाँ होती हैं—1. मूलावस्था; 2. उत्तरावस्था; 3. उत्तमावस्था।

1. मूलावस्था—इस अवस्था में विशेषण किसी दूसरे विशेष्य के गुणों की सापेक्षता में नहीं आता, बिना किसी से तुलना किए अपने मूल रूप में रहता है। जैसे—सीता सुंदर है। राजू मधुर गाता है। राम नाटे कद का है।

2. उत्तरावस्था—इस अवस्था में दो वस्तुओं का तुलनात्मक रूप प्रस्तुत होता है। एक वस्तु को दूसरी वस्तु से बढ़-चढ़कर बताया जाता है। जैसे—राधा गीता से अच्छा गाती है। राम श्याम से अधिक लंबा है।

तुलनात्मक रूप प्रस्तुत करने के लिए 'से' की अपेक्षा 'की तुलना में', 'से बढ़कर', जैसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है। जैसे— राधा सीता **की अपेक्षा** मधुर गाती है।

अनुराधा की **तुलना में** अलका अच्छा नाचती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3. उत्तमावस्था—इस अवस्था में किसी प्राणी, व्यक्ति या वस्तु की तुलना अन्य बहुत से प्राणी, व्यक्ति अथवा वस्तुओं से की जाती है और उन सभी में से उसे सबसे अच्छा या बुरा बताया जाता है। तुलना की सीमा निर्धारित करने के लिए सब में, सबसे, सभी में, गाँव में, शहर में आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है। जैसे—

श्याम सबसे अच्छा लड़का है।

इस पूरे शहर में यह बाग देखने योग्य है।

इसके अलावा तुलनात्मक विशेषता को स्पष्ट करने के लिए 'तर' और 'तम' प्रत्यय लगाकर विशेषणों की रचना की जाती है। इस प्रकार के कुछ शब्द नीचे दिए जा रहे हैं—

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
प्रिय	प्रियतर	प्रियतम
मधुर	मधुरतर	मधुरतम
तीव्र	तीव्रतर	तीव्रतम
सुंदर	सुंदरतर	सुंदरतम
निकृष्ट	निकृष्टतर	निकृष्टतम
योग्य	योग्यतर	योग्यतम
लघु	लघुतर	लघुत्तम
न्यून	न्यूनतर	न्यूनतम
महान्	महानतर	महानतम
बलवान्	बलवत्तर	बलवत्तम
गुरू	गुरूतर	गुरूतम
कठोर	कठोरतर	कठोरतम
उच्च	उच्चतर	उच्चतम
श्रेष्ठ	श्रेष्ठतर	श्रेष्ठतम
बृहत्	बृहत्तर	बृहत्तम
दृढ़	दृढ़तर	दृढतम
कोमल	कोमलतर	कोमलतम
कुटिल	कुटिलतर	कुटिलतम
उत्कृष्ट	उत्कृष्टतर	उत्कृष्टतम

कुछ फारसी शब्द भी शब्दांश परसर्गों के रूप में हिंदी में प्रयोग किए जाते हैं। उदाहरणार्थ—

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
कम	कमतर	कमतरीन
बद	बदतर	बदतरीन
अच्छा	बेहतर	बेहतरीन

विशेषणों की रचना

कुछ शब्द मूल रूप में ही विशेषण होते हैं, लेकिन कुछ शब्दों के मूल रूप में प्रत्यय, उपसर्ग या समास का प्रयोग कर नए विशेषणों की रचना की जाती है। ऐसे बनाए गए विशेषणों को **व्युत्पन्न विशेषण** कहते हैं। संज्ञा, सर्वनाम तथा क्रिया (धातुओं) में उपसर्ग तथा प्रत्यय लगाकर उनसे बने नए शब्द आगे दिए जा रहे हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उपसर्गों से विशेषण रचना

शब्द में **अ** जोड़कर = अयोग्य, अविकसित, असमर्थ, असमय, अबोध, अविचल, अपूज्य।
शब्द में **स** जोड़कर = सपूत, सफल, सजल, सजीव, सचित्र।
शब्द में **निः** जोड़कर = निर्दोष, निर्गुण, निर्लज्ज, निर्मम, निर्भय, निर्लिप्त, निर्विकार।
शब्द में **नि** जोड़कर = निडर, निकम्मा, निपूती।
शब्द में **दुः** जोड़कर = दुर्जन, दुर्बल, दुःसह, दुर्दिन।
शब्द में **दु** जोड़कर = दुधारा, दुमुँहा, दुबला।
शब्द में **बे** (उर्दू) जोड़कर = बेकसूर, बेवजह, बेईमान, बेवकूफ, बेहोश।
शब्द में **ला** (उर्दू) जोड़कर = लावारिस, लाइलाज, लाचार, लापता।

प्रत्ययों से विशेषण रचना

	शब्द	*विशेषण*	*शब्द*	*विशेषण*
इक—	अर्थ	आर्थिक	मास	मासिक
	विज्ञान	वैज्ञानिक	पक्ष	पाक्षिक
	पुराण	पौराणिक	न्याय	न्यायिक
	भूत	भौतिक	दैव	दैविक
	आत्मा	आत्मिक	अध्यात्म	आध्यात्मिक
	अंश	आंशिक	अलंकार	आलंकारिक
	इतिहास	ऐतिहासिक	अंतर	आंतरिक
	इच्छा	ऐच्छिक	देह	दैहिक
	नगर	नागरिक	प्रदेश	प्रादेशिक
	बुद्धि	बौद्धिक	मंगल	मांगलिक
	संसार	सांसारिक	संप्रदाय	सांप्रदायिक
	करुणा	कारुणिक	कल्पना	काल्पनिक
	धर्म	धार्मिक	दिन	दैनिक
	सप्ताह	साप्ताहिक	रजस्	राजसिक
	सत्व	सात्विक	तमस्	तामसिक
	परलोक	पारलौकिक	इहलोक	ऐहलौकिक
	वेद	वैदिक	लोक	लौकिक
	सेना	सैनिक	नीति	नैतिक
	समाज	सामाजिक	साहित्य	साहित्यिक
	मूल	मौलिक	आत्मा	आत्मिक
	परिवार	पारिवारिक	क्रम	क्रमिक

	संज्ञा शब्द	*विशेषण*	*संज्ञा शब्द*	*विशेषण*
इत—	पुष्प	पुष्पित	पिपासा	पिपासित
	तरंग	तरंगित	पल्लव	पल्लवित
	ध्वनि	ध्वनित	अंक	अंकित
	कुसुम	कुसुमित	संचय	संचित

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संकोच	संकुचित	फल	फलित
मोह	मोहित	उपेक्षा	उपेक्षित
निंदा	निंदित	योजना	योजित
सम्मान	सम्मानित	द्रव	द्रवित
लक्ष्य	लक्षित	अपेक्षा	अपेक्षित
निर्वासन	निर्वासित	घृणा	घृणित

इम—

संज्ञा शब्द	विशेषण	संज्ञा शब्द	विशेषण
अंतर	अंतरिम	रक्त	रक्तिम
स्वर्ण	स्वर्णिम	आदि	आदिम
अंत	अंतिम	रत्न	रत्निम

अव—

संज्ञा शब्द	विशेषण	संज्ञा शब्द	विशेषण
रघु	राघव	विष्णु	वैष्णव
कुरु	कौरव	गर्व	गौरव

ई—

संज्ञा शब्द	विशेषण	संज्ञा शब्द	विशेषण
भीतर	भीतरी	विनय	विनयी
विजय	विजयी	प्रेम	प्रेमी
दु:ख	दु:खी	पाप	पापी
अधिकार	अधिकारी	भोग	भोगी
रोग	रोगी	मौन	मौनी
अनुभव	अनुभवी	अनुराग	अनुरागी
ज्ञान	ज्ञानी	ऋण	ऋणी
उपयोग	उपयोगी	पराक्रम	पराक्रमी
विरोध	विरोधी	संयम	संयमी
बल	बली	देहात	देहाती
गुण	गुणी	योग	योगी
बाहर	बाहरी	लोभ	लोभी
भोग	भोगी	लालच	लालची
क्रोध	क्रोधी	कपट	कपटी
उपकार	उपकारी	नाम	नामी
धन	धनी	दान	दानी
पेशावर	पेशावरी	दोष	दोषी

ईय—

संज्ञा शब्द	विशेषण	संज्ञा शब्द	विशेषण
रमण	रमणीय	राष्ट्र	राष्ट्रीय
निंदा	निंदनीय	केंद्र	केंद्रीय
आकाश	आकाशीय	नरक	नारकीय
शास्त्र	शास्त्रीय	स्वदेश	स्वदेशीय
चिंतन	चिंतनीय	शासक	शासकीय
संपादक	संपादकीय	पर्वत	पर्वतीय

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भारत	भारतीय
क्षेत्र	क्षेत्रीय
आत्मा	आत्मीय
मानव	मानवीय
दमन	दमनीय
स्मरण	स्मरणीय
दानव	दानवीय
जाति	जातीय
ईश्वर	ईश्वरीय
यूरोप	यूरोपीय
स्थान	स्थानीय
स्वर्ग	स्वर्गीय

इल—

संज्ञा शब्द	**विशेषण**
ऊर्मि	ऊर्मिल
पंक	पंकिल
स्वप्न	स्वप्निल
जटा	जटिल
धूम	धूमिल
फेन	फेनिल

ईन—

संज्ञा शब्द	**विशेषण**
रंग	रंगीन
समकाल	समकालीन
युद्धकाल	युद्धकालीन
नमक	नमकीन
युग	युगीन
ग्राम	ग्रामीण
प्रात:काल	प्रात:कालीन
सर्वांग	सर्वांगीण
कुल	कुलीन
संध्याकाल	संध्याकालीन

ईला—

संज्ञा शब्द	**विशेषण**
जहर	जहरीला
रस	रसीला
खर्च	खर्चीला
चमक	चमकीला
विष	विषैला
कंकर	कंकरीला
पत्थर	पथरीला
जोश	जोशीला
हठ	हठीला
नोक	नुकीला
बर्फ	बर्फीला
रंग	रंगीला

निष्ठ—

संज्ञा शब्द	**विशेषण**
कर्तव्य	कर्तव्यनिष्ठ
सत्य	सत्यनिष्ठ
तप	तपोनिष्ठ
धर्म	धर्मनिष्ठ

नीय—

संज्ञा शब्द	**विशेषण**
पूजा	पूज्यनीय
निंदा	निंदनीय
दया	दयनीय
आदर	आदरणीय
विश्वास	विश्वसनीय
मान	माननीय

मान्—

संज्ञा शब्द	**विशेषण**
मति	मतिमान्
बुद्धि	बुद्धिमान्
शक्ति	शक्तिमान्
श्री	श्रीमान्
नीति	नीतिमान्
कांति	कांतिमान्

मय—

संज्ञा शब्द	**विशेषण**
पाप	पापमय
आनंद	आनंदमय
पुण्य	पुण्यमय
गौरव	गौरवमय
जल	जलमय
दुख	दुखमय
सुख	सुखमय
स्थल	स्थलमय

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रत्यय	संज्ञा शब्द	विशेषण	संज्ञा शब्द	विशेषण
य—	वन	वन्य	मान	मान्य
	क्षमा	क्षम्य	धन	धन्य
	मुख	मुख्य	ओष्ठ्	ओष्ठ्य
	दंतोष्ठ्	दंतोष्ठ्य	वश	वश्य
	अंत	अंत्य	चिंता	चिंत्य
	संध्या	सांध्य	कथा	कथ्य
	सेवा	सेव्य	उपासना	उपास्य
वान्—	**संज्ञा शब्द**	**विशेषण**	**संज्ञा शब्द**	**विशेषण**
	ज्ञान	ज्ञानवान्	फल	फलवान्
	हिम	हिमवान्	विद्या	विद्वान्
	धन	धनवान्	बल	बलवान्
	गुण	गुणवान्	नाश	नाशवान्
शाली—	**संज्ञा शब्द**	**विशेषण**	**संज्ञा शब्द**	**विशेषण**
	गौरव	गौरवशाली	बल	बलशाली
	ऐश्वर्य	ऐश्वर्यशाली	भाग्य	भाग्यशाली
	प्रतिभा	प्रतिभाशाली	तेजस	तेजस्वी
वी—	**संज्ञा शब्द**	**विशेषण**	**संज्ञा शब्द**	**विशेषण**
	ओजस्	ओजस्वी	वर्चस्	वर्चस्वी
	यशस्	यशस्वी	तपस्	तपस्वी
वाला—	**संज्ञा शब्द**	**विशेषण**	**संज्ञा शब्द**	**विशेषण**
	चना	चनेवाला	कुलचा	कुलचेवाला
	दुकान	दुकानवाला	कुल्फी	कुल्फीवाला
	जूता	जूतेवाला	घड़ी	घड़ीवाला
आ—	**संज्ञा शब्द**	**विशेषण**	**संज्ञा शब्द**	**विशेषण**
	ठंड	ठंडा	भूख	भूखा
	प्यास	प्यासा	कृपा	कृपालु
आलु—	**संज्ञा शब्द**	**विशेषण**	**संज्ञा शब्द**	**विशेषण**
	ईर्ष्या	ईर्ष्यालु	श्रद्धा	श्रद्धालु
	दया	दयालु		

धातु अथवा सामान्य क्रियाओं से विशेषणों की रचना

प्रत्यय	धातु	विशेषण	धातु	विशेषण
आ—	घुट	घुटा	लुट	लुटा
	फट	फटा	पिट	पिटा
	कट	कटा	भीग	भीगा
आऊ—	उड़ाना	उड़ाऊ	कमाना	कमाऊ
	खाना	खाऊ	बिकना	बिकाऊ
	चलाना	चलाऊ	टिकना	टिकाऊ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वाला—	उड़ना	उड़नेवाला	जाना	जानेवाला
	गाना	गानेवाला	पालना	पालनेवाला
	पढ़ना	पढ़नेवाला	हँसना	हँसनेवाला
हुआ—	भागना	भागा हुआ	देखना	देखा हुआ
	डरना	डरा हुआ	पढ़ना	पढ़ा हुआ

सर्वनाम शब्दों से विशेषण रचना

प्रत्यय	सर्वनाम	विशेषण	सर्वनाम	विशेषण
का—	यह (इस)	इसका	हम	हमारा
ना, रा—	तू	तेरा	तुम	तुम्हारा
	मैं	मेरा	आप	अपना
	यह	ऐसा	वह	वैसा

विशेषणों पर लिंग, वचन व कारक का प्रभाव

विशेषण विकारी होते हैं। उनमें तीन कारणों से विकार आता है—

1. लिंग-भेद के कारण
2. वचन-भेद के कारण
3. कारक-भेद के कारण

तीनों के कारण 'विशेषण' के स्वरूप में होने वाले परिवर्तन निम्नवत् हैं—

विशेषण पर लिंग का प्रभाव

यदि मूल विशेषण आकारांत हो तो वह स्त्रीलिंग विशेष्य के अनुसार ईकारांत हो जाता है। जैसे—

'चिकना' का 'चिकनी'

'खुरदरा' का 'खुरदरी'

वाक्य प्रयोग द्वारा इस तथ्य को समझें—

पुल्लिंग प्रयोग	*स्त्रीलिंग प्रयोग*
यह प्रश्न **अनूठा** है।	यह घड़ी **अनूठी** है।
राकेश **ठिगना** नौजवान है।	अंजलि **ठिगनी** नवयुवती है।
कपड़ा **खुरदरा** है।	ईंट **खुरदरी** है।
शेर **प्यासा** है।	शेरनी **प्यासी** है।
अंगूर **अत्यंत** रसीला है।	रसमलाई बहुत **रसीली** है।
विषैला नाग सबको डराता है।	विषैली नागिन सबको डराती है।

अपवाद—

हमारा कुत्ता लापता है।	हमारी कुतिया लापता है।

'मान' से 'मती', 'वान' से 'वती' व 'मय' से 'मयी'

वेणुगोपाल **रूपमान** है।	वेणु **रूपमती** है।
दिनेश **बलवान** नवयुवक है।	शोभा **बलवती** नवयुवती है।
सूर्यप्रकाश **गरिमामय** है।	चंद्रकिरण **गरिमामयी** है।
सुरेश **बुद्धिमान** है।	सुरेखा **बुद्धिमती** है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'आकारांत' को छोड़कर अन्य विशेषणों पर लिंग का कोई प्रभाव नहीं होता। उदाहरणतया—

पुल्लिंग	*स्त्रीलिंग*	*पुल्लिंग*	*स्त्रीलिंग*
ग्रामीण नवयुवक	**ग्रामीण** नवयुवती	**नमकीन** केला	**नमकीन** मूली
शहरी बालक	**शहरी** बालिका	**शरारती** युवक	**शरारती** युवती
दयालु योगी	**दयालु** योगिनी	**बिकाऊ** घर	**बिकाऊ** दुकान

उपरोक्त स्थिति का वाक्यों में प्रयोग—

सुनहरी सूट वाला लड़का अत्यंत **सुंदर** है।	सुनहरे सूट वाली लड़की अत्यंत **सुंदर** है।
वह लड़का **हँसमुख** है।	वह लड़की **हँसमुख** है।
ये दृश्य कितने **मनोहारी** हैं।	ये पहाड़ियाँ कितनी **मनोहारी** हैं।
यह मामला सर्वथा **सत्य** है।	यह बात सर्वथा **सत्य** है।
यह टॉनिक **असरदार** है।	यह औषधि **असरदार** है।
संजय का व्यवहार **मधुर** है।	संजना का व्यवहार **मधुर** है।
वह छात्र **पेटू** है।	वह छात्रा **पेटू** है।
कर्ण दानी है।	**कुंती** दानी है।
आज **ईमानदार** नेता कहाँ हैं?	आज **ईमानदार** नेत्रियाँ कहाँ हैं?

वचन पर विशेषण पर प्रभाव

विकारी शब्द होने के कारण विशेषण के रूप में वचन के कारण भी परिवर्तन आता है। जैसे—

नीला कपड़ा	**नीले** कपड़े	**लंबा** पायजामा	**लंबे** पायजामे
उसका लड़का	**उसके** लड़के	**मैला** कुर्ता	**मैले** कुर्ते

यह परिवर्तन मात्र आकारांत पुल्लिंग विशेषण रूपों में होता है। स्त्रीलिंग विशेषणों के बहुवचन रूपों में कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे—

नीली दरी	**नीली** दरियाँ	**लंबी** मेज	**लंबी** मेजें
उसकी लड़की	**उसकी** लड़कियाँ	**मैली** जुराब	**मैली** जुराबें

आकारांत को छोड़कर अन्य विशेषणों के बहुवचन रूप भी अपरिवर्तित रहते हैं। जैसे—

वीर लड़का	**वीर** लड़के	**शरारती** बालिका	**शरारती** बालिकाएँ
रोचक फिल्म	**रोचक** फिल्में	**बातूनी** लड़का	**बातूनी** लड़के

आकारांत पुल्लिंग विशेषणों के वाक्य प्रयोग

एकवचन	*बहुवचन*
ठिगना नवयुवक बाहर चला जाए।	**ठिगने** नवयुवक बाहर चले जाएँ।
अच्छा अभिनेता कौन है?	**अच्छे** अभिनेता कौन हैं?
यह लड़का **शर्मीला** है।	यह लड़के **शर्मीले** हैं।
बनाया गया रास्ता **पथरीला** है।	ये रास्ते **पथरीले** हैं।

आकारांत पुल्लिंग रूपों के अतिरिक्त अन्य विशेषणों के वाक्य-प्रयोग

एकवचन	*बहुवचन*
शिल्पी का भाई **रूपवान** है।	शिल्पी के भाई **रूपवान** हैं।
यह लेखक **प्रभावशाली** है।	ये लेखक प्रभावशाली हैं।
श्याम का पुत्र **विनम्र** है।	श्याम के पुत्र **विनम्र** हैं।
राम का तोता **समझदार** है।	राम के तोते **समझदार** हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कारक का विशेषण पर प्रभाव

कारक के कारण विशेषण के प्रयुक्त स्वरूप में अंतर आता है। जैसे—

कर्ता कारक—*अच्छा* बालक अध्ययन करता है।

अच्छे बालक ने गीता पढ़ी।

यहाँ पर कर्ता के दो रूप हैं—'ने' रहित तथा 'ने' सहित। दोनों में 'अच्छा' विशेषण का रूप परिवर्तित हो गया।

कर्म कारक—सुरेंद्र ने *कड़वा* रस पिया।

सुरेंद्र ने *कड़वे* रस को पिया।

यहाँ पर 'रस' कर्म के दो रूप हैं—'को' रहित तथा 'को' सहित। दोनों में 'कड़वा' विशेषण का रूप परिवर्तित हो गया।

करण, संप्रदान, अपादान, अधिकरण, संबंध तथा संबोधन कारक में भी आकारांत विशेषणों के रूप निरर्थक हो जाते हैं। उदाहरणतया—

करण कारक—	कॉफी के तीखे स्वाद ने सबको प्रफुल्लित कर दिया।
	(इस वाक्य में 'तीखा' का 'तीखे' हो गया।)
संप्रदान कारक—	राकेश ने अच्छे परीक्षा परिणाम हेतु कठोर परिश्रम किया।
	(इस वाक्य में 'अच्छा' का 'अच्छे' हो गया।)
अपादान कारक—	अच्छी आर्थिक स्थिति प्रतिष्ठा की सूचक है।
	(इस वाक्य में 'अच्छा' के स्थान पर 'अच्छी' का प्रयोग हुआ है।)
अधिकरण कारक—	सरकार ने खुले कम्पीटिशन का आयोजन किया।
	(इस वाक्य में 'खुला' के स्थान पर 'खुले' का प्रयोग हुआ है।)
संबोधन कारक—	हे अच्छे बालक! तू प्रतिदिन व्यायाम किया कर।
	(इस वाक्य में 'अच्छा' के स्थान पर 'अच्छे' का प्रयोग हुआ है।)

नीचे कुछ विशेषण दिए जा रहे हैं। उनके सामने विभिन्न कारकों में प्रयुक्त उनके विभिन्न रूप दिए जा रहे हैं। इन्हें समझाइए—

विशेषण	*कारक*	
भला	(कर्ता कारक)	भला आदमी काम में व्यस्त है।
भला	('ने' विभक्ति सहित)	भले आदमी ने स्वयं को काम में व्यस्त रखा।
अच्छा	('को' विभक्ति रहित कर्म)	रमेश ने मीठा संतरा खाया।
	('को' विभक्ति सहित कर्म कारक)	रमेश ने मीठे संतरे को खाया।
विषैला	(करण कारक)	राहगीर की मृत्यु नागिन के विषैले डंक से हुई।
सुंदर	(करण कारक)	आशा ने श्रोताओं को सुंदर गीत से मुग्ध कर दिया।
ताँगेवाला	(संबोधन कारक)	ओ तांगेवाले! मुझे भी बिठा ले।
शरारती	(संबंध कारक)	शरारती बच्चे खेल रहे हैं।
रेतीला	(अपादान कारक)	वह रेतीले किनारे पर विश्राम कर रहा है।
चिकना	(अधिकरण कारक)	चिकनी मिट्टी पानी के लिए उपयुक्त है।

विशेषण का विशेषण पर प्रभाव

यदि एक वाक्य में एकाधिक विशेषण हों तो उनमें एक अंतःसंबंध होता है। समस्त विशेषण लिंग और वचन का अनुसरण करते हैं। इस विषय में कुछ नियम निम्नलिखित हैं—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

1. यदि एक विशेषण पुल्लिंग हो तो शेष विशेषण भी पुल्लिंग होते हैं। स्त्रीलिंग में भी यही नियम लागू होता है। उदाहरणतया—

दिनेश **अच्छा भला लंबा-तगड़ा विनम्र** युवक है। (इसमें प्रयुक्त सभी विशेषण पुल्लिंग बोधक हैं)

रीमा **अच्छी भली लंबी-तगड़ी विनम्र** युवती है।

(इसमें 'विनम्र' को छोड़कर सभी विशेषण स्त्रीलिंग बोधक हैं। 'विनम्र' उभयलिंगी हैं)

2. एकाधिक विशेषणों के वचन में भी संगति बनी रहती है। वे सारे या तो एकवचन में होते हैं, या बहुवचन में। उदाहरण के लिए—

गोरखा **ठिगना, जोशीला, फुर्तीला** तथा **चालाक** सिपाही है। (सभी विशेषण एकवचन में हैं)

गुरखे **ठिगने, जोशीले, फुर्तीले** तथा **चालाक** सिपाही हैं।

(सभी विशेषण बहुवचन में हैं। 'बहादुर' उभयवचन को प्रदर्शित करता है।

प्रश्न अभ्यास

1. विशेषण क्या है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
2. विशेषण के भेदों का सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
3. निश्चित और अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण का अंतर उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
4. सर्वनाम व सार्वनामिक विशेषण में अंतर स्पष्ट कीजिए।
5. दो उदाहरण देकर संख्यावाचक विशेषण और परिमाणवाचक विशेषण में अंतर स्पष्ट कीजिए।
6. मोटे विशेषणों के लिंग बदलकर वाक्यों को पुनः लिखिए।
   (i) राकेश **दुबला पतला** लड़का है।
   (ii) मोहन **हँसमुख** स्वभाव का बालक है।
   (iii) सम्पूर्ण कार्यक्रम **गरिमामय** था।
   (iv) अनिल की **चचेरी** बहन कल जा रही है।
   (v) **पुराने** लोग खरे सोने के थे।
   (vi) **अगले** व्यक्ति को लाइन में खड़ा करें।
   (vii) **शर्मीले** व्यक्तियों की बात ही कुछ और है।
   (viii) उसके पिता **प्रभावशाली** व **तेजस्वी** हैं।
   (ix) वर्तमान समय में एक से एक **उत्साही** नवयुवक आ रहे हैं।
   (x) जीनत **मोटी** व **थुलथुल** है।
7. निम्नलिखित वाक्यों के रेखांकित विशेषणों के वचन बदलकर पुन लिखें—
   (i) वहाँ अनेक **अनुभवी** कलाकार आए थे।
   (ii) हमें **मीठे, मृदु,** और **कोमल** वचन बोलने चाहिएँ।
   (iii) **काले** घोड़े बहुत तेज दौड़ते हैं।
   (iv) वह **धार्मिक** पुस्तकें और **नीले** पैन चाहता है।
   (v) भारतीय स्त्रियाँ **लज्जालु,** सरल और **मर्यादित** होती हैं।
   (vi) यह रास्ता बहुत **कँटीला** व **पथरीला** है।
   (vii) हम **दयालु,** विनम्र व समझदार हैं।
   (viii) मैं **अच्छों-अच्छों** को शास्त्रार्थ में हरा चुका हूँ।
   (ix) मुझे **लंबे-लंबे** भाषण अति प्रिय लगते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(x) उड़ीसा के चक्रवात में **अच्छे-भले** पूरे गाँव डूब गए।

8. निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थान पर कोष्ठांकित विशेषण का उपयुक्त रूप प्रयुक्त कीजिए।
   (i) ये लड़कियाँ ...., ... तथा .... हैं। (साहसी, बहादुर, जोशीला)
   (ii) ये कविताएँ बहुत .... और .... हैं। (रसीला, चुटीला)
   (iii) हमारे युवक ही नहीं, युवतियाँ भी .... रही हैं। (बलिदान)
   (iv) इसकी गाथा बहुत .... है। (करूणामय)
   (v) यह नदी बहुत .... है। (गहरा)
   (vi) .... नदियों का जल भी .... होता है। (पवित्र)
   (vii) यहाँ का वातावरण .... गैसों से भर गया है। (विषैला)
   (viii) वह काव्य सम्मेलन .... रहा। (शांति)
   (ix) हमें .... लोगों के साथ सम्मान से पेश आना चाहिए। (छोटा)
   (x) .... बच्चे शरारतें नहीं करते। (अच्छा)

9. निर्देशानुसार रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—
   (i) .... लोग कहते हैं कि सूरदास जन्मांध थे। (विशेषण से)
   (ii) उस व्यक्ति को यहाँ बुलाइए। (रेखांकित पद के विशेषण का प्रकार लिखिए)
   (iii) क्या वह घडी तुम्हारी है? (रेखांकित पद के विशेषण का प्रकार लिखिए)
   (iv) वह कलम भी मेरी है। (रेखांकित पद के विशेषण का प्रकार लिखिए)
   (v) इतिहास के छात्र .... घटनाओं को जानते हैं। (रेखांकित शब्द के विशेषण से)
   (vi) मत भूलो कि .... देश हमारा है। (सार्वनामिक विशेषण से वाक्य पूरा कीजिए)

10. रिक्त स्थानों की उपयुक्त विशेषणों से कीजिए।
   (i) .... कद और .... शरीर व्यक्तित्व को आकर्षक बनाते हैं।
   (ii) चारों ओर .... अंधकार है।
   (iii) चांदनी रात .... होती है।
   (iv) भारत के .... जवानों ने पाक सेना के दाँत खट्टे कर दिए।
   (v) इस खाई में .... बच्चा गिर गया तो?

11. निम्न विशेषणों के पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग रूपों का प्रयोग करते हुए वाक्य रचना कीजिए।
   कोमल, छोटा, बुद्धिमान, बातूनी, बलिष्ठ व ईमानदार

बोर्ड परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्न

12. विशेषणों में बदलिए—
   (i) मिठास, झगड़ा। *(CBSE 1991)*
   (ii) नागपुर, ऋण, अर्थ, चमक, बाहर, निवेश, लालच, ग्राम। *(CBSE 1992)*
   (iii) प्रमाण, विवाह, तर्क, नगर, मन, भूगोल। *(CBSE 1993)*
   (iv) बाहर, बेचना, चतुराई, बुराई। *(CBSE 1993C)*
   (v) मन, घर, लखनऊ, आदर, गुलाब, जहर, रक्षा। *(CBSE 1994)*
   (vi) भारत, उत्साह, सफेदी, झगड़ा, दीनता, सप्ताह, पर्वत, दया। *(CBSE 1994C)*
   (vii) बनारस, घर, पुराण, जापान *(CBSE 1995)*
   (viii) ईमानदारी, मिठास *(CBSE 1996)*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ix) दिन, प्यास, सुगंध, इतिहास, मानव, अंतर (CBSE 1996C)

(x) भारत, तेज, रस, दुर्बलता, पुस्तक, घर, खटास, चंचलता (CBSE 1997)

(xi) इतिहास, भारत (CBSE 1998)

(xii) पुस्तक, घर (CBSE 2001)

(xiii) चमक, परिश्रम (All India CBSE 2002)

(xiv) उल्लास, समय (All India CBSE 2002)

(xv) ऊपर, जंगल। (All India CBSE 2003)

(xvi) गर्व, इतिहास, स्थान (CBSE 2004)

(xvii) इतिहास, स्थान, अनुवाद, प्रातःकाल, बड़प्पन, परिवर्तन (All India CBSE 2004)

(xviii) वेद, स्वाद, अध्ययन, अनुकरण, संकेत, युग (CBSE 2004 F)

(xix) प्रतिभा, बचपन (All India CBSE 2005)

12. निम्नलिखित वाक्यों में विशेषण शब्द छाँटिए और उनके भेद लिखिए—

(i) वह बहुत अधिक चालाक है। (CBSE 1995)

(ii) यह अच्छी पुस्तक है। (CBSE 1998)

(iii) मोहन घर में सबसे बड़ा है।

(iv) इन्हें दस-दस रुपये देने होंगे।

(v) उसके पास दो बीघा जमीन है।

(vi) दो पुस्तकें टेबल पर रखी हैं।

(vii) उसकी कमीज का रंग सफेद है।

(viii) वह सौम्य लड़की है।

(ix) उस लोटे में थोड़ा सा दूध ले आओ।

(x) क्या वह पुस्तक खरीद लें? (All India CBSE 1998)

(xi) पात्र में कुछ दूध दे दीजिए। (CBSE 2006)

(xi) मुझे गुलाबी रंग अत्यंत प्रिय है। (CBSE 2006)

13. कोष्ठकानुसार रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(i) मोहन .... चतुर है। (प्रविशेषण से) (CBSE 1997)

(ii) सोहन अब .... स्वस्थ है। (प्रविशेषण से) (CBSE 1997)

(iii) .... लोग कहते हैं कि सूरदास जन्मांध नहीं थे। (विशेषण) (All India CBSE 1999)

(iv) राम ने कहा— .... माँ मुझे बहुत प्यार करती है। (सार्वनामिक विशेषण से)

(v) <u>इतिहास</u> के छात्र .... घटनाओं को जानते हैं। (रेखांकित शब्द के विशेषण से) (CBSE 2000)

(vi) मत भूलो कि .... देश हमारा है। (सार्वनामिक विशेषण से) (CBSE 2001)

(vii) उसकी गाड़ी में .... अनाज भरा है। (परिमाणवाचक विशेषण से) (CBSE 2002)

14. क्रमवाचक विशेषण बनाइए—दो, चार। (CBSE 2006)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

10

क्रिया पर परसर्ग 'ने' का प्रभाव

परसर्ग 'ने' का क्रिया पर क्या प्रभाव पड़ता है, यह जानने के लिए सर्वप्रथम क्रिया व इसके भेदों को जानना अति आवश्यक है।

क्रिया की परिभाषा: जिन शब्दों से किसी कार्य के होने, करने अथवा किसी स्थिति का बोध हो, उन्हें क्रिया कहते हैं। उदाहरण के रूप में—

तोता अमरूद **खा रहा है।** . . . (i)

रमेश किताब **पढ़ रहा है।** . . . (ii)

रमा भोजन **पका रही है।** . . . (iii)

उपरोक्त उदाहरणों में सभी मोटे अक्षर क्रिया के उदाहरण हैं। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि वाक्य का जो अंश इन प्रश्नों का उत्तर देता है, उसे क्रिया कहते हैं। बिना क्रिया के कोई वाक्य पूर्ण नहीं होता। कई बार क्रिया प्रत्यक्ष रूप में न होकर परोक्ष रूप में वाक्य में विद्यमान रहती है। उदाहरणार्थ—क्या सुंदर!, अवश्य आदि।

1. धातु

क्रिया के मूल रूप को धातु कहा जाता है। **जिस मूल शब्द से क्रिया बनती है, उसे धातु कहते हैं।** उपरोक्त उदाहरण (i), (ii) व (iii) में क्रमशः 'खा', 'पढ़' व 'पका' धातु हैं। धातु के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं—

पढ़, लिख, हँस, चल, गा, सो, खेल, देख, सुन, जा, आ, बैठ, रो आदि।

ये विभिन्न क्रियाओं के मूल रूप हैं। इसलिए इन्हें क्रियामूल भी कहा जाता है। इनसे अन्य क्रियाओं का निर्माण भी किया जा सकता है। उदाहरणार्थ—

पढ़ से पढ़ा, हँसा, चलता, चलते, लिखूँगा, लिखूँगी आदि।

मूल धातु की पहचान—मूल धातु का प्रयोग 'तू' के साथ आज्ञात्मक रूप में होता है। उदाहरणार्थ—

तू खा, तू पढ़, तू पी, तू जा, तू हँस आदि।

इस तरह हम मूल धातुओं की पहचान कर सकते हैं।

क्रिया के सामान्य रूप—मूल धातु में 'ना' जोड़कर क्रिया के सामान्य रूपों को बनाया जाता है। उदाहरणतया—

खाना, पीना, जाना, सोना आदि।

धातु के विभिन्न रूप—धातु के पाँच रूप हैं—1. सामान्य धातु; 2. नाम धातु; 3. व्युत्पन्न धातु; 4. अनुकरणात्मक धातु; 5. सम्मिश्र धातु।

1. सामान्य धातु—इन धातुओं को सरल धातु भी कहा जाता है। यह धातु मूल धातु में 'ना' प्रत्यय लगने से बनती है। उदाहरण के लिए—खाना, पीना, सोना आदि।

2. नाम धातु—जो धातु संज्ञा, सर्वनाम व विशेषण में प्रत्यय लगाकर बनती हैं, उन्हें नाम धातु कहा जाता है। उदाहरण के लिए—खाना, पीना, सोना आदि। संज्ञा, सर्वनाम व विशेषण शब्दों से कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं—

संज्ञा से—लालच-ललचाना; धमकी-धमकाना आदि।

सर्वनाम से—आप-अपनाना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विशेषण से—गर्म-गरमाना; लताड़-लताड़ना आदि।

3. व्युत्पन्न धातु—सामान्य धातु में प्रत्यय लगाकर अथवा किसी दूसरे तरीके से बनाई गई धातुओं को व्युत्पन्न धातुएँ कहा जाता है। उदाहरणार्थ—

सामान्य धातु	**व्युत्पन्न धातु**
पीना	पिलवाना, पिलाना
देना	दिलवाना, दिलाना
सोना	सुलवाना, सुलाना
उड़ना	उड़वाना, उड़ाना

4. अनुकरणात्मक धातु—ध्वनियों का अनुकरण करके बनाई जाने वाली धातुओं को अनुकरणात्मक धातुएँ कहा जाता है। उदाहरणार्थ—

खटखट	खटखटाना	चहचहा	चहचहाना
भिनभिन	भिनभिनाना		

5. सममिश्र धातु—संज्ञा, विशेषण व क्रियाविशेषण शब्दों के बाद क्रियापद जैसे 'करना', 'होना' लगाकर बनने वाले धातु रूपों को सममिश्र धातुएँ कहा जाता है। उदाहरणार्थ—कार्य करना, थका होना, धीरे होना/करना, मीठा करना, कड़वा होना आदि। कुछ अन्य सहायक क्रियापदों से बनने वाले सममिश्र धातु निम्नलिखित हैं—

करना	काम करना, ऊँचा करना, नीचा करना, मीठा करना आदि।
होना	उत्तीर्ण होना, खराब होना, मृत होना, जीवित होना आदि।
खाना	मार खाना, भोजन खाना, दवा खाना आदि।
देना	हलवा देना, सोने देना, खाने देना, उठने देना, मार देना आदि।
आना	नजर आना, आनंद आना, झिझक आना, पसंद आना, नजर आना।
जाना	दूर जाना, भाग जाना, जाग जाना, सो जाना, खा जाना आदि।
मारना	नजरें मारना, डींग मारना, झपट्टा मारना आदि।

2. काल

काल का शाब्दिक अर्थ है—समय। क्रिया के जिस रूप से कार्य-व्यापार के सम्पन्न होने के समय का बोध होता है, उसे काल कहते हैं। इसके मुख्य तीन भेद हैं—

1. वर्तमान काल 2. भूतकाल 3. भविष्यत् काल

1. वर्तमान काल

जो समय चल रहा है, उसे वर्तमान काल कहते हैं। दूसरे शब्दों में, क्रिया अथवा क्रियाओं की निरंतरता को वर्तमान काल कहते हैं। उदाहरणार्थ—रमा पढ़ रही है। सुधा खेल रही है।

वर्तमान के तीन मुख्य भेद हैं—

(क) **सामान्य वर्तमान काल**—इससे वर्तमान समय में किए जाने वाले कार्य का सामान्य परिचय मिलता है। जैसे—

रमेश पढ़ता है। रमा आती है।

(ख) **अपूर्ण वर्तमान काल**—इससे वर्तमान काल में कार्य सम्पन्न होने की निरंतरता का बोध होता है। क्रिया-धातु के बाद 'रहा' सहायक क्रिया के रूपों से अपूर्ण वर्तमान कालिक क्रियापद बनते हैं। उदाहरण के लिए—

पक्षी उड़ रहे हैं। मैं खेल रहा हूँ।
मैं खेल रही हूँ। वे खेल रही हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ग) **संदिग्ध वर्तमान काल**—इससे वर्तमान में क्रिया के होने में संदेह बना रहता है। सम्भाव्य वर्तमान के क्रिया रूपों पर गा, गे, गी जोड़ने से संदिग्ध वर्तमान के क्रियापद बनते हैं। उदाहरण के लिए—

सीता खेलती होगी। वह पढ़ता होगा।

2. भूत काल

जो समय गुजर गया है, उसे भूतकाल कहते हैं। उदाहरणार्थ—रमा गयी। सुधा खेल रही थी।

भूतकाल के छः मुख्य भेद हैं—

(क) **सामान्य भूतकाल**—क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय में कार्य के घटित होने का बोध तो हो, परंतु उसकी पूर्णता-अपूर्णता का कुछ भी पता न चले, उसे सामान्य भूतकाल कहते हैं; जैसे—राधा गयी। उसने कहा।

(ख) **आसन्न भूतकाल**—जब क्रिया भूतकाल में प्रारंभ होकर भूतकाल में ही समाप्त होती है अर्थात् वर्तमान में कार्य को समाप्त हुए बहुत कम समय बीता हो, तब इसे आसन्न भूतकाल कहते हैं। इसमें मुख्य क्रिया से पूर्व 'अभी-अभी', 'अभी' या 'थोड़ी-थोड़ी देर पूर्व' क्रिया विशेषण भी जोड़ा जाता है। उदाहरण के लिए—

अभी पहुँचा है। वह अभी-अभी गया है।

उसने नमाज पढ़ी है। उसने लड़ाई की है।

(ग) **अपूर्ण भूतकाल**—जिससे क्रिया के भूतकाल में होने का बोध होता है, किंतु उसकी समाप्ति का बोध नहीं होता, उसे अपूर्ण भूतकाल कहते हैं। उदाहरण के लिए—

वर्षा आ रही थी। अध्यापक आ रहे थे।

(घ) **पूर्ण भूतकाल**—क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया के पूरे होने अथवा उसकी समाप्ति के समय का स्पष्ट बोध होता है और यह भी पता चलता है कि समाप्ति काफी पहले हो चुकी है, उसे पूर्ण भूतकाल कहते हैं। उदाहरण के लिए— मैंने भोजन कर लिया था। वह पढ़ चुकी थी।

(घ) **हेतुहेतुमद भूतकाल**—क्रिया के जिस रूप से यह जाना जाए कि कार्य भूतकाल में ही सम्पन्न हो जाता, परंतु क्रिया-संपादन का साधन अनुपस्थित रहने से न हो सका, उसे हेतुहेतुमद भूतकाल कहते हैं; उदाहरण के लिए—

यदि आप स्वयं लिखते तो इतनी गलतियाँ न होतीं।

समय पर वर्षा हो गई होती तो फसल न सूखती।

(ङ) **संदिग्ध भूतकाल**—क्रिया के जिस रूप से भूतकाल में क्रिया के होने में संदेह या अनिश्चय का बोध होता है, उसे संदिग्ध भूतकाल कहते हैं। उदाहरण के लिए—

सोहन गया होगा।

वर्षा हुई होगी।

2. भविष्यत् काल

जो समय आने वाला है, उसे भविष्यत् काल कहते हैं। उदाहरणार्थ—रमा जायेगी। सुधा खेलेगी।

भविष्यत् काल के तीन मुख्य भेद हैं—

(क) **सामान्य भविष्यत्काल**—क्रिया के जिस रूप से आने वाले समय में कार्य के घटित होने का बोध हो, उसे सामान्य भविष्यत् काल कहते हैं। लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार सहायक क्रिया-धातु 'हो' अथवा मुख्य क्रिया के धातु पर 'गा', 'गे', 'गी' जोड़ने से सामान्य भविष्यत्कालिक क्रियापद बनते हैं। उदाहरण हेतु,

मैं वहाँ कल जाउँगा। वह सुबह पाँच बजे आएगी।

वे कल कोलकाता पहुँचेंगे।

(ख) **संभाव्य भविष्यत्**—जिससे किसी क्रिया के भविष्य में होने की संभावना प्रकट हो, उसे सम्भाव्य भविष्यत् काल कहते हैं। उदाहरण के लिए—

संभव है कि वह कल घर आए हो सकता है वह परीक्षा में प्रथम श्रेणी प्राप्त करे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ग) **हेतुहेतुमद भविष्यत्काल**—भविष्यत् काल का वह रूप जिसमें किसी क्रिया का होना किसी कारण की उपस्थिति पर निर्भर करता है, हेतुहेतुमद भविष्यत् कहलाता है। उदाहरण के लिए—

श्याम पढ़े तो कक्षा में प्रथम आ सकता है।

अच्छे कर्म करने पर ही अच्छा फल प्राप्त होगा।

काल भेद के कारणवश क्रिया रूपांतरण

काल भेद के कारण दोनों लिंगों, वचनों और तीनों पुरुषों में क्रिया का रूपांतर होता है। उदाहरणतया—

1. लड़का खेलता है, लड़के खेलते हैं। (पुल्लिंग, अन्यपुरुष, एकवचन/बहुवचन)
2. हम खेलते हैं। (बहुवचन, पुल्लिंग, उत्तमपुरुष)
3. आप खेलते हो। (बहुवचन, पुल्लिंग, मध्यमपुरुष)
4. मैं खेलता हूँ। (एकवचन, पुल्लिंग, उत्तमपुरुष)

धातुओं की कालानुसार रूप-रचना

नीचे 'पढ़' धातु के रूप सभी कालों, लिंगों, वचनों और पुरुषों में उदाहरणार्थ प्रस्तुत हैं—

'पढ़' धातु

वर्तमान काल

पुल्लिंग रूप

पुरुष रूप	**एकवचन**	**बहुवचन**
उत्तम	पढ़ता हूँ	पढ़ते हैं
मध्यम	पढ़ता है	पढ़ते हो
अन्य	पढ़ता है	पढ़ते हैं

स्त्रीलिंग रूप

	एकवचन	**बहुवचन**
उत्तम	पढ़ती हूँ	पढ़ती हैं
मध्यम	पढ़ती है	पढ़ती हो
अन्य	पढ़ती है	पढ़ती हैं

भूतकाल

पुल्लिंग रूप

पुरुष रूप	**एकवचन**	**बहुवचन**
उत्तम	पढ़ा	पढ़े
मध्यम	पढ़ा	पढ़े
अन्य	पढ़ा	पढ़े

स्त्रीलिंग रूप

	एकवचन	**बहुवचन**
उत्तम	पढ़ी	पढ़ी
मध्यम	पढ़ी	पढ़ी
अन्य	पढ़ी	पढ़ी

भविष्यत् काल

पुल्लिंग रूप

पुरुष रूप	**एकवचन**	**बहुवचन**

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उत्तम	पढूँगा	पढ़ेंगे
मध्यम	पढ़ेगा	पढ़ेंगे
अन्य	पढ़ेगा	पढ़ेंगे

स्त्रीलिंग रूप

	एकवचन	**बहुवचन**
उत्तम	पढूँगी	पढ़ेंगी
मध्यम	पढ़ेगी	पढ़ेंगी
अन्य	पढ़ेगी	पढ़ेंगी

3. पक्ष

हर कार्य आरंभ से लेकर अंत तक फैले हुए किसी समयावधि के मध्य होता है तथा इस अवधि में होने वाले कार्य-व्यापार का निरीक्षण करना पक्ष कहलाता है। अर्थात् क्रिया की प्रक्रियारत् अवस्था का बोध क्रिया के जिस रूप से होता है, पक्ष कहलाता है। पक्ष मुख्यत: सात प्रकार के होते हैं—

1. **आरंभद्योतक पक्ष**—इससे क्रिया के आरंभ की सूचना मिलती है। जैसे—

अब वह गृहकार्य करने लगा है।

मोहन सदर जा रहा है।

2. **सातत्यबोधक पक्ष**—इससे क्रिया के वर्तमान में जारी रहने का भाव पता चलता है। जैसे—

अब वह गृहकार्य कर रहा है।

मोहन सदर में घूम रहा है।

3. **पूर्णताबोधक पक्ष**—इससे क्रिया का पूरी तरह समापन का भाव पता चलता है। जैसे—

अब वह गृहकार्य कर चुका है।

मोहन सदर में गया।

4. **प्रगतिबोधक पक्ष**—इसमें क्रिया की स्थिति में निरंतर वृद्धि का भाव विद्यमान होता है। जैसे—

भीड़ बढ़े ही जा रही है।

वह धनवान है धनवान बनता ही चला जा रहा है।

5. **नित्यताबोधक अपूर्ण पक्ष**—इससे क्रिया के सदैव लागू होने का बोध होता है परंतु यह अपूर्ण रहती है। जैसे—

हिमेश गायक है।

प्रेमचंद उपन्यासकार था।

6. **आवृत्तिमूलक पक्ष**—इसमें क्रिया सदैव बनी रहती है। जैसे—

हिमेश गाता है।

प्रेम उपन्यास लिखता है।

7. **अभ्यासद्यौतक पक्ष**—इससे क्रिया का अभ्यासरत् होने का भाव होता है। आमतौर पर ऐसे वाक्यों में नित्य, प्राय:, कभी-कभी, प्रत्येक आदि शब्द होते हैं। उदाहरणतया—

मैं नित्य व्यायाम करता हूँ।

मैं प्राय: संगीत सभा में जाता हूँ।

4. परसर्ग 'ने' का क्रिया पर प्रभाव

मुख्य रूप से वाक्य के दो अंग हैं—1. कर्ता; व 2. क्रिया। इसके अलावा वाक्य में कर्म भी होता है। परंतु कर्ता व क्रिया दोनों एक दूसरे की आवश्यकतानुसार बदलते होते हैं। कर्ता का प्रयोग वैसे तो कई रूपों में होता है परंतु निम्नलिखित दो रूपों में यह मुख्यत: प्रयोग होता है—'ने' रहित व 'ने' सहित। कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'ने' रहित कर्ता	'ने' सहित कर्ता
श्रीराम रावण का संहार करते हैं।	श्रीराम ने रावण का संहार किया।
श्रीराम राक्षसों से युद्ध करते थे।	श्रीराम ने राक्षसों से युद्ध किया।
श्रीराम वन में जायेंगे।	श्रीराम ने वन में प्रस्थान किया होगा।

उपरोक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि परसर्ग 'ने' रहित व 'ने' सहित वाक्यों की क्रियाओं में किस प्रकार का परिवर्तन हो जाता है। ये परिवर्तन निम्नलिखित प्रकार होते हैं—

1. 'ने' रहित कर्ता की क्रिया तीनों कालों में व्यक्त होती है जबकि 'ने' सहित कर्ता की क्रिया के भूतकाल में ही प्रयोग की जा सकती है। भूतकाल के भी अनेक प्रारूप होते हैं। 'ने' सहित कर्ता की क्रिया द्वारा केवल भूतकाल का पूर्णताबोधक पक्ष ही प्रदर्शित किया जा सकता है। उदाहरण—राम ने परीक्षा की तैयारी *की है*। इस वाक्य में अभी-अभी क्रिया द्वारा पूर्णता प्राप्त कर लेने का बोध है।

2. 'ने' सहित कर्ता-पद के साथ आने वाली क्रिया सदा सकर्मक होती है। उदाहरणतया—

हमने रामायण पढ़ी।	('रामायण' कर्म)
गांधीजी ने अतिक्रमण का विरोध किया।	('विरोध' कर्म)

महत्वपूर्ण तथ्य—अकर्मक क्रिया के साथ 'ने' सहित कर्ता पद नहीं आता। उदाहरणार्थ—

राम सोया/सोता है/सोयेगा	देवेश रोया/रोता है/रोयेगा

हम अकर्मक क्रिया के साथ यदि 'ने' सहित कर्ता का प्रयोग करें तो हमें अकर्मक क्रिया को सकर्मक क्रिया बनाना पड़ेगा। इसके लिए मुख्य क्रिया को कर्म बना दिया जाता है तथा 'किया' आदि क्रिया रूपों का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए—

अकर्मक क्रिया	***मुख्य क्रिया को कर्म बनाने पर***
बच्चा रोया।	बच्चे ने रूदन किया।
गायक गाया।	गायक ने गायन किया।
राम वन को गए।	राम ने वन को प्रस्थान किया।
नौकर लड़ा।	नौकर ने लड़ाई की।
खिलाड़ी छलांगा।	खिलाड़ी ने छलांग लगाई।

3. 'ने' सहित कर्ता पद के साथ आने वाली क्रिया सदा कर्तृवाच्य में होती है। उदाहरणार्थ—

उससे पैन टूट गया।	उसने पैन तोड़ दिया।
भारत पाकिस्तान से जीत गया।	भारत ने पाकिस्तान को जीत लिया।
उससे मैडल गिर गया।	उसने मैडल को गिरा दिया।
उससे गाड़ी छूट गई।	उसने गाड़ी को छोड़ दिया।

4. 'चुका है/चुकी है' के स्थान पर 'कर लिया है/कर ली है' का प्रयोग होता है। उदाहरणार्थ—

गायक गाना गा चुका है।	गायक ने गाना गा लिया है।
नौकर लड़ चुका है।	नौकर ने लड़ाई कर ली है।
खिलाड़ी खेल चुका है।	खिलाड़ी ने खेल खेल लिया है।
बच्चा रो चुका है।	बच्चे ने रुदन कर लिया है।

5. पूर्णताबोधक वर्तमान काल के 'ने' रहित व 'ने' सहित क्रिया-रूपों में भी अंतर होता है जो निम्नलिखित उदाहरणों में प्रदर्शित हैं—

सुरेश खाना खा गया है।	सुरेश ने खाना खा लिया है।
वह कल गाड़ी पकड़ चुका है।	उसने कल गाड़ी पकड़ ली है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह कोट पहने हुए है।	उसने कोट पहना हुआ है।
दुष्ट राक्षस पेड़ तोड़ गया है।	दुष्ट राक्षस ने पेड़ तोड़ दिया है।

पूर्ण भूतकाल व रूपों में भी उपर्युक्त परिवर्तन होते हैं। ये परिवर्तन सोदाहरण प्रस्तुत हैं—

सुरेश भोजन खा गया।	सुरेश ने खाना खा लिया।
वह कोट पहने हुए था।	उसने कोट पहन लिया था।
वह कल गाड़ी पकड़ चुका था।	उसने कल गाड़ी पकड़ ली थी।
दुष्ट राक्षस पेड़ तोड़ गया था।	दुष्ट राक्षस ने पेड़ तोड़ दिया था।

पूर्ण संभावनार्थ भविष्यत्काल में भी इस प्रकार के परिवर्तन होते हैं—

सुरेश भोजन खा गया होगा।	सुरेश ने खाना खा लिया होगा।
वह कोट पहने हुए होगा।	उसने कोट पहन लिया होगा।
वह कल गाड़ी पकड़ चुका होगा।	उसने कल गाड़ी पकड़ ली होगी।
दुष्ट राक्षस पेड़ तोड़ गया होगा।	दुष्ट राक्षस ने पेड़ तोड़ दिया होगा।

6. 'ने रहित' रूपों की अपूर्णतावाची क्रियाएँ 'ने सहित' रूपों में पूर्णतावाची बन जाती हैं। उदाहरणतया—

आलोचक आलोचना करते थे।	आलोचकों ने आलोचना की।
राम दुष्टों का संहार करते थे।	राम ने दुष्टों का संहार किया।
विद्यार्थी पढ़ रहे हैं।	विद्यार्थियों ने पढ़ाई की।
ड्राईवर शराब पी रहा होगा।	ड्राईवर ने शराब पी होगी।

7. 'ने रहित' रूपों की अपूर्णतावाची क्रियाएँ 'ने सहित' रूपों में पूर्णतावाची बन जाती हैं। उदाहरणार्थ—

मैं प्रत्येक नाटक देखता था।	मैंने प्रत्येक नाटक देखे।
मैं बहुत सी कहानियाँ लिखता था।	मैंने बहुत सी कहानियाँ लिखीं।
मैं नित्य गृहकार्य करता हूँ।	मैंने नित्य गृहकार्य किया है।

परसर्ग 'ने' के प्रयोग से बनने वाले विविध वाक्य परिवर्तन—

1. ये कंडेला के रास्ते आए हैं।	इन्होंने कंडेला के रास्ते आगमन किया है।
2. महिला उन्हें राजी कर चुकी थी।	महिला ने उन्हें राजी कर लिया था।
3. यह खाना खा चुका है।	इसने खाना खा लिया है।
4. माँ रोटी बनाती थी।	माँ ने रोटी बनाई।
5. पत्नी एक बजे तक जागती रही।	पत्नी ने एक बजे तक जागरण किया।
6. पिता जरूर कहेंगे।	पिता ने जरूर कहा होगा।
7. माता के हाथों से दर्पण टूट गया है।	माता ने अपने हाथों से दर्पण तोड़ दिया है।
8. शिवाजी अफजलखाँ से जीत गया।	शिवाजी ने अफजलखाँ को जीत लिया।
9. उसके कपड़े फट गए।	उसने कपड़े फाड़ दिए।
10. मोहन का कुर्ता मैला हो गया।	मोहन ने कुर्ता मैला कर दिया।
11. दूधिया से दूध गिर गया।	दूधिया ने दूध गिरा दिया।
12. सुरभि बोतल पी गई है।	सुरभि ने बोतल पी ली है।
13. कोई वहाँ नहीं जायेगा।	किसी ने वहाँ नहीं जाना।
14. कोई घर में थैला रख गया है।	किसी ने घर में थैला रख दिया है।
15. वह सूट पहने हुए है।	उसने सूट पहना हुआ है।
16. तुम क्या समझे?	तुमने क्या समझ लिया?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

17. काफ़िला 2 बजे चलना आरंभ होगा।	काफिले ने 2 बजे चलना आरंभ किया।
18. मैं यहाँ के तहसीलदार से मिला।	मैंने यहाँ के तहसीलदार से मुलाकात की।
19. तहसीलदार भोजन कर चुका है।	तहसीलदार ने भोजन कर लिया है।
20. वह मुझे बोला कि वर्षा हो रही है।	उसने मुझसे बोला कि वर्षा हो रही है।
21. माँ विद्यालय की स्थापना करती है।	माँ ने विद्यालय की स्थापना की।
22. लेखक से डंडा टूट गया।	लेखक ने डंडा तोड़ दिया।
23. मैं हर समय पढ़ता था।	मैंने हर समय पढ़ाई की।
24. पिताजी यह नहीं चाहते थे।	पिताजी ने यह नहीं चाहा था।
25. मैं तीसरी कक्षा में भर्ती हुआ।	मैंने तीसरी कक्षा में भर्ती ली।
26. श्याम फुटबाल को किक मारता है।	श्याम ने फुटबाल को किक मारी।
27. पिता पुत्र को पत्र लिखता है।	पिता ने पुत्र को पत्र लिखा।
28. मोहन केला खाता है।	मोहन ने केला खाया।
29. पुत्र बकरी को पीटता है।	पुत्र ने बकरी को पीटा।
30. हम राजमार्ग से भिंड पहुँचे।	हमने राजमार्ग से भिंड में पहुँच की।
31. वह दो गीत गाता है।	उसने दो गीत गाए।
32. मैं अगरतला व उसके आसपास शूटिंग करता था।	मैंने अगरतला व उसके आसपास शूटिंग की।
33. यह दिखावटी संस्कृति त्रिपुरा को नष्ट कर रही है।	इस दिखावटी संस्कृति ने त्रिपुरा को नष्ट कर दिया है।
34. पार्थ बाजा बजाएगा।	पार्थ ने बाजा बजाया होगा।
35. दिल्ली नया कर वैट लागू कर रही है।	दिल्ली ने नया कर वैट लागू किया है।
36. मैं स्वयं को असमर्थ पाता हूँ।	मैंने स्वयं को असमर्थ पाया है।
37. वे खिड़की के बाहर झाँकते हैं।	उन्होंने खिड़की के बाहर झाँका।
38. इस गर्जन से मैं डर गया।	इस गर्जन ने मुझे डरा दिया।
39. मैं इसी मामले में मथुरा गया।	मैने इसी मामले में मथुरा प्रस्थान किया।
40. अगले दिन अधिकारी सुरक्षा प्रबंध करेगा।	अगले दिन अधिकारी ने सुरक्षा प्रबंध किया।
41. कल्लू कार्य में जुट गया।	कल्लू ने काम में जी लगाया।
42. वह नित्य सैर करता है।	उसने नित्य सैर की है।
43. तब वे आतंकवाद का रास्ता छोड़ चुके थे।	तब उन्होंने आतंकवाद का रास्ता छोड़ दिया था।
44. उसका पति भी कोशिश करता था।	उसके पति ने भी कोशिश की।
45. वे एक घंटा बोले।	उन्होंने एक घंटा भाषण दिया।
46. अब हम त्रिपुरा आ गए थे।	अब हमने त्रिपुरा आगमन कर लिया था।
47. आमतौर पर मैं अपनी चाय स्वयं बनाता हूँ।	आमतौर पर मैंने अपनी चाय स्वयं बनाई है।
48. जिला परिषद दोपहर का भोजन तैयार करती है।	जिला परिषद् ने दोपहर के भोजन की तैयारी की।
49. पहलवान दुकानदार से लड़ पड़ा।	पहलवान ने दुकानदार से लड़ाई की।
50. वे बोले कि दर्द नहीं होगा।	उन्होंने कहा कि दर्द नहीं होगा।
51. मेरे पिता समाज के प्रधान थे।	मेरे पिता ने समाज की प्रधानगी की।

नीचे कुछ 'ने सहित' वाक्य दिए जा रहे हैं व उन्हें 'न रहित' वाक्यों में रूपांतरित किया जा रहा है।

'ने' परसर्ग सहित वाक्य	**'ने' परसर्ग रहित वाक्य**
1. उसने गाड़ी चलाई।	वह गाड़ी चलाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2. उसने वर्षा होते देखी।	वह वर्षा होते देखता था।
3. कृष्ण ने दान देकर प्रस्थान किया।	कृष्ण दान देकर चला गया।
4. उसने खीरा खा लिया।	वह खीरा खा गया।
5. राम ने देर से आगमन किया।	राम देर से आया।
6. उसने रुदन किया।	वह रोया।
7. उनसे कभी घर नहीं आया गया।	वे कभी घर नहीं आए।
8. मैंने फुटबाल खेली।	मैं फुटबाल खेला।
9. कबीर ने जमकर आलोचना की।	कबीर जमकर आलोचना करते थे।
10. पिता ने पुत्र को पत्र लिखा।	पिता पुत्र को पत्र लिखता है।
11. मोहन ने केला खाया।	मोहन केला खाता है।
12. पुत्र ने बकरी को पीटा।	पुत्र बकरी को पीटता है।
13. हमने राजमार्ग से भिंड में पहुँच की।	हम राजमार्ग से भिंड पहुँचे।
14. उसने दो गीत गाए।	वह दो गीत गाता है।
15. मैंने अगरतला व उसके आसपास शूटिंग की।	मैं अगरतला व उसके आसपास शूटिंग करता था।
16. इस दिखावटी संस्कृति ने त्रिपुरा को नष्ट कर दिया है।	यह दिखावटी संस्कृति त्रिपुरा को नष्ट कर रही है।
17. पार्थ ने बाजा बजाया होगा।	पार्थ बाजा बजाएगा।
18. दिल्ली ने नया कर वैट लागू किया है।	दिल्ली नया कर वैट लागू कर रही है।
19. मैंने स्वयं को असमर्थ पाया है।	मैं स्वयं को असमर्थ पाता हूँ।
20. उन्होंने खिड़की के बाहर झाँका।	वे खिड़की के बाहर झाँकते हैं।

प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित वाक्यों में कर्ता के साथ 'ने' परसर्ग लगाकर वाक्य पूरा कीजिए।

1. शिवाजी अफजलखाँ से जीत गया। ....
2. कोई घर में थैला रख गया है। ....
3. उसके कपड़े फट गए। ....
4. तुम क्या समझे? ....
5. मोहन का कुर्ता मैला हो गया। ....
6. सुरभि बोतल पी गई है। ....
7. दूधिया से दूध गिर गया। ....
8. कोई वहाँ नहीं जायेगा। ....
9. वह सूट पहने हुए है। ....
10. कृष्ण ने दान देकर प्रस्थान किया। ....
11. राम ने देर से आगमन किया। ....
12. उसने वर्षा होते देखी। ....
13. उसने रुदन किया। ....
14. उसने खीरा खा लिया। ....
15. मैंने स्वयं को असमर्थ पाया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

11

वाक्य रचना—सरल व संयुक्त

वाक्यों के भेद सामान्यतः दो दृष्टियों से किए जाते हैं—

(1) अर्थ की दृष्टि से

(2) रचना की दृष्टि से।

कक्षा IX के पाठ्यक्रम के अंतर्गत केवल सरल व संयुक्त वाक्य ही आते हैं। इसीलिए यहाँ हम केवल इन्हीं का अध्ययन करेंगे।

1. सरल वाक्य

जिन वाक्यों में केवल एक ही मुख्य क्रिया हो, उन्हें सरल वाक्य कहते हैं। उदाहरण के लिए,

मैं तुम्हारी गरीबी को *जानता हूँ*।
मेरे पैर रखने पर ब्रेक *टूट गया*।
गाड़ी चलाते समय तुम इधर-उधर मत *देखा करो*।
साहसी विद्यार्थी सफल *होते हैं*।
वह महात्मा *है*।
व्यक्ति *रोया*।

उपरोक्त सभी वाक्यों में तिरछे शब्द प्रदर्शित करते हैं कि एक ही क्रिया का इन वाक्यों में प्रयोग हुआ है। यदि वाक्य लंबा भी हो तो भी वह एक क्रिया के होने से सरल वाक्य माना गया है। सरल वाक्यों को साधारण वाक्य भी कहा जाता है। उपरोक्त प्रारंभिक चार वाक्यों में क्रिया वे दो-दो पद हैं (जानता हूँ, टूट गया, देखा करो, होते हैं)। अंतिम दो वाक्यों में क्रिया के एक ही पद हैं (है, रोया)। इसी प्रकार क्रिया के तीन, चार व पाँच पद भी हो सकते हैं। उदाहरणार्थ—

सोहन खाना *खाता जाता है*। (तीन क्रियापद युक्त शब्द)
कुलदीप *भागता जा रहा होगा*। (चार क्रियापद युक्त शब्द)
सोहन खाना *खाता चला जा रहा था*। (पाँच क्रियापद युक्त शब्द)

उपर्युक्त सभी प्रकार के वाक्य सरल हैं। कारण यह है कि इनमें एक ही मुख्य क्रिया है (चाहे क्रिया पद कितने भी हों)। मुख्य क्रिया के अतिरिक्त जो सहायक पद वाक्य में होते हैं, उन्हें **सहायक क्रियाएँ** कहा जाता है। ये कई प्रकार की होती हैं—1. समापिका क्रिया; 2. रंजक क्रिया; 3. पक्ष, वृत्ति (मूड) आदि बोधक क्रिया।

दो से अधिक क्रियाओं वाले सरल वाक्य

सरल वाक्य की शर्त यह है कि उसमें एक मुख्य क्रिया होनी चाहिए, चाहे क्रिया पद एक से अधिक हो जाएँ। उदाहरणतया—श्याम *आया* व *चला गया*। इस वाक्य में दो क्रियाएँ हैं—*आया* तथा *चला गया*। *आया* **पूर्वकालिक क्रिया** है। पूर्वकालिक क्रिया मुख्य वाक्य का अंग होती है। उसका अलग अस्तित्व नहीं होता। पूर्वकालिक क्रिया से वाक्य को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पूर्णता नहीं मिलती। इसीलिए इसे मुख्य क्रिया नहीं कहा जाता है। कुछ वाक्यों में दो से भी अधिक क्रियाएँ होती हैं। उदाहरणार्थ—

वह हँसकर, रीझकर और मुस्कराकर सबका मन *मोह लेता है।*

उपरोक्त वाक्य में तीन पूर्वकालिक क्रियाएँ हैं—हँसकर, रीझकर व मुस्कराकर। यहाँ बात ध्यान देने योग्य है कि मुख्य क्रिया 'मोह लेता है' के बिना वाक्य की पूर्ति नहीं होती। इस वाक्य में एक ही मुख्य क्रिया है, इसीलिए यह सरल वाक्य है।

मुख्य क्रिया की पहचान—मुख्य क्रिया की पहचान यह है कि उससे वाक्य समाप्त होता है व अर्थ को पूर्णता मिलती है। उपरोक्त वाक्य में मुख्य क्रिया 'मोह लेता है' के बिना वाक्य की पूर्ति नहीं होती। इसलिए यह मुख्य क्रिया है। अन्य क्रियाएँ जैसे—हँसकर, रीझकर व मुस्कराकर, वाक्य के लिए अनिवार्य नहीं, ऐच्छिक हैं। इसके बिना भी वाक्य पूर्ण अर्थवान हो सकता है।

2. संयुक्त वाक्य

जहाँ दो या दो से अधिक उपवाक्य किसी समुच्चयबोधक (योजक) अव्यय शब्द से जुड़े होते हैं, वे संयुक्त वाक्य कहलाते हैं। जैसे—

मजदूर खूब मेहनत करता है *परंतु* उसे उसका लाभ नहीं मिलता।
शशि गा रही है *और* नाच रही है।

उपरोक्त उदाहरणों में टेढ़े छपे शब्दों—'परंतु' तथा 'और' अव्यय शब्दों से वाक्य जुड़े हुए हैं। यदि इन योजकों को हटा दिया जाए तो प्रत्येक में दो दो स्वतंत्र वाक्य बन सकते हैं। योजकों की सहायता से जुड़े इन वाक्यों को संयुक्त वाक्य कहा जाता है। संयुक्त वाक्यों के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं—

'और/तथा/एवं' अव्यय से जुड़े संयुक्त वाक्य—

सभा समाप्त हुई *और* सब लोग चले गए।
मैंने एक बच्चा देखा *और* वह स्कूटर चला रहा था।
पुष्पवाटिका में राम ने सीता को देखा *और* मन ही मन प्रसन्न हुए।
गौतम ने अपने पुत्र पर दृष्टि डाली *और* घर से बाहर चले गए।
अतिथि आए *और* कार्यक्रम आरंभ हुआ।
विद्यार्थी कम रोशनी में पढ़ा *और* अपनी आँखें गँवा बैठा।
वर्षा आरंभ हुई *और* मयूर नाचने लगे।

'किंतु/परंतु' अव्यय से जुड़े संयुक्त वाक्य—

खूब ढूँढा *परंतु* प्राप्त नहीं हुआ।
राम ने जगह-जगह ढूँढा *किंतु* सीता का पता नहीं चला।
प्रधानाचार्य ने असरदार भाषण दिया *परंतु* विद्यार्थियों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।
नाटक तो आरंभ हो गया था *किंतु* बिजली चली गई।
वह बहुत धनी है *किंतु* अभिमान नाम-मात्र का नहीं है।
विद्यार्थी ने प्रार्थना पत्र दिया था *परंतु* उसका नाम कट गया।
वह पौष्टिक भोजन करता है *किंतु* वह शक्तिशाली नहीं है।
बालि ने सुग्रीव का राज्य हड़प लिया था *परंतु* बाद में बहुत पछताया।
वह सुबह जल्दी उठा *किंतु* गाड़ी छूट गई।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'नहीं तो/अन्यथा/वरना' वाले संयुक्त वाक्य—

जलदी भागो *अन्यथा* गाड़ी छूट जाएगी।

कठिन परिश्रम करो *वरना* असफलता ही हाथ आऐगी।

उसका कर्ज चुका दो *नहीं तो* वह घर आ धमकेगा।

मैं समय पर पहुँच गया *अन्यथा* बहुत बुरा हो जाता।

कारगिल से शत्रु को भगाकर अच्छा किया *अन्यथा* वे देश को खंडित कर देते।

कपड़े उतार लो *वरना* वे वर्षा में भीग जाएँगे।

अपवादः मेरी बात को अन्यथा मत लो।

'इसलिए/अतः' अव्यय से जुड़े संयुक्त वाक्य—

मैं तुम्हारी समस्या समझता हूँ *इसलिए* तुम्हारी मदद कर रहा हूँ।

दुर्घटना घटने ही वाली थी, *अतः* गाड़ी सावधानी से चलाओ।

उसका सब कुछ खो गया *इसलिए* वह पागल हो गया।

तुम विदेशी हो, *अतः* तुम सरकारी नौकरी के हकदार नहीं हो।

सामने कुत्ता था *इसलिए* बिल्ली झाड़ियों में दुबक गई।

भारत मेरी जन्मभूमि है, *अतः* मैं इसकी प्रगति में सहयोग करूँगी।

'या' अव्यय से जुड़े संयुक्त वाक्य—

मैं घर 2 बजे तक आऊँगा या वहीं ठहर जाऊंगा।

करो *या* मरो।

चीनी का मूल्य 17 *या* 18 रुपये किलो है।

विवाह के मौके पर बारात सीधे यहीं आएगी *या* जनवासे में जाऐगी।

तुम पढ़ लो *या* खेल लो।

गंगा तट पर नहाना *या* मुँह तो अवश्य धोना।

'जो कि', 'जिस पर' से जुड़े संयुक्त वाक्य—

यह बढ़िया पुस्तक *जो कि* इसी विषय-वस्तु के लिए बनी है।

चरित्र वह बुनियाद है *जिस पर* राष्ट्र रूपी भवन खड़ा है।

3. वाक्य-विश्लेषण

किसी वाक्य के अंगों का यथासंभव विभाजन कर उनके पारस्परिक संबंध का विवेचन करना वाक्य विग्रह या वाक्य-विश्लेषण कहलाता है। वाक्य-विश्लेषण को वाक्य विग्रह भी कहा जाता है। उदाहरण के लिए,

काला घोड़ा शीघ्रता से घास चर रहा है।

इस वाक्य के सभी अंगों का विश्लेषण निम्न प्रकार होगा—

काला—कर्ता का विस्तार

घोड़ा—कर्ता

शीघ्रता से—क्रिया का विस्तार

घास—कर्म

चर रहा है—क्रिया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस प्रकार सभी वाक्यों का विश्लेषण किया जा सकता है जो निम्न प्रकार के होते हैं—1. सरल वाक्य विश्लेषण; व 2. संयुक्त वाक्य विश्लेषण।

1. साधारण वाक्य विश्लेषण

साधारण वाक्य विश्लेषण करते समय वाक्य को सर्वप्रथम उद्देश्य व विधेय में बाँट लेना चाहिए। **उद्देश्य** वाक्य का वह अंग है, जिसके विषय में कुछ कहा जाता है। वाक्य के जिस भाग में उद्देश्य अथवा कर्ता के विषय में कुछ कहा जाता है, उसे विधेय कहते हैं। उद्देश्य व विधेय के अंतर्गत निम्नलिखित पद आते हैं :

उद्देश्य
1. कर्ता (मुख्य कर्ता पद)
2. कर्ता-विस्तार (कर्ता का विशेषण या विशेषण-पदबंध)

विधेय
1. कर्म
2. कर्म का विस्तार (विशेषण पद/पदबंध)
3. क्रिया पद/पदबंध
4. क्रिया विशेषण पद/पदबंध
5. पूरक पद/पदबंध
6. अन्य कारकीय पद/पदबंध

इन्हीं के आधार पर साधारण वाक्यों का विश्लेषण करना अपेक्षित होता है। नीचे कुछ वाक्य दिए जा रहे हैं और उनका विश्लेषण एक तालिका में किया जा रहा है—

1. स्वार्थी व्यक्ति दूसरों के हित के लिए बहुत कम सोचते हैं।
2. हमारी कक्षा के छात्रों ने कई आश्चर्यजनक करतब दिखाए।
3. सावित्री ने अपनी कठिन तपस्या और असीम पतिभक्ति से असंभव बात को भी संभव बना दिया।
4. विविध रूप-रंग वाले फूल और पत्ते सहज ही हमारा मन मोह लेते हैं।

उपर्युक्त वाक्यों का विश्लेषण—

उद्देश्य		विधेय					
कर्ता	*कर्ता का विस्तार*	*कर्म*	*कर्म का विस्तार*	*क्रिया*	*क्रिया का विस्तार*	*पूरक*	*पूरक का विस्तार*
1. व्यक्ति	स्वार्थी	—	—	सोचते हैं।	दूसरों के हित के लिए	—	बहुत कम
2. छात्रों ने	हमारी कक्षा के	करतब	आश्चर्यजनक	दिखलाए	—	—	कई
3. सावित्री ने	—	बात को	असंभव	बना दिया	संभव	—	अपनी कठिन तपस्या और असीम पतिभक्ति से
4. फूल और पत्ते	विविध रूप रंग वाले	मन	हमारा	मोह लेते हैं	—	—	सहज ही

2. संयुक्त वाक्य विश्लेषण

संयुक्त वाक्य में दो साधारण वाक्य योजक के द्वारा जुड़े होते हैं। इसलिए सर्वप्रथम दोनों साधारण वाक्यों को योजकों से अलग करके साधारण वाक्य विश्लेषण की भाँति उनका विश्लेषण किया जाता है। संयुक्त वाक्य में योजकों

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

द्वारा जुड़े दोनों साधारण वाक्य स्वतंत्र रूप से अर्थपूर्ण होते हैं। वे एक दूसरे पर निर्भर नहीं होते। इसलिए इन्हें समानाधिकृत उपवाक्य कहा जाता है। उदाहरणतया—

1. सफेद गाय शीघ्रता से चर रही है और छोटा बछड़ा इधर-उधर दौड़ रहा है।

विश्लेषण: सफ़ेद गाय शीघ्रता से चर रही है (समानाधिकृत उपवाक्य)
छोटा बछड़ा इधर-उधर दौड़ रहा है (समानाधिकृत उपवाक्य)
और (योजक शब्द)

2. दुर्योधन ने कृष्ण का संधि प्रस्ताव नहीं माना इसलिए प्रसिद्ध महाभारत युद्ध हुआ।

विश्लेषण: दुर्योधन ने कृष्ण का संधि प्रस्ताव नहीं माना (समानाधिकृत उपवाक्य)
प्रसिद्ध महाभारत युद्ध हुआ (समानाधिकृत उपवाक्य)
इसलिए (योजक शब्द)

3. तुम चाहे कितने भी विफल हो जाओ किंतु भगवान् की करुणा पर अविश्वास मत करो।

विश्लेषण: तुम चाहे कितने भी विफल हो जाओ (समानाधिकृत उपवाक्य)
भगवान् की करुणा पर अविश्वास मत करो (समानाधिकृत उपवाक्य)
किंतु (योजक शब्द)

4. जल्दी भागो अन्यथा गाड़ी छूट जाएगी।

विश्लेषण: जल्दी भागो (समानाधिकृत उपवाक्य)
गाड़ी छूट जाऐगी (समानाधिकृत उपवाक्य)
अन्यथा (योजक शब्द)

5. मैं घर 2 बजे तक आऊँगा या वहीं ठहर जाऊँगा।

विश्लेषण: मैं घर 2 बजे तक आऊँगा (समानाधिकृत उपवाक्य)
वहीं ठहर जाऊँगा (समानाधिकृत उपवाक्य)
या (योजक शब्द)

4. वाक्य संश्लेषण

संश्लेषण का अर्थ है—समायोजित करना या मिलाना। 'संश्लेषण' शब्द 'विश्लेषण' का विलोमार्थी है। जहाँ 'वाक्य विश्लेष्ण' में वाक्यों या वाक्यांशों को अलग-अलग करके दिखाया जाता है, वहीं 'वाक्य-संश्लेषण' में अलग-अलग दिए गए अनेक वाक्यों को एक किया या बनाया जाता है। इस प्रकार **अनेक सरल वाक्यों को उनके केंद्रीय भाव को सुरक्षित रखते हुए एक सरल वाक्य अथवा संयुक्त वाक्य के रूप में ढालने की प्रक्रिया वाक्य-संश्लेषण कहलाती है।** उदाहरणार्थ—एक लड़का सड़क पर दौड़ा जा रहा था। वह बस से टकराया। उसकी मृत्यु हो गई।

उपरोक्त उदाहरण को हम निम्नलिखित रूप से लिख सकते हैं :

साधारण वाक्य—सड़क पर दौड़ता लड़का बस से टकरा कर मर गया।

संयुक्त वाक्य—सड़क पर दौड़ता लड़का बस से टकराया और उसकी मृत्यु हो गई।

कई वाक्यों का एक साधारण (सरल) वाक्य में संश्लेषण

अनेक सरल वाक्यों के स्थान पर एक सरल वाक्य संरचित करने की प्रक्रिया सरल वाक्य-संश्लेषण कहलाती है। इसमें हमें कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए।

1. सभी वाक्यों में एक मुख्य क्रिया चुनी जानी चाहिए। तत्पश्चात् शेष वाक्यों में से किसी एक को 'पद' (कर्म, विशेषण, कारक, प्रविशेषण, क्रियाविशेषण आदि) या 'पदबंध' के रूप में बनाना चाहिए।
2. किसी वाक्य को पूर्वकालिक क्रिया के रूप में भी बदला जा सकता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4. आवश्यकता पड़ने पर उपसर्ग, प्रत्यय या समुचित योजकों, मुहावरों की सहायता से नए शब्दों का निर्माण करना चाहिए।
5. यह सदैव ध्यान रखना चाहिए कि संश्लेषित वाक्य में मूल वाक्यों की सभी बातें सम्मिलित हो गई हैं, न कम न अधिक।

वास्तविकता यह है कि वाक्य संश्लेषण छात्रों के निरंतर अभ्यास से ही आ सकता है। इसके कोई मूलभूत नियम नहीं होते हैं। नीचे कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं जिनके माध्यम से छात्र अभ्यास कर सकते हैं—

योजक 'व/और' की सहायता से संश्लेषण

1. आप मेरे गुरु हैं। आप मेरे संरक्षक हैं। आप मेरे मार्ग-दर्शक हैं।
   संश्लेषित वाक्य—आप मेरे गुरु, संरक्षक व मार्ग-दर्शक हैं।
2. राम वन को गए। सीता वन को गई। लक्ष्मण वन को गए।
   संश्लेषित वाक्य—राम, सीता और लक्ष्मण वन को गए।

पूर्वकालिक क्रिया 'कर' की सहायता से संश्लेषण

1. वह स्नान करता है। वह पूजा करता है। वह भोजन करने बैठता है।
   संश्लेषित वाक्य—वह स्नान व पूजा कर भोजन करने बैठता है।
2. आप मेरे गुरु हैं। आप मेरे संरक्षक हैं। आप मेरे मार्ग-दर्शक हैं।
   संश्लेषित वाक्य—आप मेरे गुरु, संरक्षक व मार्ग-दर्शक हैं।

वाक्य या वाक्यांश के लिए एक शब्द के प्रयोग द्वारा

1. वह मेरे पति के छोटे भाई की पत्नी है। इसका नाम राधा है। यह मेरे साथ रहती है।
   संश्लेषित वाक्य—मेरी देवरानी राधा मेरे साथ रहती है।
2. यह बहुत अकेली है। उसके कोई संतान नहीं थी। लोग उसका मुँह तक नहीं देखते।
   संश्लेषित वाक्य—उस अकेली बाँझ का लोग मुख तक नहीं देखते।

मुहावरों के प्रयोग द्वारा

1. वह परोपकारी है। वह सबको परम प्रिय है।
   संश्लेषित वाक्य—परोपकारी होने के कारण वह सबकी आँखों का तारा है।
2. आज भीषण वर्षा हुई। आज की वर्षा से बाढ़ आ गयी।
   संश्लेषित वाक्य—आज की मूसलाधार वर्षा से बाढ़ आ गई।

कृदंती संज्ञा पदबंध के प्रयोग द्वारा

1. आज मैं घर जाऊँगा। यह आवश्यक है।
   संश्लेषित वाक्य—आज मेरा घर जाना आवश्यक है।
2. वह तेज धावक घोषित हुआ है। समाचार-पत्र में यह बात प्रकाशित हुई है।
   संश्लेषित वाक्य—उसके तेज धावक होने की घोषणा समाचार-पत्र में प्रकाशित हुई है।

किसी पदबंध या संज्ञा का प्रयोग समानाधिकरण में करने से

1. रमेश बड़ा परिश्रमी है। वह उमेश का अग्रज है। वह बहुत बुद्धिमान है।
   संश्लेषित वाक्य—उमेश का अग्रज रमेश बड़ा परिश्रमी व बुद्धिमान है।
2. सुरेंद्र मोहन हिंदी के श्रेष्ठ उपन्यासकार थे। वे एक श्रेष्ठ एकाकीकार भी थे। वे अभिनेता भी थे।
   संश्लेषित वाक्य—हिंदी के श्रेष्ठ उपन्यासकार व एकाकीकार सुरेंद्र मोहन अभिनेता भी थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सामान्य व कृदंती विशेषण पदबंध के प्रयोग द्वारा

1. रमा ने एक कहानी लिखी। यह सत्य घटना पर आधारित थी। वह बड़ी मार्मिक थी।
   संश्लेषित वाक्य—राम ने सत्य घटना पर आधारित एक बड़ी मार्मिक कहानी लिखी। (सामान्य विशेषण पदबंध)
2. हिरण सुनहरी रंग का था। वह भाग रहा था। व्याध उसका पीछा कर रहा था।
   संश्लेषित वाक्य—सुनहरी रंग के भागते हुए हिरण का व्याध पीछा कर रहा था। (कृदंती विशेषण पदबंध)

क्रिया-विशेषण पदबंध के प्रयोग द्वारा

1. लड़की रो रही है। वह सो गई।
   संश्लेषित वाक्य—लड़की रोते-रोते सो गई।
2. सूर्यास्त हुआ। चारों ओर अंधकार फैल गया।
   संश्लेषित वाक्य—सूर्यास्त होने पर चारों ओर अंधकार फैल गया।

कई वाक्यों का संयुक्त वाक्य में संश्लेषण

संयुक्त वाक्यों में एक से अधिक साधारण वाक्य विभिन्न योजकों के प्रयोग द्वारा जुड़े रहते हैं। अतः दो वाक्यों को संयुक्त बनाते समय उन्हें किसी योजक से जोड़ देना चाहिए। उदाहरणतया—

दिन हुआ। सूरज निकला।

संयुक्त वाक्य—दिन हुआ और सूरज निकला।

नोटः यदि वाक्य दो से अधिक हों तो सर्वप्रथम उन्हें दो साधारण वाक्यों में बदल लें तत्पश्चात् उचित योजक की सहायता से जोड़ दें। उदाहरणतया—

दिन हुआ। सूरज निकला। ठंड कम हुई।

संयुक्त वाक्य—दिन होने पर सूरज निकला और ठंड कम हुई।

अब विद्यार्थियों के अभ्यास हेतु कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं—

1. वह बाजार गया। वहाँ से फल लाया।
   संयुक्त वाक्य—वह बाजार गया और वहाँ से फल लाया।
2. मैं नाच सकती हूँ। मैं गा सकती हूँ। मैं अभिनय कर सकती हूँ।
   संयुक्त वाक्य—मैं नाच-गा सकती हूँ तथा अभिनय भी कर सकती हूँ।
3. वह काम करे। वह चला जाए।
   संयुक्त वाक्य—वह काम करे अन्यथा चला जाए।
4. मेरा कहा मानो। बाद में पछताओगे।
   संयुक्त वाक्य—मेरा कहा मानो नहीं तो बाद में पछताओगे।
5. मैं चलना चाहता हूँ। अभी बहुत काम बाकी हैं।
   संयुक्त वाक्य—मैं चलना चाहता हूँ परंतु अभी बहुत काम बाकी हैं।
6. रावण ने राम से बैर किया। उसका भाई विभीषण राम का भक्त था।
   संयुक्त वाक्य—रावण ने राम से बैर किया, किंतु उसका भाई विभीषण राम का भक्त था।
7. मैं आज स्कूल नहीं जाऊँगा। कल कपड़े नहीं सूख पाए।
   संयुक्त वाक्य—मैं आज स्कूल नहीं जाऊँगा क्योंकि कल कपड़े नहीं सूख पाए।
8. मैं अस्वस्थ हो गया। कल दिन भर बारिश होती रही।
   संयुक्त वाक्य—मैं अस्वस्थ हो गया क्योंकि कल दिन भर बारिश होती रही।
9. वह चालाक नहीं है। लोग उसे मूर्ख समझते हैं। उसे ठगते हैं।
   संयुक्त वाक्य—वह चालाक नहीं है, अतः लोग उसे मूर्ख समझकर ठगते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

10. वह मेहनत नहीं करता। प्रतिवर्ष असफल होता है।
संयुक्त वाक्य—वह मेहनत नहीं करता इसलिए प्रतिवर्ष असफल होता है।
11. अच्छे काम करो। संसार में तुम्हारा यश फैले।
संयुक्त वाक्य—अच्छे काम करो जिससे संसार में तुम्हारा यश फैले।
12. तुम्हें प्रतिमाह कुछ रुपये अवश्य बचाने चाहिएँ। आवश्यकता पड़ने पर ऋण न लेना पड़े।
संयुक्त वाक्य—तुम्हें प्रतिमाह कुछ रुपये अवश्य बचाने चाहिएँ ताकि आवश्यकता पड़ने पर ऋण न लेना पड़े।
13. वह बहुत मेहनती है। उसे मनचाहा फल नहीं मिलता।
संयुक्त वाक्य—वह बहुत मेहनती है, फिर भी उसे मनचाहा फल नहीं मिलता।
14. पद्मावती के खुले बाल दिखाई दे रहे थे। उन्हें देखकर मेघ-घटा उमड़ने का आभास होने लगता था।
संयुक्त वाक्य—पद्मावती के खुले बाल देखकर प्रतीत होता था मानो मेघ-घटा उमड़ आयी हो।

5. वाक्य रूपांतरण

एक प्रकार के वाक्य को किसी दूसरे प्रकार के वाक्य में परिवर्तित करने को वाक्य रूपांतरण कहा जाता है। दो प्रकार का वाक्य रूपांतरण हमारे पाठ्यक्रम में है—सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य बनाना; तथा संयुक्त वाक्य से सरल वाक्य बनाना।

सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य

1. सरल वाक्य—वह सब्जी खरीदने के लिए बाजार गया था।
संयुक्त वाक्य—उसे सब्जी खरीदनी थी, इसलिए वह बाजार गया।
2. सरल वाक्य—सरस्वती ने नहाकर पूजा की।
संयुक्त वाक्य—सरस्वती नहाई और पूजा की।
3. सरल वाक्य—लक्ष्मी के जाते ही रेनु आ गई।
संयुक्त वाक्य—लक्ष्मी गई और रेनु आ गई।
4. सरल वाक्य—चोर को देखकर-सिपाही पकड़ने दौड़ा।
संयुक्त वाक्य—सिपाही ने चोर को देखा और पकड़ने दौड़ा।
5. सरल वाक्य—पंच पेट्रोमैक्स खरीदने के लिए पटना गए।
संयुक्त वाक्य—पंचों को पेट्रोमैक्स खरीदना था इसलिए पटना गए।
6. सरल वाक्य—मोहन सास से मिलने ससुराल गया।
संयुक्त वाक्य—मोहन को सास से मिलना था इसलिए वह ससुराल गया।
7. सरल वाक्य—माँ ने बेटी को दूध पिलाकर सुलाया।
संयुक्त वाक्य—माँ ने बेटी को दूध पिलाया और सुला दिया।
8. सरल वाक्य—सुनीता ने कमरा धोकर सफाई की।
संयुक्त वाक्य—सुनीता ने कमरा धोया व सफाई की।
9. सरल वाक्य—नेता भाषण देकर एक तरफ हो गया।
संयुक्त वाक्य—नेता ने भाषण दिया और एक तरफ हो गया।
10. सरल वाक्य—नीतू ने कविता लिखकर पुरस्कार प्राप्त किया।
संयुक्त वाक्य—नीतू ने कविता लिखी व पुरस्कार प्राप्त किया।

(c) 2020 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संयुक्त वाक्य से सरल वाक्य

1. संयुक्त वाक्य—बालक रोता रहा और चुप हो गया।
   सरल वाक्य—बालक रो-रोकर चुप हो गया।
2. संयुक्त वाक्य—मुझसे मिल लेना परंतु प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।
   सरल वाक्य—मुझसे मिलने के लिए प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।
3. संयुक्त वाक्य—कठोर बनो परंतु सहृदय रहो।
   सरल वाक्य—कठोर बनकर भी सहृदय बनो।
4. संयुक्त वाक्य—सूर्योदय हुआ और पक्षी बोलने लगे।
   सरल वाक्य—सूर्योदय होने पर पक्षी बोलने लगे।
5. संयुक्त वाक्य—उसे फल खरीदने थे, इसलिए वह बाजार गया।
   सरल वाक्य—वह फल खरीदने के लिए बाजार गया।
6. संयुक्त वाक्य—वह घर आया और उसने भोजन किया।
   सरल वाक्य—उसने घर आकर भोजन किया।
7. संयुक्त वाक्य—संन्यासी ने आशीर्वाद दिया और अंतर्ध्यान हो गया।
   सरल वाक्य—संन्यासी आशीर्वाद देकर अंतर्ध्यान हो गया।
8. संयुक्त वाक्य—सुषमा बीमार है, इसलिए आज स्कूल नहीं गई।
   सरल वाक्य—सुषमा बीमार होने के कारण आज स्कूल नहीं गई।
9. संयुक्त वाक्य—रात हुई व आकाश में सितारों का मेला लग गया।
   सरल वाक्य—रात को आकाश में सितारों का मेला लग गया।
10. संयुक्त वाक्य—नीतू ने कविता लिखकर पुरस्कार प्राप्त किया।
    सरल वाक्य—नीतू ने कविता लिखी व पुरस्कार प्राप्त किया।

प्रश्न अभ्यास

1. निम्नलिखित वाक्यों में से सरल व संयुक्त वाक्य छाँटिए—

1. कस्तूरी लाल ईमानदार है इसलिए प्रसिद्धि पाता है।
2. दादाजी आकर टीवी देखने लगे।
3. लल्लू ने चुटकुला सुनाया और मित्र हँस दिए।
4. पानी गिरने पर पुस्तक गीली हो गई।
5. बेटिकट बस से नीचे उतर जाएँ।
6. समय हो गया है परंतु ड्राईवर बस नहीं चला रहा।
7. नानी जी मुझे इंजीनियर बनने के लिए कहती हैं।
8. प्रभा ने कागज काटा।
9. बिजली नहीं थी इसलिए अँधेरा था।
10. दिनेश गीताकालोनी समाचार पत्र लेने गया।
11. दशरथ पुत्र राम ने लंकापति रावण का वध कर दिया।
12. कंचन रमन के साथ केरल गई थी।
13. पैसे खर्च करो और मजे लो।
14. शाम होते ही आँधी आ गई।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

15. अतिथियों ने भोजन किया।
16. दादाजी आकर टेलीविजन देखने लगे।
17. बादलों को देखकर मोर नाच रहे हैं।
18. सुनीता कार्यालय से लौटेगी और खाना बनाएगी।
19. जन्म-दिवस पर आकर बेटे को आशीर्वाद दें।
20. गोमती घर पहुँची तो बेटी रो रही थी।
21. गीता पोस्टकार्ड खरीदकर वापस आ गई।
22. वर्षा हुई और मोर नाचने लगे।
23. पुलकित कक्षा में आया।
24. चोर ने सोना चुराया और मैंने उसे पकड़ लिया।
25. आस्था पुस्तकें लेने के लिए पुस्तकालय गई।
26. सन्नी देओल अच्छे अभिनेता है किंतु चल नहीं रहे।
27. प्रीति आई थी परंतु रुपये नहीं दे गई।
28. दादाजी आए और टीवी देखने लगे।
29. सुरेश ने पुस्तक नहीं पढ़ी है।
30. विशाल अत्यंत धनी है परंतु बहुत ही कंजूस है।
31. क्या वह इतना भी मूर्ख है?
32. गाँधीजी का नाम किसने नहीं सुना।
33. घूमने चलना है इसलिए तैयार हो जाओ।
34. तुम बाहर गए और वह सो गया।
35. माँ ने मारा, तो बालक रूठ गया।
36. सुबह पहली बस पकड़ो और शाम तक लौट आओ।
37. शशि गा रही है तथा नाच रही है।
38. उसने झूठ बोला इसलिए दंड पाया।
39. वह दिल्ली या मुंबई गया है।
40. मजदूर को अपनी मेहनत का लाभ नहीं मिलता।

2. निम्नलिखित वाक्यों की सहायता से एक सरल तथा एक संयुक्त वाक्य बनाइए—

1. यह किताब मीना की है। मीना ने अपनी किताब राधा को दी।
2. रमेश अपने मित्र के घर गया। अपने मित्र के घर से वह किताबें लाया।
3. होरी एक किसान था। वह बहुत गरीब था। वह बहुत परिश्रम करता था। उसके पास बैलों की एक जोड़ी थी।
4. वह देर तक जागा। सुबह देर से उठा। विद्यालय भी देरी से पहुँचा।
5. वहाँ एक गाँव था। वह गाँव बहुत बड़ा था। वह गाँव चारों ओर जंगल से घिरा था। उस गाँव मे आदिवासियों के परिवार रहते थे।
6. अध्यापक विद्यालय पहुँचा। रजिस्टर उठाया। कक्षा में जाकर हाजिरी ली। वह पढ़ाने लगा।
7. छात्र ने कापियाँ लीं। बैग में डालीं।
   छात्र पढ़ने चला गया।
8. वह घर गया। सामान उठाया। वह कोलकाता चला गया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

9. घंटी बजी। छात्रों ने बस्ते उठाए। छात्र घर गए।
10. सीमा अध्यापिका है। वह बहुत सुंदर है। वह मेरी भाभी है।

3. निम्नलिखित का सरल वाक्यों में संश्लेषण कीजिए।

1. प्रभा ने कागज काटा। नाव बनाई। पानी में तैराई।
2. दिनेश दरियागंज गया। कम्प्यूटर लाया। कम्प्यूटर चलाया।
3. पुलकित कक्षा में आया। बस्ता खोला। पुस्तक निकाली।
4. पुजारी ने घंटी बजाई। आरती की। प्रसाद बाँटा।
5. इंद्रदेव अखबार लाया। अखबार पढ़ा। रख दिया।
6. बलदेव ने उठकर बैलों को निकाला। वह खेतों की ओर चल पड़ा।
7. मैं गृह-कार्य करके स्कूल गया। अध्यापिका नहीं आई।
8. बैंड बजा। बारात आई। अतिथियों ने भोजन किया।
9. भारत शांतिप्रिय देश है। यहाँ विविधता में एकता है। सब मिलजुल कर रहते हैं।
10. कल दशहरा था। बाजार में बहुत भीड़ थी।

3. निम्नलिखित का संयुक्त वाक्यों में संश्लेषण कीजिए।

1. शेखर के पिता विद्यालय आए। प्रधानाचार्य से मिले। चले गए।
2. वह देर रात तक जागा। सुबह देर से उठा। विद्यालय भी देर से पहुँचा।
3. प्रज्ञा ने पुस्तकें फाइल में रखीं। फाइल उठाई। कॉलिज पढ़ने चली गई।
4. घायल सैनिक उठा। शस्त्र उठाया। शत्रुओं से लड़ने लगा।
5. राम इधर आया। थोड़ी देर रुका। वह वापिस घर चला गया।
6. वह सुबह उठा। उसने भोजन किया। वह काम पर चला गया।
7. वह बूढ़ा उठा। उसने लाठी ली। वह चल दिया।
8. वहाँ एक घर था। वह घर छोटा-सा था। घर के चारों ओर फूल थे।
9. रामसिंह एक किसान था। वह बहुत गरीब था। वह बहुत परिश्रम करता था।
10. घंटी बजी। छात्रों ने बैग उठाए। छात्र घर गए।
11. वहाँ एक गाँव था। वह गाँव छोटा-सा था। उसके चारों ओर जंगल थे। उस गाँव में आदिवासियों के बीस परिवार रहते थे।
12. स्कूल में एक छात्रा थी। छात्रा ईमानदार थी। छात्रा को सभी स्नेह करते थे।
13. रमेश सुंदर है। रमेश ईमानदार है। रमेश सबको अच्छा लगता है।
14. मोहन मुझसे मिला। बहुत देर तक वह मुझसे बातचीत करता रहा। थोड़ी देर उसने खाना खाया।
15. रमेश देर रात तक जागा। सुबह देर से उठा। वह विद्यालय भी देर से पहुँचा।
16. हम खाने नहीं आए हैं। हम आपसे मिलने आए हैं।

गत परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्न

1. निम्नलिखित वाक्यों को सरल वाक्यों में बदलिए—

1. शशि गा रही है और नाच रही है। *(CBSE 1992)*
2. मैंने एक बच्चे को देखा जो बहुत स्वस्थ था। *(CBSE 1998)*
3. वह घर गया और काम में लग गया। *(All India CBSE 2000)*
4. मैंने गौरा को देखा और उसे पालने का निश्चय किया। *(All India CBSE 2001)*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2. संयुक्त वाक्य में बदलिए—

1. मैंने उसे पढ़ाकर नौकरी दिलवाई। *(CBSE 1992)*
2. वह खाना खाकर सो गया। *(CBSE 1998)*
3. कम रोशनी में पढ़ने के कारण विद्यार्थी अपनी आँखें गँवा बैठा। *(All India CBSE 2001)*

3. निम्नलिखित सरल वाक्यों को संयुक्त वाक्य में बदलिए—

1. मोहन कल यहाँ आया। उसने राम से बातें कीं। वह चला गया। *(CBSE 1994)*
2. घंटी बजी। छात्र कक्षा से बाहर निकले। उन्होंने अपनी पुस्तकें उठाईं। वे अपने घर को चले गए। *(CBSE 1998)*

4. वाक्य-संश्लेषण कीजिए—

1. वह देर रात तक जागा। सुबह देर से उठा। विद्यालय भी देर से पहुँचा। *(CBSE 1994)*
2. अध्यापक विद्यालय पहुँचा। रजिस्टर उठाया। कक्षा में जाकर हाजिरी ली। पढ़ाने लगा। *(All India CBSE 1997)*
3. घंटी बजी। छात्रों ने बस्ते उठाए। छात्र घर गए। *(All India CBSE 1998)*
4. मजदूरों ने कार्य किया। मजदूरों ने पैसे लिए। मजदूर घर गए। *(All India CBSE 1998)*
5. छात्र ने कापियाँ लीं। बैग में डालीं। छात्र पढ़ने चला गया। *(CBSE 1998)*
6. वह घर गया। सामान उठाया। वह कोलकाता चला गया। *(CBSE 1998)*
7. घायल सैनिक उठा। शस्त्र उठाया। शत्रुओं से लड़ने लगा। *(All India CBSE 1999)*
8. शेखर के पिता विद्यालय आए। प्रधानाचार्य से मिले। चले गए। *(CBSE 1999)*
9. वह देर रात तक जागा। सुबह देर से उठा। विद्यालय भी देर से पहुँचा। *(CBSE 1999)*
10. वहाँ एक घर था। वह घर छोटा सा था। घर के चारों ओर फूल थे। *(All India CBSE 2000)*
11. वह सुबह उठा। उसने भोजन किया। वह काम पर चला गया। *(CBSE 2000)*
12. वह बूढ़ा उठा। उसने लाठी ली। वह चल दिया। *(CBSE 2000)*
13. मैं न जाऊँगा। न तुम जाओगे।/न सुरेश ही जाएगा। *(All India CBSE 2001)*
14. मोहन मुझसे मिला। बहुत देर तक वह मुझसे बातचीत करता रहा। थोड़ी देर बाद उसने खाना खाया।

5. सरल वाक्य में संश्लेषण कीजिए—

1. हम खाने नहीं आए हैं। आपसे मिलने आए हैं। *(CBSE 2004)*
2. उन्होंने हमारे यहाँ खाना नहीं खाया। वे केवल कुछ गीत सुनकर ही चले गए। *(A.I. CBSE 2005)*
3. खिलाड़ी मैदान में आया। उसने चार रन बनाए। वह जल्दी ही आउट हो गया। *(A.I. CBSE 2005)*
4. सभा समाप्त हुई। वह घर लौटा। वह सो गया। *(A.I. CBSE 2005)*
5. घंटी बजी। छात्र-छात्राएँ मैदान में आए। कुछ ही देर में प्रार्थना-सभा आरंभ हो गई। *(CBSE 2005)*
6. कल वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई। उसमें कुछ छात्र विषय के पक्ष में बोले। कुछ विषय के विपक्ष में बोले। *(A.I. CBSE 2005)*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

12

पर्यायवाची, श्रुतिसमभिन्नार्थक व विलोम शब्द

1. पर्यायवाची या समानार्थी शब्द

एक अर्थ को प्रकट करने वाले अनेक शब्दों को समानार्थक शब्द या पर्यायवाची शब्द कहते हैं। इस प्रकार के शब्द प्रत्येक भाषा में होते हैं। कुछ समानार्थक शब्द नीचे प्रस्तुत हैं:

अ

अंधकार	अंधेरा, तम, तिमिर।
अच्छा	शुभ, शोभन, उचित, उपयुक्त।
अजेय	अजित, अपराजेय, अपराजित।
अतिथि	अभ्यागत, आगंतुक, मेहमान, पाहुना।
अनुचर	सेवक, दास, नौकर, भृत्य, परिचारक।
अनुपम	अनूठा, अद्वितीय, निराला, अपूर्व, अभूतपूर्व, अनोखा।
अन्य	भिन्न, पृथक, दूसरा, और।
अमृत	सोम, अमिय, सुधा, पीयूष, अमी।
अरण्य	जंगल, वन, विपिन, कानन, कांतार।
अश्व	तुरंग, सैंधव, तुरंगम, घोड़ा, हय, घोटक।
असुर	रजनीचर, राक्षस, दैत्य, दानव, तमचर, दनुज, निशाचर, रजनीचर।
अहंकार	दंभ, घमंड, दर्प, अभिमान।
आँख	नेत्र, दृग, चक्षु, नेत्र, नयन, लोचन, विलोचन।
आकाश	अंबर, अनंत, शून्य, गगन, व्योम, आसमान।
आग	अग्नि, ज्वाला, हुताशन, अनल, पावक, दहन।
आज्ञा	निर्देश, आदेश, हुक्म।
आभूषण	विभूषण, गहना, भूषण, अलंकार।
आनंद	प्रसन्नता, खुशी, उल्लास, हर्ष।
आम	अमृतफल, आम्र, रसाल।

इ

इंद्र	महेंद्र, देवेंद्र, देवराज, पुरंदर, शचीपति, सुरेंद्र, सुरेश।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इंद्रपुरी अमरावती, स्वर्ग, जन्नत, देवलोक, अलकापुरी, देवपुरी।
इच्छा आकांक्षा, चाह, लालसा, मनोरथ, कामना, अभिलाषा।
ईश्वर भगवान, परमात्मा, परमपिता, जगन्नाथ, त्रिलोकनाथ, प्रभु, परमेश्वर, जगदीश, दीनबंधु।

उ

उद्यान उपवन, बाग, वाटिका, बगीचा, बागबान, कुसुमाकर।

क

कपड़ा चीर, अंबर, पट, वस्त्र, वसन।
कमल नीरज, राजीव, सरोज, अरविंद, जलज, इंदीवर, तामरस, सरसीरूढ़, शतदल, पुंडरीक, उत्पल, सरसिज, नलिन, पंकज, वारिज, पद्म, राजीव, अंबुज, तामरस, कंज।
कल्पवृक्ष कल्पतरु, सुरद्रुम, सुरतरु, कल्पद्रुम।
कृषक खेतिहर, किसान, हलवाहा, कृषिजीवी, हलधर।
कृष्ण केशव, घनश्याम, द्वारकाधीश, मोहन, वासुदेव, गोपाल, मुरारि, बंसीधर, माधव, गिरिधर, श्याम।
कान श्रवण, श्रवणेंद्रिय, कर्ण, श्रुतिपट।
कामदेव रतिपति, कंदर्प, मनोज, मनोभाव, मनसिज, पुष्पधन्वा, मार, मीनकेतु, अतनु, मदन, मन्मथ, अनंग, मीनकेतु, मार।
किनारा कूल, तट, तीर।
किरण अंशु, कर, मरीचि, रश्मि।
कुबेर यक्षराज, धनाधिप, धनपति, धनद।
कोमल नरम, मृदु, सुकुमार, मसृण, मुलायम।
कोयल परभूत, वसंतदूत, श्यामा, कोकिला, पिक।
कौशल कुशलता, चातुर्य, दक्षता, पटुता, निपुणता, चतुराई।

ख

खल दुष्ट, धूर्त, नीच, अधम, दुर्जन, कुटिल।

ग

गंगा देवसरी, सुरसरिता, मंदाकिनी, भागीरथी, त्रिपथगा, सुरनदी, जाह्नवी, देवनदी, सुरसरि।
गणेश लंबोदर, एकदंत, विनायक, गणपति, गौरीसुत, गजानन, विघ्नेश्वर, मूषकवाहन, गजवदन।
गरुड़ खगेश, पक्षिराज, खागकेतु, हरिवाहन, वैनतेय।
गाय धेनु, सुरभि, गौ।
गीदड़ सियार, श्रृंगाल, जंबूक।
ग्रीष्म निदाध, घाम, गर्मी, तपत।

घ

घर धाम, आलय, गृह, भवन, निवास, निकेतन, आगार, मंदिर, आवास, गेह, निकेत, सदन।
घोड़ा तुरंग, अश्व, घोटक, बाजि, हय, सैंधव।
घन बादल, हथौड़ा, भारी।

च

चतुर दक्ष, प्रवीण, कुशल, चालाक, होशियार, पटु, नागर।
चाँद निशाकर, राकेश, विधु, शशि, इंदु, चंद्रमा, मयंक, हिमांशु, कलानिधि, सोम, शशांक, रजनीश, सुधांशु, सुधाकर, मृगांक, निशापति, चंद्र।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चाँदनी ज्योत्सना, कौमुदी, चंद्रिका, कुमुदकला, चंद्रमरीचि।

ज

जंगल कांतार, विपिन, अरण्य, वन।
जन्म आविर्भाव, उद्‌भव, उत्पत्ति, उत्पन्न।
जल तोय, सलिल, नीर, पानी, पय, जीवन, अंबु, उदक।
जिह्वा रसिका, जिभ्या, जीभ, रसना, रसज्ञा।
जीव जीविका, बृहस्पति, आत्मा, प्राणी।
जहाज जलयान, वोहित, पोत।
जमुना श्यामा, यमुना, कालिंदी, रविसुता, रविनंदिनी।

झ

झंडा पताका, ध्वज, फरहरा, वैजयंती।
झरना स्रोत, निर्झर, सोता, प्रपात, उत्स।

त

तलवार असि, करवाल, खड्ग, शमशीर, चंद्रहास, कृपाण।
तरकश तूणीर, तूण, निषंग, त्रोण, इषुधी।
तन देह, शरीर, कलेवर, तनु, काया।
तरु वृक्ष, पेड, द्रुम, विटप, पादप।
तारा नखत, उडु, तारक, नक्षत्र, तारिका।
तालाब सरोवर, जलाशय, सर, तड़ाग, पोखर, ताल।

थ

थोड़ा अल्प, किंचित, न्यून, जरा, तनिक।

द

दाँत दशन, दंत, द्विज।
दिन दिवस, दिवा, वासर, वार।
दुःख पीड़ा, वेदना, क्लेश, कष्ट।
दुर्गा सिद्धिदात्री, कुष्माण्डा, चंद्रघंटा, शैलपुत्री, सिंहवाहिनी, काली, कल्याणी, महागौरी, जगदंबा, चंडी।
दुष्ट दुर्जन, धूर्त, कुटिल, वंचक, खल।
दूध पय, गोरस, क्षीर, दुग्ध।
देवता सुर, निर्जर, विबुध, अमर, अजर, देव।

ध

धन अर्थ, श्री, संपत्ति, वित्त, द्रव्य।
धनुष कोदंड, कार्मुक, चाप, कमान, शरासन।
ध्वजा केतु, निशान, झंडा, पताका, ध्वज।
धरती पृथ्वी, धरा, धरिनी, धरणी, मही, भू, भूमि।

न

नदी निम्नगा, निर्झरिणी, सरि, आपगा, तटिनी, तरंगिणी, सरिता।
नारी औरत, महिला, कामिनी, स्त्री, वनिता, अबला, कांता, अंगना, सुंदरी, रमणी, बीर।
नाश विनाश, विध्वंस, तबाही, ध्वंस।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नौका	नाव, बेड़ा, डोंगी, तरी, तरिणी।
पंडित	सुधी, कोविद, विद्वान, मनीषी, बुध।
पक्षी	शकुनि, पतंग, विहंगम, नभचर, खग, विहग, द्विज, अंडज, पखेरू।
पति	भर्ता, नाथ, साजन, बालम, स्वामी, कांत, वर।
पत्ता	पात, पत्र, दल, वर्ण।
पत्थर	उपल, प्रस्तर, अश्म, पाषाण, पाहन।
पत्नी	वधू, भार्या, गृहिणी, जीवनसंगिनी, अर्द्धांगिनी, प्रिया, स्त्री, वामा, कांता, वामांगी, सहधर्मिणी, अंगना।
पर्वत	गिरी, भूधर, भूमिधर, चट्टान, शैल, अचल, महीधर, पहाड़, अद्रि।
पवन	अनिल, समीर, बयार, वायु, मारुत, पवमान, हवा, प्रभंजन।
पवित्र	पूत, शुचि, निर्मल, निष्कलुध, पावन, अकलुष, पुण्य, शुद्ध।
पाप	अधर्म, दुष्कृत्य, अघ, पातक।
पुत्री	सुता, कन्या, तनया, लड़की, आत्मज, लड़की, दुहिता।
पुरुष	आदमी, मनुज, मनुष्य, जन, नर, जन।
पुष्प	सुमन, पुहुप, कुसुम, फूल, प्रसून।
पृथ्वी	भूमि, धरा, धारयित्री, वसुंधरा, धरती, उर्वी, भू, मही, धरणी, मेदिनी, वसुमति, अवनि।
प्रकाश	चमक, रोशनी, उजाला, ज्योति, द्युति, प्रभा।
प्राकृतिक	नैसर्गिक, प्रकृत, स्वाभाविक, दैवीय।

ब

बंदर	मर्कट, कपि, वानर, हरि, शाखामृग।
बर्फ	तुहिन, नीहार, तुषार, हिम।
बाग	उपवन, उद्यान, वाटिका।
बाल	अलक, केश, कुंतल, कच, चिकुर।
बालक	बच्चा, शिशु, शावक, बाल, लड़का।
बिजली	चंचला, सौदामिनी, विद्युत, चपला, चंचला, तड़ित।
बुद्धि	मति, मेधा, विवेक, अक्ल, धी, प्रज्ञा, मनीषा।
बेटा	सुत, आत्मज, पूत, पुत्र, तनुज, तनय।
ब्रह्मा	विधाता, स्रष्टा, चतुर्मुख, चतुरानन, विधि, प्रजापति।
ब्राह्मण	भूसुर, द्विज, भूदेव, विप्र।

भ

भौंरा	अलि, षट्पद, भ्रमर, भृंग, मधुप, भँवरा, मधुकर, द्विरेफ।
भारत	आर्यावर्त, इंडिया, हिंदुस्तान।
भाषा	भारती, वाणी, सरस्वती, ब्राह्मी।

म

मनुष्य	इनसान, नर, मनुज, आदमी, मानव।
मदिरा	वारुणी, मधु, मद्य, शराब, सुरा।
मधु	कुसुमाकर, ऋतुराज, वसंत, माधव।
मछली	शफरी, मत्स्य, मीन।
मयूर	केकी, मोर, शिखी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

महादेव	शिव, रुद्र, त्रिलोचन, शंभू, आशुतोष, महेश, पशुपति, सतीश, गौरीपति, कैलाशनाथ, चंद्रशेखर, त्रिपुरारि, शंकर।
माता	जननी, मातृ, माँ, अंबा।
मित्र	मीत, सखा, सहचर, दोस्त, सुहृद।
मिथ्या	झूठ, असत्य, अयथार्थ, मृषा।
मुक्ति	निर्वाण, सद्‌गति, मोक्ष, कैवल्य, परमपद।
मृत्यु	निधन, महानिर्वाण, मोक्ष, देहांत, देहावसान, स्वर्गवास।
मेघ	वारिद, जलद, नीरद, जलधर, घन, पयोद, अंबुद, धराधर।

य

यम	धर्मराज, सूर्यपुत्र, यमराज।
यश	प्रसिद्धि, ख्याति, लोकप्रियता, नाम, कीर्ति।
युद्ध	समर, संग्राम, विग्रह, संघर्ष, रण, लड़ाई।

र

राक्षस	पिशाच, दैत्य, असुर, निशाचर, दनुज।
राजा	नृप, नरेश, नरेंद्र, भूपति, महीप, भूप, नृपति।
रात्रि	यामा, रजनी, रात, निशा, विभावरी, यामिनी, रैन।
रावण	दशानन, लंकाधिपति, दशकंठ, दशकंध।

ल

लक्ष्मी	रमा, चंचला, चपला, श्री, कमला, विष्णुप्रिया।
लहू	शोणित, खून, रक्त, लाल, रुधिर।
लाल	अरुण, रक्त, सुर्ख, रतनार, लोहित।
लहर	उर्मि, हिलोर, वीचि, मौज, तरंग।

व

विष्णु	केशव, माधव, गोविंद, चतुर्भुज, नारायण, उपेंद्र।
वृक्ष	तरु, पेड़, पादप, विटप, दरख्त।
वन	बीहड़, जंगल, विपिन, कानन, कातर।

श

शत्रु	विपक्षी, अरि, वैरी, रिपु, दुश्मन।
शोकाकुल	पीड़ित, दुखी, विषण्ण, खिन्न, व्यथित, व्याकुल।
शोभा	प्रभा, आभा, कांति, छटा, द्युति, सुषमा।
श्वेत	सफेद, उज्जवल, शुभ्र, धवल, सित।

स

संसार	विश्व, जग, दुनिया, भव, जगत।
समुद्र	सिंधु, पयोधि, पारावार, जलधि, उदधि, वारीश, सागर, रत्नाकर, अंबुधि, जलनिधि, पायोनिधि।
समूह	टोली, झुंड, गण, समुदाय, वृंद, पुंज।
सरस्वती	भारती, वाक्, श्री, वागीश्वरी, भाषा, शारदा।
सर्व	समस्त, अखिल, संपूर्ण, सारा, सब, समग्र, पूर्ण, निखिल।
सवेरा	ऊषा, अरुणोदय, प्रातः, भोर, सूर्योदयकाल।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साँप	नाग, फणि, भुजंग, अहि, विषधर, पन्नग, सर्प, फनधर, व्याल।
साधु	यति, वैरागी, संत, संन्यासी, मुनि, अवधूत।
सिंह	मृगपति, शेर, केसरी, व्याघ्र, मृगेंद्र, हरि, पंचमुख, वनराज, पंचानन।
सुगंधि	सौरभ, सुरभि, महक, सुवास, खुशबू।
सूरज	आदित्य, दिनकर, दिवाकर, सूर्य, प्रभाकर, सविता, रवि, भानु, भास्कर, दिनेश, हंस, अर्क, मार्तंड।
सेना	दल, कटक, फौज, वाहिनी, अनी, चमु।
सोना	हिरण्य, कनक, हाटक, स्वर्ण, कंचन, हेम।
स्तन	थन, वक्ष, उरोज, पयोधर, चुचुक।
स्त्री	ललना, अंगना, नारी, कामिनी, कांता, सुंदरी, रमणी, वनिता।
स्वर्ग	बैकुंठ, देवलोक, सुरलोक, द्युलोक, जन्नत।

ह

हनुमान	पवनसुत, अंजनिपुत्र, महावीर, विक्रम, बजरंगी, केसरीनंदन, कपिश्वर।
हाथ	हस्त, पाणि, कर।
हाथी	गज, हस्ती, मतंग, करी, दंती, कुंजर।
हिरण	सारंग, मृग, कुरंग।
हिमालय	पर्वतराज, हिमगिरी, शैलेंद्र, हिमाद्रि, नगपति, गिरीश।

प्रश्न अभ्यास

1. नीचे दिए शब्दों के दो-दो पर्यायवाची लिखिए—

रात्रि	पवित्र	नौका	जल	पवन
सुगंध	स्त्री	हाथी	लाल	वृक्ष
शत्रु	उपासना	सोना	लक्ष्मी	राजा
पत्थर	पर्वत	बंदर	भौंरा	मदिरा
मयूर	भारत	बर्फ	देवता	धरती
नाश	दाँत	स्वर्ग	वसंत	फूल

2. निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त रेखांकित शब्द की जगह कौन सा पर्यायवाची शब्द उपयुक्त हो सकता है? कोष्ठांकित शब्दों में से छाँटिए—

1. <u>हाथी</u> अपनी पूर्ण मस्ती में चला। (एकदंत, गज, हस्त)
2. भगवान <u>शिव</u> की महिमा ही निराली है। (कामदेव, रुद्र, गजानन)
3. यज्ञ की <u>अग्नि</u> प्रज्वलित हो चुकी है। (तेज, क्षीर, ज्वाला)
4. सीता जनक की <u>पुत्री</u> थीं। (स्त्री, बेटी, प्रिया)
5. यमुना नदी के <u>किनारे</u> एक घाट था। (घाट, तीर, तट)
6. <u>कमल</u> की सुंदरता पर कीचड़ में रहने से फर्क नहीं पड़ता। (पंकज, फूल, पुष्प)

3. रेखांकित शब्द के स्थान पर कोई उपयुक्त पर्यायवाची लिखिए—

1. शत्रु की <u>सेना</u> किले में घुस गई।
2. इनमें से कोई भी <u>तरु</u> छायादार नहीं है।
3. यह <u>धरती</u> अरबों लोगों को अन्न दे सकती है।
4. भारत एक <u>खेती</u> आधारित देश है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

5. हम गाँव में अपने पुश्तैनी घर जा रहे हैं।
6. भगवान विष्णु की महिमा ही निराली है।
7. चाँद आज पूरब में चमक रहा है।
8. चाँद की चाँदनी अपनी छटा बिखेर रही है।
9. रैली में असंख्य लोगों ने भाग लिया।
10. हमारे महापुरुष समस्त मानव जाति के आदर्श हैं।
11. रसोई से हलवे की गंध आ रही है।
12. उसकी वाणी पर माता सरस्वती का वास है।
13. दिवाकर अपने चरम पर है।
14. वह शराब पीकर मदमस्त है।
15. मौत पर किसी का वश नहीं है।
16. पवित्र दीपावली का त्यौहार आने वाला है।
17. मेरा मन बाग में घूमने का कर रहा है।
18. भारत का सिर ऊँचा उठाना हमारा परम कर्तव्य है।
19. राखी का पर्व बहन-भाई के प्रेम का प्रतीक है।
20. विजय मोटर के अपने कार्य में दक्ष है।
21. यदि आज्ञा हो तो जाऊँ।
22. संभावना है कि मेरे घर पर आज मेहमान आएँगे।
23. मुझे इस छात्र की बुद्धि पर नाज है।
24. किसान टकटकी लगाकर आकाश की ओर देख रहे हैं।
25. सागर मंथन के समय हलाहल विष निकला था।
26. रात्रि होने पर चमगादड़ निकल आए।
27. निशाचरों ने दंडक वन में उत्पात मचा रखा था।
28. श्रीराम ने एक तीर से रावण के प्राण ले लिए।
29. रवीन्द्रनाथ टैगोर एक समझदार व्यक्तित्व थे।
30. जवाहरलाल नेहरू अत्यंत व्यस्त रहते थे।

पर्यायों में अर्थ-भेद
(पर्यायवाची प्रतीत होने वाले शब्द)

यद्यपि प्रत्येक भाषा में असंख्य पर्यायवाची शब्द पाये जाते हैं। परंतु फिर भी कुछ शब्द ऐसे हैं जो हमें पर्यायवाची प्रतीत होते हैं परंतु वास्तव में उनके अर्थ कुछ हटकर होते हैं। नीचे इस प्रकार के शब्दों की सूची दी जा रही है।

1.	**अस्त्र**	फेंककर चलाया जाने वाला हथियार
	शस्त्र	वह हथियार जो हाथ में पकड़कर चलाया जाता है।
2.	**आचार**	किसी व्यक्ति का स्वाभाविक और सहज व्यवहार।
	व्यवहार	सामाजिक संबंधों में दूसरों के साथ किया जाने वाला आचरण।
3.	**अज्ञ**	ज्ञानहीन।
	मूर्ख	बुद्धिहीन।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4. अज्ञान ज्ञानहीनता।
   अनभिज्ञ विशेष जानकारी का पता न रहना।
5. अमूल्य जिसका मूल्य लगाना आसान न हो।
   बहुमूल्य जिसका मूल्य बहुत अधिक हो।
6. अनबन दो व्यक्तियों या पक्षों में न बनना।
   खटपट दो व्यक्तियों या पक्षों में साधारण सी बात पर झगड़ा होना।
7. राग किसी स्वार्थ की पूर्ति हेतु प्रेम रखना।
   अनुराग किसी व्यक्ति या विषय से विशुद्धभाव से प्रेम।
8. स्नेह छोटों के प्रति प्रदर्शित प्रेम, ममत्व का भाव।
   प्रेम विशुद्ध एवं व्यापक स्नेह।
9. अन्वेषण अज्ञात वस्तु या स्थान का पता लगाना।
   अनुसंधान ज्ञात तथ्यों को क्रमबद्ध कर किसी निदान पर पहुँचने की क्रिया।
10. गवेषणा गहन विचार की प्रक्रिया, तत्व चिंतन।
    शोध शुद्धि संस्कार।
11. अनुभव स्वयं भोगने या व्यक्तिगत परीक्षण से प्राप्त ज्ञान।
    अनुभूति पूर्ण अनुभव के बाद की दशा।
12. अभिमान दूसरों को अपने से छोटा या कम योग्यता वाला समझने की भावना।
    अहंकार बिना गुण के अपने आप को श्रेष्ठ समझना।
13. गर्व विशिष्ट कार्य में सफलता प्राप्त करने पर जाग्रत होने वाली बड़प्पन की भावना।
    गौरव विशिष्टता के प्रति सम्मान भावना।
14. अर्पण छोटों द्वारा बड़ों को सम्मानार्थ कुछ देना।
    समर्पण बलपूर्वक विवश होकर घुटने टेक देना या गहन प्रेम की भावना से स्वयं को अर्पित करना।
15. असार जिसमें कभी भी सार का अस्तित्व न रहा हो।
    निस्सार जिसमें पहले सार था, पर अब नहीं रहा।
16. अर्चना पुष्प, नैवेद्य आदि के साथ पूजा करना।
    पूजा नैवेद्यादि रहित भक्तिपूर्ण स्तुति।
17. आवश्यक सामान्यतः जरूरी।
    अनिवार्य इतना आवश्यक कि जिसे किए बिना अभीष्ट की प्राप्ति नहीं हो सकती।
18. आशा कार्य की सफलता के प्रति आस्था।
    आशंका असफलता का भय।
19. इच्छा सामान्यतः किसी भी तरह की इच्छा।
    अभिलाषा किसी वस्तु को प्राप्त करने की उत्कट इच्छा।
20. ईर्ष्या दूसरों की उन्नति देखकर उत्पन्न होने वाला दुःख।
    द्वेष किसी के प्रति सकारण घृणा या बैर-भाव।
21. उकसाना जो दुर्भाव पहले से ही विद्यमान है उसे बढ़ाना।
    बहकाना किसी दुर्भाव के बीज बोना बहकाना कहलाता है।
22. उत्साह निरंतर विद्यमान रहने वाली तत्परता।
    साहस अचानक और आवेशित तत्परता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

23. **उपकरण** किसी कार्य की सिद्धि के लिए जुटाई गई सामग्री।
उपादान किसी पदार्थ को बनाने में प्रयोग होने वाली सामग्री।
24. **उपस्थित** हाजिर, स्मरण।
प्रस्तुत तैयार।
25. **ऊँचाई** नीचे से ऊपर तक का माप।
लंबाई एक किनारे से दूसरे किनारे तक की माप।
26. **ऋषि** वैदिक संस्कृति में साधक को ऋषि कहते हैं।
मुनि जो साधक मौन रहता है।
27. **उल्लास** कार्य की सफलता की आशा पर क्षणिक प्रसन्नता।
हर्ष अभीष्ट की प्राप्ति पर प्रसन्नता से रोमांच हो आना।
28. **घमंड** अपने को श्रेष्ठ समझना तथा दूसरों को उपेक्षा की दृष्टि से देखना।
वितंड दिखाना या ढोंग करना।
29. **अपेक्षा** तुलना के संदर्भ में।
उपेक्षा उदासीनता का वाचक।
30. **अनुकंपा** दुखी व्यक्ति के प्रति कृपा का भाव।
अनुग्रह किसी की इच्छानुसार इष्ट संपादन।
कृपा उदारतापूर्वक कार्य सम्पादन।
31. **अध्यक्ष** संस्था का प्रधान।
सभापति सभा का प्रमुख अधिकारी।
32. **आकार** आकृति।
प्रकार भिन्न-भिन्न भेद या स्वरूप।
33. **अपमान** योग्य व्यक्ति को यथेष्ट मान न देना।
तिरस्कार वस्तु या व्यक्ति के प्रति घृणा अथवा उपेक्षा का भाव।
34. **आराधना** इष्ट या देव के समक्ष की गई याचना।
उपासना किसी महान उद्देश्य की पूर्ति में की गई एकनिष्ठ साधना।
35. **आगामी** आने वाला (निश्चित)
भावी आने वाला (अनिश्चित)
36. **आदि** एक या दो उदाहरण के बाद आदि लिखा जाता है।
इत्यादि दो से अधिक उदाहरण के बाद इत्यादि का प्रयोग होता है।
37. **अवस्था** जीवन के बीते हुए काल को अवस्था कहते हैं।
आयु व्यक्ति की पूरी उम्र का उल्लेख।
38. **आशंका** भविष्य के अमंगल की शंका।
शंका अमंगल की सूचना का भाव।
39. **भय** मन का संकोच भाव।
आतंक अपने से अधिक ताकतवर के सामने आने पर।
40. **त्रास** भय का ज्ञान, अज्ञान या संदिग्धभाव।
अपराध सामाजिक नियमों के प्रतिकूल कार्य।
41. **अभिनेत्री** रंगमंच पर स्त्री की भूमिका अदा करने वाली।
नायिका उपन्यास, नाटक, चलचित्र इत्यादि में प्रधान स्त्री-पात्र।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

42. **अभिवादन** छोटों द्वारा पूज्य व्यक्तियों को प्रणाम।
नमस्कार बराबर वालों को।
प्रणाम चरणस्पर्श कर सम्मान देना।
43. **अनुरोध** समान स्तर के लोगों से किसी कार्य को करने का आग्रह।
प्रार्थना ईश्वर या बड़ों से की जाती है।
44. **कष्ट** कष्ट का दुःखद प्रभाव मन और शरीर दोनों पर होता है।
क्लेश केवल शरीर पर आने वाली आपत्ति।
45. **वेदना** हृदय की एक दुःखद अनुभूति।
व्यथा दुःखद बात देखने या सुनने से दुःख का जन्म।
46. **यातना** तीव्रतम व्यथा।
यंत्रणा व्यक्ति के शरीर और मन को दिया जाने वाला कष्ट।
47. **कारण** बाह्य घटक।
हेतु आंतरिक घटक।
48. **काटना** आरा, कुल्हाड़ी या मनुष्य के दाँतों से काटा जाना।
कुतरना जीवों या पक्षियों के दाँतों से काटा जाना।
49. **कृति** रचना
कृती स्वनामधन्य व्यक्ति को कहते हैं।
50. **खाद** वनस्पति जगत का खाद्य।
खाद्य मनुष्यों का भोज्य।
51. **चीर** तेजधार वाले औजार से घर्षण क्रिया द्वारा वस्तु को कई हिस्सों में बाँटना।
फाड़ वस्तु जो चोट मारकर कई हिस्सों में बाँटना।
52. **टक्कर** दो चीजों का परस्पर भिड़ना।
ठोकर किसी स्थिर वस्तु से गतिशील का टकराना।
53. **तोड़** तितर-बितर करना, बिखेरना।
फोड़ उपयोग हीन कर देना।
54. **तट** जहाँ पर किसी तालाब, नदी या समुद्र का जल जमीन को छूता है।
तीर तट के आसपास की भूमि।
55. **पुलिन** किनारे पर भीगी हुई भूमि।
सैकर किनारे की बालू रेत।
56. **निंदा** सच्चा दोष बतलाना।
अपवाद झूठी निंदा।
57. **कलंक** किसी की बुराई करने से उसके चरित्र पर पड़ने वाला दुष्परिणाम।
अपयश जीवन की वह स्थिति जिसका जीवन पर स्थायी प्रभाव पड़े।
58. **निवेदन** अभ्यर्थना अथवा अनुनय-विनय।
प्रार्थना इसमें याचना का भाव होता है।
59. **निपुण** अपने कार्य का पूर्ण ज्ञान रखने वाला।
कुशल जो प्रत्येक कार्य में शारीरिक एवं बौद्धिक शक्ति का प्रयोग करता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

60. निकट — अंतरंगता का बोध होता है।
पास — अधिकार प्राप्त की स्थिति में।
61. निबंध — विषय, व्यक्तित्व और शैली प्रधान रचना।
लेख — विषय-वस्तु प्रधान गद्य रचना।
62. निधन — महान और लोकप्रिय व्यक्ति की मृत्यु।
मृत्यु — सामान्य रूप से शरीरांत।
63. प्रसार — फैलाव या विस्तार।
प्रचार — प्रचलित करना।
64. श्रद्धा — छोटों की बड़ों के प्रति सेवा भावना।
भक्ति — छोटों या बड़ों के प्रति शारीरिक सेवा भावना।
65. परिश्रम — शरीर और मन का श्रम।
आयास — मानसिक शक्ति का प्रयोग।
66. श्रम — शारीरिक शक्ति का प्रयोग।
व्यायाम — अंग संचालन या स्वास्थ्य रक्षा के लिए किया गया श्रम।
67. पारितोषक — किसी प्रतियोगिता में विजयी होने पर।
पुरस्कार — अच्छे कार्य या सेवा के लिए।
68. पत्नी — अपनी स्त्री।
स्त्री — कोई भी स्त्री।
69. पुत्र — अपना पुत्र।
बालक — कोई भी लड़का।
70. प्रमाद — जान-बूझकर लापरवाही दिखाना।
भ्रम — असावधानी के कारण होने वाली भूल।
71. भेद — भिन्नता।
अंतर — दूरी।
72. भजन — ईश्वर और देवता की मानसिक उपासना।
उपासना — ईश्वर को प्राप्त करने के लिए की जाने वाली भजन और क्रिया।
आराधना — देवता के निकट जाकर पूजा करना।
73. मित्र — ऐसा व्यक्ति जिसके साथ मित्रता हो।
बंधु — आत्मीय मित्र।
74. मन — संकल्प विकल्प करता है।
चित्त — स्मरण विस्मरण करता है।
बुद्धि — मनुष्य के कर्तव्य को करने का निश्चय करने वाली शक्ति।
75. महाशय — सामान्य लोगों के लिए प्रयुक्त।
महोदय — इसका प्रयोग अपने से बड़ों और अधिकारियों के लिए किया जाता है।
76. युक्ति — किसी कार्य को करने का उपाय।
परामर्श — आपस में समझ-बूझकर सलाह करने की क्रिया।
77. मंत्रणा — गूढ़ विषय पर गुप्त रूप से विचार-विमर्श करना।
यंत्रणा — असह्य मानसिक दुख का अनुभव।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

78. **रूप** दिखाई पड़ने वाला शरीर।
स्वरूप किसी का अपना रूप।

79. **विद्या** विशेष प्रकार का ज्ञान तथा कुशलता।
शिक्षा ज्ञान और कला का अभ्यास।

80. **विराम** अंत या रोक।
विश्राम थोड़ी देर आराम करने के बाद फिर से प्रारंभ करने का भाव।

81. **सेवा** गुरुजनों की सेवा की जाती है।
शुश्रुषा रोगी और दीन-दुखी की जाती है।

82. **साधारण** जो वस्तु एक ही आधार पर टिकी हो।
सामान्य जो वस्तु दो या कई लोगों में समान रूप से पाई जाए।

83. **स्वतंत्रता** मुक्ति, छुटकारा।
स्वाधीनता स्वतंत्रता।

84. **संवेदना** दूसरे के साथ उसके कष्ट में उतनी ही वेदना का अनुभव करना।
करुणा दूसरे को कष्ट में देखकर हृदय में होने वाली व्याकुलता।

85. **कृपा** दूसरों का कष्ट-निवारण करने की चेष्टा।
दया दूसरों का दु:ख दूर करने की स्वाभाविक इच्छा।

प्रश्न अभ्यास

1. बालि ने .... के कारण पश्चात्ताप किया। (संकोच, ग्लानि)
2. गुरुजनों का सम्मान न करना .... है। (पाप, अपराध)
3. मुझे प्रथम आने की .... है। (आशा, शंका)
4. वह .... से जलने लगा। (स्पर्धा, ईर्ष्या)
5. आज वर्षा आने की .... है। (आशंका, संभावना)
6. मुझे घर जाने की .... दें। (अनुमति, स्वीकृति)
7. मुझे .... है कि मैं देर से पहुँचा। (खेद, शोक)
8. न्यायाधीश ने आज अपना .... दे दिया। (न्याय, निर्णय)
9. मुझ पर नक्सलवादी होने का .... है। (आरोप, कलंक)
10. मुझे तुम्हारे असफल होने पर .... है। (करुणा, सहानुभूति)
11. किसी का .... नहीं करना चाहिए। (उपहास, परिहास)
12. जंगल के रास्ते .... होते हैं। (अगम, दुर्गम)
13. लव-कुश श्रीराम के .... थे। (बालक, पुत्र)
14. वह गहरी .... में सोया है। (निद्रा, तंद्रा)
15. वे पार्क में .... कर रहे हैं। (पर्यटन, भ्रमण)
16. कृपया कूड़ेदान का .... करें। (उपभोग, उपयोग)
17. शौचालय का सावधानी से .... करें। (प्रयोग, योग)
18. पुत्र के पार्थिव शरीर को देखकर माता .... करने लगी। (प्रलाप, विलाप)
19. मैं आपसे आने का .... करता हूँ। (अनुरोध, विनय)
20. ईमानदारी से परिश्रम करना हमारा .... है। (कार्य, कर्तव्य)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2. श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द

कुछ शब्द उच्चारण की दृष्टि से तो समान लगते हैं परंतु वास्तव में लिखे भी अलग तरह जाते हैं व उनके अर्थ भी अलग होते हैं। विश्व की प्रत्येक भाषा में इस प्रकार के शब्द होते हैं। हिंदी भाषा में इस प्रकार के श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द निम्नलिखित हैं—

1.	**अंस**	कंधा
	अंश	भाग, हिस्सा
2.	**अचल**	जो चलता न हो
	अंचल	भाग, क्षेत्र
3.	**अतल**	जिसका तल न हो
	अतुल	जिसके समान कोई नहीं
4.	**असन**	भोजन
	आसन	बैठने का स्थान
5.	**अनल**	अग्नि
	अनिल	हवा, वायु
6.	**अशक्त**	शक्तिहीन
	असक्त	विरक्त
7.	**अनिष्ट**	हानि
	अनिष्ठ	निष्ठाहीन
8.	**अपेक्षा**	इच्छा
	उपेक्षा	निरादरता
9.	**अथक**	बिना थके हुए
	अकथ	जो कहा न जा सके
10.	**अनुसार**	मुताबिक, अनुरूप
	अनुस्वार	ँ बिंदु
11.	**अभय**	निर्भय
	उभय	दोनों में स्थित
12.	**अनु**	पीछे
	अणु	कण
13.	**अंत**	समाप्त
	अन्य	नीच, निम्न
14.	**अलि**	भ्रमर
	अली	सखी
15.	**अंतर**	हृदय
	अंदर	भीतर
16.	**अंब**	माता
	अंबु	जल
17.	**अगम**	अगम्य, दुर्गम
	आगम	प्राप्ति, उम्मीद
18.	**अभिमान**	गर्व
	अभियान	चढ़ाई, आंदोलन
19.	**अवलंब**	सहारा
	अविलंब	तुरंत
20.	**अमित**	बहुत अधिक
	अमीत	दुश्मन
21.	**अचार**	मसालेदार खट्टा पदार्थ
	आचार	नियम, व्यवहार
22.	**अवधि**	समय, काल
	अवधी	अवध की भाषा
23.	**अनुकरण**	अनुकृति
	अनुसरण	आँख बंद करके चलना
24.	**अभिराम**	सुंदर
	अविराम	निरंतर
25.	**अपचार**	अपराध
	उपचार	इलाज
26.	**अस्त**	डूब गया
	अस्तु	अच्छा, चाहे जो हो
27.	**अनैतिक**	नैतिक आचरण विरुद्ध
	अवैतनिक	बिना वेतन के
28.	**अपकार**	अहित
	उपकार	भलाई
29.	**अभाव**	कमी
	प्रभाव	असर
30.	**अभिन्न**	भेद-भाव रहित
	विभिन्न	भिन्न-भिन्न प्रकार के
31.	**अस्त्र**	[illegible] पर फेंक कर चलाया जाता है
	शस्त्र	हाथ में पकड़कर चलाते हैं
32.	**अध्ययन**	पढ़ना।
33.	**आदि**	आरंभ
	आदी	आदत होना
34.	**आवास**	निवास स्थान
	आभास	झलक
35.	**आयत**	समकोण चतुर्भुज
	आयात	बाहर से माल आना
36.	**आरसी**	दर्पण
	आरषी	वैदिक, वैदिक वाणी
37.	**आसक्त**	मोहित
	अशक्त	कमजोर
38.	**आयु**	उम्र
	आय	आमदनी
39.	**इति**	अंत, समाप्ति
	ईति	दैवी आपदा
40.	**इनाम**	पुरस्कार
	ईमान	धर्म
41.	**ईशा**	ऐश्वर्य, दुर्गा
	ईसा	ईसा मसीह
42.	**आरति**	विरक्ति, दुःख
	आरती	दीप-धूप से पूजा
43.	**अन्य**	दूसरा
	अन्न	अनाज
44.	**अनुभव**	कार्य की जानकारी
	अनुभाव	अधिकार, सम्मान
45.	**अनुकूल**	के समान
	अनुरूप	के जैसा
46.	**अजात**	जिसने जन्म ही न लिया हो
	आजाद	स्वतंत्र
47.	**अब्ज**	कमल
	अब्द	वर्षा, बादल
48.	**अरि**	शत्रु

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

	अरी	संबोधन, हे
49.	अंक	संख्या
	अंग	अवयव, भाग
50.	अक्ष	धुरी
	यक्ष	एक देवयोनि
51.	आयतन	लंबाई × चौड़ाई × ऊँचाई
	अयतन	बिना प्रयास
52.	आधि	मानसिक पीड़ा
	व्याधि	शारीरिक कष्ट, बीमारी
53.	आकर	खान
	आकार	रूप
54.	आसन	बैठने के लिए वस्तु
	आसन्न	निकट
55.	आशय	तात्पर्य, अभिप्राय
	आश्रय	शरण
56.	आकार	आकृति
	आगार	भंडार, गोदाम
57.	इंदिरा	लक्ष्मी
	इंद्रा	शची (इंद्र की पत्नी)
58.	इत्र	सुगंध
	इतर	अन्य
59.	इबादत	उपासना
	इबारत	रचना
60.	उच्च	ऊँचा
	उच्य	ढेर, राशि
61.	उदार	दानी
	उद्धार	कष्ट से मुक्ति
62.	उद्धत	उद्दंड
	उधत	तैयार
63.	उत्कच	गंजा
	उत्कट	तीव्र
64.	उपल	पत्थर
	उत्पल	कमल
65.	ओर	तरफ
	और	तथा
66.	कर्ण	कान, प्रसिद्ध दानवीर
	करण	एक घटक
67.	कड़ाई	भाववाचक—कड़ा
	कढ़ाई	काढ़ने की कला
68.	कर्म	काम
	क्रम	सिलसिला
69.	कटिबद्ध	तैयार
	कटिबंध	कमरबंध
70.	कल	मशीन, चैन, बीता हुआ या आने वाला कल
	कलि	चार युगों में से एक
71.	कपिश	मटमैला
	कपीश	हनुमान
72.	क्रांति	उलटफेर
	कांति	चमक
73.	कुल	वंश
	कूल	किनारा
74.	कृपण	कंजूस
	कृपाण	कटार
75.	कोश	शब्द भंडार
	कोष	खजाना
76.	कोड़ी	बीस का समूह
	कोढ़ी	कोढ़ का रोगी
77.	कोशल	अवध प्रदेश
	कौशल	नैपुण्य
78.	खोआ	दूध से बना पदार्थ
	खोया	गुम हो जाना
79.	गर्व	अभिमान
	गर्भ	भीतर छिपा हुआ
80.	उपयुक्त	उचित, अनुकूल
	उपर्युक्त	ऊपर कहा हुआ
81.	उत्तरी	उत्तर का विशेषण
	उत्तरीय	चादर के समान वस्त्र
82.	कंगाल	गरीब
	कंकाल	हड्डी
83.	कहाँ	कुत्र
	कहा	उसने कहा, कथन
84.	कँटीला	काँटेदार
	कटीला	काटने वाला, तिरछा
85.	कलि	एक युग
	कली	अधखिला फूल
86.	कृति	रचना
	कृती	परिश्रमी
87.	कपि	बंदर, वानर
	कवि	कविता करने वाला
88.	किला	गढ़
	कीला	खूँटा, कील
89.	काँटा	नुकीली चीज
	काटा	काटना क्रिया
90.	कृति	रचना
	कृती	रचनाकार
91.	कुजन	दुर्जन
	कूजन	पक्षियों की ध्वनि
92.	केश	बाल
	केस	मुकद्दमा
93.	कोष	भंडार (धन का)
	कोस	दो मील की दूरी
94.	खाद	उर्वरक
	खाद्य	खाने योग्य पदार्थ
95.	खाँसी	एक रोग
	खासी	अच्छी
96.	खोलना	आवरण हटाना
	खौलना	उबाल आना
97.	गदा	शस्त्र विशेष
	गधा	पशु विशेष
98.	गृह	घर
	ग्रह	चंद्र, सूर्य इत्यादि नक्षत्र
99.	गिरी	नारियल की मींग
	गिरि	पर्वत
100.	गूँथना	फूलों की माला गूँथना
	गूँदना	आटे को गूँदना
101.	ग्रंथी	गुरु ग्रंथ साहिब पढ़ने वाला।
	ग्रंथि	गाँठ
102.	घुस	क्रिया
	घूस	एक प्रकार का चूहा, रिश्वत
103.	चरम	आखिरी
	चर्म	चमड़ा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

104.	चिता	शव जलाने के लिए
	चीता	एक जंगली पशु
105.	चुकना	समाप्त होना
	चूकना	अवसर खो देना
106.	छटा	शोभा
	छठा	षष्ठ
107.	जगत	कुँए का चबूतरा
	जगत्	संसार
108.	जरा	वृद्धावस्था
	ज़रा	थोड़ा, तनिक
109.	जीवन	जान
	जीवनी	संजीवनी
110.	जूठा	उच्छिष्ट भोजन
	झूठा	असत्य बोलने वाला
111.	डीठ	दृष्टि
	ढीठ	निडर, धृष्ट
112.	डोर	रस्सी
	ढोर	पशु
113.	तड़ाक	शीघ्र फटने की आवाज
	तड़ाग	सरोवर
114.	ताक	देखने की क्रिया
	ताक्	दीवाल का आला
115.	दशा	अवस्था
	दिशा	तरफ
116.	दारा	स्त्री
	द्वारा	से
117.	दिन	दिवस
	दीन	गरीब
118.	गीत	लोक गीत, संगीत
	गीति	छंद विशेष (गीतिका)
119.	गौण	अप्रधान
	गौड	गोत्र
120.	गेय	गाने योग्य
	ज्ञेय	जानने योग्य
121.	चपत	थप्पड़
	चंपत	गायब
122.	चर	नौकर
	चिर	पुराना
123.	चित्र	प्रतिछाया
	चित्त	मन
124.	चंगुल	पंजा
	चुगल	निंदा, बुराई
125.	छोर	किनारा
	छोड़	छोड़ना
126.	छत्र	छाता
	छात्र	विद्यार्थी
127.	जाति	वर्ग
	जाती	जाना
128.	जरठ	बूढ़ा
	जठर	पेट
129.	टोली	समूह
	डोली	पालकी
130.	डील	शरीर का गठन
	ढील	ढीला
131.	तरणि	सूर्य
	तरणी	नाव
	तरुणी	युवती
132.	तब	बाद में
	तव	तुम्हारा
133.	तुरंग	घोड़ा
	तरंग	लहर
134.	दिया	देने की क्रिया
	दीया	दीपक
135.	दशक	दस का समूह
	दर्शक	देखने वाला
136.	देव	देवता
	दैव	भाग्य
137.	द्रव	रस
	द्रव्य	पदार्थ, धन
138.	धन्य	कृतकृत्य
	धान्य	अन्न
139.	नियत	निश्चित
	नियति	भाग्य
140.	निश्छल	छल रहित
	निश्चल	अटल
141.	निशा	रात
	नशा	मद
142.	नाश	मिट जाना
	नास	नासिका से सूँघी जाने वाली दवा
143.	नेति	अनंत
	नेती	मथनी की रस्सी
144.	निसान	झंडा
	निशान	चिह्न
145.	निधन	मृत्यु
	निर्धन	धनहीन, दरिद्र
146.	पट	वस्त्र
	पट्ट	तख्ती
147.	पता	ठिकाना
	पत्ता	पर्ण
148.	परीक्षा	इम्तहान
	परिक्षा	कीचड़
149.	पुर	नगर, गाँव
	पूर	बाढ़
150.	पीड़ा	दर्द
	पीढ़ा	चौकी
151.	परिणाम	फल
	परिमाण	मात्रा, माप
152.	परदेश	दूसरा देश
	प्रदेश	राज्य
153.	प्रण	प्रतिज्ञा
	प्राण	जान
154.	पावन	पवित्र
	पाहन	पत्थर
155.	परक	युक्त होना
	परख	परीक्षा
156.	पाव	वजन
	पाँव	पैर
157.	प्यास	पिपासा
	प्रयास	प्रयत्न
158.	दमन	दबाना
	दामन	आँचल
159.	निबाह	निर्वाह
	निकाह	विवाह
160.	नीर	पानी
	नीड़	घोंसला

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

161.	नीरज	कमल
	नीरद	बादल
162.	नाहर	सिंह
	नहर	पानी का कुलिया
163.	निरा	बिना मिलावट युक्त
	नीरा	ताड़ के वृक्ष का रस
164.	नाईं	तरह
	नाई	हज्जाम
165.	नारी	स्त्री
	नाड़ी	नब्ज
166.	नोक	सिरा, किनारा
	नौका	नाव, जहाज
167.	पड़ना	गिरना
	पढ़ना	पढ़ाई करना
168.	पावन	पवित्र
	पवन	हवा
169.	पथ्य	रोगी का आहार
	पथ	मार्ग
170.	पाश	बंधन
	पार्श्व	बगल
171.	परुष	कठोर
	पुरुष	मर्द
172.	पिया	प्रिय
	पीया	पीया (क्रिया)
173.	प्रणाम	सादर नमस्ते
	प्रमाण	साक्ष्य, सबूत
174.	प्रहर	पहर
	प्रहार	आघात
175.	पिटना	किसी से मार खाना
	पीटना	किसी को मारना
176.	प्रेषक	भेजने वाला
	प्रेक्षक	दर्शक
177.	प्रश्न	जिसका उत्तर होता है
	प्रसन्न	प्रसन्नता
178.	प्रदान	देना
	प्रधान	मुख्य
179.	बेल	फल विशेष
	बैल	पशु
180.	बास	महक
	वास	निवास
181.	बार	दफ़ा
	वार	प्रहार
182.	बाल	शिशु, केश
	भाल	माथा, मस्तक
183.	बहुमुखी	अनेक प्रकार की
	बहिर्मुखी	बाहरी
184.	भित्ति	दीवार
	भीति	भय
185.	भारती	सरस्वती
	भारतीय	भारतवासी
186.	मद	अहंकार
	मद्य	शराब
187.	मेघ	बादल
	मेध	यज्ञ
188.	मेला	किसी अवसर पर जन समुदाय की भीड़
	मैला	गंदा
189.	मुद्रा	सिक्के
	मुर्दा	शव
190.	मूल	जड़
	मूल्य	कीमत
191.	योग	जोड़, मिलना
	योग्य	किसी कार्य को सुचारु रूप से करने की क्षमता
192.	रत्त	लीन
	रति	कामदेव की पत्नी
193.	रग	नस
	राग	आसक्ति, मोह
194.	लोटा	बर्तन विशेष
	लौटा	क्रिया
195.	वंश	कुल, खानदान
	वश	नियंत्रण, अधीन
196.	बंक	विकलांग
	व्यंग्य	उपालंभ, ताना
197.	वित्त	धन
	वृत्त	घेरा
198.	विवरण	व्याख्या, वर्णन
	विवर्ण	रंगहीन, फीका
199.	शंकर	शिव
	संकर	मिश्रित
200.	बलि	बलिदान
	बली	शक्तिशाली
201.	बात	वन
	वात	हवा
202.	बुरा	खराब
	बूरा	शक्कर
203.	बोना	बुवाई
	बौना	वामन
204.	भवन	घर
	भुवन	लोक
205.	भाभी	बड़े भाई की पत्नी
	भावी	आगे होने वाला
206.	मणि	रत्न
	मणी	साँप
207.	मास	महीना
	माँस	गोश्त
208.	मिल	कारखाना
	मील	दूरी मापक
209.	मैदा	बारीक आटा
	मेदा	पेट
210.	में	अधिकरण कारक का चिह्न
	मैं	अहं का वाचक
211.	मल	गंदगी
	मल्ल	योद्धा
212.	रंक	दरिद्र
	रंग	वर्ण
213.	राजसभा	राजा की सभा
	राज्य सभा	केंद्रीय सरकार
214.	लक्ष	लाख
	लक्ष्य	निशाना, ध्येय
215.	वदन	चेहरा
	बदन	शरीर
216.	वाद	तर्क, विचार
	वाद्य	बाजा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

217. वस्तु — चीज
वास्तु — भवन निर्माण कला
218. विलक्षण — अद्भुत
विचक्षण — चतुर
219. विस्तार — फैलाव
बिस्तर — बिछौना
220. शकट — बैलगाड़ी
शकठ — मचान
221. शकल — खंड
सकल — सारा
शक्ल — सूरत
222. शूर — वीर
सुर — लय, देवता
223. शुक्ल — श्वेत
शुल्क — फीस
224. श्याम — काला
शाम — सायंकाल
225. शाला — घर
साला — पत्नी का भाई
226. श्वजन — कुत्ते का बच्चा
स्वजन — संबंधी, मित्र
227. संग — साथ
संघ — समिति
228. संदेह — शक
सदेह — शरीर सहित
229. शीशा — काँच
सीसा — एक धातु
230. सुखी — सुख प्राप्त करने वाला
सूखी — शुष्क
231. सुना — सुनने से संबंधित
सूना — एकांत
232. सीख — शिक्षा
सींक — तीली
233. सम — समान
शम — संयम
234. साख — प्रतिज्ञा, प्रतिष्ठा
शाख — टहनी
235. हरि — विष्णु, बंदर
हरी — हरे रंग की
236. शर — बाण
सर — तालाब, सिर
237. शोभित — शोभायमान
शोषित — जिसका शोषण हुआ
238. शप्त — श्राप पाया हुआ
सप्त — सात (गिनती)
239. शिरा — नाड़ी
सिरा — छोर, किनारा
240. षष्टि — 60 वर्ष
षष्ठि — छठी
241. श्वेत — सफेद
स्वेद — पसीना
242. समान — बराबर
सामान — सामग्री
243. समिति — कमेटी
सम्मति — राय
244. सुगंध — खुश्बू
सौगंध — शपथ, कसम
245. संकरी — भिन्न जातियों से उत्पन्न स्त्री
संतरी — पहरेदार
सँकरी — संकुचित
246. सत्व — सार
स्वत्व — अधिकार
247. सील — एक प्रकार की मछली
शील — चरित्र
248. हालत — दशा, स्थिति
हालात — स्थिति

समरूपी शब्द

हिंदी में अनेक शब्द ऐसे हैं जो लिखने, दिखने व बोलने में एक समान प्रतीत होते हैं परंतु अलग-अलग भाषाओं में उनके अर्थ अलग होते हैं। जैसे—

आम — हिंदी अर्थ—एक फल
विदेशी अर्थ—सामान्य
काम — हिंदी अर्थ—कर्म
संस्कृत अर्थ—कामदेव
कूल — संस्कृत अर्थ—किनारा
अंग्रेजी अर्थ—ठंडा
सब — हिंदी अर्थ—सारे
अंग्रेजी अर्थ—उप
कम — हिंदी अर्थ—न्यून
अंग्रेजी अर्थ—युक्त
काज — हिंदी अर्थ—कार्य
विदेशी अर्थ—बटन का काज
फूल — हिंदी अर्थ—पुष्प
अंग्रेजी अर्थ—मूर्ख
पुट — हिंदी अर्थ—रंगत
अंग्रेजी अर्थ—डालना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रश्न अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखते हुए उनके अंतर स्पष्ट कीजिए—

1. जुआ ....
   जूआ ....
2. करोड़ ....
   क्रोड़ ....
4. आवास ....
   आभास ....
5. कृपाण ....
   कृपण ....
6. जरा ....
   ज़रा ....
7. ज्वर ....
   ज्वार ....
8. निहार ....
   नीहार ....
9. जलद ....
   जलज ....
10. नियत ....
    नीयत ....
11. सुत ....
    सूत ....
12. हँस ....
    हंस ....
13. हास ....
    ह्रास ....
14. सुधि ....
    सुधी ....
15. कृति ....
    कृती ....
16. क्रीत ....
    कृत ....
17. द्रव ....
    द्रव्य ....
18. अवध ....
    अवध्य ....
19. अलि ....
    आलि ....
20. अशक्त ....
    आसक्त ....
21. लोटा ....
    लौटा ....
22. उदार ....
    उद्धार ....

2. निम्नलिखित वाक्यों की पूर्ति कोष्ठकों के दिए गए किसी उपयुक्त शब्द को भरकर कीजिए—

1. यह जूता .... से बना हुआ है। (चरम, चर्म)
2. यह चिकित्सा.............. है। (ग्रह, गृह)
3. मेहमान हेतु .... लाओ। (पाणि, पानी)
4. सुनामी की .... से कोहराम मच गया। (तरंग, तुरंग)
5. मैं हर समय सहयोग के लिए .... रहता हूँ। (उद्यत, उद्धत)
6. नदी के .... पर चले आओ। (कुल, कूल)
7. शर्मा जी अकेले नहीं, ... के साथ आए हैं। (सपुत्र, सुपुत्र)
8. मैं सर्कस को देखकर .... से भर गया। (विस्मय, विषमय)
9. मेरे .... कोई सेवा हो तो बताएँ। (योग्य, योग)
10. मुझसे कमरे का .... सहा नहीं गया। (तप, ताप)
11. मैं .... समय पर पहुँच जाऊँगा। (नियत, नीयत)
12. हानि-लाभ .... से प्राप्त होता है। (भाग, भाग्य)
13. दूध सही .... में देना। (परिमाण, परिणाम)
14. फूल की .... कितनी सुगंधित है। (कलि, कली)
15. मेरे मन में एक .... है। (संदेह, सदेह)
16. मुझसे उसकी .... देखी नहीं गई। (अवस्था, व्यवस्था)
17. मानसरोवर में .... विहार करते हैं। (हँस, हंस)
18. इस सामाजिक कार्य में सभी .... करें। (सहायता, सहयोग)
19. हमें भूलकर भी सज्जनों का .... नहीं करना चाहिए। (अपकार, उपकार)
20. आप शक्तिशाली हैं और मैं .... हूँ। (अशक्त, आसक्त)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3. विलोम शब्द

विपरीत अर्थ का ज्ञान कराने वाले शब्द **विपरीतार्थक शब्द** कहे जाते हैं। इनका प्रयोग किन्हीं दो शब्दों के अर्थों की स्पष्टता के लिए उपयोगी सिद्ध होता है। विद्यार्थियों के याद रखने के लिए विलोम शब्द नीचे प्रस्तुत हैं—

अथ	इति
अंतरंग	बहिरंग
अंधकार	प्रकाश
अपकार	उपकार
अकाल	सुकाल
अक्षम	सक्षम
अधम	उत्तम
अज्ञ	विज्ञ
अतिवृष्टि	अनावृष्टि
अधिक	न्यून
अथ	इति
अधुनातन	पुरातन
अनाथ	सनाथ
अनुकूल	प्रतिकूल
अनुज	अग्रज
अनुरक्ति	विरक्ति
अनुराग	विराग
अपना	पराया
अपव्यय	मितव्यय
अमर	मर्त्य
अमीर	गरीब
अमृत	विष
अर्थ	अनर्थ
अलभ्य	सुलभ
अल्पज्ञ	बहुज्ञ
अल्पायु	दीर्घायु
अवनति	उन्नति
अर्वाचीन	प्राचीन
अस्त	उदय
आकर्षक	विकर्षक
आकाश	पाताल
आग	पानी
आगत	अनागत
आगामी	विगत

आचार	अनाचार
आज्ञा	अवज्ञा
आदर	निरादर
आदर्श	यथार्थ
आदान	प्रदान
आदि	अनादि/अंत
आध्यात्मिक	भौतिक
आर्द्र	शुष्क
आर्य	अनार्य
आलसी	परिश्रमी
आवश्यक	अनावश्यक
आशा	निराशा
आसक्ति	विरक्ति
आभ्यंतर	बाह्य
आय	व्यय
आयात	निर्यात
आरोह	अवरोह
आलोक	अंधकार
आविर्भाव	तिरोभाव
आस्तिक	नास्तिक
आस्था	अनास्था
आहार	निराहार
इच्छा	अनिच्छा
इष्ट	अनिष्ट
इहलोक	परलोक
उग्र	शांत
उचित	अनुचित
उतार	चढ़ाव
उत्कर्ष	अपकर्ष
उत्कृष्ट	निकृष्ट
उत्तर	दक्षिण
उत्तर	प्रश्न
उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण
उत्थान	पतन

उदय	अस्त
उदयाचल	अस्ताचल
उदार	अनुदार
उद्दंड	विनम्र
उद्धत	विनीत
उन्नति	अवनति
उपकार	अपकार
उपयोगी	अनुपयोगी
उपरलिखित	निम्नलिखित
उपस्थित	अनुपस्थित
उर्वरा	ऊसर
उष्ण	शीत
ऊँच	नीच
ऋणी	उऋण
ऋजु	कुटिल/वक्र
एक	अनेक
एकदेशीय	सर्वदेशीय
ऐच्छिक	अनैच्छिक/ अनिवार्य
ऐहिक	पारलौकिक
ओछा	उच्च
कटु	मधुर
कठोर	मृदु
कनिष्ठ	ज्येष्ठ
कम	अधिक
कायर	वीर
कुटिल	सरल
कीर्ति	अपकीर्ति
कृतज्ञ	कृतघ्न
कृत्रिम	स्वाभाविक
कृपालु	क्रूर
कृश	स्थूल
कोमल	कठोर
क्रय	विक्रय

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्रिया	प्रतिक्रिया	दाएँ	बाएँ	प्रौढ़	शिशु
खंडन	मंडन	दुर्जन	सज्जन	फूल	काँटा
खरा	खोटा	दुर्लभ	सुलभ	बंधन	मोक्ष
खल	सज्जन	देना	लेना	बनना	बिगड़ना
गमन	आगमन	देय	अदेय	बलवान	निर्बल
गर्मी	सर्दी	देव	दानव	बहुत	थोड़ा
गहरा	उथला	दृश्य	अदृश्य	बुद्धिमान	बुद्धिहीन, मूर्ख
गुण	दोष	दोषी	निर्दोष	बुराई	भलाई
गुप्त	प्रकट	धनी	निर्धन	भक्ष्य	अभक्ष्य
गुरु	शिष्य	धर्म	अधर्म	भद्र	अभद्र
गृहस्थ	संन्यासी	धीर	अधीर	भला	बुरा
ग्रामीण	नागरिक	धृष्ट	विनीत	भाग्यवान	अभागा
ग्राह्य	त्याज्य, अग्राह्य	ध्वंस	निर्माण	भाव	अभाव
घातक	रक्षक	नरक	स्वर्ग	भूषण	दूषण
घृणा	प्रेम	नवीन	प्राचीन	भोगी	योगी
चंचल	स्थिर	निंदा	स्तुति	भोला	चालाक
चतुर	मूर्ख	निद्रा	जागरण	मंगल	अमंगल
चर	अचर	निरक्षर	साक्षर	महँगा	सस्ता
चल	अचल	निर्दयी	सदय	मलिन	निर्मल
जंगम	स्थावर	निर्बल	सबल	महात्मा	दुरात्मा
जंगली	पालतू	निर्मल	मलिन	महान	क्षुद्र
जड़	चेतन	निश्चित	अनिश्चित	मान	अपमान
जटिल	सरल	नीरस	सरस	मानव	दानव
जन्म	मृत्यु	नूतन	पुरातन	मितव्यय	अपव्यय
जय	पराजय	न्याय	अन्याय	मित्र	शत्रु
जागृति	सुषुप्ति	पंडित	मूर्ख	मिथ्या	सत्य
जीत	हार	पक्ष	विपक्ष	मौखिक	लिखित
जीवन	मृत्यु	पक्षपाती	निष्पक्ष	यथार्थ	कल्पित
जीवित	मृत	परकीय	स्वकीय	यश	अपयश
ज्ञानी	अज्ञानी	परतंत्र	स्वतंत्र	यशस्वी	कलंकित
ज्योति	तम	पाप	पुण्य	याचक	दाता
झूठ	सच	प्रत्यक्ष	परोक्ष	रक्षक	भक्षक/मारक
ठंडा	गर्म	प्रवृत्ति	निवृत्ति	रहित	सहित
ठोस	तरल	प्रशंसा	निंदा	राग	द्वेष
तटस्थ	पक्षधर	प्रसाद	कोप	राजा	रंक
ताप	शीत	प्रस्तुत	अप्रस्तुत	रात	दिन
तामसिक	सात्विक	प्राचीन	नवीन	रिक्त	पूर्ण
तीव्र	मंद	प्राच्य	पाश्चात्य	रुग्ण	स्वस्थ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रुचिकर	अरुचिकर	संक्षेप	विस्तार	सुगम	कठिन/दुर्गम
रुदन	हास	संधि	विग्रह	सुघड़	अनगढ़
लुप्त	प्रकट	संयोग	वियोग	सुर	असुर
लौकिक	अलौकिक	सक्रिय	निष्क्रिय	सुलभ	दुर्लभ
वक्र	सरल/ऋजु	सक्षम	अक्षम	सेवक	स्वामी
वरदान	अभिशाप	सगुण	निर्गुण	सृष्टि	प्रलय
वादी	प्रतिवादी	सजीव	निर्जीव	स्थायी	अस्थायी
विकल्प	संकल्प	सज्जन	दुर्जन	स्थिर	अस्थिर
विकास	ह्रास	सत्य	असत्य	स्थूल	सूक्ष्म
विजय	पराजय	सदाचार	दुराचार	स्वच्छ	मलित/अस्वच्छ
विधवा	सधवा	सफल	विफल	स्वतंत्र	परतंत्र
विधि	निषेध	सबल	निर्बल	स्वदेश	विदेश
विपन्न	संपन्न	सभ्य	असभ्य	स्वस्थ	अस्वस्थ
विरोध	समर्थन	सम	विषम	स्वाधीन	पराधीन
विवाहित	अविवाहित	समान	असमान	स्वाभाविक	अस्वाभाविक
विष	अमृत	समीप	दूर	हर्ष	शोक
वृद्धि	क्षय	सम्मान	अपमान	हलका	भारी
वैध	अवैध	सरल	कठिन	हानि	लाभ
व्यष्टि	समष्टि	सरस	नीरस	हार	जीत
शकुन	अपशकुन	सर्वज्ञ	अल्पज्ञ/अज्ञानी	हित	अहित
शांत	अशांत	साकार	निराकार	हिंसा	अहिंसा
शांति	अशांति	सामान्य	असामान्य/विशेष	हत	अनाहत
शिव	अशिव	सामिष	निरामिष	हेय	स्तुत्व
शिष्ट	अशिष्ट	सार्थक	निरर्थक	ह्रस्व	दीर्घ
शीत	ग्रीष्म	सुकर	दुष्कर	ह्रास	वृद्धि
शुद्ध	अशुद्ध	सुख	दुख	क्षम्य	अक्षम्य
शोक	हर्ष	सुगंध	दुर्गंध	ज्ञान	अज्ञान

प्रश्न अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखते हुए उनके अंतर स्पष्ट कीजिए—

1. जन्म ....
2. नूतन ....
4. अपयश ....
5. सत्य ....
6. देव ....
7. अमृत ....
8. विपक्ष ....
9. विपक्ष ....
10. निश्चित ....
11. गरल ....
12. लुप्त ....
13. सम्पन्न ....
14. भाग्यवान ....
15. सुकर ....
16. मान ....
17. सर्वज्ञ ....
18. रहित ....
19. शुद्ध ....
20. दोषी ....

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2. निम्नलिखित वाक्यों की पूर्ति उचित विलोम शब्द भरकर कीजिए—

1. जितनी बेईमानी स्वतंत्र भारत में है उतनी तो .... भारत में भी नहीं थी।
2. सूर्य पूरब दिशा से उदित होता है व .... दिशा में अस्त होता है।
3. कबीर निर्गुण ईश्वर के भक्त थे तो सूरदास .... ईश्वर के।
4. जीवन-..............., हानि-..............., यश-............... जीवन की मूल बातें हैं।
5. बुरे कर्मों से विरक्त रहो और सत्कर्मों में .... रहो।
6. आज जो भी कहें प्रत्यक्ष कहें, ... नहीं।
7. श्रीराम मानवता के रक्षक थे व रावण ....।
8. मैं सदैव मनुष्यता के पक्ष में बोलता हूँ जबकि वह .... में।
9. हमें इतिहास परंपराओं से सबक लेकर .... को सुदृढ़ बनाना चाहिए।
10. परिश्रम उत्थान हेतु किया जाता है, ... हेतु नहीं।
11. प्रेम के दो पक्ष हैं, संयोग व ....।
12. ग्रीष्म में हम सूती वस्त्र पहनते हैं जबकि .... में ऊनी।
13. मुझे न तो विरोध की परवाह है, न .... की।
14. विवाहित पुरुष .... पुरुषों की अपेक्षा अधिक अनुभवी होते हैं।
15. हमें देश के विकास के लिए कार्य करना चाहिए, न कि .... के लिए।
16. हार व .... एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।
17. हमें सभी का सम्मान करना चाहिए, ... नहीं।
18. हमारे विद्यालय में फेल विद्यार्थियों की संख्या .... से अत्यंत कम है।
19. महात्मा गाँधी सदय थे जबकि नाथूराम गोडसे ....।
20. संतों का मन मलिन नहीं होता, ... होता है।
21. हमारे उद्यम कीर्ति व .... की गारंटी नहीं दे सकते।
22. आज के सिनेमा में हिंसा अहिंसा से अधिक दिखाई जाती है।
23. इस भोजनालय में .... व निरामिष, दोनों प्रकार का भोजन मिलता है।
24. किसान ने बंजर जमीन को .... बना दिया।
25. विनय द्वारा किया गया छल .... है, वंदनीय नहीं।
26. मैं भारत के विजित क्षेत्र की नहीं, ... क्षेत्र की बात कर रहा हूँ।
27. नरक व .... दोनों यहीं पर हैं।
28. विज्ञान हमारे लिए वरदान व .... दोनों है।
29. विनोद-भाव से नीरस विषय भी .... हो जाते हैं।
30. तम को दीपक द्वारा .... में बदला जा सकता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

13
मुहावरे

मुहावरा शब्द मूलत: अरबी भाषा का शब्द है। इसका अर्थ है अभ्यास या बातचीत। जब कोई शब्द समूह या पद या वाक्यांश निरंतर अभ्यास के कारण सामान्य अर्थ न देकर विशेष अर्थ व्यक्त करने लगे तो उसे मुहावरा कहते हैं। उदाहरण के लिए 'अपना रास्ता नापना' एक सामान्य बात है। परंतु निरंतर प्रयोग व अभ्यास के कारण यह पद-समूह 'चला जाना' का अर्थ प्रदान करता है। अत: यह पद समूह मुहावरा कहलाता है।

मुहावरों के प्रयोग से भाषा में रोचकता व सरसता उत्पन्न होती है व गहन भावों को समझने में इससे बहुत सहायता मिलती है। वैसे तो प्रत्येक मुहावरा एक वाक्यांश होता है, लेकिन प्रत्येक वाक्यांश मुहावरे की कोटि में नहीं आता। मुहावरा किसी अर्थ में रूढ़ हो जाता है, इसलिए यह **रूढ़ोक्ति** भी कहलाता है। उदाहरण के लिए 'अंगूठा दिखाना' वाक्यांश का अर्थ जब 'अंगूठा दिखाने' के संदर्भ में होगा तो यह मुहावरा न होकर सामान्य कथन होगा। परंतु यदि इसका प्रयोग इसके लाक्षणिक कार्य 'धोखा देना' के लिए होगा, तो यह मुहावरा कहलाएगा।

मुहावरे के समान एक अन्य वाक्यांश होता है जिसे **लोकोक्ति** कहते हैं। लोकोक्ति का दूसरा नाम 'कहावत' भी है। लोकोक्ति जीवन में सामने आने वाले अनुभव या तथ्यों से बनती हैं इसलिए इन्हें जनसाधारण की उक्ति भी कहते हैं।

मुहावरे व लोकोक्ति में अंतर

1. लोकोक्ति जनसाधारण द्वारा उनके अनुभवों पर आधारित उक्तियाँ होती हैं जबकि मुहावरा अपने रूढ़ अर्थ के लिए प्रयुक्त होता है।
2. लोकोक्ति अपने आप में एक संपूर्ण वाक्य होता है जबकि मुहावरा मात्र एक वाक्यांश होता है।
3. लोकोक्ति किसी घटना या प्रसंग से संबंधित होती है परंतु यह आवश्यक नहीं कि मुहावरे का जन्म भी किसी घटना या प्रसंगवश ही हो।
4. लोकोक्ति कभी-कभी सूक्ति भी हो सकती है, परंतु मुहावरे के विषय में ऐसा नहीं होता।
5. मुहावरे का प्रयोग भाषा में जीवंतता, विलक्षणता और सौंदर्याभिव्यक्ति के लिए किया जाता है, जबकि लोकोक्ति किसी कथन को पुष्ट करने के लिए प्रयुक्त की जाती है।

नीचे हिंदी में प्रयुक्त होने वाले महत्वपूर्ण मुहावरों का अर्थ व उनका वाक्यों में प्रयोग दिया गया है।

1. अंग अंग ढीला होना — *बहुत थक जाना*
आज काम कर-करके अंग-अंग ढीला हो गया।

2. अंगार उगलना — *कठोर वचन कहना*
आज उसने जो अंगारे उगले हैं उनसे बैर की जड़ पक्की हो गई है।

3. अँगूठा दिखाना — *साफ इन्कार करना*
अब तक तो मुझे रुपये मिलने की आशा थी किंतु आज उसने अँगूठा दिखा दिया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4. अंगारों पर पैर रखना	*जोखिम का कार्य करना* अंगारों पर पैर रखकर महात्मा गाँधी ने भारत को स्वतंत्रता दिलाई
5. अंधे की लाठी	*एकमात्र सहारा* रामू अपनी विधवा माता की अंधे की लाठी है।
6. अंधेरे घर का उजाला	*होनहार पुत्र, जिससे सारी उम्मीदें हों* श्रवण कुमार अपने माता-पिता का अँधेरे घर का उजाला था।
7. अँधेर/अँधेरगर्दी मचाना	*लूट मचाना/अन्याय करना* आजकल चोरों ने अँधेरगर्दी मचा रखी है।
8. अक्ल का दुश्मन	*मूर्ख* वह तो निरा अक्ल का दुश्मन है।
9. अक्ल के पीछे घोड़े दौड़ाना	*बहुत सोच विचार और उपाय करना* इस कार्य को करने से पहले मैंने अपनी अक्ल के पीछे घोड़े दौड़ लिए हैं।
10. अक्ल पर पत्थर पड़ना	*बुद्धि भ्रष्ट होना* मैंने क्या लाने को कहा और तुम क्या ले आए? कहीं तुम्हारी अक्ल पर पत्थर तो नहीं पड़ गए हैं?
11. अगर-मगर करना	*टोल मटोल करना* जब भी मैं तुमसे कोई कार्य करने के लिए कहता हूँ तो तुम अगर-मगर करने लगते हो।
12. अड़ियल टट्टू	*हठी* पाकिस्तान कश्मीर नीति के विषय में अड़ियल टट्टू बना हुआ है।
13. अपना उल्लू सीधा करना	*स्वार्थ सिद्ध करना* आज के युग में सभी अपना उल्लू सीधा करने में लगे होते हैं।
14. अपना सा मुँह लेकर रह जाना	*लज्जित होना* मैंने उसके सामने ही भेद खोल दिया, बेचारा अपना सा मुँह लेकर रह गया।
15. अपना ही राग अलापना	*अपनी ही बात कहे जाना व किसी अन्य की न सुनना* रमेश बड़ा जिद्दी है। सदैव अपना ही राग अलापता रहता है।
16. अपनी खिचड़ी अलग पकाना	*सबसे अलग रहना* श्याम किसी से बात नहीं करता। वह सदैव अपनी खिचड़ी अलग पकाता है।
17. अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारना	*स्वयं अपने लिए मुसीबत उत्पन्न करना* जमींदार से लड़ाई मोल लेकर उसने अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मार ली है।
18. अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना	*स्वयं अपनी प्रशंसा करना* अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने से क्या लाभ है? बात तब है जब दूसरे आपकी प्रशंसा करें।
19. आँख दिखाना	*गुस्सा प्रकट करना* अध्यापक के आँख दिखाते ही बच्चे शांत हो गए।
20. आँखें खुलना	*होश में आना* इस बार वार्षिक परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाने के बाद मेरी आँखें खुल गईं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

21. **आँखें चार होना** — *प्रेम के वशीभूत होना*
आँखें चार होते ही उसने मुस्करा दिया।

22. **आँखें चुराना** — *नजरअंदाज करना*
एक बार बीस रुपये उधार लेकर गया था, वापिस नहीं दिए, तब से वह मुझसे आँखें चुराता है।

23. **आँखें पथरा जाना** — *भौंचक्का रह जाना*
राम की राह देखते-देखते शबरी की आँखें पथरा गईं थीं।

24. **आँखें फेर लेना** — *दूर होना*
उसने अपने बेटे की ओर से आँखें फेर ली हैं।

25. **आँखों का तारा** — *अत्यंत प्यारा*
श्रवण कुमार अपने अंधे माता-पिता का आँखों का तारा था।

26. **आँखों में धूल झोंकना** — *धोखा देना*
तिलक लगाकर, गले में माला पहनकर, मैं राम-राम जपता हूँ व इस धोखे से दूसरे की आँखों में धूल झौंकता हूँ।

27. **आँच न आने देना** — *तनिक कष्ट न होने देना*
आप मेरे मित्र हैं, मैं आप पर आँच तक नहीं आने दूँगा।

28. **आकाश के तारे तोड़ना** — *असंभव कार्य करना*
रावण ने सीता से कहा कि तू कहे तो मैं तेरे लिए आकाश के तारे तोड़ लाऊँ।

29. **आकाश-पाताल का अंतर** — *अत्यधिक अंतर*
उन दोनों भाईयों में आकाश-पाताल का अंतर है।

30. **आकाश-पाताल एक करना** — *बहुत परिश्रम करना*
आकाश-पाताल एक करके ही जीवन में उन्नति संभव है।

31. **आग-बबूला होना** — *क्रोधोन्मत होना*
खर-दूषण सूपर्णखां के कटे नाक-कान देखकर आग-बबूला हो गए।

32. **आग में घी डालना** — *क्रोध को और बढ़ाना*
मैंने सोचा था कि भाई आकर लड़ाई-झगड़ा समाप्त करा देगा। लेकिन उसने आग में घी डालने का कार्य किया।

33. **आटे-दाल का भाव मालूम होना** — *कष्ट की अनुभूति होना*
अभी तुम हम लोगों के पंजे में नहीं आए हो। एक बार पड़ोगे तो आटे-दाल का भाव मालूम हो जाएगा।

34. **आपे से बाहर होना** — *बहुत क्रोधित होना*
लक्ष्मण का उत्तर सुनकर परशुराम आपे से बाहर हो गए।

35. **आसमान से बातें करना** — *बहुत ऊँचा होना*
ताड़ के वृक्ष आकाश से बातें कर रहे थे।

36. **आसमान सिर पर उठाना** — *बहुत शोर करना*
पिता के घर जाते ही बच्चों ने आसमान सिर पर उठा लिया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

37. आस्तीन का साँप	*धोखा देने वाला संबंधी* मैंने रमेश पर विश्वास किया परंतु वह आस्तीन का साँप निकला।
38. ईंट का जवाब पत्थर से देना	*आक्रमण का उत्तर जोरदार आक्रमण से देना* रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों को ईंट का जवाब पत्थर से दिया।
39. ईंट से ईंट बजाना	*सर्वत्र नष्ट-भ्रष्ट कर देना* नादिरशाह ने दिल्ली की ईंट से ईंट बजा दी।
40. ईद का चाँद होना	*अत्यंत कम दर्शन देने वाला* आजकल तुम दिखाई नहीं देते, बड़े ईद के चाँद हो गए हो।
41. इशारे पर नाचना	*वशीभूत होना* तुम तो पत्नी के इशारों पर नाचते हो।
42. उंगली पर नचाना	*वशीभूत कर लेना* आजकल के चपरासी अफसरों को अपनी उंगली पर नचा रहे हैं।
43. उधेड़बुन में पड़ना	*चिंतन-मनन करना* वह न जाने सारा दिन किस उधेड़-बुन में लगा रहता है।
44. उन्नीस-बीस का अंतर	*मामूली अंतर होना* इन दोनों स्वेटरों की गुणवत्ता में उन्नीस-बीस का अंतर है।
45. उलटी गंगा बहाना	*विपरीत कार्य करना* आलसी राम ने आज ढेर सारा काम करके उलटी गंगा बहा दी है।
46. उलटी-सीधी सुनाना	*भला-बुरा कहना* सास-बहू ने एक-दूसरे को खूब उलटी-सीधी सुनाई।
47. उल्लू बनाना	*मूर्ख बनाना* उसने मुझे सट्टे में उल्लू बना दिया।
48. एक और एक ग्यारह होना	*संगठन में ताकत होना* तुम्हारे अकेले के प्रयास से कुछ नहीं होगा। अपने भाई को साथ मिला लोगे तो एक और एक ग्यारह हो जाओगे।
49. एक थैली के चट्टे-बट्टे होना	*सभी का एक-सा होना* दोनों भाई चोर हैं। दोनों एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं।
50. ऐड़ी-चोटी का जोर लगाना	*भरपूर प्रयत्न करना* सोहन ने मेडिकल की परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए ऐड़ी-चोटी का जोर लगा दिया।
51. कच्ची गोलियाँ खेलना	*अनुभव की कमी होना* प्रोपर्टी डीलर ने मुझे धोखा देने की कई कोशिश की परंतु मैंने भी कच्ची गोलियाँ नहीं खेली थीं। मैंने भी उसे मज़ा चखा दिया।
52. कड़वे घूँट पीना	*कष्टदायक बात सहन कर जाना* कौरवों द्वारा अपमान सहकर पांडव कड़वे घूँट पीकर रह गए।
53. कंधे से कंधा मिलाना	*सहयोग करना* आज के जमाने में महिलाएँ कदापि पुरुषों से कम नहीं हैं। महिलाएँ पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

54. कन्नी काटना — *बचना*
उसकी मक्कारी को ध्यान में रखते हुए मैंने उससे कन्नी काटनी शुरू कर दी।

55. कमर कसना — *तैयार होना*
कलिंग में सभी पुरुषों की मृत्यु के पश्चात् स्त्रियों ने मगध सम्राट अशोक से युद्ध के लिए कमर कस ली थी।

56. कमर टूटना — *हिम्मत टूट जाना*
जवान बेटे की मृत्यु से बूढ़े बाप की तो कमर ही टूट गई।

57. कलेजा छलनी होना — *बहुत दुखी होना*
यदि आज गाँधीजी जीवित होते तो अपने स्वतंत्र भारत में इतना भ्रष्टाचार देखकर उनका कलेजा छलनी हो जाता।

58. कलेजा फटना — *असह्य दुख होना*
जलियाँवाला बाग हत्याकांड देखकर बालक भगतसिंह का कलेजा फट गया।

59. कलेजा मुँह को आना — *अत्यधिक दुखी होना*
भीषण बमवर्षा में आहत निर्दोष नागरिकों के शवों के क्षत-विक्षत शरीरों को देखकर कलेजा मुँह को आ गया।

60. कलेजे पर पत्थर रखना — *चुपचाप रहकर दुःख सहन कर जाना*
इतना अपमान सहकर भी रामानुजन अपने कलेजे पर पत्थर रखकर शांति से बैठा है।

61. काँटे बिछाना — *मार्ग में मुसीबत खड़ी करना*
दुर्योधन ने पांडवों के मार्ग में लाख काँटे बिछाए परंतु जीत सदैव सत्य की ही होती है।

62. काँटा दूर होना — *कठिनाई दूर होना*
हमारे पड़ोस से जब एक झगड़ालू पड़ौसी चला गया तब जाकर हृदय को प्रसन्नता मिली कि चलो, एक काँटा दूर हुआ।

63. कान कतरना — *अत्यधिक चालाक होना*
इतना छोटी-सी उम्र में ही उसका बेटा बड़े-बड़ों के कान कतरता है।

64. कान का कच्चा होना — *शीघ्र विश्वास करने वाला*
आज राम पहले के समान कान का कच्चा नहीं है। पहले जाँच-पड़ताल करेगा फिर तुम्हारी बात मानेगा।

65. कान पर जूँ न रेंगना — *असर न होना*
भगवान कृष्ण के लाख समझाने पर भी मक्कार शकुनि के कान पर जूँ तक न रेंगी।

66. कान भरना — *चुगली करना*
रामचंद्र को वनवास कराने के लिए मंथरा ने कैकेयी के खूब कान भरे।

67. कानों-कान खबर न होना — *बिल्कुल खबर न होना*
आपने अपनी सबसे छोटी बिटिया का विवाह भी कर दिया और किसी को कानों-कान खबर न हुई।

68. काम तमाम कर देना — *मार डालना*
द्रौपदी का अपमान करने पर भीमसेन ने कीचक का काम तमाम कर दिया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

69. कालिख पोतना
बदनाम करना
सबसे बड़े बेटे ने चोरी करके बूढ़े माँ-बाप के मुख पर कालिख पोत दी।

70. किताब का कीड़ा
सदैव पढ़ते रहने वाला
लाल बहादुर शास्त्री बचपन से ही किताब के कीड़े थे।

71. किरकिरा होना
मज़ा बिगड़ जाना
उनके न रहने से जलसे का सारा मजा किरकिरा हो गया।

72. कीचड़ उछालना
बदनामी करना
किसी पर कीचड़ उछालने से पूर्व तुम अपने भीतर झाँक लो। उनसे अधिक कमियाँ तो तुम में हैं।

73. कुत्ते की दुम
सदैव जालसाज रहना
यह कुलदीप चाहे सौ बार माफी माँग ले परंतु सीधा नहीं होगा। यह तो कुत्ते की दुम है।

74. कुत्ते की मौत मरना
दु:खपूर्ण मृत्यु मरना
सभी आतंकवादी कारगिल में भारतीय सेना के हाथों कुत्ते की मौत मरे।

75. कोल्हू का बैल
लगातार कार्य में लगे रहना
रमेश तो कोल्हू का बैल बन गया है, फिर भी कक्षा में प्रथम आना उसके बस की बात नहीं है।

76. खटाई में पड़ना
कार्य में अड़चन पड़ना
अब तो मेरा काम अवश्य ही हो जाता। परंतु अफसर के अड़ियल रवैये के कारण मेरा काम खटाई में पड़ गया है।

77. खरी-खरी सुनाना
स्पष्ट व कठोर वचन कहना
यदि यह साबित हो गया कि मेरे भाई ने पड़ौसी का सोना चुराया है तो मैं उसे खूब खरी-खोटी सुनाउँगा।

78. खाई पाटना
मनमुटाव कम करना
भारत ने कई बार पाकिस्तान के साथ खाई पाटने की कोशिश की परंतु पाकिस्तान तो जैसे कुछ मानने को तैयार ही नहीं है।

79. ख़ाक छानना
कष्ट उठाना
लगता है सारी गली की खाक छानकर आए हो।

80. ख़ाक में मिलाना
नष्ट-भ्रष्ट करना
घर से भाग कर शीतल ने अपने घर की इज़्ज़त को खाक में मिला दिया।

81. खिल्ली उड़ाना
हास्य का पात्र बनाना
जब युद्धिष्ठिर द्यूतक्रीड़ा में सर्वस्व हार बैठे तो कौरवों ने उनकी खूब खिल्ली उड़ाई।

82. खून का घूँट पीना
क्रोध को भीतर ही भीतर सहना
अपनी नई गाड़ी की दुर्गति होते देख मैं खून का घूँट पीकर रह गया।

83. खून का प्यासा
भयंकर शत्रु
जब से सुरेंद्र ने दिलीप के भाई को मारा है तब से दिलीप सुरेंद्र के खून का प्यासा है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

84. खून-पसीना एक करना — *अत्यंत परिश्रम करना*
रामू खून पसीना एक कर अपने पुत्र को अच्छे विद्यालय में पढ़ा रहा है।

85. खून सूखना — *डर जाना*
इतनी भयानक फिल्म थी। अकेले देखें तो खून सूख जाए।

86. ख्याली पुलाव पकाना — *कपोल कल्पनाओं में डूबे रहना*
कुछ प्रयोगात्मक सोच रखो। जीवन में तरक्की करने के लिए मेहनत की आवश्यकता होती है। ख्याली पुलाव पकाने से कुछ हासिल नहीं होता।

87. गज भर की छाती होना — *गौरव से भर जाना*
अपने बड़े पुत्र के कारगिल युद्ध में शहीद होने से पिता की छाती गज भर की हो गई थी।

88. गड़े मुर्दे उखाड़ना — *पिछली बातें याद करना*
अब गड़े मुर्दे उखाड़ने से क्या फायदा? जो होना था सो हो गया।

89. गर्दन उठाना — *विरोध करना*
मुशर्रफ की लोकतंत्र विरोधी नीतियों के कारण समूची जनता गर्दन उठाकर खड़ी हो गई है।

90. गर्दन झुकना — *लज्जित होना*
1971 के युद्ध में शर्मनाक हार के कारण पाकिस्तान की गर्दन शर्म से झुक गई।

91. गर्दन पर सवार होना — *पीछे पड़े रहना*
टिकट खिड़की पर इतनी भीड़ थी कि सभी लोग रेलवे स्टेशन पर क्लर्क की गर्दन पर सवार हो गए थे।

92. गले का हार — *बहुत प्यारा*
मैं अपने बेटे को परेशानी में छोड़कर कहीं नहीं जा सकता। वही तो मेरे गले का हार है।

93. गले पड़ना — *मुसीबत पीछे पड़ना*
मैंने रिक्शेवाले को उचित पैसे दिए परंतु वह अधिक माँग रहा था। मैंने उसे धमकाया तो वह मेरे गले ही पड़ गया।

94. गले मढ़ना — *जबरदस्ती कार्य सौंपना*
मेरा साथी कैश काउंटर पर बैठते हुए स्वयं तो डर रहा था। उसने अपनी मुसीबत मेरे गले मढ़ दी।

95. गागर में सागर होना — *थोड़े में ही बहुत कुछ कह जाना*
इस कविता में तो मानों कवि ने गागर में सागर भर दिए।

96. गिरगिट के समान रंग बदलना — *वचनबद्ध न रहना*
उसने मुझे दस हजार रुपये लौटाने का वचन दिया था। जब मैं उसके घर पहुँचा तो वह गिरगिट के समान रंग बदल गया।

97. गीदड़ भभकी — *खोखली धमकी*
पाकिस्तानी गीदड़ भभकी से भारत डरने वाला नहीं।

98. गुड़ गोबर करना — *बनी बनाई बात को बिगाड़ देना*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हम सभी तैयार होकर सैर पर जा ही रहे थे कि चाचाजी ने आकर सारा प्रोग्राम गुड़ गोबर कर दिया।

99. गुदड़ी का लाल — *निर्धन परिवार में जन्मा गुणी व्यक्ति*
लाल बहादुर शास्त्री अत्यंत गरीबी में जन्मे थे। वे वास्तव में गुदड़ी के लाल थे।

100. गुल खिलाना — *नया कार्य करना*
बहुत दिनों बाद दिखाई पड़े हो। आजकल क्या गुल खिला रहे हो।

101. गुलछर्रे उडाना — *मौज करना*
घर में परिवार के लिए खाने को दाने नहीं हैं और तुम्हें बाहर मित्रों के साथ गुलछर्रे उड़ाते शर्म नहीं आती।

102. गुस्सा पीना — *क्रोध को रोकना*
आतंकवादियों की तुच्छ हरकतों को देखते हुए भी भारतीय सेना को यदा-कदा गुस्सा पीना पड़ता है।

103. गोबर गणेश — *निरा मूर्ख*
उससे किसी काम की कोई आशा नहीं है। वह तो निरा मूर्ख है।

104. गोलमाल करना — *गबन करना*
मुझे वह फिल्म अत्यंत पसंद आई। उसमें बैंक के मैनेजर को खलनायकों ने बैंक में गोलमाल करने के आरोप में फँसा दिया था।

105. घड़ों पानी पड़ना — *अत्यंत लज्जित होना*
अपने फेल होने की सूचना प्राप्त कर राकेश पर घड़ों पानी पड़ गया।

106. घर का उजाला — *इज्जत बढ़ाने वाला*
इंदिरा गांधी नेहरू परिवार के घर का उजाला थीं। उन्होंने बहुत महान कार्य किए।

107. घाट-घाट का पानी पीना — *अत्यंत अनुभवी होना*
मंत्री जी को कम न समझना। उन्होंने घाट-घाट का पानी पिया है।

108. घाव पर नमक छिड़कना — *दुखी को और दुखी करना*
वह तो पहले ही दुखी है। तुम क्यों उसके घावों पर नमक छिड़कते हो?

109. घी के दिए जलाना — *खुशियाँ मनाना*
रमेश की जब से लाटरी लगी है तभी से उसके घर में घी के दिए जल रहे हैं।

110. घुटने टेकना — *हार मान लेना*
शिवाजी ने औरंगजेब के समक्ष घुटने टेकना कभी स्वीकार नहीं किया।

111. घोड़े बेचकर सोना — *निश्चिंत सोना*
परीक्षा के दिन करीब आ रहे हैं, इस तरह घोड़े बेचकर सोने से काम नहीं चलेगा।

112. घोड़े पर सवार होना — *शीघ्रता में होना*
बहुत दिनों के बाद मिले हो। घर चलकर जलपान करो। तुम तो घोड़े पर सवार हुए जा रहे हो।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

113. चंपत हो जाना — *गायब होना*
चोर सारा धन लूटकर पुलिस के आने से पूर्व ही चंपत हो गए।

114. चाँद पर थूकना — *निर्दोष पर दोष लगाना*
जो लोग महात्मा गाँधी पर दोष लगाते हैं वे स्वयं चाँद पर थूकते हैं।

115. चाँदी होना — *लाभ ही लाभ होना*
दिवाली के मौके पर मिठाई विक्रेताओं की तो चाँदी हो जाती है।

116. चादर तानकर सोना — *निश्चिंत होना*
वह बहुत परिश्रमी है तथा अपने उत्तीर्ण होने पर पूर्ण विश्वास है। इसलिए वह घर आकर चादर तानकर सो गया।

117. चार सौ बीस होना — *धोखेबाज होना*
राकेश जैसा चार सौ बीस मैंने आज तक नहीं देखा। उसने न जाने कितने घर उजाड़े हैं।

118. चार चाँद लगाना — *शोभा बढ़ाना*
ताजमहल इस देश की सुंदरता को चार चाँद लगाता है।

119. चिकना घड़ा होना — *बेशर्म होना*
सारा दिन घूमते रहते हो। डाँटने पर गलती स्वीकार कर लेते हो फिर अगले दिन भूल जाते हो। एकदम चिकने घड़े हो गए हो।

120. चिकनी-चुपड़ी बातें करना — *चापलूसी करना*
बिचौलिए ने विवाह के प्रायोजन से वधू पक्ष के साथ चिकनी-चुपड़ी बातें कीं।

121. चेहरे पर हवाईयाँ उड़ना — *घबरा जाना*
सुनील जब दौड़कर अपने पाले में पहुँचा तो उसके चेहरे पर हवाईयाँ उड़ रहीं थीं।

122. चैन की बंसी बजाना — *आनंद से जलना*
जब रोम जल रहा था तो नीरो चैन की बंसी बजा रहा था।

123. चोली दामन का संबंध होना — *अटूट संबंध होना*
मोहन व सोहन इतने गहने मित्र हैं कि उनका तो चोली दामन का साथ है।

124. चींटी के पर निकलना — *छोटे व्यक्ति का घमंड करना*
इतना घमंड! इतना अभिमान! तो आजकल चींटी के भी पर निकल आए हैं।

125. छक्के छुड़ाना — *बुरी तरह हराना*
भारत ने पाकिस्तान के साथ वन-डे मैच में पाकिस्तान के छक्के छुड़ा दिए।

126. छठी का दूध याद आना — *बहुत कष्ट होना*
अब तक पिता की कमाई पर ऐश करते रहे, जब स्वयं कमाना पड़ेगा तो छठी का दूध याद आ जाएगा।

127. छप्पर फाड़कर देना — *बिना प्रयत्न खूब देना*
दु:ख क्यों करते हो? ईश्वर जब भी देता है छप्पर फाड़कर देता है।

128. छाती पर मूँग दलना — *मुँह के समक्ष दुखदायक व्यवहार करना*
सास पड़ौसियों के सामने अपनी बहू की बुराई कर उसकी छाती पर मूँग दलती रहती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

129. छाती पर साँप लोटना *ईर्ष्या से जलना*
पड़ौसियों के घर बड़ा सा टीवी आया देख रमा की छाती पर साँप लोट गया।

130. छुपा रुस्तम *देखने में साधारण परंतु गुणी*
हम सोच भी नहीं सकते थे कि वह नृत्यकला में इतना पारंगत है। वह तो छुपा रुस्तम निकला।

131. छूमंतर होना *गायब होना*
आभूषण विक्रेता के आभूषण चुराकर चोर कहीं छूमंतर हो गए।

132. जमीन पर पैर न पड़ना *घमंड होना*
जब से उसकी लाटरी लगी है उसके पैर जमीन पर नहीं पड़ रहे हैं।

133. जहर का घूँट पीना *अन्याय सहन करना*
बच्चों की गलतियों के कारण कई बार बातें सुननी पड़ीं। पर क्या करें, उनके लिए जहर का घूँट पीना ही पड़ता है।

134. जले पर नमक छिड़कना *दुखी व्यक्ति को और दुखी करना*
इस बेचारे दुखी की खिल्ली उड़ाकर तुम क्यों जले पर नमक छिड़कते हो।

135. जान पर खेलना *जान को संकट में डालकर कार्य करना*
भगत सिंह भारत को आजाद कराने के लिए अपनी जान पर खेल गए।

136. जी चुराना *मेहनत से बचना*
रमेश सदा अपना गृह कार्य करने से सदा जी चुराता है।

137. जूती चाटना *खुशामद करना*
पुराने समय में कई ऊँचे रहन-सहन वाले लोग अंग्रेजों की जूती चाटते थे।

138. झंडा गाड़ना *धाक जमा देना*
भारत ने 2007 में क्रिकेट का ट्वेंटी-ट्वेंटी मैच जीतकर विश्व में अपनी क्रिकेट योग्यता के झंडे गाड़ दिए।

139. टका-सा जवाब देना *साफ इंकार करना*
आजकल के चपरासी कुछ काम करना ही नहीं चाहते। टका-सा जवाब दे देते हैं।

140. टाँग अड़ाना *व्यर्थ दखल देना*
बड़े जब बात कर रहे हों तो छोटों को टाँग अड़ाना शोभा नहीं देता।

141. टाँगें पसार कर सोना *निश्चिंत होकर सोना*
वह परीक्षा भवन से आते ही टाँगें पसार कर सो गया।

142. टाल मटोल करना *बहाने बनाना*
सुरेंद्र ने मेरी कुछ भी सहायता नहीं की। टालमटोल करके चलता कर दिया।

143. टोपी उछालना *अपमानित करना*
लड़के वाले हो, क्या तुम्हें यह हक मिल जाता है कि लड़की वालों की टोपी उछालो?

144. टेढ़ी अँगुली से घी निकालना *सख्ती से काम निकालना*
यदि तुम अपना कार्य कराना चाहते हो तो कड़ाई से काम लेना होगा। बिना टेढ़ी उंगली किए घी नहीं निकलेगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

145. ठोकरें खाना — *मुसीबतें पालना*
उसे अपना कार्य स्वयं करने दो, ठोकर खाकर ही कुछ सीख पाएगा।

146. डंके की चोट पर कहना — *निर्भीक होकर कहना*
वीरेंद्र बात करने में किसी प्रकार की लाग लपेट नहीं रखता, वह जो भी कहता है डंके की चोट पर कहता है।

147. डींगें हाँकना — *अपनी बड़ाई का बखान करना*
ज्यादा डींगें मत हाँको, तुम्हें यहाँ सभी जानते हैं।

148. ढोल पीटना — *सब में मशहूर करना*
पड़ोस के घर में तो लड़ाई हो रही है। तुम्हें ढोल पीटकर क्या मिलेगा?

149. तारे गिनना — *उत्सुकता से प्रतीक्षा करना*
रात में भी सोहन को नींद नहीं आई। सुबह होने तक तारे गिनता रहा।

150. तितर-बितर होना — *बिखर कर भाग जाना*
बम की अफवाह फैलते ही बस में से सारी भीड़ तितर बितर हो गई।

151. तिल का ताड़ बनाना — *छोटी-सी बात को बढ़ा देना*
इस बात को यहीं समाप्त कर दो। तिल का ताड़ बनाने की आवश्यकता नहीं है।

152. तिल रखने की जगह न होना — *अधिक भीड़ होना*
समारोह में लोगों की भीड़ से भवन खचाखच भरा हुआ है। तिल रखने तक की जगह नहीं है।

153. तूती बोलना — *बहुत प्रभाव होना*
आज के युग में तो जिसके पास पैसा है, उसी की तूती बोलती है।

154. थाली का बैंगन — *सिद्धांतहीन व्यक्ति*
भाई मैं तुम्हारा भरोसा नहीं कर सकता। क्योंकि तुम थाली के बैंगन हो।

155. थूक कर चाटना — *अपने कथन से इंकार करना*
मैं उसका विश्वास नहीं कर सकता। क्योंकि उसे थूककर चाटने की आदत है।

156. दाँत खट्टे करना — *परास्त करना*
भारतीय सेना ने पाकिस्तानी सैनिकों के दाँत खट्टे कर दिए थे।

157. दाँतों तले अंगुली दबाना — *हैरान होना*
सरकस कलाकारों ने गजब का हैरतअंगेज करतब पेश किया जिससे दर्शकों ने अपने दाँतों तले अंगुली दबा ली।

158. दाने-दाने को तरसना — *बहुत अभावग्रस्त होना*
प्रेमचंद एक महान कहानीकार थे परंतु अपने जीवनकाल में दाने-दाने को तरसे।

159. दाल न गलना — *सफल न होना*
विपक्ष ने सरकार गिराने की लाख कोशिश की परंतु उनकी दाल न गली।

160. दाल में काला होना — *गड़बड़ होना*
कल तक तो राजन राजीव का शत्रु था फिर अचानक उन्होंने दोस्ती कैसे कर ली। अवश्य ही दाल में कुछ काला है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

161. दमड़ी के तीन होना — *बहुत सस्ता होना*

आजकल पढ़े-लिखे लोग दमड़ी के तीन हो रहे हैं।

162. दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करना — *निरंतर उन्नति करना*

लक्ष्मी मित्तल ने स्टील के व्यापार में दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की की है।

163. दुम दबाकर भागना — *डर कर भाग जाना*

सैनिकों को देखकर आतंकवादी दुम दबाकर भाग गए।

164. दूध का दूध पानी का पानी करना — *ठीक-ठीक न्याय करना*

किसी पर आरोप तो कोई भी लगा दे। परंतु न्यायालय में दूध का दूध पानी का पानी हो जाता है।

165. दूर के ढोल सुहावने लगना — *दूरी या अपरिचय के कारण वस्तु का आकर्षक लगना*

उसका काम तुमसे कोई अधिक अच्छा नहीं है। दूर के ढोल सुहावने लगते हैं।

166. दो टूक जवाब देना — *साफ इंकार करना*

जब उसकी आवश्यकता पड़ी, मैंने उसका साथ दिया। परंतु जब मेरी आवश्यकता पड़ी, उसने दो टूक जवाब दे दिया।

167. दौड़-धूप करना — *खूब प्रयत्न करना*

अपने व्यापार को बढ़ाने के लिए अशोक ने खूब दौड़-धूप की।

168. धज्जियाँ उड़ाना — *खंड-खंड कर देना*

विरोधी टीम की भारतीय टीम ने धज्जियाँ उड़ा दीं।

169. धरती पर पाँव न पड़ना — *अभिमान में रहना*

जब से रमेश को कारोबार में मुनाफा हुआ है, उसके पाँव धरती पर नहीं पड़ रहे हैं।

170. धाक जमाना — *प्रभाव जमाना*

भारतीय टीम ने ट्वेंटी-ट्वेंटी विश्वकप जीतकर क्रिकेट में अपनी धाक जमा दी।

171. नज़रों से गिरना — *अप्रिय होना*

मैंने कई बार बुरे समय में तुम्हारी सहायता की परंतु जब मेरा बुरा समय आया तो तुमने साफ मना कर दिया। तुम तो मेरी नजरों से गिर चुके हो।

172. नमक-मिर्च लगाना — *बढ़ा-चढ़ा कर बात बताना*

गलती तो मामूली-सी थी। भैया ने नमक-मिर्च लगाकर माँ को बताया।

173. नाक कटना — *बेइज्जती होना*

तुम्हारी इस गलती से पूरी बिरादरी में मेरी नाक कट गई।

174. नाक पर मक्खी न बैठने देना — *अपने ऊपर कोई संकट न आने देना*

वह अत्यंत चालाक है। उससे किसी कार्य की उम्मीद करना ही बेकार है। वह तो नाक पर मक्खी तक नहीं बैठने देता है।

175. नाक-भौं चढ़ाना — *घृणा प्रकट करना*

इस तरह नाक-भौं चढ़ाने से काम नहीं चलेगा। परिस्थिति के अनुसार बदलना ही होगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

176. नाक में दम करना — *तंग करना*
अफसर के पास मेरी न जाने कहाँ से शिकायतें पहुँच जाती हैं। मेरी तो नाक में दम कर रखा है।

177. नाक रगड़ना — *गलती को बारंबार स्वीकार करना*
मैंने रिश्वत ले ली। मैंने लाख नाक रगड़ी परंतु अफसर ने मुझे संस्पेंड कर ही दिया।

178. नाकों चने चबवाना — *खूब छकाना*
महाराणा प्रताप ने अकबर को खूब नाकों चने चबवाए।

179. नानी याद आना — *मुसीबत देखकर घबरा जाना*
पहले तो पूरे साल खेलते रहे। अब परीक्षाफल आ रहा है तो नानी याद आ रही है।

180. नाम पर धब्बा लगना — *कलंक लगना*
सुरैया ने घर से भागकर अपने माता-पिता के नाम पर धब्बा लगा दिया।

181. निन्यानवे के फेर में पड़ना — *धन संग्रह में लगना*
उसके पास समय कहाँ। वह तो निन्यानवे के फेर में पड़ा रहता है।

182. नौ दो ग्यारह होना — *भाग जाना*
पुलिस के सिपाहियों की आहट पाते ही चोर नौ दो ग्यारह हो गए।

183. पगड़ी उछालना — *अपमानित करना*
आजकल के लड़के तो अपने पिता की भी पगड़ी उछालने से नहीं चूकते।

184. पत्थर की लकीर — *पक्की बात*
मेरे बड़े भाई के वचन मेरे लिए पत्थर की लकीर हैं।

185. पलकें बिछाना — *प्रेम-पूर्वक स्वागत करना*
शबरी ने राम के आगमन के लिए पलकें बिछा रखीं थीं।

186. पहाड़ टूटना — *भारी कष्ट आ पड़ना*
यह कार्य उससे होना संभव नहीं है। उस पर तो पहले ही पहाड़ टूट चुका है।

187. पाँचों अंगुली घी में होना — *लाभ ही लाभ होना*
भाई साहब, इस बेटे की नौकरी भी बहुत अच्छी जगह लगी है। आपकी तो पाँचों अंगुलियाँ घी में हैं।

188. पाँव जमीन पर न टिकना — *अत्यधिक उत्साहित होना*
जब से अंकुर की सरकारी नौकरी लगी है उसके पाँव जमीन पर नहीं टिक रहे हैं।

189. पानी-पानी होना — *लज्जित होना*
एक जरा सी भूल पर नौकर-मालिक के समक्ष पानी-पानी हो गया।

190. पाला पड़ना — *सामना पड़ना*
मेरे सामने अधिक मत बोलो। तुम नहीं जानते कि किससे पाला पड़ा है।

191. पीठ दिखाना — *हारकर भागना*
मुहम्मद ग़ौरी की सेना जब पृथ्वीराज चौहान को पीठ दिखाकर भागने लगी तो पृथ्वीराज चौहान को दया आ गयी और उन्हें छोड़ दिया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

192. पेट काटना — *कम खर्च कर आवश्यकता हेतु जोड़ना*
उसे जमीन खरीदनी है। इसीलिए वह अपना पेट काटकर रुपये जोड़ रहा है।

193. पेट में चूहे कूदना — *जोरों की भूख लगना*
माँ जल्दी भोजन दो। सुबह से कुछ नहीं खाया। पेट में चूहे कूद रहे हैं।

194. पेट में दाढ़ी होना — *छोटी आयु में चालाक होना*
इस उम्र में ऐसी बातें सुनकर आश्चर्य होता है। लगता है उसके पेट में दाढ़ी है।

195. पैरों तले जमीन खिसकना — *स्तब्ध रह जाना*
जवान बेटे की मौत की खबर सुनकर माता के पैरों के नीचे की जमीन खिसक गई।

196. प्राणों की बाजी लगाना — *किसी कार्य हेतु प्राण दे देना*
सिपाही अपने देश की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा देते हैं।

197. फूँक-फूँककर कदम रखना — *बड़ी सावधानी से कार्य करना*
परदेश का मामला है, फूँक-फूँक कर कदम रखना होगा अन्यथा कोई भी ठग लेगा।

198. फुलझड़ी छोड़ना — *मजाक करना*
साहित्य सम्मेलन में साहित्यकार अपने भाषणों के बीच समय-समय पर फुलझड़ियाँ छोड़ते जाते थे।

199. फूटी आँख न सुहाना — *जरा भी अच्छा न लगना*
रमेश बहुत धूर्त है। वह मुझे फूटी आँख नहीं सुहाता।

200. फूला न समाना — *बहुत प्रसन्न होना*
परीक्षा में प्रथम स्थान आने पर वह फूला नहीं समा रहा है।

201. बंदर घुड़की — *थोथी धमकी*
साहसी व्यक्ति धमकियाँ नहीं देते। तुम्हारी इस बंदर घुड़की से मैं डरने वाला नहीं।

202. बहती गंगा में हाथ धोना — *हाथ आए अवसर का लाभ उठाना*
आज का हर नेता बहती गंगा में हाथ धोने की सोचता है।

203. बाँछें खिलना — *बहुत प्रसन्न होना*
सत्ता मिलने पर नेताओं की बाँछें खिल जाती हैं।

204. बाँह पकड़ना — *सहारा देना*
दयालु युवक ने अंधी बुढ़िया को बाँह पकड़कर सड़क पार कराई।

205. बाँसों उछलना — *अत्यंत प्रसन्न होना*
सी०बी०एस०ई० की वार्षिक परीक्षा के परिणाम आने के पश्चात् वह बाँसो उछल रहा है।

206. बाग़-बाग़ होना — *बहुत खुश होना*
अपनी नौकरी लगते ही वह बाग़-बाग़ हो गया।

207. बात का बतंगड़ बनाना — *तनिक सी बात को बढ़ा देना*
जरा-सा दूध गिर गया था। बहू ने बात का बतंगड़ बना दिया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

208. बात का धनी होना — *वचन का पक्का होना*
पुराने समय के लोग अपनी बात के धनी होते थे। प्राण दे देते थे परंतु वचन नहीं तोड़ते थे।

209. बाल की खाल निकालना — *बहुत गहराई से विचार करना*
मेरा अफसर छुट्टी माँगने पर बाल की खाल निकालने लगता है।

210. बाल भी बाँका न होना — *कुछ भी न बिगड़ना*
स्टंट मैन एक फिल्म की शूटिंग करने पर आग में घुस गया। घोर आश्चर्य! उसका बाल भी बाँका नही हुआ।

211. बाल-बाल बचना — *मुश्किल से बच पाना*
सुनील कुमार मदर इंडिया में नर्गिस को बचाते हुए स्वयं भी बाल-बाल बचे थे।

212. बायें हाथ का खेल — *बहुत आसान कार्य*
यह भी कोई कार्य है? यह तो मेरे बायें हाथ का खेल है।

213. बीड़ा उठाना — *चुनौती स्वीकार करना*
मैं जिस कार्य का बीड़ा उठा लेता हूँ, उसे अंजाम तक पहुँचाकर ही दम लेता हूँ।

214. बिजली गिरना — *अचानक कष्ट आना*
वह बहुत सज्जन व्यक्ति था। अचानक ही उसके सिर पर यह बिजली आ गिरी।

215. बुढ़ापे की लाठी — *बुढ़ापे का सहारा*
श्रवण कुमार अपने वृद्ध अंधे माता-पिता की बुढ़ापे की लाठी था।

216. भंडा फोड़ना — *भेद खोलना*
तुम लाख छुपाओ परंतु एक न एक दिन मैं तुम्हारा भंडा फोड़कर ही दम लूँगा।

217. भीगी बिल्ली बनना — *भय के कारण दब कर रहना*
अध्यापक के आते ही कक्षा में शोर मचाते विद्यार्थी भीगी बिल्ली बन गए।

218. मन रखना — *कहना मान लेना*
आपने यह रिश्ता स्वीकार करके मेरा मन रख लिया। आपका बहुत उपकार है।

219. मन के लड्डू फोड़ना — *प्रसन्न होना, कल्पना में सुख होना*
मन के लड्डू फोड़ने से काम नहीं बनता। काम बनाने के लिए मेहनत आवश्यक है।

220. माथा ठनकना — *शक होना*
चोर राहुल के साथ डकैत विमल को देखकर मेरा माथा ठनक गया। अवश्य ही कुछ गड़बड़ है।

221. माथे पर बल पड़ना — *तनावग्रस्त होना, क्रोध में आना*
सास को देखते ही बहू के माथे पर बल पड़ गए।

222. मिट्टी का माधो — *मूर्ख*
उससे कुछ नहीं होने वाला। वह तो मिट्टी का माधो है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

223. मुँह की खाना — *पराजित होना*
पृथ्वीराज से मुहम्मद ग़ौरी ने युद्ध में मुँह की खाई।

224. मुँह तोड़ जवाब देना — *बदले में करारी चोट देना*
भारत ने पाकिस्तानी हमले का मुँह तोड़ जवाब दिया।

225. मुँह पर कालिख पोतना — *कलंकित करना*
तीन बच्चों की माँ ने घर से भागकर परिवार के मुँह पर कालिख पोत दी।

226. मुँह में खून लगना — *शोषण की गंदी आदत लगना*
लालाराम एक स्वार्थी व्यापारी है। उसके मुँह तो खून लग चुका है।

227. मुँह में पानी आना — *ललचाना*
बेल से लटकते हरे-हरे अंगूरों को देखकर लोमड़ी के मुँह में पानी आ गया।

228. मुट्ठी गर्म करना — *रिश्वत देना*
आजकल भ्रष्ट लोग कार्यवाही होने पर अफ़सरों की भी मुट्ठी गर्म करके साफ बच जाते हैं।

229. मैदान मारना — *सफलता प्राप्त कर लेना*
भरतीय टीम ने ट्वेंटी-ट्वेंटी श्रृंखला जीतकर मैदान मार लिया।

230. रंगा सियार होना — *ढोंगी होना*
आज कल के संतों के अपने कोई संस्कार नहीं हैं। वे तो रंगे सियार हैं।

231. रंग चढ़ना — *असर होना*
मुख्याध्यापक की डाँट से अध्यापकों पर रंग चढ़ गया। वे अपना कार्य और मेहनत से करने लगे।

232. रंग में भंग पड़ना — *खुशी में बाधा पड़ना*
उसके घर में विवाह था परंतु दादीजी की मृत्यु से रंग में भंग पड़ गया।

233. रफ़ू चक्कर होना — *ग़ायब होना*
पुलिस के आने से पूर्व ही चोर सारे जेवर लेकर रफ़ू चक्कर हो गए।

234. राई का पहाड़ बनाना — *छोटी सी बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना*
मेरी गलती तो मामूली थी। परंतु सहकर्मी ने राई का पहाड़ बना दिया।

235. लकीर का फकीर होना — *पुराने रीति-रिवाजों का दृढ़ता से पालन करना*
पुराने लोग अधिकतर लकीर के फकीर हुआ करते थे। आज की पीढ़ी की सोच सर्वथा अलग है।

236. लकीर पीटना — *रूढ़ियों का अंधे होकर पालन करना*
वह समय की प्रगति के अनुकूल नहीं चलता; हर बात में लकीर पीटता है।

237. लहू की घूँट पीकर रह जाना — *विवशता से अपमान सहना*
युद्धिष्ठिर द्यूत में सर्वस्व हारने के पश्चात् कौरवों के सभी अपमानों पर लहू की घूँट पीकर रह गए।

238. लाल-पीला होना — *क्रुद्ध होना*
मुख्याध्यापक एक अध्यापक की पढ़ाने में लापरवाही देखकर लाल-पीले हो गए।

239. लुटिया डुबोना — *सारा कार्य बिगाड़ देना*
सारा किए-कराए की लुटिया डूब गई। फिर से कार्य करना पड़ेगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

240. **लोहा मानना** — *दूसरे का प्रभाव स्वीकार करना*
दिलीप अत्यंत पढ़ा-लिखा है। हम तो उसका लोहा मानते हैं।

241. **लोहे के चने चबाना** — *बहुत संघर्ष करना*
शिवाजी ने औरंगजेब को लोहे के चने चबवा दिए।

242. **श्रीगणेश करना** — *शुभारंभ करना*
आज मैं अपनी दुकान का श्रीगणेश कर रहा हूँ। इस अवसर पर आप सादर आमंत्रित हैं।

243. **सड़कों की धूल चाटना** — *व्यर्थ भटकना*
कुछ कार्य कर लो। क्यों सड़कों की धूल चाटते फिरते हो?

244. **सठिया जाना** — *बूढ़ा होने पर क्रोधी व मूढ़ हो जाना*
रमेश के परिवार वाले रमेश के दादाजी का बहुत सम्मान करते हैं। परंतु फिर भी दादाजी उन पर क्रोध करते रहते हैं। लगता है दादाजी सठिया गए हैं।

245. **सब्ज़बाग दिखाना** — *लोभ-आकर्षण की बातें करना*
शेयरों में सब्जबाग दिखाकर दलाल ने व्यापारी से पैसा लगवा दिया तथा पैसा डुबवा दिया।

246. **सिर उठाना** — *विद्रोह करना*
औरंगजेब के शासनकाल में बहुत-से राजा-रजवाड़े अपने सिर उठाने लगे थे।

247. **सिर आँखों पर बिठाना** — *बहुत आदर करना*
मेरा मित्र मेरा बहुत आदर सम्मान करता है। जब भी उससे मिलने जाता हूँ, वह मुझे सिर आँखों पर बिठा लेता है।

248. **ओखली में सिर दे देना** — *जान-बूझकर मुसीबत मोल लेना*
तुम्हें पता था कि यह कार्य करना सही नहीं है। परंतु तुमने जानबूझकर ओखली में सिर दिया।

249. **सिर धुनना** — *बहुत पछताना*
जब कार्य व्यर्थ हो गया तो सिर धुनने से क्या लाभ है? पुनः कार्य आरंभ करो।

250. **सिर पर कफ़न बाँधना** — *प्राणों की परवाह न करना*
भारतीय सेना सिर पर कफन बाँधकर सीमाओं की रक्षा करती है।

251. **सिर पर खून सवार होना** — *किसी की जान लेने पर उतारू होना*
जब से सुनील के भाई को रणबीर ने मारा है उसके सिर पर खून सवार है।

252. **सिर पर चढ़ाना** — *अत्यधिक छूट देना*
यह तुम्हारे ही लाड़-प्यार का असर है कि हमारा बेटा हमारे सिर पर चढ़ गया है।

253. **सिर पर भूत सवार होना** — *धुन सवार होना*
मोहन को जब से किसी ने व्यापार करने का सुझाव दिया है तब से उसके सिर ― व्यापार का भूत सवार हो गया है।

254. **सूरज को दीपक दिखाना** — *बहुत प्रसिद्ध व्यक्ति की थोड़ी प्रशंसा करना*
यदि हम महात्मा गाँधी की प्रशंसा में दो शब्द कहें तो यह सूरज को दीपक दिखाने के समान होगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

255. सोने में सुगंध होना — *अच्छी वस्तु का और अधिक अच्छा होना*
बिस्मिल्लाह खान एक अच्छे विख्यात शहनाई-वादक थे। जब से उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार मिला है वे सोने मे सुहागा हो गए हैं।

256. हथेली पर सरसों जमाना — *असंभव कार्य करना*
पाकिस्तान का भारत को खंडित करने का स्वप्न हथेली पर सरसों जमाने के बराबर है।

257. हवा लगना — *असर होना*
तुम्हें जब से अमेरिका की हवा लगी है तब से भारत को बिल्कुल भूल ही गए हो।

258. हवा से बातें करना — *बहुत तेज दौड़ना*
महाराणा प्रताप का घोड़ा चेतक हवा से बातें करता था।

259. हवाई किले बनाना — *ऊँची-ऊँची कल्पनाएँ एवं योजनाएँ बनाना*
शेखचिल्ली एक मूर्ख था जो हवाई किले बनाने के लिए प्रसिद्ध है।

260. हाथ उठाना — *मारने को तैयार होना*
किसी को इतना भी परेशान नहीं करना चाहिए जिससे वह हाथ उठाने पर मजबूर हो जाए।

261. हाथ धोकर पीछे पड़ना — *किसी कार्य के पीछे अंधी लगन होना*
सुमित्रा जिस कार्य को करने की ठान लेती है उसके पीछे हाथ धोकर पड़ जाती है।

262. हाथ पर हाथ रखकर बैठना — *निठल्ले बैठना*
जब से नौकरी छूटी है हाथ पर हाथ रखकर बैठे हो। कुछ कार्य कर लो।

263. हाथ-पाँव फूल जाना — *डर से घबरा जाना*
घर के मालिक को आते देख चोरी में व्यस्त चोरों के हाथ-पाँव फूल गए।

264. हाथ-पाँव मारना — *प्रयत्न करना*
जब व्यक्ति किसी मुश्किल में होता है तो हाथ-पाँव मारकर मुसीबत से बाहर आ ही जाता है।

265. हाथ फैलाना — *सहायता-याचना करना*
मैं जीवन में स्वावलंबी रहना चाहता हूँ। किसी के समक्ष हाथ फैलाने से अच्छा मैं मर जाना पसंद करूँगा।

266. हाथ मलते रह जाना — *पछताते रह जाना*
कल अच्छी कमाई का अवसर था जो तुमने गवाँ दिया। अब हाथ मलते रहो, कुछ हासिल नहीं होने वाला।

267. हाथों के तोते उड़ना — *बुरा समाचार पाकर भौंचक्के रह जाना*
मेरी तरक्की की खबर सुनकर मेरे शत्रु के हाथों के तोते उड़ गए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खंड—य

व्यावहारिक व्याकरण—X

15 अंक

पाठ्यक्रम एवं अंक-वितरण

	अंक
♦ क्रिया-भेद : अकर्मक, सकर्मक	3
♦ अव्यय : समुच्चयबोधक, क्रियाविशेषण और अन्य अविकारी शब्द	3
♦ वाक्य भेद : मिश्र वाक्य	3
♦ वाच्य—कर्तृ, अकर्तृ वाच्य	3
♦ समास, अनेकार्थी शब्द	3
योग	15

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

14

क्रिया भेद : अकर्मक, सकर्मक

क्रिया का अर्थ है—करना। जिस पद से कुछ करने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं। उदाहरण के लिए,

वह तोता है। (स्थिति)

वह भोजन **पकाता है।** (क्रिया का करना)

रमा खाना **बना रही है।** (क्रिया का होना)

क्रिया के प्रकार

रचना की दृष्टि से अथवा कर्म के अनुसार क्रिया के मुख्य रूप से दो भेद हैं— 1. सकर्मक क्रिया, 2. अकर्मक क्रिया। अब हम क्रिया के इन दोनों भेदों के विषय में विस्तार से पढ़ेंगे।

1. सकर्मक क्रिया

जिस क्रिया का फल कर्त्ता को छोड़कर कर्म पर पड़े वह क्रिया सकर्मक क्रिया कहलाती है। जैसे—राधा ने **मिठाई** खाई। इस उदाहरण में 'खाई' क्रिया का प्रभाव 'मिठाई' पर पड़ रहा है। 'मिठाई' कर्म के बिना 'खाई' क्रिया पूर्ण स्पष्ट अर्थ नहीं देती। अत: 'खाई' सकर्मक क्रिया है। कुछ अन्य उदाहरण प्रस्तुत हैं—

1. कश्यप ने **सेब खरीदे।**
2. कृष्ण ने **कंस को मारा।**
3. छात्र **प्रयोग देख** रहे हैं।

कुछ वाक्यों में कर्म की उपस्थिति नहीं होती परंतु कर्म की आवश्यकता बनी रहती है। ऐसी क्रिया भी सकर्मक क्रिया कहलाती है। उदाहरण के लिए—

1. सीता खेलती है।
2. सोम बोल रही है।

उपरोक्त उदाहरण में यह ज्ञात नहीं है कि सीता क्या खेल रही है व सोम क्या बोल रही है—ये आवश्यकताएँ बन चुकी हैं। इसलिए कर्म के उपस्थित न रहते हुए भी ये सकर्मक क्रियाएँ हैं।

सकर्मक क्रियाओं के भेद

कर्म के आधार पर सकर्मक क्रिया के निम्नलिखित दो भेद हैं—(क) एकर्मक; (ख) द्विकर्मक क्रियाएँ; व (ग) अपूर्ण सकर्मक क्रियाएँ।

(क) **एकर्मक क्रियाएँ**—जिस क्रिया का मात्र एक ही कर्म होता है, वह एकर्मक क्रिया कहलाती है। ये क्रियाएँ एक ही कर्म के साथ जुड़कर अपना पूर्ण अर्थ प्रदान करती हैं। उदाहरणार्थ—

छात्र किताब पढ़ते हैं।

लता पत्र लिख रही है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उपरोक्त वाक्यों में 'किताब' और 'पत्र' कर्म है जो क्रिया पर 'क्या' के प्रश्न के उत्तर में निर्जीव संज्ञा के रूप में प्राप्त होते हैं। वाक्य में केवल एक ही कर्म प्रयुक्त होने के कारण इसे एकर्मक कहा जाता है। कुछ अन्य उदाहरण प्रस्तुत हैं—

अनामिका ने <u>अनार</u> खरीदे।
हम <u>ताजमहल</u> देखेंगे।
पत्रकार ने <u>समाचार</u> लिखा।
स्नेहा ने <u>डबलरोटी</u> बनाई।
माता ने <u>भोजन</u> पकाया।
महात्मा गाँधी ने <u>आजादी</u> दिलाई।
वेदव्यास ने <u>महाभारत</u> लिखी।
दर्जी <u>कपडे</u> सिल रहा है।

उपरोक्त सभी वाक्य एक ही कर्म की अपेक्षा रखते हैं। ये कर्म रेखांकित शब्दों में दिए गए हैं। इनके बिना ये वाक्य अधूरे हैं। इसलिए ये सभी एकर्मक क्रिया हैं।

(ख) **द्विकर्मक क्रियाएँ**—जो क्रियाएँ एक की अपेक्षा दो कर्मों के साथ संयुक्त रूप से प्रयोग की जाती हैं व पूर्ण अर्थ प्रदान करती हैं, उन्हें द्विकर्मक क्रियाएँ कहा जाता है। उदाहरणतया—रमेश अपने **भाई को कलम** देता है।

इसमें 'देता है' क्रिया के दो कर्म 'भाई' व 'कलम' हैं। कुछ अन्य उदाहरण प्रस्तुत हैं—

कमलेश ने सुरेश को गणित पढ़ाया। (कर्म—सुरेश, गणित)
विमला ने दुकानदार से चावल खरीदे। (कर्म—दुकानदार, चावल)
अनारो ने डाकिए से पत्र लिखवाया। (कर्म—डाकिया, पत्र)
प्रेम ने कंचन से चित्र बनवाया। (कर्म—कंचन, चित्र)
नौकर ने मालिक को खाना दिया। (कर्म—मालिक, खाना)
पुलिस ने आतंकवादियों की बंदूकें छीनीं। (कर्म—आतंकवादी, बंदूकें)

यह ध्यातव्य है कि द्विकर्मक क्रियाओं का एक कर्म सजीव व दूसरा निर्जीव होता है। इनमें निर्जीव कर्म प्रमुख होता है तथा सजीव गौण।

प्रमुख कर्म व गौण कर्म—मुख्य कर्म प्रायः क्रिया के समीप रहता है तथा अप्राणिवाचक व विभक्तिरहित होता है। इसके विपरीत गौण कर्म प्रायः क्रिया से अपेक्षाकृत दूर रहता है तथा प्राणीवाचक व विभक्तिपूर्ण होता है।

ध्यातव्य है कि कुछ अकर्मक क्रियाओं को प्रेरणार्थक बनाकर सकर्मक बनाया जाता है, तथा सकर्मक क्रियाओं को प्रथम या द्वितीय प्रेरणार्थक बनाकर द्विकर्मक बनाया जाता है। उदाहरणतया—अकर्मक डूबना से सकर्मक डुबवाना और डुबाना। इसका विस्तृत वर्णन हम आगे **अकर्मक से सकर्मक बनाना** व **सकर्मक से प्रेरणार्थक बनाना** में करेंगे।

(ग) **अपूर्ण सकर्मक क्रियाएँ**—ये क्रियाएँ वे होती हैं जिनमें कर्म विद्यमान होते हुए भी किसी पूरक की उपस्थिति न होकर अर्थ अधूरा रहता है। इस प्रकार के वाक्यों में कर्म से संबंधित किसी 'पूरक' की आवश्यकता बनी रहती है। उदाहरणतया—

(i) पूरक रहित वाक्यांश	**(ii) पूरक सहित वाक्यांश**
सुकन्या दीपिका को नहीं समझती।	सुकन्या दीपिका को बहन नहीं समझती।
सर्वेश अशोक को मानता है।	सर्वेश अशोक को भाई मानता है।
सदस्यों ने संजीव को चुना।	सदस्यों ने संजीव को अध्यक्ष चुना।
रश्मि रूपा को बनकर दिखाएगी।	रश्मि रूपा को नर्तकी बनकर दिखाएगी।

उदाहरणों (i) में पूरक रहित क्रियाएँ हैं। ये अपूर्ण सकर्मक क्रियाएँ हैं। इनमें पूरक का अभाव रहता है। उदाहरण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ii) पूरक सहित क्रियाओं के उदाहरण हैं। इनसे स्पष्ट हो जाता है कि अपूर्ण सकर्मक क्रियाओं में पूरक की आवश्यकता बनी रहती है।

प्रेरणार्थक क्रिया—जब कर्ता स्वयं क्रिया न करके एक या दो प्रेरकों की सहायता से क्रिया सम्पन्न कराता है तो उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहा जाता है। उदाहरणार्थ—

माँ लड़के को दवाई पिलवाती है।

माँ ने **नौकर द्वारा** बच्चे को खाना खिलवाया।

2. अकर्मक क्रिया

कर्म रहित क्रिया अकर्मक क्रिया कहलाती है। जिस वाक्य में सीधा फल कर्ता पर पड़े वे क्रियाएँ अकर्मक कहलाती हैं। उदाहरण के लिए—

श्याम खेल रहा है।

रमा हँसती है।

इनमें क्रमशः खेलना और हँसना क्रिया में किसी कर्म की आवश्यकता नहीं है। ये सीधे-सीधे अपने कर्ता-पदों से संबंधित हैं। नाचने और हँसने का आधार क्रमशः मोर और सोहन हैं।

कुछ अन्य अकर्मक क्रियाएँ इस प्रकार हैं—बैठना, रोना, जाना, आना, होना, हँसना, उड़ना, उगना, अकड़ना, लेटना, उठना, जागना, सोना, भागना, दौड़ना, उतरना, गिरना, चढ़ना, तड़पना, टूटना, डूबना, फटना, उबलना, पलना।

अकर्मक क्रियाओं के भेद

अकर्मक क्रियाओं के तीन भेद होते हैं—(क) स्थित्यर्थक/अवस्थाबोधक पूर्ण अकर्मक क्रियाएँ; (ख) गत्यर्थक (पूर्ण) अकर्मक क्रियाएँ; व (ग) अपूर्ण अकर्मक क्रियाएँ।

(क) **स्थित्यर्थक/अवस्थाबोधक पूर्ण अकर्मक क्रियाएँ**—यह क्रिया बिना पूरक अथवा कर्म की उपस्थिति के भी पूर्ण अर्थ देती है तथा स्थिर अवस्था में होती है। उदाहरण के लिए—

भगवान है।

गौरव **रो रहा है।**

चंद्रमा **निकला।**

जीवन **मुस्करा रहा है।**

साधू **बैठा था।**

देवेश **बैठा था।**

मैं ठहरा।

पंकज **अकड़ता है।**

शर्मा जी **गुजर गए।**

भीमा क्रोध से **भभक पड़ा।**

गिलास **टूटा।**

बिल्ली **झपटी।**

बच्चा **रोया।**

ये अकर्मक क्रियाएँ स्थिति, अवस्था, दशा अथवा अनुमति को प्रदर्शित करती हैं।

(ख) **गत्यर्थक (पूर्ण) अकर्मक क्रियाएँ**—ये क्रियाएँ बिना पूरक या कर्म के पूर्ण अर्थ देती हैं तथा इनमें कर्ता चलायमान रहता है। उदाहरणार्थ—

वह प्रसन्नता से **उछल पड़ा।**

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दिनेश मेरठ **जा रहा था।**

वह वृक्ष **बढ़ता गया।**

आतंकी **भागा।**

घोड़ा दौड़ **रहा था।**

यह ज्ञातव्य है कि ये तीनों क्रियाएँ बिना किसी कर्म अथवा पूरक के अपना पूर्ण अर्थ प्रदान कर रही हैं।

(ग) **अपूर्ण अकर्मक क्रिया**—इन क्रियाओं में कर्म की आवश्यकता नहीं होती परंतु पूरक की आवश्यकता अवश्य होती है। उदाहरण के लिए

जीनेंद्र स्वस्थ है।

उपरोक्त उदाहरण में 'स्वस्थ' एक पूरक है। 'है' एक अकर्मक क्रिया है जिसका प्रभाव सीधे कर्ता 'जीनेंद्र' पर पड़ रहा है। इस प्रकार की अन्य अपूर्ण अकर्मक क्रियाएँ हैं—बनना, होना, निकलना आदि। जैसे—

सोहन डॉक्टर **बनेगा।**

वह तो बहुत चतुर **निकला।**

अकर्मक-सकर्मक (उभय) क्रियाएँ

कुछ क्रियाएँ अपनों दोनों अकर्मक व सकर्मक रूपों में प्रयोग होती हैं। इन क्रियाओं को उभय क्रियाएँ भी कहा जाता है। उदाहरण के लिए,

सोहन पुस्तक पढ़ रहा है। (सकर्मक 'पढ़ना')

तुम्हें रोजाना पढ़ना चाहिए। (अकर्मक 'पढ़ना')

छात्र क्रिकेट खेलते हैं। (अकर्मक 'खेलना')

बच्चे रोज खेलते हैं। (सकर्मक 'खेलना')

'हँसना', 'लड़ना' आदि कुछ अकर्मक क्रियाएँ सजातीय कर्म आने पर अपने सकर्मक रूप में भी प्रयुक्त हो जाती हैं। उदाहरण के लिए—

राणा सांगा ने अनेक लड़ाईयाँ लड़ीं।

वह मस्तानी **चाल** चल रही थी।

'खुजलाना' व 'ऐंठना' आदि क्रियाओं के दोनों रूप मिलते हैं। उदाहरण के लिए,

वह मेरा सिर **खुजाता** है। (अकर्मक)

वह अपना सिर **खुजाता** है। (सकर्मक)

पानी में रस्सी **ऐंठती** है। (अकर्मक)

नौकर रस्सी **ऐंठ** रहा है। (सकर्मक)

अकर्मक क्रिया से सकर्मक क्रिया बनाना

कुछ अकर्मक क्रियाओं को प्रेरणार्थक बनाकर **सकर्मक** बनाया जाता है। उदाहरण के लिए, 'चढ़ना' (अकर्मक क्रिया) से 'चढ़ाना' व 'चढ़वाना' सकर्मक क्रियाएँ बनीं। इनके वाक्यों में प्रयोग निम्नलिखित हैं—

मैं **चढ़ा।** (अकर्मक प्रयोग)

मैं गाड़ियों को **चढ़ाता** हूँ। (कर्म—गाड़ियों को)

मैं गाड़ियों को हैल्पर से **चढ़वाता** हूँ। (कर्म—गाड़ियों को)

उपरोक्त वाक्यों में 'चढ़ाना' को प्रेरणार्थक क्रिया कहेंगे। 'चढ़वाना' द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया है जिसमें किसी अन्य की सहायता भी ली गई है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अकर्मक से सकर्मक तथा प्रेरणार्थक बनाना

(i) मूल धातु के अंत में **आ** जोड़ने से प्रथम प्रेरणार्थक और **वा** जोड़ने से द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया का निर्माण होता है।

धातु	प्रथम प्रेरणार्थक (सकर्मक)	द्वितीय प्रेरणार्थक (द्विकर्मक)
लड़ना	लड़ाना	लड़वाना
उठना	उठाना	उठवाना
सुनना	सुनाना	सुनवाना
चलना	चलाना	चलवाना
गिरना	गिराना	गिरवाना
दौड़ना	दौड़ाना	दौड़वाना
हँसना	हँसाना	हँसवाना

(ii) मूल क्रिया के प्रथम व्यंजन का दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाता है।

धातु	प्रथम प्रेरणार्थक (सकर्मक)	द्वितीय प्रेरणार्थक (द्विकर्मक)
भागना	भगाना	भगवाना
जागना	जगाना	जगवाना
डूबना	डुबाना	डुबवाना

(iii) मूल धातु में कुछ परिवर्तन से—

धातु	प्रथम प्रेरणार्थक (सकर्मक)	द्वितीय प्रेरणार्थक (द्विकर्मक)
जाना	भेजना	भिजवाना
टूटना	तोड़ना	तुड़वाना
रोना	रुलाना	रुलवाना

सकर्मक से प्रेरणार्थक बनाना

(i) सकर्मक क्रिया में 'आ' और 'वा' जोड़ने से—

धातु	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
जीना	जिलाना	जिलवाना
पढ़ना	पढ़ाना	पढ़वाना
सुनना	सुनाना	सुनवाना
सोना	सुलाना	सुलवाना

कुछ विशेष प्रकार के अकर्मक से सकर्मक बनाने के नियम—

काटना	कटाना	कटवाना
सीखना	सिखाना	सिखवाना
पीसना	पिसाना	पिसवाना

(ii) सकर्मक क्रिया में प्रथम व्यंजन के 'ओ' का 'उ' हो जाता है। अन्य परिवर्तन (i) के समान ही रहते हैं—

धातु	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
बोलना	बुलाना	बुलवाना
छोड़ना	छुड़ाना	छुड़वाना

(iii) एक ही व्यंजन वाली धातुओं में पहली प्रेरणार्थक क्रिया के लिए दीर्घ स्वर को ह्रस्व करके 'ला' जोड़ते हैं और दूसरी प्रेरणार्थक के लिए 'लवा'—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धातु	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
सीना	सिलाना	सिलवाना
खाना	खिलाना	खिलवाना
धोना	धुलाना	धुलवाना
देना	दिलाना	दिलवाना
पीना	पिलाना	पिलवाना

इन क्रियाओं के अलावा कुछ क्रियाएँ ऐसी भी होती हैं जिनके प्रेरणार्थक रूप बनते ही नहीं हैं। उदाहरण के लिए, रहना, लजाना, पछताना, रूठना, शर्माना, सकना, चाहना, पाना आदि।

अकर्मक, द्विकर्मक व सकर्मक क्रियाओं के वाक्यों में प्रयोग

लड़ना
अकर्मक— मैं लड़ूँगा।
सकर्मक— मैं उन्हें लडाऊँगा।
द्विकर्मक— मैं उसे विनीत से लड़वाऊँगा।

उठना
अकर्मक— मैं उठूँगा।
सकर्मक— मैं उसे उठाऊँगा।
द्विकर्मक— मैं उसे माता से उठवाऊँगा।

सुनना
अकर्मक— मैं गीत सुनूँगा।
सकर्मक— मैं तुम्हें गीत सुनाऊँगा।
द्विकर्मक— मैं उसे रेडियो से गीत सुनवाऊँगा।

भागना
अकर्मक— मित्र भागा।
सकर्मक— मैंने बच्चे को भगा दिया।
द्विकर्मक— मैंने बच्चे को कुत्ते से भगवा दिया।

जागना
अकर्मक— वह जागा।
सकर्मक— उसने बहन को जगाया।
द्विकर्मक— मैंने छोटे भाई को अपनी बहन से जगवाया।

डूबना
अकर्मक— नेवला नहीं डूबा।
सकर्मक— मैंने नेवले को नहीं डुबाया।
द्विकर्मक— मैं नेवले को अपने मित्र से डुबवाऊँगा।

जाना
अकर्मक— मैं विदेश गया।
सकर्मक— मैंने पत्र को विदेश भेजा।
द्विकर्मक— मैंने पत्र को डाक से विदेश भिजवाया।

टूटना
अकर्मक— कप टूट गया।
सकर्मक— मैंने कप तोड़ दिया।
द्विकर्मक— मैं उससे कप तुड़वा दूँगा।

रोना
अकर्मक— विनीत बहुत रोया।
सकर्मक— मैंने विनीत को रुलाया।
द्विकर्मक— मैंने विनीत को प्रमेश के द्वारा रुलवाया।

पढ़ना
अकर्मक— मैंने गुरुग्रंथ साहिब पढ़ा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

	सकर्मक—	मैं भाई को पढ़ाऊँगा।
	द्विकर्मक—	अध्यापक ने हमें पाठ पढ़ाया।
सुनना	अकर्मक—	मैंने सुना।
	सकर्मक—	मीरा कहानी सुनाती है।
	द्विकर्मक—	लता विजय द्वारा भेजा गया टेप सुनवाती है।
सोना	अकर्मक—	सर्वेश सो रहा है।
	सकर्मक—	उस बच्चे को बिस्तर पर सुलाना चाहिए।
	द्विकर्मक—	सर्वेश के माँ को बिस्तर पर सुलवाना है।
काटना	अकर्मक—	राम काटता है।
	सकर्मक—	राम ने आम काटा।
	द्विकर्मक—	मैं राम से सारे आम कटवाना चाहूँगा।
सीखना	अकर्मक—	मैंने सीखा।
	सकर्मक—	कविता सिलाई सीखती है।
	द्विकर्मक—	मैंने कविता को सिलाई सिखवाई थी।

सकर्मक क्रियाओं से द्विकर्मक क्रियाएँ बनाना

पीसना	सकर्मक—	विनीता दाल पीसती है।
	द्विकर्मक—	विनीता ने माता से दाल पिसवाई।
भीगना	सकर्मक—	सोहन बारिश में भीगता है।
	द्विकर्मक—	मैं सोहन को बारिश में भिगवाऊँगा।
बोलना	सकर्मक—	उन्होंने श्लोक बोले।
	द्विकर्मक—	मैंने उनसे श्लोक बुलवाए।
फटना	सकर्मक—	उन्होंने गुब्बारे फोड़े।
	द्विकर्मक—	मैंने उनके गुब्बारे फुड़वाए।
बिकना	सकर्मक—	उसने मकान बेच दिया।
	द्विकर्मक—	मैंने उसका मकान डीलर को बिकवा दिया।
छोड़ना	सकर्मक—	मैंने धूम्रपान छोड़ दिया।
	द्विकर्मक—	मैंने उसका धूम्रपान छुड़वाया।
सीना	सकर्मक—	सुनीता कमीज सिलेगी।
	द्विकर्मक—	मैंने सुनीता से कमीज सिलवाई।
खाना	सकर्मक—	बंदर केला खा रहा है।
	द्विकर्मक—	उसने बंदर को केला खिलवाया।
धोना	सकर्मक—	नौकरानी ने बर्तन धोए।
	द्विकर्मक—	माता ने नौकरानी से बर्तन धुलवाए।
देना	सकर्मक—	कर्ण ने दान दिया।
	द्विकर्मक—	इंद्र ने कर्ण से स्वयं को दान दिलवाया।
पीना	सकर्मक—	विशाल शराब पिएगा।
	द्विकर्मक—	विशाल सबको मदिरा पिलवाएगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रश्न-अभ्यास

1. अकर्मक और सकर्मक क्रिया की परिभाषा दीजिए तथा दोनों में अंतर स्पष्ट कीजिए।
2. बताइए कि निम्नलिखित वाक्यों के क्रिया पद अकर्मक हैं या सकर्मक? उल्लेख कीजिए।
   (क) पुलिस ने चोर को पकड़ लिया।
   (ख) मोहन जाग रहा है।
   (ग) गीता रानी बैठी है।
   (घ) बिमला ने गीत गाया।
   (ङ) बंदर को केले खिलाओ।
   (च) राजू को दवा पिलाओ।
   (छ) वे रात भर जागते हैं।
   (ज) रोगी गाय का दूध पीता है।
   (झ) दिव्या हँसती है।
   (ञ) दिनेश पुस्तक पढ़ रहा है।
   (ट) हम नहाते हैं।

2. निम्नलिखित वाक्यों में क्रिया शब्दों को रेखांकित कीजिए तथा उनके भेद उनके सामने दिए कोष्ठकों में लिखिए—

(क) पुलिस ने चोर को पकड़ लिया। (   )
(ख) बहन ने भाई को राखी भेजी। (   )
(ग) इन दिनों खूब वर्षा हो रही है। (   )
(घ) खिलाड़ी पुरस्कार पाता है। (   )
(ङ) कुछ लोग दूसरों को उपदेश देते हैं। (   )
(च) बच्चों ने हमें एक भजन सुनाया। (   )
(छ) दिनेश पुस्तक पढ़ रहा है। (   )

गत परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्न

निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त क्रियाओं के भेद बताइए—

1. राघवन दिन भर सोता है। *(A.I. CBSE 1995)*
2. मीरा ने मुझे चाय पिलाई। *(A.I. CBSE 1995)*
3. सलमान क्रिकेट खेलता है। *(A.I. CBSE 1995)*
4. मीरा गाना गाती है। *(A.I. CBSE 1995)*
5. मैंने लता को नृत्य सिखाया। *(A.I. CBSE 1995)*
6. कुत्ता सड़क पर खड़ा है। *(A.I. CBSE 1995)*
7. टोनी ने मुझे चाय पिलाई। *(A.I. CBSE 1995)*
8. विजय ने लता को पत्र लिखा। *(A.I. CBSE 1996)*
9. लता विद्यालय में पढ़ती है। *(A.I. CBSE 1996)*
10. ऊँट दौड़ रहा है। *(A.I. CBSE 1996)*
11. माँ बालक को दूध देती है। *(A.I. CBSE 1996)*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

12. बालिका स्कूल जाती है।
13. बालक पत्रिका पढ़ता है। *(A.I. CBSE 1996)*
14. दादी ने कहानी सुनाई। *(A.I. CBSE 1996)*
15. रीता घर आती है। *(A.I. CBSE 1996)*
16. मामा ने मुझे साड़ी दी। *(A.I. CBSE 1996)*
17. शीला काम करती है। *(A.I. CBSE 1997)*
18. सुनीता ने मुझे पत्र लिखा। *(A.I. CBSE 1997)*
19. अपूर्वा सोती है। *(A.I. CBSE 1997)*
20. मोहन जाग रहा है। *(A.I. CBSE 1997)*
21. मैं पत्र लिखता हूँ। *(A.I. CBSE 1997)*
22. पिताजी ने भोजन कराया। *(A.I. CBSE 1997)*
23. दिव्या हँसती है। *(A.I. CBSE 1997)*
24. मोहिनी गीत सुनाती है। *(A.I. CBSE 1997)*
25. नेहरू चाचा ने बच्चों को अच्छी-अच्छी बातें बताईं। *(A.I. CBSE 1997)*
26. बच्चा रोता है। *(A.I. CBSE 1998)*
27. राम ने आम खरीदे। *(A.I. CBSE 1998C)*
28. राकेश ने कुत्ते को दूध पिलाया। *(A.I. CBSE 1998C)*
29. शंकर ने अशोक को पुस्तक दी। *(A.I. CBSE 1998C)*
30. वे सभी काम करना जानते हैं। *(A.I. CBSE 1998C)*
31. सर्वेश सो रहा है। *(A.I. CBSE 1999)*
32. मोहन पानी पी रहा है। *(A.I. CBSE 1999)*
33. मालिक नौकर को वेतन देता है। *(A.I. CBSE 1999)*
34. बादल घिर रहे हैं। *(A.I. CBSE 1999)*
35. माँ लड़के को दूध पिला रही है। *(A.I. CBSE 1999)*
36. वे सभी काम के लिए आगरा गए हैं। *(A.I. CBSE 1999)*
37. धूप में कौन खड़ा है? *(A.I. CBSE 1999)*
38. पुलिस ने चोर को पकड़ लिया। *(A.I. CBSE 2000, CBSE 2000)*
39. खिलाड़ी को बल्ला दे दो। *(A.I. CBSE 2000, CBSE 2000)*
40. गीता रानी बैठी है। *(A.I. CBSE 2000, CBSE 2000)*
41. बिमला ने गीत गाया। *(A.I. CBSE 2000, CBSE 2000)*
42. बंदर को केले खिलाओ। *(A.I. CBSE 2000, CBSE 2000)*
43. खिलौना किसने तोड़ा? *(A.I. CBSE 2000, CBSE 2000)*
44. राजू को दवा पिलाओ। *(A.I. CBSE 2000)*
45. वे रात भर जागते हैं। *(A.I. CBSE 2000)*
46. रोगी गाय का दूध पीता है। *(A.I. CBSE 2001)*
47. आश्रम में गरीबों को भोजन दिया जाता है। *(A.I. CBSE 2001)*
48. उसने केले खरीदे। *(A.I. CBSE 2001)*
49. बहन ने भाई को राखी भेजी। *(A.I. CBSE 2001)*
(A.I. CBSE 2001)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

50. इन दिनों खूब वर्षा हो रही है। (A.I. CBSE 2001)
51. खिलाड़ी पुरस्कार पाता है। (A.I. CBSE 2001)
52. कुछ लोग दूसरों को उपदेश देते हैं। (A.I. CBSE 2001)
53. बच्चों ने हमें एक भजन सुनाया। (A.I. CBSE 2002)
54. दिनेश पुस्तक पढ़ रहा है। (A.I. CBSE 2002)
55. हम नहाते हैं। (A.I. CBSE 2002)
56. मेरी पैंसिल घिस गई है। (A.I. CBSE 2002)
57. हम लोग आम खा रहे हैं। (A.I. CBSE 2004)
58. आज माँ ने पकवान बनाए। (A.I. CBSE 2004)
59. पर्वतारोही शिखर पर पहुँच गए। (A.I. CBSE 2004)
60. मीना ने मुझे चाय पिलाई। (A.I. CBSE 2004)
61. वे कहाँ रहते हैं? (A.I. CBSE 2005)
62. शेखर कार में चलता है। (CBSE 1995)
63. माली ने मुझे आम खिलाए। (CBSE 1995)
64. रीता कहानी सुनती है। (CBSE 1995)
65. कुर्सी पर कौन बैठा है? (CBSE 1995)
66. मामाजी ने मीरा को मिठाई दी। (CBSE 1995)
67. मैं तुम्हारा नाम जानता हूँ। (CBSE 1995)
68. ठूँठ खड़ा है। (CBSE 1998)
69. रमा ने बिटिया को टॉफी दी। (CBSE 1998)
70. माधुरी पुस्तक पढ़ती है। (CBSE 1998)
71. सड़क पर पत्थर पड़ा है। (CBSE 1998)
72. बादल घिर रहे हैं। (CBSE 1998C)
73. रहीम दूध पीता है। (CBSE 1998C)
74. पक्षी उड़ रहे हैं। (CBSE 1998C)
75. हम सिनेमा देखते हैं। (CBSE 1998C)
76. अध्यापक ने बच्चों को हिंदी के प्रश्न समझाए। (CBSE 1998C)
77. बच्चा हँसता है। (CBSE 1998C)
78. शेखर कार चलाता है। (CBSE 1998C)
79. माली ने मुझे आम खिलाए। (CBSE 1998C)
80. मनोज ने कार खरीदी। (CBSE 1999)
81. युवक टहल रहा है। (CBSE 1999)
82. माँ लड़की को खाना देती है। (CBSE 1999)
83. किरायेदार को मकान दिखाओ। (CBSE 1999)
84. सभी छात्र दौड़ रहे हैं। (CBSE 1999)
85. अध्यापक ने हमें पाठ पढ़ाया। (CBSE 1999)
86. लोग रामायण पढ़ते हैं। (CBSE 1999)
87. मोहन को शरबत पिलाओ। (CBSE 2000)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

88. सौम्या ने खिलौना तोड़ दिया। *(CBSE 2000)*
89. वह तेज दौड़ता है। *(CBSE 2001)*
90. ड्राईवर बस चला रहा है। *(CBSE 2001)*
91. सूर्य संसार को प्रकाश देता है। *(CBSE 2001)*
92. रंजना सुबह को टहलती है। *(CBSE 2001)*
93. आनंद ने रवि को किताब दी। *(CBSE 2001)*
94. विद्यार्थी समाचार-पत्र पढ़ता है। *(CBSE 2001)*
95. राजू हमेशा हँसता ही रहता है। *(CBSE 2001)*
96. बच्चे कुत्ते को रोटी खिलाते हैं। *(CBSE 2001)*
97. वह हँसेगा। *(CBSE 2002)*
98. नरेश दौड़ता है। *(CBSE 2002)*
99. दिनेश और मोहन गाँव को गए हैं। *(CBSE 2002)*
100. मालिक नौकर को वेतन देता है। *(CBSE 2002)*
101. बच्चा सोता है। *(CBSE 2002)*
102. वे सभी काम के लिए भोपाल गए हैं। *(CBSE 2002)*
103. मोहन ने आशू को पुस्तक दी। *(CBSE 2002)*
104. पक्षी उड़ते हैं। *(CBSE 2003)*
105. मोहन ने खेत जुतवाया। *(CBSE 2003)*
106. माँ बालक को दूध देती है। *(CBSE 2003)*
107. आशा पुस्तक पढ़ रही है। *(CBSE 2004)*
108. रमेश ने पिताजी को पत्र लिखा। *(CBSE 2004)*
109. वे गीत गाती हैं। *(CBSE 2004)*
110. कानन जग रही है। *(CBSE 2004)*
111. लड़के चलने लगे। *(CBSE 2004)*
112. सरकार अध्यापक को वेतन देती है। *(CBSE 2004)*
113. तुम कहाँ रहते हो? *(CBSE 2005)*
114. हम उसे नहीं जानते। *(CBSE 2005)*
115. शीला टेनिस खेल रही है। *(CBSE 2005)*
116. तुम अभी चले जाओ। *(CBSE 2005)*
117. मैं उससे नहीं बोलता हूँ। *(CBSE 2005)*
118. रोगी को देख लो। *(CBSE 2005)*
119. नेहा घर गई। *(CBSE 2005C)*
120. तुमने क्या देखा? *(CBSE 2005C)*
121. पढ़ाई पूरी हो गई। *(CBSE 2005C)*
122. क्रिकेट में हार गए। *(CBSE 2005C)*
123. बादल गरज रहे हैं? *(CBSE 2005C)*
124. तुम क्या करोगे? *(CBSE 2005C)*
125. वह क्यों पढ़ता है? *(CBSE 2005F)*
126. मैं शहर जा रहा हूँ। *(CBSE 2005F)*

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

15
अव्यय

अव्यय का शब्दिक अर्थ है—जो व्यय न हो। इसका दूसरा नाम अविकारी भी है जिसका अर्थ है—जिसमें विकार या परिवर्तन न आए। अतः ऐसे शब्द जिनके रूप में लिंग, वचन, कारक, पुरुष अथवा काल आदि के कारणवश किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं आता व जो सदैव पूर्ववत रहते हैं, उन्हें अव्यय या अविकारी शब्द कहा जाता है। जैसे—यहाँ, वहाँ, तेज, धीरे, जल्दी, कब, और, इसलिए, तब आदि। कुछ वाक्यों में प्रयोग उदाहरणार्थ प्रस्तुत हैं।

यहाँ मैं कल आया था।

वाह! क्या फिल्म है।

जल्दी चलो, पता नहीं फिल्म **कब** आरंभ हो जाए।

अव्यय के निम्नलिखित पाँच भेद होते हैं—1. क्रिया-विशेषण; 2. समुच्चयबोधक; 3. संबंधबोधक; 4. विस्मयादिबोधक; 5. निपात।

1. क्रियाविशेषण अव्यय

जिस अव्यय से क्रिया की कोई विशेषता जानी जाती है, उसे क्रिया-विशेषण कहते हैं। उदाहरणार्थ:

राधा **वहाँ** जा रही है।

वह **आज** सुबह पढ़ने गया था।

उससे बाजार में **अचानक** भेंट हो गयी।

उपरोक्त वाक्यों में क्रमशः 'वहाँ', 'आज' व 'अचानक' क्रिया शब्द क्रिया की काल तथा रीति से संबंधित विशेषता बताते हैं। क्रिया के विशेषण होने के कारण इन्हें क्रियाविशेषण कहा गया है।

क्रियाविशेषण के भेद

अर्थ के आधार पर क्रियाविशेषण के चार मुख्य भेद हैं—1. कालवाचक; 2. स्थानवाचक; 3. रीतिवाचक; 4. परिमाणवाचक।

1. कालवाचक—जिन क्रिया विशेषणों से क्रिया के होने का समय ज्ञात होता है, उन्हें कालवाचक क्रिया विशेषण कहा जाता है। उदाहरणार्थ—

गीता **अभी** आई है।

वह **कभी-कभी** मेरे घर आती है।

वह **परसों** मुंबई जा रहा है।

कालवाचक क्रियाविशेषणों के भी मुख्य रूप से निम्नलिखित तीन भेद हैं—

(क) समयवाचक/कालबिंदुवाचक—तुरंत, अभी, कल, अब, प्रातः, कल, सायं, तब, जब, पश्चात्, परसों आदि।

(ख) अवधिवाचक—लगातार, आजकल, नित्य, सदैव, दिनभर, रातभर आदि।

(ग) पुनरावृत्तिवाचक/बारंबारतावाचक—कई बार, हर बार, बहुधा, प्रतिदिन, प्रतिवर्ष आदि।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कालवाचक क्रियाविशेषण की पहचान—कालवाचक क्रियाविशेषण की पहचान का एक सर्वोत्तम मार्ग है। क्रिया के साथ 'कब' प्रश्न करके आप इसका उत्तर एक कालवाचक क्रियाविशेषण पाएंगे। उदाहरणतया—

गीता **अभी** आई है।

हमें अपने आपसे पूछना चाहिए—गीता कब आई है? हमें उत्तर प्राप्त होगा 'अभी'। यही कालवाचक क्रियाविशेषण है।

2. स्थानवाचक क्रियाविशेषण—जिन क्रिया विशेषण शब्दों से क्रिया के होने का स्थान ज्ञात होता है, उन्हें स्थानवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं। उदाहरण के लिए—यहाँ, ऊपर, अंदर, बाहर, कहाँ, इधर-उधर आदि।

बंदर **यहाँ** बैठा था।
माता **ऊपर** चली गईं।
तुम **अंदर** कमरे में क्या कर रहे थे?
क्यों **इधर-उधर** भटक रहे हो?

स्थानवाचक क्रिया के दो भेद हैं—

(क) *स्थितिवाचक*—बाहर, यहाँ, वहाँ, अंदर, साथ, नीचे, मध्य, पीछे, पास, अंदर, बाहर, दूर, प्रत्यक्ष आदि।

(ख) *दिशावाचक*—किधर, इधर, आमने-सामने, ऊपर, नीचे, की ओर, जिधर आदि।

स्थानवाचक क्रियाविशेषण की पहचान—कालवाचक क्रियाविशेषण की तरह स्थानवाचक क्रियाविशेषण की पहचान का एक सर्वोत्तम मार्ग है। क्रिया के साथ 'कहाँ' प्रश्न करके आप इसका उत्तर एक स्थानवाचक क्रियाविशेषण पाएंगे। उदाहरणतया—

गीता **वहाँ** आई है।

हमें स्वयं से पूछना चाहिए—गीता कहाँ आई है? हमें उत्तर प्राप्त होगा 'यहाँ'। यही कालवाचक क्रियाविशेषण है।

3. रीतिवाचक क्रियाविशेषण—जिन क्रिया विशेषण शब्दों से क्रिया की विधि या रीति का पता चले, उन्हें रीतिवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं। उदाहरण के लिए—जैसे, ऐसे, वैसे, कैसे, ज्यों, त्यों, धीरे-धीरे, सहसा, ध्यानपूर्वक, उचित, अनुचित, सुखपूर्वक, सच, तेज़, झूठ, अवश्य, नहीं, मत, अतःएव, यथा, न, नहीं, स्वीकार, अनिश्चय, निश्चय, कारण, निषेध आदि।

वह बहुत **धीरे-धीरे** बात करता है।
तुम **झटपट** वहाँ पहुँचो।
मैं अध्यापक की बात **ध्यानपूर्वक** सुनता हूँ।
धूम्रपान **वर्जित** है।

रीतिवाचक क्रिया के निम्नलिखित दस भेद हैं—

(क) *विधिबोधक*—धीरे-धीरे, हाथोंहाथ, शीघ्र, ध्यानपूर्वक, सहसा, परिश्रमपूर्वक, सुखपूर्वक।

(ख) *निश्चयबोधक*—ज़रूर, सचमुच, अवश्य, हाँ, वस्तुतः, निःसंदेह।

(ग) *अनिश्चयबोधक*—कदाचित्, संभवतः, प्रायः, शायद, बहुधा, अक्सर।

(घ) *हेतुबोधक*—क्योंकि, इसलिए, किसलिए, क्यों, अतःएव।

(ङ) *निषेधबोधक*—मत, नहीं, कभी नहीं, न।

(च) *प्रश्नवाचक*—कैसे, क्यों।

(छ) *स्वीकृतिबोधक*—ठीक, जी, बिल्कुल, हाँ, सच।

(ज) *अवधारणाबोधक*—मात्र, ही, तो, भर, भी, तक।

(झ) *आकस्मिकताबोधक*—एकाएक, सहसा, अकस्मात्, अचानक।

(ञ) *आवृत्तिबोधक*—खुल्लमखुल्ला, चुपचाप, फटाफट, झटाझट, झटपट, सरासर।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रीतिवाचक क्रियाविशेषण की पहचान—पूर्व क्रियाविशेषणों की भाँति रीतिवाचक क्रियाविशेषण की पहचान का भी एक मार्ग है। क्रिया के साथ 'कैसे' प्रश्न करके हम इसका उत्तर एक स्थानवाचक क्रियाविशेषण पायेंगे। उदाहरणतया—

गीता **तेज** आई है।

हमें स्वयं से पूछना चाहिए—गीता कैसे आई है? हमें उत्तर प्राप्त होगा 'तेज'। हमें रीतिवाचक क्रियाविशेषण की पहचान हो जाएेगी।

4. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण—जिन क्रियाविशेषणों से क्रिया की अधिकता, न्यूनता आदि परिमाण का बोध हो, उन्हें परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण कहा जाता है। उदाहरण के लिए—बिल्कुल, उतना, जितना, कितना आदि। उदाहरण के लिए—

वह **बिल्कुल** थक गया है।

उतना खाना चाहिए **जितना** पचाया जा सके।

जितना चाहे ले लो।

उतना ही लूँगा **जितना** पहले लिया था।

अन्य प्रचलित परिमाणवाचक क्रियाविशेषण—भारी, अत्यंत, बहुत, बड़ा, थोड़ा, प्रायः, कुछ, लगभग, काफी, ठीक, केवल, बस, कम, इतना, अधिक, उतना, क्रमशः, थोड़ा-थोड़ा आदि।

परिमाणवाचक क्रियाविशेषण की पहचान—क्रिया के साथ 'कितना/कितनी' प्रश्न लगाकर हम उत्तर के रूप में एक परिमाणवाचक क्रियाविशेषण पायेंगे। उदाहरणतया—

गीता **बिल्कुल** थक गई है।

हमें स्वयं से पूछना चाहिए—गीता कितनी थक गई है? हमें उत्तर प्राप्त होगा 'बिल्कुल'। इससे हमें परिमाणवाचक क्रियाविशेषण की पहचान हो जायेगी।

क्रियाविशेषणों की रचना

मूल क्रियाविशेषणों के अतिरिक्त प्रत्यय, समास आदि के योग से भी कुछ क्रियाविशेषणों की रचना की जा सकती है, जो निम्नवत् है—

(क) **मूल क्रियाविशेषण**—जो क्रियाविशेषण किसी दूसरे शब्द के मेल से नहीं बनते 'मूल क्रियाविशेषण' कहे जाते हैं। जैसे—आज, कल, अच्छा, बुरा, अचानक, ठीक, दूर, निकट, ऊपर, नीचे आदि।

(ख) **यौगिक क्रियाविशेषण**—जो क्रिया-विशेषण किसी दूसरे शब्द में प्रत्यय या समास जोड़ने से बनते हैं, 'यौगिक क्रियाविशेषण' कहे जाते हैं। जैसे—मन से, यहाँ तक, वहाँ तक, हाथों हाथ, घर घर, रात-दिन, साँझ-सवेरे, धीरे-धीरे, तेज-तेज, जब-तब, जहाँ-तहाँ, कभी न कभी, कुछ न कुछ, झटपट, धड़ाधड़, प्रतिपल, यथास्थान, संभवतः, वस्तुतः, चुपके-चुपके, खाते-खाते, रातों-रात, कल-परसों, यथावसर, यथासमय आदि।

जो शब्द क्रियाविशेषणों की विशेषता बताते हैं उन्हें भी क्रियाविशेषण कहा जाता है। इन्हें 'क्रियाप्रविशेषण' भी कहा जाता है। उदाहरण के लिए—

यथासमय आना **अच्छी** बात है।

सीता **कितना** मधुर राग गाती है।

उपरोक्त वाक्यों में 'अच्छी' व 'कितना' क्रमशः 'यथासमय' व 'मधुर' शब्द की विशेषता बताते हैं। इसीलिए ये क्रियाप्रविशेषण हैं।

क्रियाविशेषणों में परिवर्तन

अपवाद के तौर पर अविकार होते हुए भी कभी-कभी क्रियाविशेषणों में कुछ परिवर्तन आ जाता है। उदाहरणार्थ—

यह गीत बहुत **अच्छा** गाया है।

सोना **कैसा** दिखता है?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उपरोक्त वाक्यों में 'अच्छा' व 'कैसा' शब्द क्रियविशेषण हैं परंतु इन में विकार आ गया है। परंतु हम इन्हें अपवाद के रूप में स्वीकार कर लेते हैं।

2. समुच्चयबोधक अव्यय

जो अव्यय पद एक शब्द का दूसरे शब्द से, एक वाक्य का दूसरे वाक्य से अथवा एक वाक्यांश का दूसरे वाक्यांश से संबंध जोड़ते हैं, वे समुच्चयबोधक अव्यय या 'योजक' कहलाते हैं। दूसरे शब्दों में ये दो पदों, पदबंधों या वाक्यांशों को परस्पर मिलाते हैं। उदाहरण के लिए—

मैं बाजार गया **और** मैंने फल खरीदे।

मैं दिल्ली जा रहा हूँ, **अतः** आपसे न मिल सकूँगा।

मैंने तुम्हें पढ़ाया **जिससे** तुम उत्तीर्ण हुए।

उपरोक्त वाक्यों में 'और', 'अत:' व 'जिससे' पदों, उपवाक्यों, वाक्यांशों और वाक्यों को परस्पर जोड़ रहे हैं।

समुच्चयबोधक या योजक शब्दों के दो मुख्य भेद हैं—1. समानाधिकरण समुच्चयबोधक; 2. व्यधिकरण समुच्च्यबोधक।

1. समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय—ये वे अव्यय होते हैं जो एक समान शब्दों, वाक्यांशों व वाक्यों को परस्पर मिलाते हैं। उदाहरण के लिए—या, और, किंतु आदि। समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्ययों के चार भेद हैं—

(क) **संयोजक**—जो अव्यय दो शब्दों, वाक्यांशों या समान वर्ग के दो उपवाक्यों में संयोग प्रकट करते हैं, वे संयोजक कहलाते हैं। उदाहरण के लिए—तथा, एवं, और।

राकेश **और** उमेश भाई-भाई हैं।

राम खेलता है **और** श्याम पढ़ता है।

(ख) **विकल्पक/विभाजक**—जो अव्यय पद दो शब्दों, वाक्यांशों या समान वर्ग के दो उपवाक्यों किसी एक का विकल्प प्रकट करते हैं, विकल्पक अथवा विभाजक कहलाते हैं। उदाहरण के लिए—अथवा, या, कि, नहीं तो, न, न-न, चाहे, आदि।

फल राम ने खाया होगा **या** मोहन ने।

उमा **अथवा** रानी में से कोई एक प्रथम आयेगी।

या तो मोहन जायेगा **या** सोहन।

(ग) **विरोधदर्शक**—ये अव्यय पद दो शब्दों, वाक्यांशों या समान वर्ग के दो उपवाक्यों में आपसी विरोध को प्रदर्शित करते हैं। उदाहरण के लिए—किंतु, लेकिन, मगर, बल्कि, पर, परंतु आदि।

राम आया **परंतु** श्याम नहीं आ सका।

रमेश जाएगा, **पर** राजेश यहीं रहेगा।

(घ) **परिणामदर्शक**—जिन अव्ययों से ज्ञात होता है कि अगले वाक्य का अर्थ पिछले वाक्य के अर्थ का परिणाम है, वे परिणामदर्शक कहलाते हैं। उदाहरण के लिए—इसलिए, अतः, अतएव, सो, फलतः, इस कारण आदि।

माँ ने खूब पीटा, **इसलिए** रमेश भाग गया।

उसने बुरे कर्म किए, **फलतः** उसका परिणाम भी बुरा ही निकला।

जो बोता है, **सो** पाता है।

2. व्यधिकरण समुच्चयबोधक—एक मुख्य वाक्य में एक या एक से अधिक आश्रित वाक्य जोड़ने वाले अव्ययों अथवा पदों को व्यधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं। उदाहरण के लिए,

वह बाजार गया **क्योंकि** उसे फल लाने थे।

उपरोक्त उदाहरण में 'वह बाजार गया' आश्रित उपवाक्य 'उसे फल लाने थे' प्रधान वाक्य से जुड़ा हुआ है। इन्हें जोड़ने वाला योजक है—क्योंकि। अतः यह व्यधिकरण समुच्चयबोधक है। व्यधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय के मुख्य चार भेद हैं—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(क) **कारणवाचक**—जो अव्यय कारणबोधक वाक्यों के आरंभ में आते हैं, कारणवाचक कहे जाते हैं। इन अव्यय शब्दों से प्रधान वाक्य व आश्रित उपवाक्यों में कार्य का कारण संबंध ज्ञात होता है। उदाहरण के लिए—क्योंकि, चूँकि, इसलिए, कि, ताकि आदि।

राम ने विभीषण को लंका का राजा बना दिया **क्योंकि** वह सदाचारी था।

वर्षा अच्छी न होने के **कारण** फसल अच्छी नहीं हुई।

(ख) **उद्देश्यवाचक**—इस योजक से आरंभ होने वाला खंड वाक्य प्रायः बाद में आकर पहले आए खंड का उद्देश्य सूचित करता है; जैसे—ताकि, जिससे, इसलिए, कि।

सद्ग्रंथों का अध्ययन करना चाहिए, **ताकि** दूषित वातावरण का मैल धुलता रहे।

मैंने सुबह ही पढ़ाई कर ली थी **ताकि** शाम को खेल सकूँ।

उसे कक्षा में प्रथम आना है **इसलिए** रात-दिन मेहनत करता है।

(ग) **संकेतवाचक**—ये अव्यय दो उपवाक्यों को संकेत से जोड़ते हैं। उदाहरण के लिए—यद्यपि-तथापि, यदि-तो, अगर-तो, चाहे-परंतु, अब-जब आदि।

यदि छात्र स्वयं ही यह स्वीकार कर लेते **तो** उन्हें दंड नहीं दिया जाता।

यद्यपि उनका अपराध महान् है **तथापि** इस बार उन्हें क्षमा करना अच्छा होगा।

जब वे नहीं माने; **तब** मुझसे अवश्य कहिएगा।

(घ) **स्वरूपवाचक**—यह योजक एकल है तथा सदैव उत्तर वाक्य या शब्द के आरंभ में आकर, पूर्ण वाक्य (या शब्द) का स्वरूप स्पष्ट करता है, इसलिए इसे व्याख्यात्मक कह सकते हैं। उदाहरण के लिए—अर्थात्, माना, यानि।

सबका विचार था **कि** राम ही गद्दी पर बैठे।

मैं क्या पागल हूँ **जो** वहाँ जाऊँगा।

कैकेयी का वचन दशरथ को ऐसा लगा, **मानो** उन पर वज्र गिर गया।

3. संबंधबोधक अव्यय

जो अव्यय संज्ञा या सर्वनाम के बाद प्रयुक्त होकर वाक्यगत दूसरे शब्दों से उसका संबंध बताते हैं, उन्हें संबंधबोधक अव्यय कहा जाता है। उदाहरण के लिए—

प्रसन्नता **के मारे** वह फूला नहीं समाया।

बालक आकाश **की ओर** देखता है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'के मारे' व 'की ओर' संज्ञा अथवा सर्वनाम का वाक्य के अन्य शब्दों से संबंध बताते हैं। अतः ये **संबंधबोधक अव्यय** हैं।

संबंधबोधक अव्ययों के प्रकार

1. क्रियाविशेषणात्मक संबंधबोधक अव्यय—कुछ शब्द क्रियाविशेषण और संबंधबोधक, दोनों का कार्य सम्पन्न करते हैं। ऐसे अव्यय शब्दों को क्रियाविशेषणात्मक संबंधबोधक अव्यय शब्द कहा जाता है। उदाहरणार्थ—

नील कमल **से धीरे** चलता है।

जीवन **उनके पीछे** जा रहा है।

यहाँ क्रियाविशेषण 'धीरे' व 'पीछे' क्रमशः 'नील' व 'जीवन' से संबंधित हैं। अतः ये क्रियाविशेषणात्मक संबंधबोधक हैं।

क्रियाविशेषण व संबंधबोधक अव्ययों में अंतर—1. यदि कोई अव्यय शब्द किसी क्रिया की विशेषता प्रकट करते हुए उसी समय अन्य किसी संज्ञा/सर्वनाम से भी संबंधित हो तो 'संबंधवाचक' बनता है अन्यथा 'क्रियाविशेषण' की उत्पत्ति होती है। उदाहरणार्थ—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जीवन किशोर से **मधुर** गीत गाता है।

कुणाल अशोक से **अच्छा** गणितज्ञ है। (संबंधबोधक)

हिमेश ने माता **के समक्ष** झूठ बोला।

2. **अन्य संबंधबोधक**—ये संबंधबोधक तरह-तरह के अर्थ व्यक्त करते हैं। उदाहरणार्थ—

कारणात्मक—के कारण, के द्वारा, के मारे, के हाथ (से)

तुलनात्मक—की अपेक्षा, के समान/सदृश, के जैसे, की तुलना में।

संबंधात्मक—के विषय में, कारणवश।

संप्रदानात्मक—के लिए, के वास्ते, के हेतु, की खातिर, के निमित्त।

व्यापकताबोधक—से लेकर/तक पर्यंत।

अतिरिक्तताबोधक—के बगैर, के अतिरिक्त, के सिवाय।

संगतिबोधक—के साथ, के संग।

अनु/प्रतिकूलताबोधक—के विपरीत, के प्रतिकूल, के अनुकूल, के विरुद्ध, के अनुसार।

विकल्पात्मक—के कारण, के द्वारा, के मारे, के हाथ (से)।

संबंधबोधक अव्यय के प्रयोग

संबंधबोधक अव्यय तीन प्रकार से प्रयोग होते हैं—

1. **विभक्ति सहित**—उदाहरण के लिए

घर **के** सामने

छाया **के** नीचे

2. **विभक्ति रहित**—उदाहरण के लिए

आजन्म

संपूर्ण जीवन

जीवनभर

3. **दोनों प्रकार से**—उदाहरणार्थ

कम्प्यूटर **के** माध्यम से

कम्प्यूटर **द्वारा**

4. विस्मयादिबोधक अव्यय

ऐसे अविकारी शब्द विस्मयादिबोधक कहलाते हैं जो हर्ष, शोक, आश्चर्य, प्रशंसा, घृणा आदि भावों को प्रकट करते हैं। जैसे—

वाह! कितना मनोरम चित्रण!

खबरदार! हिलना नहीं वरना गोली मार दूँगा!

इनमें 'अहा' और 'खबरदार' विस्मयादिबोधक शब्द हैं।

विस्मयादिबोधक अव्ययों के भेद

हर्षसूचक	:	अहा!, आहा!, शाबाश!, बहुत खूब! आदि
शोकसूचक	:	अहा!, हाय!, ओह!, उफ!, अफसोस, राम-राम! आदि
भयसूचक	:	बाप रे बाप!, अरे रे! आदि
आश्चर्यसूचक	:	क्या?, ऐं!, हैं! आदि
तिरस्कारसूचक	:	छि:!, हट!, दुर्!, हट, धिक्! आदि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्वीकारसूचक : हाँ!, जी! जी हाँ, हाँ जी!, बहुत अच्छा!, ठीक! आदि
अभिवादनसूचक : नमस्ते!, नमस्कार!, प्रणाम!, सलाम, बधाई! आदि
चेतावनीसूचक : होशियार!, खबरदार!, सावधान! आदि
अनुमोदनसूचक : वाह!, ठीक!, शाबाश!, अच्छा!, भला! आदि।
आदरसूचक : ऐ!, ओ!, अजी!, हे राम! हे ईश्वर! आदि।
अनादरसूचक : रे!, अरे!, अबे! आदि।
प्रेमसूचक : अयि!, अये!, अरे!, आदि।
कृतज्ञतासूचक : धन्यवाद!, जिंदाबाद!, शुक्रिया!, आदि।

कभी-कभी संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम, क्रिया और वाक्यांश तक **विस्मयादिबोधक** का कार्य करते हैं—

संज्ञा राम-राम!, बाप रे!
विशेषण सुंदर, बहुत अच्छे!
सर्वनाम क्या!, आप!, कौन!
क्रिया चुप! आ गए!

5. निपात अव्यय

जो अव्यय या शब्द किसी निश्चित शब्द, शब्द-समूह अथवा पूरे वाक्य को अन्य भावार्थ प्रदान करने हेतु प्रयोग होता है, उसे निपात कहते हैं। कुछ महत्त्वपूर्ण निपात निम्नलिखित हैं—ही, भी, तो, तक, मात्र, केवल, भर। इनके वाक्यों में प्रयोग निम्नलिखित हैं—

यह तो विमल **ही** है।
मैं शिमला **ही** जा रहा हूँ।
मैं थोड़ी कॉफी और **भी** लूँगा।
मुझे बस **भी** पकड़नी है।
राहुल आया **तक** नहीं था।
कम से कम संदेश **तक** तो दे देते।
चीनी का मूल्य **मात्र** 10 रुपये प्रति किलोग्राम है।
मैं धारक को 10 रुपये **मात्र** अदा करने का वचन देता हूँ।
मुट्ठी **भर** लोगों ने नाक में दम कर रखा है।

प्रश्न-अभ्यास

1. विकारी व अविकारी शब्दों में उदाहरण सहित अंतर स्पष्ट कीजिए।
2. अव्यय की परिभाषा दीजिए।
3. क्रिया-विशेषण के कितने भेद हैं? सोदाहरण बताइए।
4. परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण व परिमाणवाचक विशेषण में अंतर स्पष्ट कीजिए।
5. निम्नलिखित वाक्यों में से क्रिया-विशेषण छाँटिए तथा उनके भेदों का उल्लेख कीजिए—
   (क) गाड़ी बड़ी तेज चलती है।
   (ख) वायु मंद-मंद बहती है।
   (ग) कोयल मधुर गाती है।
   (घ) नदी धीरे बहती है।
   (ङ) रमेश कल मुंबई जाएगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

6. क्रियाविशेषण छाँटकर उनका प्रकार बताइए—
   (क) धन की सर्वत्र विजय होती है।
   (ख) मोहन तेजी से दौड़ा।
   (ग) मैं ध्यानपूर्वक सुन रहा हूँ।
7. परिणामवाचक क्रिया-विशेषण की परिभाषा देते हुए दो उदाहरण दीजिए।
8. कालवाचक क्रिया-विशेषण की परिभाषा देते हुए दो उदाहरण दीजिए।
9. निम्नलिखित क्रिया-विशेषणों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए—
   (क) लगातार, प्रतिदिन।
   (ख) इधर-उधर, हाथों-हाथ।
   (ग) विनयपूर्वक, सामने।
10. चार ऐसे शब्द लिखिए जो विशेषण व क्रिया-विशेषण दोनों रूपों में प्रयोग किए जा सकते हैं। उनसे वाक्य बनाकर विशेषण व क्रिया-विशेषण में अंतर बताइए।
11. रिक्त स्थानों की अव्यय से पूर्ति कीजिए—
    (क) तुम .... उठो।
    (ख) पिता .... पुत्र घूमने जा रहे हैं।
    (ग) हमें अपनी सभ्यता .... संस्कृति पर गर्व है।
    (घ) तुम .... बाजार जाओ व दवा लेकर आओ।
    (ङ) पैट्रोल के .... गाड़ी नहीं चल सकती।
    (च) .... बोलो, कोई सुन लेगा।
    (छ) वह .... नहीं पढ़ता।
    (ज) आप कूड़ा .... फेंकते हैं?
    (झ) .... मैं एक पुस्तक लिख रहा हूँ।
    (ञ) मैं उसके विचार से .... सहमत नहीं हूँ।
    (त) मैं .... वहीं था।
    (थ) स्कूल मेरे घर .... है।
    (द) बालक चाँद की .... देख रहा है।
    (ध) धन .... कोई नहीं पूछता।
    (न) ....! क्या छक्का मारा है।
    (प) हरीश .... सत्य बोलता है।
    (फ) जो .... खाते हैं, वे स्वस्थ नहीं रहते।
    (ब) .... अब मैं क्या करूँ?
    (भ) खूब मन लगाकर पढ़ो .... परीक्षा में प्रथम आओ।
    (म) तुम्हें .... काम न करने की आदत पड़ गई है।
12. प्रकट होने वाले भावों के आधार पर विस्मयादिबोधक अव्यय के कितने भेद किए जा सकते हैं? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
13. विस्मयादिबोधक अव्ययों के प्रयोग से हर्ष, घृणा, शोक व आश्चर्य व्यक्त करने वाला एक-एक वाक्य बनाइए।
14. संबंधबोधक अव्यय को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
15. विस्मयादिबोधक अव्यय किसे कहते हैं? उदाहरण सहित बताइए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

16. समुच्चयबोधक अव्यय किसे कहते हैं? प्रयोग की दृष्टि से समुच्चयबोधक के भेदों का परिचय उदाहरण सहित दीजिए।
17. निपात किसे कहते हैं? सोदाहरण बताइए।
18. निम्नलिखित वाक्यों में उचित विस्मयादिबोधक लगाइए—
    (क) .... तुम यहाँ क्यों आए?
    (ख) .... कितनी गंदी सड़क है।
    (ग) .... तुमने बहुत अच्छा कार्य किया है।
    (घ) .... तो यह तुम्हारी हरकत है।
19. निम्नलिखित वाक्यों में उचित संबंधबोधक अव्यय भरिए—
    (क) घर के .... कोई है।
    (ख) उनके .... कुछ व्यक्ति थे।
    (ग) मेरे घर .... स्कूल है।
    (घ) खाने से .... हाथ धो लो।
20. निम्नलिखित वाक्यों में उचित समुच्चयबोधक अव्यय भरिए—
    (क) उसने चोरी की थी, ... उसे नौकरी से निकाल दिया गया।
    (ख) राम .... लक्ष्मण वन को गए।
    (ग) नहा-धो लो .... खाना खाओ।
    (घ) खूब मेहनत करो, ... सफलता पा सकोगे।
21. उचित अव्यय से पूर्ति कीजिए।
    (क) मैं उसके विचार से .... सहमत नहीं हूँ।
    (ख) अच्छे चरित्र .... जीवन निरर्थक है।
    (ग) .... मैं एक पुस्तक लिख रहा हूँ।
    (घ) उसकी हालत .... खराब है।
    (ङ) हमें अपनी सभ्यता .... संस्कृति पर गर्व है।
    (च) बालक चाँद की .... देख रहा है।
    (छ) रमेश अब .... पढ़ रहा है।
    (ज) आप कूड़ा .... फेंकते हैं?
22. निम्नलिखित स्थानों की पूर्ति कोष्ठकों में दिए निर्देशानुसार कीजिए—
    (क) आप कूड़ा .... फेंकते हैं। (अव्यय से)
    (ख) वह .... आलोचना ही करता रहता है। (अव्यय से)
    (ग) .... क्या छक्का मारा है। (अव्यय से)
    (घ) अच्छे चरित्र .... जीवन निरर्थक है। (संबंधबोधक अव्यय से)
    (ङ) धन को .... कोई नहीं पूछता। (अव्यय से)
    (च) राजेश अब .... पढ़ रहा है। (अव्यय से)
    (छ) वह मेरी बात से .... संतुष्ट नहीं हुआ। (अव्यय से)
    (ज) वह .... सत्य बोलता है। (अव्यय से)
    (झ) बालक चंद्रमा की .... देख रहा है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ञ) घर के .... मैदान है। (संबंधबोधक अव्यय से)
(त) रमेश कल .... आऐगा। (अव्यय से)
(थ) जहाँ धुआँ हो .... आग होगी। (अव्यय से)
(द) मैं उसकी बात से .... सहमत नहीं हूँ। (अव्यय से)
(ध) पैट्रोल के .... कार नहीं चल सकती। (अव्यय से)
(न) उसकी हालत .... खराब है। (अव्यय से)
(प) हमें अपनी सभ्यता .... संस्कृति पर गर्व है। (अव्यय से)
(फ) वह स्थान .... है। (अव्यय से)
(ब) वह बहुत देर .... रोता रहा। (अव्यय से)

23. निम्नलिखित में निर्देशानुसार कार्य कीजिए—
(क) वह धीरे-धीरे खा रहा था। (क्रिया विशेषण)
(ख) सुरेश अचानक वहाँ आ गया। (एक अव्यय छाँटकर लिखिए)
(ख) बिना परिश्रम किए लक्ष्य प्राप्त कर पाना असंभव है। (एक अव्यय छाँटकर लिखिए)
(ग) मैं उसे भली-भाँति जानता हूँ। (एक अव्यय छाँटकर लिखिए)
(घ) मैंने सारा काम अभी किया है। (एक अव्यय छाँटकर लिखिए)

गत परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्न

1. कालवाचक क्रियाविशेषण की परिभाषा देते हुए उदाहरण दीजिए। *(A.I. CBSE 1991)*
2. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण की परिभाषा देते हुए दो उदाहरण दीजिए। *(CBSE 1991)*
3. स्थानवाचक क्रियाविशेषण की परिभाषा देते हुए दो उदाहरण दीजिए। *(CBSE 1991F)*
4. परिमाणवाचक और स्थानवाचक क्रियाविशेषण के दो-दो उदाहरण दीजिए। *(A.I. CBSE 1992C)*
5. रीतिवाचक और स्थानवाचक क्रियाविशेषण के दो-दो उदाहरण दीजिए। *(CBSE 1992C F)*
6. रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित अव्यय से कीजिए—

(क) मैं .... वहीं था। *(A.I. CBSE 1992)*
(ख) .... बोलो कोई सुन लेगा। *(CBSE 1992)*
(ग) पिता .... पुत्र घूमने जा रहे हैं। *(CBSE 1992)*
(घ) आज धन .... कोई नहीं पूछता। *(CBSE 1992, 93, 99, 2001)*
(ङ) तुम .... उठो। *(CBSE 1993)*
(च) .... तेरे भाग्य में यही लिखा था। *(CBSE 1993F)*
(छ) खूब मन लगाकर पढ़ो .... परीक्षा में प्रथम आओ। *(CBSE 1994)*
(ज) अनुराग अब .... स्वस्थ है। *(CBSE 1998)*
(झ) मैं उसके विचार से .... सहमत नहीं हूँ। *(CBSE 1998)*
(ञ) अच्छे चरित्र .... जीवन निरर्थक है। *(A.I. CBSE 1997, 1999)*
(ट) .... मैं एक पुस्तक लिख रहा हूँ। *(A.I. CBSE 1997)*
(ठ) उसकी हालत .... खराब है। *(CBSE 2000)*
(ड) हमें अपनी सभ्यता .... संस्कृति पर गर्व है। *(A.I. CBSE 2001)*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ढ) बालक चाँद की .... देख रहा है। (A.I. CBSE 2001)
(ण) रमेश अब .... पढ़ रहा है। (CBSE 2001)
(त) आप कूड़ा .... फेंकते हैं? (CBSE 2001)
(थ) पैट्रोल के .... कार नहीं चल सकती। (CBSE 2001)
(द) वह स्थान .... है। (CBSE 2002)
(ध) वह .... सच बोलता है। (CBSE 2002)
(न) वह .... बहुत देर रोता रहा। (A.I. CBSE 2002)
(प) घर के .... मैदान है। (A.I. CBSE 2002)
(फ) रमेश कल .... आयेगा। (CBSE 2002)
(ब) परीक्षा भवन में .... झाँकना मना है। (CBSE 2005)

7. एक अव्यय छाँटकर लिखिए—
(क) बिना परिश्रम किए लक्ष्य प्राप्त कर पाना कठिन है। (CBSE 2003)
(ख) वह धीरे-धीरे बोल रहा था। (A.I. CBSE 2003)
(ग) मैं उसे भली-भाँति जानता हूँ। (A.I. CBSE 2004)
(घ) सुरेश अचानक वहाँ आ गया। (A.I. CBSE 2004)
(ङ) मैंने सारा काम अभी किया है। (CBSE 2004)
(च) आशुतोष को मैंने नहीं देखा। (CBSE 2004F)
(छ) मैं लोगों से प्रेमपूर्वक मिला। (CBSE 2004F)
(ज) वे दोनों साथ-साथ घर गए। (CBSE 2004F)
(झ) यहाँ स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था है। (CBSE 2006)
(ञ) वे दोनों साथ-साथ घर गए। (CBSE 2004F)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

16

वाक्य भेद

1. मिश्रवाक्य

जिन वाक्यों की रचना एक से अधिक ऐसे उपवाक्यों से हुई हो, जिनमें एक उपवाक्य तो प्रधान हो और अन्य गौण हों, उन्हें **मिश्र वाक्य** कहते हैं। उदाहरण के लिए,

हिरण ही एक ऐसा वन्य पशु है, *जो कुलाँचें भरता है।*

यही वह भारत देश है, *जिसे कभी सोने की चिड़िया कहा जाता था।*

ऊपरलिखित उदाहरणों में टेढ़े मेढ़े छपे अंश गौण वाक्य हैं और दूसरे अंश प्रधान वाक्य। अतः ये सभी मिश्र वाक्य के उदाहरण हैं। इस प्रकार के मिश्र वाक्यों में प्रायः 'कि', 'जिसे-उसे', 'वही-जिसे', 'ऐसा-जो', 'यदि-तो' जैसे व्यधिकरण योजक होते हैं।

उपवाक्य

प्रधान उपवाक्य व आश्रित वाक्यों की पहचान—1. प्रधान उपवाक्य में मुख्य क्रिया होती है।

2. आश्रित उपवाक्यों का प्रारंभ प्रायः 'कि', 'जिसे-उसे', 'वही-जिसे', 'ऐसा-जो', 'यदि-तो' जैसे व्यधिकरण योजकों से होता है।

3. मिश्र वाक्य का एक सरल वाक्य में रूपांतरण करने पर जो क्रिया पूर्ववत् विद्यमान रहेगी, वही उपवाक्य प्रधान उपवाक्य होगा। रूपांतरित होने वाली क्रिया वाला उपवाक्य आश्रित उपवाक्य होगा। उदाहरणतया—

मोहन परिश्रम करता तो अवश्य सफल होता।

इस वाक्य का सरल वाक्य इस प्रकार बनेगा—

मोहन परिश्रम करने पर अवश्य ही सफल होता।

उपरोक्त वाक्यांश में 'परिश्रम करना' क्रिया रूपांतरित हो गई है। अतः यह आश्रित उपवाक्य है। दूसरी ओर, 'सफल होता' क्रिया ज्यों-की-त्यों विद्यमान रही। अतः यह प्रधान उपवाक्य है।

उपवाक्यों के प्रकार

मिश्र वाक्य में प्रयुक्त होने वाले गौण उपवाक्य तीन प्रकार के होते हैं—(क) संज्ञा उपवाक्य; (ख) विशेषण उपवाक्य; (ग) क्रियाविशेषण उपवाक्य।

(क) संज्ञा उपवाक्य—वाक्य में संज्ञा पदबंध के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले वाक्य संज्ञा उपवाक्य कहलाते हैं। इनका उपयोग प्रधान उपवाक्य के उद्देश्य, कर्म अथवा पूरक के बदले होता है। उदाहरणार्थ—

राम ने कहा कि *वह कल मुंबई जायेगा।*

यहाँ 'वह कल मुंबई जायेगा' उपवाक्य 'राम ने कहा' के कर्म के रूप में प्रयोग किया गया है। इसलिए यह संज्ञा उपवाक्य है। अन्य उदाहरण प्रस्तुत हैं—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गुरुजी ने कहा कि *पृथ्वी गोल है।*

छात्र जानते हैं कि *परिश्रम करना आसान कार्य नहीं है।*

रामू कहता है कि *वह कभी झूठ नहीं बोलता।*

माता चाहती थी कि *बेटा अध्यापक बने।*

ध्यान देने योग्य बात यह है कि प्रायः सभी संज्ञा उपवाक्य 'कि' से प्रारंभ होते हैं।

(ख) विशेषण उपवाक्य—जब आश्रित उपवाक्य प्रधान उपवाक्य की किसी संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता दर्शाते हैं तो वे विशेषण उपवाक्य कहलाते हैं। उदाहरणार्थ—

यह वही विद्यार्थी है, *जो कक्षा में प्रथम आया था।*

उस व्यक्ति के पास तुम क्यों जाओगे *जिसे तुम जानते तक नहीं।*

उपरोक्त वाक्यों में 'जो कक्षा में प्रथम आया था' व 'जिसे तुम जानते तक नहीं' क्रमशः विद्यार्थी (संज्ञा) तथा उस (सर्वनाम) की विशेषता बता रहे हैं। कुछ अन्य उदाहरण प्रस्तुत हैं—

जिसने भी यह गलत कार्य किया है, उसे अवश्य ही दंड मिलेगा।

जिसे इस योजना से परेशानी हो, वह जा सकता है।

जैसी पुस्तक तुम अपने लिए लाए हो *वैसी मेरी भी ले आओ।*

मैंने *जिसके लिए यह कार्य किया था,* उसे तो पता तक नहीं।

ध्यान देने योग्य बात यह है कि प्रायः विशेषण उपवाक्य संबंधवाचक सर्वनाम जो (जिसने, जिसे, जिनको, जिनके), सो, वैसा, उतना आदि से प्रारंभ होते हैं।

(ग) क्रिया-विशेषण उपवाक्य—जो आश्रित उपवाक्य प्रधान वाक्य की क्रिया की विशेषता बताते हैं, क्रिया-विशेषण उपवाक्य कहलाते हैं। उदाहरणार्थ—

जब तुम मेरे घर आए, तब मैं घर पर नहीं था।

इस वाक्य में 'मैं घर पर नहीं था' मुख्य उपवाक्य है तथा 'जब तुम मेरे घर आए' क्रिया विशेषण उपवाक्य है। क्रिया विशेषण उपवाक्यों में निम्नलिखित पाँच भेद होते हैं—

(i) **कालवाचक उपवाक्य**—ये उपवाक्य प्रायः जब तक, जब कभी, ज्यों ही, जब-जब आदि से आरंभ होता है। जैसे—

ज्यों ही मैं बाहर निकला त्योंही बरसात आरंभ हो गई।

जब तक तुम आओगे तब तक मैं निकल चुका होऊँगा।

जब आठ बजे थे तो मैं व्यापारिक मामले में व्यस्त थी।

मैं जब-जब तुमसे मिलता हूँ, मुझे अपने भाई की याद आ जाती है।

(ii) **स्थानवाचक उपवाक्य**—ये उपवाक्य प्रायः जहाँ, जिधर आदि शब्दों से आरंभ होते हैं। उदाहरणार्थ—

जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि।

जहाँ तुम जा रहे हो, वहीं मैं जा रहा हूँ।

तुम जिधर जा रहे हो, वह रास्ता खतरनाक है।

तू जहाँ-जहाँ चलेगा, मेरा साया साथ होगा।

(iii) **रीतिवाचक उपवाक्य**—ये उपवाक्य प्रायः मानो, जैसा, जिस प्रकार आदि शब्दों से प्रारंभ होते हैं। उदाहरणार्थ—

जैसा बोओगे, वैसा काटोगे।

जैसा तुमने चाहा, उसने वैसा ही किया।

तुम्हारी जुबान ऐसी है *मानो जहर बुझे तीर।*

सचिन उसी प्रकार खेलता है, *जिस प्रकार उसका कोच उसे बताता है।*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(iv) **परिमाणवाचक उपवाक्य**—ये उपवाक्य प्राय: जहाँ तक, जितना, जैसे-जैसे आदि शब्दों से प्रारंभ होते हैं। उदाहरणार्थ—

जितना परिश्रम करोगे, उतना ही फल प्राप्त होगा।

जैसे-जैसे आय बढ़ती गई, वैसे-वैसे खर्चों में भी बढ़ोतरी हुई।

आप जितना परिश्रम करोगे, उतना ही अच्छा सुफल पाओगे।

जैसे-जैसे ग्लोबल वार्मिंग बढ़ेगी, वैसे-वैसे गर्मी बढ़ती जायेगी।

(v) **हेतुसूचक/कार्यकारणवाची उपवाक्य**—ये उपवाक्य प्राय: क्योंकि, यदि, ताकि, यद्यपि आदि से आरंभ होते हैं। उदाहरणार्थ—

यदि तुम आते तो मैं भी अवश्य आता।

यदि वह थोड़ी मेहनत और करता तो कक्षा में प्रथम आता।

2. वाक्य-विश्लेषण

किसी वाक्य के अंगों का यथासंभव पृथक करके उनके आपसी संबंधों का विश्लेषण करना वाक्य-विश्लेषण कहलाता है। वाक्य विश्लेषण को वाक्य विग्रह भी कहा जाता है। उदाहरण के लिए,

कित्तौड़ की रानी चेनम्मा एक वीर नारी थी।

इस वाक्य के सभी अंगों का विश्लेषण निम्न प्रकार होगा—

कित्तौड़ की रानी; एक वीर—विशेषण विस्तार

चेनम्मा—कर्ता

नारी—कर्म

थी—क्रिया

इस प्रकार सभी वाक्यों का विश्लेषण किया जा सकता है जो निम्न प्रकार के होते हैं—1. साधारण वाक्य विश्लेषण; व 2. संयुक्त वाक्य विश्लेषण।

1. साधारण वाक्य विश्लेषण

साधारण वाक्य विश्लेषण करते समय वाक्य को सर्वप्रथम उद्देश्य व विधेय में बाँट लेना चाहिए। **उद्देश्य** वाक्य का वह अंग है, जिसके विषय में कुछ कहा जाता है। उद्देश्य अथवा कर्ता के विषय में कुछ कहा जाता है, उसे विधेय कहते हैं। उद्देश्य व विधेय के अंतर्गत निम्नलिखित पद आते हैं :

उद्देश्य
1. कर्ता (मुख्य कर्ता पद)
2. कर्ता-विस्तार (कर्ता का विशेषण या विशेषण-पदबंध)

विधेय
1. कर्म
2. कर्म का विस्तार (विशेषण पद/पदबंध)
3. क्रिया पद/पदबंध
4. क्रिया विशेषण पद/पदबंध
5. पूरक पद/पदबंध
6. अन्य कारकीय पद/पदबंध

इन्हीं के आधार पर साधारण वाक्यों का विश्लेषण करना अपेक्षित होता है। नीचे कुछ वाक्य दिए जा रहे हैं और उनका विश्लेषण एक तालिका में किया जा रहा है—

1. परोपकारी व्यक्ति अन्यों के हित के लिए अत्यधिक सोचते हैं।
2. हमारे स्कूल की छात्राओं ने विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3. महाराणा प्रताप ने अपने बलिदान और असीम राष्ट्रभक्ति से सब संभव कर लिया।
4. आकर्षक रूप-रंग वाली तितलियाँ अनायास चित्त को मोह लेते हैं।

उपर्युक्त वाक्यों का विश्लेषण—

उद्देश्य		विधेय					
कर्ता	*कर्ता का विस्तार*	*कर्म*	*कर्म का विस्तार*	*क्रिया*	*क्रिया का विस्तार*	*पूरक*	*पूरक का विस्तार*
1. व्यक्ति	परोपकारी	—	—	सोचते हैं।	अन्यों के हित के लिए	—	अत्यधिक
2. छात्राओं ने	हमारे स्कूल की	कार्यक्रम	सांस्कृतिक	पेश किए	—	—	विभिन्न
3. महाराणा प्रताप ने	—	बात को	असंभव	बना दिया	संभव	—	अपने बलिदान और असीम राष्ट्रभक्ति से सब संभव कर लिया।
4. तितलियाँ	आकर्षक रूप रंग वाली	चित्त	को	मोह लेते हैं	—	—	अनायास

2. मिश्र वाक्य विश्लेषण

संयुक्त वाक्य में एक प्रधान वाक्य व एक आश्रित वाक्य वाक्य योजक के द्वारा जुड़े होते हैं। इसलिए सर्वप्रथम दोनों वाक्यों को योजकों से अलग करके साधारण वाक्य विश्लेषण की भाँति उनका विश्लेषण किया जाता है। संयुक्त अथवा मिश्र वाक्यों में योजकों द्वारा जुड़े दोनों साधारण वाक्य एक-दूसरे पर निर्भर नहीं होते। मिश्र वाक्य में प्रयुक्त आश्रित उपवाक्य तीन प्रकार के होते हैं—(क) संज्ञा उपवाक्य; (ख) विशेषण उपवाक्य; (ग) क्रियाविशेषण उपवाक्य।

वाक्य विश्लेषण के समय उपरोक्त तीनों का उल्लेख करना आवश्यक होता है। एक उदाहरण प्रस्तुत है—

जो लोग परिश्रम करते हैं, वे ही सफल होते हैं।

प्रधान उपवाक्य—वे ही सफल होते हैं।
विशेषण उपवाक्य—जो लोग परिश्रम करते हैं।

1. आपका यह समझना कि मैं कंजूस हूँ, भ्रांतिपूर्ण है।
   प्रधान उपवाक्य—आपका यह समझना भ्रांतिपूर्ण है।
   संज्ञा उपवाक्य—मैं कंजूस हूँ।
2. राम ने कहा कि मैं वहाँ नहीं जाऊँगा।
   प्रधान उपवाक्य—राम ने कहा।
   संज्ञा उपवाक्य—मैं वहाँ नहीं जाऊँगा।
3. महाभारत का युद्ध नहीं होता यदि दुर्योधन ने पांडवों को पाँच गाँव दे दिए होते।
   प्रधान उपवाक्य—महाभारत का युद्ध नहीं होता।
   क्रिया-विशेषण उपवाक्य—यदि दुर्योधन ने पांडवों को पाँच गाँव दे दिए होते।
4. वह इतना चिल्लाया कि उसका गला ही बैठ गया
   प्रधान उपवाक्य—उसका गला ही बैठ गया।
   विशेषण उपवाक्य—वह इतना चिल्लाया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उपरोक्त वाक्यों का तालिकानुसार निम्न प्रकार परिवर्तन किया जा सकता है—

	उपवाक्य	उपवाक्य प्रकार	संबंध	योजक शब्द	पूरे वाक्य का प्रकार
1. (क)	आपका यह समझना भ्रांतिपूर्ण है।	प्रधान उपवाक्य (आश्रित उपवाक्य)	समझना	—	
(ख)	मैं कंजूस हूँ।	संज्ञा उपवाक्य	क्रिया का अर्थ	कि	मिश्र वाक्य
2. (क)	राम ने कहा।	प्रधान उपवाक्य	कहा		
(ख)	मैं वहाँ नहीं जाऊँगा।	संज्ञा उपवाक्य।	क्रिया का कर्म	कि	मिश्र वाक्य
3. (क)	महाभारत का युद्ध नहीं होता	प्रधान उपवाक्य (आश्रित उपवाक्य)			
(ख)	यदि दुर्योधन ने पांडवों को पाँच गाँव दे दिए होते।	क्रिया-विशेषण उपवाक्य (संकेतवाचक)	युद्ध नहीं होता क्रिया का कर्म	यदि ... तो	मिश्र वाक्य
4. (क)	वह इतना चिल्लाया	क्रिया-विशेषण उपवाक्य			
(ख)	उसका गला ही बैठ गया	(प्रधान उपवाक्य) (आश्रित उपवाक्य)	बैठ गया क्रिया का कर्म	कि	मिश्र वाक्य

3. वाक्य संश्लेषण

संश्लेषण का अर्थ है—समायोजित करना या मिलाना। 'संश्लेषण' शब्द 'विश्लेषण' का विलोमार्थी है। जहाँ 'वाक्य विश्लेषण' में वाक्यों या वाक्यांशों को अलग-अलग करके दिखाया जाता है, वहीं 'वाक्य-संश्लेषण' में अलग-अलग दिए गए अनेक वाक्यों को एक किया या बनाया जाता है। इस प्रकार **अनेक सरल वाक्यों को उनके केंद्रीय भाव को सुरक्षित रखते हुए एक सरल वाक्य अथवा संयुक्त वाक्य के रूप में ढालने की प्रक्रिया वाक्य-संश्लेषण कहलाती** है। उदाहरणार्थ—वहाँ एक गाँव था। वह गाँव छोटा-सा था। उसके चारों ओर जंगल था।

उपरोक्त उदाहरण को हम निम्नलिखित रूप से लिख सकते हैं :

साधारण वाक्य—वहाँ एक छोटा-सा गाँव था जिसके चारों ओर जंगल था।

कई वाक्यों का एक साधारण (सरल) वाक्य में संश्लेषण

अनेक सरल वाक्यों के स्थान पर एक सरल वाक्य संरचित करने की प्रक्रिया सरल वाक्य-संश्लेषण कहलाती है। इसमें हमें कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए।

1. सभी वाक्यों में एक मुख्य क्रिया चुनी जानी चाहिए। तत्पश्चात् शेष वाक्यों में से किसी एक को 'पद' (कर्म, विशेषण, कारक, प्रविशेषण, क्रियाविशेषण आदि) या 'पदबंध' के रूप में बनाना चाहिए।
2. किसी वाक्य को पूर्वकालिक क्रिया के रूप में भी बदला जा सकता है।
3. आवश्यकता पड़ने पर उपसर्ग, प्रत्यय या समुचित योजकों, मुहावरों की सहायता से नए शब्दों का निर्माण करना चाहिए।
4. यह सदैव ध्यान रखना चाहिए कि संश्लेषित वाक्य में मूल वाक्यों की सभी बातें सम्मिलित हो गई हैं, न कम न अधिक।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनेक साधारण वाक्यों का मिश्र वाक्य में संश्लेषण

वाक्य संश्लेष्ण में विद्यार्थियों को बताये गए नियमों को ध्यान में रखना चाहिए। नीचे कुछ उदाहरण विद्यार्थियों की सहायता हेतु प्रस्तुत हैं—

1. वह स्नान करता है। वह पूजा करता है। वह भोजन करने बैठता है।
   संश्लेषित वाक्य—वह स्नान व पूजा कर भोजन करने बैठता है।
2. आप मेरे गुरु हैं। आप मेरे संरक्षक हैं। आप मेरे मार्ग-दर्शक हैं।
   संश्लेषित वाक्य—आप मेरे गुरु, संरक्षक व मार्ग-दर्शक हैं।
3. यह बहुत अकेली है। उसके कोई संतान नहीं थी। लोग उसका मुँह तक नहीं देखते।
   संश्लेषित वाक्य—उस अकेली बाँझ का लोग मुख तक नहीं देखते।
4. वह परोपकारी है। वह सबको परम प्रिय है।
   संश्लेषित वाक्य—परोपकारी होने के कारण वह सबकी आँखों का तारा है।
5. आज भीषण वर्षा हुई। आज की वर्षा से बाढ़ आ गयी।
   संश्लेषित वाक्य—आज की मूसलाधार वर्षा से बाढ़ आ गई।
6. वह मेरे पति के छोटे भाई की पत्नी है। इसका नाम राधा है। यह मेरे साथ रहती है।
   संश्लेषित वाक्य—मेरी देवरानी राधा मेरे साथ रहती है।
7. लड़की रो रही है। वह सो गई।
   संश्लेषित वाक्य—लड़की रोते-रोते सो गई।
8. सूर्यास्त हुआ। चारों ओर अंधकार फैल गया।
   संश्लेषित वाक्य—सूर्यास्त होने पर चारों ओर अंधकार फैल गया।
9. रमेश बड़ा परिश्रमी है। वह उमेश का अग्रज है। वह बहुत बुद्धिमान है।
   संश्लेषित वाक्य—उमेश का अग्रज रमेश बड़ा परिश्रमी व बुद्धिमान है।
10. सुरेंद्र मोहन हिंदी के श्रेष्ठ उपन्यासकार थे। वे एक श्रेष्ठ एकांकीकार भी थे। वे अभिनेता भी थे।
    संश्लेषित वाक्य—हिंदी के श्रेष्ठ उपन्यासकार व एकांकीकार सुरेंद्र मोहन अभिनेता भी थे।
11. रमा ने एक कहानी लिखी। यह सत्य घटना पर आधारित थी। वह बड़ी मार्मिक थी।
    संश्लेषित वाक्य—राम ने सत्य घटना पर आधारित एक बड़ी मार्मिक कहानी लिखी।
12. आज मैं घर जाऊँगा। यह आवश्यक है।
    संश्लेषित वाक्य—आज मेरा घर जाना आवश्यक है।
13. हिरण सुनहरी रंग का था। वह भाग रहा था। व्याध उसका पीछा कर रहा था।
    संश्लेषित वाक्य—सुनहरी रंग के भागते हुए हिरण का व्याध पीछा कर रहा था।
14. राम वन को गए। सीता वन को गई। लक्ष्मण वन को गए।
    संश्लेषित वाक्य—राम, सीता और लक्ष्मण वन को गए।
15. वह तेज धावक घोषित हुआ है। समाचार-पत्र में यह बात प्रकाशित हुई है।
    संश्लेषित वाक्य—उसके तेज धावक होने की घोषणा समाचार-पत्र में प्रकाशित हुई है।

4. वाक्य रूपांतरण

एक प्रकार के वाक्य को किसी दूसरे प्रकार के वाक्य में परिवर्तित करने को वाक्य रूपांतरण कहा जाता है। दो प्रकार का वाक्य रूपांतरण हमारे पाठ्यक्रम में है—सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य बनाना; तथा संयुक्त वाक्य से सरल वाक्य बनाना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सरल वाक्य से मिश्र वाक्य

1. सरल वाक्य—मैं तुम्हारी गरीबी को जानता हूँ।
   मिश्र वाक्य—मैं जानता हूँ कि तुम गरीब हो।
2. सरल वाक्य—मेरे पैर रखने पर ब्रेक टूट गया।
   मिश्र वाक्य—जैसे ही मैंने पैर रखा, ब्रेक टूट गया।
3. सरल वाक्य—साहसी विद्यार्थी सफल होते हैं।
   मिश्र वाक्य—जो साहसी विद्यार्थी होते हैं, वे सफल होते हैं।
4. सरल वाक्य—मेरी भेंट क्रिकेट के एक अच्छे खिलाड़ी लड़के से हुई।
   मिश्र वाक्य—मेरी एक लड़के से भेंट हुई, जो क्रिकेट का अच्छा खिलाड़ी था।
5. सरल वाक्य—गाड़ी चलाते समय तुम इधर-उधर मत देखा करो।
   मिश्र वाक्य—तुम इधर-उधर मत देखा करो, क्योंकि तुम गाड़ी चलाते हो।
6. सरल वाक्य—कमाने वाला खाएगा।
   मिश्र वाक्य—जो कमायेगा वह खायेगा।
7. सरल वाक्य—संभवत: वह जाए।
   मिश्र वाक्य—हो सकता है कि वह जाए।
8. सरल वाक्य—उसका सब कुछ खो गया।
   मिश्र वाक्य—उसके पास जो कुछ था, वह खो गया।
9. सरल वाक्य—वह व्यस्तता के कारण पत्र नहीं लिख पाता।
   मिश्र वाक्य—वह पत्र इसलिए नहीं लिख पाता कि व्यस्त रहता है।
10. सरल वाक्य—पाँच बजने पर कर्मचारी चले जाते हैं।
    मिश्र वाक्य—पाँच बजे नहीं कि कर्मचारी चले जाते हैं।

मिश्र वाक्य से सरल वाक्य

1. मिश्र वाक्य—रमा ऐसे चल रही थी जैसे कोई बीमार चलता है।
   सरल वाक्य—रमा बीमारों की तरह चल रही थी।
2. मिश्र वाक्य—जिन विद्यार्थियों ने परिश्रम किया वे उत्तीर्ण हो गए।
   सरल वाक्य—परिश्रम करने वाले विद्यार्थी उत्तीर्ण हो गए।
3. मिश्र वाक्य—जो गरजते हैं, वे बरसते नहीं।
   सरल वाक्य—गरजने वाले बरसते नहीं।
4. मिश्र वाक्य—यद्यपि वह साधारण व्यक्ति है, तथापि बहुत काम का है।
   सरल वाक्य—साधारण होते हुए भी वह बहुत काम का व्यक्ति है।
5. मिश्र वाक्य—उसने कहा कि मैं विदेशी हूँ।
   सरल वाक्य—उसने अपने आप को विदेशी बताया।
6. मिश्र वाक्य—यदि वह आए तो तुम छिप जाना।
   सरल वाक्य—उसके आने पर तुम छिप जाना।
7. मिश्र वाक्य—जो चिड़िया आकाश में उड़ रही है वह कितनी सुंदर है।
   सरल वाक्य—कितनी सुंदर चिड़िया आकाश में उड़ रही है।
8. मिश्र वाक्य—उसने प्रार्थना-पत्र लिखा जो नौकरी के लिए था।
   सरल वाक्य—उसने नौकरी के लिए प्रार्थना-पत्र लिखा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

9. मिश्र वाक्य—मैंने उस व्यक्ति को देखा, जो पीड़ा से कराह रहा था।
सरल वाक्य—मैंने पीड़ा से कराहते उस व्यक्ति को देखा।
10. मिश्र वाक्य—मैं नहीं जानता कि उसका जन्म कहाँ हुआ है?
सरल वाक्य—मैं उसका जन्म स्थान नहीं जानता।

मिश्र वाक्य से संयुक्त वाक्य

1. मिश्र वाक्य—जैसे ही रात्रि के बारह बजे, वैसे ही मैंने पढ़ना बंद कर दिया।
संयुक्त वाक्य—रात्रि के बारह बजे और मैंने पढ़ना बंद कर दिया।
2. मिश्र वाक्य—जब उसने मुझे देखा, तो खिसक गया।
संयुक्त वाक्य—उसने मुझे देखा और खिसक गया।
3. मिश्र वाक्य—जैसे ही मैं स्कूल से आया, वैसे ही मैं पढ़ने बैठ गया।
संयुक्त वाक्य—मैं स्कूल से आया और पढ़ने बैठ गया।
4. मिश्र वाक्य—जिसका मुझे भय था, वही हुआ।
संयुक्त वाक्य—इसका मुझे भय था और यही हुआ।
5. मिश्र वाक्य—यदि वह आए तो तुम छिप जाना।
संयुक्त वाक्य—वह आएगा और तुम छिप जाना।
6. मिश्र वाक्य—जैसे ही साँझ हुई, वैसे ही पक्षी नीड़ में आ गए।
संयुक्त वाक्य—साँझ हुई और पक्षी नीड़ में आ गए।
7. मिश्र वाक्य—जैसे ही वेतन मिलेगा, वैसे ही कर्जा चुका दूँगा।
संयुक्त वाक्य—वेतन मिलेगा और कर्जा चुका दूँगा।
8. मिश्र वाक्य—जो गाय मैंने खरीदी है, वह बहुत कम दूध देती है।
संयुक्त वाक्य—मैंने एक गाय खरीदी है और वह बहुत कम दूध देती है।
9. मिश्र वाक्य—यद्यपि शिवराम धनी है, तथापि बहुत दुखी है।
संयुक्त वाक्य—शिवराम धनी है, परंतु बहुत दुखी है।
10. मिश्र वाक्य—सुषमा इसलिए स्कूल नहीं गई क्योंकि वह बीमार है।
संयुक्त वाक्य—सुषमा बीमार है इसलिए स्कूल नहीं गई।

संयुक्त वाक्य से मिश्र वाक्य

1. संयुक्त वाक्य—राम आया और श्याम चल दिया।
मिश्र वाक्य—जैसे ही राम आया, श्याम चल दिया।
2. संयुक्त वाक्य—विद्यार्थी परिश्रमी है, तो अवश्य सफल होगा।
मिश्र वाक्य—जो विद्यार्थी परिश्रमी है, वह अवश्य ही सफल होगा।
3. संयुक्त वाक्य—गार्ड ने हरी झंडी दिखाई और ट्रेन चल पड़ी।
मिश्र वाक्य—जैसे ही गार्ड ने हरी झंडी दिखाई वैसे ही ट्रेन चल पड़ी।
4. संयुक्त वाक्य—मैंने समझाया और वह बात मान गया।
मिश्र वाक्य—जैसे ही मैंने समझाया वैसे ही वह बात मान गया।
5. संयुक्त वाक्य—रमा ने थैला उठाया और वह बाजार की ओर चली गई।
मिश्र वाक्य—जब रमा ने थैला उठाया तब वह बाजार की ओर चली गई।
6. संयुक्त वाक्य—वह वास्तव में बहुत धनी है, परंतु उसमें कुछ भी अभिमान नहीं है।
मिश्र वाक्य—यद्यपि वह वास्तव में ही बहुत धनी है, तथापि उसमें कुछ भी अभिमान नहीं है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

7. संयुक्त वाक्य—उसने एक प्रार्थना-पत्र लिखा और वह नौकरी के लिए था।
मिश्र वाक्य—उसने एक प्रार्थना-पत्र लिखा जो नौकरी के लिए था।
8. संयुक्त वाक्य—मैंने एक व्यक्ति देखा और वह पीड़ा से कराह रहा था।
मिश्र वाक्य—मैंने उस व्यक्ति को देखा, जो पीड़ा से कराह रहा था।

प्रश्न अभ्यास

1. निम्नलिखित वाक्यों को संयुक्त वाक्यों में परिवर्तित कीजिए—
   (i) साधू आशीर्वाद देकर लापता हो गया।
   (ii) आप पलंग पर लेटकर विश्राम करें।
   (iii) सुबह की पहली बस पकड़कर शाम तक लौट आओ।
   (iv) प्रातःकाल होने पर चिड़िया चहचहाने लगती हैं।
   (v) आलसी होने के कारण वह विफल हुआ।
   (vi) वह खाना खाकर सो गया।
   (vii) आप द्वार पर बैठकर उसकी प्रतीक्षा करें।
   (viii) अपराधी होने के कारण उसे सजा हुई।
   (ix) वह अध्ययन करके परीक्षा में सफल हुआ।
   (x) सभा समाप्त होने पर सभी लोग चले गए।
2. निम्नलिखित वाक्यों को सरल वाक्यों में परिवर्तित कीजिए—
   (i) जो ईमानदार हैं, उन्हें पछताना नहीं पड़ेगा।
   (ii) तुमने कहा और सब लोग मान गए।
   (iii) मैंने उसे पढ़ाया और नौकरी भी दिलवाई।
   (iv) मैं अस्वस्थ था, इसलिए मन लगाकर न पढ़ सका।
   (v) हमें चाहिए कि केवल बातें ही न बनाएँ, कुछ करके भी दिखाएँ।
   (vi) यद्यपि कमलेश बहुत अच्छी लड़की है तथापि वह फेल हो गई।
   (vii) अध्यापक चाहता है कि उसके सभी शिष्य अच्छे बनें।
   (viii) जब तक मोहन घर पहुँचा तब तक उसके पिताजी चल चुके थे।
   (ix) अच्छे विद्यार्थी पढ़ने के समय पढ़ते हैं व खेलने के समय खेलते हैं।
   (x) पिताजी अस्वस्थ हैं, अतः मुझे जाना पड़ेगा।
3. निम्नलिखित वाक्यों को मिश्र वाक्यों में परिवर्तित कीजिए—
   (i) झूठ बोलने वाले लोग मुझे पसंद नहीं हैं।
   (ii) मुझे देखकर वह खिसक गया।
   (iii) दो नदियों के मिलने के स्थान को संगम कहते हैं।
   (iv) रात्रि के बारह बजे मैंने पढ़ना बंद किया।
   (v) पैसे के बिना व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता।
   (vi) सच्चा देशभक्त देश के लिए मर मिटेगा।
   (vii) रमेश बहुत बड़ा आदमी होने पर भी घमंडी नहीं है।
   (viii) तुम बस रुकने के स्थान पर चले जाओ।
   (ix) रोगी के दवाई पीते ही उसे उल्टी हो गई।
   (x) हरि के घर पहुँचने से पूर्व ही उसके पिता चल चुके थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गत परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्न

1. निम्नलिखित वाक्यों को मिश्र वाक्यों में परिवर्तित कीजिए—
   (i) वह फल खरीदने के लिए बाजार गया। *(A.I. CBSE 1992)*
   (ii) तुम बस रुकने के स्थान पर चले जाओ। *(CBSE 1992)*
   (iii) मैंने एक दुबला-पतला व्यक्ति देखा। *(CBSE 1992F)*
   (iv) अध्यापक अपने शिष्यों को अच्छा बनाना चाहता है। *(CBSE 1993)*
   (v) मैंने एक बहुत मोटा व्यक्ति देखा। *(CBSE 1993F)*
   (vi) सड़क पार करता हुआ एक व्यक्ति बस से टकराकर मर गया। *(A.I. CBSE 1994)*
   (vii) टोपी वाला बाबू कहाँ गया? *(A.I. CBSE 1995)*
   (viii) मेरी भेंट क्रिकेट के एक अच्छे खिलाड़ी लड़के से हुई। *(A.I. CBSE 1997)*
   (ix) छतरी वाले आदमी को बुलाओ। *(A.I. CBSE 1998)*
   (x) नीली पैंट वाले छात्र को यह पुस्तक दे दो। *(A.I. CBSE 1998)*
   (xi) मैंने एक दुबले-पतले व्यक्ति को भीख माँगते देखा। *(CBSE 1999)*
   (xii) सड़क पार करता हुआ एक कुत्ता बस से टकराकर मर गया। *(CBSE 1999)*
   (xiii) सफेद कमीज वाले छात्र को यह कलम दे दो। *(CBSE 2001)*
   (xiv) दूसरों की सहायता करने वालों की आज भी कमी नहीं है। *(CBSE 2002)*
   (xv) गली में शोर होने पर लोग गली से बाहर निकल आए। *(A.I. CBSE 2002)*
   (xvi) मैं उसके घर पहुँचा और मैंने उसके साथ देर तक बातचीत की। *(CBSE 2003)*
   (xvii) बुद्धिमान एवं दूरदर्शी मनुष्य के लिए संसार में कुछ भी दुर्लभ नहीं है। *(CBSE 2006)*
2. निम्नलिखित वाक्यों को सरल वाक्यों में परिवर्तित कीजिए—
   (i) जो लोग परिश्रम करते हैं उन्हें अधिक समय तक निराश नहीं होना पड़ता। *(A.I. CBSE 1991, 99)*
   (ii) मेरा विचार है कि आज घूमने चलें। *(CBSE 1992)*
   (iii) उसने अपने हाथ इस तरह ऊपर उठाये जैसे ईश्वर से कुछ माँग रहा हो। *(CBSE 1993F)*
   (iv) यह वही बच्चा है जिसे बैल ने मारा था। *(CBSE 1996, 2001)*
   (v) जब तक मोहन घर पहुँचा तब तक उसके पिता चल चुके थे। *(CBSE 1997)*
   (vi) मैंने एक बच्चे को देखा जो बहुत स्वस्थ था। *(CBSE 1998)*
   (vii) यह वही बच्चा है जिसे कुत्ते ने काटा था। *(CBSE 1999)*
   (viii) मुझे वह ड्राईवर मिला जो मुच्छड़ था। *(CBSE 2000)*
   (ix) जब मैं स्टेशन पहुँचा, तब रेलगाड़ी छूट चुकी थी। *(A.I. CBSE 2003)*
3. निम्नलिखित वाक्यों को संयुक्त वाक्यों में परिवर्तित कीजिए—
   (i) कम रोशनी में पढ़ने के कारण विद्यार्थी अपनी आँखें गँवा बैठा। *(A.I. CBSE 2001)*
   (ii) जब सवेरा होता है तब सारा चराचर जाग उठता है। *(CBSE 2002)*
4. निम्नलिखित में उपवाक्यों को छाँटिए व उनके नाम भी उद्धृत कीजिए—
   (i) मैंने सोचा कि वह जरूर आयेगा। *(A.I. CBSE 1994)*
   (ii) मेरा उद्देश्य है कि मैं मनुष्य-मात्र की सेवा करूँ। *(A.I. CBSE 1994)*
   (iii) यदि परिश्रम करोगे तो अवश्य ही फल पाओगे। *(CBSE 1994)*
   (iv) उसने कहा तो था किंतु वह आया नहीं। *(CBSE 1994)*
   (v) जब पूछोगे तब बता दूँगा। *(CBSE 1996)*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(vi) वह कहने लगा कि आज नहीं चल पाऊँगा। (CBSE 1996)
(vii) वह जानता है कि मैं क्या चाहता हूँ। (A.I. CBSE 1996)
(viii) मैं भी वहीं जा रहा हूँ जहाँ से तुम आए हो। (A.I. CBSE 1996)
(ix) गीता में कहा गया है कि कर्म पर मनुष्य का अधिकार है। (A.I. CBSE 1999)
(x) वह पुस्तक जो आप चाहते हैं, लाइब्रेरी में नहीं है। (A.I. CBSE 2001)
(xi) जब भी मैं वहाँ गया, उसने मेरा सत्कार किया। (CBSE 2001)
(xii) वह जहाँ-जहाँ जाता है, वहाँ कोई न कोई समस्या खड़ी कर देता है। (A.I. CBSE 2006)
(xiii) जहाँ-जहाँ वह गया, उसका भव्य सम्मान हुआ। (CBSE 2006)

5. प्रधान उपवाक्य छाँटकर लिखिए—
(i) हमारा उद्देश्य रहता है कि हम आत्मनिर्भर हों। (CBSE 2004)
(ii) मुझे विश्वास है कि आप मान जायेंगे। (A.I. CBSE 2004)
(iii) मोहन ने मुझसे कहा कि वह बहुत दुखी है। (A.I. CBSE 2004F)
(iv) मैंने उसे पुकार कर कहा कि अब उधर मत जाओ। (A.I. CBSE 2005)
(v) इन्हें क्षमा करें क्योंकि इनसे अन्जाने में भूल हुई है। (A.I. CBSE 2005)
(vi) आप यहाँ के मुखिया हैं, कौन नहीं जानता। (A.I. CBSE 2005)
(vii) जो भाषण दे रहा था, वह मेरा मित्र है। (CBSE 2005)

6. निम्न सरल वाक्यों से एक मिश्र वाक्य बनाइए—
(i) वहाँ एक गाँव था। वह गाँव छोटा-सा था। उसके चारों ओर जंगल था। (A.I. CBSE 1994)
(ii) मैंने एक व्यक्ति को देखा। वह बहुत दुबला-पतला था। (A.I. CBSE 1994)
(iii) उसने श्रम नहीं किया। वह परीक्षा में फेल हो गया। (A.I. CBSE 1996)

7. निम्नलिखित वाक्यों में आश्रित उपवाक्यों को अलग करके बताइए कि वह किस प्रकार का है—
(i) जब भी मैं वहाँ गया, उसने मेरा सत्कार किया। (A.I. CBSE 1992)
(ii) जो छात्र परिश्रमी होता है, वह सबको अच्छा लगता है। (CBSE 1992)
(iii) जब वह यहाँ आया, मैं सो रहा था। (CBSE 1992)
(iv) मैंने एक व्यक्ति को देखा जो बहुत लंबा था। (CBSE 1992)
(v) वह आदमी जो कल यहाँ आया था, मेरा मित्र था। (CBSE 1992)
(vi) मैं जानता हूँ कि वह चोर नहीं है। (CBSE 1992F)
(vii) रमेश ने कहा कि मैं आज विद्यालय नहीं जाऊँगा। (A.I. CBSE 1993)
(viii) उसने कहा कि मैं कल आगरा जाऊँगा। (A.I. CBSE 1993)
(ix) मेरे जीवन का लक्ष्य है कि मैं डॉक्टर बनूँ। (CBSE 1993)
(x) जहाँ-जहाँ वह गया, उसका बहुत सम्मान हुआ। (CBSE 1993F)
(xi) जो व्यक्ति गुणी होता है, उसे सभी चाहते हैं। (CBSE 1993F)
(xii) जब भी मैं वहाँ गया, उसने मेरा सत्कार किया। (A.I. CBSE 1994)

8. वाक्य संश्लेषण कीजिए—
(i) वह देर रात तक जागा। सुबह देर से उठा। विद्यालय भी देर से पहुँचा। (CBSE 1997, 99, A.I. CBSE 2003)
(ii) अध्यापक विद्यालय पहुँचा। रजिस्टर उठाया। कक्षा में जाकर हाजिरी ली। पढ़ाने लगा। (A.I. CBSE 1997)
(iii) घंटी बजी। छात्रों ने बस्ते उठाए। छात्र घर आ गए। (A.I. CBSE 1998)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(iv) मजदूरों ने काम किया। मजदूरों ने पैसे लिए। मजदूर घर गए। *(A.I. CBSE 1998)*
(v) छात्र ने कापियाँ लीं। बैग में डालीं छात्र पढ़ने चला गया। *(A.I. CBSE 1992)*
(vi) वह घर गया। सामान उठाया। वह कोलकाता चला गया। *(CBSE 1998)*
(vii) घायल सैनिक उठा। शस्त्र उठाया। शत्रुओं से लड़ने लगा। *(A.I. CBSE 1999)*
(viii) शेखर के पिता विद्यालय आए। प्रधानाचार्य से मिले। चले गए। *(CBSE 1999)*
(ix) प्रज्ञा ने पुस्तकें फाइल में रखीं। फाइल उठाई। कॉलेज पढ़ने चली गई। *(CBSE 1999)*
(x) वहाँ एक घर था। वह घर छोटा सा. था। घर के चारों ओर फूल थे। *(A.I. CBSE 2000)*
(xi) वह सुबह उठा। उसने भोजन किया। वह काम पर चला गया। *(CBSE 2000)*
(xii) वह बूढ़ा उठा। उसने लाठी ली। वह चल दिया। *(CBSE 2000)*
(xiii) मैं न जाऊँगा। न तुम जाओगे। न सुरेश ही जायेगा। *(A.I. CBSE 2001)*
(xiv) वहाँ एक गाँव था। गाँव में एक घर था। घर कच्चा था। उस घर में चार व्यक्ति रहते थे। *(A.I. CBSE 2001)*
(xv) वहाँ एक गाँव था। वह गाँव छोटा सा था। उसके चारों ओर जंगल थे। उस गाँव में आदिवासियों के बीस परिवार रहते थे। *(CBSE 2001)*
(xvi) मोहन मुझसे मिला। बहुत देर तक वह मुझसे बातचीत करता रहा। थोड़ी देर बाद उसने खाना खाया। *(CBSE 2003)*

9. रेखांकित उपवाक्य का नाम बताइए—
(i) मुझे विश्वास है कि <u>आप अवश्य आयेंगे।</u> *(CBSE 1999, A.I. CBSE 1997)*
(ii) रहीम बोला कि <u>मैं कल हैदराबाद जा रहा हूँ।</u> *(CBSE 1997)*
(iii) वह पुस्तक कौन-सी है <u>जो आपको बहुत पसंद है।</u> *(CBSE 1997)*
(iv) वह अध्यापक था <u>जो कल यहाँ आया था।</u> *(A.I. CBSE 1998, CBSE 2001, Sample Paper 2005)*
(v) जो व्यक्ति मधुर भाषी होता है, <u>उसे सभी चाहते हैं।</u> *(A.I. CBSE 1998)*
(vi) वह छात्र पास हो गया <u>जो कल यहाँ आया था।</u> *(CBSE 1998)*
(vii) मुझे एक व्यक्ति मिला, <u>जो बहुत पढ़ा-लिखा था।</u> *(CBSE 1998)*
(viii) मेरे जीवन का लक्ष्य है कि <u>मैं अध्यापक बनूँ।</u> *(CBSE 1999)*
(ix) वह पुस्तक कौन सी है <u>जो तुम्हें बहुत पसंद है।</u> *(CBSE 1999)*
(x) वह बीमार ठीक हो गया <u>जो अस्पताल में मिला था।</u> *(CBSE 2000)*
(xi) रमेश ने कहा कि <u>मैं कल कोलकाता जा रहा हूँ।</u> *(A.I. CBSE 2001)*
(xii) जो पढ़ा-लिखा नहीं है, <u>उसका जीवन व्यर्थ है।</u> *(CBSE 2002)*
(xiii) जो सदा सत्य बोलता है, <u>उसी की जीत होती है।</u> *(A.I. CBSE 2002)*
(xiv) सभी जानते हैं कि <u>वह विद्वान है।</u> *(CBSE 2003)*
(xv) यह वही व्यक्ति है <u>जिसने कल मुझे गिरने से बचाया था।</u> *(A.I. CBSE 2003)*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

17

वाच्य—कर्तृवाच्य एवं अकर्तृवाच्य

1. वाच्य

वाच्य का शाब्दिक अर्थ है—बोलने का विषय या बोलने योग्य। **क्रिया के जिस रूप से यह जाना जाए कि वाक्यगत क्रिया का प्रधान विषय कर्ता है, कर्म है अथवा भाव है, उसे वाच्य कहते हैं।** उदाहरणतया—राधा खा रही है। इस वाक्य में खाने का मुख्य विषय कर्ता 'राधा' है। इसलिए यह कर्तृवाच्य वाक्य है।

वाच्य के दो भेद होते हैं—1. कर्तृवाच्य; व 2. अकर्तृवाच्य।

1. कर्तृवाच्य—इसमें क्रिया का सीधा संबंध कर्ता से होता है तथा क्रिया के लिए वचन भी कर्ता के अनुसार ही होता है। इनमें कर्म गौण होता है। कर्तृवाच्य में क्रिया अकर्मक भी हो सकती है तथा सकर्मक भी। उदाहरणार्थ—

राधा कपड़े सी रही है। (सकर्मक)

रमेशा खाता है। (अकर्मक)

इन दोनों वाक्यों में कर्ता ही वाक्य का केंद्र-बिंदु है। अत: यह कर्तृवाच्य वाक्य है।

2. अकर्तृवाच्य—जिन वाक्यों में कर्ता गौण होता है तथा कर्म प्रधान होता है, अकर्तृवाच्य कहलाते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं—(क) कर्मवाच्य; (ख) भाववाच्य।

(क) **कर्मवाच्य**—जिस वाक्य में क्रिया का संबंध सीधे कर्म से होता है, वे कर्मवाच्य कहलाते हैं। इन वाक्यों में क्रिया का रूप कर्म के अनुसार परिवर्तित होता है। इनकी मुख्य क्रिया सकर्मक होती है। उदाहरणार्थ—

नानी द्वारा कहानी सुनाई जाती थी।

मोहन द्वारा भोजन किया जाता है।

मजदूरों द्वारा पेड़ काटा गया।

उपरोक्त वाक्यों में क्रिया का संबंध कहानी, भोजन तथा पेड़ (कर्म) से है। इसलिए इसे कर्मवाच्य या कर्मणि प्रयोग कहा जाता है।

कर्मवाच्य में कर्ता की असमर्थता को भी सूचित किया जाता है। इनमें कर्ता के साथ 'से' अथवा 'द्वारा' का प्रयोग होता है व क्रिया के साथ निषेधात्मक 'नहीं' का प्रयोग होता है। उदाहरणार्थ—

मुझसे यह फिल्म नहीं देखी जायेगी।

माँ द्वारा उसका इलाज नहीं हो पाया।

सकर्मक क्रिया से व्युत्पन्न अकर्मक क्रियाओं वाले वाक्य भी सकर्मक कहलाते हैं। जैसे—

गेट खुल गया। (खोलना → खुलना)

चश्मा टूट गया। (तोड़ना → टूटना)

(ख) **भाववाच्य**—जिस वाक्य में कर्ता की प्रधानता न होकर अकर्मक क्रिया की प्रधानता हो, भाववाच्य कहलाता है। इन वाक्यों में क्रिया का संबंध कर्ता व कर्म से न होकर 'भाव' से होता है। इसमें क्रिया के पुरुष, वचन और लिंग कर्त्ता अथवा कर्म के अनुसार न होकर सदैव अन्य पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन में ही रहते हैं। उदाहरण के लिए—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उससे खाया नहीं जाता।
देवेंद्र से पढ़ा नहीं जाता।

इनमें क्रमशः 'खाया' व 'पढ़ा' क्रियाएँ ही प्रमुख हैं। अतः ये भाववाच्य के उदाहरण हैं।

2. वाच्य परिवर्तन

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाना

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाते समय निम्नलिखित परिवर्तन करने पड़ते हैं—

(क) सर्वप्रथम कर्तृवाच्य की मुख्य क्रिया को सामान्य भूतकाल में परिवर्तित करते हैं तत्पश्चात् परिवर्तित क्रिया के साथ 'जाना' क्रिया का काल, पुरुष, वचन और लिंग के अनुसार रूप जोड़कर साधारण क्रिया को संयुक्त क्रिया में परिवर्तित किया जाता है।

(ख) कर्तृवाच्य के मुख्य कर्ता के साथ 'से' (कभी-कभी 'द्वारा') विभक्ति जोड़कर उसे करण-कारक बना दिया जाता है। जैसे—रमा-रमा से, राजू ने-राजू से, मैंने-मुझसे या मेरे द्वारा।

(ग) यदि कर्म के साथ कोई विभक्ति लगी हो तो उसे हटा दिया जाता है।

नीचे कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं—

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
1. वह दिन में फल खाता है।	उसके द्वारा दिन में फल खाए जाते हैं।
2. मैं कविता पढ़ सकता हूँ।	मेरे द्वारा कविता पढ़ी जा सकती है।
3. ईश्वर हमारी रक्षा करते हैं।	ईश्वर द्वारा हमारी रक्षा की जाती है।
4. बुनकर कपड़े बुनता है।	बुनकर द्वारा कपड़े बुने जाते हैं।
5. हम नेताजी को नहीं भूल सकते।	हमसे नेताजी नहीं भुलाए जा सकते।
6. विश्वजीत अच्छा गीत गाता है।	विश्वजीत द्वारा अच्छा गीत गाया जाता है।
7. स्त्री बर्तन धोती है।	स्त्री द्वारा बर्तन धोए जाते हैं।
8. क्या आप कलकत्ता जायेंगी।	क्या आपसे कलकत्ता जाया जायेगा।
9. हमीद लट्टू चला रहा है।	हमीद द्वारा लट्टू चलाया जा रहा है।
10. लिपिक कार्य करते हैं।	लिपिकों द्वारा कार्य किया जाता है।
11. मैंने पत्र लिखा।	मुझसे पत्र लिखा गया।
12. रमा पुस्तक पढ़ेगी।	रमा के द्वारा पुस्तक पढ़ी जायेगी।
13. रमेश मैदान में खेल रहा है।	रमेश से मैदान में खेला जा रहा है।
14. उमा खाना पका रही है।	उमा से खाना पकाया जा रहा है।
15. माताजी पैदल नहीं चलतीं।	माताजी से पैदल नहीं चला जाता।
16. मैं आपके दफ्तर में नौकरी नहीं कर सकती।	मुझसे आपके दफ्तर में अब नौकरी नहीं की जाती।
17. अध्यापक ने विद्यार्थियों को डाँटा।	अध्यापक द्वारा विद्यार्थियों को डाँटा गया।
18. अनेक चित्रकारों ने सुंदर चित्र बनाए।	अनेक चित्रकारों द्वारा सुंदर चित्र बनाए गए।
19. बिल्ली आँगन में सो रही है।	बिल्ली के द्वारा आँगन में सोया जा रहा है।
20. अध्यापक ने हमें आज नया पाठ पढ़ाया।	अध्यापक द्वारा हमें आज नया पाठ पढ़ाया गया।
21. हम इस कष्ट को नहीं सह सकते।	हमसे यह कष्ट नहीं सहा जाता।
22. सिपाही ने चोर को पकड़ा।	सिपाही द्वारा चोर पकड़ा गया।
23. माता ने बच्चों को प्यार किया।	माता द्वारा बच्चों को प्यार किया जाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

24. वह हमें मूर्ख समझता है।	उसके द्वारा हमें मूर्ख समझा जाता है।
25. सरकार शिक्षा पर बहुत खर्च करती है।	सरकार द्वारा शिक्षा पर बहुत खर्च किया जाता है।

कर्तृवाच्य से भाववाच्य बनाना

कर्तृवाच्य से भाववाच्य में बदलने के लिए निम्नलिखित नियमों का पालन करना अनिवार्य होता है—

(क) कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाने का प्रथम नियम यहाँ पूरी तरह लागू होता है।

(ख) वाक्य क़ी क्रिया अथवा भाव को ही वाक्य का कर्त्ता बना दिया जाता है। उदाहरण के लिए—'हँसता है' को 'हँसा जाता है'।

(ग) 'जा' धातु के क्रिया-रूप कर्तृवाच्य के 'काल-भेद' के अनुसार जुड़ जाते हैं।

(घ) क्रिया सदैव अन्य पुरुष, पुल्लिंग तथा एकवचन में रहती है।

कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं—

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
1. पक्षी आकाश में उड़ता है।	पक्षी द्वारा आकाश में उड़ा जाता है।
2. बच्चा खूब रोया।	बच्चे द्वारा खूब रोया गया।
3. सौम्या सुबह को नहीं उठ सकी।	सौम्या से सुबह नहीं उठा जा सका।
4. मोहन गीत न गा सका।	मोहन द्वारा गीत नहीं गाया जा सका।
5. वे हँस नहीं सके।	उनके द्वारा हँसा नहीं जा सका।
6. हम इतनी तंगी सहन नहीं कर सकते।	हमारे द्वारा इतनी तंगी सहन नहीं की जा सकती।
7. देवरानी लड़ नहीं सकी।	देवरानी से लड़ा नहीं जा सका।
8. पक्षी रात को सोते हैं।	पक्षियों द्वारा रात को सोया जाता है।
9. नारद जी आकाश में उड़ते हैं।	नारद जी द्वारा आकाश में उड़ा जाता है।
10. बच्चे बकते हैं।	बच्चों द्वारा बका जाता है।
11. सिंह भागता है।	सिंह द्वारा भागा जाता है।
12. वह नहीं पढ़ता।	उससे पढ़ा नहीं जाता।
13. क्या मैं पढ़ूँगा?	क्या मुझसे पढ़ा जायेगा?
14. भाई नहाया।	भाई से नहाया गया।
15. पत्थर नहीं रो सकते।	पत्थरों से रोया नहीं जा सकता।
16. पिता बरामदे में कार्य कर रहे हैं।	पिता द्वारा बरामदे में कार्य किया जा रहा है।
17. वह खेलता है।	उससे खेला जाता है।
18. रमा नहीं पढ़ती।	रमा से पढ़ा नहीं जाता है।
19. रमेश अभी सोएगा।	रमेश से अभी सोया जायेगा।
20. वह नहीं हँसता।	उससे हँसा नहीं जाता।
21. श्याम तेज नहीं दौड़ता।	श्याम से तेज नहीं दौड़ा जाता।
22. राधा कपड़े नहीं धोती है।	राधा से कपड़े नहीं धोए जाते हैं।

भाववाच्य और कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य बनाना

कर्तृवाच्य बनाने की पद्धति उपर्युक्त विधियों के ठीक विपरीत है। इसमें पहले कर्म की पहचान की जाती है तत्पश्चात् 'के द्वारा' अथवा 'से' को हटाया जाता है तथा क्रिया का प्रयोग कर्तृवाच्य में किया जाता है। कुछ उदाहरण आगे प्रस्तुत हैं—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भाववाच्य/कर्मवाच्य	कर्तृवाच्य
1. दीपिका के द्वारा खाना बनाया गया।	दीपिका ने खाना बनाया।
2. महादेवी से उठा नहीं जाता।	महादेवी नहीं उठती।
3. क्या अमीना के द्वारा आगरा जाया जायेगा?	क्या अमीना आगरा जायेगी?
4. केदार के द्वारा प्रार्थना की गई।	केदार ने प्रार्थना की।
5. मोरों से नाचा नहीं जाता।	मोर नहीं नाचते।
6. मुस्कान के द्वारा जन्मदिन मनाया गया।	मुस्कान ने जन्मदिन मनाया।
7. अध्यापिका से जोर से नहीं बोला जाता।	अध्यापिका जोर से नहीं बोलती।
8. संदीप के द्वारा कार चलायी जाती है।	संदीप कार चलाता है।
9. बकरी से मैं-मैं किया जाता है।	बकरी मैं-मैं करती है।
10. प्रभात के द्वारा पुस्तकें मँगाई गईं।	प्रभात ने पुस्तकें मँगाईं।
11. कनुप्रिया से गाया नहीं जायेगा।	कनुप्रिया नहीं गायेगी।
12. अशोक जैन ने पुस्तक लिखी थी।	अशोक जैन द्वारा पुस्तक लिखी गई थी।
13. रामनरेश से पीया नहीं जाता।	रामनरेश नहीं पीता।
14. कुलियों से सामान नहीं उठाया जाता।	कुली सामान नहीं उठाते।
15. सैनिक से डरा नहीं गया।	सैनिक नहीं डरा।
16. मुख्यमंत्री से मुस्कराया गया।	मुख्यमंत्री मुस्कराया।
17. मनप्रीत के द्वारा कहानी सुनाई गई।	मनप्रीत ने कहानी सुनाई।

वाच्यों की पहचान

कर्तृवाच्य—कर्ता या तो बिना विभक्ति के होता है या फिर कर्ता के साथ 'ने' की विभक्ति होती है।

कर्मवाच्य—कर्ता के साथ 'के द्वारा' या 'से' विभक्ति होती है। इसमें मुख्य क्रिया सकर्मक होती है तथा साथ 'जाना' क्रिया का लिंग, वचन-कालानुसार रूप जुड़ा होता है। 'जाना' के उपर्युक्त रूप से पहले क्रिया सामान्य भूतकाल में होती है।

भाववाच्य—कर्ता के साथ 'से' या 'के द्वारा' कारक चिह्न होता है। क्रिया अकर्मक होती है तथा क्रिया सदा एकवचन पुल्लिंग में होती है।

वाच्यों का प्रयोग

हिंदी भाषा में सामान्यतः कर्म वाच्य का ही अधिक प्रयोग होता है। जिन परिस्थितियों में कर्मवाच्य व भाववाच्य का प्रयोग होता है, वे इस प्रकार हैं—

कर्मवाच्य के प्रयोग स्थल

(क) अधिकार, गर्व या दर्प जताने के लिए—
- आदेश का पालन हो।
- हम कभी नहीं सहेंगे।
- दोषी को सजा दी जाए।

(ख) जब कर्ता कोई सभा, समाज या सरकार हो—
- विभिन्न प्रयोजनों हेतु सरकार द्वारा बहुत धन किया जाता है।
- हॉकी की टीम में रहने वाले खिलाड़ियों का चयन हॉकी बोर्ड के माध्यम से किया जाता है।
- विभिन्न समाजसेवी संगठनों द्वारा सामूहिक विवाह कार्यक्रम कराए जाते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ग) जब वाक्य में कर्ता को प्रकट करने की आवश्यकता न हो, या कर्ता अज्ञात हो—
- पुस्तकें भेज दी गयी हैं।
- इस राज्य में किसी की बात नहीं सुनी जाती।
- धन को पानी समान बहाया जा रहा है।

(घ) असमर्थता बताने के लिए—
- आज देर तक नहीं पढ़ा जा सकेगा।
- माता से भोजन नहीं बनाया जा सकेगा।
- अब तो चला तक नहीं जाता।

(ङ) कानून या कार्यालयों की भाषा में—
- कार्य-कुशलता के लिए कर्मचारियों को सरकार द्वारा पुरस्कृत किया जायेगा।
- बिना आज्ञा प्रवेश करना दंडनीय अपराध है।
- होली का अवकाश रहेगा।

भाववाच्य के प्रयोग स्थल

(क) विवशता, असमर्थता व्यक्त करने हेतु निषेधात्मक भाववाच्य का प्रयोग किया जाता है। उदाहरणार्थ—
- यहाँ तो खड़ा भी नहीं हुआ जाता।
- आज मुझसे चला भी नहीं जा रहा है।
- इस जगह सारी रात कैसे रहा जाएगा?

(ख) आज्ञा अथवा अनुमति प्राप्त करने हेतु—
- बस अब चला जाए।
- थोड़ा आराम कर लिया जाए।
- कहीं फिल्म देखने चला जाए।

प्रश्न अभ्यास

1. वाच्य किन्हें कहते हैं? वाच्यों के तीन भेद सोदाहरण बताइए।

2. निम्नलिखित वाक्यों में निर्देशानुसार परिवर्तन कीजिए।

(i) सुरेश द्वारा कल पत्र लिखा जायेगा। (कर्तृवाच्य)
(ii) मैंने वह दृश्य नहीं देखा। (कर्मवाच्य)
(iii) शोभना गीत गाती है। (कर्मवाच्य)
(iv) रमेश पाठ याद करता है। (कर्मवाच्य)
(v) मोहन से पढ़ा नहीं जाता। (कर्तृवाच्य)
(vi) बच्चा रोता है। (भाववाच्य)
(vii) बच्चे खेलेंगे। (भाववाच्य)
(viii) मैं समाचारपत्र पढ़ता हूँ। (कर्मवाच्य)
(ix) यह मकान नानाजी ने बनवाया था। (कर्मवाच्य)
(x) पर्यटकों के द्वारा कुतुबमीनार देखी गई। (कर्तृवाच्य)
(xi) मोर नहीं नाचते। (भाववाच्य)
(xii) चिड़िया नहीं बैठी। (भाववाच्य)
(xiii) रोगी के द्वारा दवाई खाई गई। (कर्तृवाच्य)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(xiv) क्या सोनिया बाजार जाएगी? (कर्मवाच्य)

(xv) जीवन ट्रक चलाता है। (कर्मवाच्य)

(xvi) अध्यापिका जोर से नहीं बोलती। (भाववाच्य)

(xvii) आतंकवादियों द्वारा बम विस्फोट किया गया। (कर्तृवाच्य)

(xviii) ड्राईवर के द्वारा बस रोकी गई। (कर्तृवाच्य)

(xix) कनुप्रिया नहीं गाऐगी। (भाववाच्य)

(xx) जीवन ने पूजा की। (कर्मवाच्य)

(xxi) बंदर द्वारा बच्चे को काटा गया। (कर्तृवाच्य)

(xxii) महादेवी नहीं उठती। (भाववाच्य)

(xxiii) मुख्यमंत्री मुस्कराया। (भाववाच्य)

(xxiv) अशोक जैन ने पुस्तक लिखी। (कर्मवाच्य)

(xxv) नरेंद्र कोहली द्वारा उपन्यास लिखा गया। (कर्तृवाच्य)

(xxvi) पुष्पलता द्वारा रुपये दिए गए। (कर्तृवाच्य)

(xxvii) दीपिका ने खाना बनाया। (कर्मवाच्य)

(xxviii) घोड़ा हिनहिनाता है। (भाववाच्य)

(xxix) दीपक ने जन्मदिन मनाया। (कर्मवाच्य)

(xxx) भक्तों के द्वारा भजन गाए गए। (कर्तृवाच्य)

(xxxi) राम नहीं पीता। (भाववाच्य)

(xxxii) कुलियों ने सामान नहीं उठाया। (भाववाच्य)

(xxxiii) दादीमाँ ने कहानी सुनाई। (कर्मवाच्य)

(xxxiv) मोहित के द्वारा 'हनुमान चालीसा' पढ़ा गया। (कर्तृवाच्य)

(xxxv) सैनिक नहीं डरा। (भाववाच्य)

(xxxvi) सौम्या सुबह को नहीं उठ सकी। (भाववाच्य)

(xxxvii) कलाकार मूर्ति गढ़ता है। (कर्मवाच्य)

(xxxviii) बच्चा खूब रोया। (भाववाच्य)

(xxxix) बच्चे शांत नहीं रह सके। (भाववाच्य)

(xl) रीमा चित्र बनाती है। (कर्मवाच्य)

(xli) सास नहीं लड़ सकी। (भाववाच्य)

(xlii) राजा द्वारा प्रजा को उपहार दिए गए। (कर्तृवाच्य)

(xliii) हम इतनी दूर नहीं रह सकते। (भाववाच्य)

(xliv) वह दिन में फल खाता है। (कर्मवाच्य)

(xlv) लड़कों के खूब पढ़ा गया। (कर्तृवाच्य)

(xlvi) लड़की आँगन में सो रही थी। (भाववाच्य)

(xlvii) सुदेश नाटक खेलता है। (कर्मवाच्य)

(xlviii) सविता से दूध नहीं पिया जा रहा है। (कर्तृवाच्य)

(xlix) गर्मियों में लोग खूब नहाते हैं। (भाववाच्य)

(l) उमेश हँसा। (भाववाच्य)

(li) चिड़िया घोसलों में सोती हैं। (भाववाच्य)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(lii) मिक्की ने खाना खाया। (कर्मवाच्य)

(liii) उनसे यह दृश्य नहीं देखा गया। (कर्तृवाच्य)

(liv) हम आज रात यहीं ठहरेंगे। (भाववाच्य)

(lv) राधा गीत नहीं गा सकी। (भाववाच्य)

(lvi) हलवाई द्वारा मिठाई बनाई गई। (कर्तृवाच्य)

(lvii) हम रोज नहाते हैं। (भाववाच्य)

(lviii) युवराज सिंह से अच्छा क्रिकेट खेला जाता है। (कर्तृवाच्य)

(lix) बच्चा तैरता है। (भाववाच्य)

(lx) करीम पतंग उड़ा रहा है। (कर्मवाच्य)

(lxi) हसीना द्वारा कल पत्र लिखा जायेगा। (कर्तृवाच्य)

3. **निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त वाच्य का नाम बताइए।**

(i) रात भर कैसे जागा जायेगा। ....

(ii) रमेश पत्र लिखता है। ....

(iii) बच्चा तैरता है। ....

(iv) मुझसे पत्र नहीं पढ़ा जाता। ....

(v) निक्की ने खाना खाया। ....

(vi) नानी से कहानी नहीं कही जाती। ....

(vii) जाड़ों में गर्म पानी से नहाते हैं। ....

(viii) मैं पढ़ नहीं सकता। ....

(ix) उसने भोजन कर लिया है। ....

(x) मुझसे सहा नहीं जाता। ....

(xi) पक्षी आकाश में उड़ते हैं। ....

(xii) पेड़ कट गए हैं। ....

(xiii) 2007 में भारत ने दूसरी बार विश्व कप ट्वेंटी-ट्वेंटी जीता। ....

(xiv) आपको सूचित किया जाता है कि कल अवकाश रहेगा। ....

(xv) मोहिनी से पुस्तक पढ़ी जा रही है। ....

4. **निम्नलिखित वाक्यों में वाच्य परिवर्तन कीजिए।**

(i) अशोक पुस्तक पढ़ता है।

(ii) पुलिस द्वारा चोर पकड़ा गया।

(iii) आप शतरंज खेलेंगे।

(iv) तुम दान दोगे।

(v) पक्षी उड़ते हैं।

(vi) रमा दूध पी रही है।

(vii) बच्चे खेलेंगे।

(viii) बालिका सो रही थी।

(ix) बालक से पत्र लिखा जाता है।

(x) रजिया ने पुस्तक पढ़ी।

(xi) आकाश में पक्षी उड़ते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(xii) कपड़े धोबी ने धोए हैं।
(xiii) मुझसे चला नहीं जाता।
(xiv) मैं अब और नहीं चल सकता।
(xv) कहारों ने डोली उठाई।
(xvi) लालकिला शाहजहाँ ने बनवाया था।
(xvii) माता ने पुत्र को सुला दिया।
(xviii) माता ने बच्चों को प्यार किया।
(xix) वह हमें मूर्ख समझता है।
(xx) मेरा मित्र इस समस्या पर विचार कर रहा है।

5. निम्नलिखित वाक्यों को कर्मवाच्य में परिवर्तित कीजिए।

(i) रमेश पाठ याद करता है।
(ii) मैं समाचारपत्र पढ़ता हूँ।
(iii) यह मकान नानाजी ने बनवाया था।
(iv) क्या सोनिया बाजार जायेगी?
(v) जीवन ट्रक चलाता है।
(vi) जीवन ने पूजा की।
(vii) अशोक जैन ने पुस्तक लिखी।

6. निम्नलिखित वाक्यों को कर्तृवाच्य में परिवर्तित कीजिए।

(i) बंदर द्वारा बच्चे को काटा गया।
(ii) आतंकवादियों द्वारा बम विस्फोट किया गया।
(iii) ड्राईवर के द्वारा बस रोकी गई।
(iv) रोगी के द्वारा दवाई खाई गई।
(v) मोहन से पढ़ा नहीं जाता।
(vi) पर्यटकों के द्वारा कुतुबमीनार देखी गई।

7. निम्नलिखित वाक्यों को भाववाच्य में परिवर्तित कीजिए।

(i) बच्चा रोता है।
(ii) बच्चे खेलेंगे।
(iii) मोर नहीं नाचते।
(iv) चिड़िया नहीं बैठी।
(v) अध्यापिका जोर से नहीं बोलती।
(vi) कनुप्रिया नहीं गायेगी।
(vii) महादेवी नहीं उठती।
(viii) मुख्यमंत्री मुस्कराया।

गत परीक्षाओं में पूछ गए प्रश्न

1. निम्नलिखित वाक्यों में वाच्य परिवर्तन कीजिए। *(A.I. CBSE 1991)*

(i) मैं यह भाषा नहीं पढ़ सकूँगा। *(CBSE 1991F)*
(ii) ताजमहल शाहजहाँ द्वारा बनवाया गया था। *(CBSE 1991F)*
(iii) मेरा मित्र उस समस्या पर विचार कर रहा है।

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(iv) बालक पत्र लिखता है। (CBSE 1992C)

(v) आप फूल तोड़ेंगे। (CBSE 1992C)

(vi) आपने पुस्तक पढ़ी। (CBSE 1992C)

(vii) लड़की के द्वारा आँगन में सोया जा रहा है। (CBSE 1992C)

(viii) रजिया ने पुस्तक पढ़ी। (CBSE 1994)

(ix) वह चुपचाप नहीं बैठ सकता। (CBSE 2002)

(x) उससे पढ़ा नहीं जा सकता। (CBSE 2004)

(xi) शोभा भाग नहीं सकती। (CBSE 2004)

(xii) बच्चे खेल रहे हैं। (A.I. CBSE 2004)

(xiii) सुरेश हँस नहीं पाता। (A.I. CBSE 2004)

(xiv) गर्मियों में छत पर सोते हैं। (A.I. CBSE 2004)

(xv) क्या मुझे धोखा दिया है? (CBSE 2004F)

(xvi) बच्चे निबंध लिख रहे हैं। (CBSE 2004F)

(xvii) बाढ़-पीड़ितों को सहायता दी। (CBSE 2004F)

2. **भाव-वाच्य में बदलिए—**

(i) पक्षी उड़ते हैं। (A.I. CBSE 1992)

(ii) बच्चे खेलेंगे। (A.I. CBSE 1993; CBSE 1992)

(iii) पक्षी आकाश में उड़ते हैं। (CBSE 1993)

(iv) बच्चा रोता है। (A.I. CBSE 2000)

(v) वह चुपचाप नहीं बैठ सकता। (CBSE 2002)

3. **कर्मवाच्य में बदलिए—**

(i) अशोक पुस्तक पढ़ता है। (CBSE 1992)

(ii) मोहन फूल तोड़ता है। (CBSE 1992F)

(iii) माँ ने पुत्र को सुला दिया। (A.I. CBSE 1993)

(iv) तुम फूल तोड़ोगे। (CBSE 1993F)

(v) मैंने खाना खाया। (A.I. CBSE 2000)

4. **कर्तृवाच्य में बदलिए—**

(i) बालक से पत्र लिखा जाता है। (CBSE 1992)

(ii) बच्चों से खेला जायेगा। (CBSE 1992)

(iii) अमित से दौड़ा नहीं जाता। (A.I. CBSE 1999)

(iv) सुरेश द्वारा कल पत्र लिखा जायेगा। (CBSE 1999)

(v) मोहन से पढ़ा नहीं जाता। (CBSE 2000)

5. **वाच्य बताइए—**

(i) रात भर कैसे जागा जायेगा? (A.I. CBSE 1994)

(ii) आपको सूचित किया जाता है। (A.I. CBSE 1995)

(iii) दूध पिया नहीं जा रहा है। (CBSE 1995)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

18

समास

दो या दो से अधिक शब्दों के योग से नए शब्दों का निर्माण करने की प्रक्रिया **समास** कहलाती है। इस विधि द्वारा **बने शब्दों** को **समस्त-पद** कहा जाता है। समस्त पदों को अलग करके शब्दों को पूर्ववत् करने की प्रक्रिया **समास विग्रह** कहलाती है। उदाहरण के लिए—

'अकाल से पीड़ित' पद में दो पद हैं—'अकाल' व 'पीड़ित'। समास होने पर एक नया शब्द बनेगा—अकालपीड़ित। पहले पद को पूर्वपद तथा दूसरे पद को उत्तरपद कहा जाता है।

समास में दोनों या अन्य पद मिलकर एक संक्षिप्त रूप धारण कर लेते हैं तथा बीच की विभक्तियों का लोप हो जाता है। समास लागू होने पर नियमानुसार संधिविच्छेद भी संभव है।

समास के प्रकार

समास के प्रमुख प्रकार हैं—1. तत्पुरुष समास; कर्मधारय समास; द्विगु समास; बहुव्रीहि समास; द्वंद्व समास; व अव्ययीभाव समास। अब हम इन सभी प्रकारों का विस्तृत अध्ययन करेंगे।

1. तत्पुरुष समास

तत्पुरुष का शब्दार्थ है—**उस का पुरुष**। तत्पुरुष समास में उत्तरपद प्रधान होता है तथा पूर्वपद गौण होता है। उत्तरपद प्राय: विशेष्य व पूर्वपद प्राय: विशेषण होता है। उदाहरण के लिए—धर्म की शाला = धर्मशाला (स्त्रीलिंग); सेवा का धर्म = सेवाधर्म (पुल्लिंग)।

इसके अलावा इस समास में सदैव पहले पद के विभक्ति चिह्नों का लोप कर दिया जाता है। समास खंड में जिस विभक्ति का लोप होता है, उसी के नाम पर पुरुष के उपभेद का नाम होता है।

तत्पुरुष के भेद

तत्पुरुष समास के निम्नलिखित भेद हैं—

कर्मपुरुष—जहाँ पूर्वपद में कर्मकारक की विभक्ति का लोप हो, वहाँ 'कर्मपुरुष' होता है। उदाहरणार्थ—

समस्तपद	विग्रह	समस्तपद	विग्रह
गिरहकट	गिरह को काटने वाला	शरणागत	शरण को आगत (प्राप्त)
यशप्राप्त	यश को प्राप्त	ग्रामगत	ग्राम को गत
स्वर्गगत	स्वर्ग को गत	गृहागत	गृह को आगत
मक्खनचोर	मक्खन को चुराने वाला	देशगत	देश को गया हुआ
चिड़ीमार	चिड़ियों को मारने वाला	गाँठकट	गाँठ को काटने वाला।

करण तत्पुरुष—जहाँ पूर्वपद में करण कारक की विभक्ति का लोप हो, वहाँ 'करण पुरुष' होता है। उदाहरणार्थ—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समस्तपद	विग्रह	समस्तपद	विग्रह
कष्टसाध्य	कष्ट से साध्य	शोकाकुल	शोक से आकुल
मनचाहा	मन से चाहा	ज्ञानयुक्त	ज्ञान से युक्त
गुरुदत्त	गुरू द्वारा दत्त	अनुभवजन्म	अनुभव से जन्म
रसभरा	रस से भरा	रोगग्रस्त	रोग से ग्रस्त
ईश्वरदत्त	ईश्वर द्वारा दत्त	प्रेमातुर	प्रेम से आतुर
हस्तलिखित	हस्त से लिखित	मदान्ध	मद से अन्धा
कीर्तियुक्त	कीर्ति से युक्त	पददलित	पद से दलित
अकालपीड़ित	अकाल से पीड़ित	दुखसंतप्त	दुख से संतप्त
भुखमरा	भूख से मरा	चिंतातुर	चिंता से आतुर
धनहीन	धन से हीन	करुणापूर्ण	करुणा से पूर्ण
मनमाना	मन से माना हुआ	मुँहमाँगा	मुँह से माँगा हुँआ
दयार्द्र	दया से आर्द्र	स्वरचित्त	स्वर से चित्त

संप्रदान तत्पुरुष—जहाँ पूर्वपद में संप्रदान की विभक्ति का लोप हो, वहाँ 'संप्रदान तत्पुरुष' होता है। उदाहरणार्थ—

समस्तपद	विग्रह	समस्तपद	विग्रह
देवबलि	देव के लिए बलि	टिकटघर	टिकट हेतु घर
बलिपशु	बलि के लिए पशु	विद्यालय	विद्या के लिए आलय
राहखर्च	राह के लिए खर्च	गौशाला	गौ के लिए शाला
देशार्पण	देश के लिए अर्पण	गुरुदक्षिणा	गुरु के लिए दक्षिणा
रणनियंत्रण	रण के लिए नियंत्रण	देशभक्ति	देश के लिए भक्ति
हवन-सामग्री	हवन के लिए सामग्री	आरामकुर्सी	आराम के लिए कुर्सी
सत्याग्रह	सत्य के लिए आग्रह	हथकड़ी	हाथ के लिए कड़ी
यज्ञशाला	यज्ञ के लिए शाला	युद्धभूमि	युद्ध के लिए भूमि
डाकगाड़ी	डाक के लिए गाड़ी	मालगोदाम	माल के लिए गोदाम
हथकरघा	हाथ के लिए करघा	मालगाड़ी	माल के लिए गाड़ी
पुस्तकालय	पुस्तक के लिए आलय		

अपादान तत्पुरुष समास—जहाँ पूर्वपद में अपादान की विभक्ति (से) का लोप हो, वहाँ 'अपादान तत्पुरुष समास' होता है। उदाहरणार्थ—

समस्तपद	विग्रह	समस्तपद	विग्रह
पदच्युत	पद से च्युत	देशनिकाला	देश से निकाला
विद्याहीन	विद्या से हीन	गुणहीन	गुण से हीन
आशातीत	आशा से अतीत	जातिच्युत	जाति से च्युत
स्वर्गपतित	स्वर्ग से पतित	भयभीत	भय से भीत
नकटा	नाक से कटा	पथभ्रष्ट	पथ से भ्रष्ट
जन्मांध	जन्म से अंधा	ऋणमुक्त	ऋण से मुक्त
शस्त्रयुक्त	शस्त्रों से युक्त		

संबंध तत्पुरुष—जहाँ पूर्वपद में संबंध तत्पुरुष की विभक्ति (का, के, की) का लोप हो जाता है, वहाँ 'संबंध तत्पुरुष समास' होता है। उदाहरणार्थ—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समस्तपद	विग्रह	समस्तपद	विग्रह
राजकुमार	राज का कुमार	राजप्रासाद	राजा का प्रासाद
प्रेमसागर	प्रेम का सागर	राष्ट्रपति	राष्ट्र का पति
गंगातट	गंगा का तट	राजपुरुष	राजा का पुरुष
लोकतंत्र	लोगों का तंत्र	गणपति	गण का पति
गृहस्वामी	गृह का स्वामी	राजदूत	राजा का दूत
जीवनसाथी	जीवन का साथी	भारतवासी	भारत का वासी
आज्ञानुसार	आज्ञा के अनुसार	देवमूर्ति	देव की मूर्ति
घुड़दौड़	घोड़ों की दौड़	पूर्णशाला	पूर्ण की शाला
राजसभा	राजा की सभा	रामभक्ति	राम की भक्ति
मधुमक्खी	मधु की मक्खी	कार्यसिद्धि	कार्य की सिद्धि
देवालय	देवों का आलय	पूँजीपति	पूँजी का पति
गंगाजल	गंगा का जल	उद्योगपति	उद्योग का पति
प्रजापति	प्रजा का पति	पनचक्की	पानी की चक्की
श्रमदान	श्रम का दान	ईश्वरभक्त	ईश्वर का भक्त
रामभक्त	राम का भक्त	सेनाध्याक्ष	सेना का अध्यक्ष
मृत्युदंड	मृत्यु का दंड	राष्ट्रपिता	राष्ट्र का पिता
पराधीन	पर के अधीन	राजनीति	राज की नीति
राजरानी	राजा की रानी	राजकन्या	राजा की कन्या
जलधारा	जल की धारा	दिनचर्या	दिन की चर्या

अधिकरण तत्पुरुष समास—जहाँ पूर्वपद में अधिकरण तत्पुरुष की विभक्ति (पर) का लोप हो जाता है, वहाँ 'अधिकरणतत्पुरुष समास' होता है। उदाहरणार्थ—

समस्तपद	विग्रह	समस्तपद	विग्रह
देशाटन	देश में आटन	जलमग्न	जल में मग्न
शरणागत	शरण में आगत	नगरवास	नगर में वास
धर्मवीर	धर्म में वीर	गृहप्रवेश	गृह में प्रवेश
सिरदर्द	सिर में दर्द	वनवास	वन में वास
स्नेहमग्न	स्नेह में मग्न	कुलश्रेष्ठ	कुल में श्रेष्ठ
जगबीती	जग पर बीती	जगतप्रसिद्ध	जगत में प्रसिद्ध
दानवीर	दान में वीर	रणवीर	रण में वीर
लोकप्रिय	लोक में प्रिय	ग्रामवास	ग्राम में वास
ध्यानमग्न	ध्यान में मग्न	कलाकुशल	कला में कुशल
पुरुषोत्तम	पुरुषों में उत्तम	घुड़सवार	घोड़े पर सवार

2. कर्मधारय समास

जिसका पहला पद विशेषण हो और दूसरा पद विशेष्य अथवा एक पद **उपमान** तथा दूसरा पद **उपमेय** हो और दोनों पद मिलकर एक इकाई बनते हों तो वह **कर्मधारय समास** कहलाता है। कुछ उदाहरण अग्रवर्णित हैं—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(क) विशेषण-विशेष्य कर्मधारय—

समस्तपद	विग्रह
नीलकमल	नीला है जो कमल
पुरुषोत्तम	पुरुषों में है जो उत्तम
परमानंद	परम है जो आनंद
भला मानस	भला है जो मानस
लाल टोपी	लाल है जो टोपी
महात्मा	महान है जो आत्मा
नीलांबर	नीला है जो अंबर
काली मिर्च	काली है जो मिर्च
महाविद्यालय	महान है जो विद्यालय
दहीबड़ा	दही में है जो बड़ा
पनचक्की	पानी में है जो चक्की
कापुरुष	कायर है जो पुरुष
कुबुद्धि	बुरी है जो बुद्धि
पीतांबर	पीत है जो अंबर
पवनचक्की	पवन से चलने वाली चक्की
पर्णशाला	पर्ण से निर्मित शाला

समस्तपद	विग्रह
महादेव	महान है जो देव
श्वेतांबर	श्वेत है जो अंबर
सत्धर्म	सत है जो धर्म
नीलगगन	नीला है जो गगन
अंधकूप	अंधा है जो कूप
नीलगाय	नीली है जो गाय
महाराजा	महान है जो राजा
अधपका	आधा है जो पका
दुरात्मा	दुर (बुरी) है जो आत्मा
नीलकंठ	नीला है जो कंठ
महाजन	महान है जो जन
गोबरगणेश	गोबर से बना गणेश
पर्णकुटी	पर्ण से बनी कुटी
प्रधानाचार्य	प्रधान है जो आचार्य
रेलगाड़ी	रेल पर चलने वाली गाड़ी
घृतन्न	घृत से युक्त अन्न

(ख) उपमेयोपमान कर्मधारय—

समस्तपद	विग्रह
चंद्रमुख	चंद्र के समान मुख
मुखचंद्र	मुखरूपी चंद्र
कमलनयन	कमल के समान नयन
वचनामृत	वचनरूपी अमृत
क्रोधाग्नि	क्रोधरूपी अग्नि
नरसिंह	नर रूपी सिंह
कुसुमकोमल	कुसुम के समान कोमल
ग्रंथरत्न	ग्रंथरूपी रत्न

समस्तपद	विग्रह
चरणकमल	कमल के समान चरण
भुजदंड	दंड के समान भुजा
कनकलता	कनक के समान लता
घनश्याम	घन के समान श्याम
देहलता	देहरूपी लता
करकमल	कर रूपी कमल
विद्याधन	विद्या रूपी धन

3. द्विगु समास

जहा समस्तपद के पूर्वपद में संख्यावाचक विशेषण होता है, वहाँ द्विगुसमास होता है। उदाहरण के लिए—

समस्तपद	विग्रह	समस्तपद	विग्रह
द्विगु	दो गायों का समाहार	सतसई	सात सौ (दोहों) का समाहार
त्रिलोक	तीन लोकों का समाहार	त्रिभुवन	तीन भुवनों (लोकों) का समूह
नवरत्न	नौ रत्नों का समाहार	पंचवटी	पाँच वटों (वृक्षों) का समाहार
त्रिफला	तीन फलों का समाहार	अष्टाध्यायी	आठ अध्यायों का समाहार
सप्ताह	सात दिनों का समूह	पंचतत्व	पाँच तत्वों का समूह
चौमासा	चार मासों का समूह	नवरात्र	नौ रात्रियों का समूह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS MoE 2025 Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नवरात्र	नौ रात्रियों का समूह	दोपहर	दो पहर का समूह
दोपहर	दो पहर का समाहार	अठन्नी	आठ आनों का समूह
दोराहा	दो राहों का समाहार	अठन्नी	आठ आनों का समूह
चारपाई	चार पैरों का समाहार	अष्टसिद्धि	आठ सिद्धियों का समाहार
अष्टसिद्धी	आठ सिद्धियों का समाहार	नवनिधि	नौ निधियों का समाहार
पंचतंत्र	पाँच तंत्रों का समाहार	पंजाब	पाँच आबों (नदियों) का समूह
त्रिवेणी	तीन वेणियों का समाहार	चवन्नी	चार आनों का समाहार
चतुर्मुख	चार मुखों का समूह	शताब्दी	शत् (सौ) शब्दों (वर्षों) का समाहार
सप्तद्वीप	सात द्वीपों का समूह	चौराहा	चार राहों का समूह
नवग्रह	नव ग्रहों का समाहार	चतुर्भुज	चार भुजाओं का समाहार

4. द्वंद्व समास

जिस समस्तपद में दोनों पद समान हों, वहाँ द्वंद्व समास होता है। इसमें दोनों पद प्रधान होते हैं तथा विग्रह करने में दोनों पदों के बीच **और, या, तथा, अथवा** जैसे योजक शब्दों का प्रयोग होता है। इस समास में दोनों पदों को मिलाते समय मध्य-स्थित योजक लुप्त हो जाता है। उदाहरण के लिए—

समस्तपद	विग्रह	समस्तपद	विग्रह
राधा-कृष्ण	राधा और कृष्ण	राजा-रंक	राजा और रंक
दाल-रोटी	दाल और रोटी	राम-लक्ष्मण	राम और लक्ष्मण
आटा-दाल	आटा और दाल	दाल-चावल	दाल और चावल
माता-पिता	माता और पिता	सुख-दुख	सुख और दुख
छोटा-बड़ा	छोटा और बड़ा	लोभ-मोह	लोभ और मोह
नर-नारी	नर और नारी	वेद-पुराण	वेद और पुराण
गुण-दोष	गुण और दोष	हानि-लाभ	हानि और लाभ
अन्न-जल	अन्न और जल	धूप-दीप	धूप और दीप
धनी-निर्धन	धनी और निर्धन	पृथ्वी-आकाश	पृथ्वी और आकाश
खट्टा-मीठा	खट्टा और मीठा	गंगा-जमना	गंगा और जमना
हार-जीत	हार और जीत	भला-बुरा	भला और बुरा
अमीर-गरीब	अमीर और गरीब	पाप-पुण्य	पाप और पुण्य
धर्म-अधर्म	धर्म और अधर्म	जन्म-मरण	जन्म और मरण
खरा-खोटा	खरा और खोटा	रात-दिन	रात और दिन
देश-विदेश	देश और विदेश	पूर्व-पश्चिम	पूर्व और पश्चिम
पृथ्वी-आकाश	पृथ्वी व आकाश	नदी-नाले	नदी व नाले
धनी-मानी	धनी और मानी	भीम-अर्जुन	भीम व अर्जुन
बच्चे-बूढ़े	बच्चे और बूढ़े	दूध-दही	दूध व दही
दाल-भात	दाल और भात	राजा-प्रजा	राजा व प्रजा
जल-थल	जल व थल	ऊँच-नीच	ऊँच व नीच

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

5. बहुव्रीहि समास

जहाँ पहला पद और दूसरा पद मिलकर किसी तीसरे पद की ओर इंगित करते हैं, वहाँ बहुव्रीहि समास होता है। इस समास में दोनों खंड प्रधान नहीं होते और समस्तपद अपने पदों से भिन्न किसी अन्य संज्ञा का बोध कराते हैं। इनका विग्रह करने पर विशेषतः 'वाला', 'वाली', 'जिसका', 'जिसकी', 'जिसके' आदि शब्द पाए जाते हैं। उदाहरण के लिए—

समस्तपद	विग्रह	समस्तपद	विग्रह
महावीर	महान है जो वीर (हनुमान जी)	प्रधानमंत्री	मंत्रियों में प्रधान है जो
उदार ह्रदय	उदार है जिसका ह्रदय	कुरूप	बुरे रूप वाला
अनंत	अंत नहीं जिसका	मृगलोचन	मृग जैसे लोचन हैं जिसके
मृत्युंजय	मृत्यु को जीतने वाला (शिव)	कुसुमाकर	कुसुमों (फूलों) का खजाना है जो (बसंत)
पद्मासना	पद्म (कमल) आसन है जिसका (सरस्वती)	चतुर्भुज	चार भुजाएँ हैं जिसकी (विष्णु)
सहस्रबाहु	सहस्र भुजाएँ हैं जिसकी (कार्तवीर्य अर्जुन)	चतुर्मुख	चार हैं मुख जिसके (ब्रह्मा)
सुकेशी	सुंदर केश (किरणें) हैं जिसके (चाँद)	मृगेंद्र	मृगों का इंद्र (राजा) है जो (सिंह)
मयूरवाहन	मयूर की सवारी है जिसकी (कार्तिकेय)	घनश्याम	घन के समान श्याम है जो (कृष्ण)
अनहोनी	न होने वाली घटना	चंद्रशेखर	शेखर (माथे) पर चंद्र है जिसके (शिव)
पंकज	पंक में पैदा हो जो (कमल)	जितेंद्रीय	जीत ली हैं इंद्रियाँ जिसने (जितेंद्र)
पतझड़	झड़ते हैं पत्ते जिसमें (ऋतु विशेष)	अंशुमाली	अंशु (किरणें) हैं माला जिसकी (सूर्य)
चक्रपाणि	चक्र है हाथ में जिसके (विष्णु)	सुलोचना	सुंदर हैं लोचन जिसके (सुंदर नयनों वाली स्त्री)
दशानन	दस हैं आनन (शीश) जिसके (रावण)	अल्पबुद्धि	अल्प है जिसकी बुद्धि
षडानन्	षड् (छः) है आनन (मुख) जिसके (कार्तिकेय)	पीतांबर	पीत अंबर (वस्त्र) वाला (श्रीकृष्ण)
तिरंगा	तीन रंगों वाला (भारत का राष्ट्रध्वज)	गजानन	गज के समान आनन (शीश) वाला (गणेश)
दशमुख	दस मुखों वाला (रावण)	लंबोदर	लंबा है उदर जिसका (गणेश)
चक्रधर	चक्र को धारण करने वाला (विष्णु)	अष्टाध्यायी	आठ अध्यायों वाला (पाणिनी का व्याकरण)
पंचानन	पांच हैं आनन जिसके (सिंह या शिव)	कमलनयन	कमल के समान नयन हैं जिसके (विष्णु)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नीलकंठ	नीला है कंठ जिसका (शंकर)	दिगंबर	दिशाएँ ही हैं अंबर (वस्त्र) जिसके (शंकर या जैन मुनि)
चारपाई	चार हैं पाए जिसके	त्रिलोचन	तीन हैं लोचन जिसके (शंकर)
विषधर	विष को धारण करने वाला (शंकर)	शूलपाणि	शूल है पाणि में जिसके (शंकर)
वीणापाणि	वीणा है पाणि में जिसके (सरस्वती)		

6. अव्ययीभाव समास

जिस समास में पहला पद अव्यय हो, उसे अव्ययीभाव समास कहा जाता है। इसका प्रथम पद प्रधान होता है तथा इस प्रक्रिया से बना समास भी अव्यय की भाँति ही कार्य करता है। उदाहरण के लिए—

समस्तपद	विग्रह	समस्तपद	विग्रह
आमरण	मरण-पर्यंत	आसमुद्र	समुद्र-पर्यंत
आजन्म	जन्म से लेकर	आजानु	जानुओं (घुटनों) तक
आज्ञानुसार	आज्ञा के अनुसार	यथाविधि	विधि के अनुसार
संभव	जैसा संभव है	यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार
भरपेट	पेट भरकर	द्वार-द्वार	हर एक द्वार
घर-घर	हर एक घर	रातों-रात	रात ही रात में
बीचों-बीच	बीच ही बीच में	हाथों-हाथ	हाथ ही हाथ में
साफ-साफ	बिल्कुल स्पष्ट	बेमतलब	मतलब के बिना
नि:संदेह	संदेह रहित	यथामति	मति के अनुसार
यथाशीघ्र	जितना शीघ्र हो सके	यथासामर्थ्य	सामर्थ्य के अनुसार
यथोचित	जितना उचित हो	प्रत्यक्ष	आँखों के सामने
प्रतिदिन	दिन-दिन	प्रत्येक	एक-एक
प्रतिवर्ष	हर वर्ष। वर्ष-वर्ष	अन्जाने	जाने बिना
अनुरूप	रूप के योग्य	बेशक	बिना संदेह
बखूबी	खूबी के साथ	बेकाम	काम के बिना
बाकायदा	कायदे के अनुसार	बेफायदा	फायदे के बिना
सादर	आदर सहित	अभिमुख	मुख के आगे

समासों में अंतर

कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में अंतर

कर्मधारय समास में दूसरा पद प्रधान (विशेष्य) होता है तथा पहला पद दूसरे प्रधान पद के विशेषण का कार्य करता है। उदाहरण के लिए, महात्मा = महान है जो आत्मा। यहाँ 'महान' शब्द 'आत्मा' विशेष्य का विशेषण है। इसके विपरीत बहुव्रीहि समास पद में समस्तपद किसी संज्ञा के लिए विशेषण का कार्य करता है तथा दोनों पद मिलकर किसी तीसरे पद की ओर संकेत करते हैं। जैसे—त्रिलोचन = तीन हैं लोचन जिसके (शिव)। कुछ अन्य उदाहरण प्रस्तुत हैं—

पीतांबर — पीत के समान अंबर (कर्मधारय)
पीत अंबर है जिसका अर्थात् श्रीकृष्ण (बहुव्रीहि)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नीलकंठ	नीला कंठ (कर्मधारय)	
	नीला है कंठ जिसका (शिव)	
दिव्यदृष्टि	दिव्य है जो दृष्टि (कर्मधारय)	
	दिव्य है दृष्टि जिसकी वह 'व्यक्ति विशेष' (बहुव्रीहि)	

द्विगु और बहुव्रीहि समास में अंतर

द्विगु समास में समस्तपद का प्रथम पद दूसरे पद अर्थात् विशेष्य की संख्यात्मक विशेषता को प्रकट करता है। दूसरी ओर बहुव्रीहि समास में संख्यात्मक प्रथम पद व दूसरा पद मिलकर किसी अन्य तीसरे पद की ओर संकेत करते हैं। उदाहरणतया—

अष्टाध्यायी	अष्ट (आठ) अध्यायों का समूह	(द्विगु समास)
	आठ हैं अध्याय जिसके (पाणिनी का व्याकरण)	(बहुव्रीहि समास)
चारपाई	चार पायों का समूह	(द्विगु)
	चार हैं पाए जिसके (चारपाई)	(बहुव्रीहि समास)
त्रिफला	तीन फलों का समाहार	(द्विगु)
	तीन रंगों वाला अर्थात् भारत का राष्ट्रध्वज	(बहुव्रीहि)
त्रिनेत्र	तीन नेत्रों का समूह	(द्विगु)
	तीन हैं नेत्र जिसके अर्थात् शंकर	(बहुव्रीहि)
तिरंगा	तीन रंगों का समाहार	(द्विगु)
	तीन रंगों वाला अर्थात् भारत का राष्ट्रध्वज	(बहुव्रीहि)

कर्मधारय व द्विगु समास में अंतर

कर्मधारय समास में समस्तपद का एक पद गुणवाचक विशेषण और दूसरा विशेष्य होता है, परंतु द्विगु में पहला पद संख्यावाचक विशेषण तथा दूसरा विशेष्य होता है। उदाहरण के लिए—

काली मिर्च	काली है जो मिर्च	(कर्मधारय)
दोपहर	दो पहरों का समाहार	(द्विगु)
कनकलता	कनक के समान लता	(कर्मधारय)
पंजाब	पाँच आबों का समूह	(द्विगु)

प्रश्न अभ्यास

1. समास की परिभाषा सोदाहरण दीजिए।
2. समास व संधि में अंतर स्पष्ट कीजिए। समुचित उदाहरण भी दीजिए।
3. समास के भेदों के नाम उदाहरण सहित बताइए।
4. सोदाहरण अंतर स्पष्ट कीजिए—
   बहुव्रीहि व कर्मधारय समास
   द्विगु व बहुव्रीहि समास
   कर्मधारय व द्विगु समास
5. निम्नलिखित विग्रहों के समस्तपद बनाकर समास का नाम लिखिए—

विग्रह रूप	*समस्तपद*	*समास का नाम*
काठ की पुतली	....	....
गृह प्रवेश	....	....

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

परम है जो आनंद	....	....
अश्रु लाने वाली गैस	....	....
देह रूपी लता	....	....
चार मासों का समूह	....	....
गुण और दोष	....	....
ग्राम में वास	....	....
बिना नाथ के	....	....
दही में डूबा बड़ा	....	....
महान है जो राजा	....	....
ग्रंथरूपी रत्न	....	....
दो राहों का समाहार	....	....
अन्न और जल	....	....
घोड़े पर सवार	....	....
विश्व को भरने वाला	....	....
शीशों से बना महल	....	....
नीली है जो गाय	....	....
क्रोध रूपी अग्नि	....	....
तीन फलों का समाहार	....	....

6. विग्रह करके समास का नाम बताइए—

समस्तपद	समास का नाम	विग्रह
आसमुद्र	....	....
पूरब-पश्चिम	....	....
मनसिज	....	....
पथभ्रष्ट	....	....
राजकुमार	....	....
घनश्याम	....	....
अनंत	....	....
नीलगगन	....	....
चौराहा	....	....
महाजन	....	....
कमलनयन	....	....
प्रतिवर्ष	....	....
पंचवटी	....	....
दही-बड़ा	....	....
देशभक्ति	....	....
चक्रधर	....	....
दूध-दही	....	....
गुणहीन	....	....

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हाथ-पाँव	....	....
रोगमुक्त	....	....
आशातीत	....	....
महात्मा	....	....
राजदूत	....	....
घूसखोर	....	....
यथासमय	....	....
पनचक्की	....	....
अनभिज्ञ	....	....
त्रिवेणी	....	....
स्नेहमग्न	....	....
सेनापति	....	....
तिगुना	....	....
लंबोदर	....	....
असत्य	....	....
गृहस्वामी	....	....
नकटा	....	....
उद्योगपति	....	....
आजन्म	....	....
राहखर्च	....	....
रसोईघर	....	....
वनवास	....	....
प्रत्येक	....	....
महेश	....	....
आजकल	....	....
मालगाड़ी	....	....
नीलाकाश	....	....
मक्खीचूस	....	....
वनमानुष	....	....
गौशाला	....	....
मतदाता	....	....
सिरदर्द	....	....
पीतांबर	....	....
धूपदीप	....	....
मधुमक्खी	....	....
आना-जाना	....	....
अठन्नी	....	....
भयभीत	....	....

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ध्यानमग्न	....	....
जलधारा	....	....
राजा-प्रजा	....	....
चौमासा	....	....
दशानन	....	....
भरपेट	....	....
आमरण	....	....
राष्ट्रपति	....	....
प्रतिदिन	....	....
देशवासी	....	....
वाक्पटु	....	....
अल्पबुद्धि	....	....
चरणकमल	....	....
अकारण	....	....
यश-अपयश	....	....
चारपाई	....	....
सुख-दुःख	....	....
पंकज	....	....
पतझड़	....	....
तिरंगा	....	....
दशमुख	....	....
प्रतिवर्ष	....	....
विषधर	....	....
वीणापाणि	....	....
कनकलता	....	....
पंजाब	....	....
राधाकृष्ण	....	....
शूलपाणि	....	....
एकदंत	....	....
दहीबड़ा	....	....

7. निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त रेखांकित पदों की जगह उपयुक्त समस्तपदों का प्रयोग कीजिए—

(i) मनुष्य मद में मस्त होकर न जाने क्या क्या बोलता जाता है।

(ii) अच्छा समाज सेवक यश और अपयश की परवाह नहीं करता।

(iii) ब्रह्मपुत्र के पवित्र जल की धारा को देखकर मन मयूर नाच उठा।

(iv) मैं तो काठ की बनी पुतली लगती हूँ, तुम्हारे इशारों पर नाचूँगी।

(v) मुझे पानी से बहने वाली चक्की को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

(vi) विद्यासागर सचमुच विद्या के भंडार थे।

(vii) वह कमरा रसोई बनाने के लिए है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(viii) रमेश के माता और पिता आए हैं।
(ix) इसी डॉक्टर ने मुझे रोग से मुक्त किया।
(x) कृपया गुरु के द्वारा दिया गया प्रसाद लेते जाइए।
(xi) मैं परम प्रतापी चक्र को धारण करने वाले को प्रणाम करता हूँ।
(xii) गाँव में छः व्यक्तियों के मरने का समाचार रात ही रात में फैल गया।
(xiii) मनुष्य का जीवन आशा व निराशा का एक चक्र है।
(xiv) रामचंद्रजी शबरी के द्वारा दिए गए झूठे बेरों को खाकर प्रेम से आतुर हो गए।
(xv) सूरदास जी अंधे थे परंतु जन्म से अंधे नहीं थे।
(xvi) घोर असामाजिक असमानता को देखकर गाँधी जी दया से आर्द्र हो उठे।
(xvii) उसने मुझे बिल्कुल साफ शब्दों में मना कर दिया।
(xviii) ईश्वरचंद विद्यासागर अथाह विद्या के भंडार थे।
(xix) यह बस्ती हमारे मतों की दाता है।
(xx) बचपन में मैं दिन और रात परिश्रम करता था।
(xxi) दस सिर वाला होकर भी रावण में एक सिर की बुद्धि नहीं थी।
(xxii) साक्षात मृत्यु को सामने देखकर मैं भय से भीत हो गया।
(xxiii) चुनाव प्रकार के लिए मैं हर एक घर घूम आया हूँ।
(xxiv) मैं घोड़ों की दौड़ का आनंद उठाना चाहता हूँ।
(xxv) चाणक्य ध्यान में मगन होकर गुरुजनों की बात सुनता था।
(xxvi) व्यक्ति की बदनामी का कारण उसका लक्ष्य से भ्रष्ट होना है।
(xxvii) मेरी दीवार पर टाँगने वाली घड़ी देना।
(xxviii) हमें अपने अधिकारों की पूर्ति के लिए सत्य के लिए आग्रह करना चाहिए।
(xxix) मैं उस तीन नयन धारक को प्रणाम करता हूँ।
(xxx) सत्य का मार्ग कष्टों से साध्य होता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निशाचर	उल्लू, प्रेत, चोर, राक्षस।
पत्र	पंख, चिट्ठी, पत्ता।
पेय	पानी, दूध।
पक्ष	पंद्रह दिन का समय, पार्टी, पंख, बल, सहाय, ओर (तरफ)।
पानी	इज्जत, चमक, रौनक, जल।
पतंग	टिड्डी, पक्षी, पतिंगा, पतंग उड़ाने का खेल, सूर्य।
पद	छंद का एक चरण, उद्यम, चौथा भाग, स्थान, दश।
पोत	नाव, वस्त्र, गुड़िया, बच्चा, स्वभाव।
पयोधर	बादल, गन्ना, पर्वत, स्तन।
फल	बाण या छुरी के आगे का नुकीला भाग, फूल का विकसित रूप
बलि	उपहार, कर, बलिदान, राजा बलि।
बहार	आनंद, बसंत, एक राग।
बल	शक्ति, सेना, बलराम, ऐंठन।
भूत	प्रेत, पंजभूत, वाणी, भूतकाल।
भव	कुशल, जन्म, क्षेत्र, संसार, विश्व, महादेव।
मधु	पराग, शराब, बसंत ऋतु, शहद।
मित्र	सूर्य, सहयोगी, प्रिय, दोस्त।
मग	रास्ता, एक पाग विशेष।
मुद्रा	मुहर, आकृति, रुपया।
मूल	असली, जड़, वास्तविक, आधारभूत, हल।
मान	इज्जत, स्व-ज्ञान, प्रतिष्ठा, माप-तोल।
योग	योगाभ्यास, जोड़।
राग	रंग, गाने का राग, गाना, प्रेम।
रस	स्वाद, सार, प्रेम, जल, पारा, पौधे का दूध, आनंद।
लट्ठा	लाठी, स्तंभ, एक प्रकार का वस्त्र।
लंघन	उपवास, लांघन।
वन	जाति, अक्षर, रंग।
विरोध	विपरीत भाव, बैर, शत्रुता।
वर	दूल्हा, श्रेष्ठ, वरदान।
वर्ष	वृष्टि, साल।
वार	सप्ताह के दिन, प्रहार।
विहंगम	बादल, पक्षी, सूर्य, चंद्र।
वारण	हाथी, रोकने की क्रिया।
वाणी	सरस्वती, मुख से निकलने वाली सार्थक ध्वनि।
वन	जंगल, जल।
विग्रह	शरीर, लड़ाई, विच्छेदन।
विधि	कानून, ब्रह्मा, ईश्वर, रीति, भाग्य, प्रक्रिया।
श्रुति	कान, वेद।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिव	भाग्यशाली, महादेव, मंगल।
सारंग	पानी, दीपक, पपीहा, शंख, सर्प, हाथी, मोर, हरिण।
सार	तत्व, लोहा, निचोड़।
सीना	छाती, सिलाई करना।
सुधा	पानी, अमृत।
हल	समाधान, एक यंत्र।
हंस	सरोवर का पक्षी, योगी, घोड़ा, श्वेत, सूर्य।
हरि	हरा रंग, ब्रह्मा, कामदेव, कोयल, सर्प, सिंह, हवा, मेंढक, यमराज, बंदर।
हार	माला, पराजय।
क्षमा	पृथ्वी, माफी।
क्षेत्र	तीर्थ, शरीर, सदाव्रत का स्थान, खेत।

प्रश्न-अभ्यास

1. निम्नलिखित वाक्यों में प्रयोग किए गए रेखांकित शब्दों की जगह उनके पर्यायवाची किसी अन्य शब्द का प्रयोग कीजिए—

(i) आज के <u>पत्र</u> में मेरा <u>पत्र</u> छपा है।

(ii) लुहार ने जब <u>घन</u> पीटना आरंभ किया तो आकाश के <u>घन</u> बरसने लगे।

(iii) <u>अर्थ</u> का कोई <u>अर्थ</u> नहीं है यदि आपकी पहचान का कोई व्यक्ति अभावग्रस्त हो।

(iv) तुम नाम के <u>विनायक</u> हो काम के <u>विनायक</u> नहीं।

(v) गले में <u>हार</u> तभी पड़ते हैं जब व्यक्ति किसी मोर्चे पर <u>हार</u> का सामना नहीं करता।

(vi) वे शुक्ल <u>पक्ष</u> में उत्सव करने के <u>पक्ष</u> में हैं।

(vii) वह <u>कल</u> का छोरा यह <u>कल</u> चलाने का प्रयास कर रहा है।

(viii) ट्रैक्टर किसान की <u>हल</u> चलाने की समस्या का <u>हल</u> है।

(ix) मुझे अपने <u>कर</u> पर भरोसा है कि मैं <u>कर</u> जमा करा सकता हूँ।

(x) गणित की पुस्तक के एक <u>पृष्ठ</u> पर <u>पृष्ठ</u> क्षेत्रफल का सूत्र लिखा है।

(xi) जिनके पास अत्यधिक <u>सोना</u> होता है, उन्हें <u>सोना</u> कम ही प्राप्त होता है।

(xii) मैं आजकल के नौजवानों के <u>विषय</u> भोग के <u>विषय</u> में क्या बताऊँ।

(xiii) <u>रंग</u> मंच पर विभिन्न <u>रंग</u> बिखरे थे।

(xiv) आज मीन <u>राशि</u> के जातकों को रुकी <u>राशि</u> प्राप्त होगी।

(xv) मेरे <u>लाल</u> पर <u>लाल</u> रंग बहुत फबता है।

(xvi) <u>आम</u> सस्ता है इसलिए <u>आम</u> लोग इसे खूब खाते हैं।

(xvii) <u>काम</u> में मन बनाओ, <u>काम</u> के चक्कर में मत पड़ो।

(xviii) संध्या <u>काल</u> में उसका <u>काल</u> आया हुआ था।

(xix) दर्शक संगीत सभा की <u>लय</u> में <u>लय</u> हो गए।

(xx) हल के <u>फल</u> के नीचे मत आ जाना अन्यथा <u>फल</u> अच्छा नहीं होगा।

(xxi) नदी <u>तीर</u> पर दशरथ ने श्रवण कुमार को <u>तीर</u> मार दिया।

(xxii) वह विधायक सही नहीं है। तुम उसे अपना <u>मत</u> <u>मत</u> देना।

(xxiii) हमारे <u>कुल</u> में आज तक किसी ने <u>कुल</u> प्रतिशत 95 प्राप्त नहीं किया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(xxiv) मैंने सबसे अधिक अंक उस चित्र को दिए हैं जिसमें श्रीकृष्ण माता यशोदा के अंक में बैठे हैं।
(xxv) थानेदार के पद पर आसीन होकर शांति पद गाना अत्यंत कठिन है।
(xxvi) उस वार को पाकिस्तान ने भारत पर वार किया था।
(xxvii) देश के जवान लड़के ही सेना के जवान बनते हैं।
(xxviii) इससे पूर्व कभी भी सूर्य पूर्व में इतना लाल नहीं दिखाई दिया।
(xxix) विधि के अनुसार व्यक्ति किसी भी विधि से पूजा-अर्चना कर सकता है।
(xxx) ईश्वर ने उसे अच्छा वर प्राप्त होने का वर दिया था।
(xxxi) वह भाग प्रतियोगिता में भाग लेने आया है।

2. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो अर्थ लिखकर उन्हें वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

(i) किरण ....
(ii) देव ....
(iii) राशि ....
(iv) विधि ....
(v) फल ....
(vi) पत्र ....
(vii) लाल ....
(viii) गुरु ....
(ix) वार ....
(x) जान ....

3. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो अर्थ लिखिए—

(i) कुंडल .... (ii) खर ....
(iii) दर्शन .... (iv) द्विज ....
(v) गुण .... (vi) अर्क ....
(vii) अवधि .... (viii) उपचार ....
(ix) कनक .... (x) जवान ....
(xi) विषम .... (xii) मत ....
(xiii) घट .... (xiv) प्रसाद ....
(xv) लक्ष्य .... (xvi) अर्थ ....
(xvii) सोना .... (xviii) सूत ....

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc. No. 9545
Dated 29-3-17
G.M.C.E.J
9545
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

OUR USEFUL BOOKS

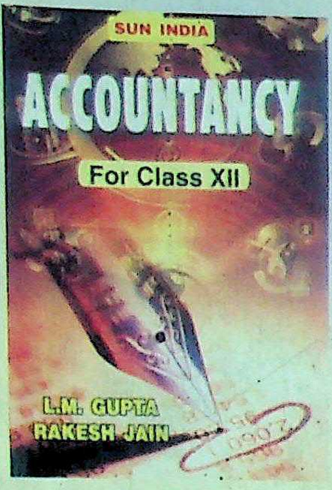

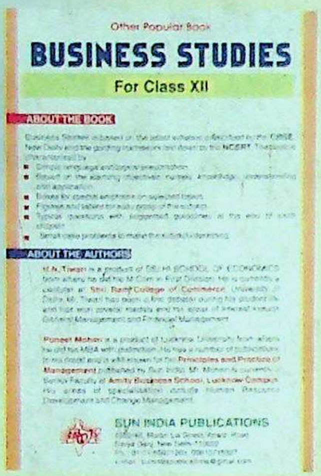

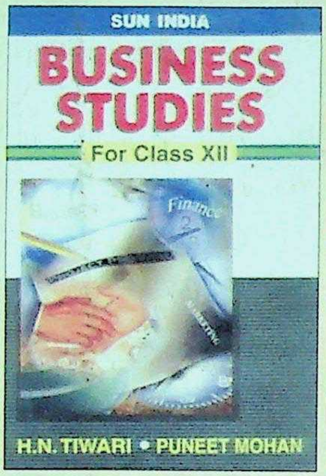

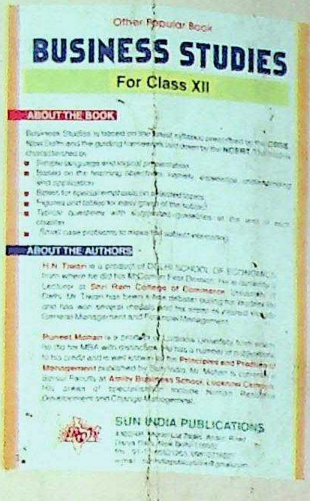

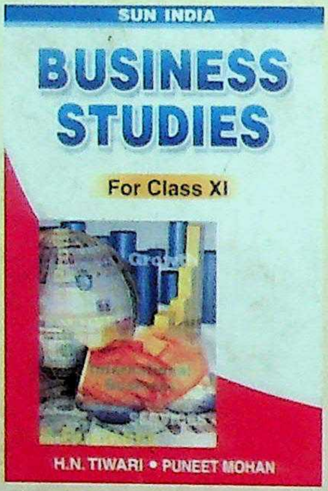

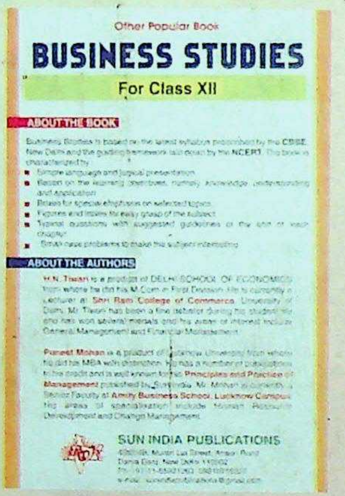

Sun India Publications

4382/4B, Ist Floor, Murarilal Street, Ansari Road,
Daryaganj, New Delhi-110002
Ph. : 65921263, 9810716327
e-mail : sunindiapublications@gmail.com

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant